

श्रीयादवप्रकाशाचार्यविरचितः

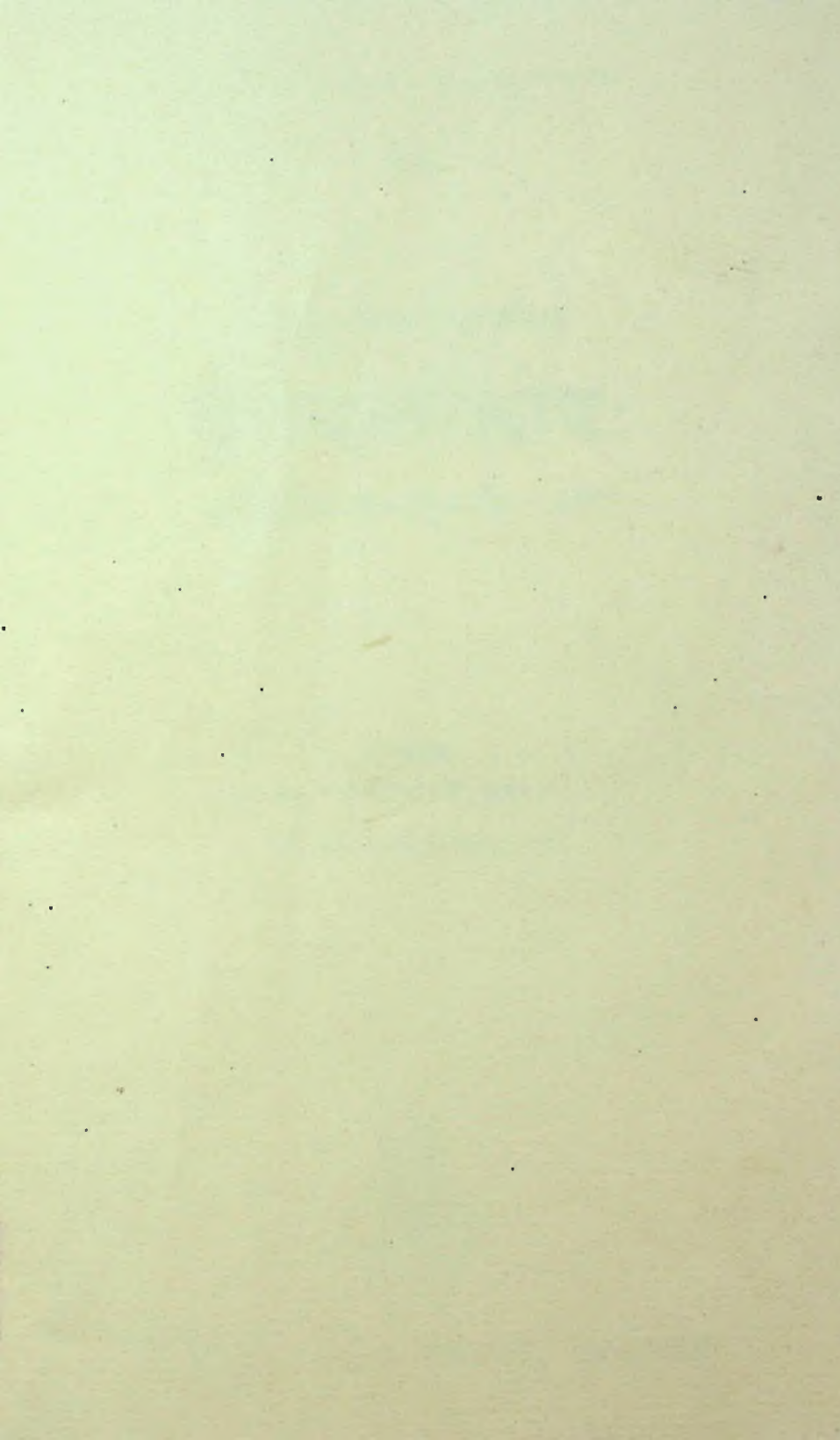
# वैजयन्तीकोषः

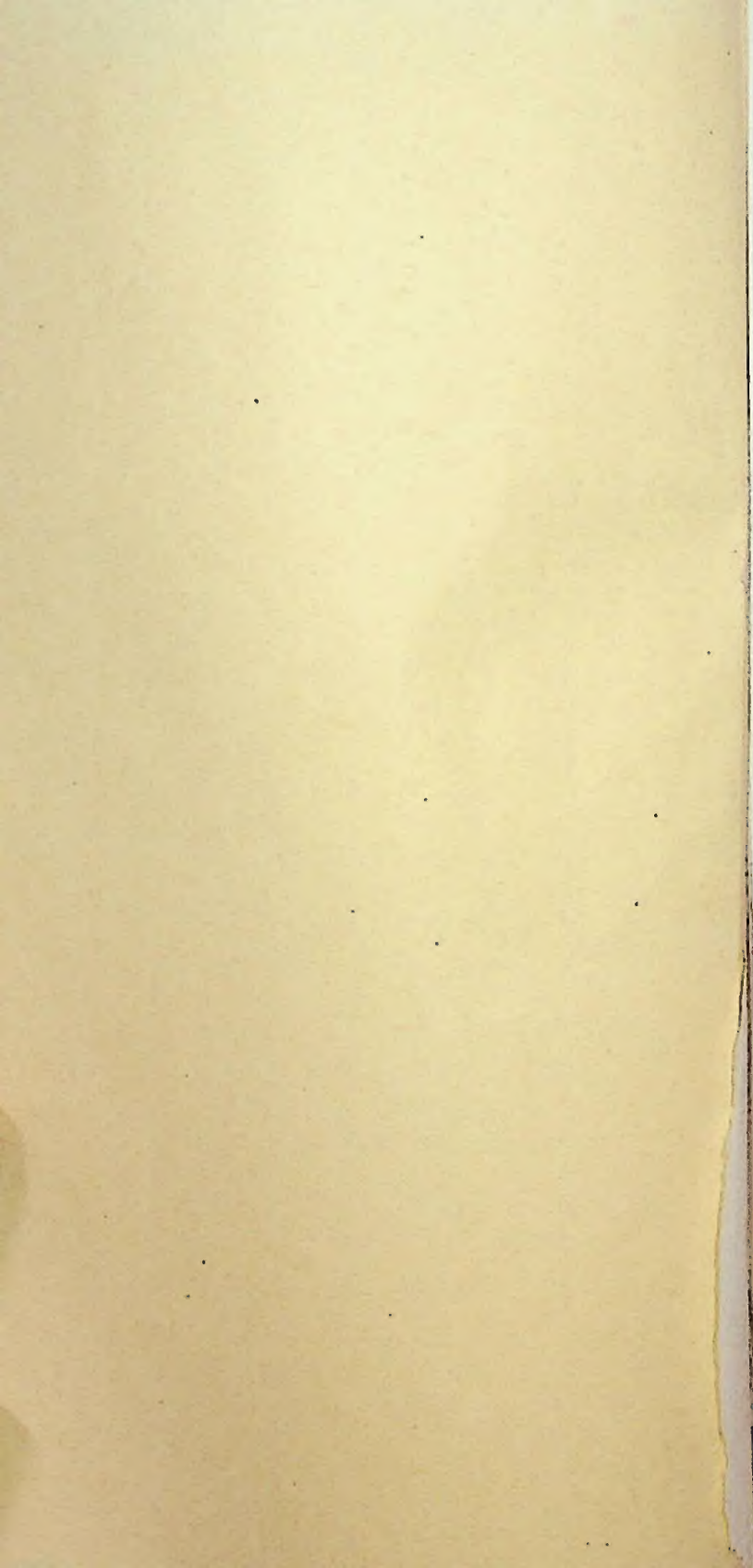
सम्पादकः

पं० हरगोविन्दशास्त्री





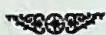






जयकृष्णदास-कृष्णदास प्राच्यविद्या ग्रन्थमाला

२



श्रीयादवप्रकाशाचार्यविरचितः

# वैजयन्तीकोषः

सलिङ्गनिर्देशं शब्दानुक्रमणिकासहितः

सम्पादकः

व्याकरण-साहित्याचार्य-साहित्यरत्न

श्री पं० हरगोविन्दशास्त्री



चौखम्भा भारती अकादमी, वाराणसी

प्रकाशक

## चौखम्भा भारती अकादमी

आकर ग्रन्थों के प्रकाशक एवं वितरक

‘गोकुल भवन’, के. ३७/१०९, गोपाल मन्दिर लेन

वाराणसी-२२१००१ (भारत)

फोन : +९१ ५४२ २३३०३४५, २३३०३४९ (ऑ.)

+९१ ५४२ २३३२६३७, २३३२७०२ (नि.)

© चौखम्भा भारती अकादमी, वाराणसी

पुनर्मुद्रित : सन् २००८

मूल्य : रु. ४००.००

शाखा

## चौखम्भा बुक्स

५ यू. ए. जवाहर नगर

(जवाहर नगर पोस्ट ऑफिस के पीछे)

मलकागंज, दिल्ली-११०००७

फोन : +९१ ११ २३८५३१६६

अन्य प्राप्ति स्थान

## चौखम्भा विश्वभारती

भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के प्रकाशक व वितरक

के. ३७/१०९, गोपाल मन्दिर लेन

वाराणसी-२२१००१ (भारत)

---

मुद्रक : सुरधि प्रिंटर्स, वाराणसी





# VAIJAYANTĪKOṢA

OF

ŚRĪ YĀDAVAPRAKĀŚĀCĀRYA

Edited with Introduction and Index

by

Śrī Pt. Haragovind Śāstrī

*Vyākaraṇa-Sāhityāchārya, Sāhityaratna*

Ph.-0542-2420414

CHAUKHAMBHA SANSKRIT BHAWAN

POST BOX No. 1160

OPP. CHITRA CINEMA, CHOWK

VARANASI - 221001

CHAUKHAMBHA BHARATI ACADEMY

VARANASI

*Publisher*

**CHAUKHAMBHA BHARATI ACADEMY**

*Publishers & Distributors of Monumental Treatises of the East*

'Gokul Bhawan' K. 37/109, Gopal Mandir Lane

Varanasi-221001 (India)

Phone : +91-542-2330345, 2330349 (O)

+91-542-2332637, 2332702 (R)

© Chaukhambha Bharati Academy, Varanasi

Reprint Year : 2008

*Also can be had from*

**CHAUKHAMBHA BOOKS**

5. U. A. Jawahar Nagar

(Behind Jawahar Nagar Post-office)

Malkaganj, Delhi-110007

Phone : +91-11-23853166

*Branch*

**CHAUKHAMBHA VISVABHARATI**

*Oriental Publishers & Distributors*

K. 37/109, Gopal Mandir Lane

Varanasi-221001 (India)

---

*Printed at : Surbhi Printers, Varanasi*



## प्रस्तावना

लोकव्यवहृतिहेतु शारदराकेशविमलतमम् ।

सारस्वतं महोऽहं शब्दब्रह्माभिधं वन्दे ॥ १ ॥

चन्द्रांशुसितभस्माङ्ग चन्द्राकाग्निलोचन ।

चन्द्रास्थोमाचितार्द्धाङ्ग चन्द्रचूड नमोऽस्तु ते ॥ २ ॥

अपने-अपने पूर्वजन्माजित शुभाशुभ कर्मोंके अनुसार चौरासी लक्ष योनियों-में-से नानाविध योनियोंमें जन्म लेकर इस कष्टमय संसारमें विविध दुःखोंको भोगनेके लिए जीव बाध्य हुआ करता है । देव-यक्षादि कुछ योनियां उनमें सुखद भी हैं, किन्तु उनमें भी उत्पन्न जीव अपने शुभ कर्मोंसे उपलब्ध सुखोंका भोगमात्र ही करता है, पुनः पुण्यकर्माजन-द्वारा अपने सुखद भोगोंमें लेशमात्र भी वृद्धि नहीं कर सकता, क्योंकि वे सभी भोग-योनियां हैं, कर्मयोनियां नहीं । कर्म-योनि तो केवल मनुष्य-योनि ही है, इसीमें उत्पन्न प्राणी अपने-अपने कर्मजन्य सुखप्रद भोगोंको भोगता हुआ भी शुभकर्माजन-द्वारा धर्मार्थकामरूप पुण्यार्थत्रय प्राप्तकर मोक्षरूप परम पुण्यार्थ भी प्राप्त कर सकता है । इसी कारण इस मनुष्य-योनिको सर्वश्रेष्ठ योनि माना गया है । इसे प्राप्त करनेके लिए देवराज इन्द्र भी तरसते हैं और चाहते हैं कि सीमाभ्यवक्ष यदि मुझे दुर्लभ मनुष्य-योनि प्राप्त हो जाय तो मैं मोक्ष-लाभकर परमानन्दकन्द परब्रह्म परमात्मामें लीन होकर कष्टमय संसारके आवागमनसे सदा सर्वदाके लिए मुक्त हो जाऊँ ।

### मनुष्य-योनि-प्राप्तिके साधन—

परमदुर्लभ मनुष्य-योनि-प्राप्तिके मुख्यसाधन दो प्रकारके हैं—प्रथम कठोरतम तपश्चरणादि तथा द्वितीय सुखमय जीवन व्यतीत करते हुए सत्काव्य-सेवन । इनमें-से प्रथम साधन नानाविध विघ्न-बाधाओंसे भरा हुआ अतिशयकष्ट-साध्य है तथा सत्काव्य-सेवनरूप द्वितीय साधन पूर्वापेक्षया अधिक सरल एवं सुख-साध्य है । अत एव जीवमात्रको सत्काव्य-सेवन-द्वारा यश, धन तथा व्यवहार-ज्ञानकी प्राप्ति करते हुए दुःख-निवृत्ति एवं कान्तोपदेशसम्मित सद्यः परमसुख-प्राप्ति करनी चाहिए । शास्त्रकारोंने भी डिण्डिमघोषपूर्वक इसी बातका समर्थन किया है । यथा—

‘काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरच्चतये ।

सद्यः परनिर्वृतये कान्तासम्मिततथोपदेशयुजे ॥’

तथा—

‘धर्मार्थकाममोक्षेषु चैव चक्षुषं कलासु च ।

करोति कीर्तिं प्रीतिं च साधुकाव्यनिषेवणम् ॥’

इसी सत्काव्य-सेवनद्वारा व्यास, वाल्मीकि, कालिदास, भास, भवभूति, माघ, भूषण, बाण, श्रीहर्ष, धावक, दण्डी आदि महामनीषियोंने स्व-स्व-लक्ष्यानुसार अर्थ, धर्म, काम और मोक्षतक प्राप्त किया, यह सर्वविदित है। मनुष्य-योनि लाभ करनेपर भी विद्या, कवित्व और कवित्व-शक्तिका लाभ करना उत्तरोत्तर दुर्लभ है। यथा—

‘नरत्वं दुर्लभं लोके विद्या तत्र सुदुर्लभा ।

कवित्वं दुर्लभं तत्र शक्तिस्तत्र सुदुर्लभा ॥’

( अग्निपुराण २३७।३-४ )

भगवान् पतञ्जलिने तो सम्यक् प्रकारसे ज्ञात एवं सुप्रयुक्त एक शब्दको भी इहलोक एवं परलोकमें कामदुघा ही बतलाया है। यथा—

‘एकः शब्दः सम्यग्ज्ञातः सुप्रयुक्तः स्वर्गे लोके च कामधुग्भवति ।’

( महाभाष्य पस्पशाह्निक )

इसी कारणसे शास्त्रकारोंने व्याकरणशास्त्रके अध्ययनपर विशेष जोर दिया है। यथा—

‘यद्यपि बहु नाधीये पठ पुत्र व्याकरणम् ।

स्वजनः स्वजनो मा भूत् सकलं शकलं सकृच्छकृत ॥’

उपर्युक्त वचनसे यह सुस्पष्ट हो जाता है कि अधमात्रात्मक एक व्यञ्जनका व्यतिक्रम होनेसे अर्थका कितना अनर्थ हो जाता है।

### कोषकी आवश्यकता—

शब्द-शास्त्रके ज्ञानके बाद भी कवित्व-शक्ति-प्राप्त्यर्थ बहुशब्द-संरचय करना परमावश्यक होता है, वह संरचय उत्तमोत्तम कोषद्वारा ही हो सकता है, क्योंकि कोष-हीन पुष्प तथा भूपाल जिस प्रकार प्रजोत्पादन एवं प्रजा-रक्षणमें सर्ववैय असमर्थ रहते हैं, उसी प्रकार कोष-हीन विद्वान् भी उत्तम काव्यकी रचना करने या उसका यथावत् रसास्वादन करनेमें सर्वथा असमर्थ ही रहता है। यथा—

‘नरभूपौ विना कोषं प्रजोत्पादनरक्षयोः ।

नैव समौ यथा, तद्वत् कविः काव्यकृतावपि ॥’

शब्द-दारिद्र्याक्रान्त कवि उपयुक्त शब्द-चयन करनेमें ही सदा व्यस्त रहनेसे उन्नतोन्नत-कल्पना-पूर्ण कविता करनेमें कदापि समर्थ नहीं होता है। अतः कोष-संरचय करना सत्कविके लिए परमावश्यक है।



### वैदिक कोषकी सर्वप्रथम रचना—

सृष्टिकर्ता ब्रह्माने सर्वप्रथम अपने मानसपुत्रोंको वेदोंका अध्ययन कराया, उन्होंने उन वेदोंको सुनकर कण्ठस्थ कर लिया और पुनः उनका स्मरणकर अपने शिष्योंको अध्ययन कराया । धृति-गोचर ( श्रवण ) कर स्मरणद्वारा अध्ययन करानेकी यह परम्परा अनेक शताब्दियों तक चलती रही और हस्तामलकवत् त्रिकालदर्शी महर्षि लोकोपकारार्थं वेद-सम्मत अन्यान्य शास्त्रों ( ब्राह्मण, उपनिषद्, धर्मशास्त्रादि ) की रचनाकर अपने-अपने योग्यतम शिष्योंको अध्ययन कराते रहे ।

आगे चलकर समय बदला और उन महर्षियोंके यम-नियम-संयमादिमें शैथिल्य होनेसे उनकी बुद्धिका भी ह्रास हो गया, श्रवणमात्रसे वेदको स्मरण रखने एवं समझनेकी क्षमताका अभाव देखकर कश्यप मुनिने वेदज्ञानार्थं निघण्टुकी रचना की, किन्तु कालचक्रके आगे बढ़ते रहनेसे अन्न-पान-संसर्गादिक बुद्धिवैषाद्यावरोधक दोषोंके कारण तपोबलका ह्रास उत्तरोत्तर बढ़ता ही गया । तत्फलस्वरूप वेदार्थप्रतिपादक निघण्टुका आशय समझना भी अशक्य हो गया, यह देख यास्क ( ई० पू० ७०० वर्ष ) ने निघण्टुके भाष्यरूप 'निरुक्त' ग्रन्थकी रचना की । वेदोंमें आनेवाले शब्दोंका निर्वचन करनेसे इसके द्वारा वेदार्थ-ज्ञान करना सरल हो गया । इसके विषय ये हैं—

‘वर्णागमो वर्णविपर्ययश्च द्वौ चापरौ वर्णविकारनाशौ ।

धातोस्तद्वर्थातिशयेन योगस्तदुच्यते पञ्चविधं निरुक्तम् ॥’

निघण्टुके भाष्यस्वरूप इस निरुक्तमें यास्कने ‘एके, परे, अपरे, अन्ये, आचार्याः’ आदि शब्दों-द्वारा अज्ञात-नामा आचार्योंका सङ्केतकर इन बारह आचार्योंका स्पष्ट रूपसे नाम-निर्देश किया है । उनके नाम ये हैं—१ औदुम्बरायण, २ औप-मन्यव, ३ वार्षाणि, ४ गार्ग्य, ५ आप्रहायण, ६ शाकपूणि, ७ और्णनाभ, ८ तैट्टिकी, ९ गालव, १० स्थीलाछीवी, ११ क्रौष्ठ और १२ कायक्य । जिस प्रकार वेदाङ्ग व्याकरण, छन्द, ज्योतिष, शिखा और कल्प कोई एक-एक ग्रन्थ-विशेष न होकर सभी अनेकानेक ग्रन्थात्मक हैं, उसी प्रकार निघण्टु या निरुक्त भी कोई स्वतन्त्र एक-एक ग्रन्थ-विशेष नहीं; अपितु वे दोनों ( निघण्टु और निरुक्त ) भी अनेकानेक ग्रन्थरूपात्मक ही हैं । ५० श्रीभगवद्गीतेने एक लेखमें वेदोंके भाष्यकार यास्कादिके भाष्य-ग्रन्थोंमें उद्धृत लगभग १७ निघण्टुओंके अस्तित्वका उल्लेख किया है, किन्तु इस समय वे सभी अप्राप्य हैं । ( श्रीवाचस्पति गैरोलाकृत सं० साहित्यका इतिहास, पृ० १८७-१८९ )

### लौकिक कोषोंकी रचना—

संयम-नियम, आचार-विचार, अन्न-पान, रहन-सहन आदिके शास्त्र-बहिर्भूत होनेसे बल, धीर्य, मेधा, विद्या, तपस्वरणादिके और अधिक ह्रास होनेपर लौकिक

शब्दोंके अर्थ-ज्ञानको भी दुर्बोध्य होता हुआ देखकर आचार्योंने शास्त्र-ज्ञानार्थ 'लौकिक शब्दकोषों'की रचना की। प्राचीनाचार्योंमें अपने ग्रन्थोंमें समय, निवास तथा देशादिका परिचय देनेकी परम्परा नहीं रहनेसे किस आचार्यने कौन-सा लौकिक शब्दकोष सर्वप्रथम रचा, यह निर्णय आज तक इतिहासकार नहीं कर सके हैं। इसके कारण निम्न-लिखित हैं—

( क ) 'शब्दकल्पद्रुम'के रचयिता 'स्यारं राजा राधाकान्त देव बहादुर'ने उक्त ग्रन्थके मुखबन्ध ( पृ० ४ ) में अग्निपुराणमें वर्णित अभिधानको सर्वप्रथम कोष माना है। इसका प्रकरण-क्रम इस प्रकार है—पहले स्वर्गपातालादिवर्ग, नानार्थवर्गके बाद भू-पुर-अद्रि-वनीषधि-सिंहादि-तृ ( मनुष्य )-ब्रह्म-क्षत्र-वैश्य-शूद्र-वर्गका वर्णनकर अन्तमें सामान्यलिङ्गका वर्णन है। किन्तु अमरसिंहने स्व-रचित अमरकोषमें उक्त क्रमका व्यत्यासकर अग्निपुराणोक्त 'सामान्य-नामलिङ्गों'के स्थानमें विशेष्यनिष्पन्नवर्ग तथा सङ्कीर्णवर्गको समाविष्टकर 'लिङ्गादिसंग्रहवर्ग'को पृथक् कर दिया है। उक्त अमरसिंहका ही अनुकरण 'जटाधर' ने अपने.....ग्रन्थ में और 'पुरुषोत्तमदेव'ने 'त्रिकाण्डशेष' में किया है।

इसके बाद उक्त राजा सा० ने निम्नलिखित कोषों एवं उनके रचयिताओंका नाम-निर्देश किया है। यथा—

ग्रन्थकार	कोष
१. अमरसिंह	: नामलिङ्गानुशासन
२. अजयपाल	: नानार्थसंग्रह
३. गदसिंह	: नानार्थध्वनिमञ्जरी
४. चक्रपाणि	: शब्दचन्द्रिका
५. जटाधराचार्य	: पर्यायनानार्थकोष
६. दण्डाधिनाथ	: नानार्थरत्नमाला
७. दुर्गादासविद्यावागीश	: धातुदीपिका
८. धनञ्जयकवि	: नाममाला
९. धनिकदासब्राह्मण	: सारसंग्रहनामक अनेकार्थसमुच्चय
१०. नरसिंह कालीपण्डित	: निघण्टुराज ( राजनिघण्टु )
११. नारायणदत्तकविराज	: राजवल्लभ
१२. पद्मनाभदत्तद्विज	: भूरिप्रयोग
१३. पुरुषोत्तमदेव	: एकाक्षरकोष
१४.        "	: द्विरूपकोष
१५.        "	: त्रिकाण्डशेष



ग्रन्थकार	कोष
१६. पुरुषोत्तमदेव	: हारावली
१७. भावमिश्र	: भावप्रकाश
१८. मथुरेशपण्डित	: शब्दरत्नावली
१९. महेश्वरवैद्य	: विश्वप्रकाश
२०. मेदिनीकरवैद्य	: नानार्थशब्दकोष
२१. रामेश्वरशर्मा	: शब्दमाला
२२. रत्नमालाकरवैद्य	: आयुर्वेदार्णवोत्थित पर्यायरत्नमाला
२३. चोपदेवमिश्र	: कविकल्पद्रुम
२४. श्रीनन्दनभट्टाचार्य	: वर्णाभिधान
२५. श्रीरामशर्मा	: उणादिकोष
२६. सि. कौ. संक्षिप्तसारकार :	'उणादिवृत्ति
२७. " "	" "
२८. हलायुधभट्ट	: अभिधानरत्नमाला
२९. हेमचन्द्रजैन	: अभिधानचिन्तामणि

इनके अतिरिक्त (१) विश्वकोषमें—

१. भोगीन्द्र, २. कात्यायन, ३. साहसाङ्क, ४. वाचस्पति, ५. व्याडि, ६. विश्वरूप, ७. मङ्गल, ८. शुभाङ्क, ९. बोपालित और १०. भागुरिके द्वारा रचे गये—

तथा ( २ ) मेदिनीकोषमें—

१. उत्पलिनी, २. शब्दार्णव, ३. संसारावर्त, ४. नाममालाख्य, ५. वररुचि, ६. शाश्वत, ७. रन्तिदेव, ८. रत्नापरनामहर, ९. गोवर्धन, १०. रत्नसपाल, ११. रुद्र, १२. अमरदत्त, १३. गङ्गाधर, १४. वाभट, १५. माधव, १६. धर्म, १७. तारपाल, १८. वामन, १९. चन्द्र, २०. विक्रमादित्य और २१. गोमि'के रचित कोष तथा २२. पाणिनि-पदानुशासन कोष; इनके कोषग्रन्थोंका नामोल्लेख है ।'

( ख ) पुरुषोत्तमदेव-रचित 'त्रिकाण्डशेष'नामक कोषकी 'साराथ्यचन्द्रिका' नामकी संस्कृत व्याख्याके कर्ता 'श्रीशीलस्कन्ध यतिवरने' प्राप्ताप्राप्त एवं ज्ञाता-ज्ञात नामवाले कोषों तथा कोष-रचयिताओंके निम्नलिखित १९२ नामोंका उल्लेख-कर 'दैवज्ञ'मुखमण्डन, सरस्वतीनिघण्टु, और सिद्धीषधनिघण्टु,—इन तीन ग्रन्थों-के लङ्काद्वीपमें सिंहलाक्षर लिपिमें मुद्रित होनेकी चर्चा की है । उनकी तत्रत्य

१. उपरिलिखित २९, १० तथा २२ नामोंके अतिरिक्त भी कतिपय नाम और ग्रन्थ अर्वाचीन हैं तथा कुछ नाम कोषभिन्न हैं ।

पुस्तकालयीय ग्रन्थ-संख्या क्रमशः १४६, १८७ और १९२ है, यह भी उनका कथन है । उल्लिखित १९२ कोष एवं कोषकारोंके ये नाम हैं—

**प्राप्तकोष :**

ग्रन्थ-नाम	ग्रन्थकार-नाम
१. नामलिङ्गानुशासन	: अमरसिंह
२. कल्पद्रु	: केशव
३. शब्दार्णव	: दुर्गादास
४. प्रमाणनाममाला	: धनञ्जय
५. त्रिकाण्डशेष	: पुरुषोत्तमदेव
६. हारावली	: ”
७. एकाक्षरकोष	: ”
८. द्विरूपकोष	: ”
९. ”	: भरतसेनमल्ल
१०. मातृकानिघण्टु	: महीदास
११. अनेकार्थध्वनिमञ्जरी	: महाक्षपणक
१२. अव्ययकोष	: महादेव
१३. विश्वप्रकाश	: महेश्वर
१४. शब्दभेदप्रकाश	: ”
१५. नानार्थमञ्जरी	: मेदिनीकर
१६. वैजयन्ती	: यादव
१७. लिङ्गविशेषविधि	: वरकचि
१८. पञ्चतत्त्वप्रकाश	: वेणीदत्त
१९. नानार्थसमुच्चय	: शास्त (?)
२०. लक्ष्मीनिवास	: शिवराम
२१. गणितनाममाला	: हरिदत्त
२२. अभिधानरत्नमाला	: हलायुध
२३. शारदीयनाममाला	: हर्षकीर्ति
२४. अनेकार्थसंग्रह	: हेमचन्द्र
२५. अभिधानचिन्तामणि	: ”
२६. अभिधानचिन्तामणि— नाममालापरिशिष्ट	: ”
२७. लिङ्गानुशासन	: ”

ग्रन्थ-नाम	ग्रन्थकार-नाम
२८. अभिधानरत्नमालाशिलोच्छ्रः	जिनेन्द्रमुनीश्वर
२९. मदनपालनिघण्टु :	मदनपाल
३०. मुक्तावली :	श्रीधर
३१. रत्नमाला :	दण्डाधिनाथोपनाम इषगप्प
३२. शब्दसंग्रहनिघण्टु :	अगस्त्य
३३. नानार्थसंग्रह :	अजयपाल
३४. नामसंग्रहमाला :	अप्पदीक्षित
३५. एकाक्षरनाममाला :	अमरसिंह
३६. प्रयुक्तपदमञ्जरी :	कालिदास
३७. शब्दार्णव :	काशीनाथ
३८. लघुनिघण्टुसार :	केशव
३९. लोकप्रकाश :	क्षेमेन्द्र
४०. अनेकार्थध्वनिमञ्जरी :	गदसिंह
४१. शब्दमाला :	गोपीनाथ
४२. नामावली :	गोवर्धन
४३. शब्दसागर :	गोविन्दशर्मा
४४. शब्दचन्द्रिका :	चक्रपाणिदत्त
४५. अभिधानतन्त्र :	जटाधराचार्य
४६. निघण्टु :	जैमिनि
४७. कोमलकोषसंग्रह :	तीर्थस्वामी
४८. गीर्वाणभाषाभूषण :	त्रिविक्रमाचार्य
४९. नानार्थरत्नमाला :	दण्डनाथ या भास्कर
५०. नाममाला :	सुगं
५१. वैष्णवाभिधान :	देवकीनन्दन
५२. नानार्थसमुच्चय :	धरणीश
५३. कविजीवन :	धर्मराज
५४. बालप्रबोधिका :	तरिकरकवि
५५. वर्णाभिधान :	नन्दनभट्टाचार्य
५६. राजनिघण्टु :	नरसिंहपण्डित
५७. राजवल्लभ :	नारायणदास
५८. रत्नकोष :	नरसिंहमुनि
५९. भूरिप्रयोग :	पद्मनाभ



ग्रन्थ-नाम	ग्रन्थकार-नाम
६०. शीघ्रबोधिनीनाममाला :	पुण्डरीकविट्ठल
६१. वर्णदेशन :	पुरुषोत्तमदेव
६२. रत्नकोष :	पृथ्वीधराचार्य
६३. शब्दचन्द्रिका :	बाणभट्ट
६४. निघण्टुकैकाध्याय :	बाल्लिकेयमिश्र
६५. त्रिरूपकोष :	विल्लण
६६. नामसंग्रहनिघण्टु :	भागवाचार्य
६७. नाममाला :	भोजराज
६८. मङ्गलकोष :	मङ्गल
६९. शब्दरत्नावली :	मथुरेश
७०. पदचन्द्रिका :	मयूरभट्ट
७१. अनेकार्थतिलक :	प्रदीप
७२. शब्दरत्नाकर :	"
७३. एकाक्षरनिघण्टु :	माधव
७४. सुप्रसिद्धपदमञ्जरी :	मुरारि
७५. आयुर्वेदपर्यायरत्नमाला :	रत्नमालाकर
७६. शब्दार्थनिर्णय :	राक्षस
७७. कविदर्पणनिघण्टु :	राम
७८. उणादिकोष :	रामशर्मा
७९. शब्दमाला :	रामेश्वर
८०. रूपमञ्जरीनाममाला :	रूपचन्द्र
८१. नाममालानिघण्टु :	वरदराज
८२. ऐन्द्रनिघण्टु :	वररुचि
८३. कविमञ्जरी :	वसुध
८४. शब्दरत्नाकर :	वामनभट्ट
८५. कविदीपिकानिघण्टु :	विक्रमादित्य
८६. शब्दार्थचिन्तामणि :	विट्ठलाचार्य
८७. कोषकल्पतरु :	विश्वनाथ
८८. शब्दार्थकल्पतरु :	वेङ्कट
८९. शाब्दिकविद्वत्कवि- प्रमोदक :	"
९०. दशदीपनिघण्टु :	वेदान्ताचार्य

ग्रन्थ-नाम	ग्रन्थकार-नाम
९१. संयमिनाममाला	: शङ्कर
९२. शिवकोष	: शिवदत्त
९३. द्विरूपकोष	: श्रीहर्ष
९४. श्लेषार्थपदसंग्रह	: "
९५. एकाक्षरनिघण्टु	: सदाचार्य
९६. लिङ्गप्रकाश	: सारेस्वर
९७. भुवनप्रदीपिका	: सार्वभौममिश्र
९८. शब्दरत्नाकर	: सुन्दरगणि
९९. अनेकार्थतिलक	: सोमभव
१००. एकार्थनाममाला	: सीभरी
१०१. द्व्यक्षरनाममाला	: "

### अविदित-ग्रन्थ-नामवाले कोषकार

१०२. अमरदत्त	११७. राजमुकुट
१०३. कृत्य	११८. रुद्र
१०४. गङ्गाधर	११९. धरणीधर
१०५. चन्द्रगोमि	१२०. वाग्भट
१०६. तारपाल	१२१. सर्वधर
१०७. दामोदर	१२२. वाचस्पति
१०८. धर्मदास	१२३. राजदेव
१०९. बोपालित	१२४. वामन
११०. भागुरि <sup>१</sup>	१२५. मुकुट
१११. भोगीन्द्र	१२६. विक्रमादित्य
११२. मङ्गल <sup>१</sup>	१२७. विश्वरूप
११३. मार्तण्ड	१२८. भट्टमल्ल
११४. रन्तिदेव	१२९. व्याडि
११५. रभसपाल	१३०. विश्वलोचन <sup>३</sup>
११६. राजशेखर	१३१. शुभाङ्क

१. इनका रचित 'त्रिकाण्डकोष' है। ( द्रष्टव्य : वाचस्पति गैरोला-रचित सं० साहित्यका इतिहास, पृ० ६२० )

२. इनकी रचना 'मङ्गलकोष' है।

३. इनका रचित 'विश्वलोचनकोष' है, जो सूरतसे प्रकाशित है।



१३२. सोमनन्दी  
१३३. सज्जन  
१३४. साहसाङ्क

१३५. हृष्टचन्द्र  
१३६. हर  
१३७. कात्यायन

### अविदित कर्तृनामक, विदित-ग्रन्थनामक कोष

१३८. अमरमाला<sup>१</sup>  
१३९. असालतिप्रकाश  
१४०. आनन्दकोष  
१४१. एकवर्णसंग्रह  
१४२. एकाक्षरकोष  
१४३. उत्पलिनी  
१४४. ऊष्मविवेक  
१४५. अजय  
१४६. अरुण  
१४७. इन्दुकोष  
१४८. कल्पतरुकोष  
१४९. ग्रहाभिधान  
( दैवज्ञमुखमण्डन )  
१५०. जकारभेद<sup>२</sup>  
१५१. दण्डिकोष  
१५२. सुभूतिकोष  
१५३. धन्वन्तरिनिघण्टु  
१५४. नक्षत्राभिधान  
१५५. देशीकोष  
१५६. नानार्थमञ्जरी  
१५७. नामनिधान  
१५८. पद्मकोष  
१५९. भुम्रकोष  
१६०. चकारभेद  
१६१. बीजकोष

१६२. बृहदमरकोष<sup>३</sup>  
१६३. महाखण्डनकोष  
१६४. पदरत्नावली  
१६५. राजकोषनिघण्टु  
१६६. पुद्गलकोष  
१६७. लिङ्गप्रकाश  
१६८. मुनिकोष  
१६९. वर्णप्रकाशकोष  
१७०. पालकोष  
१७१. वात्स्यायनकोष  
१७२. कोषसार  
१७३. शब्दतरङ्गिणी  
१७४. गङ्गाधर  
१७५. शब्ददीपिका  
१७६. गोवर्द्धनकोष  
१७७. शब्दरत्नसमुच्चय  
१७८. शब्दसारनिघण्टु  
१७९. चन्द्रकोष  
१८०. संसारावर्त  
१८१. चरककोष  
१८२. सकलग्रन्थदीपिका  
१८३. सकारभेद<sup>४</sup>  
१८४. सञ्जीवनी  
१८५. सन्मुखविवृतिनिघण्टु  
१८६. सरसशब्दसरणि

१. कतिपय विद्वान् इसे 'अमरसिंह' रचित कोष मानते हैं ।

२., ४. कतिपय विद्वान् इसे 'बाणभट्ट' की रचना मानते हैं ।

३. कुछ विद्वान् इसे 'अमरसिंह' की कृति मानते हैं ।

१८७. सरस्वतीनिघण्टु

१९०. सारस्वताभिधान

१८८. साध्यकोष

१९१. हनुमन्निघण्टु

१८९. रत्नकोष

१९२. सिद्धौषधनिघण्टु

( ग ) श्री वाचस्पति गैरोला जीने अपने संस्कृत साहित्यके इतिहासमें पाणिनि-द्वारा एक 'द्विरूपकोष' लिखे जानेका उल्लेख किया है ( पृ० ६३४ ) । इस आधारपर यह कहा जा सकता है कि उन्हीं गैरोला जीके उक्त इतिहास-में ( पृ० ६३३ ) उद्धृत 'सत्यव्रत सामश्रमी'के मतानुसार पाणिनिका सत्ता-काल ई० पू० २४०० वर्ष मान लिया जाय तो पाणिनि-रचित उक्त 'द्विरूपकोष'-का रचना-काल आजसे लगभग साढ़े चार सहस्र वर्ष पूर्व ही होना सिद्ध होता है । इतना ही नहीं, अपि तु श्री गैरोला जीने उसी इतिहासमें 'भागुरि'की कृतियों-में 'त्रिकाण्डकोष' होनेका उल्लेख किया है । उक्त 'भागुरि' का समय ई० पू० ३१०० वर्ष ( उक्त इति० पृ० ६२० ) होनेसे यह स्पष्ट हो जाता है कि कम-से-कम आजसे लगभग ६००० वर्ष पहले ही लौकिक-कोष-रचनाका श्रीगणेश हो चुका था ।

इसके अतिरिक्त महावैयाकरण आपिशलि, शाकटायन, व्याडि, पतञ्जलिने भी कोषोंकी रचना की थी ( वही इतिहास पृ० ७७७-७७९ ) ।

लौकिक-कोष-रचनामें जैनाचार्योंका भी प्रमुख हाथ रहा है । इनके रचित उपलब्ध कोषोंमें 'हरिषेण'रचित 'बृहत्कयाकोष' सबसे विशाल एवं प्राचीन कोष है । इनका समय शक ८५३ ( ई० ९६९ ) है । इनका रचित उक्त कोष १२५०० श्लोकोंमें पूर्ण हुआ है । ( गैरोला, सं० सा० का इति० पृ० ७८१ ) ।

### आचार्य यादवप्रकाश—

इसी लौकिक-कोष-रचनाके सन्दर्भमें आचार्य 'यादवप्रकाश'ने प्रकृत 'वैजयन्तीकोष'की रचना की । आप विशिष्टाद्वैतवादी ब्राह्मण थे । ये 'तामिलनाडु' राज्यान्तर्गत 'काञ्चीपुरम्' या 'काञ्जीवरम्'के निकटवर्ती 'तिरुप्पुटकुलि' या 'गृध्रसरस' ग्रामके निवासी थे । पहले आप कट्टर अद्वैतवादी श्रीशङ्कराचार्यके मतानुयायी थे । इन्होंने 'ब्रह्मसूत्र'पर एक 'यादवभाष्य' लिखा था और उसे ये 'शाङ्करभाष्य'के साथ-साथ अपने शिष्योंको पढ़ाया करते थे । कहा जाता है कि 'तिरुप्पुटकुलि'में स्थित 'विजयराघव स्वामी-मन्दिर'में दो साधुओंकी मूर्तियाँ हैं, उनमें-से एक मूर्ति एक दण्ड धारण किये हुए अद्वैतवादी आचार्य 'यादवप्रकाश'की है और दूसरी त्रिदण्ड धारण किये हुए विशिष्टाद्वैतवादी 'रामानुजाचार्य'की है । एक बार अपने शिष्य रामानुजाचार्यके साथ शास्त्रार्थ होनेपर आचार्य यादवप्रकाश विशिष्टाद्वैतवादी होकर त्रिदण्ड धारण कर लिये ।



इसका प्रमाण यह दिया जाता है कि 'काञ्चीपुरम्' में स्थित 'वरदाचार्य स्वामी'-के मन्दिरकी भित्तिपर एक चित्रमें त्रिदण्ड धारण किये हुए आचार्य 'यादव-प्रकाश' अपनी शिष्य-मण्डलीके साथ चित्रित हैं। शिष्य-मण्डलीमें रामानुजाचार्यका भी चित्र है।

आचार्य यादवप्रकाशने 'पिङ्गल छन्दःसूत्र'पर भी भाष्य लिखा था। इनके रचे हुए 'यतिधर्मसमुच्चय' नामक ग्रन्थका वैष्णव-सम्प्रदाय में बहुत आदर है। आप जीवनके अन्तिम दिन तक वैष्णव संन्यासीके रूपमें 'काञ्चीवरम्' में ही रहे।

उपयुक्त द्विशताधिक कोषोंके अतिरिक्त भी अन्यान्य-कोषोंके प्रमापक वचनों-का उद्धरण यत्र-तत्र संस्कृत ग्रन्थोंकी व्याख्याओंमें उपलब्ध होनेसे उक्त कोषा-तिरिक्त अन्य कोषग्रन्थोंका अस्तित्व भी सिद्ध होता है। एतदतिरिक्त अर्वाचीन कतिपय विद्वानोंने और भी संस्कृत कोषोंकी रचना की है, जिनमें कुछ निम्नलिखित हैं—

१. उपनिषद्वाक्यकोष	:	कनल जी० ए० जाकोब
२. उपनिषद्वाक्यमहाकोष	:	गजाननके पुत्र शम्भु साधसे
३. कविकर्पटिका	:	दादीन्द्रकवि
४. कोषकल्पतरु	:	विश्वनाथ
५. कोषकौमुदी	:	रामदत्तत्रिपाठीशास्त्री
६. कोषसंग्रह	:	
७. कोषावतंस	:	राघवकवि
८. तिङन्ताणवतरणि	:	
९. धर्मकोष	:	श्रीलक्ष्मणशास्त्री
१०. भोटसंस्कृताभिधान	:	लोकेशचन्द्र
११. भीमांशकोष	:	केवलानन्दसरस्वती
१२. शिवकोष	:	शिवदत्त
१३. आख्यानकमणिकोष	:	
१४. वाङ्मयाणव	:	पं० रामावतारशर्मा
१५. वाचस्पत्यम्	:	तर्कवाचस्पति तारानाथभट्टाचार्य
१६. शब्दकल्पद्रुम	:	राधाकान्तदेवबहादुर
१७. वास्तुरत्नकोष	:	
१८. देशीनाममाला	:	हेमचन्द्राचार्य

### वैजयन्ती कोषका वैशिष्ट्य—

यह कोष कुल आठ काण्डोंमें पूरा हुआ है। इसे दो भागोंमें विभक्त किया जा सकता है—एक पर्याय-भाग तथा दूसरा नानार्थ-भाग। प्रथम पर्याय-भागमें

पाँच काण्ड हैं—१ स्वर्गकाण्ड, २ अन्तरिक्षकाण्ड, ३ भूमिकाण्ड, ४ पाताल-काण्ड और ५ सामान्यकाण्ड । उनमें क्रमशः ३, ४, ९, ४ और ४ अध्याय तथा कुल २३७० श्लोक हैं । द्वितीय पर्याय-भागमें तीन काण्ड हैं— १ द्व्यक्षरकाण्ड, २ त्र्यक्षरकाण्ड और ३ सामान्यकाण्ड; इनमें क्रमशः ४, ४ और ९ अध्याय तथा कुल ८४२ श्लोक हैं । ग्रन्थकारने अन्तमें ग्रन्थप्रशस्तिके ४ श्लोक दिये हैं, इस प्रकार सम्पूर्ण ग्रन्थकी श्लोक-संख्या ३२१६ अर्थात् अमरकोषसे द्विगुणाधिक है ।

महाकाव्यों एवं कोषादिकोंके संस्कृतव्याख्याकार मल्लिनाथ, नारायण, क्षीरस्वामी, भानुजिदीक्षित, सवंधेव, महेश्वर, मुकुट आदिने 'इति यादवः, इति वैजयन्ती' लिखकर अपनी-अपनी व्याख्याओंकी पुष्टिके लिए स्थान-स्थानपर इस कोषके बहुशः उद्धरण दिये हैं । इन उद्धरणोंमें अधिकांश नानार्थ-भागोक्त अंशों-का ही प्रयोग किया गया है ।

यादवप्रकाश जिसका पर्याय कहना आरम्भ करते हैं, उससे सम्बद्ध समस्त विषयोंका साङ्गोपाङ्ग वर्णन कर देते हैं । उदाहरणार्थ इसका कुछ दिग्दर्शन नीचे कराया जाता है—

(क) 'अग्निवैश्वानरः.....' ( १।२।१४ ) से आरम्भकर 'अग्नि'-के पर्यायवाचक शब्द कहनेके उपरान्त तत्सम्बद्ध 'अग्निप्रिया, स्कन्धामि, काष्ठामि, तुषाग्नि, करीषाग्नि, मेघाग्नि, प्रेतदाहा ( चिता )ग्नि, दैत्याग्नि, पित्र्यग्नि, यज्ञाग्नि, ऋत्विग्नि, विवाहाग्नि आदि समस्त अग्नियोंका पृथक्-पृथक् नाम-निर्देश किया गया है ।

(ख) ब्राह्मणादि वर्णचतुष्टयका पर्याय वर्णन करनेके बाद 'उपवर्णास्तु सङ्कीर्णाः.....' ( ३।५।२ ) से आरम्भकर वर्णसङ्कर जातियोंकी उत्पत्ति एवं उनके नामोंका निर्देश विशद रूपसे किया गया है । तदनन्तर 'एषां लक्षणसिद्धयर्थं केवाञ्चिद् वृत्तिरुच्यते.....' ( ३।४।६४ ) से 'गरानलप्रयोगादव प्रोच्यन्ते दस्युजातयः' ( ३।५।१०८ ) तक प्रकरणागत इन वर्णसङ्कर जातियोंकी जीवि-कादिका विस्तारके साथ वर्णन किया गया है ।

(ग) इसी तृतीय काण्डके षष्ठाध्यायमें कापोत, औदुम्बर, भिक्षु, व्युष्टि, सौमिक, बलिक, नीस, पुष्पाढ्य, द्विकालिक, शीर्णिक, मूलिक, पातालमूलिक, अम्नाव-काशिक, शिवन्नती, सन्नती, अहिन्नती आदि-आदि व्रतियों एवं तप्तकृच्छ्र, अतिकृच्छ्र, चान्द्रायणादि बहुविध व्रत साङ्गोपाङ्ग वर्णित हैं । ( ३।६।२५—१४९ )

(घ) 'शुक्ले शुभ्रशुचिद्वेताः.....क्रिमिरः सितलोहितः' ( ५।१।१०—५।३।२५ ) द्वारा श्वेतादि वर्णोंका पृथक्-पृथक् पर्याय एवं दो-दो, तीन-तीन वर्णों ( रङ्गों ) के मिश्रणसे बने हुए वर्णोंके नामोंका अत्यन्त विस्तारके साथ



वर्णनकर 'मधुरस्तु रसज्येष्ठो.....'( ५।३।२५ )से षड्रसोंका सामान्यतः पर्याय-निर्देश करनेके पश्चात् एकाधिक ( दो, तीन, चार और पांच ) रसोंके सम्मिश्रणसे निष्पन्न रसों ( स्वादों ) के नाम अलग-अलग '—त्रिवष्टिस्तु ततो रसाः' ( ५।३।४५ ) कहे गये हैं, इस प्रकार छः रसोंके मिश्रणसे बने ६३ रसोंका नाम-निर्देश करना ग्रन्थकारकी प्रतिभाका अनुपम उदाहरण है ।

उपर्युक्त दिग्दर्शनमात्रसे 'स्यालीपुलाक' न्याय-द्वारा यह स्पष्ट हो जाता है कि विषयान्तरोके समाविष्ट होनेसे अन्यान्य कोष आकृति एवं श्लोक-सङ्ख्याकी दृष्टिसे विशाल भले ही हों, किन्तु ऐसा विशद वर्णन किसी भी कोषमें उपलब्ध नहीं है ।

**आधुनिक संस्कृत-साहित्यके इतिहास-ग्रन्थोंमें कोषकी उपेक्षा ?**

संस्कृत साहित्यके इतिहासोंके लेखक महानुभावोंने अपने-अपने ग्रन्थोंमें इतिहास, वेद, ब्राह्मण, उपनिषद्, पुराण, काव्य, नाटक, छन्द, चम्पू, आख्यायिका नीतिशास्त्र आदिके विषयमें तो स्वतन्त्र शीर्षक देकर सैकड़ों पृष्ठ लिखनेका कष्ट किया है, किन्तु इतनी बड़ी संख्यावाले ( लगभग २२५ से भी अधिक ) लौकिक संस्कृत कोषोंके विषयमें उन इतिहास-लेखक महानुभावोंकी वाच्यमिता तथा बद्धमुष्टिता देखकर महान् आश्चर्य एवं खेद होता है । कोषके विषयमें और विशद विवेचन करनेके लिए मैंने बड़े-बड़े धुरन्धर विद्वानोंके लिखे दर्जनों संस्कृत साहित्य-के इतिहास-ग्रन्थोंके पन्ने उलटे, किन्तु किसीमें भी उपर्युक्त लौकिक संस्कृत कोषोंके विषयमें प्रायः कुछ नहीं पा सका । संभवतः इसका प्रधान कारण यह है कि वैदिक एवं अन्य संस्कृत साहित्यके अनुसन्धानमें अधिकतम द्रव्य-राशि एवं समय लगाकर उक्त सं० साहित्यका उद्धार करनेका प्रशस्त श्रेय प्राप्तकर भी अमर-भाषा संस्कृतको मृत भाषा कहनेवाले संस्कृत साहित्यके कुछ अंग्रेज इतिहास-लेखकोंका अनुकरण करनेवाले हमारे भारतीय, संस्कृत साहित्यके इतिहास-लेखकोंने भी लौकिक संस्कृत कोषोंपर कुछ लिखनेकी कृपादृष्टि करना उचित या आवश्यक नहीं समझा । मैं श्रीवाचस्पति गैरोलाजीको धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने अपने 'संस्कृत साहित्यका इतिहास' ग्रन्थमें 'कोश'को स्वतन्त्र शीर्षक देकर इसके विषयमें विशदरूपसे तो नहीं, किन्तु कुछ लिखनेकी उदारता प्रदर्शित की है ।

**आत्म-निवेदन—**

अध्ययन-कालसे ही कोष-ग्रन्थोंकी ओर अपना प्रबल झुकाव होनेसे मैंने सर्व-प्रथम 'अमरकोष'की, राष्ट्रभाषा हिन्दीमें 'मणिप्रभा' व्याख्या, 'अमरचन्द्रिका' नामक टिप्पणीके साथ लिखी, प्रकाशन होनेपर विद्वत्समाजने उसे अपनाकर

अन्यान्य ग्रन्थ लिखनेके लिए मुझे प्रोत्साहित किया। फलस्वरूप 'हेमचन्द्राचार्य'कृत 'अभिधानचिन्तामणि'की भी राष्ट्रभाषा हिन्दीमें ही 'मणिप्रभा' व्याख्या लिखनेके बाद मैंने श्रीभानुजिदीक्षित-विरचित 'व्याख्यासुधा' (रामाश्रमी) सहित 'अमरकोष'-के सम्पादनका कार्य हाथमें लिया। उक्त व्याख्यामें उद्धृत सूत्रों एवं ग्रन्थान्तरीय प्रमापक वचनोंको उपलब्ध तत्तद्ग्रन्थोंसे मिलानकर उन सबोंका स्थल-निर्देश तथा त्रुटिपूर्ति करते हुए राष्ट्रभाषा हिन्दीमें 'प्रकाश' व्याख्याके साथ उसका सम्पादन किया। इन दोनों ग्रन्थोंको भी अपनाकर गुणग्राही विद्वद्गणने मेरा द्विगुणित उत्साह बढ़ाया। ये दोनों ग्रन्थ बहुत समयसे अप्राप्य थे।

इनके अतिरिक्त, अपने गुरुजनोके आदेश, सुहृद्वर्गकी सन्नाहना एवं सहानुभूति पूर्ण प्रेरणासे उत्साहित होकर मैंने महाकवि कालिदास रचित 'रघुवंश' महाकाव्य, माघ-रचित 'शिशुपालवध' महाकाव्य, श्रीहर्षरचित 'नैषधचरित' महाकाव्य, मनु-प्रणीत 'मनुस्मृति' ग्रन्थोंकी गुत्थियोंको 'विमर्श'में स्पष्ट करते हुए राष्ट्रभाषा हिन्दी में ही 'मणिप्रभा' व्याख्या लिखी। उपर्युक्त सभी ग्रन्थ 'चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी'के द्वारा यथासमय प्रकाशित होकर सर्वजन-सुलभ हो गये हैं और नीर-क्षीर-विवेकी हंसके समान गुणैकपक्षपातपरायण विद्वत्समाजने इन्हें अपनाकर मुझे तथा प्रकाशकको अपने-अपने कार्यमें उत्तरोत्तर आगे बढ़ते हुए संलग्न रहनेके लिए समय-समयपर प्रोत्साहित किया है।

### प्रकृत ग्रन्थका सम्पादन—

महाकाव्य आदिके संस्कृत व्याख्याकारोंके द्वारा प्रकृत 'वैजयन्तीकोष'के उद्धरण देख-देखकर इसे भी सर्व-जन-सुलभ करानेकी मेरी प्रबल आकाङ्क्षा बहुत दिनोंसे हो रही थी। इसे उपलब्ध करनेके लिये स्वयं तथा मित्रों-द्वारा बम्बई, शालरापाटन, व्यावर आदि स्वपरिचित बड़े-बड़े पुस्तकालयोंके साथ पत्राचार करनेपर भी मैं सफल नहीं हो सका। किन्तु सुलतानगंज (भागलपुर)में स्थित राजकीय संस्कृतोच्च विद्यालयसे स्थानान्तरित होकर जब मैं 'आरा'में आया, तब कुछ वर्षोंके उपरान्त वार्ता-प्रसङ्गमें इस कोषकी चर्चा आनेपर मेरे अन्यतम मित्र डॉ० नेमिचन्द्रजी शास्त्री एम० ए० (संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी), ज्योतिषाचार्य, अध्यक्ष संस्कृत विभाग, "जैन महाविद्यालय, आरा"ने इस 'वैजयन्तीकोष'की अत्यन्त प्राचीन प्रति मुझे देनेकी कृपा की। जो अत्यन्त जीर्ण-शीर्ण होनेके कारण प्रेसमें मुद्रणार्थ देने योग्य नहीं थी। अतः मैंने बड़ी सावधानीसे इसकी पाण्डुलिपि तैयार की है। लिङ्गनिर्देशपूर्वक इसकी शब्दसूची तैयार करनेमें मुझे अनेक कोषोंका अध्ययन करना पड़ा है। पाठकोंको इससे अधिक सीविध्य प्राप्त होगा। सर्वांगपूर्ण पाण्डुलिपि तैयार हो जानेके बाद

मैंने सहस्रों अलभ्य संस्कृत ग्रन्थ-रत्नोंके प्रकाशक 'चीखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी'के संचालक महोदयको प्रकाशनार्थ इसे दी और उन्होंने इसको प्रकाशित करनेकी सहर्ष स्वीकृति दे दी, जिसके फल-स्वरूप अत्यन्त दुर्लभ एवं महत्त्वपूर्ण इस ग्रन्थ-रत्नको सर्व-सुलभ होनेका सत्तीभाग्य प्राप्त होने जा रहा है।

मैं 'अमरकोष' तथा 'अभिधानचिन्तामणि' कोषद्वयके समान ही इसकी भी राष्ट्रभाषा हिन्दीमें विशद व्याख्या लिखना प्रारंभ कर दिया था, किन्तु सांसारिक विविध कारणोंसे मेरी इच्छा त्वरित पूरी नहीं हो सकी—प्रस्तुत संस्करणमें हिन्दी व्याख्याका समावेश नहीं हो सका। अगले संस्करणको हिन्दी व्याख्यासे समन्वित कर अपनी चिराकांक्षा पूर्ण करनेका प्रयास करूँगा।

### आभार-प्रदर्शन—

सर्वप्रथम 'डा० श्री गुस्ताव आपर्ट, पी० एच्० डी०, अध्यापक संस्कृत तथा तुलनात्मक भाषाविज्ञान, प्रेसीडेंसी महाविद्यालय, मद्रास'का बहुत आभारी हूँ, जिनके द्वारा सम्पादित ग्रन्थको आधार मानकर मैं इस ग्रन्थका सम्पादन-कार्य करनेमें समर्थ हो सका हूँ। तदनन्तर अपने स्नेही डॉ० नेमिचन्द्रजी शास्त्री, डी० लिट०, का तथा उन्हींके सनामा, 'जैन सिद्धान्त भवन, आरा'के वर्तमान पुस्तकालयाध्यक्ष श्री नेमिचन्द्र शास्त्री, एम० ए०, साहित्याचार्य'का अतिशय आभार मानता हूँ, जिनकी कृपासे इस पुस्तककी मूल प्रति उपलब्ध हुई, और ग्रन्थके प्रकाशनान्ततक मेरे पास रहकर प्रमादादि दोषवश उपस्थित सन्देहोंका निराकरण करनेमें सहायिका होती रही। 'संस्कृत साहित्य-का इतिहास' ग्रन्थके लेखक श्री वाचस्पति गैरोलाका भी मैं आभारी हूँ, जिनका ग्रन्थ इस भूमिकाके लिखनेमें सहायक हुआ है। चीखम्बा संस्कृत सीरीजके प्रमुख कार्यकर्ता एवं मेरे परम मित्र व्या० आ० प० श्रीरामचन्द्र भाजीको भूरिशः धन्यवाद देता हूँ, जिनकी देख-भाल एवं सहयोगमें यह ग्रन्थ अपेक्षाकृत शीघ्र और शुद्ध प्रकाशित हो रहा है। इस ग्रन्थके सम्पादन-कालमें अपना निरन्तर सहयोग देनेवाले स्नेहभाजन अपने आत्मज चि० श्री रामकिशोर मिश्रको बहुशः आशीर्वाद-प्रदान करता हूँ।

अन्तमें अत्यन्त दुर्लभ या अमुञ्चित परमोपयोगी सहस्रशः संस्कृत ग्रन्थोंके प्रकाशक 'चीखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस' तथा 'चीखम्बा विद्याभवन, वाराणसी', के वर्तमान प्रमुख व्यवस्थापक बन्धुयुगल ( चि० श्री मोहनदास गुप्त एवं श्री विठ्ठलदास गुप्त )को भी साशीर्वाद भूरिशः धन्यवाद देता हुआ मैं भगवान्से प्रार्थना करता हूँ कि उक्त दोनों बन्धु अपने परिवारके सहित



स्वस्थ, सुखी एवं उत्तरोत्तर ऐश्वर्य-सम्पन्न होकर चिरायु हों तथा अपने पूर्वजों-के समान संस्कृत साहित्यके उद्धारमें सदा संलग्न रहें। इस ग्रन्थके सम्पादन एवं प्रकाशनमें अन्यान्य जिन महानुभावोंकी कृतियों या प्रकारान्तरसे सहायता मिली है उन सबोंके प्रति आभार-प्रदर्शन करता हूँ।

इस सृष्टिमात्रमें जगन्त्रियन्ता परात्पर परब्रह्म परमात्माके अतिरिक्त कोई भी प्राकृत प्राणी सर्वथा निर्भ्रान्त नहीं हो सकता, अतः इस ग्रन्थके सर्वतो-भावेन शुद्ध होनेका दावा करना मुझ-जैसे अल्पज्ञके लिए सर्वथा अशक्य है। इस कारण मैं गुणग्राही विद्वज्जनोंसे करबद्ध प्रार्थना करता हूँ कि मेरे लिखने, अत्यन्त सूक्ष्माक्षरोंके संयोजन एवं संशोधन करनेमें प्रमाद या मानव-सुलभ भ्रान्ति-वशा कोई अशुद्धि रह गई हो तो वे मुझे क्षमा करते हुए सूचित करें, जिससे उसका निराकरण अग्रिम-संस्करणमें किया जा सके। क्योंकि—

‘नैवानवद्यं जगतीह किञ्चिन्न

वाऽप्यवद्यं किल वस्तुजातम् ।

ततो बुधा आददते गुणान् हि

हंसा यथा क्षीरपयोधिवेकात् ॥

तथा—

‘गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः ।

हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः ॥’

इति नाम् ॥

‘गोविन्द-कुटीर’

केसठ ( शाहाबाद )

हरिप्रबोधिनी ११

सं० २०२८ वि०

विद्वज्जनविधेयः—

मिश्रोपाह्व हरगोविन्द शास्त्री



## विषय-सूची

विषय	पृष्ठाङ्क
प्रस्तावना	७-२३
१. परिभाषा	१
( पर्याय-भाग : काण्ड १-५ )	२-१५८
( १ ) स्वर्गकाण्ड—	२-१०
१. आदिदेवाध्याय	१
२. लोकपालाध्याय	२
३. यक्षाध्याय	१०
( २ ) अन्तरिक्षकाण्ड—	११-२४
१. ज्योतिरध्याय	११
२. मेघाध्याय	१७
३. खगाध्याय	१८
४. शब्दाध्याय	२२
( ३ ) भूमिकाण्ड—	२५-१०७
१. देशाध्याय	२५
२. शैलाध्याय	२९
३. वनाध्याय	३२
४. पशुसंग्रहाध्याय	४७
५. मनुष्याध्याय	५२
६. ब्राह्मणाध्याय	६०
७. क्षत्रियाध्याय	७५
८. वैश्याध्याय	८९
९. शूद्राध्याय	९९
( ४ ) पातालकाण्ड—	१०८-१३६
१. सरीसृपाध्याय	१०८
२. जलाध्याय	११२
३. पुराध्याय	११६
४. भूताध्याय	१२७



( ५ ) सामान्यकाण्ड	...	१३७-१५८
१. गणाध्याय	...	१३७
२. धर्मकर्मध्याय	...	१४२
३. गुणाध्याय	...	१४५
४. अर्थवल्लिङ्गाध्याय	...	१४९
( नानार्थभाग : काण्ड ६-८ )	...	१५९-२२४
( ६ ) द्व्यक्षरकाण्ड—	...	१५९-१७२
१. पुलिङ्गाध्याय	...	१५९
२. स्त्रीलिङ्गाध्याय	...	१६४
३. नपुंसकलिङ्गाध्याय	...	१६८
४. अर्थवल्लिङ्गाध्याय	...	१७१
५. नानालिङ्गाध्याय	...	१७३
( ७ ) त्र्यक्षरकाण्ड—	...	१८०-१९८
१. पुलिङ्गाध्याय	...	१८०
२. स्त्रीलिङ्गाध्याय	...	१८६
३. नपुंसकलिङ्गाध्याय	...	१८८
४. अर्थवल्लिङ्गाध्याय	...	१९१
५. नानालिङ्गाध्याय	...	१९३
( ८ ) शेषकाण्ड—	...	१९९-२२४
१. पुलिङ्गाध्याय	...	१९९
२. स्त्रीलिङ्गाध्याय	...	२०४
३. नपुंसकलिङ्गाध्याय	...	२०६
४. अभिधेयवस्तिङ्गाध्याय	...	२०८
( अर्थवल्लिङ्गाध्याय )	...	२१०
५. नानालिङ्गाध्याय	...	२१३
६. पर्यायसंयोगन्यायप्रदर्शनाध्याय	...	२१५
७. अनेकार्थाव्ययाध्याय	...	२१८
८. अव्ययपर्यायाध्याय	...	२२०
९. लिङ्गसंग्रहाध्याय	...	२२५
ग्रन्थोपसंहार	...	२२७
परिशिष्ट	...	२२७
शब्दानुक्रमणिका	...	१-१७०

॥ श्रीः ॥

# वैजयन्तीकोषः



## अथ परिभाषाध्यायः

ओंकारार्थाय तत्त्वाय वाच्यवाचकशक्तये ।  
ब्रह्मसंज्ञाय पूर्वेषां गुरुणां गुरवे नमः ॥ १ ॥  
प्रकाश्याष्टविधं लिङ्गं निर्लिङ्गं वचनानि च ।  
वैजयन्तीति विख्यातं क्रियते नामशासनम् ॥ २ ॥  
स्त्रीपुन्नपुंसकं लिङ्गं संकीर्णं तच्च पञ्चधा ।  
नृस्त्री नृषण्डषण्डस्त्री त्रिलिङ्गं वाच्यलिङ्गकम् ॥ ३ ॥  
समासलिङ्गाद्विधितः साहचर्यात् पृथक्कृतेः ।  
लिङ्गं विद्यात् प्रयोगाच्च क्तिन् सर्वत्रापि च स्त्रियाम् ॥ ४ ॥  
यत्प्रवृत्तं समासस्य लिङ्गं तत्स्यात् समासिनाम् ।  
विशेषविधितः कापि लिङ्गं तत्राप्ययं क्रमः ॥ ५ ॥  
स्त्रीलिङ्गे स्त्रीत्ययं शब्दः पुंलिङ्गे ना पुमानिति ।  
षण् क्लीनपुमिति क्लीबे ये च षण्डार्थवाचिनः ॥ ६ ॥  
त्रिष्वित्युक्तिर्वाच्यलिङ्गे त्रयीशब्दस्त्रिलिङ्गके ।  
अस्त्रीत्यादि निषेधेषु नृषण्डादीतरद्वयम् ॥ ७ ॥  
ज्ञातैर्लिङ्गैः साहचर्यात् क्वचित् स्याल्लिङ्गनिश्चयः ।  
एकत्र सव पुंलिङ्गाः स्त्रियोऽन्यत्रान्यतो नपुम् ॥ ८ ॥  
इत्येकस्यापि पर्याया लिङ्गायात्र पृथक्कृताः ।  
प्रयोगात् प्रायशो लिङ्गमुदन्तः संशये पुमान् ॥ ९ ॥  
सन्दिग्धद्विवचोऽन्तं स्त्री ना स्याद्बहुवचोऽन्तकम् ।  
समासे स्युः पृथक् सर्वे शब्दा बहुवचोऽन्तके ॥ १० ॥  
न पूर्वशब्दभागत्र पुनस्त्वन्तमथादितः ॥ १०३ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां

वैजयन्त्यां परिभाषाध्यायः ।



## १. अथ स्वर्गकाण्डः

आदिदेवाध्यायः ॥ १ ॥

स्वर्गो नाकः सुरावास ऊर्ध्वलोकः फलोदयः ।  
सौरिको भोगभूमिः स्त्री दिवि द्यौश्च त्रिविष्टपम् ॥ १ ॥  
अमर्त्यभवनं गौश्च त्रिदिवः स्यात्स्वरव्ययम् ।  
देवा निलिम्पा मरुतो गीर्वाणा वायुनाः सुराः ॥ २ ॥  
आदित्या ऋभवोऽस्वप्ना विवस्वन्तो दिवौकसः ।  
आदिदेवा दिविषदो लेखा अदितिनन्दनाः ॥ ३ ॥  
सुपर्वाणः क्रतुभुजो निर्जरा अमृताशनाः ।  
बर्हिर्मुखा विट्पतयस्त्रिदशा हव्ययोनयः ॥ ४ ॥  
अमर्त्याश्चाथ न स्त्री स्याद्देवतं देवता स्त्रियाम् ।  
त्रय एवादिदेवाः स्युर्ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ॥ ५ ॥  
आजानजाः स्वतोदेवाः कर्मदेवास्तु कर्मभिः ।  
ब्रह्मा विधाता विश्वात्मा धाता स्रष्टा प्रजापतिः ॥ ६ ॥  
हिरण्यगर्भो द्रुहिणो विरिञ्चः कश्चतुर्मुखः ।  
पद्मनाभः सुरज्येष्ठश्चिरजीवी सनातनः ॥ ७ ॥  
शतानन्दः शतधृतिः स्वयंभूः सर्वतोमुखः ।  
परमेष्ठी विश्वरेताः पुरुषो हंसवाहनः ॥ ८ ॥  
पद्मभूः प्राणदो वेधा दुघणो नाभिजो विधिः ।  
वाग्वाणी भारती भाषा गौर्गीर्वाह्मी सरस्वती ॥ ९ ॥  
विष्णुर्नारायणो बभ्रुश्चक्रपाणिर्जनार्दनः ।  
दैत्यारिः पुण्डरीकाक्षश्चिककुट्टिष्ठिरश्रवाः ॥ १० ॥  
पीताम्बरो हृषीकेशो विश्वक्सेनश्चतुर्भुजः ।  
श्रीवत्सः श्रीपतिः शार्ङ्गो श्रीवत्साङ्कोऽच्युतो हुणः ॥ ११ ॥  
वासुदेवः स्वभूश्चक्री वैकुण्ठः पुरुषोत्तमः ।  
अरिष्टनेमिरजितः श्रीधरो यज्ञपूरुषः ॥ १२ ॥  
सुखकेशी मुररिपुर्गदापाणिरधोऽक्षजः ।  
अनन्तशायी धृन्दाको मुकुन्दो धरणीधरः ॥ १३ ॥  
शतानन्दः शतावर्तो युगावर्तः सुरोत्तमः ।  
कालकुन्थो रन्तिदेवः केशवो गरुडध्वजः ॥ १४ ॥  
पद्मनाभो विश्वरूपः कृष्णो हरिरसंपुषः ।  
कैटभारिर्ब्रह्मनाभो गोविन्दो मधुसूदनः ॥ १५ ॥  
आचारा वैष्णवी सूक्ष्मा लक्ष्मीः पुष्टिर्निरञ्जना ।



जीवनी मोहनी माया नवैता विष्णुशक्तयः ॥ १६ ॥  
 कौस्तुभोऽस्य मणिर्लक्ष्म श्रीवत्सो नन्दकस्त्वसिः ।  
 चापः शार्ङ्ग पाञ्चजन्यः शङ्खश्चक्रं सुदर्शनम् ॥ १७ ॥  
 कौमोदकी गदाऽथास्य मत्स्याद्यैः समनामकाः ।  
 अवतारा नृसिंहस्तु हिरण्यकशिपुद्विषन् ॥ १८ ॥  
 उपेन्द्र इन्द्रावरजो वामनो बलिकण्टकः ।  
 आदित्यो द्विपदस्तादर्थ्यस्त्रिविक्रम उरुक्रमः ॥ १९ ॥  
 विष्णुश्च जामदग्न्यस्तु रामो दाशरथिः पुनः ।  
 राघवो जानकीकान्तो रामो रावणसूदनः ॥ २० ॥  
 दूषणारिः खरारिश्च कुम्भकर्णारिरेव च ।  
 राक्षसघ्नः सुखकरः कौसल्यानन्दवर्धनः ॥ २१ ॥  
 पार्थिवेन्द्रो धनुष्पाणिर्बलिर्दशरथात्मजः ।  
 रामः संकर्षणः पौरो बलदेवो हलानुधः ॥ २२ ॥  
 बलभद्रः प्रलम्बारिः कालिन्दीकर्षणो हली ।  
 तालाङ्को रेवतीकान्तः सात्त्वतो मुसली बली ॥ २३ ॥  
 भद्राङ्को भद्रवदनः कामपालः सितासितः ।  
 बलो नीलाम्बरश्चाथ तस्य संवर्तकं हलम् ॥ २४ ॥  
 सौनन्दमस्य मुसलं कृष्णो दामोदरोऽद्रिघृत् ।  
 दाशार्हो नरकारातिर्वनमाली गदाग्रजः ॥ २५ ॥  
 शैनिः कंसरिपुः शौरिः सारथिस्तस्य दारुकः ।  
 वसुदेवोऽस्य जनको दुन्दुरानकदुन्दुभिः ॥ २६ ॥  
 प्रद्युम्नो मन्मथः कामो मारो मनसिजः स्मरः ।  
 कन्दर्पो दर्पकोऽनङ्गो मीनाङ्को मकरध्वजः ॥ २७ ॥  
 पुष्पधन्वा रतिपतिः शंबरारिरनन्यजः ।  
 शूर्पकारिर्मधुसखः पञ्चेषुर्विषमायुधः ॥ २८ ॥  
 बन्धुर्वामो जराभीरुर्हृच्छयो मधुसारथिः ।  
 ब्रह्मसूरनिरुद्धः स्याद्दृश्यकेतुरुषापतिः ॥ २९ ॥  
 अथान्ये ह्यवताराः स्युर्नरनारायणावृषी ।  
 अश्वो ह्यशिराः शेषः कपिलो व्यास इत्यपि ॥ ३० ॥  
 दत्तात्रेयश्च कल्की च बुद्धश्चेत्येवमादयः ।  
 कपिलस्तु महाविष्णुर्व्यासः सत्यवतीसुतः ॥ ३१ ॥  
 पाराशर्यो द्वैपायनः कृष्णद्वैपायनोऽपि च ।  
 बुद्धस्तु श्रीघनः शास्ता बोधिसत्त्वो विनायकः ॥ ३२ ॥

समन्तभद्रः सर्वज्ञो मारजिह्नोकजिज्जिनः ।  
 षडभिज्ञो दशबलो धर्मराजस्तथागतः ॥ ३३ ॥  
 मुनीन्द्रः सुगतः शाक्यो मुनिरद्वयवाद्यपि ।  
 शाक्यसिंहस्तु सर्वार्थसिद्धः शौद्धोदनिर्गुरुः ॥ ३४ ॥  
 गौतमश्चार्कबन्धुश्च जिनस्त्वर्हस्त्रिकालदृक् ।  
 अष्टकर्मपरिभ्रष्टो वीतरागश्च केवली ॥ ३५ ॥  
 लक्ष्मीः पद्मालया शक्तिर्मा क्षीरोदसुतेन्द्रिया ।  
 रमान्धिजा भार्गवी च स्त्रीलिङ्गाश्चान्बुजाह्वयाः ॥ ३६ ॥  
 गरुडः काश्यपसुतो गरुत्मानुरगाशनः ।  
 सुपर्णीतनयस्तादर्यो वैनतेयो महेन्द्रजित् ॥ ३७ ॥  
 पन्नगारिविष्णुरथः सुपर्णो विहगाधिपः ।  
 महेश्वरः पशुपतिः श्रीकण्ठः पांसुचन्दनः ॥ ३८ ॥  
 शङ्करो गिरिशो रुद्रो गिरीशः शशिभूषणः ।  
 महेश्वरश्चन्द्रमौलिः पिनाकी शशिशेखरः ॥ ३९ ॥  
 कपर्दी धूर्जटिः शर्वः कपाली नीललोहितः ।  
 ईश ईश्वर ईशानो भर्गो मृत्युञ्जयो मृडः ॥ ४० ॥  
 व्योमकेशो महादेवः प्रमथाधिपतिः शिवः ।  
 शूली दक्षाध्वरारातिः कामारिः परमेश्वरः ॥ ४१ ॥  
 कृत्तिवासा अहिर्बुध्न्यो नीलग्रीवस्त्रिलोचनः ।  
 गङ्गाधरो विरूपाक्षो वामदेवो वृषध्वजः ॥ ४२ ॥  
 भूतेशः खण्डपरशुः स्थाणुरन्धकसूदनः ।  
 भगनेत्रान्तको भीमस्त्रिपुरारिर्दगायुधः ॥ ४३ ॥  
 कटाटङ्को जटाटीरो जटाभाटो महानटः ।  
 फिण्डीकान्तो रेरिहाणः सर्वज्ञो नन्दिवर्धनः ॥ ४४ ॥  
 स्थालो डिण्डीश उड्डीशः कण्ठेकालो महाघ्नतः ।  
 कृतानुरेता जोटिङ्गः कङ्कटीक समापतिः ॥ ४५ ॥  
 खट्वाङ्गी मन्दरमणिरुलन्दो वृषवाहनः ।  
 उग्रः कटप्रदिग्वासा फाण्डः षाण्डोऽकुतश्चनः ॥ ४६ ॥  
 बहुरूपोऽर्धमकुटो दशबाहुर्दशाव्ययः ।  
 ज्ञानं वैराग्यमैश्वर्यं तपः सत्यं क्षमा धृतिः ॥ ४७ ॥  
 स्रष्टृत्वमात्मसम्बन्धोऽप्यधिष्ठातृत्वमित्यपि ।  
 अव्ययानि दशैतानि शम्भोरव्ययमस्त्रियाम् ॥ ४८ ॥  
 वामा ज्येष्ठा शिवा रौद्री चित्तोन्मादकरी सुखा ।  
 काली कलेवरा भूतदमनी चेशशक्तयः ॥ ४९ ॥

कपर्दोऽस्य जटाजूटः खट्वाङ्गोऽस्य सुखङ्घ्रुणः ।  
 पिनाकोऽजगधं युग्यमजगाधमजीगाधम् ॥ ५० ॥  
 प्रमथाः स्युः पारिषदा नन्दी स्यान्नन्दिकेश्वरः ।  
 अथ कूर्ममाण्डकः केलिकिलो गणपतिप्रियः ॥ ५१ ॥  
 भृङ्गरीटः पुनर्भृङ्गी चर्मी भृङ्गिरिटिः शला ।  
 वृषाणो लूनदोर्बाणो भेलुकस्तु कृतालकः ॥ ५२ ॥  
 वीरभद्रस्तु देवाजो विघ्नेशस्तु विनायकः ।  
 लम्बोदरो हस्तिराज एकदन्तो गजाननः ॥ ५३ ॥  
 द्वैमातुरः परशुभृदाखुयानो गणाधिपः ।  
 कुमारः शरजः स्कन्दस्तारकारिरुमासुतः ॥ ५४ ॥  
 महासेनो महातेजाः शक्तिपाणिर्गुहोऽग्निभूः ।  
 वैजयन्तः सिद्धसेनः सेनानीः शिखिब्राह्मणः ॥ ५५ ॥  
 स्वामी गाङ्गेयगौरेयब्रह्मचारिमहौजसः ।  
 घाण्मातुरः कार्तिकेयो ब्रह्मगर्भः षडाननः ॥ ५६ ॥  
 सुब्रह्मण्यो नीलदंष्ट्रः क्रौञ्चारिः कुक्कुटध्वजः ।  
 अस्य शाखो विशाखश्च नैगमेषश्च पृष्ठजाः ॥ ५७ ॥  
 उमा मेनात्मजा रौद्री रुद्राणी सर्वमङ्गला ।  
 आर्याऽद्रिजा महादेवी शर्वाणी पार्वती शिवा ॥ ५८ ॥  
 भ्रामरी रेवती षष्ठी गौतमी बाभ्रवी सती ।  
 अपर्णाऽपरुजा जारी शण्डिली वारुणी हिमा ॥ ५९ ॥  
 बर्हिध्वजा शतमुखी योगिनी परमेष्ठिनी ।  
 सुनन्दा नन्दिनी नन्दा नन्दयन्ती कपालिनी ॥ ६० ॥  
 कालरात्री महारात्री रक्तदन्त्येकपाटला ।  
 एकपर्णा भद्रकाली महाकाली करालिका ॥ ६१ ॥  
 दुर्गा कात्यायनी चण्डी कैटभी सिंहवाहना ।  
 यमेन्द्रकृष्णसैनाकरामाणां भगिनी स्वसा ॥ ६२ ॥  
 विन्ध्यमन्दरकान्तारमलयेभ्यश्च वासिनी ।  
 चर्ममुण्डा तु चासुण्डा चर्चा मार्जारकर्णिका ॥ ६३ ॥  
 कर्णमोटी महाचण्डी महागन्धा कपालिनी ।  
 ब्राह्मी माहेश्वरी चैन्द्री वाराही नारसिंहश्चपि ॥ ६४ ॥  
 कौमारी वैष्णवी चेति ता एताः सप्त मातारः ॥ ६४ ॥  
 इति भगवता यादवप्रकाशेन विरजितायां वैजयन्तां  
 स्वर्गकाण्डे आदिदेवाध्यायः ॥ १ ॥

34/1/5/1

## लोकपालाध्यायः ॥ २ ॥

इन्द्रो दुश्शवनो वज्री वृत्रारिर्वासवो वृषा ।  
 वृद्धश्रवाः शुनासीरः सहस्राक्षो दिवस्पतिः ॥ १ ॥  
 वास्तोष्पतिर्बलरिपुः पुरुहूतः पुरन्दरः ।  
 मघवान् पूर्वदिक्पालः पृतनाषाद् सुराधिपः ॥ २ ॥  
 संक्रन्दनो हरिहयो गोत्रभृत् पाकशासनः ।  
 पुलोमशत्रुर्हरिवानूर्ध्वधन्वा शचीपतिः ॥ ३ ॥  
 कारुर्जम्भरिपुर्जिष्णुर्मरुत्वान् हरिवाहनः ।  
 स्वाराट्मुष्ठाः सुत्रामा विडौजाः सितकुञ्जरः ॥ ४ ॥  
 भूरिश्रवाश्चित्ररथः सुनासीरो युधिष्ठिरः ।  
 परमन्युर्वज्रपाणिः शतमन्युर्विभीषणः ॥ ५ ॥  
 आस्त्रण्डल उग्रधन्वा मेषाण्डोऽप्सरसां पतिः ।  
 स्वदिरो माहिरो दाल्मिः शयीचिर्वियुनो जयः ॥ ६ ॥  
 गौरावस्कन्दिवन्दीकौ वारणो देवदुन्दुभिः ।  
 महेन्द्रो बाहुदन्तेयस्तुराषाड् वज्रदक्षिणः ॥ ७ ॥  
 वृषण्वसु धनाद्यस्य पुराजः शान्तिकर्मकृत् ।  
 सुतो जयो जयन्तश्च जयदत्तोऽप्यथो सुता ॥ ८ ॥  
 जयन्ती देवनन्दी तु द्वाःस्थः सूतस्तु मातलिः ।  
 प्रासादो वैजयन्तोऽस्य वैजयन्तो ध्वजोऽपि च ॥ ९ ॥  
 अमरावत्यस्य पुरी स्यात् सुदर्शनमित्यपि ।  
 अश्वोऽस्य वृषणश्च स्यादारामस्त्वस्य नन्दनम् ॥ १० ॥  
 क्रीडासरो नन्दिसरः क्रीडामूस्त्वस्य नन्दिका ।  
 पुलोमजा शचीन्द्राणी पौलोमी जयवाहिनी ॥ ११ ॥  
 ऐरावतो राथन्तरिरभ्रनागोऽभ्रमुग्रियः ।  
 ऐरावणश्चतुर्दंष्ट्रः सूर्यभ्रातारिमर्दनः ॥ १२ ॥  
 अक्षियौ वज्रकुलिशौ मिदुरं शतधारकम् ।  
 व्याधामः पुंसि दम्भोलिः शतकोटिः पविर्भिदुः ॥ १३ ॥  
 वह्निर्वैश्वानरो घासिः कृष्णवर्त्मा समन्तमुक् ।  
 जातवेदा बृहद्भानुर्वीतिहोत्रस्तनूनपात् ॥ १४ ॥  
 दहनो ज्वलनः शुष्मा रोहिताश्च उषर्बुधः ।  
 शोचिष्केशस्त्रिधामाऽग्निरुदधिः पावकोऽनलः ॥ १५ ॥  
 हिरण्यरेताः सप्तार्चिर्वसुरेता हुताशनः ।  
 कृपीटयोनिरर्चिष्मान् धूमकेतुर्दुरासदः ॥ १६ ॥



मन्त्रजिह्वः सप्तजिह्वः क्षुग्जिह्वो हव्यवाहनः ।  
 आश्रयाशो वातसखः कृशानुर्वीतसारथिः ॥ १७ ॥  
 वमिर्मुजिः पचिः साचिश्चिरिर्वञ्चतिरञ्चतिः ।  
 जागृविः सहुरिः सद्भिर्दमुना हवनो हवः ॥ १८ ॥  
 सृदाकुर्भरथः पीथो जुहुराणेषिराशिराः ।  
 तेजोऽपिप्तमपांपित्तं स्वाहाऽग्नायी च तत्प्रिया ॥ १९ ॥  
 स्कन्धाग्निः स्थूलकाष्ठाभिर्मुर्मुस्तु तुषानलः ।  
 छागणस्तु करीषाभिर्मेघवह्निरिर्मदः ॥ २० ॥  
 कुक्ष्यभिर्हृच्छयोऽथौर्वे द्वौ संवर्तकवाडवौ ।  
 सहरक्षा दवो दुध्रस्तार्णे क्षामतरत्समौ ॥ २१ ॥  
 क्रव्यात्तु प्रेतदाहामिर्देवाग्निर्हव्यवाहनः ।  
 सहरक्षास्तु दैत्यानां पितॄणां कव्यवाहनः ॥ २२ ॥  
 अपोनपात्तु यज्ञाग्निः क्रत्वग्निः स्यादपान्नपात् ।  
 शुक्रान्वाहार्यपचनावध्वरे दक्षिणानिले ॥ २३ ॥  
 गार्हपत्यो गृहपतिः पवमानश्च पश्चिमे ।  
 शंस्य आहवनीयश्च पूर्वोऽभिर्हव्यवाहनः ॥ २४ ॥  
 सभ्यावसथ्यौ तत्पूर्वावायुः स्यात् पाशुबन्धिकः ।  
 पृथिकृद्वर्त्महोमेषु पदहोमेष्वनीकवान् ॥ २५ ॥  
 आधानादिष्वहस्तानः सुरभिर्यूपकर्मणि ।  
 ब्रह्मौदनाभिर्भरतो यविष्ठः सवनाहुतौ ॥ २६ ॥  
 महिमांस्तु विवाहभिर्वैश्वदेवाभिरद्भुतः ।  
 व्रतान्ते बहुरन्नादः सुलभः पाकयज्ञिकः ॥ २७ ॥  
 सव्यस्तु मृतके वह्निरपसव्यस्तु सूतके ।  
 धूमस्तरिर्मेघवाही धूपोऽसौ गन्धवासितः ॥ २८ ॥  
 शिखा जिह्वाचिरपुमान् कीला ज्वाला च नृस्त्रियोः ।  
 मलका तु महाज्वाला प्रवर्यो नीलकोऽपि च ॥ २९ ॥  
 सप्त जिह्वा पुनः काली कराली विष्फुलिङ्गिनी ।  
 धूम्रवर्णा विश्वरुचिलोहिता च मनोजवा ॥ ३० ॥  
 त्रयी स्फुलिङ्गोऽपुञ्जो ना खट्वाङ्गश्चाथ संस्वरः ।  
 सन्तापः स्यात्प्रकाशस्तु द्योत आलोक आतपः ॥ ३१ ॥  
 दीप्ताग्रं काष्ठमुल्का स्यात् क्रमकोऽलातमुल्मुकम् ।  
 अङ्गारोऽस्त्रा प्रशान्ताचिरिङ्गालः कारिकाभिर्विद् ॥ ३२ ॥  
 भसितं भस्म भूतिः स्यादग्न्युत्पात उपाहितः ।

यमः पितृपतिर्दण्डधरो महिषवाहनः ॥ ३३ ॥  
 यमराष्ट्रं यमुनाभ्राता मन्दे वैवस्वतोऽन्तकः ।  
 सावित्रेयः श्राद्धदेवः समवर्ती परेतराट् ॥ ३४ ॥  
 कालः कृतान्तः शमनः कीनाशो दक्षिणाधिपः ।  
 धर्मराजः पुराणान्तः कालकुन्धो विशीर्णपात् ॥ ३५ ॥  
 पत्नी यमस्य धूमोर्णा चित्रगुप्तस्तु लेखकः ।  
 पञ्चिका त्वग्रसन्धानी कालीची तु विचारभूः ॥ ३६ ॥  
 नरको नारकोऽप्येष निरयो दुर्गतिः स्त्रियाम् ।  
 अवीच्यन्ता रौरवाद्याः प्रायशो नरका नरि ॥ ३७ ॥  
 नारका जन्तवः प्रेता यात्या अप्यातिवाहिकाः ।  
 प्रेताः परेता वेताला गन्धर्वाः सत्त्वका ग्रहाः ॥ ३८ ॥  
 यातना कारणा दुःखं त्वामनस्यं प्रसूतिजम् ।  
 स्यात् कष्टं कृच्छ्रमाभीलं त्रिष्वेषां तद्वदर्थकाः ॥ ३९ ॥  
 अथ रक्षांसि यातूनि राक्षसा अललोहिताः ।  
 रात्रिञ्चरा रात्रिचराः क्रव्यात्क्रव्यादनैर्ऋताः ॥ ४० ॥  
 कैकसेया यातुधानाः पुरुषादाः प्रवाहिकाः ।  
 अनुषा विधुरा रक्तग्रहाः शङ्खव आशराः ॥ ४१ ॥  
 अलक्ष्मीर्निर्ऋतिर्ज्येष्ठा रावणस्तु हरान्तः ।  
 दशास्यो विंशतिभुजश्चतुष्पान्मानमन्दिरः ॥ ४२ ॥  
 लङ्केधरो यातुपतिः सन्नाहोऽस्य विचोलकः ।  
 चन्द्रहासस्तु खड्गोऽस्य क्रीडाभूस्त्वमरावली ॥ ४३ ॥  
 अशोकवनिकोद्यानं त्रिशिराः समनीपदः ।  
 इन्द्रजिन्मेघनादः स्यात् ग्रहस्तः स्यादलम्बुसः ॥ ४४ ॥  
 वरुणः शीतलो वामो दुन्दुभिः संवृतोऽप्पतिः ।  
 अम्बुवासोऽम्बुकान्तारः पाशी मकरवाहनः ॥ ४५ ॥  
 प्रचेता यादसाम्नाथः प्रत्यगाशापतिस्तथा ।  
 जलभूषण उहामो गौरी तु वरुणप्रिया ॥ ४६ ॥  
 वातो वायुर्जगत्प्राणः शुषिलः श्वसनोऽनिलः ।  
 गन्धवाहो गन्धवहो मातरिश्वा समीरणः ॥ ४७ ॥  
 युजिनो लघुगो वातिर्ध्वजप्रहरणो जगत् ।  
 दैत्यदेवो बहः प्राणो नभः प्राणोऽङ्कतिः सरः ॥ ४८ ॥  
 आशुगः पवनः स्पर्शः पवमानः प्रभञ्जनः ।  
 मरुद्घृजिध्वजो मर्कः समीरोऽग्निसखञ्चलः ॥ ४९ ॥

शुष्मिर्महाबलो वेगी नभोजातः सदागतिः ।  
 नभस्वान् मारुतः शीघ्रः पृषदश्वः प्रकम्पनः ॥ ५० ॥  
 सङ्क्रावातः सबृष्टिः स्याद्वात्या वातस्तु मण्डली ।  
 मृदुवातश्चिञ्चलिको लेढा लिट् सौरतोऽपि च ॥ ५१ ॥  
 मध्यमो हारितो नेरी यौनिकः स्वेदचूषकः ।  
 खरः स्वरिङ्गणोऽथासौ ग्रीष्मो मङ्गमानिलोऽनिलः ॥ ५२ ॥  
 पयोदान्तस्तु पवनो वसन्तेऽमलपालिकः ।  
 गरवायुर्निदाघेऽल्पः शिशिरे सपुटानिलः ॥ ५३ ॥  
 जारवायुस्तु हेमन्ते शारदः शारणः शरः ।  
 गोगन्धनः पुरोवात उत्तरस्तु हिमानिलः ॥ ५४ ॥  
 रंहस्तरः क्ली प्रसभो जवो वेगः स्यदो रयः ।  
 कुबेरो यक्षराट् यक्षः कुत्तनुः किन्नरेश्वरः ॥ ५५ ॥  
 मनुष्यधर्मैलविलः पौलस्त्यो धनदो धनी ।  
 कैलासनाथस्त्रिशिरा धनाध्यक्षो वटाश्रयः ॥ ५६ ॥  
 निधिपालो वैश्रवणो वित्तेशो नरवाहनः ।  
 राजराजः पराविद्धः किशाली गुह्यकेश्वरः ॥ ५७ ॥  
 एकपिङ्गो रुद्रसखः कुडः पुण्यजनेश्वरः ।  
 इच्छावसू रत्नगर्भो रत्नहस्तः सितोदरः ॥ ५८ ॥  
 अस्योद्यानं चैत्ररथं पुत्रस्तु नलकूबरः ।  
 पुरी कैलाससारास्य विमानं पुष्पकोऽस्त्रियाम् ॥ ५९ ॥  
 निधानं गूढकोशो ना निधिः शेवधिरस्त्रियाम् ।  
 भेदाः पद्मो महापद्मः शङ्खो मकरकच्छपौ ॥ ६० ॥  
 मुकुन्दकुन्दनीलाश्च चर्चश्चेति निधेर्नव ।

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

स्वर्गकाण्डे लोकपालाध्यायः ॥ २ ॥

## यक्षाद्यध्यायः ॥ ३ ॥

स्पर्शानन्दास्त्वप्सरसः सुमदाश्च रतेमदाः ।  
 स्वर्वेश्याश्चाथ स्वापेयो यक्षोऽथ सुरगायनः ॥ १ ॥  
 गन्धर्वो गातुगान्धर्वौ सिद्धाः स्युः सनकादयः ।  
 भूतापुत्रास्तु भूतानि भूताश्च शिवपार्श्वगाः ॥ २ ॥  
 किन्नराः स्युः किम्पुरुषा मयवोऽश्वमुखाश्च ते ।  
 गुह्यका माणिचरयस्तथा देवजनाः सुताः ॥ ३ ॥  
 विद्याधरास्तु युचराः खेचराः सत्ययौवनाः ।  
 पिशाचः स्यात्कापिशेयोऽनृजुर्दर्वश्च पिण्डकः ॥ ४ ॥  
 देवयोनय एते स्युः स्वर्वेश्याद्याः सरक्षसः ।  
 नासत्यदस्त्रौ नासत्यावश्विनौ वरवाहनौ ॥ ५ ॥  
 आश्विनेयौ यज्ञवह्नौ देववैद्यौ वरान्तकौ ।  
 नासिक्यावाश्विनौ दस्त्रौ विश्वकर्मा युवर्धकिः ॥ ६ ॥  
 त्वष्टा नाम स देवानां मयो नाम सुरद्विषाम् ।  
 सनत्कुमारो वैधात्रो नारदः कलहप्रियः ॥ ७ ॥  
 रुद्रा वसव आदित्या विश्वे साध्या मरुद्गणाः ।  
 तुषिता भास्वराद्याश्च बहवो देवतागणाः ॥ ८ ॥  
 मन्वन्तरेषु भिद्यन्ते देवाः सप्तर्षिभिः सह ।  
 असुरा दानवा दैत्या दैतेया देवशत्रवः ॥ ९ ॥  
 पूर्वदेवाः शुक्रशिष्याः रसागोहा हरिद्विषः ।  
 ईदृक्चेत्यादिभिर्मन्त्रैः सदा प्रोक्ता मरुद्गणाः ॥ १० ॥  
 स्वानभ्राडिति गन्धर्वगणा एकादशोदिताः ।  
 सुधर्मा स्यादेवसमा दिव्य उच्चैःश्रवा हयः ॥ ११ ॥  
 मेरुः सुमेरुः स्वर्णाद्रिर्मणिसानुः सुरालयः ।  
 महामेरुर्देवगिरिर्गोधुक् चाथापरेऽद्रयः ॥ १२ ॥  
 तालाङ्का मेरुगण्डाश्च ये मेरुं परितः स्थिताः ।  
 मन्दार्कानी वियद्गङ्गा स्वर्नदी सुरदीर्घिका ॥ १३ ॥  
 पञ्चैते देवतरवो मन्दारः पारिजातकः ।  
 सन्तानः कल्पवृक्षश्च हरिचन्दनमखियाम् ॥ १४ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

स्वर्गकाण्डे यक्षाद्यध्यायः ॥ ३ ॥

प्रथमः स्वर्गकाण्डः समाप्तः ॥ १ ॥



## २. अथान्तरिक्षकाण्डः

ज्योतिरध्यायः ॥ १ ॥

अन्तरिक्षं नभो व्योम गगनं सुरवर्त्म खम् ।  
वियद्विष्णुपदं दिव्यं वायुवर्त्म विहायसम् ॥ १ ॥  
तारावर्त्माम्बरं मेघवर्त्म चाकाशमखियाम् ।  
दिग्दिशाशा ककुब्दीर्णी हरिश्चैवधूः सरिः ॥ २ ॥  
अव्ययीभावोऽपदिशमवान्तरदिशा विदिक् ।  
क्रमात् पूर्वादिदिक्नाथा इन्द्राद्याः शङ्कराष्टमाः ॥ ३ ॥  
लोकपालास्ततो ब्राह्मा दिक् चैन्द्रीत्यादयो भिदाः ।  
आग्नेयी तु चराशा स्यान्नैर्ऋती तु दिगन्धकी ॥ ४ ॥  
मारुत्यनन्ता शार्वी तु शालाक्षाप्यपराजिता ।  
कौबेर्यादिषु तूदीची प्राच्यवाची प्रतीच्यपि ॥ ५ ॥  
ब्राह्मी तूर्ध्वाऽथ नागी स्यान्नारकी चाधरा ककुप् ।  
दिक्मण्डलं चक्रवालं दिगन्तः करिशोलुकम् ॥ ६ ॥  
दिक्मध्ये करिणीचारं दिग्युग्मे मण्डपीठिका ।  
अभ्यन्तरं त्वन्तरालमवकाशोऽन्तरं पदम् ॥ ७ ॥  
ऐरावतः पुण्डरीको वामनः कुमुदोऽञ्जनः ।  
पुष्पदन्तः सार्वभौमः सुप्रतीकश्च दिग्गजाः ॥ ८ ॥  
करिण्योऽभ्रमुः कपिला पिङ्गलाऽनुपमा क्रमात् ।  
ताम्रपर्णी शुभदती चाङ्गना चाञ्जनावती ॥ ९ ॥  
अर्कः सूर्योऽर्यमा सूरौ द्वादशात्मा दिवाकरः ।  
मार्तण्डः सविता भानुर्मातुः पूषा दिनप्रणीः ॥ १० ॥  
सप्तसप्तिः पद्मबन्धुस्तपनोऽनूरुसारथिः ।  
द्युमणिर्हरिदश्वोऽद्विरशीतांशुर्विकर्तनः ॥ ११ ॥  
द्युमान् कुमुद्वतीशत्रुस्त्वेषांपतिरहर्षतिः ।  
भास्करोऽहस्करो भास्वान् विषस्वाञ्जलतस्करः ॥ १२ ॥  
रश्मिमाली हगध्यक्षः कर्मसाक्षी त्रयीतनुः ।  
तर्धुमार्तण्डमुण्डीरपाथिपेरुगभस्तयः ॥ १३ ॥  
पासिर्दृशानो रात्रिद्विद् प्रभाकरविभाकरौ ।  
खाध्वनीनः खतिलकः खगः खाङ्कस्तमोरिपुः ॥ १४ ॥  
चण्डांशुरंशुमानंशुः सहस्रांशुः सदागतिः ।  
आदित्यो मिहिरो मित्रो रविः प्रत्यूषहम्बरः ॥ १५ ॥

घृष्टिपादमयूखांशुसान्ध्योद्योगंगभस्तयः ।  
 किरणोत्सौ च रोचिः क्ली रश्मिरक्ली मरीचिवत् ॥ १६ ॥  
 तासां शतानि चत्वारि रश्मीनां वृष्टिसर्जने ।  
 शतत्रयं हिमोत्सर्गे तावद्धर्मस्य सर्जने ॥ १७ ॥  
 आनन्दनाश्च मेध्याश्च नूतना पूतना इति ।  
 शतं शतं वृष्टिवहास्ताः सर्वा अमृताः स्त्रियः ॥ १८ ॥  
 ता एव भन्दना मन्दाः कातनाः कोतनाः क्रमात् ।  
 अथ मेध्यश्च पोष्यश्च ह्लादिन्यश्च शतं शतम् ॥ १९ ॥  
 हिमोत्सर्गाय ताः सर्वाः सर्वाश्चन्द्राश्च नामतः ।  
 ता एव रेश्यो वाश्यश्च मेध्याश्चेति यथाक्रमम् ॥ २० ॥  
 अथ रुद्रा विश्वभृतः ककुहाश्च शतं शतम् ।  
 घर्माय शुक्रास्ताः सर्वा माष्यः शक्य इत्यपि ॥ २१ ॥  
 आलोकस्तु प्रभा भा रुचिदीधितिदीपयः ।  
 अथातपो रौद्रमिद्धं मृगवृष्णा मरीचिका ॥ २२ ॥  
 संज्ञास्य रेणुर्द्युमयी त्रसरेणुः सुवर्चला ।  
 त्वाष्ट्री प्रभाऽप्यथच्छाया विष्णुभा भूमिमय्यपि ॥ २३ ॥  
 हिमद्युतिः शशी चन्द्रश्चन्द्रमाः शशभृद्विद्युः ।  
 परिष्मा रोहिणीकान्तो निशानाथो निशाकरः ॥ २४ ॥  
 पुनर्युवा दशाश्वो ग्लौरिन्दुः कुमुदबान्धवः ।  
 ओषधीशो निशाकेतुर्मृगलक्ष्माऽत्रिनेत्रजः ॥ २५ ॥  
 हृद्यांशुरंशुरब्जारिरमृतांशुः कलानिधिः ।  
 यजतस्तपसः क्लेदुः स्यन्दः स्पन्दो यथामुलः ॥ २६ ॥  
 प्राचीनतिलको जर्णो व्याघ्रः सृप्रस्तृपिस्तृपत् ।  
 उडुराजः शशाङ्कश्च समुद्रनवनीतकम् ॥ २७ ॥  
 चन्द्रपादास्तु संवाला ज्योत्स्ना च शशिनः प्रभा ।  
 चन्द्रिका चन्द्रिमा चान्द्री कौमुदी चन्द्रगोलिका ॥ २८ ॥  
 अङ्गुलिहमभिज्ञानं लाञ्छनं लक्ष्म लक्षणम् ।  
 पुष्पवन्तौ सहैवोक्त्यां सूर्याचन्द्रमसाबुधौ ॥ २९ ॥  
 परिग्रहोपरक्तौ तु प्रस्तार्केन्द्रोरथ ग्रहे ।  
 उपप्लवोपरागौ द्वौ स तु सन्निहितो रवेः ॥ ३० ॥  
 गजच्छायाऽप्यथार्केन्द्रोः परिधिः परिवेषकः ।  
 कुजारमङ्गलाङ्गारा लोहिताङ्गो धरासुतः ॥ ३१ ॥  
 कर्षको रुधिरौ भौमः प्रव्याप्तोऽप्यथ हर्षुलः ।

बुधः श्यामाङ्ग एकाङ्गः सौम्यश्चान्द्रमसायनि ॥ ३२ ॥  
 वाचस्पतिरनिर्वापः सुराचार्यो बृहस्पतिः ।  
 गीष्पत्याङ्गिरसौ चक्षाश्चारुश्चित्रशिखण्डिजः ॥ ३३ ॥  
 प्रचक्षा दीदिविश्वाथ शुक्रो दूतो दिवाचरः ।  
 तिर्यग्गाम्यसुराचार्य उशना भार्गवः कविः ॥ ३४ ॥  
 मन्दः खोडोऽसितः क्रोडश्छायापुत्रः शनैश्चरः ।  
 सौरिः स्थिरगतिः कोणो दीर्णाङ्गो युगवर्तकः ॥ ३५ ॥  
 श्रुतकर्मा नीलवासा वक्रः कोलः स्थिरः शनिः ।  
 स्वर्मानुर्ग्रहकङ्गोलः सैहिकेयो विधुन्तुदः ॥ ३६ ॥  
 राहुरभ्रपिशाचश्च केतवो विकचाः कृशाः ।  
 धूमजाः शिखिनो ब्रह्मपुत्राः श्रीमन्त आहिकाः ॥ ३७ ॥  
 तारा भं रात्रिजं धिष्ण्यं सन्नक्षत्रमुर्धुन ना ।  
 मृगशीर्षं मृगशिरो मार्गायण्याग्रहायणी ॥ ३८ ॥  
 इन्वकास्तच्छिरोदेशे तारका इल्वला मताः ।  
 योग्यः सिध्यश्च पुष्यः (:) स्याद्यामकौ तु पुनर्वसू ॥ ३९ ॥  
 निष्ठया स्वाती विशाखेतु रावे आर्द्रा तु कालिनी ।  
 श्रवणे श्रोणा मूले तु मूलवर्हण्यथ श्रविष्ठासु ॥ ४० ॥  
 मन्दागाश्च धनिष्ठाश्च भरण्योऽपभरणीषु योग्याश्च ।  
 ज्येष्ठा ज्येष्ठमी स्यात्प्रोष्ठपदाः पुंस्त्रियोः सभाद्रपदाः ॥ ४१ ॥  
 अश्विन्यौ बालिन्यावश्वयुजावाश्वकिन्यौ च ।  
 यथाप्रयोगमेतेषु वचनं स्याद्वयवस्थितम् ॥ ४२ ॥  
 अषाढाकृत्तिकाश्लेषामघा भूमि स्त्रियश्च ताः ।  
 फल्गुन्यौ तु द्वित्वमूम्नोर्हस्तः शतभिषक् च सा ॥ ४३ ॥  
 अनूराधास्तु पुंभूमि शेषं सर्ववचः स्त्रियाम् ।  
 वीथ्यो नवैव नक्षत्रैरश्विन्याद्यैस्त्रिभिस्त्रिभिः ॥ ४४ ॥  
 त्रिर्वाथिका त्रयो मार्गा दक्षिणोत्तरमध्यमाः ।  
 उत्तरो देवयानः स्याद्योगियानस्तु मध्यमः ॥ ४५ ॥  
 दक्षिणः पितृयाणः स्यात्तत्राद्या नागवीथिका ।  
 रोहिण्याद्याजवीथी स्यात्ततस्त्वैरावती परा ॥ ४६ ॥  
 मार्गोऽयं देवयानाख्यो मघाद्या पुनरार्षभी ।  
 हस्तादिका तु गोवीथी ततो जारद्वी परा ॥ ४७ ॥  
 मार्गोऽयं योगियानाख्यो मूलाद्या गजवीथिका ।  
 श्रोणाद्या मृगवीथी स्यात्ततो वैश्वानरी परा ॥ ४८ ॥

मार्गोऽयं पितृयाणाख्यः स्थानान्येषां पथां दिवि ।  
 ऐरावतं जारद्वं वैश्वानरमिति क्रमात् ॥ ४६ ॥  
 सप्तर्षयस्तु खे तारारूपाश्चित्रशिखण्डिनः ।  
 ज्योतिषामयनं ज्योतिःशास्त्रं राशिर्ग्रहाह्वयः ॥ ४७ ॥  
 पूर्वपश्चिमराश्यधौ सन्दालवलयौ क्रमात् ।  
 संज्ञा द्रेक्षाणहोराद्याः शास्त्रे ज्ञेयाः सलिङ्गकाः ॥ ४८ ॥  
 कालोऽनेहा च दिष्टश्च स सूक्ष्मः स्त्री तुटिखुटिः ।  
 द्वे तुटी लघुक्षरकस्तौ द्वावक्षरपातकः ॥ ४९ ॥  
 तौ निमेषो लिप्तिका तु तौ द्वौ काष्ठा तु ता नव ।  
 ते द्वे लवो लवाः पञ्च कला दश च तद्द्वयम् ॥ ५० ॥  
 लेशो लेशाः पञ्चदश क्षणो नाडी तु षट् क्षणाः ।  
 तौ तु नाडी मुहूर्तोऽस्त्री घटिका धारिकेति च ॥ ५१ ॥  
 त्रिंशता तैरहोरात्रः पक्षाङ्गोऽप्यथ वासरः ।  
 दिवसं चाख्यौ भानुर्घृणिर्घस्रो रविध्वजः ॥ ५२ ॥  
 पद्मबन्धुः कोकहितो बुधश्च क्ली स्यादहर्निशम् ।  
 रजनी यामिनी याम्या त्रियामा क्षणदा क्षपा ॥ ५३ ॥  
 तमी तमस्विनी रात्रिर्निशा घारिर्विभावरी ।  
 तमिस्रा क्षणिनी क्षाणी शर्वरी वासतेय्युषा ॥ ५४ ॥  
 निशीथिनी निशीध्या च ज्यौत्स्नी ज्योतिष्मती निशा ।  
 पूर्णेन्दुस्तु दिनम्मन्या गर्भितं तु निशाद्वयम् ॥ ५५ ॥  
 बह्वथस्तु गणरात्रं च चिररात्रं च रात्रयः ।  
 पक्षाभ्यामिव याऽहोभ्यां युक्ता सा पक्षिणी निशा ॥ ५६ ॥  
 तामसी सात्त्विकी चित्रा चित्रोपमा च राजसी ।  
 खण्डिता चेति शर्वयः प्रावृडाद्यतुषु क्रमात् ॥ ५७ ॥  
 या सप्तसप्ततितमे वर्षे मासि च सप्तमे ।  
 सप्तमी प्राणिनां घोरा रात्रिर्भैरवशी हि सा ॥ ५८ ॥  
 ध्वान्तस्तिमिरमासक्तं तामिस्रं शार्वरं तमः ।  
 आततिश्चान्धकारोऽस्त्री तत्तु सन्तमसं यदि ॥ ५९ ॥  
 परितोऽथावतमसं लघ्वन्धतमसं महत् ।  
 छदो व्यवधिरन्तर्धिर्वरणं चापवारणम् ॥ ६० ॥  
 अपिधानतिरोधानपिधानाच्छादनानि च ।  
 दिनादौ प्राहपूर्वाह्नौ ततः संगतसंगवौ ॥ ६१ ॥  
 मध्यन्दिनं तु मध्याह्न उच्छ्वस्तु विकालकः ।



सायाहोऽप्यपराहोऽस्त्री प्रदोषो मैथिलः समौ ॥ ६५ ॥  
 सान्बाधिकः परस्तस्मान्निशीथस्त्वर्धरात्रकः ।  
 मध्यरात्रो महारात्र उच्चन्द्रोऽपररात्रकः ॥ ६६ ॥  
 ब्राह्मोऽप्येते क्रमाद्यामा यामे प्रहरयातुकौ ।  
 पुण्याहमहि पुण्योऽशस्त्रिसन्ध्यं तूपवैणवम् ॥ ६७ ॥  
 विहानोऽस्त्री प्रविसरो गोसर्गप्रत्युषानुषः ।  
 व्युष्टं विभातं प्रत्यूषं संयात्रिकमहर्मुखम् ॥ ६८ ॥  
 काल्यं प्रभातं स्त्री बोषः सन्धा सन्ध्या पितृप्रसूः ।  
 तिथिर्न षण् कर्मवाटी प्रतिपत्त्वेकपक्षतिः ॥ ६९ ॥  
 पक्षतिश्चाथ पादूरो भूतेष्टा च चतुर्दशी ।  
 निष्पक्षतिर्द्वितीया स्याद्दर्शोऽमावास्यमावसी ॥ ७० ॥  
 अमावस्याऽप्यमावास्याऽप्यमामस्याऽप्यमामसी ।  
 सा दृष्टेन्दुः सिनीवाली नष्टचन्द्रकला कुहूः ॥ ७१ ॥  
 पिड्या तु पूर्णिमा चान्द्री चन्द्रमाता निरञ्जना ।  
 पूर्णा तु पूर्णमासी च पौर्णमासी च पूर्णिका ॥ ७२ ॥  
 चन्द्रे कलोनेऽनुमतिः सैव राका तु पूरिते ।  
 पर्वणी पञ्चदश्यौ द्वे पक्षान्तौ नन्दिवर्धनौ ॥ ७३ ॥  
 आभायणी शङ्कमूली पौर्णमास्याग्रहायणी ।  
 पौषी तु महिषी माता माघी स्यादग्निपूर्णिमा ॥ ७४ ॥  
 फाल्गुनी दण्डपाता स्याच्चैत्री तु मदनध्वजा ।  
 विश्वविस्ता तु वैशाखी ज्येष्ठी तूपनिवेशिनी ॥ ७५ ॥  
 आषाढी कृत्तिमाचारी श्रावणी तु द्विवेदिनी ।  
 अथ प्रौष्ठपदी गाङ्गी स्यादाश्विन्यवराविला ॥ ७६ ॥  
 वत्सरान्ता त्वरिश्रेणी धैनुकी चापि कार्तिकी ।  
 मासाख्याकूर्चनक्षत्रयोगश्च गुरुणा यदा ॥ ७७ ॥  
 महाग्रहायणीत्याद्यास्त एव तिथयः क्रमात् ।  
 जयन्तीत्यादिकाः संज्ञाः पुराणे तिथिषूदिताः ॥ ७८ ॥  
 पक्षोऽर्धमासः पूर्वस्तु शुक्लाख्योऽन्योऽसिताख्यः ।  
 क्षीयमाणतिथिप्रायः पक्षो रिक्तोऽपरस्त्वणिः ॥ ७९ ॥  
 अणिकूर्चस्त्वमावास्या भूतेष्टा प्रतिपत्क्षयात् ।  
 मासः सांवत्सरस्तान्तः संक्रान्त्या तु स तारणः ॥ ८० ॥  
 ज्यौतिषः पुनराचारात् सावनो दिनसंख्यया ।  
 आग्रहायणिको मार्गशीर्षो वर्षमुखः सहाः ॥ ८१ ॥

सहस्ये स्थु स्तैषपौषसैधा माषे तु शानकः ।  
 शातरश्च तपाश्चाथ द्वौ फाल्गुनिकफाल्गुनौ ॥ ८२ ॥  
 तपस्ये फल्गुनालश्च चैत्रे मौह्निको मधुः ।  
 चैत्रिको मन्मथसखो वैशाखो राघ उच्छुनः ॥ ८३ ॥  
 ज्येष्ठामूलीय ईजानो ज्यैष्ठश्च खरकोमलः ।  
 ते शुक्ले स्थुरथाषाढे शुचिः श्रावणिको नभाः ॥ ८४ ॥  
 श्रावणश्च नभस्ये तु भाद्रो भाद्रपदोऽपि च ।  
 अपि प्रौष्ठपदस्तस्मिन्नाश्विनाश्वयुजाविषे ॥ ८५ ॥  
 कार्तिके स्यात् कार्तिकिको बाहुलः शैलकौमुदौ ।  
 क्लीबेऽप्येषु सकारान्ता ऋतुर्बीजं सतेरकम् ॥ ८६ ॥  
 हेमन्तः प्रसवो लोभ्रः शैखस्तु शिशिरोऽस्त्रियाम् ।  
 मधुर्वसन्तः सुरभिर्वलाङ्गः पुष्पसारणः ॥ ८७ ॥  
 पुष्पकालोऽपीधममस्त्री ग्रीष्मस्त्वाखोर ऊष्मकः ।  
 शुचिरुष्णागमः पात्म उष्ण ऊष्माऽप्यथ क्षरी ॥ ८८ ॥  
 प्रावृड् वार्षी भूम्नि वर्षाः कालोक्षी च घनागमः ।  
 घनात्ययः शरत् स्त्री स्याद्विसर्गो दक्षिणायनम् ॥ ८९ ॥  
 उत्तरायणमाग्नेयं विषुवान् विषुवोऽस्त्रियौ ।  
 संवत्सरोऽब्द आग्नेयो वत्सरः परिवत्सरः ॥ ९० ॥  
 वत्सवायव्यसौर्याश्च वर्षोऽस्त्री स्त्री शरत् समाः ।  
 कृतं सत्ययुगं सौम्यं त्रेताग्नेयी द्विसर्गिका ॥ ९१ ॥  
 द्वापरे यज्ञियाग्नेयौ पुण्यो भर्म्मरकः कलिः ।  
 त्रियुगं तु युगासारं द्वायायोगं तु युगद्वयम् ॥ ९२ ॥  
 मन्वन्तरं त्वन्तरं स्यात् कल्पभागे चतुर्दशे ।  
 चतुर्युगसहस्रं तु कल्पस्तद् ब्रह्मणो दिनम् ॥ ९३ ॥  
 तद्रात्रौ तु महासुप्तिः समसुप्तिर्जगत्क्षयः ।  
 महाप्रलयकल्पान्तौ युगान्तो भूतसम्प्लवः ॥ ९४ ॥  
 प्रतिसर्गस्तु संहारः प्रलयः प्रतिसञ्चरः ॥ ९४ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्या-

मन्तरिक्षकाण्डे ज्योतिरभ्यायः ॥ १ ॥

## मेघाध्यायः ॥ २ ॥

मेघोऽब्दो जलदो नभ्राट् तटित्वान् जलमुग्धनः ।  
 धाराधरो वारिधरो धूमयोनिर्बलाहकः ॥ १ ॥  
 तटित्पतिः पयोगर्भो नवनुर्मुदिरोऽम्बुभृत् ।  
 कादम्बिनी मेघमाला काली कृष्णनवान्बुदः ॥ २ ॥  
 इन्द्रायुधं त्विन्द्रधनुस्तदीर्घमृजु रोहितम् ।  
 ऐरावतं च विद्युत्तु चञ्चला चपला चला ॥ ३ ॥  
 आकालिकी शतावर्ता जलदा जलपालिका ।  
 क्षणांशुः क्षणिका चम्पा तटिहीना शतहृदा ॥ ४ ॥  
 सौदामिन्यैरावती च तद्भेदेऽप्यन्तिमत्रयम् ।  
 गजितं स्तनितं शीर्णं वज्रे ह्यादुनयः स्त्रियः ॥ ५ ॥  
 वज्रपातस्तु निर्घातश्चण्डकोऽप्यशान्तिर्न षण् ।  
 स्फूर्जथुर्वज्रनिष्पेषो न स्त्री वज्रोऽशान्तिर्न षण् ॥ ६ ॥  
 वर्षोऽस्त्री वर्षणं वृष्टिः शीकरोऽस्त्र्यम्भसः कणः ।  
 घनोपलस्तु करकः पुञ्जिका मचटीति च ॥ ७ ॥  
 विप्रुट् स्त्री पृषतो बिन्दुः स्तोको द्रप्सः पृषन्न पुम् ।  
 अनावृष्टिरवग्राहो मेघच्छन्नेऽहि दुर्दिनम् ॥ ८ ॥  
 अवश्यायस्तु नीहारस्तुषारस्तुहिनं हिमम् ।  
 प्रालेयं मिहिका चाथ हिमानी हिमसंहतिः ॥ ९ ॥  
 कुहिदोऽस्त्री कुहेलिः स्त्री कुहेडिर्धूमिका त्रयी ॥ १० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां  
 वैजयन्त्यामन्तरिक्षकाण्डे मेघाध्यायः ॥ २ ॥

## खगाध्यायः ॥ ३ ॥

पक्षी पत्ररथः पत्री पित्सन् पिपतिषन् पतन् ।  
 पतङ्गः पतगः प्लावी पतत्र्यङ्गुपतत्रयः ॥ १ ॥  
 विहङ्गमो विर्विहगो विहङ्गो नभसङ्गमः ।  
 नीडोद्भवः शुको नीडी मल्लको विप्रुषो भस्मन् ॥ २ ॥  
 वशाकुर्मदनः पीतुर्मशाको मदुरो द्विजः ।  
 ऊकः शकुन्तः शकुनिः शकुन्तिः शकुनः खगः ॥ ३ ॥  
 शलको विकिरस्तुण्डी नीडजो वातगाम्यपि ।  
 पक्षिपोतस्तु चिल्लाकश्चम्पुकः पीलुकावटौ ॥ ४ ॥  
 गृह्णाश्छेकाश्च गेहेषु संसक्ता मृगपक्षिणः ।  
 हंसो मरालो नीलाक्षश्चक्रपक्षः सितच्छदः ॥ ५ ॥  
 मानसौकाः परिप्लावी वक्राङ्गो जालपादकः ।  
 सूतिः सङ्कुचितः शङ्कुर्ज्येष्ठः प्रास्थितधोरणौ ॥ ६ ॥  
 क्षीराश्राप्यसौ राजहंसो रक्तैः पदाननैः ।  
 मलिनैर्मल्लिकाश्चस्तैर्धार्तराष्ट्रः सितेतरैः ॥ ७ ॥  
 कादम्बः कलहंसश्च हंस आधूसरच्छदः ।  
 वरटा हंसकान्ता स्याद् वरालाव रलाऽपि च ॥ ८ ॥  
 हंससाचिः क्षुद्रहंसः क्षयिस्तु कुवलायिकः ।  
 चक्रवाको रथः कोकश्चक्रश्चक्राहयाह्वयः ॥ ९ ॥  
 बको बकोटः कङ्कोऽथ बलाका विसकण्ठिका ।  
 बकजातिर्दर्वितुण्डो दर्विः क्रौञ्चश्च दर्विदा ॥ १० ॥  
 मदुस्तु जलकाकः स्यादातिस्त्वाटिः शराटिका ।  
 कारण्डवो महापक्षो जलरङ्कुस्तु वञ्जुलः ॥ ११ ॥  
 दात्यूहश्चाथ शकटात्रिलो प्लवपरिप्लवौ ।  
 अन्वर्थनामधेयौ द्वौ जालपादाम्बुकुङ्कुटौ ॥ १२ ॥  
 कुक्कुटो दीर्घवाग्दक्षः शिखी चूलिक आरणी ।  
 कृक्वाकुर्विवृत्ताक्षस्ताम्रचूडः शिखण्डिकः ॥ १३ ॥  
 मयूरश्चटकः शौण्डः पादायुधनखायुधौ ।  
 पारावतः कलरवो रक्तहृष्टिर्मदोत्कटः ॥ १४ ॥



काकस्तु द्विक एकाक्षश्चिरजीवी दिवाटनः ।  
 आत्मघोषो महानेमिः कण्टको मौकलिः कुणः ॥ १५ ॥  
 बलिपुष्ट उल्लकारिर्नाडिजङ्घोऽग्रहृष्टकः ।  
 धूलिजङ्घोऽन्यवापश्च परभृद्वायसोऽन्यपुट् ॥ १६ ॥  
 द्रोणः सकृत्प्रजोऽरिष्टो ध्वाङ्कः करट इत्यपि ।  
 कृष्णकाको वृद्धकाक ऐन्द्रिः काकोल आसुरः ॥ १७ ॥  
 धूङ्कणा तु श्वेतकाकोऽथ चटको वर आटकः ।  
 बलिभृक् कलविङ्कश्च सेव्यस्तिलककण्टकः ॥ १८ ॥  
 कलविङ्कस्त्वसौ पीतमुण्डः श्यामा तु पोतकी ।  
 व्याघ्राटस्तु भरद्वाजः क्षिप्रः श्येन सुपर्णकः ॥ १९ ॥  
 श्येनायां प्राचिकां चित्रपक्षे शरुकपिञ्जलौ ।  
 वाचाला मुखरा शारिः कोयष्टिः शिखरी समौ ॥ २० ॥  
 कुलालकुक्कुटो गर्तकुक्कुटः पेचिका पुनः ।  
 उल्लकचेटी हिक्का स्यात् कनकाक्षी च पिङ्गला ॥ २१ ॥  
 उल्लकः पेचकः कोण्ठः काकारिर्हरिलोचनः ।  
 नक्तञ्चरो घर्घरको निशादर्शी बहुस्वनः ॥ २२ ॥  
 महापक्षी च कृष्णोऽसौ नक्तकः कृतमालकः ।  
 कपोतो बालवत्सः स्यात् खञ्जरीटस्तु खञ्जनः ॥ २३ ॥  
 मिथुनी चञ्चलश्चाथ सुप्तोऽस्मिन् कृष्णवक्षसि ।  
 गोलनिका खञ्जरीटी शार्ङ्गः कीर्शा च पिप्पिका ॥ २४ ॥  
 शुक्लिकेतुर्मेधावी श्रीमान् वाग्मी फलाशनः ।  
 दरणो दण्डिकीरौ च लोपालोपायिके समे ॥ २५ ॥  
 पात्रं तु कुण्डुणाची स्त्री कण्ठपालस्तु वज्जुलः ।  
 काकपुष्टस्त्वन्यभृतस्ताम्राक्षः कोकिलः पिकः ॥ २६ ॥  
 वसन्तघोषो मधुवाक् कलकण्ठो वनप्रियः ।  
 भृङ्गः कलिङ्गो धूम्राटो राजभृङ्गस्तु बुद्धिमान् ॥ २७ ॥  
 मान्धीरी वाग्गुदस्तुल्यः स तु मान्धीलवो महान् ।  
 आतापी चिञ्जिकोऽथ स्यात् स्वस्तिकः पुष्टिवर्धनः ॥ २८ ॥  
 किकिदीविः स्वर्णचूडश्चाषो राजविहङ्गमः ।  
 मणिकण्ठश्चित्रवाजो विशोकः पूर्णकूटकः ॥ २९ ॥  
 गृध्रस्तु पुरुषण्याघ्रो दूरदर्शी सुदर्शनः ।  
 दाक्षाय्यश्चाप्यथ श्येनो वर्तुलाक्षः शशादनः ॥ ३० ॥  
 कङ्कस्तु कर्कटस्कन्धः पर्कटः कमलच्छदः ।

दीर्घपादः प्रियापत्यो लोहपृष्ठश्च मल्लकः ॥ ३१ ॥  
 पूर्णकूटे कुटपुरिः शकुन्ते भासकुक्कुटौ ।  
 चातकस्त्वम्बुजोऽनम्बुः पौरेन्द्रः स्तोककः खगः ॥ ३२ ॥  
 सारसो मैथुनी कामी गोनर्दः पुष्कराह्वयः ।  
 दार्वाघाटे शतपत्रो लक्ष्मणा सारसप्रिया ॥ ३३ ॥  
 कौञ्चस्तु कुङ्कुथोऽक्रोशः कुररो मत्स्यनाशनः ।  
 टिट्ठिभस्तु कटुकाण उत्पादशयनोऽण्डुकः ॥ ३४ ॥  
 तित्तिरिस्तु खरकाणो वरिष्ठश्चेश्वरप्रियः ।  
 चकोरस्तु चलच्चचुरुत्पिबश्चन्द्रिकाप्रियः ॥ ३५ ॥  
 कृकरे त्वर्थ्यकृकणौ दात्यूहे कालकण्ठकः ।  
 मयूरो बर्हिणो बर्ही शुष्ठापाङ्गः शिखावतः ॥ ३६ ॥  
 वर्षामदः शिखी केकी शिखण्डी चित्रपत्रकः ।  
 भुजङ्गारिः शापटिको मयूकश्चित्रपिङ्गलः ॥ ३७ ॥  
 मार्जारकण्ठः केकालिर्विष्करो तर्तनप्रियः ।  
 मेघनादानुलासी च दार्वण्डश्चन्द्रकीति च ॥ ३८ ॥  
 शब्दोऽस्य केका बर्हस्तु प्रचलाककलापकौ ।  
 शिखण्डः पिच्छमप्यस्य मेचको बर्हचन्द्रकः ॥ ३९ ॥  
 पक्षिभेदाः खिलिखिलश्रीकर्णीयकवर्तकाः ।  
 लावकुक्कुटहारीतजीवस्त्रीवाद्योऽपि च ॥ ४० ॥  
 हंसादयो जलचरा ग्राम्याः स्युः कुक्कुटादयः ।  
 वनजाः पीतमुण्डाद्या भृङ्गाद्याः क्षुद्रपक्षिणः ॥ ४१ ॥  
 भृङ्गे भ्रमरभृङ्गाणमधुलिणमधुपालिनः ।  
 अलिद्विरेफो लोलम्बो भसलः पुष्पलोलुपः ॥ ४२ ॥  
 इन्दिन्दिरो मधुकरश्चञ्चरीको मधुव्रतः ।  
 शित्पुटः षट्पदश्चाथ पतङ्गः शलभः समौ ॥ ४३ ॥  
 जतुकाऽजिनपत्रा स्यात् परोष्णी तैलपायिका ।  
 मलिम्लुचास्तु मशका भम्भराली तु मक्षिका ॥ ४४ ॥  
 चर्वणा मक्षिका नीला सरघा मधुमक्षिका ।  
 अरण्यमक्षिका दंशो दंशी तज्जातिरल्पिका ॥ ४५ ॥  
 कषायिका तु जलजा घोणा कुम्भीरमक्षिका ।  
 गण्डोली वरटा न छी गृहिणी गृहकारिका ॥ ४६ ॥  
 अन्वर्थाख्या कोष्ठकारी कण्टका कण्टकानना ।  
 निशामणिर्ध्वान्तमणिः खद्योतो ज्योतिरिङ्गणः ॥ ४७ ॥

भृङ्गारी मीरिका चीरी म्लिकिकाऽथ प्लुषिः पुमान् ।  
 पुत्तिका च पतङ्गी च पूत्यण्डाः क्षुद्रपक्षिणः ॥ ४८ ॥  
 छदः पत्रो गरुड्राजश्छदनं च तनूरुहम् ।  
 पतत्रं च कुलायस्तु पञ्जरं नीडमस्त्रियाम् ॥ ४९ ॥  
 पेशी कोशश्च डिम्बोऽण्डं त्रोटिश्चञ्चुः सृपाटिका ।  
 डयनं गतिरुड्डीनसण्डीनादि विशेषकम् ॥ ५० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां  
 वैजयन्त्यामन्तरिक्षकाण्डे खगाध्यायः ॥ ३ ॥



## शब्दाध्यायः ॥ ४ ॥

शब्दो व्योमगुणस्वानस्वननिस्वाननिस्वनाः ।  
 निर्ह्रादो रवणो नादो द्ध्वेडो ध्वानो ध्वनिः कवः ॥ १ ॥  
 कणिर्ह्रादो रसो ध्रूणा घोषो गुञ्जनमुञ्जने ।  
 गञ्जनं मशनं कानं गानं कोरणरेभणे ॥ २ ॥  
 कूजनं कूजितं गर्जा न क्लीबे गर्जना न ना ।  
 क्रोश उच्चस्वने प्राणिस्वने त्वाराव आरवः ॥ ३ ॥  
 रवो विरावः संरावो रुतं चेत्यथ वाशनम् ।  
 वाशितं च तिरश्चां स्यात् ध्वाङ्गो ह्री घोरवाशितम् ॥ ४ ॥  
 घोरितं तुरगादीनां नासापुटभवे ध्वनौ ।  
 तन्दनं रम्भणं रम्भा रम्भितं च गवां ध्वनिः ॥ ५ ॥  
 बुक्कनं श्ववृकध्वाने भषणं भषितं शुनः ।  
 वृकस्य रेषणं रेषा द्वेषा द्वेषा च वाजिनाम् ॥ ६ ॥  
 बृंहितं करिणां शब्दो राणोऽस्त्री मणितं रतेः ।  
 काकुः स्त्री भिन्नकण्ठोत्थः शोककोपादिवैकृतात् ॥ ७ ॥  
 डक्कनं हात्कुते पत्रवस्त्रादीनां तु मर्मरः ।  
 पर्दनं गुदजे शब्दे कर्दनं कुक्षिकूजिते ॥ ८ ॥  
 विष्फारो घनुषः स्वानो भूषादीनां तु शिञ्जितम् ।  
 प्रणादस्त्वनुरागोत्थश्चित्कृतं स्यन्दनध्वनौ ॥ ९ ॥  
 स्रोतसां खरको युद्धध्वाने क्रन्दनयोधने ।  
 मार्जना मुरजध्वाने गुन्दिलो मर्हलध्वनौ ॥ १० ॥  
 वाणं हुडुक्कहिक्कायां भेरीनादे तु टट्टरः ।  
 कणनं कणितं काणो निक्काणो निक्कणः कणः ॥ ११ ॥  
 वीणायाः कणतेः प्रादेः प्रक्काणप्रक्कणादयः ।  
 स्त्री प्रतिश्रुत् प्रतिध्वाने तुमुलो व्याकुले भृशम् ॥ १२ ॥  
 गम्भीरे मन्द्र उच्चे तु तारो रम्यास्फुटे कलः ।  
 समाहितस्तु निर्दोषवर्णे दोषयुताः परे ॥ १३ ॥  
 अत्युच्चारणगर्वेण पीडितोऽपि समाहितः ।  
 एणीकृतः प्रतिध्वानदन्तुरो माहिषश्च सः ॥ १४ ॥  
 कल्हस्तु गलमूलस्थो गद्गदः स मनाक् स्फुटः ।



लालको बालानुकृतौ लल्लरो जिह्वया हतः ॥ १५ ॥  
 शिथिलोऽस्पष्टसंयोगस्तुम्बुकः सानुनासिकः ।  
 सान्तवं स्यान्मधुरं वाक्यं स्यादवाच्यमनक्षरम् ॥ १६ ॥  
 अनिर्वद्धं तूष्णावचमच्छिष्टार्थं तु सङ्कुलम् ।  
 अनृते वितथालोकावाहतं तु मृषार्थके ॥ १७ ॥  
 अम्बूकृतं सनिष्ठीवं स्यादबद्धमनर्थकम् ।  
 कल्या तु वाचि कल्याण्यां रुशती तद्विपर्यये ॥ १८ ॥  
 छलवाक्तु निरानन्दा शोकभारे तु तीरिता ।  
 क्रोधगर्भा तु वैद्योता दैन्यगर्भा तु नश्वरी ॥ १९ ॥  
 निर्वेदगर्भा निस्सङ्गा स्नेहगर्भा तु मालुकी ।  
 विरहे खण्डिता मोहे शून्या लोभे तु जाङ्गली ॥ २० ॥  
 निष्ठुरा परुषा क्षेपे त्रिषु स्युस्तुमुलादयः ।  
 अस्त्रियौ वर्णमर्णं च वाक्यं तु वचनं वचः ॥ २१ ॥  
 आम्नेडितं द्विस्त्रिरुक्तं गुणितं घोषितं समे ।  
 अरार्णनीं मुहुः प्रोक्तमनुलापश्च वर्तनम् ॥ २२ ॥  
 सम्भाषणं त्वाभाषणमालापः कुरुकुञ्जिका ।  
 उपसम्भाषणं साम्नि तत्तूपच्छन्दनं यदि ॥ २३ ॥  
 घनादि स्यात् प्रतिज्ञातं गुह्ये तदुपमन्त्रणम् ।  
 विभाषणं विवादे स्यादनुवादोऽनुभाषणम् ॥ २४ ॥  
 आख्यायनी तु सन्देशो दिष्टं संवदनं च तत् ।  
 संवादं वाचिकं च बलगा त्वतिचादुवाक् ॥ २५ ॥  
 लुञ्जना पिञ्जना चेति सूत्रिते वचनद्वयम् ।  
 भञ्जना स्याद्विवरणे पोटना तूत्कटं वचः ॥ २६ ॥  
 कोलाहलः कलकलः कुञ्जनाऽस्मिन्नपक्रुधि ।  
 चर्चरी चर्मटिस्तुल्ये रथ्यावादे तु कोहलम् ॥ २७ ॥  
 उद्धूयस्तु कौरक्रव्या विगर्वा गर्वहारिका ।  
 लोचना तु विचारोक्तिर्लोटना सानुसारवाक् ॥ २८ ॥  
 विप्रलापो विरोधोक्तिः संलापो भाषणं मिथः ।  
 काका वर्णनमुल्लापो विलापः परिदेवनम् ॥ २९ ॥  
 प्रलापोऽनर्थकं वाक्यमपलापस्त्वपह्ववः ।  
 अपव्ययोऽप्यवज्ञाऽपि हूतिस्त्वाकारणा हवः ॥ ३० ॥  
 हकारामन्त्रणाह्वानं संहूतिर्बहुभिः कृता ।  
 अभिधानं नामवेयं नामाख्याऽऽह्वाऽमिधाऽऽह्वयः ॥ ३१ ॥

मिथ्याऽभियोगोऽभिख्यानमभिशापोऽभिशंसनम् ।  
 शापोऽधिचेप आक्रोशः परिवादोऽप्यवर्णवत् ॥ ३२ ॥  
 अवर्णवादो निर्वादोऽप्यपवादो विरूक्षणम् ।  
 क्षारणं गर्हणं निन्दा जुगुप्सागालिकुत्सनाः ॥ ३३ ॥  
 जनवादस्तु वचनं भर्त्सनं प्रतितर्जनम् ।  
 आक्षारणं विधुवनमाक्रोशो मैथुलं प्रति ॥ ३४ ॥  
 उत्साहः स्यादुपालम्भः परिवारभाषणीति च ।  
 श्लाघा शंसा प्रशंसा च स्तवः स्तोत्रं स्तुतिर्नुतिः ॥ ३५ ॥  
 यशो जयोदाहरणं साधुवादो गुणावली ।  
 ख्यातिः कीर्तिः समज्ञा च सन्देशगिरि वार्चिकम् ॥ ३६ ॥  
 अर्थवादः परार्थोक्तिः प्रश्नः पर्यनुयोगवत् ।  
 अनुयोगश्च पृच्छा च प्रतिवाक्यं तदुत्तरम् ॥ ३७ ॥  
 कथा त्वाख्यानिकाऽऽख्यानं पुराणं पञ्चलक्षणम् ।  
 इतिहासः पुरावृत्तमैतिह्यमितिहाऽव्ययम् ॥ ३८ ॥  
 वार्तोदन्तोऽपि वृत्तान्तः किंवदन्ती जनश्रुतिः ।  
 प्रवल्हिका प्रहेलिका प्रजल्पनं बहूदितम् ॥ ३९ ॥  
 विकल्पना पृथक्क्रियाऽवधारणाऽन्यनिहुतिः ।  
 समस्या तु समासः स्यात् सङ्क्षेपः स्यादविस्तरः ॥ ४० ॥  
 उपोद्धात उदाहार उपन्यासः पुरोवचः ।  
 प्रस्तावः पुनरुद्धातः सोऽधिकार उपक्रमः ॥ ४१ ॥  
 गद्यपद्यमयी चम्पूः सारणी पद्यमात्रिका ।  
 शृङ्गाराद्यधिकं काव्यं समासाढ्यं तु दण्डकम् ॥ ४२ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां  
 वैजयन्त्यामन्तरिक्षकाण्डे शब्दाध्यायः ॥ ८ ॥

द्वितीयोऽन्तरिक्षकाण्डः समाप्तः ॥ २ ॥

## ३. अथ भूमिकाण्डः

देशाध्यायः ॥ १ ॥

भूमिरूर्वी घनश्रेणी स्थगणा गिरिकर्णिका ।  
क्षोणी सर्पभृता दक्षा कुः क्षमा क्षान्तिः क्षमा क्षरिः ॥ १ ॥  
धरित्री धरणी धात्री भूतधात्री धरा स्थिरा ।  
वसुन्धरा वसुमती वसुधा विपुला रसा ॥ २ ॥  
ग्मा विश्वा पृथिवी पृथ्वी हेमा सर्वसहा मही ।  
अन्धिवस्त्रा नगाधारा मेदिनीला गिरिस्तनी ॥ ३ ॥  
अचला कीलिनी पेरा बीजसू रत्नसूः स्वसूः ।  
रत्नगर्भा काश्यपी भूः कुह्यर्वनिर्धरा ॥ ४ ॥  
द्यावापृथिव्यावेकोक्तौ रोदस्यौ रोदसी इति ।  
नाभीदं भारतं वर्षं हिमाद्रेस्तच्च दक्षिणम् ॥ ५ ॥  
तेन हैमवतं नाम पराण्यप्येवमुज्जयेत् ।  
हेमकूटं किम्पुरुषं हरिवर्षं तु नैषधम् ॥ ६ ॥  
इलावृत्तं सौमेरवं सुमेरुं परितो हि तत् ।  
भद्राश्वं तु ततः पूर्वं केतुमालं तु पश्चिमम् ॥ ७ ॥  
वर्षावेतौ क्रमात् पूर्वगन्धिकापरगन्धिकौ ।  
उदक् तु रम्यकं नैलं नीलाद्रेरुत्तरं हि तत् ॥ ८ ॥  
ततो हिरण्मयं श्वेतं तच्च श्वेताद् गिरेरुदक् ।  
कुरुवर्षं शार्ङ्गवतं कुरुवश्च त उत्तराः ॥ ९ ॥  
जम्बूद्वीपः कुमारी स्याद्यत्रेमे भारतादयः ।  
लावणो लवणोदः स्याद्येनासौ वेष्टितोऽन्धिना ॥ १० ॥  
प्लक्षद्वीपादयोऽप्येवं वृता इक्षूदकादिभिः ।  
मन्थोदधिस्तु क्षीराब्धिः क्षीरोदः कलशोदधिः ॥ ११ ॥  
अथाप्यन्येऽन्तरद्वीपा भारतात् सप्त दक्षिणाः ।  
एको वैद्युत्वतो नाम विद्युत्वान् यत्र पर्वतः ॥ १२ ॥  
मालं मैत्रं व्रतं जालं नारासङ्गे पराणि षट् ।  
अनुद्वीपाश्च षट् तेषामङ्गद्वीपादयो यथा ॥ १३ ॥  
अङ्गद्वीपं यवद्वीपं मलयद्वीपमित्यपि ।

शङ्खद्वीपं कुशद्वीपं वराहद्वीपमित्यपि ॥ १४ ॥  
 अङ्गद्वीपं चाकगिरं मध्ये पश्चिमवारिधि ।  
 पूर्वाब्धौ तु यवद्वीपं यत्र कालोदकोऽर्णवः ॥ १५ ॥  
 मलयद्वीपमब्धौ स्यादक्षिणे तच्च दार्दरम् ।  
 मालयं माहामलयं तत्पाश्वे तु चतुर्थकम् ॥ १६ ॥  
 अतः पूर्वं कुशद्वीपं चम्पकद्वीपमप्यदः ।  
 यतः पुरो रक्तवहो लोहित्यो नाम वारिधिः ॥ १७ ॥  
 अथ प्रतीच्यां वाराहं वराहद्वीपमायतम् ।  
 यत्र यज्ञवराहोऽसौ हरिरद्यापि तिष्ठति ॥ १८ ॥  
 बर्हिणं सिंहलं हेमकुड्यं द्वारवतीपदम् ।  
 पारसीककुलं स्वर्णद्वीपं वैद्युतमार्षभम् ॥ १९ ॥  
 अयोमुखं तार्णसौमं स्यात्तार्णं ग्रामणीकुलम् ।  
 इत्याद्या भारते वर्षे क्षुद्रा द्वीपाः सहस्रशः ॥ २० ॥  
 नीवृज्जनपदो देशस्तद्भेदाः पुंसि भूमिनि च ।  
 स्त्रियो वरेन्द्री स्त्रावस्तीराढाद्या नैव भूमिनि ॥ २१ ॥  
 प्राग्दक्षिणः शरावत्याः प्राच्योऽस्याः पश्चिमोत्तरः ।  
 उदीच्यो मध्यदेशस्तु देशो यो मध्यमस्तयोः ॥ २२ ॥  
 आर्यावर्तो ब्रह्मवेदिर्मध्यं विन्ध्यहिमागयोः ।  
 अथोदीच्या जनपदास्तत्र चीनाः खरम्भराः ॥ २३ ॥  
 गान्धारास्तु दिहण्डाः स्युर्यवनास्तु हुरुष्कराः ।  
 सम्भालाः स्युः शूरसेना अपि ते शूरसेनयः ॥ २४ ॥  
 मध्ये तु शूरजनानां मधुरा नाम वै पुरी ।  
 लम्पाकास्तु मुरुण्डाः स्युस्तोक्षारास्तु युगालिकाः ॥ २५ ॥  
 जालन्धरास्त्रिगर्ताः स्युर्होलाः स्युः खरटी स्त्रियाम् ।  
 प्रत्यग्रथास्त्वहिच्छत्रास्तैतुलास्तु कलिङ्गकाः ॥ २६ ॥  
 टर्कवादीककाश्मीरतुरुक्षेषु ससिन्धुषु ।  
 बाह्लीका बाह्लिकाः कीराः शाखयो दारदाः क्रमात् ॥ २७ ॥  
 कुमालकास्तु सौवीरा यौधेयास्तु नृगालिकाः ।  
 अप्यन्ये पारदाः किञ्चाः कुल्या इत्यादिनीवृतः ॥ २८ ॥  
 अथ प्राच्या जनपदास्तत्र मुद्रकाः कुजाः ।  
 प्राग्न्योतिषाः कामरूपास्तथा प्राग्जालिका अपि ॥ २९ ॥  
 विदेहास्तीरभुक्तिः स्त्री स्त्रावस्ती तु परञ्जका ।  
 राढा तु सुद्धाः पुण्ड्रास्तु वरेन्द्री पुण्ड्रलक्षणा ॥ ३० ॥



भौरिकाः स्युः समतटा अङ्गाश्चम्पोपलक्षणाः ।  
 वङ्गास्तु हरिकेलीया मगधाः कीकटाः स्मृताः ॥ ३१ ॥  
 अप्यन्येऽन्ध्रा व्रताः सात्वा इत्याद्या नीवृतः पृथक् ।  
 विन्ध्यात्तु दक्षिणा देशा दक्षिणापथसंज्ञिताः ॥ ३२ ॥  
 तत्र पाण्ड्याः पाण्ड्याः स्युः कुन्तलाः स्तूपहालकाः ।  
 चोलाः स्युरुत्पलावर्ता महाराष्ट्रास्तु दण्डकाः ॥ ३३ ॥  
 अप्यन्ये केरलाः कुल्याः सेतुजाः कुलकालकाः ।  
 इषीकाः शबरारट्टा इत्याद्या नीवृतः पृथक् ॥ ३४ ॥  
 अपरान्तास्तु पाश्चात्यास्ते च सूर्यारकादयः ।  
 अथेमे मलदाद्याद्या विन्ध्यपर्वतवासिनः ॥ ३५ ॥  
 तत्र स्युर्मलदाः स्थौराः करुशास्तु बृहद्गृहाः ।  
 त्रैपुरास्तु दहालाः स्युश्चैद्यास्ते चेदयश्च ते ॥ ३६ ॥  
 दाशाणीः स्थुर्वेदिपरा मालवाः स्युरवन्तयः ।  
 अप्यन्ये मेकला भोजाः कोरुलाद्याश्च नीवृतः ॥ ३७ ॥  
 अथ देशा मध्यदेशे मरवस्तु दशेरकाः ।  
 सात्वास्तु कारकुत्सीयास्तेषां त्वययवाः परे ॥ ३८ ॥  
 उदुम्बरास्तिलखला महाकारा युगन्धराः ।  
 हुलिङ्गाः शरदण्डाश्च षट् सात्वावयवा इमे ॥ ३९ ॥  
 अप्यन्ये कुन्तलाः कुल्याः कलिङ्गाः कारिकोसलाः ।  
 मेकलाः कुसटाः सैरा जाङ्गलाः पृथवो वृकाः ॥ ४० ॥  
 पटञ्जरादयश्चान्ये मध्यदेशस्य नीवृतः ।  
 उक्तानामन्तरालेषु बहवः क्षुद्रनीवृतः ॥ ४१ ॥  
 मरवः पुंसि धन्वान् आसारी तु स्थली स्थलम् ।  
 कचङ्गला तु नीलिङ्गी भूर्नाजाजन्तुसंयुता ॥ ४२ ॥  
 पङ्किलः पङ्कवान् देशो वेतस्वान् बहुवेतसः ।  
 शाद्वलः शादहरितः कुमुद्वान् कुमुदाधिकः ॥ ४३ ॥  
 सनलो नड्वलो नड्वाब्जार्करः शर्कराधिकः ।  
 देशः शर्करिलोऽप्येवमुन्नेयौ सिकतावति ॥ ४४ ॥  
 कृष्णभूमः पाण्डुभूमः कृष्णा पाण्डुश्च यत्र स्मृतः ।  
 अनूपः साम्बुरन्यस्तु जाङ्गलः शून्य उच्चटः ॥ ४५ ॥  
 स्फुटिते सारणारट्टौ राजन्वास्तु मुराजनि ।  
 अन्यत्र राजवान् वृष्टिजीवनो देवमातृकः ॥ ४६ ॥  
 स्यान्नदीमातृको देशो नद्यम्बूत्पादसस्यकः ।  
 पथः पदाङ्कयोग्यः स्यात् त्रिष्वेते पङ्किलादयः ॥ ४७ ॥

श्मशानं स्यात् पितृवनं स्त्रीवासः क्रिमिपर्वतः ।  
 शतमूर्धा वामलूरो नाकुर्वल्मीकमस्त्रियाम् ॥ ४८ ॥  
 मार्गोऽध्वा पदवी पन्थाः पद्या चैकपदी सृतिः ।  
 सुपन्था अतिपन्थाश्च सत्पथश्च शुभे पथि ॥ ४९ ॥  
 विपथः कापथो व्यध्वो दुरध्वश्च कदध्वनि ।  
 अपन्थास्त्वपथं दूरशून्ये प्रान्तरमध्वनि ॥ ५० ॥  
 वृत्तिमार्गस्त्वर्धपदः प्राग्वंशः पदिकोऽपि च ।  
 संक्रमस्तिस्तिरिस्तुल्यौ शृङ्गाटं तु चतुष्पथः ॥ ५१ ॥  
 जङ्घापदं चतुष्पादस्त्रिपादस्तु गृहान्तरम् ।  
 अङ्गुलोऽस्त्री यवा अष्टौ समस्तु चतुरङ्गुलः ॥ ५२ ॥  
 धनुर्ग्रहश्च दिष्टिश्च स्यातामष्टाङ्गुलावुभौ ।  
 दशाङ्गुलः क्रकचिको वितस्तिर्द्वादशाङ्गुलाः ॥ ५३ ॥  
 किष्कुः स्यादवटो हस्तश्चतुर्विंशतिरङ्गुलाः ।  
 बद्धेन मुष्टिना हस्तः स्याद्वन्निर्मुष्टिको वसुः ॥ ५४ ॥  
 अरन्निर्निष्कनिष्ठोऽसौ स प्रजापतिहस्तकः ।  
 कुत्सश्चाप्यथवाकुत्सः सधनुर्मुष्टिरेव सः ॥ ५५ ॥  
 अथ वर्धकिहस्तः स्याद् द्वाचत्वारिंशदङ्गुलः ।  
 तस्मिन् विकिष्कुः क्रकचः किष्कुःक्रकचिकोऽपि च ॥ ५६ ॥  
 हस्तद्वयं तु सत्किष्कुर्हस्तत्रयमलीमकम् ।  
 चतुर्हस्तो धनुर्दण्डो धनुर्धन्वन्तरं युगम् ॥ ५७ ॥  
 ऐश्वरं नालिका चाथ पञ्चहस्तोऽर्धहस्तकः ।  
 अष्टहस्ता तु रज्जुः स्यान्नवहस्ता तु नालिका ॥ ५८ ॥  
 दशहस्तः पितृनल्वो दीर्घदण्डो निदेशकः ।  
 स प्रावेशनिकश्चाथ परिवेषो द्विरज्जुकः ॥ ५९ ॥  
 निवर्तनं तु तिसृभी रज्जुभिर्बलिशं च तत् ।  
 नल्विकः किष्कुभिः षष्ठ्या नल्वः किष्कुचतुश्शतम् ॥ ६० ॥  
 दशधन्वन्तरं स्तोमो दशस्तोमस्तु वंशिकः ।  
 दशवंशिक आनाहो दशानाहो नलान्तरः ॥ ६१ ॥  
 धन्वन्तरसहस्रं तु क्रोशो गव्या तु तद् द्वयम् ।  
 स्त्री गव्यूतिश्च गव्यूतं गोरुतं गोमतं च तत् ॥ ६२ ॥  
 गव्यूतानि तु चत्वारि योजना कोसलादिषु ।  
 गव्यूतिद्वयमेव स्याद्योजनं मगधादिषु ॥ ६३ ॥  
 इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां  
 वैजयन्त्यां भूमिकाण्डे देशाध्यायः ॥ १ ॥

## शैलाध्यायः ॥ २ ॥

शैलोऽगः पर्वतः दमाभृत् सानुमान् दुर्गमोगिरिः ।  
 अहार्थगोत्रकुट्टीरकुट्टारा भूधरोऽचलः ॥ १ ॥  
 बन्धाकिः फलिकः कुध्रः प्रपात्यद्रिः शिलोच्चयः ।  
 सुवेलः स्याच्चित्रकूटस्त्रिकूटस्त्रिककुब्ज सः ॥ २ ॥  
 लोकालोकश्चक्रवालो लोकान्ताद्रिः पराचलः ।  
 मलये त्रिकलापादः विन्ध्यस्तु जलवालकः ॥ ३ ॥  
 हिरण्यनाभो मैनाकः सुदारुः पारियात्रकः ।  
 मायवांस्तु प्रस्रवणो हिमवांस्तु हिमाचलः ॥ ४ ॥  
 रजताद्रिस्तु कैलासो दराद्रिर्महितश्च सः ।  
 वेङ्कटो वृषभः सिंहः केशरः केशवप्रियः ॥ ५ ॥  
 उदयस्तूदयाद्रिः स्यादस्तस्त्वस्तमयाचलः ।  
 दरी गुहा कन्दरोऽक्ली प्रपातस्तु नदो भृगुः ॥ ६ ॥  
 उत्सः प्रस्रवणं तोयप्रवाहे भरनिर्भरौ ।  
 स्तुर्वप्रोऽस्त्री सानुरस्त्री पादाः पर्यन्तपर्वताः ॥ ७ ॥  
 कूटोऽस्त्री शिखरं शृङ्गं नितम्बः कटकोऽस्त्रियाम् ।  
 पाषाण उपलोऽश्मा च प्रस्तरश्च शिला दृपत् ॥ ८ ॥  
 गण्डशैलास्तु पाषाणाः स्थूलाः प्रगलिता गिरेः ।  
 उपत्यका त्वधोभूमिगिरैरूर्ध्वमधित्यका ॥ ९ ॥  
 कुडङ्गोऽस्त्री निकुञ्जोऽस्त्री कुब्जो वृक्षवृत्तान्तरे ।  
 आकरः स्त्री खनिर्गञ्जा रुमा तु लवणाकरः ॥ १० ॥  
 नैरिकं पीतधातुः स्यात् कुनटी तु मनःशिला ।  
 रोचनी रञ्जनी हृद्या रसनेत्री महासना ॥ ११ ॥  
 करवीरा कला विद्युन्नागमाता विगन्धिका ।  
 शिला मनोऽभिधा काला नागजिह्वा च ताः समाः ॥ १२ ॥  
 शुक्रधातौ पाकशुक्रा कठिनी कक्खटी खटी ।  
 हरितालं तु खर्जूरं पिञ्जरं नटभूषणम् ॥ १३ ॥  
 तालमालं वंशपत्रं पीतनं रोमहृद्भरम् ।  
 सौगन्धिकस्तु पामारिः पीतो गन्धाश्मगन्धकौ ॥ १४ ॥  
 बोलो गोलः शशः पिण्डः प्राणो गन्धरसो रसः ।

अश्रकं व्योममेघाख्यं चक्रसंज्ञं तु माक्षिकम् ॥ १५ ॥  
 शिलाजतु तु गौरेयमर्ध्यमशमजमद्विजम् ।  
 सौराष्ट्री पार्वती काक्षी कालिका पर्पटी सती ॥ १६ ॥  
 आढकी तुवरी काली भूनामा च मृदाह्वया ।  
 सुराष्ट्रजाऽप्यथो गोला नैपाली कुनटीति च ॥ १७ ॥  
 रुक्मं कार्तस्वरं स्वर्णं महारजतमोजसम् ।  
 चामीकरं जातुरूपं तपनीयं शिलोद्भवम् ॥ १८ ॥  
 लोभनं कनकं शुक्रं सुवर्णं चन्द्रकाञ्चने ।  
 दाक्षायणं श्रीमकुटं गारुडं तारजीवनम् ॥ १९ ॥  
 अग्निबीजं रत्नवरं गैरिकं हेम कर्तुरम् ।  
 जाम्बूनदं शातकुम्भं हाटकं भूरिरस्त्रिगौ ॥ २० ॥  
 वैष्णवं कर्णिकाराभं वेणूतटजकाञ्चनम् ।  
 सुवर्णद्वीपजाः स्वर्णशुक्तिकाभ्रकसन्निभाः ॥ २१ ॥  
 रत्नविद्धं तु देवार्हं पवित्रं वज्रधारणम् ।  
 अलङ्कारसुवर्णं तु शृङ्गीकनकमाशु च ॥ २२ ॥  
 रूप्यहेम्नी तु संश्लिष्टे घनगोलकमस्त्रियाम् ।  
 रजतं त्रापुपं रूप्यं चन्द्रभीरु यवीयत्नम् ॥ २३ ॥  
 सौधं सुभीरुकं शुभ्रं खर्जूरं वज्रजीवनम् ।  
 ताम्रं शुल्बं मर्कटास्यं रक्तं व्यष्टं कनीयसम् ॥ २४ ॥  
 म्लेच्छं वरिष्ठं म्लेच्छास्यं श्रेष्ठं काम्यमुदुम्बरम् ।  
 रिरी तु रीतिरुत्साहा पीतलोहं सुलोहकम् ॥ २५ ॥  
 लोह्यमप्यारकूटोऽस्त्री पित्तलं त्वारमस्त्रियाम् ।  
 राजरीत्यां ब्रह्मरीतिः स्वर्णरीतिर्महेश्वरी ॥ २६ ॥  
 काञ्चनी कपिला राज्ञी ब्राह्मणी कपिलोहकम् ।  
 मीलिकायां तु सरटी निष्ठुरं दारुकण्टकम् ॥ २७ ॥  
 गुरुव्येष्टं सिंहमलं पञ्चलोहान्यलोहके ।  
 कांस्यं तु कुत्रिमं नाट्यं प्रभासमसुराह्वयम् ॥ २८ ॥  
 घण्टास्वनं भूरिलोहं रवणं लोहजं मलम् ।  
 सौराष्ट्रं चाथ सीसोऽस्त्री योगेष्टं मुजगाह्वयम् ॥ २९ ॥  
 यवनेष्टं समोद्धकं हेमघ्नं भूतलोद्भवम् ।  
 त्रपु नागं चीनपट्टं रङ्गमप्यथ पिच्छटम् ॥ ३० ॥  
 रङ्गं वज्रं त्रपु क्षोभ्यं मृदङ्गं नागजीवनम् ।  
 परासं सिंहलं ज्येष्ठं वक्राख्यं मुखमूषणम् ॥ ३१ ॥



कस्तीरं शोभनं नागमरिजं हेमजं शठम् ।  
 गुरुपत्रं तमरकं घनं सलवणं रजः ॥ ३२ ॥  
 अयः कृष्णायसं चीनं शस्त्राख्यं विषमायुधम् ।  
 धीवरं धीमकं लोहं लौहकालदृढानि च ॥ ३३ ॥  
 स्त्री कुटिनां पारशवो गिरिसारोऽश्मसारकः ।  
 अथ कालायसं तीक्ष्णं सुलोहं रूक्षमासुरम् ॥ ३४ ॥  
 वैकृन्तः स्याद् रसवरो रसज्ञो व्योमधारणः ।  
 रसकस्त्वयसः सारो विकारो लोहजः कुशी ॥ ३५ ॥  
 धूर्तमण्ड्वरसिंहाणविष्टाख्यानि त्वयोमले ।  
 लोहं तु तैजसं सर्वं वसु रत्नं मणिनं षण् ॥ ३६ ॥  
 स्फटिकोऽर्को रविग्रावा सूर्यकान्तोऽनलोपलः ।  
 चन्द्रकान्तश्चन्द्रमणिः सुलामोऽथ त्वयोमणिः ॥ ३७ ॥  
 अयस्कान्तस्तद्विशेषाश्चम्बकध्रामकादयः ।  
 गारुत्मतं मरकतमश्मगर्भं हरिन्मणिः ॥ ३८ ॥  
 शोणरत्नं लोहितकं पद्मरागोऽरुणोपलः ।  
 विद्रुमो ना प्रवालोऽस्त्री वज्रोऽस्त्री हीरकः पुमान् ॥ ३९ ॥  
 इन्द्रनीलं महानीलं वैदूर्यं बालवायजम् ।  
 कुरुविन्दास्तु कुल्माषा रत्नभेदास्तु मौक्तिकम् ॥ ४० ॥  
 माणिक्यं पौष्पकं शङ्खः पुलको विमलादयः ।  
 रसाञ्जनं तार्क्ष्यशैलं शैलेयं रसगर्भकम् ॥ ४१ ॥  
 स्त्रोतोऽञ्जनं तु सौवीरं कपोताञ्जनयामुने ।  
 तुत्थाञ्जनं शिखिग्रीवं वितुन्नकमयूरके ॥ ४२ ॥  
 रीतिपुष्पं पुष्पकेतुः पौष्पकं कुसुमाञ्जनम् ।  
 तुत्थं तु दार्चिका काथसम्भवं कर्पूरीति च ॥ ४३ ॥  
 कुलत्थिका तु चक्षुष्या कुम्भकारी कुकालिका ।  
 रसस्तु पारतः सूतो हिङ्गुलो दारदो रसः ॥ ४४ ॥  
 हिङ्गुलं हंसपादं च कुरुविन्दं च के चन ॥ ४४ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां

वैजयन्त्यां भूमिकाण्डे शैलाध्यायः ॥ २ ॥

## वनाध्यायः ॥ ३ ॥

अटवी काटिकाऽरण्यं विपिनं काननं वनम् ।  
 कक्ष्यकं कुन्दिलं बाक्षं वनी गहनमित्यपि ॥ १ ॥  
 महाटवी त्वरण्यानी प्रस्तारस्तु तृणाटवी ।  
 कृत्रिमं वनमारामोऽपवनोपवने आपे ॥ २ ॥  
 तदेव राज्ञ उद्यानमाक्रीडश्चाथ तस्य तत् ।  
 सान्तःपुरस्य प्रमदावनं गेहस्य निष्कुटः ॥ ३ ॥  
 पुष्पवाटी त्वमात्यादेक्ष्यी वाटी फलाय चेत् ।  
 वृक्षो द्रुमो भूरुहो दुर्विटपी विष्टरोऽङ्घ्रिपः ॥ ४ ॥  
 अलोकहो जगो भूरुट् तरुः शाखी कुटः कुजः ।  
 वसुः करालिकोऽभच्छो जर्णो रुक्षः पुलाक्यपि ॥ ५ ॥  
 बानस्पत्यः पुष्पफली फली त्वेव वनस्पतिः ।  
 ओषधिः फलपाकान्ता ह्रस्वशाखाशिफः क्षुपः ॥ ६ ॥  
 अप्रकाण्डे स्तम्बगुल्मावुलपस्तु प्रतानिनी ।  
 गुम्भिन्यपि च बल्ली तु व्रततिव्रतती लता ॥ ७ ॥  
 बन्ध्यो वृक्षोऽवकेशी स्यादबन्ध्यस्तु फलेप्रदिः ।  
 पुष्पितः स्यात् कुसुमिनः फलितः फलिनः फली ॥ ८ ॥  
 फुल्ले प्रफुल्लस्तफुल्लव्याकोचविकचस्फुटाः ।  
 उत्फुल्लोन्मिषितोन्निद्रा उद्बुद्धोन्मिलितस्मिताः ॥ ९ ॥  
 फलमामं शलाटुः स्याद् वानं शुष्कतरं फलम् ।  
 त्रिपु बन्ध्यादयोऽथ स्यादङ्कुरोऽङ्कूरमस्त्रियौ ॥ १० ॥  
 प्ररोहश्चाथ वंशः स्याद् योऽङ्कुरः पर्वसूथितः ।  
 परुः पर्व पुमान् ग्रन्थिर्निर्यासः खपुरो लशः ॥ ११ ॥  
 शिफाजटाऽवरोहस्तु सा शाखाजा वटाविषु ।  
 मूलं बुध्नोऽङ्घ्रिनामास्मादास्कन्धात् स्यात्प्रकाण्डकम् ॥ १२ ॥  
 स दारुमात्रः स्थाण्वस्त्री दारु काण्डमथ त्रयी ।  
 छल्ली त्वक् स्त्री त्वचा न ह्री बल्कलं चोलकोऽस्त्रियौ ॥ १३ ॥  
 चोचं बल्कं च सारस्तु मज्जा सारः किनाटकम् ।  
 निष्कुटः कोटरो न स्त्री विदलं दारु पादितम् ॥ १४ ॥  
 स्कन्धः प्रघाणोऽथ शिखा शाखाऽथ शिखरं शिरः ।  
 स्कन्धशाखा तु शाला स्यात् प्रवालः पल्लवाङ्कुरः ॥ १५ ॥

विस्तारो विटपः स्तम्ब उच्छ्रायस्तु समुन्नतिः ।  
 छदस्तु छदनं पत्रं पलाशं पतनं दलम् ॥ १६ ॥  
 पर्णं बर्हं पतत्रं च त्रयी शुङ्गास्य कोशिका ।  
 पल्लवोऽस्त्री किसलयं किसलोऽपि नवे दले ॥ १७ ॥  
 पत्रमध्यशिरा माढिः पुष्पोऽस्त्री कुसुमं सुमम् ।  
 मणीचकं प्रसूनं च सूतं सुमनसः स्त्रियः ॥ १८ ॥  
 मकरन्दो मरन्दोऽस्य रसे जालं तु जालकम् ।  
 कलिका कोरकश्चाथ कुट्मलो मुकुलोऽस्त्रियौ ॥ १९ ॥  
 गुच्छो गुलुब्धः स्तम्बो मञ्ज्यां मञ्जरिवल्ली ।  
 प्रसवः पिप्पलं सस्यं फलं धृन्तं तु बन्धनम् ॥ २० ॥  
 पण्डास्त्वाम्रादयः शब्दा आम्रादिफलपुष्पयोः ।  
 हरीतक्यादिकं स्त्री स्यादश्वत्थादिफले पुनः ॥ २१ ॥  
 आश्वत्थमैकुदं प्लाक्षं नैयग्रोधं च बार्हतम् ।  
 वैणवं शैग्रवं चाथ जम्बूः स्त्री जम्बु जाम्बवम् ॥ २२ ॥  
 जात्यादयः स्वलिङ्गाः स्युः पुष्पार्थे व्रीहयः फले ।  
 विदार्याद्यास्तु मूलेऽपि पाटला कुसुमे न ना ॥ २३ ॥  
 सप्तम्यन्तपदारम्भाः पर्याया इह कुत्रचित् ।  
 सप्तम्यन्तं च पुंलिङ्गं विज्ञेयं संशये सति ॥ २४ ॥  
 आम्ने कामाङ्गमाकन्दौ चूतो वेलोऽङ्गनाप्रियः ।  
 करको वलयश्चाथ श्रेष्ठेऽत्र सहकारकः ॥ २५ ॥  
 अथ श्यामलके लाला लवली लावली फला ।  
 केसरे वकुलो मयलालसः सिंहकेसरः ॥ २६ ॥  
 द्राक्षाफलो गुडश्चाथ न्यग्रोधो बहुपाट्टः ।  
 श्रीवृक्षे पिप्पलोऽश्वत्थः प्लाक्षश्चलदलोऽङ्गुलः ॥ २७ ॥  
 उदुम्बरे प्राणिफलो मशकी हेमदुग्धकः ।  
 प्लक्षस्तु पर्कटिजटिकलापिगिरिलक्ष्मणाः ॥ २८ ॥  
 पलाशो किशुकः पर्णो वातपोथस्त्रिपर्णकः ।  
 आस्फोटो ब्रह्मवृक्षश्च इस्तिकर्णदले कृती ॥ २९ ॥  
 बिल्वे मालूरमङ्गल्यौ श्रीफलो गोहरीतकी ।  
 परिव्यावे बालभीरुभीरुबालोऽम्बुवेतसः ॥ ३० ॥  
 शीतेऽध्रुपुष्पो वानीरो वज्जुलो वेतसो रथः ।  
 विदुले प्रिय आम्राते द्वौ पीतनकपीतनौ ॥ ३१ ॥

कपित्थे स्युर्दधिफलो दधित्थग्राहिमन्मथाः ।  
 हृद्यो दन्तशठः पुष्पफलोऽरिष्टे तु फेनिलः ॥ ३२ ॥  
 मातुलुङ्गे तु रुचको वराम्लः केसरी शठः ।  
 बीजपूरे मातुलुङ्गो लुङ्गः सुफलपूरकौ ॥ ३३ ॥  
 देविकायां महाशल्का दूष्याङ्गी मधुकुङ्कुटी ।  
 अथात्यम्ला मातुलुङ्गी पूतिपुष्पी वृकाम्लिका ॥ ३४ ॥  
 छागो तु करुणो लक्षो मल्लिकाकुसुमप्रियः ।  
 जम्बीरे जम्भको दन्तशठो जम्भीरजम्भलौ ॥ ३५ ॥  
 नागरङ्गे तु नारङ्गो नार्यङ्गस्तक्रवासनः ।  
 त्वग्गन्ध एतको योगी मुचुलिन्दे तु निन्नकः ॥ ३६ ॥  
 न्युञ्जे कर्मफलो भव्यः कर्मरङ्गः शठेश्वरौ ।  
 महीपतिर्दन्तशठः कर्ता नेता च कर्म च ॥ ३७ ॥  
 विकङ्कते ग्रन्थिलः स्याद्व्याघ्रपाञ्च मधुच्छदः ।  
 सर्जेश्वकर्णः साले तु कार्थकः सस्यसंवरः ॥ ३८ ॥  
 पीतसाले गौरसर्जप्रियकासनपीवराः ।  
 रक्तपुष्पोऽप्यथो सिन्धुसर्जे बाणः खरोऽर्जुनः ॥ ३९ ॥  
 रोहिते रौहिषो रोही रक्तो रौहितकोऽपि च ।  
 स्त्रीप्रिये वञ्जुलोऽशोकः कङ्कलिः कर्णपूरकः ॥ ४० ॥  
 हेमपुष्पोऽप्यथाङ्गोले निचोलोऽङ्कोदशोधनौ ।  
 रसाले वरणः सेतुस्तिकशाकोऽश्मरीरिपुः ॥ ४१ ॥  
 दोषग्रहे तु क्तको द्रावणः स्रवणः सरः ।  
 उल्लेखनीयो लक्ष्मीवांस्तेरस्तोयप्रसादनः ॥ ४२ ॥  
 राजादने फलाभ्यक्षः प्रियकश्च मधुस्रवः ।  
 मधुपुष्पे मधुष्ठीलो वानप्रस्थो मधूकवत् ॥ ४३ ॥  
 गुडपुष्पोऽप्यद्रिजेऽस्मिन् गौरशाको मधूलकः ।  
 पारिमद्रस्य भेदे च मन्दारः पारिजातकः ॥ ४४ ॥  
 भूर्जपत्रे भुजो भूर्जो मृदुत्वक् चर्मिचर्मिकौ ।  
 पीलौ गुडफलः खंसी श्यामश्चाथात्र शैलजे ॥ ४५ ॥  
 अक्षोढः कर्परालश्च नेमीये त्वतिमुक्तकः ।  
 चित्रकृत् तिमिशो नेमी वञ्जुलोऽथायुगच्छदे ॥ ४६ ॥  
 सप्तपर्णो विशालत्वक्छारदो विषमच्छदः ।  
 कोविदारे चमरिको रक्तपुष्पो युगच्छदः ॥ ४७ ॥  
 काञ्चनारोऽप्याग्वधे तु व्याघातश्चतुरङ्गुलः ।  
 आरग्वध आरेवतः शम्याकः प्रग्रहोऽग्वधः ॥ ४८ ॥



कृतमालः सुपर्णश्च मदने तु फणी रसः ।  
 पिण्डीतके मरुवक इक्ष्वाकुर्गालवामनौ ॥ ४६ ॥  
 विचुलः पिचुलो राक्षः कैडर्यो विषपुष्पकः ।  
 काकदर्शद्वदनश्चीनो गरलः कण्टकीति च ॥ ४७ ॥  
 कालस्कन्धे तिन्दुकोऽक्ली स्फूर्जकः शितिसारकः ।  
 काकेन्दौ कालपीलुः स्यात् कुलकः काकतिन्दुकः ॥ ४८ ॥  
 सिते लोध्रे महालोध्रः शवरश्चाथ लोहिते ।  
 तिरीटो मार्जनश्चिल्वः कृष्णेऽस्मिन् लोध्रगालवौ ॥ ४९ ॥  
 गुग्गुलौ कालनिर्यासो देवधूपो महेश्वरः ।  
 श्रीमान् क्षिग्धः सर्वसहः श्लेष्मी तिक्तः कटुर्लघुः ॥ ५० ॥  
 कामः पुरो जटायुश्च कुम्भोल्लखलकं वरम् ।  
 रज्जुदाले नीचुदारः कच्छूदारो गृहदुमः ॥ ५१ ॥  
 गूढवृक्षः श्लेष्मफलो विषघ्नो द्विजकुत्सितः ।  
 उदालो बहुवारो ना सेलुः श्लेष्मातकी न षण् ॥ ५२ ॥  
 शोभाञ्जने तीक्ष्णगन्धः शिग्रुः काक्षीवमोचकौ ।  
 उष्णो मुरुङ्गी रक्तेऽस्मिन् मधुशिग्रुः सुभञ्जनः ॥ ५३ ॥  
 गृञ्जनः स्वादुगन्धा च प्रियालुस्तु धनुः पटः ।  
 काष्मर्ये गोपभद्रा स्यात् कार्प्परी कृष्णवृन्तिका ॥ ५४ ॥  
 श्रीपर्णी कुमुदा गृष्टिर्गम्भारी भद्रपर्णिका ।  
 कैडर्यं कटुफलः कुम्भी श्रीपर्णी कुमुदेति च ॥ ५५ ॥  
 सुपार्श्वे स्यात् कन्दरालो गर्दभाण्डः कपीतनः ।  
 ताम्रपाकी फलेपाकी प्लक्षको गन्धमुण्डकः ॥ ५६ ॥  
 कदम्बे पुलकी श्रीमान् प्रावृषेण्यो हलीमकः ।  
 महाकदम्बके नीपो धूर्तो धूर्तारदीपनौ ॥ ५७ ॥  
 वासन्ते स्यात् कुरवकस्तिलकः कुवको मधुः ।  
 शुक्लपुष्पः कुरुवको मदनो धूर्तनागरौ ॥ ५८ ॥  
 करञ्जे स्यान्नक्तमालः प्रकीर्यश्चरिबिल्वकः ।  
 कालिङ्गे पूतिकरजः पूतिके कलिकारकः ॥ ५९ ॥  
 बालपत्रे तिक्तसारः खदिरो दन्तधावनः ।  
 सिते तु तस्मिन् कदरः शल्यकश्च मरुन्धवः ॥ ६० ॥  
 मरुद्भवे विट्खदिरोऽप्यरिमोऽप्यरिमेदकः ।  
 कण्टकी चाप्यथैरण्डे हस्तपर्णोऽप्यलम्बकः ॥ ६१ ॥

रुवुः पञ्चाङ्गुलश्चक्षुरामण्डस्तरुणोऽम्बुकः ।  
 गन्धर्वहस्तो रुवुको वातघ्नो व्याघ्रपुच्छकः ॥ ६५ ॥  
 प्रियके तु प्रियङ्गुवाख्या कारम्मा फलिनी फली ।  
 विष्वक्सेना बला वृन्ता गुन्दा गोबन्दिनी लता ॥ ६६ ॥  
 भावज्ञा सर्षपी स्याख्या वृत्ताङ्गी सुयमावनी ।  
 कन्या चापि कदम्बस्तु निचुलोऽम्बुज इज्जलः ॥ ६७ ॥  
 स्योनाके शोणकट्वाङ्गौ दीर्घवृन्तः कुटन्नटः ।  
 मण्डूकपर्णः पत्रोर्णो मल्लकः शुक्रनाशकः ॥ ६८ ॥  
 भूतपुष्पो नटो ढङ्क ऋक्षण्डुण्डुक आरलुः ।  
 तिलके फलकः श्रीमान् सुगन्धो मुखमण्डनः ॥ ६९ ॥  
 कर्णपूरोऽल्पपुष्पश्च पुन्नागे सुरवल्लभः ।  
 किदिरे दीनकम्बोजौ तद्भेदे सुरपर्णिका ॥ ७० ॥  
 पारिभद्रे द्रुक्लिमं देवदारु सुराह्वयम् ।  
 पूतिकाष्ठं भद्रदारु पीतदारु च दारु च ॥ ७१ ॥  
 वृक्षोत्पले कर्णिकारः परिव्याधोऽथ भण्डिले ।  
 कपीतनः शिरीषश्च करके दाडिमी त्रयी ॥ ७२ ॥  
 कुटजे कुटचो वत्सः शक्राख्यो गिरिमल्लिका ।  
 एतस्यैवास्त्रियाविन्द्रयवमद्रयवौ फले ॥ ७३ ॥  
 पनसे कण्टकिफलः पयोऽण्डो जघनेफलः ।  
 कर्कशी मधुबीजश्च सरले पूतिकाष्ठकम् ॥ ७४ ॥  
 निम्बे पार्वतकैडर्यद्वेषिच्छर्वनमायिकाः ।  
 रोमशः पिचुमन्दश्च लकुचे लिङ्कुचो डहुः ॥ ७५ ॥  
 पिचुले म्नावुकः शाके पृथुच्छदहलीमकौ ।  
 उन्मत्ते धूर्तधुत्तूरधुस्तूरकितवाः शठः ॥ ७६ ॥  
 धूर्दूरः काञ्चनाहोऽथ त्रिपुरे मदमत्तकः ।  
 प्रेतालये तु तिक्तीकः शाखोटो गन्धमालहा ॥ ७७ ॥  
 कृसरे भीरुमार्जारकिंशुका इङ्गुदी न षण् ।  
 पिण्डारके तु पिण्डीकः कृष्णे त्वस्मिन् बलाहकः ॥ ७८ ॥  
 पुत्रजीवे त्वक्षफलो रुद्राक्षे तु महामुनिः ।  
 एकस्ये त्वत्र मामीदो द्विमुखे तु वरार्गलः ॥ ७९ ॥  
 चतुर्मुखे ब्रह्मसंज्ञः पञ्चवक्त्रे हराह्वयः ।  
 षण्मुखे तु गुहाख्योऽथ किम्पाके काकमर्दकः ॥ ८० ॥  
 तिनृङ्गीकेऽम्लिका चिञ्चा शुक्तिनारी कपिप्रिया ।  
 तिन्निणी चाप्यथो हेमपुष्पे चाम्पेयचम्पकौ ॥ ८१ ॥

हरणः शीतलः कान्तः कमनीयः पचम्पचः ।  
 हीने त्वस्त्रिः कुम्भफलश्चाम्पेयो नागकेसरः ॥ ८२ ॥  
 करमर्दे वशश्चोलः कृष्णपाकफलैः पदैः ।  
 व्यस्तैः समस्तैर्युग्मैश्च पुंसि पञ्चदशाभिधाः ॥ ८३ ॥  
 शुषेणो विप्रकोऽप्यल्पफलेऽस्मिन् करमर्दिका ।  
 वन्दाके वृक्षको वन्दा जीवन्त्यपदरोहिणी ॥ ८४ ॥  
 वृक्षादनी वृक्षरुहा सेव्यास्मिन् क्षीरवृक्षजे ।  
 तनुस्तुष्टो जयः कान्तः कुणिः कातुलको दुमः ॥ ८५ ॥  
 अभिमन्ये हविर्मन्थोऽप्यरणिः पावको वशा ।  
 गणिकार्यप्यथो देवताडे वेणी खरागरी ॥ ८६ ॥  
 कालस्कन्धे तमालोऽस्त्री तापिच्छे काकतुण्डिका ।  
 बदर्या कुवली कोलिः कूली क्रूरा तिरिदिका ॥ ८७ ॥  
 लताकोलौ तु खलकी गिरिकोलौ तु सौरसा ।  
 हस्तिकोलौ महाघोण्टा गोपघोण्टा महाफला ॥ ८८ ॥  
 जलकोलौ तु सङ्गाली नरकोलौ तु कर्कशी ।  
 सृगालकोलौ हिंसाऽथ शमी सक्तुफला जया ॥ ८९ ॥  
 काकस्थाल्यां कुबेराक्षी कृष्णवृन्ता फलेरुहा ।  
 आमोघा पाटलिर्न क्ली पूरण्यां शाल्मलिर्न षण् ॥ ९० ॥  
 काण्ठीला तूलिनी तूलफलाऽथ कूटशाल्मलौ ।  
 रोचनः शिंशपायां तु तीक्ष्णधूमावसादनी ॥ ९१ ॥  
 कपिला पिच्छिला भस्मगर्भा मण्डलपत्रिका ।  
 जम्ब्यां त्रिसारा विरजा महाजम्ब्यां महाफला ॥ ९२ ॥  
 सुरसाथो राजजम्ब्यां सुफलः सुरभिच्छदः ।  
 काकजम्ब्यां तु मेघाभः शिवेष्टः शीतपल्लवः ॥ ९३ ॥  
 जम्बूटनीलजम्बूटौ शफर्या श्लक्ष्णपत्रकः ।  
 शिलीन्द्राश्मन्तकाम्लोटा धवे गौरधुरन्धरौ ॥ ९४ ॥  
 भञ्जातक्यां त्रिलिङ्गायामभिमुख्यप्यरुक्करः ।  
 कम्पिल्लो रोचनी गुण्डा रक्ताङ्गश्चन्द्रकर्कशौ ॥ ९५ ॥  
 सल्लक्यां सुरभिर्हस्तिप्रिया हस्त्यशना ध्रुवा ।  
 वैजयन्त्यां तु तर्कारी नादेयी च जयन्त्यपि ॥ ९६ ॥  
 घातक्यामनलज्वाला सुभिक्षा धातृपुष्पिका ।  
 स्नुष्णां समन्तदुग्धा स्नुग्धजा नन्दासिपत्रिका ॥ ९७ ॥

सिद्धगुण्डः सिन्धुरण्यस्यां विपत्रायां त्रिकण्टकः ।  
 वज्री गण्डर्यथो घण्टारवायां शणपुष्पिका ॥ ६८ ॥  
 तुण्डिकेयां रवा शीरा केसरा बदराफला ।  
 कार्पास्यकल्यत्र वन्यायां भारद्वाज्यपि कुष्ठनुत् ॥ ६९ ॥  
 विषण्ण्यां भक्षिका भाञ्जी विष्टा ब्राह्मणयष्टिका ।  
 ब्रह्मदण्डी च पद्मा च सारपण्यां स्थिरा ध्रुवा ॥ १०० ॥  
 कोकिलाक्षस्तु काण्डेक्षुरिक्षुरः क्षुरकः क्षुरः ।  
 वासके त्वाटरूषः स्यात् सिंहास्यो वाजिदन्तकः ॥ १०१ ॥  
 वाशा सिंही वैद्यमाता वार्ताक्यां दुष्प्रधर्षिणी ।  
 वातिङ्गनस्तु भण्डाकी वार्ताकुर्हिङ्गुलुः क्षियाम् ॥ १०२ ॥  
 गोष्ठवातिङ्गने त्वेला परुका जलजम्बुका ।  
 हस्तिवातिङ्गने त्विभ्या विशाला दद्रुनाशिनी ॥ १०३ ॥  
 बृहत्यां प्रसहा काली वार्ताकी हिङ्गुदी कुली ।  
 लताबृहत्यां सुस्निग्धा धन्या प्रसहनी लता ॥ १०४ ॥  
 निदिग्धिकायां सन्धानी महासन्धा गिरिप्रिया ।  
 कण्टकाल्यां परिकूरा कुल्या कुल्यस्पृशी वरा ॥ १०५ ॥  
 दुःस्पर्शा राष्ट्रिका सिंही कण्टकाली निदिग्धिका ।  
 दण्डोत्पले सहा देवा तलपोटे प्रमेहनुत् ॥ १०६ ॥  
 ह्यपुच्छी तु काम्बोजी माषपर्णी महासहा ।  
 मार्कवे भृङ्गराजः स्यात् पर्पणस्तु श्वपामनः ॥ १०७ ॥  
 कालमेढ्यां कृष्णफला वागूची वसुवङ्गिका ।  
 सोमवल्ली पूतिफली सोमराजिरवत्गुजः ॥ १०८ ॥  
 पारित्राण्यां त्रायमाणा त्रायन्ती बलभद्रिका ।  
 रेवत्यां रामदूती स्याद्धारुणी नागदन्त्यपि ॥ १०९ ॥  
 श्रीफलयां क्लीतकी नीली नीलकेशी महारसा ।  
 आसीणा रञ्जनी तुत्था कारवाही च नीलिनी ॥ ११० ॥  
 फल्गुः काकोदुम्बरिका बलयूर्जघनेफला ।  
 दास्यां षडश्रा शार्ङ्गष्ठा काकजङ्घा विलोमिका ॥ १११ ॥  
 काकनासा तु काकाङ्गी जीवनीया शिरोरुहा ।  
 रुद्ध्यां वयस्या काकोली काकमाची तु वायसी ॥ ११२ ॥  
 प्रत्यक्छ्रेण्यां सुतश्रेणी द्रवन्ती शम्बरी वृषा ।  
 चित्रोपचित्रा न्यग्रोधी रण्डा मूषिकपर्ण्यपि ॥ ११३ ॥  
 देव्यां मूर्वा घनुश्रेणी गोकर्णी पीलुपर्णिका ।  
 मधूलिका तिक्तवल्का पीलुनी तेजनी स्रवा ॥ ११४ ॥



प्रत्यक्पर्णी तु शिखरी किणिही खरमञ्जरी ।  
 अपामार्गः शैखरिको धामार्गवमयूरकौ ॥ ११५ ॥  
 अजमृङ्गायां विषाणी स्याद् गोजिह्वादाधिके समे ।  
 शङ्खिनी चोरपुष्पी स्यात् केशिनी चाप्यथो लघु ॥ ११६ ॥  
 वर्षा लङ्कायिका स्पृका मरुन्माला लता मरुत् ।  
 कच्छूरके द्राविडकः काल्यको वेधमुख्यकः ॥ ११७ ॥  
 निर्गुण्ड्यामिन्द्रसुरसः सिन्धुवारश्च सिन्दुकः ।  
 कुठेरके तु पर्णासो मालोर्जरकठिञ्जरौ ॥ ११८ ॥  
 सितेऽस्मिन् मञ्जरी तीक्ष्णस्तीक्ष्णगन्धोऽर्जकोऽत्रः तु ।  
 सुगन्धौ श्वेतसुरसा भारती तुलसी शिवा ॥ ११९ ॥  
 अल्पपत्रस्तु जम्बीरः फणिर्जकसमीरणौ ।  
 अस्मिन् सुगन्धौ सौवासो मञ्जरीकमयूरकौ ॥ १२० ॥  
 तीक्ष्णे तीक्ष्णार्जको गौरी भूतघ्नी देवदुन्दुभिः ।  
 अल्पमात्रे तु वैकुण्ठो विल्वगन्धो वचाच्छदः ॥ १२१ ॥  
 कालपर्ण्या तु सुरभिः करालः कालमालकः ।  
 मालो ब्रह्मजटायां तु सलज्जं दानवाञ्जनम् ॥ १२२ ॥  
 पुण्डरीकं दमनकं कान्तं दान्तं मुनिः पुमान् ।  
 विष्णुकान्ता तु सुमुखी गवसी स्यान्महारसा ॥ १२३ ॥  
 ऋषणी द्रोणिका छत्रा चक्षुष्या द्रोणपुष्पिका ।  
 सूर्यावर्ते पणिकायां मोरटा मूलपुष्पिका ॥ १२४ ॥  
 मुण्ड्यां मुण्डितिका मुण्डा श्रमणी श्रमणी बुधा ।  
 रोदन्यां कच्छुरानन्ता ताम्रमूला दुरालभा ॥ १२५ ॥  
 यासो यवासो दुस्स्पर्शो धन्वयासः कुनाशकः ।  
 वृश्चिकाल्यामुष्ट्रधूम्रपुच्छिका नागवृन्तिका ॥ १२६ ॥  
 सर्पदंष्ट्रयमरा काली विषघ्नी वृश्चिकच्छदा ।  
 वाटपुष्पां बला वाट्या सम्मासा चात्रसंज्ञिका ॥ १२७ ॥  
 वाट्यालोऽतिबलायां तु पुष्पवीर्या जनी सहा ।  
 अश्वकन्दस्त्वग्गन्धी तिक्ते तु कटुपर्पटौ ॥ १२८ ॥  
 ऋषभी त्वजहाष्यण्डा कण्डूरा प्रावृषायणी ।  
 कपिकच्छूः शूकशिम्बिरात्मगुप्ता च कच्छुरा ॥ १२९ ॥  
 अस्थिमांस्त्वस्थिसङ्घातोऽप्यस्थिसङ्घनोऽपि च ।  
 एकाष्टीला पापचेली स्थापनी वनतिक्रिका ॥ १३० ॥

पाठाम्बुषा विद्वकर्णी प्राचीना श्रेयसी रसा ।  
 गुड्ढ्यां कुण्डली धीरा छत्रा छिन्नरुहा घरा ॥ १३१ ॥  
 वत्सादनी सोमवल्ली विशल्या चक्रलक्षणा ।  
 जीवन्ती खरुहा देवी विषघ्न्यमृतवल्लीका ॥ १३२ ॥  
 दीर्घवल्ल्यां वेन्नवन्यौ कुरुवेन्नश्च भूरदः ।  
 गवाक्ष्यां किणिही जैत्री प्रत्यक्छेप्यपराजिता ॥ १३३ ॥  
 विष्णुकान्ता परास्फोताश्वखुरी शीतलात्र तु ।  
 श्वेतायां चारिणी सूर्या गिरिकर्णी गवादिनी ॥ १३४ ॥  
 नीलायां तु महाश्वेता निष्ठयान्ता स्थूलपुष्पिका ।  
 जिङ्ग्यां समङ्गा विकसा मञ्जिष्ठाञ्जनवल्लीका ॥ १३५ ॥  
 पृश्निपर्ण्या पृथक्पर्णी लाङ्गूली पदपर्णिका ।  
 गुहा कलशिधावन्यौ दीर्घा सा चित्रपर्णिका ॥ १३६ ॥  
 सिंहपुष्पी फेरुविन्ना चित्राङ्गी क्रोष्टुमेखला ।  
 नागर्षा केशिका त्र्यशना त्रिपुटा त्रिपुटी त्रिवृत् ॥ १३७ ॥  
 रेचनी महती श्वासा माया कुठरुणात्र तु ।  
 कृष्णायां रोचनी श्यामा काला चित्रा सुषेण्यपि ॥ १३८ ॥  
 गोपा तु शारिषा भद्रा नागजिह्वा सुगन्धिका ।  
 वयोतिष्मत्यां पीतरसा लगणा कटभीङ्गुदी ॥ १३९ ॥  
 पारावतपदी पिण्या जीवन्ती स्फुटवल्लकी ।  
 नागवल्ली तु ताम्बूली तथा ताम्बूलवल्लीका ॥ १४० ॥  
 क्षुरे तु कण्टकिफलः स्त्रीगोभ्यां कण्टकः परः ।  
 गोक्षुरः स्थलशृङ्गाट इक्षुगन्धा पलङ्कषा ॥ १४१ ॥  
 श्वदंष्ट्रा भीरुपर्ण्या तु शतमूली शतावरी ।  
 इन्दीवरी बहुसुताप्यहेरुः पीवरीति च ॥ १४२ ॥  
 सुदर्शनायां चक्राङ्का दध्याली वृषपर्ण्यपि ।  
 जीवन्त्यां जीवनी जीवा जीवनीया मधुश्च सा ॥ १४३ ॥  
 चर्मपर्ण्या तु शार्ङ्गाष्टा सुताह्वयामुपोदिका ।  
 ब्रह्म्यां सत्यवती ब्राह्मी मत्स्याक्षी सोमवल्ली ॥ १४४ ॥  
 मण्डूकपर्ण्या भण्डीरी भाण्डी योजनवल्ल्यपि ।  
 शोफघ्न्यां पूरणा पूरी वर्षाभ्वी जीवबोधिनी ॥ १४५ ॥  
 पुनर्नवा च रक्तायां तस्यां योग्या कटिल्लका ।  
 श्वेतायां वृश्चिकोऽल्पायां दीर्घपत्री विटाटिका ॥ १४६ ॥  
 अस्या जात्यन्तरे स्वल्पे पूरणी हस्तिपूरणी ।  
 तुण्डिकेयां रक्तफला बिम्बोष्ठी पीलुपर्ण्यपि ॥ १४७ ॥

लज्जालुस्तु नमस्कारी वदर्यञ्जलिकारिका ।  
 गण्डकाली खदिर्या तु लज्जालुः स्याच्छमीफला ॥ १४८ ॥  
 कलन्ध्यां शतपर्वा स्यात् कलम्बूर्वायसी वधा ।  
 पटुञ्चिकायां तु शिवः शान्तः स्वस्तिककुक्षुटौ ॥ १४९ ॥  
 निद्रालुः करुणो मानी वनालुः सुनिषण्णकः ।  
 मारिषे जीवशाकः स्यादन्नाल्पे तण्डुलीयकः ॥ १५० ॥  
 मेघनादो विगण्डीरमथ स्युर्देवमारिषे ।  
 विभाजनो रसोत्सृष्टौ काणमारिष ओलकः ॥ १५१ ॥  
 लतामारिषतुवरौ वरशाकोलताटिकाः ।  
 जलजोऽसौ चञ्चटकः कुक्षुण्डे कबकोऽस्त्रियाम् ॥ १५२ ॥  
 भूवल्लूरमहिच्छत्रं भूस्फोटं भूमिकन्दकम् ।  
 छत्राकश्च सिलिन्ध्रश्च मुकुलेऽस्मिन् पलाण्डुकम् ॥ १५३ ॥  
 सृगालवास्तुके त्वारुर्वास्तुके क्षारपत्रकः ।  
 प्रवालो वीरशाकश्च श्रूषायां कासमर्दकः ॥ १५४ ॥  
 हरिपर्णे मल्लकोऽस्त्री सेकिमं बुस्तिका न षण् ।  
 नीलकण्ठोऽथ मरुजे शिवं चाणक्यमूलकम् ॥ १५५ ॥  
 मत्स्याद्यां शालशालीनौ पत्तुरो लोहमारकः ।  
 अगस्त्ये मुनिमार्जारवगस्तिर्वज्रसेनकः ॥ १५६ ॥  
 शुक्रनासोऽप्यथो पश्चात् सुन्दरो ग्रीष्मसुन्दरः ।  
 कपिः पञ्चयधः पुष्पी व्रणघ्नी ऋसी ऋरा ॥ १५७ ॥  
 प्रपुञ्जाडे त्वेडगजो दद्रुघ्नश्चक्रमर्दनः ।  
 घोषे कोशफला घण्टा घण्टाला फलिनी फली ॥ १५८ ॥  
 जाली पटोली ऋण्डाली कोशातक्यपि चात्र तु ।  
 पृथौ महाकोशातकी मृदङ्गः कृतवेधनः ॥ १५९ ॥  
 ज्योत्स्न्यां स्वल्पफला ग्राम्या मृदङ्गः कृतवेधनः ।  
 अथ जिह्वी दीर्घफला मागधी मलनोत्तमा ॥ १६० ॥  
 बहुजाल्यां कोशफला वन्या तिक्तपटोलिका ।  
 कर्कोटक्यां कोशफला राजकोशातकी फला ॥ १६१ ॥  
 महाजाली पीतघोषा क्षोडो धामार्गवोऽपि च ।  
 हस्तिघोषे तरङ्गोऽल्पे त्वादाली देवदाल्यपि ॥ १६२ ॥  
 चाङ्गेर्यां चुक्रिका वन्तशाठाम्बष्ठाम्ललोण्यपि ।  
 सुषण्यां तिक्तच्छदनः कारवेल्ताः कठिञ्जकः ॥ १६३ ॥

राजवल्ल्युरुधल्ल्यम्बुवल्ली रञ्जनवल्ल्यपि ।  
 सुगन्धके तु कर्कोटः किलासन्नः पटुच्छदः ॥ १६४ ॥  
 बृहत्कर्कोटके त्वैहो हस्तिकर्कोटको बली ।  
 पटोलके तु राजीवान् रवणः कर्कशः पटुः ॥ १६५ ॥  
 राजी राजामृतापाण्डुभूतेभ्यश्च फलः परः ।  
 तिक्ते राजपटोलश्च भीरुस्तिवर्वारुकर्कोटिः ॥ १६६ ॥  
 चोदन्युर्वारुवालकयोऽप्यल्पा सा राजकर्कोटिः ।  
 तुम्ब्यां पिण्डफालालावूः कटुतुम्ब्यां नृपात्मजा ॥ १६७ ॥  
 इक्ष्वाकुर्वसनी निम्ना घृन्ततुम्ब्यां तु तुम्बुका ।  
 अल्पतुम्ब्यां कुक्कुटाक्षो घृन्ते कर्कोलिचित्रलौ ॥ १६८ ॥  
 कालिङ्गोऽल्पेऽत्र चेन्नाणवेन्नालौ क्रोष्टुकर्कोटिः ।  
 कालिङ्ग्यां छत्रकः सोमः कर्कारुर्धनवासकः ॥ १६९ ॥  
 कूश्माण्डकः पुष्पफलः पीतपुष्पो नृपात्मजः ।  
 महाफला शाकफला सुमद्रा शङ्कुलापि च ॥ १७० ॥  
 सुखवासे शीर्णघृन्त उग्रगन्धः सुवासकः ।  
 त्रिलिङ्गे त्रपुषे तालुः छर्दनी हस्तिपर्णिनी ॥ १७१ ॥  
 चिद्रिटे पुनरुर्वारुर्मुगाद्यां गजचिद्रिटा ।  
 विटक्कोऽतिमृगेर्वारुर्विशालैन्द्रीन्द्रवारुणी ॥ १७२ ॥  
 अथो गवाक्ष्यां गोडुम्बा चित्रा च कदले पुनः ।  
 वृषा वारवुषा रम्भा काष्ठीलानंशुमत्फला ॥ १७३ ॥  
 कदली दीर्घपर्णी च रम्भा सा गौरपर्णिका ।  
 कृष्णा तु लम्पा कदली माहेन्द्री तु बृहत्फला ॥ १७४ ॥  
 सुगन्धयल्पफला मोचा साष्ठी काष्ठी कदल्यसौ ।  
 बिभीतकखिलिङ्गः स्यात् कलिस्तिष्ठ्यः कलिद्रुमः ॥ १७५ ॥  
 बिभीदकः कर्षफलो भूतवासो वहेटकः ।  
 वैत्यः पापस्तुषः कल्पः कालेयस्तुमुलाक्षकः ॥ १७६ ॥  
 संवर्तश्च षड्भ्रायां त्रिलिङ्गयामलकी शिवा ।  
 धात्री कर्षफला तिष्ठ्या सेव्याष्यण्डा मृटा दृढा ॥ १७७ ॥  
 हरीतक्यां शुक्रसृष्टा नन्दिनी साधिकाभया ।  
 अव्यथा चेतकी पथ्या धारणी कालकृणिका ॥ १७८ ॥  
 गुञ्जायां कृष्णला ताम्रा शार्ङ्गश्वा रक्तिका वरा ।  
 षूडामणिः कपिक्रोडा कालघृन्ती परा नव ॥ १७९ ॥  
 काकशब्दात् पीलुपीथ्यौ चिञ्चाणन्त्यदनी नखी ।  
 जङ्गा तिक्ता च वक्षः च सा शुक्ला चेन्मधुस्रवा ॥ १८० ॥



द्राक्षायां कृष्णिका स्वाद्वी प्रियाला कालमेषिका ।  
 हारभूरा दारुफला मृद्वीका गोस्तनी रसा ॥ १८१ ॥  
 मालत्यां रेवती जातिर्यूथिकायां मनोज्वला ।  
 मानवी चात्र पीतायां वासन्ती हेमपुष्पिका ॥ १८२ ॥  
 मल्लिकायां विचकिलो भूपदी मुक्तबन्धना ।  
 शीतभीरुर्मदयन्ती गवाक्षी तृणशून्यकम् ॥ १८३ ॥  
 देवमाल्यां धरारोहा गोधामाल्यां तु सेवनी ।  
 सुरुपायां तृणं वेश्यं काकमाल्यां वनोज्ज्वा ॥ १८४ ॥  
 आस्फोता चैकपटलमाल्यां बालाऽथ रक्तकः ।  
 बन्धूको बन्धुजीवश्च सप्तलायां विभावनी ॥ १८५ ॥  
 सुगन्धा ग्रैष्मिकाताना मालिका नवमालिका ।  
 शोफालिका तु निर्गुण्डी नीलिका निवहात्र तु ॥ १८६ ॥  
 सितायां श्वेतसुरसा वासन्त्यां माधवी लता ।  
 निस्सङ्गजा कान्तनाला प्रहसन्ती कुटुम्बिका ॥ १८७ ॥  
 अतिमुक्तश्च कन्यायां कुमारी तरुणी सहा ।  
 महासहायामस्तानः पीताम्लाने कुरण्डकः ॥ १८८ ॥  
 शोणे बली कुरवको म्नाटेऽस्मिन् कलशोदकः ।  
 किङ्किराते किङ्किराटः प्रलोही चापि लातकः ॥ १८९ ॥  
 सैरेयके तु फिण्टी स्त्री तस्मिन् कुरवकोऽरुणे ।  
 दासी सहाऽप्यार्तगलः कुरण्डश्च सनीलकः ॥ १९० ॥  
 पीतेऽव्ययः कुरवकः सहा स्त्री सहचर्यषण् ।  
 कुन्दे माध्यः शुक्लपुष्पो वासोऽथ करवीरकः ॥ १९१ ॥  
 प्रतिहासः शतप्रासः शितिकुम्भोऽश्वमारकः ।  
 चण्डातोऽश्वरिपुः श्वेते मरालोऽग्रातिलोहिते ॥ १९२ ॥  
 भुज उग्रविषः काकनासायां शिवमल्लिका ।  
 बकपुष्पस्तूलपुष्पः काकशीर्षः शिवप्रियः ॥ १९३ ॥  
 वसुभट्टः पाशुपत एकाष्टीलोलम्बुको वसुः ।  
 नन्दावर्ते तु तगरस्तारावटनभोऽङ्गणौ ॥ १९४ ॥  
 जपायामोदपुष्पं स्यादत्र पद्मादयोऽपि च ।  
 विदार्या भूमिकुष्माण्डः सा तु कृष्णा पलाशिका ॥ १९५ ॥  
 कोष्ठिका क्षीरशुक्लेक्षुगन्धिकेक्षुविदारिका ।  
 श्वेता क्षीरविदारी सा महाश्वेतर्क्षगन्धिका ॥ १९६ ॥

शारथां लाङ्गली तोयपिप्पली शकुलादनी ।  
 गोलोम्यां जटिलोम्रोम्रगन्धा तीक्ष्णा जया वचा ॥ १६७ ॥  
 मङ्गल्या चाथ शुक्ला सा षड्गन्धा जललम्बिका ।  
 श्यामा तु सा घृणाभीष्टा कोशमीरी देवदुन्दुभिः ॥ १६८ ॥  
 कैवर्ती मुस्तकेत्वासौ गुन्द्रायां भद्रमुस्तकः ।  
 महोदरी वरारोहा नादेयी वलयो वरम् ॥ १६९ ॥  
 मुस्तायां मुस्तकं न स्त्री सुगन्धः कर्णपूरकः ।  
 शकुलाक्षः श्वेतमध्ये हंसः पीठरदुन्दुभे ॥ २०० ॥  
 जलमुस्ते तु प्लवनं गोदर्भं परिपेलवम् ।  
 कुटभटं दशपुरं गोपुरं वर्तकं प्लवम् ॥ २०१ ॥  
 बालं तु पिङ्गलं वर्जं द्वीवेरं दीर्घरोमकम् ।  
 चामरं चमकं ज्येष्ठं बहिष्ठं जटिलं जटा ॥ २०२ ॥  
 शैलमूलं तु कक्षोरं पलाशो हिमजा जटी ।  
 अशोऽन्यां मुसली ताली तालमूली फलिन्यपि ॥ २०३ ॥  
 खल्लोऽरिष्टो गुहोच्छिष्टो रसनो गृह्णनः कटुः ।  
 कायाङ्गं लघुनं दिव्यं महाकन्दामृतोद्भवे ॥ २०४ ॥  
 जीर्णकञ्च पलाण्डुस्तु श्वेतकन्दो मुकुन्दकः ।  
 हरितेऽस्मिन् लतार्कः स्यात् फरुण्डो दुद्रुमो रसः ॥ २०५ ॥  
 स्वल्पकन्दे हरिद्रक्ते गृह्णनो गर्जनो गुजः ।  
 लघुनं दीर्घपत्रं च पिच्छनखो महौषधः ॥ २०६ ॥  
 फरुण्डश्च पलाण्डुश्च लतार्कश्च परारिका ।  
 गृह्णनो यवनेष्टश्च पलाण्डोर्वश जातयः ॥ २०७ ॥  
 कन्दं त्वक्नी चित्रवण्ड उत्प्लुः कण्डूरसूरणौ ।  
 अशोऽग्नौ दैत्यमदनः कचूस्तु दलकूर्चिका ॥ २०८ ॥  
 शकटश्चाथ कालार्चः नूतनं वेष्टितं दलम् ।  
 शोथशत्रौ महापद्मो मोहो माणो बृहच्छदः ॥ २०९ ॥  
 वराहकन्दे वाराही चक्रोष्ट्र्यां मालुवा स्त्रियाम् ।  
 मध्वालुको मधुरसः कन्दलः कन्दली समौ ॥ २१० ॥  
 गौर्या हरिद्रा रात्र्याख्या हेमष्नी काञ्चनी परा ।  
 रोचनी रञ्जनी पीता पिष्ठा पिण्डा मनश्शिला ॥ २११ ॥  
 तोषणी वर्णिनी बाला विटकान्ता तरङ्गिणी ।  
 दाढ्या दारुहरिद्रा स्यात् पीतदारुञ्च पर्जनी ॥ २१२ ॥  
 पचम्पचा कर्कटिनी पर्परा पर्पटी वरा ।  
 कटकुटेरी कालेयः प्रकोट्यां तु कटूत्कटम् ॥ २१३ ॥

कटुशृङ्गं शृङ्गिवेरमार्द्रमार्द्रकमस्त्रियौ ।  
 वेणौ तु वंशकर्मारौ मृत्युपुष्पस्तृणध्वजः ॥ २१४ ॥  
 त्वचिसारो यवफलः खेलस्तेतनमस्करौ ।  
 चपश्च तेषु पवनोद्धूतध्वनिषु कीचकाः ॥ २१५ ॥  
 निस्सुषौ विषमो वेणौ क्षुद्रे लगुडवंशिका ।  
 तृणराजे तलस्तालो महापत्रः फलेरुहः ॥ २१६ ॥  
 क्रमुके वाटिका घोण्टा गुवाकः क्रूर आसवः ।  
 कषयो रागवान् पूगः फले पर्कटमस्य तत् ॥ २१७ ॥  
 पकं जोडं खरं शुष्कं चिकणे चक्कचक्के ।  
 दीर्घवृन्ते रामपूगो लतापूगे तु योजनः ॥ २१८ ॥  
 भूपूगे लघुकः क्षुद्रफले पाधोवकापि च ।  
 पूगे गैरेयकः शैलजातेऽथ स्याल्लताङ्कुरः ॥ २१९ ॥  
 हिन्तालस्तृणराजश्च नालिकेरे तु लाङ्गली ।  
 दाक्षिणात्योऽपफलोऽबालः सुतङ्गः कूर्चकेसरः ॥ २२० ॥  
 सदाफलो बली चास्मिन् ह्रस्वे स्यात् खुड्डकोऽत्र तु ।  
 रक्ते स्वर्णोऽमिकश्चाथ परिक्रोणास्य पट्टके ॥ २२१ ॥  
 खपुरः पूगपट्टोऽथ मधुक्षीरो महारसः ।  
 परुषः पाण्डुखर्जूरौ तस्मिन् खर्जूरिकाऽल्पके ॥ २२२ ॥  
 हलीमे केतकी न बली दीनो व्यञ्जनजम्बुलौ ।  
 स्त्रीभूषणो रजःपुष्पो गुप्तरागो वलीनकः ॥ २२३ ॥  
 ताल्यां दृढदला ताडी पत्रताली वराङ्गना ।  
 पत्रला फलपाकान्ता तालाद्याः स्युस्तृणद्रुमाः ॥ २२४ ॥  
 सवेणवस्ते त्वक्सारस्तृणानीक्षुयवादयः ।  
 इक्षुवृष्यो मधुतृणो मृत्युपुष्पो महारसः ॥ २२५ ॥  
 खड्गपत्रोऽप्यथानिक्षुर्वायसालीक्षुपालिका ।  
 इक्षुमेदास्तु कान्तारवंशपुण्ड्रादयो नरि ॥ २२६ ॥  
 दर्भोऽश्ववालः काशिर्ना काशोऽस्त्री स्त्रीक्षुगन्धिका ।  
 कुशे मुनिः कुयो दर्भो वीनाहो यक्षजागरः ॥ २२७ ॥  
 लताकुशे तु शीरी स्त्री घमने शुषिरो नलः ।  
 शरो मुखो भद्रमुब्जो गुन्द्रस्तेजनकः खरः ॥ २२८ ॥  
 मुब्जस्तु यज्ञियो मेध्यो मृदुत्वग्रहमेखलः ।  
 चल्कस्तूलपो दर्भ ऊर्ध्वमूलः खरच्छदः ॥ २२९ ॥

बालकेश्यां दृढदला जूर्णा कृकणपत्रिका ।  
 पुंभूम्नि बल्वजा वात्यां त्विष्कटः स्यात् पराशकः ॥ २३० ॥  
 स्याद्वीरणं वीरतृणं मूलेऽस्योशीरमस्त्रियाम् ।  
 सेव्या मृणालनलदलामज्जानि जलाशयम् ॥ २३१ ॥  
 नियुतस्तम्बजदृढदैत्यगौरकुदानवम् ।  
 अभयं चावदाहं च दूर्वा तु हरितालिका ॥ २३२ ॥  
 वरा सहस्रवीर्या च भार्गवी चाथ सा सिता ।  
 गोलोमी शतवीर्या च गोऽर्गलस्त्वेरका तृणम् ॥ २३३ ॥  
 सौगन्धिकं देवजग्धं ध्यामकं कत्तृणं पुरम् ।  
 छत्रातिच्छत्रापालघ्नौ मालातृणकभूस्तृणो ॥ २३४ ॥  
 पुञ्जीलस्तु तृणस्तम्ब इषीका तूलिका समे ।  
 शष्पं बालतृणं शादः सर्वं तु तृणमर्जुनम् ॥ २३५ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां  
 भूमिकाण्डे वनाध्यायः ॥ ३ ॥



## पशुसङ्ग्रहाध्यायः ॥ ४ ॥

सिंहो मृगेन्द्रः पञ्चास्यः पारीन्द्रः श्वेतपिङ्गलः ।  
 व्यादीर्णास्यो महानादः शार्दूलस्तुल्यविक्रमः ॥ १ ॥  
 कण्ठीरवो मृगरिपुः सुगन्धिर्हरितो हरिः ।  
 हलीक्ष्णस्तृणसिंहः स्यात् कूटकर्मगर्हिसकः ॥ २ ॥  
 व्याघ्रो मृगारिः शार्दूलो हिंसारश्चन्द्रकी मृगात् ।  
 हुण्डश्चाल्पस्त्वयं द्वीपी चुलुको भेलमेहिनौ ॥ ३ ॥  
 तरक्षुस्तु मृगाजीवस्तिर्लित्सकमृगादनौ ।  
 पिण्डारकस्तु चित्राङ्गो महादंष्ट्रो वरोत्कटः ॥ ४ ॥  
 वराहः सूकरो घोणी वक्रदंष्ट्रो जलप्रियः ।  
 पीनस्कन्धः स्तब्धरोमा कामरूपी तलेक्षणः ॥ ५ ॥  
 भूदारः कुमुखो घृष्टिः स्थूलनासो बहुप्रजः ।  
 पङ्कक्रीडनकः पोत्री किटिराखनिकः किरिः ॥ ६ ॥  
 भङ्गूको दीर्घरोमक्षो भङ्गाटो वृकधूर्तकः ।  
 विकरालोऽच्छभङ्गश्च गण्डके खड्गखड्गिनी ॥ ७ ॥  
 वार्ध्वाणसो गणोत्साहः कोकस्त्वीहामृगो वृकः ।  
 महिषः सैरिभोऽश्वारिर्जलात्मा गद्रवस्वरः ॥ ८ ॥  
 लुलायः कासरः शृङ्गी हेरम्बः कृष्णशृङ्गकः ।  
 जरन्तः कलुषः पोत्री वीरस्कन्धो रजस्वलः ॥ ९ ॥  
 स्कन्धशृङ्गो यमरथः कटाहो वंशालालिकः ।  
 हंसकालीसुतश्चाथ सृजया महिषोऽसितः ॥ १० ॥  
 गवलश्च परस्वांश्च महिषः स्यादरण्यजः ।  
 मृगः प्लावी भीरुचेता वननो मरुको लिगुः ॥ ११ ॥  
 नित्यशङ्की च कृष्णस्तु कृष्णसारो निरञ्जनः ।  
 यक्षाङ्ग एणस्ताम्रस्तु हरिणस्तृणसंवरः ॥ १२ ॥  
 राजीवस्त्वेष राजीमान् सितक्रोडः स चीनकः ।  
 शम्बरस्त्वल्पहरिणः पृषतस्तु स बिन्दुमान् ॥ १३ ॥  
 रुर्महान् कृष्णसारः कुरङ्गो हरिणो महान् ।  
 रोहिदृश्यो हरिणवन्मृदुशृङ्गः प्रतापसः ॥ १४ ॥

न्यकुस्तु शम्बराकारस्त्रिकेण विपुलोन्नतः ।  
 परम्परस्तु गोकर्णः पोटरूपस्तु तत्समः ॥ १५ ॥  
 रौहिषो गर्दभाभासो रोहितः श्वेतराजिमान् ।  
 वातायुः स्याद्वातमृगो जवी वातप्रसीः शिवः ॥ १६ ॥  
 प्रियको रोमभिर्युक्तो मृदूक्षमस्तृणैर्धनैः ।  
 नीलः स श्वेतरैस्त्रावानथवा श्वेतचन्द्रकः ॥ १७ ॥  
 कदली तु बिले शेते मृदुरूक्षोक्षकवृरैः ।  
 नीलाग्रै रोमभिर्युक्ता सा विशत्यङ्गुलायता ॥ १८ ॥  
 श्यामिका तु श्वेतबिन्दुः श्यामला षोडशाङ्गुला ।  
 चतुरा तु घनस्निग्धरोमा श्यामा सचन्द्रका ॥ १९ ॥  
 कालिका त्वसिता यद्वा कपोता पिङ्गबिन्दुका ।  
 सामूना तु समूरुर्ना सार्धहस्तसमायता ॥ २० ॥  
 गोधूमाभाऽथवा कृष्णा स्निग्धोक्षमृदुरोमिका ।  
 चीनस्तु चीनसी स्त्रीत्वे कपोता त्रिंशदङ्गुला ॥ २१ ॥  
 मरुजा तूच्चमस्तृणमृदुपाण्डुरोमिका ।  
 रोमराजीमती मध्ये द्वादशाङ्गुलसंमिता ॥ २२ ॥  
 घनका तु चमूरुर्ना सिताभा यदि वासिता ।  
 कृष्णरोमानुविद्धा वा पुच्छोऽस्या न भवत्यपि ॥ २३ ॥  
 सेलिमस्तु मृदुश्वेतरूक्षोक्षघनरोमकः ।  
 चमूरुस्तु महाग्रीवः सितः केसरवान् जवी ॥ २४ ॥  
 कदली तु श्यामवर्णा हस्तायामा महोदरी ।  
 एते स्युः कृष्णसाराद्या मृगा अजिनयोनयः ॥ २५ ॥  
 शशतुल्या विजातिश्च रक्ताभा मृगमातृका ।  
 बिलेशया तु कृमिरा कुमारी तु हिमद्युतिः ॥ २६ ॥  
 कुचारश्चारुपुच्छः स्यात् सुविषाणो वृषाकृतिः ।  
 कृतारुस्तु त निष्पुच्छो जायते हिमवत्तटे ॥ २७ ॥  
 रुचुस्तु शुद्धो मेषाभः स पीतः सूकराकृतिः ।  
 कृष्णे शृङ्गे च तस्याथ कृतमालो वृकाकृतिः ॥ २८ ॥  
 सृमरः स्याद्वालमृगः परुर्ना चमरी न षण् ।  
 कालपुच्छस्तु तत्प्रायो नामार्थेनैव भिद्यते ॥ २९ ॥  
 चारुकस्तु किशोराभः कन्दरस्तूषजानुकः ।  
 मृगाः स्युः कृष्णसाराद्यास्त एव पशवः सह ॥ ३० ॥  
 सिंहाद्यैश्च शशाद्यैश्च प्रास्यैश्चैव गवादिभिः ।  
 शशस्तु रोमकर्णः स्यान्मृदुरोमा च शूलिकः ॥ ३१ ॥

गन्धर्वः स्याद्गोलपुसो रामस्तु वृकधोरणः ।  
 शरभस्तु गजारातिरुत्पादश्चाष्टपादपि ॥ ३२ ॥  
 गवयः स्याद् वनगवो गोवाही बाह्वारणः ।  
 कोलाङ्गकस्तु जलको भालुको भल्लुकाकृतिः ॥ ३३ ॥  
 पुरोही स्यात् कुलचरो ललनाक्षो वृकाकृतिः ।  
 कोटङ्गः स्याज्जन्तुधरो मार्जारी चमराकृतिः ॥ ३४ ॥  
 शालिजातस्तु खट्वासः पूतिः खट्वासिकापि च ।  
 शिवेव स्याद् गन्धमृगः कस्तूरी मृगपालिका ॥ ३५ ॥  
 अण्डौ तु तस्याः कस्तूरी राजार्ह शितिचन्दनम् ।  
 मार्जारिका वेधमुख्या मदनी गन्धचेलिका ॥ ३६ ॥  
 श्वाविच्छललशल्यौ तल्लोम्यना शलली शलम् ।  
 सृगालो भरुजः क्रोष्टा श्मभीरुर्मृगमत्तकः ॥ ३७ ॥  
 शयालुः सूचको घोरः फेरुफेरुण्डफेरवाः ।  
 मृगधूर्तो भूरिमायो गोमायुर्वृकधूर्तकः ॥ ३८ ॥  
 किखिः स्त्री क्रोष्टुभेदेऽल्पे पृथौ लोपाशगृण्ठिवौ ।  
 वानरो मर्कटः कीशः कपिः शाखाभृगो हरिः ॥ ३९ ॥  
 महावेगो दधिमुखः कुरङ्गो भल्लुकः पृथुः ।  
 वलीमुखो वनौकाः स गोलाङ्गूलोऽसिताननः ॥ ४० ॥  
 नीलशीर्षोऽप्यथ द्विक्को वानरो रोहिताननः ।  
 शृङ्गिणी सौरभेयी गौरर्ष्या माहेय्युषा शुभा ॥ ४१ ॥  
 अनड्वाह्यनडुह्युक्ता तम्बा तम्पा निलिम्पिका ।  
 रजःपूता च कृष्णाऽसौ बहुला क्षितिसम्भवा ॥ ४२ ॥  
 सिता तु धवला पुण्ड्रा मुनन्दा जलसम्भवा ।  
 कपिला त्वग्निजा दाक्षी सुरभिः कामरूपिणी ॥ ४३ ॥  
 रक्तवर्णा रोहिणी स्याच्छीतला वायुसम्भवा ।  
 शबली तु प्रक्षराङ्गी सुमना व्योमसम्भवा ॥ ४४ ॥  
 बराङ्गा तु चतुर्वर्षा द्विवर्षा तु द्विहायनी ।  
 एकहायन्येकवर्षा बहुक्षीरा तु वज्रुला ॥ ४५ ॥  
 नैचिकी गौर्गवां श्रेष्ठा मद्रा गौर्गोमतल्लिका ।  
 काल्योपसर्या प्रजने पलिकनी बालगर्मिणी ॥ ४६ ॥  
 पष्ठौह्यन्या वशा वन्ध्या वेहद्रर्भोपघातिनी ।  
 अवतोका स्रवद्रर्भा वत्सकामा तु वत्सला ॥ ४७ ॥

चिरसूता वष्कयणी गृष्टिः सूतवती सकृत् ।  
 समांसमीना सा गौर्या प्रतिवर्षं प्रसूयते ॥ ४८ ॥  
 पीनस्तनी तु पीनोष्णी सुखदोह्या तु सुप्रता ।  
 दुःखदोह्या तु करटा प्रस्तुता प्रसवोन्मुखी ॥ ४९ ॥  
 द्रोणक्षीरा द्रोणदुग्धा बहुसूतिः परेषुका ।  
 धेनुर्नवप्रसूता गौर्धेनुष्या बन्धके स्थिता ॥ ५० ॥  
 अभिवान्यान्यवत्सा गौर्वृषाक्रान्ता तु सन्धिनी ।  
 आपीनमूधो वृन्तं तु स्तनो वत्सस्तु तर्णकः ॥ ५१ ॥  
 विषाणी वृषभः शृङ्गी बाहो गौरक्षधूर्तिलः ।  
 उक्षा गौर्वृषलोऽनड्वान् बाह्यः स्कन्धवहो वही ॥ ५२ ॥  
 सौरभेयो बलीवर्दो बाढवेयश्च शाकरः ।  
 षण्डस्तु गोपतिः श्रीमान् डक्क इट्वर ईश्वरः ॥ ५३ ॥  
 ककुदी गोवृषो घोणः ककुद्यान् मदकोहलः ।  
 जातोक्षो जातमात्रोक्षा दम्यो वत्सतरः समौ ॥ ५४ ॥  
 महोक्षः स्यादुक्षतरो वृद्धोक्षस्तु जरद्रवः ।  
 आर्षभ्यः षण्डतायोग्यो नैचिक्याः प्राक् परे त्रिषु ॥ ५५ ॥  
 भग्नशृङ्गपशुः कूटः प्रष्टवाड् युगपार्श्वगः ।  
 स्थूरी पृष्ठयः पृष्ठवाह्यः स्कन्धिकः स्कन्धवाहकः ॥ ५६ ॥  
 नस्योतो नस्तिते षोडन् षड्देऽथो धुरन्धरे ।  
 धुरीणधुर्यधौरेयाः प्रासङ्गादेस्तु बोद्धुषु ॥ ५७ ॥  
 प्रासङ्गयः शाकटो युग्यो ह्यालिकः सैरिकादयः ।  
 एवं सर्वधुरीणैकधुरीणैकधुरा अपि ॥ ५८ ॥  
 कर्णः कर्णविहीनः स्यात् षण्डस्तु च्छिन्नपुच्छकः ।  
 गोमान् गोमी च गोस्वामी गोविन्दोऽधिकृतो गवाम् ॥ ५९ ॥  
 नैचिकी गोः शिरोदेशः सास्ना तु गलकम्बलः ।  
 गोशकृद्गोमयो न स्त्री गोग्रन्थिः शुष्कगोमयः ॥ ६० ॥  
 दोहलं तु करीषोऽस्त्री गोकुलं गोघनं समे ।  
 गोमहिष्यादिकं जीवघनं स्यात् पाशबन्धनम् ॥ ६१ ॥  
 छगस्तु छगलशङ्गागो लम्बकर्णः स्तभः पशुः ।  
 बस्तोऽजश्च छगी मञ्जी सर्वभक्षा गलस्तनी ॥ ६२ ॥  
 चुलुम्पा चित्रला हृद्या पर्णादा पलिकिन्यजा ।  
 इलिकस्तु वनच्छागो बालवीज्यो निरायसः ॥ ६३ ॥



मेघे शृङ्गिणसम्फालवृष्णिपेत्वहुलुहदाः ।  
 एडकोऽप्युरणो मीढ उरभ्रो रोमशोऽप्यविः ॥ ६४ ॥  
 मेघी तु कुररी वेणी जालकिन्यविला रुजा ।  
 खररासभचक्रीवद्वाहबालेयगर्दभाः ॥ ६५ ॥  
 रूक्षस्वरो धूळकर्णो नेमिर्भारसहः शलः ।  
 चिरमेही गोर्दनकः कोलिण्टो बडबापतिः ॥ ६६ ॥  
 करभश्च मयस्तूष्ट्रो महाग्रीवः क्रमेलकः ।  
 दाशेरकश्च रवणः करभः स्यादसौ शिशुः ॥ ६७ ॥  
 करभाः स्युः शृङ्खलका दारवैः पादबन्धनैः ।  
 श्वा सारमेयः शुनको भषणो मृगदंशकः ॥ ६८ ॥  
 दीर्घनादी गृहमृगः कुकुरः क्रोधनः शुनिः ।  
 यक्ष इन्द्रमहश्चालः कपिलो मण्डरः शुनः ॥ ६९ ॥  
 जिह्वापानः पुरोगामी कृतज्ञो रात्रिजागरः ।  
 कौलेयकोऽस्थिखादश्च भवनो मलुहोऽपि च ॥ ७० ॥  
 शुनी तु सरमा श्याली विट्चारो ग्रामसूकरः ।  
 ओतुर्बिडालो मार्जार आखुमुक् पृषदंशकः ॥ ७१ ॥  
 जाडको गात्रसङ्कोची मण्डली नखरायुधः ।  
 पशुस्तु मलुको मोकः कपः शुद्धो जडश्चरिः ॥ ७२ ॥  
 बाले तु बर्करः सूता तूबरः शृङ्गवर्जितः ।  
 हिंस्रो व्याघ्रादिको व्यालः श्यापदो मरुलः शरिः ॥ ७३ ॥  
 पुच्छोऽक्षी लक्ष्म लाङ्गूलं बालहस्तश्च बालधिः ।  
 खुरः शफः शको विष्टा घासस्तु यवसः शरिः ॥ ७४ ॥  
 रोमन्थनन्तु रोमन्थो रोमोर्णोर्णास्तुकोऽपि च ॥ ७४ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

भूमिकाण्डे पशुसंग्रहाध्यायः ॥ ४ ॥

## मनुष्याध्यायः ॥ ५ ॥

मनुष्या मानुषा मर्त्या मनुजा मानवा नरः ।  
 द्विपादो नहुषा गोधा ब्राताः पञ्चजना नराः ॥ १ ॥  
 ब्रह्मक्षत्रियविट्शूद्रा इति वर्णाश्चतुष्टये ।  
 उपवर्णास्तु सङ्कीर्णा विवर्णास्त्वन्त्यजातयः ॥ २ ॥  
 एकवर्णाः सवर्णाः स्युर्हीनवर्णास्तु जङ्गिताः ।  
 सवर्णं ब्राह्मणाद्राज्ञी सूते मूर्धावसिक्तकम् ॥ ३ ॥  
 वैश्याऽम्बष्ठं निषादं तु शूद्रा पारशवश्च सः ।  
 एते विवाहजाः पुत्रा व्यभिचारसुताः पुनः ॥ ४ ॥  
 अभिषिक्तः कुम्भकारः शूलिकश्च यथाक्रमम् ।  
 विप्रादावृतमुग्रक्षी निषादी तु मनोजवम् ॥ ५ ॥  
 अम्बष्ठकन्या त्वाभीरं खञ्जमन्तावसायिनी ।  
 आयोगवी धिग्वनकं कुक्कुटी तु पराजकम् ॥ ६ ॥  
 भृञ्जकण्ठी तु सौधातं शनकी तु बहिर्गारम् ।  
 वैदेहकी कारुविन्दं मैत्री रन्ध्रं भटी सटम् ॥ ७ ॥  
 चण्डाली तु श्वचण्डालं शबरी तु परिच्छदम् ।  
 कालकिञ्चं तु करणी यवनी यावशादनम् ॥ ८ ॥  
 नटी भटं खषी द्रोहं मागधी तु दमण्डकम् ।  
 पराजकी तु सिद्रुण्डं कारुविन्दी कुविन्दकम् ॥ ९ ॥  
 रथकारी रथाश्मानमावृती तु खरुञ्जकम् ।  
 सूता पारावतं सूते श्वपाकी पालुखञ्जनम् ॥ १० ॥  
 पुल्कसी भर्मिणं सूते धीवरी तीवरं ततः ।  
 एते ब्राह्मणपुत्राः स्युर्नानायोषित्समुद्भवाः ॥ ११ ॥  
 सूते विप्रा नृपाद्वैश्या माहिष्यं यवनश्च सः ।  
 अश्वपण्यमनूढा सा शूद्राऽनूढैव शूलिकम् ॥ १२ ॥  
 उग्रमूढा निषादी तु वेणुकं कुक्कुटी कुटम् ।  
 तीवरी महिषं वेनी रट्टासं पुल्कसी बकम् ॥ १३ ॥  
 चण्डाली रुचिटं मल्ली पल्लमुग्री ऋषा परम् ।  
 श्वपाकी कलुषं सूता कीलुषं घर्घरी मिषम् ॥ १४ ॥  
 सिद्रुण्डी डिण्डिकं जल्ली भ्रुकुञ्चं शनकी कचम् ।  
 कची भ्रेणं भ्रुकुञ्ची तु पागलं पागली गिलम् ॥ १५ ॥

एते क्षत्रियपुत्राः स्युर्नानायोषित्समुद्भवाः ।  
 वैश्याद्वैदेहकं विप्रा क्षत्रकन्या तु मागधम् ॥ १६ ॥  
 शूद्रा तु करणं सैव जारात् कटकं ततः ।  
 कटकमा स वेनी तु वागुरं वेणुकी वटम् ॥ १७ ॥  
 अम्बष्ठी कोहलं रन्ध्री घर्घरं विन्दकी भ्रषम् ।  
 कारुविन्दी पराविद्धमुग्रीवेशं कुटी मटम् ॥ १८ ॥  
 कुक्कुटी पलिनं मेदी मालुकं मालुकी मकम् ।  
 चण्डाली नीलिकं वाटी मेणकं करणी वशम् ॥ १९ ॥  
 रथकारी सनालिङ्गं वैदेही वानवासिकम् ।  
 श्वपाकी पाणिशं मल्ली विबुकं डिण्डिकी कशम् ॥ २० ॥  
 मैत्री वाटं नटी भोलं प्रसूते कीलुषी कितम् ।  
 घर्घरी धिर्मिणं घोलमित्येते वैश्यसूतवः ॥ २१ ॥  
 चण्डालं ब्राह्मणी शूद्रात् क्षत्रिया पारधेनुकम् ।  
 वेलवं सैव चौर्येण वैश्या त्वायोगवं ततः ॥ २२ ॥  
 चौर्यात् सा चाक्रिकं वेनी वंशिकं फलिनी कुथम् ।  
 निषादी कुक्कुटं भिङ्गी शबरं कोहली नसम् ॥ २३ ॥  
 पुल्कसी कवटं वाटी मञ्जनं मालुकी मलम् ।  
 वैदेहकी नीवलकं धीवरी कलशीनकम् ॥ २४ ॥  
 भृज्जकण्ठी कुवादुष्कं करणी कालशीनकम् ।  
 सूता मालसुपर्णाण्डौ सैरन्ध्री रथवारकम् ॥ २५ ॥  
 नटी भ्राणक्षकं वाटी विभण्डं द्रमिडी द्रुहम् ।  
 कैवर्ती धीवरं रन्ध्री कलशं यवनी क्षुदम् ॥ २६ ॥  
 कारावती सुललिकं कुवादुष्की वशामखम् ।  
 चण्डाली पाण्डुकं द्रोही छाणकं महिषी पुरम् ॥ २७ ॥  
 वरुटी रुण्डकं घोली वीलकं कवटी पुटम् ।  
 एते शूद्रस्य पुत्राः स्युर्नानायोषित्समुद्भवाः ॥ २८ ॥  
 निषादाब्राह्मणी मेकं क्षत्रिया कालकुण्डकम् ।  
 वैश्या सूचिं हरिं शूद्रा सोऽपि चायोगवः कचित् ॥ २९ ॥  
 कैवर्ती बुरुलं भिङ्गी शनकं शनकी रसम् ।  
 श्वपाकी गर्मुटं घोली घर्घरं द्रमिडी कणम् ॥ ३० ॥  
 वैदेही कलशं द्रोही भ्रेणकं छाणकी लुषम् ।  
 रथकारी मन्दुपालं मागधी मङ्गुकरिकम् ॥ ३१ ॥

आयोगवी तु कैवर्तं निषादान्मार्गरश्च सः ।  
 एते निषादपुत्राः स्युर्नानायोषित्समुद्भवाः ॥ ३२ ॥  
 जालं वैदेहकाद्विप्रा क्षत्रिया रथकारकम् ।  
 वैश्या धन्ववनं शूद्रा गैरुषं करणी कृमिम् ॥ ३३ ॥  
 अम्बष्ठी बेनमुष्ठी तु गर्गरं शनकी हनुम् ।  
 आयोगवी तु मैत्रेयं पुलकसी कणकुक्कुटम् ॥ ३४ ॥  
 निषादी मेदमन्त्रं तु सैव चेन्नान्यपूर्विका ।  
 एते वैदेहपुत्राः स्युर्नानायोषित्समुद्भवाः ॥ ३५ ॥  
 मैत्रेयाद् ब्राह्मणी लालं क्षत्रिया जालभूषणम् ।  
 वैश्या छण्डकम्पं शूद्रा निषादी लोहमालकम् ॥ ३६ ॥  
 आयोगवी तु मधुकं घण्टिकं नान्यपूर्विका ।  
 एते मैत्रेयपुत्राः स्युर्नानायोषित्समुद्भवाः ॥ ३७ ॥  
 विप्रा नाविकमम्बष्ठादस्मिन् कापि श्वपाकवाक् ।  
 वैणवं सैव माहिष्याद्रजकं पारधेनुकात् ॥ ३८ ॥  
 श्वपचं सैव चण्डालाश्चर्मकञ्चुकजीवनम् ।  
 मागधान्ताम्रजीवं सा तक्षाणं करणादसौ ॥ ३९ ॥  
 आयोगवाश्चर्मकारं राक्षी वार्मिकसूचकौ ।  
 माहिष्याश्चर्मकारं सा खनकं मागधादसौ ॥ ४० ॥  
 उदुबन्धं खनकाच्छूद्रा स्पृश्यमम्बरनेजकम् ।  
 अधोनापितमम्बष्ठी करणान्मत्स्यबन्धकम् ॥ ४१ ॥  
 वैश्या सामुद्रमाजीवेत् पण्यं सामुद्रमेव सः ।  
 निषादी धिग्वनाश्चर्मकारं कारावरोऽपि सः ॥ ४२ ॥  
 कारावरो निषादेन वैदेह्यामिति केचन ।  
 वैदेही पाण्डुसोपाकं चण्डालात् कुक्कुणश्च सः ॥ ४३ ॥  
 आहिण्डिकं निषादात् सा कवटी तु हुरिञ्जकम् ।  
 निष्टयाच्छूद्रा मधुश्रेणि शौण्डिकं मण्डहारकम् ॥ ४४ ॥  
 छम्भी क्रमेलकं तस्मान्निर्णक्ता रजकश्च सः ।  
 सोपाकं पुलकसी निष्टयाश्चण्डालादिति केचन ॥ ४५ ॥  
 अन्ध्री तु शबरान्निष्टयं भिन्नं सा निष्टयपूर्विका ।  
 किरातं पर्णशबरी शबरान्निष्टयपूर्विका ॥ ४६ ॥  
 पुलिन्दपर्णशबरौ किराती निष्टयपूर्विका ।  
 पुलिन्दश्चपचौ निष्टयात् किराती नान्यपूर्विका ॥ ४७ ॥  
 रथकारं तु माहिष्यात् करणी माहिषाङ्कम् ।  
 पुलकसं सैव चण्डालात् किरातात् पलगण्डकम् ॥ ४८ ॥



चण्डालात् पुलकसी डोम्बं निषाद्यन्तावसायिनम् ।  
 डोम्बी खषं सैव निष्ठयाद् बिभेणं हड्डिकं खषी ॥ ४६ ॥  
 तीवरी धीवरात् पौण्ड्रं बबरं यवनादसौ ।  
 पुलकसात् पामरं वेनाच्छुषं डोम्बाद्विराणकम् ॥ ४७ ॥  
 श्वपाकं क्षत्तुरुग्रस्त्री केचिदाहुविपयंयम् ।  
 चूचुं किराती शबराद्वैदेहात् पुलकसात् कचित् ॥ ४८ ॥  
 निष्ठयात्तु वरुटी मदगुं वल्लारं तु किरातिका ।  
 निषादपुल्कसाद्यास्तु पूर्वोक्ता इह नोत्तरे ॥ ४९ ॥  
 विप्रा ब्रात्याद् भृङ्गकण्ठमावन्त्यं विप्रपूर्विका ।  
 अभ्यूढा वाटधान्यं सा शैखं सा नान्यपूर्विका ॥ ५० ॥  
 सा पुष्पवं पुष्पवती सम्यगूढा द्विजन्मना ।  
 लिच्छिवि क्षत्रिया ब्रात्याज्जह्मं सा विप्रपूर्विका ॥ ५१ ॥  
 ब्रात्यपूर्वा तु सा मल्लं क्षत्रपूर्वा तु सा नटम् ।  
 प्राक्प्रसूतस्वजातिः सा वरुटं करणश्च सः ॥ ५२ ॥  
 सा वैश्यपूर्वा द्रमिडं शूद्रपूर्वा तु सा खषम् ।  
 वैश्या ब्रात्यात् सुधन्वानमाचार्यं विप्रपूर्विका ॥ ५३ ॥  
 सुधन्वाचार्य एको वा मैत्रं सा वैश्यपूर्विका ।  
 शूद्रपूर्वा द्विजन्मानं सात्त्वतं क्षत्रपूर्विका ॥ ५४ ॥  
 अपूर्वा भारुषं कारुं ब्रह्मक्षत्रविशाममी ।  
 ब्रात्यानां क्रमशः पुत्राः शूद्रा ब्रात्याच्छकण्टकम् ॥ ५५ ॥  
 कुर्वन्त्यनुपनीता ये विवाहं ब्राह्मणादयः ।  
 ब्रात्या ब्राताश्च ते सर्वे तत्सुताश्चावृतासु ये ॥ ५६ ॥  
 अवरेटः सवर्णायां जाराज्जातः सवर्णकात् ।  
 पत्यौ जीवति कुण्डोऽसौ भर्तर्यसति गोलकः ॥ ५७ ॥  
 अविवाह्यासु जाताश्च तथा स्युः कुण्डगोलकाः ।  
 ये च प्रव्रजितापुत्रास्तथा प्रव्रजितस्य ये ॥ ५८ ॥  
 क्षत्रकुण्डः पट्टबन्धो भोजः क्षत्रियगोलकः ।  
 देवप्रैष्यो विप्रकुण्डो ग्रामप्रैष्यस्तु गोलकः ॥ ५९ ॥  
 मणिकारो वैश्यकुण्डः शङ्खकारस्तु गोलकः ।  
 शूद्रकुण्डो मालवको घासहारस्तु गोलकः ॥ ६० ॥  
 एषां लक्षणसिद्धयर्थं केषाञ्चिद् वृत्तिरुच्यते ।  
 उक्ता प्रागेव केषाञ्चिन्मान्ना केषाञ्चिदूह्यते ॥ ६१ ॥

मूर्धावसिक्तः सेनेशो धनुर्वेद्यस्त्रधारकः ।  
 मणिमन्त्रौषधिज्ञश्च सोऽम्बष्ठो यानशिक्षया ॥ ६५ ॥  
 चिकित्सागणितज्योतिर्ज्ञानी स्यादभिषिक्तकः ।  
 अम्बष्ठो भृजकण्ठोऽस्य चिकित्सा शस्त्रसाधना ॥ ६६ ॥  
 कक्ष्याजीवात्स दौष्पन्तो निषादो ध्वजघोषणात् ।  
 कुम्भकारो माण्डवृत्तिरेष स्यादूर्ध्वनापितः ॥ ६७ ॥  
 नाभेरूर्ध्वं वपन् पुंसां सूतकप्रेतकादिषु ।  
 चित्रमर्हलनृत्तज्ञः कालीं पारशवोऽर्चयेत् ॥ ६८ ॥  
 शूलिको दण्डयेदण्ड्यान् शूलारोपादिकर्मणा ।  
 निषादो मृगघातात् स माहिष्यो नृत्तगीतवित् ॥ ६९ ॥  
 स एव मङ्कुशोऽथासौ निषादः सस्थरक्षया ।  
 जीवन् सवर्णो नक्षत्रैः सोऽम्बष्ठो वैद्यशास्त्रवित् ॥ ७० ॥  
 महानर्मा च मदगुश्च स श्रेष्ठी वैश्यवृत्तितः ।  
 अश्वपण्यस्त्वाश्विकाख्यः सोऽश्वव्यापारजीवनः ॥ ७१ ॥  
 लघो दण्ड्यान् दण्डयेत् स दौष्पन्तो मत्स्थघातनात् ।  
 निषादो व्यालादिवधाद्यवनः कुक्षरग्रहात् ॥ ७२ ॥  
 पुरो धावन् पारशवो राज्ञः शस्त्रञ्च धारयन् ।  
 घनान्तःपुररक्षश्च शूलिकः शूलिकोपमः ॥ ७३ ॥  
 करणो लेखको राज्ञां वारकः शकनामकः ।  
 चुचूकः शाकताम्बूलक्रमुकादिकविक्रयात् ॥ ७४ ॥  
 रथकारो निधिप्रभ्रद्यूतापणनिरूपणात् ।  
 रथकारो व्यालमृगहिंसावृत्तिरिति क्वचित् ॥ ७५ ॥  
 उग्रः पारशवो दुर्गधनान्तःपुरपालनात् ।  
 अन्वर्थः स्यात् कटकरो द्वादशैतेऽनुलोमजाः ॥ ७६ ॥  
 इतिहासपुराणज्ञः सूतो देवांश्च पूजयेत् ।  
 सूत ऊढासुतः पक्ता स्थानालङ्करणादिकृत् ॥ ७७ ॥  
 सोऽनूढाजो रथाश्वानां वाहको रथकारकः ।  
 वैदेहकस्य स्त्रीरक्षा स वन्दी स्तुतिजीवनात् ॥ ७८ ॥  
 मौकल्यो रामको वस्त्रस्यूतिरञ्जनजीवनात् ।  
 मागधोऽसावनूढाजो जङ्घाकरिकवृत्तिकः ॥ ७९ ॥  
 बाप्याद्यवतरेच्छुद्धयै क्षालयेन्मलिनाम्बरम् ।  
 वणिक्पथे मागधस्य वाग्मी राजप्रबोधनम् ॥ ८० ॥

वृचुको वेधनेनासौ स वन्दी स्तुतिकर्मणा ।  
 वैतालिको बोधनया वेणुवीणादिवादनैः ॥ ८१ ॥  
 धीवरो मार्गसन्त्राणाद् रामको दौत्यजीवनात् ।  
 आयोगवः पुल्कसश्च स वासःकांस्यजीवनात् ॥ ८२ ॥  
 चौर्याज्जातः पुलिन्दोऽसौ स हन्ता दुष्टसत्त्वकान् ।  
 चण्डालो मल्लरीकक्षो वद्धर्षिकण्ठो मलं हरेत् ॥ ८३ ॥  
 स्यात् पारघेनुको वेनो गोधादिवधबन्धकृत् ।  
 स निषादो मत्स्यघातान्मद्गुराघोषणेन सः ॥ ८४ ॥  
 क्षत्ता दौत्यद्वारपाल्यात् पुल्कसो मद्यविक्रयात् ।  
 पेलवः पुनरस्पृश्यो जम्भको नृत्तगानवित् ॥ ८५ ॥  
 आयोगवस्तैजसकृद्भूमकृन्मणिवेधकृत् ।  
 स तक्षा तक्षणाज्जीवन् स्थपतिर्नगराधिकृत् ॥ ८६ ॥  
 अन्तावसायी वपनान्मागधश्चित्रकर्मणः ।  
 स वैदेहः पाशुपाल्यात् तद्रसानां च विक्रयात् ॥ ८७ ॥  
 पुल्कसस्तान्तवेनासौ चाक्रिकस्तैलविक्रयात् ।  
 लवणक्रीतकोऽसौ स्याल्लवणस्यैव विक्रयात् ॥ ८८ ॥  
 एवमेकादश प्रोक्ता वर्णानां प्रतिलोमजाः ।  
 गोधादिवधबन्धास्तु हरीणां पुल्कसाश्च ते ॥ ८९ ॥  
 रथकारो वास्तुवृत्तिरिज्याधानोपनीतिमान् ।  
 आवृतानां तु हस्त्यश्वस्यन्दनेष्वधिकारिता ॥ ९० ॥  
 शूर्पच्छत्रादिकर्माणि सूचीनां ते च पुल्कसाः ।  
 कैवर्तानां पक्षिपशुसृगघातनजीवनम् ॥ ९१ ॥  
 आन्ध्राणां तु गृहद्वाररथ्यावस्करशोधनम् ।  
 मेदानां चक्रवृत्तित्वं विष्णून्मृगहणोज्ज्वलम् ॥ ९२ ॥  
 आहिण्डिकानां कारासु बहिः स्थित्वाऽभिरक्षणम् ।  
 मेदान्ध्रचूचुमद्गूतामारण्यपशुर्हिसनम् ॥ ९३ ॥  
 मैत्रेयकः प्रशंसेजृन् घण्टाताडोऽरुणोदये ।  
 पारावरश्छत्रधरो दीपधृद्वाहको नृणाम् ॥ ९४ ॥  
 कुर्यादासनरक्षां च चर्मच्छेदनसीवनम् ।  
 कुक्कुटानां शस्त्रकृती राज्ञां कुक्कुटखेलनम् ॥ ९५ ॥  
 मागधादपि शूद्रायां कुक्कुटो नाम जायते ।  
 योऽन्वेष्टोद्यानवप्रादेवैश्याज्जातोऽपि कुक्कुटः ॥ ९६ ॥

निषाद्यां तन्तुवायोऽसौ वृक्षच्छेदावरोपकृत् ।  
 धिग्वनानां तु कार्मार्यं वेनानां भाण्डवादनम् ॥ १७ ॥  
 वेणः कुशीलवश्चासौ लङ्घनप्लवनादिभिः ।  
 वेणो राक्षीसुतोऽप्युग्रान्मायासम्मोहनादिकृत् ॥ १८ ॥  
 वैदेह्यम्बष्ठजो वेनो नाट्यरङ्गावतारकृत् ।  
 आभीराणां जीवधनं कूटानामशमतक्षणम् ॥ १९ ॥  
 नौवाहो मार्गरो नद्यां नाधिकस्त्वब्धिनौगमः ।  
 शैखोऽभिचारं कुर्वीत कार्मणं भृजकण्ठकः ॥ १०० ॥  
 मन्त्रौषधैर्द्विषत्सेनां वशीकुर्वीत पुष्पवः ।  
 आवन्त्यो वाटधानश्च स्वसेनाचित्तवृत्तिवित् ॥ १०१ ॥  
 ब्राह्म्याः क्षत्रसुताः शत्रुकोशमन्त्रादिवेदिनः ।  
 खषाणां तोयाहरणं द्रमिलानां प्रपाकान्तः ॥ १०२ ॥  
 नटानां करणानां च चारवृत्तिः स्फुटास्फुटा ।  
 भारुषस्त्वर्चयेन्मातृः श्मशानादि चतुष्पथम् ॥ १०३ ॥  
 सुधन्वाचार्य ईशानं शाक्यचैत्यादि मैत्रकः ।  
 भूतप्रेतपिशाचांस्तु विजन्मा सूतिवेश्म च ॥ १०४ ॥  
 सात्त्वतः पूजयेद्विष्णुमुक्तो भागवतश्च सः ।  
 सन्ति भागवताश्चान्ये ब्राह्मणा भगवत्पराः ॥ १०५ ॥  
 श्वकण्ठकस्य शूद्रादि मालवस्याश्वपालनम् ।  
 वैणवीं पाण्डुसोपाकः सोपाको मूलवृत्तिकः ॥ १०६ ॥  
 श्मशानचेलरक्षादिवृत्तयोऽन्तावसायिनः ।  
 वनश्मशानरक्षा तु चण्डालान्तावसायिनाम् ॥ १०७ ॥  
 गरानलप्रयोगाश्च प्रोच्यन्ते दस्युजातयः ।  
 ब्राह्मणस्य त्रयः पुत्रा वर्णस्त्रीष्वनुलोमजाः ॥ १०८ ॥  
 शूद्रस्य च त्रयः पुत्रास्तास्वैव प्रतिलोमजाः ।  
 त्रयस्त्रयः क्षत्रविशोः प्रतिलोमानुलोमजाः ॥ १०९ ॥  
 एते द्वादश वर्णानां पुत्रा एकैकशस्तु ते ।  
 चातुर्वर्ण्ये प्रसूयन्ते चतुरश्रतुरः सुतान् ॥ ११० ॥  
 ते चत्वारिंशदष्टौ च पूर्वैर्द्वादशभिः सह ।  
 ब्राह्मणाद्यैश्चतुर्भिश्च चतुष्पष्टिर्हि जातयः ॥ १११ ॥  
 ते सर्वे दस्यवो दोषैश्चौर्याद्यैः सद्बहिष्कृताः ।  
 आसाविकस्तु सैरिन्द्रो दस्योरायोगवीसुतः ॥ ११२ ॥



दस्यूनां बहुजातित्वाद् बह्वयः सैरिन्द्रजातयः ।  
 प्रसाधनोपचारज्ञा मृगादिवधजीवनाः ॥ ११३ ॥  
 शाकपुष्पफलानां च विक्रेतारो बहिष्कृताः ।  
 राजस्त्रीणां सूतिकाणां द्वास्थ्याः प्रेताम्बरावृताः ॥ ११४ ॥  
 विक्रेतारः सुरां कृत्वा सैरिन्द्राः स्युर्यथोचितम् ।  
 दस्युम्लेक्षगणानां तु कृषिशस्त्रोपजीवनम् ॥ ११५ ॥  
 म्लेच्छाः स्युर्विप्रकृष्टा ये म्लेच्छवाचो वनौकसः ।  
 कार्या क्षत्रप्रवैदेहैरन्या वृत्तिरगर्हिता ॥ ११६ ॥  
 मेदान्ध्रैर्गर्हिता वृत्तिरनुक्ताः कुलवृत्तयः ।  
 तत्रापि मातृकीं वृत्तिं गर्हितामनुलोमजाः ॥ ११७ ॥  
 भजेरन् प्रतिलोमास्तु पैतृकं कर्म गर्हितम् ।  
 अनुलोमा निकृष्टायामुत्कृष्टादुद्भवन्ति ये ॥ ११८ ॥  
 प्रतिलोमा विपर्यस्ता ब्रात्यास्तत्प्रतिलोमजाः ।  
 आनुलोमप्रातिलोम्यादान्तरालिकसंज्ञिताः ॥ ११९ ॥  
 वर्णमात्रानुलोमा ये षट् तेऽपशदसंज्ञिताः ।  
 षडपध्वंसजा ये स्युर्वर्णानां प्रतिलोमजाः ॥ १२० ॥  
 रजकश्चर्मकारश्च वेनो बुरल एव च ।  
 कैवर्तमेदभिज्ञाश्च सप्तैता अन्यजातयः ॥ १२१ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

भूमिकाण्डे मनुष्याध्यायः ॥ ५ ॥

## ब्राह्मणाध्यायः ॥ ६ ॥

ब्राह्मणो मुखजो विप्रो भूदेवो मैत्र एतशः ।  
 अग्रजन्मा वेदगर्भो बाडवश्च त्रयीपुषः ॥ १ ॥  
 संस्कारास्तु निषेकाद्याः श्मशानान्ता द्विजन्मनाम् ।  
 गर्भाधानं तु यौनं स्यात् प्राजापत्यं च मौलिकम् ॥ २ ॥  
 आधानिकं पुंसवनं पौस्नमप्यथ गार्भिणम् ।  
 सीमन्तोन्नयनं नामकर्माभ्यन्त्रणिके समे ॥ ३ ॥  
 चौले तु चूडाकरणं क्षुरकर्म तु मुण्डनम् ।  
 मौण्डिकं भद्राकरणं वपनं परिवापणम् ॥ ४ ॥  
 सशिखं वपनं तोढं निशिखं भिक्षुलोचकम् ।  
 ओद्वितं त्वतिष्ठं स्यात् पञ्चचीरोद्वितं पुनः ॥ ५ ॥  
 आडिण्डिकं त्रिषु परे मुण्डः स्यान्मुण्डितोऽशिखः ।  
 शिखावानवमुण्डः स्यात् पञ्चचूडस्तु सारणः ॥ ६ ॥  
 उपनायस्तूपनय आनायश्च वटुकृतिः ।  
 ब्रह्मचारी व्रती वर्णी नैष्ठिकस्तु स आश्रमी ॥ ७ ॥  
 गायत्रस्तूपकुर्वाणो वैदिकोऽधीतवेदकः ।  
 प्राजापत्यः कृतोद्वाहः स एवौदुम्बरायणः ॥ ८ ॥  
 वर्णिलिङ्गी लिङ्गवृत्तिर्निस्स्वाध्यायो निराकृतिः ।  
 वान्ताशी भोजनार्थं यो गोत्रादि वदति स्वकम् ॥ ९ ॥  
 उच्छिष्टभोजनो देवनिवेद्यबलिभोजनः ।  
 जात्रिमात्रोपजीवस्तु यः स स्याद् ब्राह्मणब्रुवः ॥ १० ॥  
 अजपस्त्वसदध्येता देवाजीवस्तु देवलः ।  
 अघायवो वधरता विगीताः ख्यातगर्हणाः ॥ ११ ॥  
 अवगीताश्च हन्ता तु गुरुणां नरकीलकः ।  
 शिर्षिदानो दुराचारो निषिद्धैकरुचिः स्वरुः ॥ १२ ॥  
 त्यक्तात्मा त्यक्तसंवासो ह्यवकीर्णी क्षतव्रतः ।  
 शास्त्रारण्डोऽन्यशास्त्रास्थो वर्णिलिङ्गयादयस्त्रिषु ॥ १३ ॥  
 वानकं तु ब्रह्मचर्यं नियमप्रयमौ व्रते ।  
 अग्नीन्धनं त्वम्भिकार्यमाग्नीध्री चाम्भिकारिका ॥ १४ ॥  
 प्रासे तु पावनी भिक्षा पुष्कलस्तच्चतुष्टयम् ।  
 ते चत्वारो हन्तकारो हन्तकारद्वयं घनः ॥ १५ ॥

मुष्ट्यष्टकेऽव्ययं किञ्चित् पुष्कलं तु तदष्टके ।  
 पुष्कलानि तु चत्वारि पूर्णपात्रकमस्त्रियाम् ॥ १६ ॥  
 भिक्षाचारः कौक्कुटिकस्त्रिषु स्यादौर्ध्वरथ्यकः ।  
 मौस्त्री तु मेखला क्षोणी मौर्वी त्वेकलमात्रिका ॥ १७ ॥  
 सौत्री तु घटिनी रम्भा दण्डस्तु दमयन्तिका ।  
 पालाशो दण्ड आषाढो व्रते राम्भस्तु वैणवः ॥ १८ ॥  
 बैल्वः सारस्वतो रौच्यः पैलवस्त्वौपरोधिकः ।  
 आश्वत्थस्त्वजितनेमिरौदुम्बर उल्लखलः ॥ १९ ॥  
 द्विजायनी ब्रह्मसूत्रं सूत्रं यज्ञोपवीतकम् ।  
 पवित्रञ्चोपवीतं तु प्रोद्धृते दक्षिणे भुजे ॥ २० ॥  
 प्राचीनावीतमन्यस्मिन्निवीतं कण्ठलम्बितम् ।  
 कृष्णाजिनं कर्णिकं स्यात् कृत्तिः स्त्री चर्म चाजिनम् ॥ २१ ॥  
 गुरुर्दिशानो बोधानः क्षाणी च ब्राह्मिकोऽथ सः ।  
 (देशिकः परमाप्तः स्यादात्मलाभकरो गुरुः ।)  
 मन्त्रव्याख्यादिनाऽऽचार्य उपाध्यायस्तु पाठनात् ॥ २२ ॥  
 पाठके तु पठिर्वेदपठिता कलपाठकः ।  
 पाठको धर्मशास्त्राणां धार्मिको धर्ममाणवः ॥ २३ ॥  
 एकतीर्थी सतीर्थ्यैकगुरु सत्रह्यचार्यपि ।  
 धर्मभ्राता सहाध्यायी शैक्षाः प्राथमकल्पिकाः ॥ २४ ॥  
 छात्रस्तु शिष्यो मोकः प्राडुपज्ञा ज्ञानमादिमम् ।  
 समौ सिद्धान्तराद्धान्तौ ज्ञात्वाऽऽरम्भ उपक्रमः ॥ २५ ॥  
 पाठे बिन्दुर्ब्रह्मबिन्दुर्ब्रह्माक्षलिरिहाक्षलितः ।  
 ऋक् स्त्री साम यजुश्चेति वेदास्ते तु त्रयस्त्रयी ॥ २६ ॥  
 आथर्वणं पौरोहितं वेदाश्चत्वार एव ते ।  
 छन्दो ब्रह्म श्रुतिर्वेदोऽप्यथ विद्याश्चतुर्दश ॥ २७ ॥  
 शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं छन्दसां चयः ।  
 ज्योतिषामयनं चेति वेदाङ्गान्यङ्गिभिः सह ॥ २८ ॥  
 मीमांसया पुराणेन स्मृत्या न्यायगणेन च ।  
 आयुर्वेदो वैद्यशास्त्रं गान्धर्व गीतिशासनम् ॥ २९ ॥  
 अर्थशास्त्रं दण्डनीतिर्धनुर्वेदोऽस्त्रशासनम् ।  
 चत्वार उपवेदास्ते विद्याश्चाष्टादशोदिताः ॥ ३० ॥  
 आन्वीक्षिकी तर्कविद्या निरुक्तं पदमञ्जना ।  
 नामशास्त्रे निघण्टुर्ना सर्वविद्या कदम्बिका ॥ ३१ ॥

अध्यायः कामिकः काव्ये तूच्छासः सर्ग इत्यपि ।  
 प्रपाठकस्त्वाह्निकोऽथो अनुवाकश्च खण्डिका ॥ ३२ ॥  
 ब्राह्मणश्चेत्यवच्छेदा एकग्रन्थस्तु फक्किका ।  
 विध्यर्थवादमन्त्रास्तु खिलान्युपखिलानि च ॥ ३३ ॥  
 छन्दोभेदास्तु गायत्रीप्रमुखा एकविंशतिः ।  
 स्त्रियस्तासु क्रमात् क्लीबे स्युर्गायत्रौष्णिहादयः ॥ ३४ ॥  
 मुखशोभा वेदशालिमुखे चित्रावनिश्च सा ।  
 विधा ह्युच्चारणाभेदाः स्पृष्टसंवृततादयः ॥ ३५ ॥  
 कादयो व्यञ्जना क्ली वा स्पर्शास्ते भावसानकाः ।  
 स्त्रियोऽन्तस्स्था यरलवा ऊष्माणः शपसाः सहाः ॥ ३६ ॥  
 विसर्गस्त्वभिनिष्ठानः परे त्रिष्वनुनासिकः ।  
 नीचोऽनुदात्तो निहत उदात्तः स्वरितोऽपि च ॥ ३७ ॥  
 वरिवस्या तु शुश्रूषा सेवा भक्तिरुपासना ।  
 परिचर्याऽऽराधनञ्च सेवनञ्च प्रसादनम् ॥ ३८ ॥  
 पूजाऽर्चना नमस्याऽर्चा सपर्येज्याऽर्हणाऽञ्जनम् ।  
 नमस्या तु नमस्कारो वन्दनं चाभिवादनम् ॥ ३९ ॥  
 उपसङ्ग्रहणं पादग्रहणेनाभिवादनम् ।  
 गृहस्थः स्नातकश्चक्री गृहमेधी गृहीति च ॥ ४० ॥  
 तस्मिन् सावित्रशालीनौ यः कुसूलेन धान्यभृत ।  
 पृथुचित्रः कुण्डधान्यो विघ्नसाशी दिनत्रयी ॥ ४१ ॥  
 यायावरश्चक्रचरः सद्यःप्रश्नालितान्नकः ।  
 परिवेत्ताऽग्रजेऽनूढे कृतदारपरिग्रहः ॥ ४२ ॥  
 परिवित्तस्तु तज्जयायान् परिवित्तिः कुरी च सः ।  
 भ्रातुर्मृतस्य जायायां संसक्तो दिधिषूपतिः ॥ ४३ ॥  
 स तु स्यादग्रदिधिषुर्योऽनुजो रमते तथा ।  
 स्यादग्रेदिधिषुश्चासौ स्यादग्रेदिधिषूरपि ॥ ४४ ॥  
 या ज्येष्ठायामनूढायामूढाऽग्रेदिधिषूरसौ ।  
 पुनरूढा पुनर्भूः स्यादूर्मिला त्यक्तभर्तृका ॥ ४५ ॥  
 देवरे विनियुक्ता या यात्यन्यं साऽभिसारिका ।  
 प्रसभा निरिणा मीढा निर्लेज्जा धर्षणी च सा ॥ ४६ ॥  
 विस्तीर्णजानुर्विकटा नतजानुस्तु सिंहिका ।  
 दूषिका क्रोधविवशा पृषता श्वेतबिन्दुका ॥ ४७ ॥



अन्यानुरक्ता विगता नष्टा संस्पृष्टमैथुना ।  
 कन्याप्रसूतिजा जारी हारी नाम्नैव दूषिता ॥ ४८ ॥  
 हरिता पतितोत्पन्ना कोहली मुखरा भृशम् ।  
 जडा तु पाली कुब्जा तु दुर्दर्शा कालिकापि च ॥ ४९ ॥  
 धृष्टा प्रापणिका व्यङ्गा निघृष्टा कुत्सिता हता ।  
 अरणिर्निस्स्पृहा पालिर्हर्षुला विकला सरूक् ॥ ५० ॥  
 शरभा तु विशीर्णाङ्गी स्वल्पदेहा मङ्गषिका ।  
 द्योता पिङ्गलकेशाक्षी ऋषभा वृषलक्षणा ॥ ५१ ॥  
 वर्षकारी स्रवत्पाणिपादा राता विहारिणी ।  
 साङ्कारिका तु पित्रादिगृहेष्वग्न्यादिदायिनी ॥ ५२ ॥  
 वैधव्यलक्षणोपेता पतिघ्नी खण्डनाऽपि च ।  
 सुता त्वजीववत्साया मातुर्या सा विदूषिका ॥ ५३ ॥  
 विकटाद्यास्तु नोद्वाह्याः कन्यकाः सप्तविंशतिः ।  
 उपयामः परिणयो विवाहो दारसङ्ग्रहः ॥ ५४ ॥  
 उद्वाहोपयमौ पाणिग्रहो जम्बूलमालिका ।  
 कन्यादाने तु यद्वत्तं यौतकं यौतुकं च तत् ॥ ५५ ॥  
 गोपाली वर्णके शान्तियात्रावरनिमन्त्रणे ।  
 दौन्दुभी वरयात्रायां धूलिमक्ते तु वार्तिकम् ॥ ५६ ॥  
 स्यादिन्द्राणीमहे हेलिरुल्लुर्मङ्गलध्वनिः ।  
 धोरी हुलिङ्गुली चासौ सैव मङ्गलमालिका ॥ ५७ ॥  
 क्लीबे स्वस्त्ययनं पूर्णकलशे मङ्गलाह्निकम् ।  
 नन्दिकौ तोरणस्तम्भौ शुक्कूटस्तयोः स्रजि ॥ ५८ ॥  
 सैव वन्दनमालाऽपि कुहलिः पूगपुष्पिका ।  
 हस्तसूत्रं प्रतिसरस्तद्वन्धे हस्तकोहलिः ॥ ५९ ॥  
 तद्ग्रन्थिस्त्वक्का धानी कर्णं हस्तलेपनम् ।  
 उत्सवेषु सुहृद्भिर्यद् बलादाकृष्य गृह्यते ॥ ६० ॥  
 वस्त्रमाल्यादि तत् पूर्णपात्रं पूर्णानकं च तत् ।  
 उत्सवो मह उद्धर्ष उद्धवो हर्षवेणुकः ॥ ६१ ॥  
 क्षणः पर्व च कल्याणं भोज्यं तु जठरोत्सवः ।  
 मधुपर्कस्तु निष्ठङ्कः शङ्खपात्रं तु पाटली ॥ ६२ ॥  
 यज्ञाध्ययनदानानि याजनाध्यापनग्रहाः ।  
 षट्कर्माणि महायज्ञा देवयज्ञादिपञ्चकम् ॥ ६३ ॥

निवापः पितृदानं स्यादामपात्रं तु वापिमम् ।  
 मृतस्नानमपस्नानं श्राद्धं तु पितृभोजनम् ॥ ६४ ॥  
 दशाहे श्राद्धमाग्नेयं साज्यमेकादशेऽहनि ।  
 सम्प्रेषणी द्वादशेऽह्नि मासप्राप्तौ तु मासिकम् ॥ ६५ ॥  
 एवं त्रिपक्षी षाण्मासी ज्ञेया सांवत्सरीति च ।  
 गयायां पिण्डदानं यत् पितृकार्यं तदार्यकम् ॥ ६६ ॥  
 आम्रसेकस्तु यस्तत्र सा चारी सा पितृप्रपा ।  
 त्रिष्वातिथ्यमतिथ्यर्थं विघसो विप्रशोषतम् ॥ ६७ ॥  
 आवेशिकः स्यादागन्तुरातिथ्यः प्राहुणोऽतिथिः ।  
 सूर्योदस्तु स सम्प्राप्तो यः सूर्येऽस्तं गतेऽतिथिः ॥ ६८ ॥  
 अथान्याधानमाघेयमाधानं चाम्निसङ्ग्रहः ।  
 होमस्तु सवनं होत्रं हवनं हुतिराहुतः ॥ ६९ ॥  
 अग्निहोत्रं नित्यहोमः कुत्सितास्त्वग्निहोत्रिणः ।  
 वीरोज्ज्वलप्रमुखास्तत्र वीरोज्ज्वो न जुहोति यः ॥ ७० ॥  
 अग्निहोत्रं स्वयं वर्षमुत्सन्नाग्निस्तु वीरहा ।  
 अग्निहोत्रच्छलाद् याच्चापरो वीरोपजीवकः ॥ ७१ ॥  
 वीरविप्लावको जुह्वद् धनैः शूद्रसमाहृतैः ।  
 जातमात्रगृहीताग्निर्यः स जातारणिर्द्विजः ॥ ७२ ॥  
 यस्यौपासन एवाग्निरेकाग्निः काल्पिकश्च सः ।  
 अग्न्याहितस्त्वाहिताग्निर्नभः पुनरनग्निः ॥ ७३ ॥  
 पर्याधाताऽग्रजेऽनग्नौ कृताधानोऽग्रजस्त्वसौ ।  
 पर्याहितस्तथा न्यायः परियष्टृपरीष्टयोः ॥ ७४ ॥  
 इव्याशीलो यायजूकः सोमपीथी तु सोमपः ।  
 सुत्वा त्वमिषवादूर्ध्वं चितवानग्निमग्निचित् ॥ ७५ ॥  
 यष्टा तु यजुरादेष्टा यजमानश्च होत्ववत् ।  
 सोमे तु दीक्षितः सोत्वो यज्वा स्यादिष्टवानसौ ॥ ७६ ॥  
 सर्ववेदाः स यो यागे दत्तसर्वस्वदक्षिणः ।  
 यज्ञत्यागी वृथाजातोऽपश्चयज्ञो मलिम्लुचः ॥ ७७ ॥  
 याजका भरता यज्ञलिहः कुरव ऋत्विजः ।  
 यतस्तुचो देवयवो वाचतो वृक्तबर्हिषः ॥ ७८ ॥  
 अध्वर्यूद्गावृहोतारो ब्रह्मा चेति महत्विजः ।  
 मन्त्राणां दैवतं छन्दो निरुक्तं ब्राह्मणान्यधीन् ॥ ७९ ॥

कृत्तस्त्रितादि चाज्ञात्वा यजन्तो यागकण्टकाः ।  
याजयन्तो लैङ्गधूमाः कौटास्तूभयकारिणः ॥ ८० ॥  
प्रसर्पको दृशीकुश्च दर्शनायाध्वरं गतः ।  
उपद्रष्टा सदस्यः स्याच्छान्दसश्चोत्रिथौ समौ ॥ ८१ ॥  
अधीतसाङ्गवेदो यः सोऽनूचानो युगी गणिः ।  
यज्ञो यागोऽध्वरः स्तोमः सप्ततन्तुर्मखः सवः ॥ ८२ ॥  
सहसानुर्यजः सानुर्वसुनो विश्वहर्यकः ।  
पाकयज्ञाः पार्वणाद्या हविर्यज्ञास्त्वसोमकाः ॥ ८३ ॥  
पशुबन्धास्तु पशवः सोमाः सौम्याश्च सोमिनः ।  
सवनैस्त्रिभिरेकाहास्तैरावृत्तैरहर्गणाः ॥ ८४ ॥

ते दीक्षितैः कृताः सत्राण्यहीना याजकैः कृताः ।  
अहीना द्वादशाहात् प्राक् सत्राण्यूर्ध्वं स तु द्वयः ॥ ८५ ॥  
सर्वेऽमी यज्ञक्रतवस्त एवैन्द्राः प्रजागमाः ।  
ज्योतिष्टोमश्चतुष्टोमो ज्योतिरानृण्यमित्यपि ॥ ८६ ॥  
अग्निष्टोमादयः संस्थाभेदाः सप्तास्य तन्तवः ।  
सौमिकी दीक्षणीयेष्टिर्दीक्षा तु व्रतसङ्ग्रहः ॥ ८७ ॥  
प्रायणीयोदयनीयौ त्रिष्वाद्येऽन्त्ये च कर्मणि ।  
पुरोडाशस्य प्रथमे प्रणिकं प्रथिकैरुके ॥ ८८ ॥  
प्रोक्षण्यासादनं दैष्टं पत्नीसन्नहनं स्पशा ।  
स्रुचां सम्मार्जनं शुद्धिः स्रुगासादनमाहुतिः ॥ ८९ ॥  
हुतिराज्याधिभ्रयणमाज्यावेक्षणमक्षतिः ।  
स्यादिध्मप्रोक्षणं कार्णञ्चैत्यमाज्याधिवासनम् ॥ ९० ॥  
वेद्यास्तरणमाप्रासः प्रस्तरः स्तरणं छदिः ।  
त्रैहोत्रं समिदाधानमदितिस्तासु सेचनम् ॥ ९१ ॥  
पावकं सोमपानं स्यान्मिश्रकं तु घृतास्त्रनम् ।  
उपांशुस्तु प्राणिकः स्यादन्तर्यामस्त्वपानिकः ॥ ९२ ॥  
श्यैतनौधसयोगानं सान्नोरुपनिमन्त्रणम् ।  
व्यञ्जनाः पशुमंस्काराः सामिकं त्वभिमन्त्रणम् ॥ ९३ ॥  
परम्पराकं शमनं प्रोक्षणं च पशोर्वधे ।  
अथ यज्ञोपकरणं यजत्रं यजनं च तत् ॥ ९४ ॥  
होमधेनुस्त्वग्निहोत्री होमकाष्ठी तु नालिका ।  
होमधूमस्तु निगणो होममस्म तु वैष्णुतम् ॥ ९५ ॥

होमेन्धने स्यादिध्मोऽस्त्री पुमानेधः समित् स्त्रियाम् ।  
 इन्धनं त्वेध आलाद्यमहोत्रं तु तृणेन्धनम् ॥ ६६ ॥  
 काष्ठेन्धनं तु गरहं गोकरीषेन्धनं बुसा ।  
 यवादि त्वकृतं हव्यं तण्डुलास्तु कृताकृतम् ॥ ६७ ॥  
 अन्नादि कृतमामिक्षा दध्नोष्णं संयुतं पयः ।  
 पयस्या च क्षीरशरस्तन्मस्तुनि तु वाजिनम् ॥ ६८ ॥  
 सान्नाय्यं तु दधिक्षीरं पृषदाज्यं पृषातकः ।  
 पृषतोऽपि च दध्याज्ये पुरोडाशस्तु तृप्रकः ॥ ६९ ॥  
 हवनी सुक् सुचो भेदाः स्युर्जुहूरुपभृद्भुवा ।  
 अयामिहोत्रहवणी श्रपण्याधारणः सुवः ॥ १०० ॥  
 चमसोऽस्त्री त्रिपात्राणि वायव्यं सौमिके त्रिषु ।  
 परिप्लवार्थदण्डा सुक् दर्वी तु घृतलेखनी ॥ १०१ ॥  
 चमूः स्त्री चर्म सुत्यार्थं प्रावाणस्त्वभ्रयोऽश्मसु ।  
 विघनो घनो मुद्गरे नरः फयोद्धननन्दनाः ॥ १०२ ॥  
 यूपोऽस्त्री संस्कृतः स्तम्भो होमयूपस्तु शौभिकः ।  
 यूपावग्निषु पार्श्वस्थायुपस्थाविति संज्ञितौ ॥ १०३ ॥  
 अग्निष्ठं त्रिषु यूपादि यदग्नेः सम्मुखे स्थितम् ।  
 यूपमध्यं समादानं यूपाग्रं तर्म न स्त्रियाम् ॥ १०४ ॥  
 कटकेऽस्य चषालोऽस्त्री मूले तूपरमक्षते ।  
 वेष्टनं तु परिव्याणं कुम्बा सुगहना वृत्तिः ॥ १०५ ॥  
 यूपे सप्तदशारत्नावरन्निर्मेथिकोऽधरः ।  
 उत्तरेषां क्रमादाख्या उत्त्रासत्वरुमोचनः ॥ १०६ ॥  
 तथाञ्जनो वैयतिथः क्षालनः शवशीर्षकः ।  
 सुधन्वो रथगरुतः शैखालीककरञ्जकौ ॥ १०७ ॥  
 वासवो वैष्णवस्त्वाष्ट्रः सौम्यो माधुरवेजनौ ।  
 संचातिकारणिर्न क्ली कुशा वरुणकाष्ठिका ॥ १०८ ॥  
 खर्जनी कृष्णविषाणा वेदिर्भूमिः परिष्कृता ।  
 कुण्डं हवित्री हवनी कुण्डे स्याद्वर्तुले परम् ॥ १०९ ॥  
 वेदिः स्त्रियां चतुष्कोणे त्रिकूटं तु त्रिकोणके ।  
 तस्मिन्नास्तावसंस्तावौ स्तुवते यत्र सामभिः ॥ ११० ॥  
 चात्वालोऽस्त्री मृत्खनः स्यादुत्करोऽवकरालयः ।  
 शस्त्राण्युक्त्यानि सामानि स्तोत्राणि स्तुतयोऽपि च ॥ १११ ॥



याज्या पुरोऽनुवाक्या च याज्यापुटमिति द्वयम् ।  
 सौविष्टकृत्यौ संयाज्ये कूर्चालोलस्फुटी पशुः ॥ ११२ ॥  
 स्त्र्यावित् क्रमो विधिः कल्प उपकल्पोऽनुकल्पकः ।  
 पौर्वापर्यं त्वानुपूर्व्यं पर्यायोऽनुक्रमः क्रमः ॥ ११३ ॥  
 अनुपात्यय आवृत् स्त्री परिपाट्यानुपूर्व्यपि ।  
 पर्ययस्त्वतिपातः स्यादतिक्रम उपात्ययः ॥ ११४ ॥  
 इष्टं यागात्मकं कर्म पूर्तं खातादिकर्मणि ।  
 आचारो वृत्तचारित्रचरित्रचरणानि च ॥ ११५ ॥  
 वृत्तस्याध्ययनस्यापि सम्पत्तिर्ब्रह्मवर्चसम् ।  
 पतनं सत्पथाद् भ्रंशश्चर्या त्वीर्यापथस्थितिः ॥ ११६ ॥  
 हिसाकर्मभिचारः स्यान्मूलकर्म तु कर्मणम् ।  
 वशीकारः संवननं विकर्माकार्यसेवनम् ॥ ११७ ॥  
 त्यागो दानं वितरणं विश्राणनविसर्जने ।  
 विहापनं निर्वपणं स्पर्शनं प्रतिपादनम् ॥ ११८ ॥  
 उत्सर्जनं प्रादेशनमपवर्जनमंहतिः ।  
 अतोयं सार्विकं दानमुदपूर्वं तु पौष्टिकम् ॥ ११९ ॥  
 आशिषा शान्तिकं दानं काम्यदानं प्रवापणम् ।  
 आशासनेऽर्थना याचना याचनाऽध्येषणाऽर्दना ॥ १२० ॥  
 भिक्षा च सनिरिच्छी स्यान्मार्गणा तु गवेषणा ।  
 पर्येषणा परीच्छा च मृगणाऽन्वेषणा मृगः ॥ १२१ ॥  
 यस्तु नीलवृषोत्सर्गः स षण्डो वृषपूतनः ।  
 उद्वन्धवृषमश्वायमापिङ्गलक इत्यपि ॥ १२२ ॥  
 लोहितः स्याग्नीलवृषः पुच्छशृङ्गखुरे सितः ।  
 यष्टिर्न ह्री स्त्रियां मीना खनित्री तु विशाखिका ॥ १२३ ॥  
 बद्धदर्भो वेदयष्टिः कुण्डिका ना कमण्डलुः ।  
 वैखानसो वनेवासी वानप्रस्थश्च तापसः ॥ १२४ ॥  
 कापोतो वर्षमात्रस्य स वन्याहारसङ्ग्रहात् ।  
 औदुम्बरस्तु षाण्माससंग्रही तुर्यकालमुक् ॥ १२५ ॥  
 परे त्रिषु तपस्वी स्यात्तापसः पारिकाङ्क्षिकः ।  
 चतुर्थकालिको मिश्रव्युष्टिरष्टमकालमुक् ॥ १२६ ॥  
 चान्द्रायणरतश्चन्द्रव्रतिकः सौमिकश्च सः ।  
 षष्ठकाली तु बलिको नौसो नक्षत्रकालिकः ॥ १२७ ॥

पुष्पाढ्यस्तु स्वयंशीर्णपुष्पमूलफलाशनः ।  
 मुङ्गे पक्षान्तयोरेव यो यवान् स द्विकालिकः ॥ १२८ ॥  
 शीर्णकः शीर्णपर्णाशी वृक्षमूली तु मूलिकः ।  
 भूमौ विपरिवृत्त्यास्ते यः स पातालमूलिकः ॥ १२९ ॥  
 वर्षवातातपानङ्गे बिभ्रदभ्रावकाशिकः ।  
 शिवव्रती स यो विप्रः पादेनैकेन तिष्ठति ॥ ३० ॥  
 रुद्रव्रती क्षत्रियश्चेद् वाताहारस्त्वहिव्रती ।  
 मत्स्यव्रती जलाचारस्तृणशय्यस्तु पर्णशः ॥ १३१ ॥  
 तथैव स्यात् स्थण्डिलश औल्लकोऽङ्गारशाकटे ।  
 पाणिपात्रस्तु खपुटो दन्तोल्लखलको व्युपः ॥ १३२ ॥  
 पिबत्यधोमुखो धूमं यः स धुर्यावकर्तिकः ।  
 जानुभ्यां जानुकस्तिष्ठन्नष्टप्रासो मुनिव्रती ॥ १३३ ॥  
 पद्मासनी तु वसिकः क्षीराहारस्तु लोचकः ।  
 नीवारपिष्टकानष्टावशनाति मुनिपिष्टकी ॥ १३४ ॥  
 एकान्तर्येकान्तरिती तथा कालावलोलकः ।  
 और्वव्रती जलाहारो घृताशी घृतमुग् घृती ॥ १३५ ॥  
 तपो व्रतोऽस्त्री कृच्छ्रोऽस्त्री तश्च चान्द्रायणादिकम् ।  
 चान्द्रायणं चन्द्रव्रतं प्राजापत्यं तु कृच्छ्रकम् ॥ १३६ ॥  
 प्राजापत्यं तु गोकृच्छ्रं कृतं गोमूत्रयावकैः ।  
 शिशुकृच्छ्रं कृतं पच्छः कच्छमद्भिस्तु यः कृतः ॥ १३७ ॥  
 कृच्छ्रः कृच्छ्रातिकृच्छ्रीऽसौ स्याद्वाहान्येकविंशतिम् ।  
 शिशुकृच्छ्रातिकृच्छ्रं तत्त्रिसन्ध्यं चेदपः पिबेत् ॥ १३८ ॥  
 प्राजापत्यं पाणिपात्रं पूर्णान्नेनातिकृच्छ्रकम् ।  
 तप्तकृच्छ्रं तदस्नानात् क्षीरसर्पिर्जलैः कृतम् ॥ १३९ ॥  
 एकैकं ग्रहमभ्युष्णैः शीतैस्तैः शीतकृच्छ्रकम् ।  
 बिल्वेन मासं श्रीकृच्छ्रं मूलकृच्छ्रं बिसाशनात् ॥ १४० ॥  
 पानेन साम्बुसक्तूनां मासं वरुणकृच्छ्रकम् ।  
 त्रिस्सप्ताहं पयःपानं कचित् कृच्छ्रातिकृच्छ्रकम् ॥ १४१ ॥  
 पिण्याकाचामतक्राम्बुसक्तून् भुक्त्वा क्रमादहः ।  
 उपोष्य सौम्यकृच्छ्रं स्याज्जलाचामौ विनैव वा ॥ १४२ ॥  
 स्यात् तुलापुरुषोऽभ्यासादेकैकस्य दिनत्रयम् ।  
 सौम्यस्य तु द्विरभ्यासात् स्यात्तुलापुरुषः शिशोः ॥ १४३ ॥

उपवासस्तूपवस्तुः सन्यासः स्यादनाशकम् ।  
 द्वादशाहे पराको ना षोडशाहे तुरायणम् ॥ १४४ ॥  
 तुरायणद्वये सौम्यं चातुर्मास्ये परायणम् ।  
 परायणं जलेनैतत् क्षीरेणैतत् परावसु ॥ १४५ ॥  
 एकान्तरितमर्धांशं षष्ठकालेषु षाष्टिकम् ।  
 गोमूत्रयावकैर्मासो वज्रोऽस्त्री यावकैः पुनः ॥ १४६ ॥  
 त्र्यहं वज्राभिषवणं पयसा तु पयोव्रतम् ।  
 पञ्चरात्रं पयःपानं सङ्गमः सङ्गतश्च सः ॥ १४७ ॥  
 मासं गोष्ठे पयःपानं गोव्रतं ब्राजिकं च तत् ।  
 पिबेद् ब्रह्मसुवर्चलासुपोष्योपस्करव्रतम् ॥ १४८ ॥  
 कणान्नस्यैव भोजनं द्वादशाहं वसुव्रतम् ।  
 कुशापीडः कुशवटो व्रतिनामासनं ब्रसी ॥ १४९ ॥  
 योगपट्टस्तु चीना स्यात् पर्यस्तिरवसक्थिका ।  
 ऋषिक्विकालदर्शी स्यान्मौनी वाचंयमो मुनिः ॥ १५० ॥  
 अगस्त्यः कलशीपुत्रस्तपनः पीतसागरः ।  
 और्वशेयः कुम्भयोनिरगस्तिर्विन्ध्यकूटकः ॥ १५१ ॥  
 मैत्रावरुणिराग्नेयो मुनिर्वातापिसूदनः ।  
 दक्षिणाशारतः काथिः सत्याग्निश्चाग्निमारुतः ॥ १५२ ॥  
 तस्य कौषीतकी भार्या लोपासुद्रा वरप्रदा ।  
 प्राचेतसस्तु वाल्मीकिर्वाल्मीकश्च कुशी कविः ॥ १५३ ॥  
 सालातुरीयको दाक्षीपुत्रः पाणिनिराहिकः ।  
 हलभूतिस्तूपवर्षः कृतकोटिकविश्च सः ॥ १५४ ॥  
 याज्ञवल्क्यस्तु योगास्त्रियोनेशो ब्रह्मरात्रिकः ।  
 आपवस्तु वसिष्ठः स्याद्यज्ञाढ्यस्तु पराशरः ॥ १५५ ॥  
 गौतमस्तु शतानन्दो यवक्रीतस्तु रोहितः ।  
 यायावरो जरत्कारुर्दुर्वासास्तु कुशारणिः ॥ १५६ ॥  
 अष्टावक्रस्तु गर्भोजिह्वद्वच्युप्तिवध्मवाहकः ।  
 मत्स्यगुश्चयवनोऽथ स्याद् गोनर्दीयः पतञ्जलिः ॥ १५७ ॥  
 अथ व्यालिर्विन्ध्यवासी नन्दनीनन्दनोऽपि च ।  
 कात्यायनो वररुचिर्मेधजिष्णु पुनर्वसुः ॥ १५८ ॥  
 वात्स्यायनस्तु कौटिल्यो विष्णुगुप्तो घराणकः ।  
 अश्विलः पक्षिलः स्वामी मङ्गनागोऽङ्गुलोऽपि च ॥ १५९ ॥

यतिः पाराशरी भिक्षुः परिव्राट् पाररक्षिकः ।  
 अनाशकी प्रव्रजितः कर्मन्दी मस्करी यती ॥ १६० ॥  
 परमात्मा परो ब्रह्म जीवः क्षेत्रज्ञ आविशः ।  
 शक्तिस्तु माया प्रकृतिर्व्योमाख्यं मूलकारणम् ॥ १६१ ॥  
 असदक्षरमव्यक्तं तमः सदसदात्मकम् ।  
 अलिङ्गं गुणसामान्यं गुणाः सत्त्वं रजस्तमः ॥ १६२ ॥  
 महास्तु लैङ्गिको ब्रह्मा लिङ्गव्येषश्च चेतना ।  
 मनीषा शेमुषी बुद्धिर्धीः पूः ख्यातिर्विदा बुधा ॥ १६३ ॥  
 ज्ञप्तिः पण्डोपलब्धिस्तु संवित्तिरनुभूश्चितिः ।  
 अवगत्यनुभूती चिञ्जमिज्ञानं च बोधनम् ॥ १६४ ॥  
 षोढा धीस्तत्त्वधीः पण्डा मेधा धीर्धारणक्षमा ।  
 ऊहापोहक्षमा चार्वा गृहीतिर्ग्रहणक्षमा ॥ १६५ ॥  
 शुश्रूषाबहुला श्रौषिः श्रवणज्ञा तु चत्वरी ।  
 धृतिस्तु तुष्टिः सन्तोषः प्रौढिस्तु कियदेतिका ॥ १६६ ॥  
 यत्नोत्साहोद्यमायामास्तरिषोऽध्यवसायवत् ।  
 बैराग्यं मर्दमुद्वेगो निर्वेदश्च विरागवत् ॥ १६७ ॥  
 धर्मोऽस्त्री सुकृतं पुण्यं पाप्माधर्मौ तु दुष्कृतम् ।  
 दुरितं पातकं पापं त्रस्तमंहोऽघकल्मषे ॥ १६८ ॥  
 स्मयोऽभिमानोऽहङ्कारो गर्वः स्त्री गर्विरस्मिता ।  
 शौटीर्यञ्चाथ शृङ्गारगर्वं घञ्जोरवेञ्जरौ ॥ १६९ ॥  
 आहोपुरुषिका सा यद् गर्वादात्मनि गौरवम् ।  
 अहं पूर्यमहं पूर्वमित्यहम्पूर्विकोन्नतिः ॥ १७० ॥  
 सा स्यादहमहमिका योऽहङ्कारः परस्परम् ।  
 अत्याकारः परिभवस्तिरस्कारोऽप्यनादरः ॥ १७१ ॥  
 रीढाऽवमाननाऽवज्ञाऽप्यवहेलमसूक्ष्मम् ।  
 उचलं मानसं चेतश्चित्तमुचलितं मनः ॥ १७२ ॥  
 स्वान्तं गूढपदं हृष सङ्कल्पो मानसी क्रिया ।  
 मनो बुद्धिरहङ्कार इत्यन्तःकरणं त्रिधा ॥ १७३ ॥  
 आकृतिर्मतमाकृतं भावोऽभिप्राय आशयः ।  
 चित्ताभोगो मनस्कार उत्प्रेक्षा स्वमनीषिका ॥ १७४ ॥  
 मीमांसा तु विजिज्ञासा प्रत्यगृष्टिर्विकुण्ठना ।  
 तर्कमूलिकसम्मर्श उहो न क्लृप्नुहना न ना ॥ १७५ ॥



सम्भावना स्यादाशङ्का वितर्कस्तर्कमस्त्रियाम् ।  
 प्रतिभा प्रतिभासः स्यान्निर्णयोऽन्तश्च निश्चयः ॥ १७६ ॥  
 विचिकित्सा तु सन्देहः संशयो विशयो भ्रमः ।  
 विस्मरणं प्रस्मरणमुन्मादश्चित्तविभ्रमः ॥ १७७ ॥  
 तन्द्रा कौसीद्यसालस्यं प्रमादोऽनवधानता ।  
 स्यादायङ्गकमौत्सुक्यमुत्कण्ठोत्कलिका रतिः ॥ १७८ ॥

हृक्षेखो रणरणकोऽप्यभिध्या विषमस्पृहा ।  
 तृषिः काङ्क्षा स्पृहेहेच्छा वाञ्छा कामो मनोरथः ॥ १७९ ॥  
 अभिलाषश्च लिप्सा तु धनायेप्सा च गर्धना ।  
 गर्भिण्याः पुनरिच्छायां श्रद्धा दोहलदौहृदे ॥ १८० ॥  
 रागोऽनुरागोऽनुरतिर्वीक्षायां मोहविस्मयौ ।  
 शोषुर्ना शुषकोदन्या पिपासाऽप्यपलासिका ॥ १८१ ॥  
 बुभुक्षेच्छाऽशनाया क्षुज्जिघत्साऽशिशिषा पचिः ।  
 राक्ष्यलौत्यं तु कौहोलं तपसीच्छा प्रशान्तिकम् ॥ १८२ ॥  
 शोकस्तु मन्युरुत्खेदः शुक् स्त्री दैन्यानुशोचने ।  
 क्रोधः कोपोऽमर्षरोषौ रुषा रुट्क्रुतक्रुधाः स्त्रियः ॥ १८३ ॥  
 मर्षः क्षमा तितिक्षा स्यादसूया दोषदृग्गुणे ।  
 वैरं विरोधो विद्वेष ईर्ष्या मात्सर्यमुज्जते ॥ १८४ ॥  
 तङ्कोऽस्त्री भीर्भिया भीतिः साध्वसं भयनं भयम् ।  
 विप्रतिसारेऽनुशयः पञ्चात्तापोऽनुतापवत् ॥ १८५ ॥  
 स्नेहोऽस्त्री प्रेम सौहार्दमजय्यं हार्दसौहृदे ।  
 आनन्दनं सङ्गतं स्यादप्रच्छन्नं सभाजनम् ॥ १८६ ॥  
 सख्यं साप्तपदीनं स्यात् कौतुकं तु कुतूहलम् ।  
 कौतूहलं विनोदश्च दुःखं पीडाव्यथाऽऽर्तयः ॥ १८७ ॥  
 सम्भरस्तु मदो हर्षः प्रमोदो मोदसम्मदौ ।  
 आनन्दो नन्दथुह्लादस्तृप्तिमुन्नन्दिदृष्टयः ॥ १८८ ॥  
 शर्म शातं सुखं सौख्यमयः शुभफलो विधिः ।  
 विधौ दैवं दिष्टभाग्ये विपाको भवितव्यता ॥ १८९ ॥  
 उपलिङ्गं त्वरिष्टं स्यादजन्यं हिम्बविप्लवौ ।  
 उमरोपप्लवोत्पाता उपसर्ग उपद्रवः ॥ १९० ॥  
 सम्पत् सम्पत्तिलक्ष्यौ श्रीर्विपत्तिर्विपदापदौ ।  
 अवसादस्तु सादः स्याद्विषादश्च श्लिङ्गुर्न ना ॥ १९१ ॥

उग्रता तूष्णिका रौद्री करुणा तु दया कृपा ।  
 घृणाऽनुकम्पाऽनुक्रोशः कारुण्यं चाथ कौकुटे ॥ १६२ ॥  
 क्लेशायासौ जुगुप्सा तु हृणीया हृणिया घृणा ।  
 ऋतिः कुत्साऽप्युपक्रोशो गर्हा दोषश्च गर्हणा ॥ १६३ ॥  
 मन्दाक्षं ह्रीन्मृगा लज्जा ब्रीला साऽपत्रपाऽन्यतः ।  
 हासिका तु हसो हासो हसनं हास्यघर्घरे ॥ १६४ ॥  
 व्याजो मिषं छलं छद्म निभं च कपटोऽस्त्रियाम् ।  
 दम्भो दण्डाजिनं कूटं दौन्दुभिश्छन्दनोपधा ॥ १६५ ॥  
 रेभटिः कुक्कुटिर्मिथ्याचर्या च परिकल्पना ।  
 जागरितं जागरणं जागर्या जागरा न षण् ॥ १६६ ॥  
 प्रमीला तामसी तन्द्रा स्वापस्तु स्वप्नसंशयौ ।  
 निद्रा गुडाका सुप्तं च स्वप्नस्त्वेवात्र दर्शनम् ॥ १६७ ॥  
 संस्कारमात्रजः स्वप्नः कामिको रसकोऽपि च ।  
 अदृष्टजस्त्वत्र चाग्रो दोषजस्त्वाङ्गलौकिकः ॥ १६८ ॥  
 प्रदोषे बलकः स्वप्नो निशीथे लोचमालकः ।  
 नचकोऽपररात्रे स्यात् सद्यःपाको निशात्यये ॥ १६९ ॥  
 नन्दीमुखी आसहेतिः सुषुप्तिः सुखसुप्तिका ।  
 मूर्च्छा तु मूर्च्छना मौढ्यं वैषित्यं कश्मलं लयः ॥ २०० ॥  
 कालधर्मस्तु दिष्टान्तो निपातो गमिरन्धकः ।  
 कटमोर्षो भूमिलाभो दीर्घनिद्रा निमीलनम् ॥ २०१ ॥  
 पञ्चत्वं मरणं मृत्युरक्ली स्यादमतोऽस्त्रियाम् ।  
 सर्वलोकतते मृत्यौ मारिः क्ली मारकोऽस्त्रियाम् ॥ २०२ ॥  
 हृषीकमिन्द्रियं प्राणः प्राणा ना भूम्नि चासवः ।  
 प्राणापानादयस्त्वस्य वृत्तयः पञ्च वायवः ॥ २०३ ॥  
 आसस्तु असितं सोऽन्तर्मुख उच्छ्वास आहरः ।  
 आनश्चाथ बहिर्वृत्तो निश्वासः पान एतनः ॥ २०४ ॥  
 स्थिरस्त्वान्वास एती च स्यादूवद्धयं गुदानिले ।  
 तन्मात्राण्यविशेषाः स्युर्विशेषाः पञ्च खादयः ॥ २०५ ॥  
 महाभूतानि भूतानि लोको भुवनविष्टपे ।  
 मर्त्यलोको जीवल्लोको मर्त्योऽप्यथ भुवोऽव्ययम् ॥ २०६ ॥  
 स्वर्महश्च क्रमाल्लोका महरेव महानपि ।  
 प्राजापत्यो जनस्तस्माद् गोलोकस्तु तपो न पुम् ॥ २०७ ॥

ब्रह्मलोकः सत्यलोकस्तत्र पुर्यपराजिता ।  
 योगस्त्वाध्यात्मिकोऽथासावष्टाङ्गोऽङ्गैर्यमादिभिः ॥ २०८ ॥  
 अहिंसा सत्यमस्तेयं ब्रह्मचर्यमसङ्गप्रदः ।  
 यमाः स्युर्नियमाः शौचसन्तोषतपआदयः ॥ २०९ ॥  
 आसनं करणं तस्य भेदाः पद्मासनादयः ।  
 उत्तानौ चरणावूर्वोन्यस्येन्नाभौ करद्वयम् ॥ २१० ॥  
 दक्षिणोत्तरमुत्तानं घ्राणदृक् पद्माकासनी ।  
 अर्धपद्मासनं त्वेकपाद ऊरोरधःस्थिते ॥ २११ ॥  
 निगूढचरणं तूर्वोरधश्चेन्नरणाभौ ।  
 पादोपवेशस्त्वन्वर्थः संयुज्य पदयोस्तले ॥ २१२ ॥  
 ते चत्वारोऽपि पर्यङ्का पृष्ठवंशशिरोधरम् ।  
 नियम्य मीलिताक्षश्चेत्पर्यस्तिकरणेन वा ॥ २१३ ॥  
 नागदन्तकमूर्ध्वज्ञोर्जानुस्थौ प्रसृतौ भुजौ ।  
 सूचीमुखमिदं पाणितलौ चेत्संहतौ मिथः ॥ २१४ ॥  
 अर्धसूची तु तौ द्वौ चेत् प्रादेशान्तरतो मुखात् ।  
 कुट्मलं मुकुलीभूतौ तौ चेदूर्ध्वमुखौ स्थितौ ॥ २१५ ॥  
 अस्पृष्टौ नागदन्तस्य सिफचौ चेद् भुवमुत्कटम् ।  
 वहित्रकर्णः संयुज्य जङ्गायुग्मप्रसारणात् ॥ २१६ ॥  
 एष पादप्रसारोऽपि स्यादथो मरणालसम् ।  
 वस्तिशुण्डकमप्यस्य जङ्घिका चेत्प्रसारिता ॥ २१७ ॥  
 अर्धनाकुलमूर्ध्वज्ञोर्जङ्घे बद्धे भुजेन चेत् ।  
 द्वाभ्यां चेन्नाकुलं दोभ्यामथ वज्रासनं यदि ॥ २१८ ॥  
 जङ्घे पद्मासनावस्थे तत्सन्धिनिहितौ करौ ।  
 ताभ्यामेव स्थितौ भूमावन्तरिक्षासनं च तत् ॥ २१९ ॥  
 गोधासनं तदेकेन स्थितश्चेत् पाणिना भुवि ।  
 पद्मासनस्य पदयोः पाणिना पृष्ठगामिना ॥ २२० ॥  
 वामेन दक्षिणाङ्गुष्ठं वामं चान्येन पीडयेत् ।  
 वेतालासनमित्येतदेकाङ्गुष्ठप्रहात् किणः ॥ २२१ ॥  
 कर्णयोर्जानुपार्श्वाभ्यां स्पर्शौ जानुनिकुञ्चनम् ।  
 भुजवेष्टितजङ्घोरोश्चूलिकाश्लेषितावनेः ॥ २२२ ॥  
 पृष्ठतो भुजपाराश्चेन्मृत्युसंयमनोऽपि सः ।  
 बिन्दुभेदोऽप्यधो जानुसन्ध्योः पादप्रवेशनात् ॥ २२३ ॥  
 स्वास्तिकोऽथ समस्थानं पादौ कुञ्चितसम्पुटौ ।  
 आसीनस्यासनान्येतान्यथ सुप्तस्य साम्यतः ॥ २२४ ॥

गवादीनां निषण्णानां स्याद्गोनिषदनादिकम् ।  
 उत्तानस्योर्ध्वपादत्वमित्येतद्विद्विभासनम् ॥ २२५ ॥  
 दण्डासनादिभेदेन पञ्चधा स्यात् स्थितासनम् ।  
 दण्डासनं स्यादन्वर्थं यत्र दण्डवदुत्थितः ॥ २२६ ॥  
 स्याद्वीरासनमुत्पादः कृत्वा भूमौ शिरः स्थितः ।  
 दुर्योधनासनमपि मृत्युसंयमनोऽपि सः ॥ २२७ ॥  
 दण्डपद्मासनं तस्मिन् जङ्घे पद्मासनोचिते ।  
 त्रिविक्रमासनं तार्क्ष्यासनमित्यपि साम्यतः ॥ २२८ ॥  
 प्राणायामः प्राणयम उत्खातो मानमस्य यत् ।  
 छोटिकास्त्रिः परामृश्य जानुस्फोटक्रियाऽथ ताः ॥ २२९ ॥  
 षट्त्रिंशन्मन्द उत्खातो द्विगुणत्रिगुणौ पुनः ।  
 मध्यमश्चैवोत्तमश्च प्रथमो द्वादशैव वा ॥ २३० ॥  
 प्रत्याहारस्त्विन्द्रियाणां विषयेभ्यः समाहृतिः ।  
 धारणा तु कचिद्ध्येये चित्तस्य स्थिरबन्धनम् ॥ २३१ ॥  
 ध्यानं तु विषये तस्मिन्नेकप्रत्ययसन्ततिः ।  
 समाधिर्ना तदेवार्थमात्राभासनरूपकम् ॥ २३२ ॥  
 प्रयुक्तं धारणाद्येतत्त्रयमेकत्र संयमः ।  
 ओङ्कारः प्रणवस्तारस्तारकं सर्वविन्मतिः ॥ २३३ ॥  
 विद्वान् सन् कोविदः सूरिर्मैधावी पण्डितो बुधः ।  
 सुधीर्विपश्चित् सङ्ख्यावान् प्राज्ञो धीमान् विचक्षणः ॥ २३४ ॥  
 दीर्घदर्शी दूरदर्शी लघ्ववर्णो मनीष्यपि ।  
 त्रिवर्गो धर्मकामार्थाश्चतुर्वर्गः समोक्षकः ॥ २३५ ॥  
 सबलैस्तेऽश्रतुर्भद्रः शास्त्रीयं तु फलं गतिः ।  
 सान्दष्टिकं फलं सद्यः कार्यं कृत्यं प्रयोजनम् ॥ २३६ ॥  
 प्राप्तिरैक्येन सायुज्यं सार्ष्टिरैश्वर्यतुल्यता ।  
 ब्रह्मभूयं ब्रह्मभावो देवभूयादिकं तथा ॥ २३७ ॥  
 अमृतत्वं तु कैवल्यं मुक्तिर्मोक्षोऽपुनर्भवः ।  
 मोक्षावलम्बिनः प्रायः पाषण्डा बाह्यलिङ्गिनः ॥ २३८ ॥  
 ते च द्वेरुक्शोभाद्याः प्रोक्ताः षण्णवतिः क्वचित् ।  
 दशोत्तरं शतं कैश्चित् पाषण्डानां प्रदर्शितम् ॥ २३९ ॥  
 शतत्रयं षष्ठ्यधिकमुक्तं चीनेशसंसदि ।  
 वेषाजीवकृतान्ताद्यैस्तेषां भेदः परस्परम् ॥ २४० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्या  
 भूषकाण्डे ब्राह्मणाध्यायः ॥ ६ ॥



## क्षत्रियाध्यायः ॥ ७ ॥

क्षत्रं बाहुजराजन्यौ भूशक्रः क्षत्रियो विराट् ।  
 राजा तु पार्थिवो भूभुग् राड् भूपो नृपतिर्नृपः ॥ १ ॥  
 नरेन्द्रो नरदेवश्च वश्यामात्यस्त्वधीश्वरः ।  
 सार्वभौमश्चक्रवर्ती नृपोऽन्यो मण्डलेश्वरः ॥ २ ॥  
 स्वाम्यमात्यसुहृत्कोशराष्ट्रदुर्गबलानि च ।  
 राज्याङ्गानि प्रकृतयः पौराणां श्रेणयोऽपि च ॥ ३ ॥  
 गुणाः साङ्ग्रामिकाः सर्वे स्वामिनस्त्वाभिगामिकाः ।  
 इन्द्रव्रतादयश्चाष्टौ सम्पत्तिर्विपदोऽपराः ॥ ४ ॥  
 तत्र याः शक्तयस्तिष्ठः प्रभावोत्साहमन्त्रजाः ।  
 षाड्गुण्यमस्त्राद्यभ्यासो गुणाः साङ्ग्रामिका इमे ॥ ५ ॥  
 षड्गुणा आसनं यानं द्वैधं विग्रह आश्रयः ।  
 सन्धिश्चेन्द्रयमादीनां वृत्तमिन्द्रव्रतादिकम् ॥ ६ ॥  
 अथ विद्यार्जनं दानमष्टवर्गस्य वर्धनम् ।  
 द्विकपञ्चकषट्काणां विजयः सप्तवर्जनम् ॥ ७ ॥  
 उपायनैपुणं धर्म इत्याद्याः शोभनाः क्रियाः ।  
 दृष्टादृष्टोदयार्था यास्ते गुणा आभिगामिकाः ॥ ८ ॥  
 तत्राष्टवर्ग आरम्भः कृषिः सेतुर्वणिक्पथः ।  
 खनिस्थानं वनच्छेदो दुर्गं शून्यनिवेशनम् ॥ ९ ॥  
 द्विकं तु मनआत्मानाविन्द्रियाणि तु पञ्चकम् ।  
 षट्कं कामो मदो मानो लोभो हर्षो रुषाऽपि च ॥ १० ॥  
 मृगयाक्षाः स्त्रियः पानं वाक्पाठव्यार्थदूषणे ।  
 दण्डपारुष्यमित्येतन्महाव्यसनसप्तकम् ॥ ११ ॥  
 मुख्योपायास्तु सामाद्याः क्षुद्रोपायाः पुनस्तयः ।  
 मायोपेक्षेन्द्रजालं चेत्येते माया तु शाम्बरी ॥ १२ ॥  
 इन्द्रजालं तु कुहकमुपेक्षा त्ववधीरणम् ।  
 उपजापस्तु भेदः स्यात् साम सान्त्वं च सान्त्वनम् ॥ १३ ॥  
 तन्त्रं स्वराष्ट्रचिन्ता स्यादावापस्त्वरिचिन्तनम् ।  
 अदृष्टं बह्मितीयादि दृष्टं स्वपरचक्रजम् ॥ १४ ॥

राज्ञामहिभयं तु स्यात् स्वपक्षप्रभवं भयम् ।  
 हैमं सिंहासनं भद्रासनं त्वन्यन्नृपासनम् ॥ १५ ॥  
 छत्रं स्यादातपत्रं तन्नृपलक्ष्म नृपस्य चेत् ।  
 अभिसारस्त्वनुचरः सहायोऽनुप्लवोऽनुगः ॥ १६ ॥  
 सेवकश्चानुजीवी च यस्तु कोलेसहायकः ।  
 वैहासिकः केलिकिलस्तस्मिन् हासनिकोऽपि च ॥ १७ ॥  
 सामन्ता राजसन्धिस्था आरक्षाः पुररक्षिणः ।  
 मन्त्र्यमात्यौ तु धीकर्मसहायेऽतः परे त्रिषु ॥ १८ ॥  
 अध्यक्षः स्यादधिकृतः स्थाने चेत् स्थानिको ह्यसौ ।  
 क्षुद्रोपकरणेषु स्यादध्यक्षः पारिकर्मिकः ॥ १९ ॥  
 कुमारोऽमात्यको मन्त्री वर्गे धर्मे तु धार्मिकः ।  
 हृष्टे धीकर्मिकः पुर्या चोरिको दण्डपाशिकः ॥ २० ॥  
 रजते नैष्किको ग्रामे स्थायुको हेमि भौरिकः ।  
 महानसे पौरोगवो दण्डपालोऽखिले बले ॥ २१ ॥  
 अन्तःपुरेऽन्तर्बशिको गोपो ग्रामेषु भूरिषु ।  
 कालिकोऽधिकृतः शुल्के सौविदस्तु सौविदः ॥ २२ ॥  
 स्थापत्यकञ्चुक्यार्याश्च षण्डो वर्षवरः समौ ।  
 प्रदेष्टा पञ्चजनीनो भाण्डागारिक इत्यपि ॥ २३ ॥  
 दौवारिको वेत्रधरो द्वास्थः क्षत्ता च दर्शकः ।  
 द्वारपाले पुरोधास्तु सौवस्तिकपुरोहितौ ॥ २४ ॥  
 मौहूर्तिकमौहूर्तज्यौतिषिकज्ञानिगणकदैवज्ञाः ।  
 सावत्सर आदेशी कार्तान्तिक इत्यमी तुल्याः ॥ २५ ॥  
 यथार्हवर्णो मन्त्रज्ञो भीमरो गूढपूरुषः ।  
 चारोऽप्यथ वणिग्भिक्षुरक्षात्रो लिङ्गी कृषीवलः ॥ २६ ॥  
 इति संस्थाचाराः पञ्च तत्र भिक्षुरदास्थितः ।  
 कृषीवलो गृहपतिश्छात्रे कापटिकश्चरे ॥ २७ ॥  
 सञ्चारास्त्वपरे चाराः स्थिताः संस्थाचरेषु ये ।  
 तीक्ष्णोऽतिहिंसनः शूरशस्त्री छद्मप्रधारवान् ॥ २८ ॥  
 अपसर्पाः कर्मकरव्याजात् स्थाने वसन्ति ये ।  
 वार्तिकः सन्देशहरो दूतः सान्देशिको रभूः ॥ २९ ॥  
 वैतालिको बोधकरो वन्दी तु स्तुतिपाठकः ।  
 मागधो मधुको घण्टाताडे चाण्टिकचातिकौ ॥ ३० ॥

कृताभिषेका महिषी महादेव्यप्यथापरा ।  
 देवी राजकुलोत्था चेत् परिवृत्ती तु पूजिता ॥ ३१ ॥  
 वावाता तु प्रियतमा स्वामिनी त्वनृपात्मजा ।  
 फालाकली युञ्जिता नृपस्योढाः प्रिया इमाः ॥ ३२ ॥  
 अनूढास्तु प्रिया राज्ञः कलाज्ञा गणिकाः स्मृताः ।  
 गणिका सा प्रगणिका यानाप्तपचारिका ॥ ३३ ॥  
 आज्ञा स्यादाज्ञागणिका या राज्ञाप्तपरिच्छदा ।  
 अथालगन्धिकाऽप्याज्ञागणिका कुलसम्भवा ॥ ३४ ॥  
 या तु भोगाय वेश्यात्वं गता वैषयिकीति सा ।  
 बन्धकी तु गता वेशमर्थायानाप्तसत्कृतिः ॥ ३५ ॥  
 शय्यास्त्रभूषणादौ तु नियुक्ता परिचारिका ।  
 सञ्चारिका महाकार्ये कथायां द्रविणादिषु ॥ ३६ ॥  
 विचारिका तूपवनकक्षान्तरविचारिणी ।  
 आशीस्स्वस्त्ययनाभिज्ञा या वृद्धा सा महत्तरी ॥ ३७ ॥  
 प्रतिहारी तु राजानं सम्भावयति या सदा ।  
 आयुक्तिविनियुक्ता या सा ताम्बूलकरङ्गिका ॥ ३८ ॥  
 असिक्न्यन्तःपुरप्रेष्याऽनाप्तभोगा कुमारिका ।  
 विषयानन्तरो राजा शत्रुर्मित्रमतः परम् ॥ ३९ ॥  
 उदासीनः परस्तस्मात् पाष्णिग्राहस्तु पृष्ठतः ।  
 शत्रुर्दस्युरमित्रारी अरातिरहितो द्विषन् ॥ ४० ॥  
 द्वेषणः प्रत्यनीको द्विह् जिघांसुर्हिसनो रिपुः ।  
 सपत्नोऽसह्नो वैरी दूषकः शात्रवः परः ॥ ४१ ॥  
 प्रत्यर्थी पर्यवस्थाता प्रतिपक्षो विपक्षकः ।  
 दुर्हृद् द्वेष्यभियातिश्च परिपन्थी विरोध्यपि ॥ ४२ ॥  
 मित्रं नपुं त्रिषु स्निग्धवयस्येष्टहितप्रियाः ।  
 निजात्मीयाप्तसुहृदः सहायः सद्बुचिः सखा ॥ ४३ ॥  
 कोशोऽर्थसञ्चयो राज्ञां भाण्डान्यर्था हि कोशगाः ।  
 आयोदयौ धनोत्पत्तौ तत्क्षयेऽपचित्तिर्व्ययः ॥ ४४ ॥  
 पर्याहारः प्रजास्वायो भागधेयो बलिः करः ।  
 उपदा तूपहारः स्यादुपग्राहमुपायनम् ॥ ४५ ॥  
 प्रदेशनं प्राप्तं च लम्बा तूत्कोच आमिषः ।  
 दण्डो दमः साहसोऽस्त्री द्विपाद्यो द्विगुणो दमः ॥ ४६ ॥

अपराधो मन्तुरेनः खसृमं विप्रियागसी ।  
 अपवादस्तु निर्देशो निदेशः शासनं तथा ॥ ४७ ॥  
 शिष्टिराज्ञाऽप्यथ न्यायो देशरूपं समञ्जसम् ।  
 राष्ट्रं तु विषयः सोऽपि युक्तो ग्रामैः शताधिकैः ॥ ४८ ॥  
 उपवर्त्तनमप्यस्मिन्मण्डलं तैः शताधिकैः ।  
 दुष्प्रापं तु पुरं दुर्गं यन्त्रशैलजलादिभिः ॥ ४९ ॥  
 वारकादीनि यन्त्राणि परिखाया बहिभवि ।  
 पादुका कण्टकी गर्तः पांसुच्छन्नो महापथे ॥ ५० ॥  
 तलयन्त्रं क्षुराकारं यदि वा क्रकचोपमम् ।  
 श्वदंष्ट्रागलशृङ्गाटमण्डूकाद्यन्वितार्थकम् ॥ ५१ ॥  
 शरभा जानुमात्री दा दारुजा जानुभञ्जिनी ।  
 अवपातस्तु हस्त्यर्थो गर्तश्छन्नस्तृणादिना ॥ ५२ ॥  
 स्यात् कण्टकप्रतीसारा रज्जुः कण्टकसञ्चिता ।  
 अहिपृष्ठं तु निर्मासपृष्ठास्थ्याभमयोमयम् ॥ ५३ ॥  
 उपस्करप्रस्खलिनी भूमिः स्थपुटपिच्छिला ।  
 छन्नैरेतैश्छन्नपथं सुरुङ्गादिः कृतश्च यः ॥ ५४ ॥  
 सैन्यं चक्रं बलं सेना चमूर्वाहिन्यनीकिनी ।  
 पताकिनी च पृतना ध्वजिनी च वरूथिनी ॥ ५५ ॥  
 सैन्यं तु भिन्नकूटं तन्नष्टावान्तरनायकम् ।  
 शून्यमूलं तदस्थानमन्तश्शल्यं तदोषकम् ॥ ५६ ॥  
 त्रिहयं पञ्चपादातं यदेकरथकुञ्जरम् ।  
 सैन्यं सा पत्तिरेतस्यास्त्रैर्गुण्यात् स्युर्यथाक्रमम् ॥ ५७ ॥  
 सेनामुखं गुल्मगणौ बाहिनी पृतना चमूः ।  
 अनीकिनीत्यनीकिन्यः पुनरक्षौहिणी दश ॥ ५८ ॥  
 प्रत्यासारश्चमूपाणिः सज्जनं तूपरक्षणम् ।  
 हस्त्यश्वरथपादातं बलं स्यात्तुरङ्गकम् ॥ ५९ ॥  
 इभो मतङ्गजो हस्ती दन्ती कुम्भी करी रदी ।  
 स्तम्बेरमो गजो गजो द्विरदोऽनेकपो द्विपः ॥ ६० ॥  
 दन्ताबलो महाकायो वारणः कुक्षरोऽसुरः ।  
 महासृगः शूर्पकर्णः सामजः सिन्धुरः कपिः ॥ ६१ ॥  
 मदबृन्दः कुषी कम्बुः शुण्डालः षष्टिहायनः ।  
 भद्रो मन्द्रो मृग इति गजाः सङ्करजास्तथा ॥ ६२ ॥



अङ्गप्रत्यङ्गभद्रत्वं संक्षिप्तं भद्रलक्षणम् ।  
 पृथुत्वं श्लथता स्थौल्यं संक्षिप्तं मन्द्रलक्षणम् ॥ ६३ ॥  
 तनुप्रत्यङ्गदीर्घोच्चप्रायो मृगगणो मृगः ।  
 भद्रमन्द्रो भद्रमृगो भद्रमन्द्रमृगोऽपि च ॥ ६४ ॥  
 मन्द्रभद्रादयोऽप्येवमिति सङ्करजा नव ।  
 ऊर्ध्वाधःकायभेदांते द्विघेत्यष्टादशोदिताः ॥ ६५ ॥  
 पञ्चवर्षो गजो बालः पोतस्तु दशवर्षकः ।  
 त्रिंशद्वर्षस्तु कलमो विष्को विंशतिवर्षकः ॥ ६६ ॥  
 कालेऽप्यजातदन्तश्च स्वल्पाङ्गोऽपि च मक्षणः ।  
 आह्नाकृद्विनयग्राही यूथनाथस्तु यूथपः ॥ ६७ ॥  
 लग्नो मदकलो मत्तः प्रभिन्नोऽप्यथ निर्मदः ।  
 चद्वान्तोऽसौ परिणतस्तिर्यग्दन्तप्रहारकः ॥ ६८ ॥  
 औपवाह्यो राजवाह्यः सन्नाह्यः समरोचितः ।  
 स्थूलह्रस्वरदोऽसोढ ईषादन्त उदग्रदन् ॥ ६९ ॥  
 करेणुः करिणी धेनुः कल्पना सज्जना घटा ।  
 गण्डूषको बहिष्कर्षः सम्भोगाश्चातिहस्तकः ॥ ७० ॥  
 स्थूलहस्तः फलीहस्तः पृथुहस्त इति क्रमात् ।  
 उपर्येते गजाङ्गुल्याः प्रदेशाः सा तु कर्णिका ॥ ७१ ॥  
 आकर्षः परिकर्षश्च बहिष्कर्षस्य पार्श्वयोः ।  
 किरीटी दन्तमूलं स्यात् प्रवेष्टस्तु ततः परम् ॥ ७२ ॥  
 मध्येमुखं तु बाहिस्थं पिलाटौ तस्य पार्श्वयोः ।  
 कर्णमूले पीतलिका चूलिका पिप्पलीति च ॥ ७३ ॥  
 तस्यास्तु पर चद्वात आरक्षः कुम्भयोरधः ।  
 उरःपार्श्वौ तु विष्कोभौ दर्दरौ गलपार्श्वयोः ॥ ७४ ॥  
 करदोऽस्य कटो गण्डो गात्रं पूर्वोऽङ्घ्रिरस्य तु ।  
 मूलेधोऽधः प्रदेशास्तु क्षयश्च पलिपादकः ॥ ७५ ॥  
 कूर्मः सन्दानभागश्च प्रोह उत्सङ्ग इत्यपि ।  
 विशेषभागो जघनभागो वैशाख्यपि क्रमात् ॥ ७६ ॥  
 गात्रे सप्त नखादूर्ध्वं पिण्डकान्तमवस्थिताः ।  
 पुच्छवंशोऽपवंशः स्यान्निष्कोशः कुक्षिमध्यकम् ॥ ७७ ॥  
 अवरं पश्चिमः पादस्तत्राधोऽधः स्थिताः क्रमात् ।  
 कालभागो बहिष्पार्श्वस्तथा जघनपिण्डिका ॥ ७८ ॥

मण्डुकी शकुटा पाष्णिस्तलप्रोहश्च सक्थि च ।  
 सन्दानभागः कूर्मश्च प्रदेशाः स्युर्नखावधेः ॥ ७६ ॥  
 अत्यूहः ककुदं मेढ्रे क्षीरिका चूचुकान्तरम् ।  
 अथ पुच्छे स्थिता किङ्क्षी संवालो बालपुष्कलम् ॥ ८० ॥  
 बालपाशक इत्येवमधोऽधः स्युर्यथोत्तरम् ।  
 दन्तभागः पुरोभागः पुच्छभागस्तु पार्श्वतः ॥ ८१ ॥  
 मुखे पृषन्ति पद्मानि वमथुः करशीकरः ।  
 प्रवृत्तिर्मद आलानं स्तम्भस्तोत्रं तु वेणुकम् ॥ ८२ ॥  
 अन्दुको निगलो न स्त्री भिदुरं शृङ्खला त्रयी ।  
 कलापकः कण्ठबन्धलिपदी पादबन्धनम् ॥ ८३ ॥  
 चूषा कदया वरत्रा स्यादकुशोऽस्त्री सृणिर्न षण् ।  
 अपष्टं त्वकुशस्याग्रं सूना दण्डोऽर्पिताकुशः ॥ ८४ ॥  
 सूनापष्ठान्तरं मन्या वक्रकीलो हुरुदकः ।  
 कीलस्तु पुष्यलः शङ्कुर्दिङ्गीरो लोहशृङ्खलः ॥ ८५ ॥  
 पञ्चाश्वरणशङ्कौ तु पङ्क्तीशो घुटिकोऽपि च ।  
 कदलिः करिणां केतुः शृङ्गारो गजमण्डनः ॥ ८६ ॥  
 स्थासको नक्षत्रमाला कर्णशङ्कौ तु शङ्किलौ ।  
 गजोपचारकुशलो वाहितो मलहारकः ॥ ८७ ॥  
 आधोरणा हस्तिपका हस्त्यारोहा निषादिनः ।  
 तत्प्रधाना महामात्रा आरोहा गजजीवनाः ॥ ८८ ॥  
 पादकर्म यतं तेषां यातमकुशवारणम् ।  
 वीतं तदुभयं यच्च निस्सारं हयकुञ्जरम् ॥ ८९ ॥  
 अश्वस्तुरङ्गस्तुरगो हयः सप्तिस्तुरङ्गमः ।  
 शालिहोत्री व्रती कुण्डी प्रोथी वारुः प्रकीर्णकः ॥ ९० ॥  
 कुदरो घोटकस्तार्क्ष्यः क्रमणो ग्रहभोजनः ।  
 पाकलः परुलः पीतिर्माषाशी हि सविक्रमः ॥ ९१ ॥  
 श्रीवृक्षकी वक्षसि चेद्रोमावर्तो मुखेऽपि च ।  
 मल्लिकाक्षः सितैर्नेत्रैः कृष्णैरिन्द्रायुधो हयः ॥ ९२ ॥  
 पञ्चमद्रस्तु हृत्पृष्ठमुखपार्श्वेषु पुष्पितः ।  
 पुच्छोरःखुरपुच्छास्थैः सितैः स्यादष्टमङ्गलः ॥ ९३ ॥  
 आजानेयाः कुलीना स्युः पारसीकादयश्च ते ।  
 पारसीकादिसंज्ञास्तु पारसीकादिदेशजाः ॥ ९४ ॥

ये तु काम्बोजवाह्नीकवनायुजमुखा हयाः ।  
 ते निहीनकुलाः किञ्चित् (पश्चि)मोत्तरदेशजाः ॥ १५ ॥  
 निहीनास्त्वब्जलारट्टशम्भला दोषिणः परे ।  
 तत्र शृङ्गी शृङ्गपदे मांसबुद्बुदवान् हयः ॥ १६ ॥  
 मुसल्यन्यप्रभैकाङ्घ्रिः कराली तु जरुर्ददः ।  
 ऋषभः ककुदावर्तो यमो हीनाधिकाङ्गकः ॥ १७ ॥  
 इन्द्रवृद्धिस्तु निर्मुष्कः स्त्री सरी तु खुरे त्रिके ।  
 कृत्तिकापिञ्जरः स स्याद्यः पृषत्पुञ्जपिञ्जरः ॥ १८ ॥  
 अश्वानामागमे संज्ञा वर्णिता वर्णहेतवः ।  
 सिते द्वौ कर्ककोकाहौ खोङ्गाहः श्वेतपिङ्गलः ॥ १९ ॥  
 आनीलः स्यान्नीलकोशः पुङ्गाहः कृष्णवर्णकः ।  
 शोणः कोकनदच्छायस्त्रियूहः कपिलो हयः ॥ १०० ॥  
 कियाहो लोहितः पीतरक्तस्तूद्रकलाहकः ।  
 उराहस्तु मनाक् पाण्डुः कृष्णं जङ्घाद्वयं यदि ॥ १०१ ॥  
 पाटलो बोरुखानः स्याद् गर्दभाभः सुरूहकः ।  
 हलामश्चित्रलो रेखाऽप्यस्य कृष्णाऽस्ति पृष्ठगा ॥ १०२ ॥  
 कलाहस्तु मनाक् पीतः कृष्णः स्याद्यदि जानुनि ।  
 खेल्गाहः कर्पलच्छायः पाण्डुवालधिकेसरः ॥ १०३ ॥  
 पीतस्तु हरियाः पीतहरिते हरिहालकौ ।  
 पीयूषवर्णे सेराहः पङ्कलः सितकाचसः ॥ १०४ ॥  
 सर्व एवान्यसंज्ञाः स्युः कर्काद्याः पुण्ड्रके सति ।  
 कोकुराहः खुरुराहो हलुराह इति क्रमात् ॥ १०५ ॥  
 कर्काद्याः खुरुराहस्तु फाले रेखा च पृष्ठगा ।  
 सरुराहः सेरुराहो द्वौ सेराहे सपुण्ड्रके ॥ १०६ ॥  
 अश्वपोतः किशोरः स्याद्वाग्न्यश्वा वडबाऽर्वती ।  
 लुठितोऽथ स्याद्वृत्तः सुकरो दुर्विनीतकः ॥ १०७ ॥  
 अह्नाऽश्वगम्यमाश्वीनं त्रिष्वेतेऽश्वतरः पुमान् ।  
 स्याद्वेसरो वेगसरो मूकरण्डौ तु वेसरात् ॥ १०८ ॥  
 अश्वा सूतेऽश्वतर्या तु मूकाज्जातः किसिद्रुकः ।  
 निगालस्तु गलोद्देशे नासाग्रे प्रोथमस्त्रियाम् ॥ १०९ ॥  
 आवर्तो रोमजो देवमणिस्त्वेष निगालजः ।  
 कश्यमश्वस्य मर्ध्यं स्यादन्तवेष्टस्तु नालिका ॥ ११० ॥

कालिका दन्तरेखा स्यादन्तच्छिद्रमुखखली ।  
 कर्तनं धूलिलुठितं वर्तनं तूपवर्तनम् ॥ १११ ॥  
 लोठमूर्मुखरञ्जुस्तु स्यादन्ताल्यवरक्षणी ।  
 दामाञ्जनं पादपाशो नासारञ्जुस्तु लालिका ॥ ११२ ॥  
 कवियोऽस्त्री खलीनोऽस्त्री पञ्चाङ्गी कविका कवी ।  
 प्राक्पादरञ्जुरातालो बका स्याद् द्विग्रहे द्वयोः ॥ ११३ ॥  
 पर्याणं स्यात् पल्ययनं वल्गावक्षेपणी कुशा ।  
 कशा काम्रा वक्त्रपट्टे तलिका तलसारकम् ॥ ११४ ॥  
 पादपुट्यां पादफली प्रक्षरं प्रखरोऽस्त्रियाम् ।  
 युग्याशनप्रसेवे तु द्वौ बांक्षाणप्ररोहकौ ॥ ११५ ॥  
 आयानं स्यादलङ्कारो ग्रीवाभूषा तु गण्डकः ।  
 लवणस्य प्रदानाय कृता लवणलायका ॥ ११६ ॥  
 तैलस्य नालिका सूत्रसङ्ग्रहोऽश्वस्य कर्षकः ।  
 केशकारक्षौरकारौ नालिवाहस्तु घासिकः ॥ ११७ ॥  
 अश्वानां तु गतिर्धारा विभिन्ना सा तु पञ्चधा ।  
 आस्कन्दितं धौरितकं रेचितं वल्गितं प्लुतम् ॥ ११८ ॥  
 इत्येतेषाञ्च पञ्चानामेकैकं बहुभेदकम् ।  
 गत्यर्थास्तद्वदर्थश्च सर्वे ते बाच्यालङ्काराः ॥ ११९ ॥  
 तत्रास्कान्दतकं कोपादिव सर्वैः पदैर्मुहुः ।  
 उत्प्लुत्योत्प्लुत्य गमनमुपकण्ठापराभिधम् ॥ १२० ॥  
 अथ धौरितकं धौर्यं धौरितं धौरणं च तत् ।  
 तच्च कङ्कशिखिक्रोडनकुलानां गतैः समम् ॥ १२१ ॥  
 रेचितं स्याद्भारवहं तच्चावक्रगतिर्दुता ।  
 वल्गितं बलानं पद्भिर्भेदाश्चाष्टौ यमादयः ॥ १२२ ॥  
 प्लुतं तु लङ्घनं पश्चिमृगधर्मेण भिद्यते ।  
 यानं सांयात्रिकं युग्यं वाहनं बाह्यघोरणे ॥ १२३ ॥  
 योग्यं चास्मिंश्चक्रयुते शताङ्गः स्यन्दनो रथः ।  
 वहित्रं वहनं चास्मिंश्चतुरश्रे सकूबरे ॥ १२४ ॥  
 दीर्घद्विपक्षवहनमनः क्ली शंकटोऽस्त्रियाम् ।  
 प्रवाहिर्ना वृत्तमध्ये पक्षकूबरवर्जिते ॥ १२५ ॥  
 देवतार्थो देवरथो युद्धार्थः साम्परायिकः ।  
 क्रीडार्थः स्यात् पुण्यरथः कृतः कर्णारथो मृदा ॥ १२६ ॥



कर्णरथं प्रवहणं हयनं रथगर्मके ।  
गन्त्री स्त्री कूबरं न स्त्री रथे कम्बलिवाद्यके ॥ १२७ ॥  
रथस्तु जयकृजैत्रो यात्रार्थः पारियाणकः ।  
रथेऽत्र द्वैपवैयाघ्रौ प्रावृते व्याघ्रचर्मणा ॥ १२८ ॥  
वृते रथे पाण्डुभिः स्यात् कम्बलैः पाण्डुकम्बली ।  
एवं काम्बलवाखाद्याः कम्बलादिभिरावृते ॥ १२९ ॥  
योग्यारथो वैनयिको जैत्रप्रभृतयस्त्रिषु ।  
धूः स्त्री धुर्वी यानमुखं युगमीषान्तबन्धनम् ॥ १३० ॥  
कस्तम्भि युगमध्येऽस्त्री स्यादक्षश्चक्रधारणम् ।  
अक्षक्रीले त्वणिर्न क्ली ध्रुवः कीलोऽप्यन्तिर्न षण् ॥ १३१ ॥  
रथलीडो रथस्यान्तं बन्धुरा तनुकूबरम् ।  
रथगुप्तिर्वरूथो ना कूबरो ना युगन्धरः ॥ १३२ ॥  
अनुकर्पो रथस्याधोघरणन्दावर्थान्सः ।  
युगो द्वितीयः प्रासङ्गः पताका तु ध्वजोऽस्त्रियाम् ॥ १३३ ॥  
अस्योच्चूडावचूडौ द्वावूर्ध्वाधोमुखचूडकौ ।  
अरि चक्रं रथपदं रथाङ्गं केशवायुधम् ॥ १३४ ॥  
स्त्री नेमिर्ना प्रधिश्चक्रप्रान्ते तुम्बा तु नाभिका ।  
अरास्तयोः स्थिता मध्ये रथाङ्गानि त्वपस्कराः ॥ १३५ ॥  
शिबिका याप्ययानं स्याद्दोला हेलार्थरूपणम् ।  
प्रेङ्गोलनं तु प्रेङ्गोलं प्रेङ्गो रिङ्गोलनाद्यपि ॥ १३६ ॥  
आन्दोलनं स्यादान्दोलो दोला स्याद्दोलिकाऽपि च ।  
परम्परावाहनं यत्तद्वैनीतकमस्त्रियाम् ॥ १३७ ॥  
नियन्ता प्राजिता क्षत्ता यन्ता सूतश्च सारथिः ।  
सव्येष्टो दक्षिणेस्थश्च स्यन्दपार्ष्णिसारथिने ॥ १३८ ॥  
सेवका युधि योद्धृणां भटा यौघाश्च यौधकाः ।  
पदातिपत्तिपादातपदातिकपदाजयः ॥ १३९ ॥  
पातिकः पादिकः पट्टो रथिको रथिनो रथी ।  
सेनास्थाः सैनिकाः सैन्याः सेनारक्षास्तु सैनिकाः ॥ १४० ॥  
पार्ष्णिग्राहास्तु पृष्ठस्थाः साहस्रास्तु सहस्रिणः ।  
परिधिस्थाः परिचराः सेनानीर्वाहिनीपतिः ॥ १४१ ॥  
दंशिते स्युः कवचित्सज्जसन्नद्धवमिताः ।  
आबद्धः पुनरामुक्तः प्रतिमुक्तः पिनद्धवत् ॥ १४२ ॥

काण्डपृष्ठस्वायुधिक आयुर्धियोऽस्त्रजीवनः ।  
 घन्वी धनुष्मान् धानुष्को निषङ्गयस्त्री धनुधरः ॥ १४३ ॥  
 चर्म शक्तीकयाष्टीकपारश्वधिककौन्तिकाः ।  
 काण्डीरखाङ्गिकाद्याश्च चर्मशक्त्यादधारिणः ॥ १४४ ॥  
 छायाकरश्छत्रधरः पताकी वैजयन्तिकः ।  
 पुरस्सरः पुरोगोऽग्रेसरः प्रष्टोऽग्रतस्सरः ॥ १४५ ॥  
 पुरोगमः पुरोगामी यस्त्वलं यात्यरीन् प्रति ।  
 सोऽभ्यमित्रोऽभ्यमित्रिणोऽप्यभ्यमित्रिय इत्यपि ॥ १४६ ॥  
 शूरो वीरश्च विक्रान्तः पटुश्चारभटोऽपि च ।  
 अशूरो हतकः क्लीबो जिष्णौ तु जयिजित्वरौ ॥ १४७ ॥  
 शक्ये तु जेतुं जय्यः स्याब्जेयो जेतव्यमात्रके ।  
 जैत्रो जेता जितो भग्नः कृतहस्तस्तु शिक्षितः ॥ १४८ ॥  
 लघुहस्तः सुहस्तश्च कृतास्त्रः कृतपुङ्गवः ।  
 सांयुगीनो रणे साधुरत्यन्तीनो भृशं गते ॥ १४९ ॥  
 कामङ्गाम्यनुकामीनो जवी तु जवनो जवः ।  
 जङ्गालोऽतजवे धीरमन्थरौ मन्दगामिनि ॥ १५० ॥  
 स्यादुरस्वानुरसिल ऊर्जस्व्यूर्जस्वलोजितौ ।  
 बली प्रबल ओजस्वी वाच्यवद्रधिकादयः ॥ १५१ ॥  
 संशप्तकास्तु संग्रामात् समयेनानिवर्तिनः ।  
 त्वक्त्रं तु दंशनं वर्म तनुत्रं कवचोऽस्त्रियाम् ॥ १५२ ॥  
 माठिः स्त्री जागरो वक्षश्छदः सन्नाहकङ्कटौ ।  
 तत्सूत्रकं सूत्रमयं जालिका स्यादयोमयी ॥ १५३ ॥  
 नागोदर्युदरत्राणं जङ्घात्राणं तु मत्कुणम् ।  
 पटुस्तु लिपिसन्नाहः प्रकोष्ठादौ कृतो यथा ॥ १५४ ॥  
 बाहुलं बाहुरक्षा च मर्दनी पादरक्षणी ।  
 गोधा तला च न नरौ हस्तघ्नो ज्यानिवारणे ॥ १५५ ॥  
 अङ्गुलित्रे कपी शीर्षत्राणे शीर्षण्यशीर्षके ।  
 अधिकाङ्गं सारसनं मध्ये धार्य सकङ्कटैः ॥ १५६ ॥  
 सर्वाभिसारः सर्वौघः सर्वसन्नहनार्थकः ।  
 न क्ली हेतिः शस्त्रमस्त्रमायुच्छत्रुप्रमायुधम् ॥ १५७ ॥  
 ऋष्टिः खड्गः प्रचारोऽसिर्धर्मपालः प्रजागरः ।  
 धर्मो विशसनो देवो मनुष्येष्टः शिवङ्करः ॥ १५८ ॥

श्रीगर्भो विजयः शास्ता कृपाणासङ्गरिष्टयः ।  
 कौक्षेयको भद्रसुतो ह्रस्वनिर्वशकस्त्वसिः ॥ १५६ ॥  
 स्तुहीदलाभो निखिशो मण्डलाग्रोऽन्वितार्थकः ।  
 चन्द्रहासोऽर्धचन्द्राग्र इली तु करवालिका ॥ १६० ॥  
 जम्बूगर्तस्तु खड्गान्धु न्यस्ततैलरुचिर्यदि ।  
 वराभोऽनिल परण्डबीजामपुलकावलिः ॥ १६१ ॥  
 हुण्डुतः पुलकैरण्डः सितदीर्घानवस्थिनैः ।  
 हरकस्तरवारिः स्त्री यष्टिश्चापि मृदौ पृथौ ॥ १६२ ॥  
 कुण्डलो दीर्घनिर्वशो पुलकास्त्वणुराजयः ।  
 अथासिपुत्री क्षुरिका शस्त्रिका चासिधेनुका ॥ १६३ ॥  
 साऽतिदीर्घा पत्रफला कुट्टन्ती हुलमात्रिका ।  
 पट्टसो लोहदण्डो यस्तीक्ष्णधारः खुरोपमः ॥ १६४ ॥  
 कण्टकच्छेदनोऽप्येवं द्विमुखश्च भवत्यसौ ।  
 प्रासः कुन्तो हाटकस्तु स त्रिकण्टकसंज्ञितः ॥ १६५ ॥  
 मिण्डिपालः क्षेपणीयः स्तृगो दीर्घे महाफले ।  
 तोमरोऽस्त्री लोहहुलदण्डे कासूश्च सर्वला ॥ १६६ ॥  
 कणयो लोहमात्रोऽथ शङ्कुर्ना शल्यमस्त्रियाम् ।  
 वराहकर्णकोऽन्वर्थः क्षुरिकाद्याः हुलाग्रकाः ॥ १६७ ॥  
 हुलं द्विफलपत्राग्रं मुनयोऽस्त्यस्य शेखरम् ।  
 प्रत्याकारपरीवारौ कोशो मुष्टौ त्सरुः पुमान् ॥ १६८ ॥  
 शतग्री तु चतुस्ताला लोहकण्टकसञ्चिता ।  
 अयःकण्टकसंज्ञा शतघ्न्येव महाशिला ॥ १६९ ॥  
 भुसुण्डी स्याद्धारुमयी वृत्तायःकीलसञ्चिता ।  
 हस्तिचारो गजत्रासहेतुः शरभसन्निभः ॥ १७० ॥  
 देवदण्डोऽरन्निमात्रो दीर्घा मुसलयष्टिकः ।  
 दुधणे मुद्गरघनौ परिघः परिघातनः ॥ १७१ ॥  
 अस्त्रियौ चापधनुषावासेष्वासौ धनुर्द्वणम् ।  
 कार्मुकं धन्व कोदण्डमायुधाग्रयं शरासनम् ॥ १७२ ॥  
 कार्मुकं तु चतुर्हस्तं कोदण्डं त्र्यङ्गुलं विना ।  
 कामुकात् तु क्रमात् पञ्च विद्यायुधशरायुधे ॥ १७३ ॥  
 गोतमं रथायुधकं कोसलं गाण्डिवोऽस्त्रियाम् ।  
 पातनं मार्गणं चेति द्विगुणानि यथोत्तरम् ॥ १७४ ॥

उच्चलं ब्रह्मदण्डश्च वैशिखं बिम्बसारकम् ।  
 द्विगुणानि क्रमादाद्यं त्वष्टोत्तरशताङ्गुलम् ॥ १७५ ॥  
 केतनं पञ्चविंशत्या पलैर्द्वे द्विगुणे परे ।  
 करीरपृष्ठं व्यासञ्च सहितं तु शतैस्त्रिभिः ॥ १७६ ॥  
 पलानां पञ्चभिस्त्वेषां शतैः स्यात् सहितोत्तरम् ।  
 लस्तुको धनुषो मध्यमग्रं लुस्तमटन्यपि ॥ १७७ ॥  
 अतिरार्तिः किरिः कोटी ज्या जीवा मौर्विका द्रुणा ।  
 तूणी तूण उपासङ्गतूणीरौ विशिखाश्रयः ॥ १७८ ॥  
 निषङ्ग इषुधिर्न क्ली पत्री तु विशिखः खगः ।  
 पृषत्को रोपणो बाणः कलम्बो मर्मभेदनः ॥ १७९ ॥  
 चित्रपुङ्खो वीरशङ्कुः शरो रोध इषुर्न षण् ।  
 प्रक्ष्वेलनस्तु नाराच एषणश्चायसे शरे ॥ १८० ॥  
 अर्धशल्योऽर्धनाराचः कङ्कपत्रः शिलीमुखः ।  
 त्रिभागशल्यनाराचे द्वौ दण्डासनदण्डिकौ ॥ १८१ ॥  
 अर्धचन्द्रः क्षुरप्रः स्याद्विकर्णिः कर्णिकारलः ।  
 स्नुहीदलफलो भल्लश्चिपाटोऽल्पस्तदाकृतिः ॥ १८२ ॥  
 पाददण्डोऽन्वितार्थः स्याद् बाणस्तु गतपत्रणः ।  
 तीरी त्वल्पा वेगवती त्वग्बलाः शरजालकाः ॥ १८३ ॥  
 अयश्शलाका कूटोऽस्त्री पत्रकूटः सपत्रणः ।  
 द्विद्वाविंशत्यङ्गुलिः स्यान्निचोटे द्व्यङ्गुलोत्तराः ॥ १८४ ॥  
 स्युश्चोटलिङ्गकस्तालः कुलिको बिम्बसारकः ।  
 कर्तरी पुङ्ख आराग्रं त्वग्रं वाजश्छदावलिः ॥ १८५ ॥  
 पत्रणा पक्षरचना धारा शस्त्रमुखं फलम् ।  
 स्थानानि धन्विनां पञ्च तत्र वैशाखमस्त्रियाम् ॥ १८६ ॥  
 त्रिवितस्त्यन्तरौ पादौ मण्डलं तोरणाकृती ।  
 अन्वर्थं स्यात् समपदमालीढं तु ततेऽग्रतः ॥ १८७ ॥  
 दक्षिणे वाममाकुञ्च्य प्रत्यालीढं विपर्यये ।  
 वैहायसञ्च वेधे तु योगावाप उपक्रमः ॥ १८८ ॥  
 हस्तावापः शरादानं प्रमाथो लस्तकग्रहः ।  
 मुष्टयायोजनमादानमिषोर्ज्यायां समूहनम् ॥ १८९ ॥  
 वितानं संहितस्येषोः किञ्चिदेव विकर्षणम् ।  
 निमित्तग्रहणं लक्ष्यग्रहो बुद्धिदृगादिना ॥ १९० ॥



धाकर्णकर्षणं 'पूर्णमायामं त्वङ्गुलाधिकम् ।  
 ततोऽप्यर्धाङ्गुलाकृष्टसन्धानं तेजनं न ना ॥ १६१ ॥  
 मुष्टिमान्धं निर्हरणं व्यवच्छेदस्तु मोक्षणम् ।  
 कैराती गतिरूर्ध्वाऽधःप्रकर्षस्तु गतेर्लयः ॥ १६२ ॥  
 दृढदुष्करचित्राणि कर्माणि हरणानि च ।  
 मुचुटी सिंःकर्णी च पताका चेति मुष्टयः ॥ १६३ ॥  
 लक्षं तु लक्षणं लक्ष्यमभिसन्धानमासिकम् ।  
 वेध्यं शरव्यं न नरि श्रमस्थानं खल्लुरिका ॥ १६४ ॥  
 योगाभ्यासः परिचयो बाणाभ्यास उपासनम् ।  
 शक्त्याद्यन्नं पाणिमुक्तं यन्त्रमुक्तं शरादिकम् ॥ १६५ ॥  
 मुक्तामुक्तं धृतं मुक्तं नागपाशादिदीर्घकम् ।  
 अमुक्तं छुरिकादि स्यादिति शब्दं चतुर्विधम् ॥ १६६ ॥  
 धौते निशातं निशितं क्षणुतं तेजितमर्थवत् ।  
 फलं चर्ममयं चर्म फलकं खेटकं समम् ॥ १६७ ॥  
 अन्तर्लोहेन बद्धान्ते फलान्ते स्याद्वलाहका ।  
 हस्तिकर्णः परोवण्टः फली फलकिकाल्पिका ॥ १६८ ॥  
 कावाटो लघुकाष्ठः स्यात् सयष्टिर्यष्टिवारणः ।  
 कटिका सूत्रसंस्थूता शलाकाः परिमण्डलाः ॥ १६९ ॥  
 अङ्गुलं सैव वेत्रायैः सङ्ग्राहो मुष्टिरेषु या ।  
 लोहाभिसार उद्योने राज्ञां नीराजनाधिधिः ॥ २०० ॥  
 यत्सेनयाऽभिनिर्घाणं पत्युस्तदभिषेजनम् ।  
 आसारस्तु प्रसरणी प्रचक्रं चलितार्थकम् ॥ २०१ ॥  
 धिरतं तु भटोद्योगोऽभिक्रमो यानमभ्यरीन् ।  
 वीरपाणं तु यत्पानं धृत्ते भाविनि वा रणे ॥ २०२ ॥  
 नासीरोऽवग्रयानं स्यादवस्कन्दस्तु सौप्तिकः ।  
 मृधमास्कन्दनं युद्धं समिकं साम्प्रसारिकम् ॥ २०३ ॥  
 आयोधनं रणं सङ्ग्रहं प्रथनं प्रविदारणम् ।  
 सम्प्रहारसमाघातकलिसंस्फोटसंयुगाः ॥ २०४ ॥  
 अभिमर्दाभिसम्पातप्रघाताभ्यागमाहवाः ।  
 समुदायः समुदयः सम्मर्दः सङ्गरः स्पशः ॥ २०५ ॥  
 संग्रामः समरोऽस्त्री स्त्री संयुदायुष युत् समित् ।  
 वीराशंसनमाजेर्भूर्धोरा लोलो महारणम् ॥ २०६ ॥

नियुद्धं बाहुयुद्धं स्यादवमर्दस्तु पीडनम् ।  
 अभ्यवस्कन्दनं त्वभ्यासादनं स्वलितं चलम् ॥ २०७ ॥  
 अविषादो धृतिर्धैर्यमवष्टम्भस्तु सौष्टवम् ।  
 नीराणां यद्रेणे नृत्तं तस्मिन् वीरजयन्तिका ॥ २०८ ॥  
 प्रसमोऽस्त्री बलात्कारो हठश्च विजयो जयः ।  
 प्रतीकारो वैरशुद्धिरपदानं पराक्रमः ॥ २०९ ॥  
 शौर्यं वीर्यमथ स्थाम बलं शुष्म तरः सहः ।  
 नाशस्त्वपक्रमोऽपायो विप्रयाणं पलायनम् ॥ २१० ॥  
 सन्द्रवोद्द्रावसन्द्रावप्रदावद्रवविद्रवाः ।  
 विशस्तु घात उन्मथो विशरः प्रमथो वधः ॥ २११ ॥  
 निर्वासनं निहननं निबर्हणनिषूदने ।  
 निस्तर्हणं निशरणं निकारणनिशुम्भने ॥ २१२ ॥  
 निर्वापणं निरसनं निर्ग्रन्थननिर्हिसने ।  
 प्रमापणं प्रमथनं प्रवासनमपासनम् ॥ २१३ ॥  
 परासनं विशसनं मारणं प्रतिघातनम् ।  
 उद्धासनं प्रशसनं क्षणनं परिवर्जनम् ॥ २१४ ॥  
 उज्जासनं संज्ञापनं काथनं प्रविसारणम् ।  
 व्यापादनं च हिंसा च कदनं सङ्कुलो वधः ॥ २१५ ॥  
 रुण्डोऽशिराः कबन्धोऽस्त्री कुणपस्तु शवोऽस्त्रियाम् ।  
 शवयानं कटः खाटिश्रिता चित्या चितिः स्त्रियाम् ॥ २१६ ॥  
 अरुः क्षतं ना क्षणितुर्ब्रणोऽपीर्मोऽपि न स्त्रियौ ।  
 किणो रूढं ब्रणस्थाने तुमुलं रणसङ्कुलम् ॥ २१७ ॥  
 जितकाशी जितरणः कान्दिशीको भयद्रुतः ।  
 अपराद्धशरोऽसौ स्याद्यस्य लक्ष्याच्छयुतः शरः ॥ २१८ ॥  
 पराजितः पराभूतः प्रणष्टस्त्वगृहीतदिक् ।  
 प्रस्कन्नपतितौ ध्वस्ते मूढे मूर्च्छालमूर्छितौ ॥ २१९ ॥  
 परासुरपसम्पन्नः प्रमीतः संस्थितो मृतः ।  
 जीवो जीवन् किणादूर्ध्वं त्रिषु जीवस्तु जीवितम् ॥ २२० ॥  
 आयुर्जीवितकाले ह्यी जीवातुर्जीवितागदः ॥ २२० ॥  
 इति भगवता यादवप्रकाशेन ।वरवितायां वैजयन्त्या  
 भूमिकाण्डे क्षत्रियाध्यायः ॥ ७ ॥

## वैश्याध्यायः ॥ ८ ॥

अर्यो भूमिस्पृशो वैश्या ऊरव्या ऊरुजा विशः ।  
 आजीवो जीषिका वृत्तिर्वार्ता वर्तनजीवने ॥ १ ॥  
 मृतं क्ली याचितं भैक्षममृतं स्यादयाचितम् ।  
 उञ्छो धान्यश आदानं कणिशावर्जनं सिलम् ॥ २ ॥  
 ऋतं तदुभयं स्त्री तु कृषिः क्ली प्रमृतानृते ।  
 सत्यानृतं तु वाणिज्यं वणिज्या वणिजा स्त्रियौ ॥ ३ ॥  
 पाशुपाल्यं जीववृत्तिः स्यादृणं पर्युदञ्चनम् ।  
 तदवृद्धिकमुद्धारः कुसीदं तु सवृद्धिकम् ॥ ४ ॥  
 वार्धुष्यं वार्धुषं धान्यवृद्धिर्वृद्धिः पुनः कला ।  
 सा कायिकान्वहं देया प्रतिमासं तु कालिका ॥ ५ ॥  
 कारिका तु स्वयं दृष्टा चक्रवृत्तिस्तु वृद्धिजा ।  
 परिवर्तेन निर्वृत्तं वस्तु स्यादापमित्यकम् ॥ ६ ॥  
 सेवा श्ववृत्तिरेताश्च याजनाद्याश्च वृत्तयः ।  
 त्रिष्वालेखात् कुडुम्बी तु क्षेत्राजीवः कृषीवलः ॥ ७ ॥  
 कर्षकोऽथ द्वैगुणिको वृद्ध्याजीवः कुसीदिकः ।  
 वार्धुषी स्याद्वार्धुषिके प्रयोक्त्युत्तमर्णकः ॥ ८ ॥  
 गृहीतर्यधमर्णः स्यादाप्तः प्रत्ययितः समौ ।  
 मध्यस्थः प्राश्निकः साक्षी मूली स्याददुष्टसाक्षिणि ॥ ९ ॥  
 कूटसाक्षी मृषासाक्षी प्रतिभूर्लग्नकोऽन्तरः ।  
 अभियोक्ता शिरोवर्ती शिरस्थोऽथाभियुक्तके ॥ १० ॥  
 सन्दंशितोऽभिशस्तश्च वसुराक्षारिकोऽपि च ।  
 सदेवासत्कृतं सभ्यैस्तिरितं साक्षिणा तु चेत् ॥ ११ ॥  
 अनुशिष्टमथो लेखो लेख्यं दिव्यं तु दैविकम् ।  
 न्यासस्तूपनिधिस्थाप्यनिक्षेपा न्यस्तकोऽस्त्रियाम् ॥ १२ ॥  
 सदस्या देशिकाः स्थेयाः सभास्ताराः सभासदः ।  
 सभ्याः सामाजिकाश्चाथ गोष्ठ्यास्था परिषत् सभा ॥ १३ ॥  
 समञ्या तारणी संसद् घटा स्थानं सदोऽप्यना ।  
 द्रष्टरि व्यवहाराणां प्राङ्वावपाकोऽक्षदर्शकः ॥ १४ ॥  
 न्यायोऽक्षो व्यवहारोऽथ सम्प्रश्नः सम्प्रधारणम् ।  
 समर्थनं च संस्था तु मर्यादा धारणा स्थितिः ॥ १५ ॥

अर्थिनो वचनं भाषा स्यात् प्रत्यर्थिन उत्तरम् ।  
 कारणं त्वभ्यवस्कन्दः प्रत्यवस्कन्द इत्यपि ॥ १६ ॥  
 अवस्कन्दश्च भाषार्थमङ्गीकृत्य विशेषगीः ।  
 केदारः केदरः क्षेत्रमुर्वरा सर्वसस्यभूः ॥ १७ ॥  
 भूमिच्छिद्रं कृष्ययोग्या प्रहतं नालमुत्थितम् ।  
 खिलं त्वप्रहतं स्थानमूषवःयूषरेरिणौ ॥ १८ ॥  
 मौद्गीनकौद्रवीणाद्याः क्षेत्रे मुद्गादिसम्भवे ।  
 यन्यत्रैद्देशालेषष्टिक्याः सयवक्यकाः ॥ १९ ॥  
 यवादेस्तिगतैलीनौ तिलस्योमाणुभङ्गतः ।  
 माषाच्चैवं द्विरूपत्वं शाकाच्छाकिनशाकटौ ॥ २० ॥  
 एवं वास्तुकवार्ताकबालकाशेक्षुमूलकात् ।  
 द्रोणाढकादिवापेषु द्रौणिकाढकिकादयः ॥ २१ ॥  
 खारीवापे तु खारीकं हल्यं सीत्यं च कृष्टके ।  
 तृतीयाकृतं त्रिसीत्यं त्रिहल्यं त्रिगुणाकृतम् ॥ २२ ॥  
 त्रिष्कृष्ट एवं द्विष्कृष्टे शम्बाकृतमिहाधिकम् ।  
 बीजाकृतं तूमकृष्टं प्रहतप्रमुखास्त्रिषु ॥ २३ ॥  
 लोष्टोऽस्त्री दरिणिर्न क्ली लेष्टुर्ना मृत्तु मृत्तिका ।  
 पुरीषं मृत्तिकाचूर्णं मृत्सा मृत्स्ना प्रशस्तमृत् ॥ २४ ॥  
 मरुका त्विष्टकाया विद्वषस्तु क्षारमृत्तिका ।  
 घूलिः स्त्रियां रजः पांसू रेणुः पुंस्यथ कर्दमे ॥ २५ ॥  
 दारिपत्परिपत्पक्वचिकितारच निषद्वरः ।  
 शादावकीलजम्बाला वप्रोऽस्त्री पालिराल्यपि ॥ २६ ॥  
 क्षेत्रमध्ये कृता साल्पा स्थाला स्यादथ लाङ्गलम् ।  
 हलं गोदारणं सीरमीषा सीरादिदण्डकः ॥ २७ ॥  
 निरीषः कृषकः फालः शम्या तु युगकीलकम् ।  
 योक्त्रं तु योत्रमाबन्धः खनित्रमवदारणम् ॥ २८ ॥  
 गोदारणं तु कुन्दालमग्निः स्त्री दणूस्तु तन्मुखे ।  
 प्रतोदः प्राजनं तोत्रं कोटिशो लोष्टमस्त्रनः ॥ २९ ॥  
 दात्रं लवित्रमसिदो योऽस्य मुष्टिः स वण्टकः ।  
 स्यात्समीकरणं मत्त्यं सीता लाङ्गलपद्धतिः ॥ ३० ॥  
 न स्त्री मेथिः खले पाली खलधानं पुनः खलः ।  
 ग्रीहिर्वरेणुको बीव्यो धान्यं सस्यं लवेटिका ॥ ३१ ॥



ब्रीहयः स्तम्बकरयः शालयः श्वेततण्डुलाः ।  
 सुगन्धिको महाशाली रक्तशालिः सलोहितः ॥ ३२ ॥  
 सांवत्सरः कृष्णशालिर्बालकश्चावरोहकः ।  
 श्वेतशालोऽपौरशूरचपलाः करसूकरौ ॥ ३३ ॥  
 षष्टिको गर्भपाकी स्यात् प्रवरः शालियष्टिकः ।  
 कलापकास्तु कलमा हायनास्तु महाबुसाः ॥ ३४ ॥  
 माषस्तु मलदो नन्दी घरी बीजवरो बली ।  
 वृण्यो महावृषो गुच्छा कुलिङ्गाटी फलाङ्कुरा ॥ ३५ ॥  
 मुद्रस्तु प्रथनो लोभ्यो बलाङ्गो हरितो हरिः ।  
 पीतेऽस्मिन् वसुखण्डीरप्रवेलजयशारदाः ॥ ३६ ॥  
 सुराष्ट्रचीनचक्षुष्या हरिमन्थार्धरूपकौ ।  
 कृष्णे प्रवरवासन्तौ हरिमन्थजशिम्बिकौ ॥ ३७ ॥  
 वनमुद्रे तु वरकनिगूढककुलीमकाः ।  
 खण्डी च राजमुद्रो तु मरिष्टकमयष्टकौ ॥ ३८ ॥  
 जर्तिलोऽरण्यजतिलो जालकश्चूलिकस्तिलः ।  
 कृष्णेऽस्मिन्स्तिलके ( षण्डे ) पिच्छपेजौ तिलात्परौ ॥ ३९ ॥  
 तिलपुष्पं वज्रपुष्पं मसुरस्तु मसूरकः ।  
 मङ्गल्यं पृथुसूप्यश्च ब्रीहिकङ्को मसूरिका ॥ ४० ॥  
 कदम्बकस्तु शुभकः सर्षपोऽस्मिन् पुनः सिते ।  
 त्रिष्टुभभ्रातरक्षोन्नाः शठः सिद्धार्थतोदकौ ॥ ४१ ॥  
 पत्तिका त्रिष्टुभा चास्मिन् गौरेऽथो राजसर्षपे ।  
 क्षुधा क्षुधाभिजननस्त्वाष्ट्रको राजिकासुरी ॥ ४२ ॥  
 वंशवर्णे कृष्णवर्णः संवर्तो वातुलश्चणः ।  
 कलायः स्यात् कालपूरः खण्डिकः कालपूरकः ॥ ४३ ॥  
 पूरकोऽप्योलहा जाड्यो वर्तुलेऽत्र सतीनकः ।  
 खुडारे त्रिपुटः खेलौ रङ्गुटी तु हरेणुकः ॥ ४४ ॥  
 स्नेहपूरे तु फलकः कर्षायौ पाकचूडकौ ।  
 सुवर्चलामसृण्यौ च क्षुमा चोमाऽप्यतस्यपि ॥ ४५ ॥  
 खल्वे तु पवनिष्पावौ शिम्बिकाऽस्य प्रियैलिका ।  
 अलसान्द्रे राजमाषो निष्पावः श्वेतशिम्बिका ॥ ४६ ॥  
 काकाण्डः स्याच्चोदनिका कृष्णशिम्बिर्विचक्षणा ।  
 कृष्णवृन्ते खलकुलं ताम्रवृन्तः कुलस्थकः ॥ ४७ ॥

प्रचूडकः कफहरी प्रवृत्तिश्च कुलुत्थिका ।  
 आढकी तुवरी बल्ला सौराष्ट्री करवीरिका ॥ ४८ ॥  
 पतङ्गना च पृथ्वी सा वर्णा स्यात् पाटलिङ्गिका ।  
 छत्रा कुस्तुम्बरी धान्या धन्या धाना धनीयिका ॥ ४९ ॥  
 कुमारी मुसली वंश्या गुडूची कटुकैषणा ।  
 सुचरित्रा च धन्याकधन्येयकतकानि च ॥ ५० ॥  
 कुस्तुम्बुरु च धान्यं च भृङ्गा स्यान्मातुलानिका ।  
 यवे रूढो दीर्घशूकः शितशूकः महाबुसः ॥ ५१ ॥  
 आरूढश्च पवित्रश्च याज्ञिकोऽश्वप्रियोऽपि च ।  
 महायवे प्ररूढोऽल्पे वनाशोऽतियवोऽपि च ॥ ५२ ॥  
 यावके बलकुल्माषौ यवके तोयपर्णिका ।  
 गोधूमस्तु म्लेच्छभोज्यः सुमनः श्लेष्मलो गुरुः ॥ ५३ ॥  
 शतपर्वा बहुवक्रः कोद्रवे कोरदूषकः ।  
 बालनाटकाट्यालौ वरकः कूरदूषकः ॥ ५४ ॥  
 विरूक्षकोद्रबोभालमदनाः वनकोद्रवे ।  
 चिककाणकङ्गुनी कङ्गुः प्रियङ्गुः पीततण्डुला ॥ ५५ ॥  
 शीतकङ्गुस्तु मुसुटी पीतकङ्गुस्तु मागवी ।  
 श्यामकङ्गुस्तु मधुका यवनालस्तु जोनलः ॥ ५६ ॥  
 जूर्णाह्वयो देवधान्यं जोन्नाला बीजपुष्पिका ।  
 नीवारस्तु वृषावाहः प्रतीचो मुनिसोवतः ॥ ५७ ॥  
 अव्यादा लोलिका सेव्या जलजा तृणधान्यकम् ।  
 श्यामाको नीलपुष्पः स्यात् स्मयाकश्च मुनिप्रियः ॥ ५८ ॥  
 स्त्री काककङ्गुश्रीनः स्यात् तृणकोलोऽप्युदारकः ।  
 गर्भुत् पुनर्गर्भुटिका घुलुञ्छस्तु गवीधुका ॥ ५९ ॥  
 व्योतिष्मती मुलवणा गोजिह्वा भक्षिणी शिवा ।  
 गुन्द्रा कुत्रफला गुच्छ्रा क्षेत्रिया बालनायिका ॥ ६० ॥  
 रूक्षणीया जन्तुफला गवेशुश्च गवेशुका ।  
 गाङ्गेरुकी नागबला रुषा ह्रस्वगवेशुका ॥ ६१ ॥  
 गोरक्षतण्डुलश्चाथ शाको मर्कटकः समौ ।  
 माषादयः शमीधान्ये शूकधान्ये यवादयः ॥ ६२ ॥  
 कोद्रवाद्याः कुधान्यानि ब्रीहयः शालिकादयः ।  
 स्तम्बे गुचक्षुपौ काण्डे नाली त्रय्यफला तु सा ॥ ६३ ॥

पलालोऽस्त्री कर्णिका स्त्री पुलोऽस्त्री वृणपञ्चिका ।  
 कडङ्गरो बुसोऽथ स्यात् कणिशं धान्यमञ्जरी ॥ ६४ ॥  
 पीनकोशी शमी शिम्बा तीक्ष्णाग्रे शूकमस्त्रियाम् ।  
 धान्यराशिस्तु बलजा वरण्डस्तृणसञ्चयः ॥ ६५ ॥  
 गृहार्थोऽसौ कपोलः स्त्री विक्षिप्तः खस्तरो ह्यसौ ।  
 समौ प्रयामनीवाकौ क्रपुकात्प्राक् परे त्रिषु ॥ ६६ ॥  
 ऋद्धमावसितं धान्य पूतं तु बहुलीकृतम् ।  
 खलपूः स्याद्बहुकरश्छादिपेयं छदिस्तृणम् ॥ ६७ ॥  
 कायिकः क्रयिकः क्रेता विपूर्वाः क्रेयवस्तुदे ।  
 क्रये प्रसारितं क्रय्यं क्रेयं क्रेतव्यमात्रकम् ॥ ६८ ॥  
 विक्रेयं पणितव्यं च पण्येऽथ क्रपुकः क्रयः ।  
 भेटकः प्रक्रयः क्रेणी विक्रयो विपणः पणः ॥ ६९ ॥  
 वस्नोऽर्घोऽवक्रयो मूल्यं बन्धः प्रणय आधिकः ।  
 नीवी परिपणं मूलं धनं लाभोऽधिकं फलम् ॥ ७० ॥  
 परिवर्तो विनिमयो वैमेयो निमयोऽपि च ।  
 सत्यङ्कारः पुनः सत्याकृतिः सत्यापनं च तत् ॥ ७१ ॥  
 पण्याजीवः सार्थवाहो नैगमो वाणिजो वणिक् ।  
 वैदेहकः प्रापणिकः क्रयविक्रयिकोऽपि च ॥ ७२ ॥  
 वितपोऽर्थः स्वापतेयं रिक्थं पृक्थं धनं वसु ।  
 वित्तं च द्रविणं द्युम्नं हेमरूप्यात्मकं तु तत् ॥ ७३ ॥  
 अकुप्यं कुप्यमन्यत् स्याद्रूप्यं तद्द्वयमाहृतम् ।  
 कोशमस्त्री हिरण्यं च हेमरूप्यं कृताकृतम् ॥ ७४ ॥  
 ओषध्यो जातिमात्रे स्युरजातौ सर्वमौषधम् ।  
 स्त्री शुण्ठिरूषणं विश्वभेषजं सिंहलं कटम् ॥ ७५ ॥  
 शृङ्गिवेरं महाकन्दं हंसच्छत्रं कलापकम् ।  
 पिप्पली मागधी शौण्डी वृषलं चोषणा बला ॥ ७६ ॥  
 श्यामोपकुल्या वैदेही प्रन्थिनी तीक्ष्णतण्डुला ।  
 जालिनी तण्डुला तन्वी काल्यम्बष्ठा मनोहरी ॥ ७७ ॥  
 कपिवल्त्यां कोलवल्ली गण्डीरी हस्तिपिप्पली ।  
 काण्डी वसीरकाण्डीरौ गृहकाण्डः शिरः पुमान् ॥ ७८ ॥  
 मरीचं तु विरावृत्तमुषणं धर्मपत्तनम् ।  
 ( मरिचं ) पलितं श्यामं वेङ्गनं पेन्नकं कटु ॥ ७९ ॥

लोहाख्यं श्यामवल्ली च अयूपणं (तूषणादिकम्) ।  
 कावेरं त्रिकटु व्योषमप्यं कोलं कटूत्कटम् ॥ ८० ॥  
 ग्रन्थिकानलचव्यैस्तु चतुष्पञ्चषड्वषणम् ।  
 चव्यं तु चविकं कोला भार्गी पद्मा च विष्टिका ॥ ८१ ॥  
 त्रिफला तु मदोदका भूतसारी फलत्रिका ।  
 बलकाली बलारोहा चित्रकस्त्वग्निसंज्ञकः ॥ ८२ ॥  
 पञ्चकोलं कणाशुण्ठीचव्यग्रन्थिकचित्रकाः ।  
 अजाजी तु जया दीप्यो जीरको जीरणः सितः ॥ ८३ ॥  
 मागधश्चाथ सूक्ष्मोऽसौ कणजीरण ओसरः ।  
 अग्निसन्धो हृद्यगन्धः सुगन्धिः कालिका कणा ॥ ८४ ॥  
 कृष्णे तु जीरके पृथ्वी पृथुः कालोपकुञ्चिका ।  
 सुषवी कारवी फारी पृथ्विका पृथुशालिका ॥ ८५ ॥  
 कटुः कटुम्भराऽशोका रोहिणी कटुरोहिणी ।  
 कृष्णभेदी मत्स्यपित्ता चक्राङ्गी शकुलादनी ॥ ८६ ॥  
 निष्कुट्यां चन्द्रबालैला पृथ्वीका त्रिदिवाऽत्र तु ।  
 सूक्ष्मायां त्रिपुटा कुन्तिखुटिस्तुत्थोपकुञ्चिका ॥ ८७ ॥  
 कोराङ्गी नन्दिनी शाला कलुषी संयतोऽपि च ।  
 काश्मीरं पौष्करे मूले पद्मपत्रं च पुष्करम् ॥ ८८ ॥  
 अव्यथाऽतिचरा पद्मा चारटी पद्मचारिणी ।  
 जन्या जतूका रजनी जतुकृष्णकवर्तिनी ॥ ८९ ॥  
 शृङ्गी विषा प्रतिविषाऽतिविषोपविषाऽरुणा ।  
 शिशुत्रं श्वेतमरिचं त्वक्क्षीरा वंशरोचना ॥ ९० ॥  
 पद्मोत्तरं वह्निशिखं महारजतमित्यपि ।  
 कुसुम्भे पिप्पलीमूले ग्रन्थिकं चटिका शिरः ॥ ९१ ॥  
 वर्हिपुष्पे ग्रन्थिपर्णं स्थौणेयं कुक्कुरं शुक्रम् ।  
 शतपर्व च मित्रञ्च कमलञ्च शिलञ्च तत् ॥ ९२ ॥  
 समृद्धिः प्राणदा सिद्धिर्लक्ष्मीः सर्वजनप्रिया ।  
 ऋश्यप्रोक्ता श्रोत्रकान्ता श्रावणी हस्तिपादिका ॥ ९३ ॥  
 ऋषिः सृष्टा वृषा वृष्या हृद्या योव्या युगाह्वया ।  
 अथ वृद्धिर्बोधनीया महाश्रावणिका बुधा ॥ ९४ ॥  
 हरेणू रेणुका कौन्ती कपिला भस्मगन्धिनी ।  
 पलावालुकमैलेयं सुगन्धि हरिवालुकम् ॥ ९५ ॥



बालुकं चाथ शैलेयं वृद्धं गिरिशिलाह्वयम् ।  
 कालानुसार्य पाषाणपुष्पं शितशिवं शिवम् ॥ १६ ॥  
 क्रिमिघ्नस्तुण्डुलो वेङ्गममोघा चित्रतण्डुला ।  
 विडङ्गोऽस्त्री सुगन्धा तु सुरसा गन्धनाकुला ॥ १७ ॥  
 नाकुली सुवहा राक्षा छत्राकी सर्वलोचना ।  
 गन्धिनी स्यात्तालपर्णी दैत्या गन्धकुटी सुरम् ॥ १८ ॥  
 कुष्ठं वाप्यं पारिभायं रोगाख्यं पाकलोत्पले ।  
 व्यालायुधं व्याघ्रनखं करञ्जं चक्रकारकम् ॥ १९ ॥  
 सुषिरा विद्रुमलता कपोताङ्घ्रिर्नटी नली ।  
 जटिला लोमशी मांसी तपस्विन्यामिषी जटा ॥ १०० ॥  
 धमन्यस्त्रनकेश्यौ तु हनुर्हृद्विलासिनी ।  
 अपि शुक्तिः खुरः शङ्खो नखं फालदलं समाः ॥ १०१ ॥  
 अजमोदा तूष्पगन्धा ब्रह्मदर्भा यवानिका ।  
 कारवी च खराश्रोष्ट्रा दीप्यका लोचमस्तकः ॥ १०२ ॥  
 मधुनं क्लीतकं यष्टिमधुका मधुयष्टिका ।  
 लवङ्गं देवकुसुमं श्रीसंज्ञं च बरालकम् ॥ १०३ ॥  
 त्वक्पत्रं तु त्वचं चोचं वराङ्गं शृङ्गमुत्कटम् ।  
 मृगनाभिर्मृगमदो नगः कस्तूरिकाऽपि च ॥ १०४ ॥  
 घनसारस्तु कर्पूरः सिताङ्गो हिमबालुका ।  
 चन्द्रनामानि चाथ स्यात् तक्षोलं कोलकं परम् ॥ १०५ ॥  
 अपि कोशफलं फालं कार्पासकृतमालकौ ।  
 जातीकोशं कोशफलमथागर नृपार्हकम् ॥ १०६ ॥  
 लोहाख्यं कृमिजं शृङ्गं जोङ्गकं जाङ्गलं मतम् ।  
 वंशकं वंशिकं शीर्षं प्रकरं मृदुलं लघु ॥ १०७ ॥  
 वनमायः पुरमदः काकतुण्डो वनद्रुमः ।  
 कालागरु तु मङ्गल्या मल्लिकासमगन्धि चेत् ॥ १०८ ॥  
 श्रीवेष्टः पायसं अथाख्यं श्रीवासो रक्तशीर्षकः ।  
 वेष्टः श्रीवत्सपिण्याको दधिश्च सरलद्रवे ॥ १०९ ॥  
 वृकधूपश्च तूणस्तु पिण्डकश्चपलश्चलः ।  
 कप्याख्यः कपिलः सिंहः कृत्रिमः क्षेत्रिको वरः ॥ ११० ॥  
 तुरुष्कः पावनश्चाथ सर्ज्जनो लालनो रसः ।  
 बहुरूपो यक्षधूपोऽप्यरालोऽप्यथ कृत्रिमे ॥ १११ ॥

वृकधूपोऽङ्गुलालस्तु महिषाक्षः पलङ्कषः ।  
 चन्दनोऽस्त्री मलयजो भद्रश्री रोहणद्रुमः ॥ ११२ ॥  
 श्रीखण्डो गन्धसारश्च ताम्रसारं तु चन्दनम् ।  
 पीतचन्दनमर्कष्टं गोशीर्षं हरिचन्दनम् ॥ ११३ ॥  
 किरातजं बला हार्या पिञ्जनं तैलपर्णिकम् ।  
 तथा कुचन्दनं पीतदारु रक्ते तु चन्दने ॥ ११४ ॥  
 पत्राङ्गं रञ्जनं सेव्यं धूर्तमैरावतं लसम् ।  
 कुचन्दनं जघन्यञ्च रक्तं च तिलपर्ण्यपि ॥ ११५ ॥  
 कुङ्कुमं घुसृणं वर्ण्यं रक्तं लोहितचन्दनम् ।  
 करटं चित्तकावेरं गौरवं वासनीयकम् ॥ ११६ ॥  
 काश्मीरजं पुष्परजः सङ्कोचं पीतनं वरम् ।  
 घोरं चाग्निशिखं चापि जपापुष्पं प्रियङ्गु च ॥ ११७ ॥  
 नागोद्भवं तु सिन्दूरं कुङ्कुमेन समप्रभम् ।  
 गवलं माहिषं शृङ्गं शशोर्णं शशलोमनि ॥ ११८ ॥  
 अन्धिजे लवणे खण्डं त्रिकूटं त्रिकुटं कुटम् ।  
 भोजनीयं कटकटमणु प्रवरवारिजे ॥ ११९ ॥  
 अक्षीवं बिसिरं सेव्यं सैन्धवं तु नदीभवम् ।  
 माणिमन्थं शितशिवं नादेयं वेधकं पटु ॥ १२० ॥  
 विशुन्थलवणं सङ्गं सिन्धि सिन्दूद्भवं मुखम् ।  
 सम्भरी पुनरेतद्ब्रौमकं तु रुमाभवम् ॥ १२१ ॥  
 वस्नं चाथो भूलवणं कनिष्ठं पाक्यमुद्भिदम् ।  
 क्षुद्रकं पांसुलवणं कुप्यं पानीयसम्भवम् ॥ १२२ ॥  
 ऊषमूषरजं क्षेप्यं पांशुजं यवनं पटु ।  
 शूलिका तु महाजाली वेष्टावारं महाविडम् ॥ १२३ ॥  
 विडं तु पाक्यं बहुलं कृत्रिमद्राविणासुराः ।  
 घटिकालवणं तृणं विडवद्धनकालकम् ॥ १२४ ॥  
 सौवर्चलं तु रुचकं दुर्गन्धं शूलनाशकम् ।  
 अक्षं तार्क्ष्यं रुचिष्यं च तिलकं त्वत्र कृष्णके ॥ १२५ ॥  
 सौवर्चलं द्रवस्तु स्याज्जारणं लोहितोऽब्धियाम् ।  
 दशेत्थं लवणानि स्युरथोपलवणास्त्रयः ॥ १२६ ॥  
 तत्र क्षारो यवक्षारो निपीती कासनुद्वरः ।  
 श्वेतक्षारस्तीक्ष्णरसो विपाकी च स तु द्विधा ॥ १२७ ॥

यवाप्रजो यावशूकस्तत्रान्त्यो बहुसारकः ।  
 रसाढ्यो रसको योगी पत्रकः पत्रसारकः ॥ १२८ ॥  
 वीज्योऽसुवर्चिका क्षारः कापोतः सुखवर्चकः ।  
 स्नुघ्निका स्वर्जिका स्वर्जियोगवाही सुवर्चिका ॥ १२९ ॥  
 टङ्कणस्तु क्रामणको लोहसंश्लेषकः कटुः ।  
 रसयोनिः पावनको मालतीतीरसम्भवः ॥ १३० ॥  
 परशुः शस्त्रकण्टकः शस्त्रक्षारो महाबलः ।  
 सहस्रवेधि बाह्लीकं जतुकं हिङ्गु रामठम् ॥ १३१ ॥  
 पत्रेऽस्य करवी बाष्पी पृथ्विका कारवी पृथुः ।  
 तिनृणीके तु वृक्षाम्लं चुक्रं शुक्ती रुचिः स्त्रियाम् ॥ १३२ ॥  
 सहस्रवेधी चुक्रोऽम्लवेतसः शतवेध्यपि ।  
 गूथः क्षारस्य विकृतौ मत्स्यण्डी खण्डशर्करा ॥ १३३ ॥  
 फाणितं क्षुद्रकं खण्डं न खचथो शर्करा सिता ।  
 मधूलं तु मधुर्न खी मधुकं तत्पुरातनम् ॥ १३४ ॥  
 भ्रामरं तु भ्रमरकं क्षौद्रं सारघमाक्षिके ।  
 अन्वर्थं पौत्तिकं दालं ददुजं रुक्षवालुकम् ॥ १३५ ॥  
 औदालकं तु शालाकं विषजिन्मधुराम्लकम् ।  
 छात्रं सर्वौघमत्यर्थस्वाद्विमा मधुजातयः ॥ १३६ ॥  
 मदनस्तु मधूच्छिष्टं स्नेहोऽखी पिच्छिले रसे ।  
 स्नेहे तिलानां तैलं स्यादन्येषां नामपूर्वकम् ॥ १३७ ॥  
 घृतमाज्यं हविः सर्पिः कौम्भं त्वान्यं दशाब्दिकम् ।  
 हैयङ्गवीनं पीथं च नवनीतं तु तक्रजम् ॥ १३८ ॥  
 दधि विप्रप्रियं हृद्यं क्षीरजं श्रीघनं गुरु ।  
 स्थूलं श्वेतं च मङ्गल्यं कद्वारः शण्डगोरसौ ॥ १३९ ॥  
 सब्जावने तूपमात्रे प्राक्मन्दात् सर्जकं दधि ।  
 मन्दन्तु मण्डजातं तद् बालजातं तु बालकम् ॥ १४० ॥  
 अम्लजुण्डी तु गर्भात् प्रागर्भस्तु मुखबन्धनम् ।  
 वलीमुखं तु गाढास्यं तत्स्थं तु सशरं दधि ॥ १४१ ॥  
 छिन्नं दधि बुसं रुक्षं खलं सेव्यं च निशारे ।  
 बहुसूदनमप्यस्मिन् द्रप्सं स्यादघनं दधि ॥ १४२ ॥  
 पत्रलं चाथ पकं स्यात् सब्जातं पयसः शृतात् ।  
 धुक्षिमं तूदघृतस्नेहान्मथितान्तु प्रमाथितम् ॥ १४३ ॥

तक्रपिण्डं चाथ मस्तु प्राग्राढं दधिमण्डके ।  
 आतञ्चनं सञ्जावनं प्रतीषापञ्च मूतकम् ॥ १४४ ॥  
 पयो दुग्धं च पीथं च स्तन्यं पुंसवनं सरम् ।  
 गव्यं व्येषं मधु क्षीरं योग्यं सोमरसोद्भवम् ॥ १४५ ॥  
 ऊधस्यं जीवनीयं च धारोष्णं त्वमृतं पयः ।  
 आसप्ताहान्तु पीयूषं ततो मोरटमोरके ॥ १४६ ॥  
 अविसोढाविमरीसे अविदूसमवेः पयः ।  
 सन्तानिनी क्षीरशरः शरोम्रद्रवसंहतिः ॥ १४७ ॥  
 तिलाटः कूर्चिका चेति क्षीरस्य विकृती उभे ।  
 घोलं तूष्णं कालशेयं दण्डाहतरसायने ॥ १४८ ॥  
 मोरटं गोरसश्चाथ घोलः पादाम्बुसंयुते ।  
 तक्रं कट्वरमशोढं श्वेतच्छाणं च सारणम् ॥ १४९ ॥  
 निरम्बुः घोलं मथितमुदश्वित्तु जलार्धकम् ॥ १५० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

भूमिकाण्डे वैश्याध्यायः ॥ ८ ॥



## शुद्धाध्यायः ॥ ९ ॥

शुद्धोऽन्त्यवर्णो वृषलो द्विजपोतो जघन्यजः ।  
 पञ्जः पद्योऽप्येकजातः शुद्धाः सङ्करजा अपि ॥ १ ॥  
 दासे भृत्यः परिस्कन्दः परजातः परैधितः ।  
 नियोज्यचेटकप्रेष्यभुजिष्यपरिचारकाः ॥ २ ॥  
 लाडीककिङ्करप्रेङ्गपाळकपरिकर्मिणः ।  
 सञ्चारिते धीकरश्च गोप्याः स्युर्दाससूनवः ॥ ३ ॥  
 बन्धके स्थित आयत्तो भक्त्यायैव स्थितः कृतः ।  
 स्वस्कन्दो भिन्नकुम्भश्च भुजिष्यो दासमोचितः ॥ ४ ॥  
 भृतके भृतिभुक्कर्मकरो वैतनिकस्त्रिषु ।  
 भरण्यं भरणं भर्म वेतनं निष्क्रयो भृतिः ॥ ५ ॥  
 कर्मण्या तुलिका भृत्या भारवाहस्तु भारिकः ।  
 वार्त्ताहरो वैवधिको भारयष्टिर्विहङ्गिका ॥ ६ ॥  
 शिष्यं तल्लम्बि काचश्च पाथेयं शम्बलोऽस्त्रियाम् ।  
 कारवः शिल्पिनः सर्वे कुलिकास्ते कुलोत्तमाः ॥ ७ ॥  
 कला शिल्पं च कर्मथ तन्तुवायः कुविन्दकः ।  
 वाणिर्व्यूतिश्च वानं स्याद् वेमा ना वानदण्डकः ॥ ८ ॥  
 तर्कुः कर्तनभाण्डे ना त्रसरः सूत्रवेष्टनः ।  
 घराः कार्पासतूलाः स्युस्तूलमन्त्री पिचुः पुमान् ॥ ९ ॥  
 पिञ्जनं स्याद्विहननं घराणां प्रविसारणम् ।  
 कल्पनं कर्तनं तुल्ये त्रिवृतं तु त्रिवित् त्रिषु ॥ १० ॥  
 आवर्तनं तु बलनं सूत्राणि नरि तन्तवः ।  
 सौचिकस्तुन्नवायः स्यात् सूचिः सूचा च सीवनी ॥ ११ ॥  
 सूचिसूत्रं पिप्पलकमोतं प्रोतमुभे त्रिषु ।  
 सीवनं सेवनं स्यूती रङ्गाजीवस्तु चित्रकृत् ॥ १२ ॥  
 लेखनी तुलिका कूर्ची पुस्तं लेप्यादिकर्मणि ।  
 या तु लेप्यमयी नारी सा स्यादञ्जलिकारिका ॥ १३ ॥  
 पाञ्चालिका तु वस्त्रादिपुत्रिका सालभक्षिका ।  
 पलगण्डो लेपकारः कल्पाणिः समलेपनी ॥ १४ ॥  
 संवाहकोऽङ्गमर्दी स्याच्छस्त्रमार्जोऽसिधावकः ।  
 मणिकारो वैचटिकः शौल्बिकस्ताम्रकुहकः ॥ १५ ॥

नाडिन्धमः स्वर्णकारः कलादो 'मौष्टिकः' समाः ।  
 कर्मारः स्यादयस्कारो व्योकारो लोहकारकः ॥ १६ ॥  
 शाङ्खिकः स्यात् काम्बविको भस्त्रा चर्मप्रसेविका ।  
 सन्दंशः स्यात् कङ्कमुखः काणा मूका बुषा स्मृता ॥ १७ ॥  
 विध्यते येन मण्यादिराविधोऽसौ निघोऽपि च ।  
 आस्फोटनी वेधनिका भ्रमः कुन्दश्च यन्त्रकम् ॥ १८ ॥  
 नाराची स्यादेषणिका शाणस्तु निकषः कषः ।  
 रोषाणस्तु घृषिर्घृष्वो हेमादिनिकषाश्मनि ॥ १९ ॥  
 यत्र निक्षिप्य कूटेन हन्यते सा निधानिका ।  
 प्रतिच्छाया प्रतिकृतिः प्रतिमा प्रतियातना ॥ २० ॥  
 प्रतिच्छन्दः प्रतिनिधिर्बेरं च प्रतिरूपकम् ।  
 प्रतिबिम्बोपमाने च सादृश्ये सन्निभं निभम् ॥ २१ ॥  
 हरिणी हेमप्रतिमा सूर्मिः स्थूणान्यलोहजा ।  
 कूटोऽश्मकुट्टकोऽथ स्यादृक्कः पाषाणदारकः ॥ २२ ॥  
 कायस्थः स्याल्लिपिकरः करणोऽक्षरजीवनः ।  
 लेखकोऽक्षरचञ्चुश्च लिबिलेखाक्षरस्य या ॥ २३ ॥  
 लिपिस्त्वालेख्यलेखा स्याद्रेखा तु स्यादकृत्रिमा ।  
 वर्णान्तरस्य सर्पादौ लाजिलेखा तु कृत्रिमा ॥ २४ ॥  
 मेलामन्दो मषिघटी मेलाम्बु मलिनाम्बु च ।  
 मेला (मणिर्न षण् तस्या लेखन्या) कणिकोद्घृता ॥ २५ ॥  
 चण्डिलः क्षुरमर्दी स्यान्नापितोऽन्तावसाय्यपि ।  
 क्षुरोऽस्य वपनं शस्त्रं कत्रिका कर्तनी कृवी ॥ २६ ॥  
 कुम्भकारः कुलालोऽस्य पचनं पाकमण्डलम् ।  
 घूसरश्चाक्रिकस्तैली पिण्याको ना खलिः स्त्रियाम् ॥ २७ ॥  
 धामीरस्तु मशशूद्रो गोपो गोसङ्ग्रहगोदुहौ ।  
 गोपालो बल्लवश्चाथ वत्सीयस्त्रिषु तद्धिते ॥ २८ ॥  
 जाबालः स्यादजाजीवः कोणोऽक्ली लगुडो नरि ।  
 सन्दानं दामनी दामा न ना दाम पशोस्तु या ॥ २९ ॥  
 रज्जुः सा बन्धनी तन्त्री त्वल्पा पाशस्तु कर्णिका ।  
 गुणो वराटो रज्जुः स्त्री न ना शुल्बा वटी व्रयी ॥ ३० ॥  
 ग्रन्थिर्बन्धो व्रजो गोष्ठो गौष्ठीनं तु पुरा व्रजः ।  
 मन्थस्तु मन्था मन्थानो वैशाखः खजकोऽपि च ॥ ३१ ॥

कुठारो मन्थविष्कम्भो मन्थपात्रं तु गर्गरी ।  
 घोष आमीरपल्ली स्यात् पक्वणोऽस्त्रयन्त्यजालयः ॥ ३२ ॥  
 मालाकारो माल्यजीवी मालिकः प्रातिहारकः ।  
 ऊर्णा स्नावः कदल्यादेः करण्डी तु पुटी त्रयी ॥ ३३ ॥  
 तक्षा तु वर्धकिस्त्वष्टा रयकारश्च काष्ठतट् ।  
 ग्रामाधीनो ग्रामतक्षः कौटतक्षोऽनधीनकः ॥ ३४ ॥  
 स उद्धनो यत्र काष्ठे काष्ठं निक्षिप्य तद्यते ।  
 व्रश्चनः पत्रपरशुः परशुस्तु परश्वधः ॥ ३५ ॥  
 स्वधितिर्ना कुठारोऽक्ली वासी स्याद्धारुतक्षणी ।  
 क्रकचोऽस्त्री करपत्रं स्वधितिः कर्तनः समौ ॥ ३६ ॥  
 जीवान्तको मांसिकश्च कौटिको मांसविक्रयी ।  
 सूनातटिर्वधस्यानं कृपाणीली च कर्तरी ॥ ३७ ॥  
 मृगयुर्लुब्धको व्याघ्रो द्वौ वागुरिकजालिकौ ।  
 आच्छोटनं खेटनञ्च मृगव्यं मृगयाऽपि च ॥ ३८ ॥  
 आखेटश्च वराधिश्च वागुरा मृगबन्धिनी ।  
 श्वा विन्धकद्वुर्गयादक्षोऽलर्कस्तु योगितः ॥ ३९ ॥  
 दक्षिणेर्मा तु स मृगो यो लुब्धवैर्दक्षिणे हतः ।  
 वैतंसिकः शाकुनिक उन्माथः कूटयन्त्रकम् ॥ ४० ॥  
 शल्यमस्त्री शलाका स्याद् वितंसः पक्षिबन्धनम् ।  
 पक्षिणा येन गृह्यन्ते पक्षिणोऽन्ये स दीपकः ॥ ४१ ॥  
 कैवर्तो धीवरो दाशो नौजीवी जालिमार्गरौ ।  
 मत्स्यधानी कुवेणी स्याद् बलिशं मत्स्यवेधनम् ॥ ४२ ॥  
 जालमानाय उद्दालस्तुभतो मुकुलाकृतिः ।  
 पादूकुर्बर्मकारः स्यादारा चर्मप्रमेदनी ॥ ४३ ॥  
 वद्धर्धी नद्धी वरत्रा च शौण्डिकस्त्वासुतीवलः ।  
 कल्यापालो ध्वजी चाथ मयं स्यात् कपिशायनम् ॥ ४४ ॥  
 शीघ्रु कश्यमिरा कल्या शुण्डा देवी परिश्रुता ।  
 परिश्रुन्माधवी हाला प्रसन्ना मदिरा सुरा ॥ ४५ ॥  
 मदना मोहकलिका मदिष्ठा काचमालिका ।  
 कादम्बरी वारुणी च मधूलैस्तु मधूलिका ॥ ४६ ॥  
 पक्वैस्त्रिभक्षुरसैरक्षो शीघ्रुः पङ्कुरसः शिवः ।  
 शीतपङ्को रुक्षणीयोऽप्यपक्वै रसिकासवौ ॥ ४७ ॥

मधुमद्ये तु माध्वीकं कामिकान्तं मदोत्कटम् ।  
 विक्रान्तं कपिशं हृद्यं मुखवासः सुखोदयः ॥ ४८ ॥  
 मध्वासवोऽसितः सेव्यः शार्करो माधवोऽस्त्रियाम् ।  
 मैरेयमासवो धात्रीधातकीगुडवारिमिः ॥ ४९ ॥  
 काकोली पैष्टिकी श्वेताऽप्यापानं पानगोष्ठिका ।  
 नग्नहूर्ना मद्यबीजं किण्वमप्यथ मेदकः ॥ ५० ॥  
 जगलोऽथ सनिस्सारो मर्कसो मासरोऽपि च ।  
 आसूतिर्मद्यसन्धानमासवोऽभिषवोऽपि च ॥ ५१ ॥  
 कारोत्तरः सुरामण्ड आसवोऽप्यथ भक्षणम् ।  
 षपदंशोऽपदंशश्च मधुवारा मधुक्रमाः ॥ ५२ ॥  
 शुण्डापानं मदस्थानं सपीतिः सहपानकम् ।  
 सरकं चषकं चास्त्री गत्वर्तोऽप्यनुकर्षणम् ॥ ५३ ॥  
 पानगोष्ठीषु यन्नृत्तं तत्र स्यादुच्चतालकम् ।  
 प्लवचाण्डालचण्डालमातङ्गास्तु जनङ्गमे ॥ ५४ ॥  
 विष्टिर्ना कारितं कर्म हठाद्येऽपि च तत्कृतः ।  
 अथैकागारिकश्चोरः परिमोषी मलिम्लुचः ॥ ५५ ॥  
 प्रतिरोधी परास्कन्दी तस्करः प्रतिरोधकः ।  
 स्तेनो रात्रिचरो दस्युर्मोषकः पारिपन्थिकः ॥ ५६ ॥  
 पश्यतो यो हरत्यर्थं स चोरः पश्यतोहरः ।  
 पटच्चरः पटच्चरो वन्दी स्त्री प्रग्रहो ग्रहः ॥ ५७ ॥  
 लोप्वं हृतोऽर्थश्चौर्यं तु स्तेयं स्तेन्यं च चौरिका ।  
 धूर्तोऽक्षधूर्तः कितवो द्यूतकृत् कृष्णकोहलः ॥ ५८ ॥  
 चौरिकश्चाक्षजीवी च सभिका द्यूतकारकाः ।  
 द्यूतोऽस्त्रियामक्षवती तद्भेदाः पञ्चिकादयः ॥ ५९ ॥  
 समाधिश्च समङ्गश्च परिवी रञ्जनं च तत् ।  
 पणो ग्लहो देवनस्तु पाशकोऽक्षोऽथ शारयः ॥ ६० ॥  
 शाराः स्युः परिणायस्तु तेषां सञ्चारणेऽभितः ।  
 अक्षपाता अयास्ते तु चतुस्त्रिव्येकयोगिनः ॥ ६१ ॥  
 कृतं त्रेता द्वापरं च कलिश्चेति यथाक्रमम् ।  
 जायाजीवस्तु शैल्यः शैलाली भरतो नटः ॥ ६२ ॥  
 रङ्गाजीवो नृतुर्नग्नो नण्डो रङ्गावतार्यपि ।  
 सर्वकेशी कृशाग्नी य नर्तकस्त्वङ्गकुल्लकः ॥ ६३ ॥



यो यष्टिरञ्जुखट्वगेषु प्रनृत्यति स पूरकः ।  
 केलकः प्रवकश्चासौ चारणास्तु कुशीलवाः ॥ ६४ ॥  
 नर्तको भूमिकां प्राप्तो देवानामर्धमानुषः ।  
 रङ्गावतारी रुद्रस्य (कृष्णस्य) त्वर्धमानवः ॥ ६५ ॥  
 रामस्य स्यादेवरथः शक्रस्य तु शचीबलः ।  
 रावणस्य तु रङ्गोपमर्दी कंसस्य भूमिकाम् ॥ ६६ ॥  
 प्राप्तः फालगलालेपो यस्तु क्षीभूमिकां गतः ।  
 स भ्रुकुंसो भ्रुकुंसश्च भ्रुकुंसश्च भ्रुकुंसवत् ॥ ६७ ॥  
 तत्तद्वेषो भूमिका स्यात् तद्वारी भूमिकागतः ।  
 पात्राणि नाट्येऽधिकृताः सूत्रधारस्तु सूचकः ॥ ६८ ॥  
 नान्दी तु पाठको नान्द्याः पार्श्वस्थाः पारिपाश्विकाः ।  
 विदूषकः केलिकिलः प्रहासी प्रतिमोऽपि च ॥ ६९ ॥  
 वेश्याचार्यः पीठमर्दः विद्वो वातसुतो विटः ।  
 मार्दङ्गिको मौरजिको वीणावादास्तु वैणिकाः ॥ ७० ॥  
 वेणुधमाः स्युर्वैणविकाः पाणिवादास्तु पाणिघाः ।  
 नृत्तं गीतं वाद्यमिति नाट्यं तौर्यत्रिकं त्रिकम् ॥ ७१ ॥  
 सङ्गीतकं प्रेक्षणार्थं नाट्योक्ते नाट्यधर्मिका ।  
 उत्तमोत्तमिकं श्लोकैः सैन्धवं प्राकृतोक्तिभिः ॥ ७२ ॥  
 ताण्डवोऽस्त्री नृत्तलास्यनटनाक्षजनर्तनम् ।  
 नटितिर्नाटकी रासो नृत्तं बाह्यं स्वकल्पितम् ॥ ७३ ॥  
 रसभावाङ्गहाराद्यैः शास्त्रोक्तै रूपकाग्रयम् ।  
 नृत्तमाभ्यन्तरं नाम स्थायिभावात्मको रसः ॥ ७४ ॥  
 शृङ्गारहास्यबीभत्सवीरादमुतभयानकाः ।  
 रौद्रश्च करुणश्चाष्टौ रसाः शान्तोऽपि च कश्चित् ॥ ७५ ॥  
 स्थायिभावाः क्रमादेषां रतिर्हासो जुगुप्सनम् ।  
 उत्साहो विस्मयो भीतिः क्रोधः शोकः शमोऽपि च ॥ ७६ ॥  
 बीभत्समाने बीभत्सो विस्मेतर्यदुमुतो रसः ।  
 भयानको रसो भीते हास्यो हसितरि स्थितः ॥ ७७ ॥  
 बीभत्सो विकृतिश्चित्रं त्वाञ्चर्यं फुल्लमदुमुतम् ।  
 भयानकं प्रतिभयं भीमं भीष्मं मयङ्करम् ॥ ७८ ॥  
 भैरवं भीष्मं घोरभाभीलं दारुणं च तत् ।  
 करुणः सकृपो रौद्रश्चोऽमी विंशतिविधु ॥ ७९ ॥

भावो मनोविकारः स्यादनुभावोऽस्य सूचकः ।  
 विभावो हेतवस्तस्य भावस्य हृदि वत्स्यतः ॥ ८० ॥  
 स्थायिसञ्चारिभेदेन द्विधा भावो व्यवस्थितः ।  
 स्वेदो चर्मो निदावः स्यात् कालिका तु विवर्णता ॥ ८१ ॥  
 रोमोद्गमो रोमहर्षो रोमाञ्चः कण्ठकोऽपि च ।  
 रोमाङ्क उल्लसनकमप्युल्बणकमित्यपि ॥ ८२ ॥  
 स्मितं त्वदृष्टदशने हासो वक्रोष्ठिका न ना ।  
 रुचिः स्त्री हसितं दृष्टदन्ते विहसितं श्रुते ॥ ८३ ॥  
 सोत्प्राप्ते त्वाच्छुरितकं तथोपहसितं भवेत् ।  
 निकुञ्चितशिरोगात्रमदृहासो महाहसे ॥ ८४ ॥  
 अतिहासस्त्वनुस्यूतोऽपहासोऽकारणात् कृते ।  
 स्वरभेदस्तु कल्कत्वं स्वरकम्पस्तु वेपथुः ॥ ८५ ॥  
 आकारगोपनायामपटीकाप्यवकटापि स्त्री ।  
 न पुमानवहित्या स्यादक्ली गृहजालिकाप्यस्याम् ॥ ८६ ॥  
 क्रन्दितं रुदितं क्रुष्टं लोतोऽश्रु नयनोदकम् ।  
 अश्रु रोदनमास्रं च क्रीडा खेला च कुर्दनम् ॥ ८७ ॥  
 न स्त्री केलिः परीहासः क्रीडा लीला च नर्म च ।  
 जृम्भणं तु त्रयी जृम्भा मुखभेदस्तु जृम्भिका ॥ ८८ ॥  
 एजनं वेपथुः कम्पः प्रलयोऽस्पन्दनस्थितिः ।  
 आटोपावेगसंरम्भसम्भ्रमास्तु त्वरा त्वरी ॥ ८९ ॥  
 असौम्येऽक्षण्यदृष्टिः स्यादवलोकस्त्वधः कृतः ।  
 उन्मीलनं स्यादुन्मेषो निमिषस्तु निमीलनम् ॥ ९० ॥  
 स्फुरितं स्पन्दितमथ भ्रुकुटिर्भ्रुकुटिः स्त्रियाम् ।  
 भ्रुकुटिर्भ्रुकुटिः सारी काली तीरतरङ्गिका ॥ ९१ ॥  
 चतुरं त्वल्पा भ्रुकुटी रेचितं त्वेकया भ्रुवा ।  
 चेष्टाः शृङ्गारजाः स्त्रीणां हावा लीलादयो दश ॥ ९२ ॥  
 घल्लभानुकृतिर्लीला विलासः श्लिष्टविक्रिया ।  
 विच्छित्तिर्वस्त्रमाल्यादेन्यासोऽनास्थोपशोभितः ॥ ९३ ॥  
 सकृत्सुरिलष्टरुदितस्मितादि किलिकिञ्चितम् ।  
 बिम्बोकोऽहङ्कृतेनैव प्राप्तेऽभीष्टेऽप्यनादरः ॥ ९४ ॥  
 विकृतं तूचितस्यापि लज्जादिभिरभाषणम् ।  
 मोहायितं वल्लभस्य चिन्ता कुट्टमितं पुनः ॥ ९५ ॥

स्तनोष्ठादेर्दृढस्पर्शाद् (दुःखवत्) सुखसम्भ्रमः ।  
 विभ्रमो हृदयपर्याप्तो ललितं कोमलक्रमः ॥ १६ ॥  
 सत्त्वाद्भावस्ततो हावो लीला हावात् समुत्थिता ।  
 अङ्गहारोऽङ्गविच्छेपो नानाकरणसंहतिः ॥ १७ ॥  
 करणान्यङ्गचेष्टाः स्युर्हरणं करणं समे ।  
 व्यञ्जकोऽभिनयो यस्तु सूच्योऽर्थोऽभिनयः स च ॥ १८ ॥  
 भूषणाद्यैर्गिराऽङ्गेन सत्त्वेनाभिनयाः कृताः ।  
 त्रिषु क्रमात् स्युराहार्यवाचिकाङ्गिकसात्त्विकाः ॥ १९ ॥  
 नाटकं नाटिका भाणो वीथिः प्रहसनं छिमः ।  
 ईहासृगः प्रकरणमङ्कः समवकारकः ॥ १०० ॥  
 व्यायोगश्चेति रूपाणि नाट्यस्यैता विकल्पनाः ।  
 भारती सात्त्वती चैव कैशिक्यारभटीति च ॥ १०१ ॥  
 चतस्रो वृत्तयो भाषाः संस्कृताद्या विकल्पिताः ।  
 भारती संस्कृता वाणी शेषाश्चेष्टा इति क्वचित् ॥ १०२ ॥  
 अथ नाट्योक्तयो राजा देवो भट्टारकोऽपि च ।  
 महाराजश्च राज्ञी तु स्वामिनी महिषी तु चेत् ॥ १०३ ॥  
 देवी स्याद्भट्टिनी त्वन्या गणिका पुनरञ्जुका ।  
 भट्टारिका राजमाता तत्पुत्री भर्तृदारिका ॥ १०४ ॥  
 तनयस्त्वस्य गोस्वामी (स्वामी) चाप्यथ राष्ट्रियः ।  
 स्यालोऽस्य युवराजस्तु कुमारो भर्तृदारकः ॥ १०५ ॥  
 पतिस्त्वार्य आर्यपुत्र आर्यौ मारिषमार्षकौ ।  
 आबुक्स्तु पिताऽम्बा तु माता ज्येष्ठा स्वसौमिका ॥ १०६ ॥  
 बला बुसा कनिष्ठा स्यादाबुक्तो भगिनीपतिः ।  
 बाला वासुर्भदन्ताः स्युः शाक्यक्षपणकादयः ॥ १०७ ॥  
 आर्यभ्राता क्षुल्लतातो देवरस्त्वार्यपुत्रकः ।  
 हण्डे हवजे हलाऽऽह्वाने नीचां चेटीं सखी प्रति ॥ १०८ ॥  
 अत्रक्षण्यमवद्यं स्यान्निष्ठा निर्वहणं समे ।  
 गीतं गेयं च गानं च यत्तु तन्त्रीसमुद्भवम् ॥ १०९ ॥  
 तन्निर्गीतं बहिर्गीतं गान्धर्व दिव्यमैश्वरम् ।  
 सप्त स्वरास्त्रयो ग्रामा मूर्च्छना एकविंशतिः ॥ ११० ॥  
 तानान्येकोनपञ्चाशदित्येष स्वरविस्तरः ।  
 स्यानान्युरः शिरः कण्ठः आवकः कण्ठजो गुणः ॥ १११ ॥

यो दूराच्छ्रावयत्यन्ये त्वन्वर्था मधुरादयः ।  
 काकीत्याद्याः कण्ठदोषास्तत्र काकी नृलिङ्गकः ॥ ११२ ॥  
 अगम्भीरः स्वरोऽथ स्यात्तन्म्विकी घ्राणनिर्गतिः ।  
 सन्दष्टो भेदसम्मिश्रः कफिलो घर्घरः कफात् ॥ ११३ ॥  
 काकली तु कले सूक्ष्मे रागा गीतेर्विधाः पृथक् ।  
 वादित्रं वादनं वाद्यमोतोद्यं तच्चतुर्विधम् ॥ ११४ ॥  
 ततं वीणादिकं वाद्यं तालाद्यं विततं घनम् ।  
 वंशादिकं तु सुषिरमानन्दं मुरजादिकम् ॥ ११५ ॥  
 घनं चाथाद्यवाद्ये द्वे विततं सहकीर्तने ।  
 विपञ्ची वल्लकी वीणा घोषवत्यनुवादिनी ॥ ११६ ॥  
 स्यात् कण्ठकूणिका चाथ स्याच्चित्रा परिवादिनी ।  
 तन्म्यश्चेत् सप्त ताश्चेत् स्युश्चतुर्दश चतुर्दशी ॥ ११७ ॥  
 एकादश्येकादश चेदेवं वीणा त्रयोदशी ।  
 वीणा स्थाणोरनालम्बी गणानां तु प्रभावती ॥ ११८ ॥  
 विश्वावसोस्तु बृहती तुम्बुरोस्तु कलावती ।  
 महती नारदस्य स्यात् सरस्वत्यास्तु कच्छपी ॥ ११९ ॥  
 कोलम्बकस्तु कायोऽस्याः ककुभस्तु प्रसेवकः ।  
 वीणा वंशशलाका तु कणिका कूणिका च सा ॥ १२० ॥  
 परिवादो वादनार्थं उपनाहस्तु बन्धनम् ।  
 तन्त्रीष्वङ्गुष्ठसंस्पर्शः कलस्तासां तु ताडनम् ॥ १२१ ॥  
 निष्कोटितोऽस्त्री सव्येन तलस्त्वन्येन पाणिना ।  
 लयस्तु साम्यं दशभिश्छन्दोऽक्षरपदैः सह ॥ १२२ ॥  
 विलम्बितं द्रुतं मध्यं तत्त्वमोघो घनं क्रमात् ।  
 तालः कालक्रियामानं क्रियाङ्गुलिकरोद्भवा ॥ १२३ ॥  
 ताली त्रयी कांस्थताली विताली तालपत्रिका ।  
 मिङ्गिलस्तु पयोऽथ स्याद् दर्दरः कलशीमुखः ॥ १२४ ॥  
 वंशे तु वंशिका पूरी मुरली वेणुका च सा ।  
 शृङ्गवाद्ये खरमुखं स्यादाद्यट्टलिकेति च ॥ १२५ ॥  
 तोट्टमी चाथ पिच्छोला पाली तु जतुकाहला ।  
 काहला तु कहाला स्याच्चण्डकोलाहलेति च ॥ १२६ ॥  
 नालिका सुषिरच्छेदे मुरली पुष्पिकेति च ।  
 वाण्डालिका तु कण्डोलवीणा चण्डालवल्लकी ॥ १२७ ॥



काण्डवीणा कुवीणा च ढक्कारी किन्नरीति च ।  
 सारिका कुङ्कुणी चाथ यो दण्डोऽल्पकलस्वनः ॥ १२८ ॥  
 दण्डिका कारवी सृष्टा किङ्किरो जर्जरश्च सः ।  
 मुरजास्तु मृदङ्गास्ते त्वङ्क्यालिङ्गयोर्ध्वकाश्चयः ॥ १२९ ॥  
 पूर्वः पूर्वो महानेषामेतत्पुष्करमण्डले ।  
 व्यापारस्त्वङ्गुलीनां यो मार्जना सा त्रिधा त्वियम् ॥ १३० ॥  
 मायूरी चार्धमायूरी तथा कर्मारवीति च ।  
 घर्घरी स्याद् घर्घरिका वादने मूर्च्छना न ना ॥ १३१ ॥  
 स्युः षड्जर्षभगान्धारमध्यमाः पञ्चमस्तथा ।  
 धैवतश्च निषादश्च तन्त्रीकण्ठोद्भवाः स्वराः ॥ १३२ ॥  
 ते केकिचातकाजक्रुष्टपिकभेकगजस्वराः ।  
 दुन्दुभिस्त्वानको भेरी भम्भा नासूश्च नान्यपि ॥ १३३ ॥  
 स्याद् यशःपटहो ढक्का पटहस्त्वानकोऽस्त्रियौ ।  
 हुडुक्स्तु हडक्कोऽस्त्री समौ पणवमर्हलौ ॥ १३४ ॥  
 वाद्यप्रभेदा डमरुमड्डुडिण्डिममर्मराः ।  
 तिमिलाटट्टरीवेध्यालुम्बिकाकुञ्जिकादयः ॥ १३५ ॥  
 वादित्रलगुडे कोणो न नपुं शारिका स्त्रियाम् ।  
 तूर्योऽस्त्री वाद्यनिर्घोषे वादित्रं वादनञ्च तत् ॥ १३६ ॥  
 तूरकामध्वजौ चाथ सायन्तूर्येऽक्षताडनम् ।  
 संवेशने तु ध्रुक्कुटः प्रकटः प्रतिबोधने ॥ १३७ ॥  
 पटहाडम्बरौ युद्धे मङ्गले प्रियवादिका ।  
 देवतार्चनतूर्ये तु धूमलोऽस्त्री बलिर्न षण् ॥ १३८ ॥  
 क्षुण्णकं मृतयात्रायामर्धतूरो रणोद्यमे ।  
 नटोत्साहनमङ्के स्यात् पूर्वरङ्गास्त्वतः परे ॥ १३९ ॥  
 प्रत्याहारोऽत्र कुतपविन्यासे कुतपः पुनः ।  
 वाद्यवादकसामग्र्यामारम्भः गीत्युपक्रमे ॥ १४० ॥  
 निवेशने गायिकानां न पुमानवतारणम् ।  
 लोकपालार्चने विष्णु करणीपरिवर्तनम् ॥ १४१ ॥  
 नन्दी चारी महाचारी कथा सूत्रं प्ररोचना ॥ १४२ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

भूमिकाण्डे शुद्धाध्यायः ॥ ९ ॥

चतुर्थो भूमिकाण्डः समाप्तः ॥ ३ ॥

## ४. अथ पातालकाण्डः

सरीसृपाध्यायः ॥ १ ॥

पातालं बलिसद्माधोभुवनं वडबामुखम् ।  
रसातलं तलं नागलोको दैत्यक्षयो रसा ॥ १ ॥  
अगाधो भुवनं रोकं रन्ध्रं निर्व्यथनं बिलम् ।  
कुहरं सुषिरं छिद्रं श्वभ्रोऽस्त्र्यक्ली सुषिर्वपा ॥ २ ॥  
गर्तः पतेरो भूश्चभ्रमवखातोऽवटोऽवधिः ।  
शेषोऽनन्तो नागराजः सर्पराजस्तु वासुकिः ॥ ३ ॥  
नागा बहुफणाः सर्पास्तेषां भोगवती पुरी ।  
सर्पो द्विरसनो व्यालो दन्दशूकः सरीसृपः ॥ ४ ॥  
उरगो भुजगो जिह्वो भुजङ्गोऽहिर्भुजङ्गमः ।  
फुल्लरीको लेलिहानः कुण्डल्याशीविषः फणी ॥ ५ ॥  
दीर्घपृष्ठो विषधरः पन्नगो दृक्प्रवा हरिः ।  
बिलौका गूढपादक्री नाकुसद्मानिलाशनः ॥ ६ ॥  
दर्वीकरा मण्डलिनो राजिमन्तश्च पन्नगाः ।  
रथाङ्गलाङ्गलच्छत्रस्वस्तिकाकुशलाब्धनाः ॥ ७ ॥  
फणिनः शीघ्रगतयः सर्पो दर्वीकराभिधाः ।  
दीर्घा मन्दा मण्डलिनो मण्डलैर्विविधैर्युताः ॥ ८ ॥  
राजिमन्तो राजियुता राजीला राजिलाश्च ते ।  
वैकरब्जाः सङ्करजास्त्रयाणां व्यन्तरास्तथा ॥ ९ ॥  
षड्विंशतिर्मण्डलिनस्तथा दर्वीकराभिधाः ।  
त्रयोदश च राजीला वैकरब्जाभिधास्त्रयः ॥ १० ॥  
निर्विषा द्वादशेत्येवमशीतिः सर्पजातयः ।  
दर्वीकरा महासर्पः फुल्लः पुष्पाभिकीर्णकः ॥ ११ ॥  
कुम्भीनसो लोहिताहिः कृष्णसर्पः कुलस्थकः ।  
शङ्खपालो महापद्मः काकोदर इतीदृशाः ॥ १२ ॥  
आशीविषाश्च सर्वेऽथ कृष्णसर्पो बलाहकः ।  
अथ मण्डलिनस्तन्तुर्गोनसो वृद्धगोनसः ॥ १३ ॥  
किंशुकः पीनसः पिङ्गो देवभिन्न इतीदृशाः ।  
गोनसस्तु तिलित्सः स्याद्गोनासो घोणसोऽपि च ॥ १४ ॥

राजिलाः स्युः पुण्डरीकश्चित्रको लोहिताक्षकः ।  
 दिव्येलकः सर्पराजः किकीसादः इतीदृशाः ॥ १५ ॥  
 अथ पुष्करसादः स्यात् सर्पराजश्च सर्पभृक् ।  
 वैकरक्षाः पोटगलस्तथा पुष्पाभिकीर्णकः ॥ १६ ॥  
 दिव्योऽलर्कोऽप्यथो सर्पा निर्विषा दिव्यकालिनी ।  
 पैङ्गराजोऽप्यजगरः शुक्रपोत्रो वलाहकः ॥ १७ ॥  
 वर्षाभीः शकलज्योतिः कोलकः पादवाहिकः ।  
 पुष्पकोऽहिपताकश्च गन्धाहिक इतीदृशाः ॥ १८ ॥  
 अलगर्द्धो जलव्यालो वाहसोऽजगरः शयुः ।  
 मालुधानो मातुलाहिः पुण्डरीकस्तु डुण्डुमः ॥ १९ ॥  
 राजिलः क्षीरकश्चाथ नानीपातः स्वजः समौ ।  
 अहीरिणिः स्त्री द्विमुखी निर्मुक्तो मुक्तकञ्चुकः ॥ २० ॥  
 सर्पाश्चरस्तु निर्मोकः कञ्चुको नित्वयन्यपि ।  
 अहिनित्वयनी चाथ स्फटा भोगः फणा न षण् ॥ २१ ॥  
 गरलं तु विषं द्वेलो गरस्तु कृतकं विषम् ।  
 द्वेलास्तु कालकूटाद्या मूलपुष्पफलात्मकाः ॥ २२ ॥  
 कालकूटः कटोऽथ स्याद् गौराद्रो ब्रह्मबालुकम् ।  
 ब्रह्मघोषश्च घोषश्च पुण्डरीकं तु बालुकम् ॥ २३ ॥ —  
 यवमन्येऽपि काकोलो वत्सनाभो हलाहलः ।  
 सौराष्ट्रिको ब्रह्मपुत्रशौक्लिकेयेन्द्रदारदाः ॥ २४ ॥  
 मुस्तः कुष्ठो मेषशृङ्ग इत्याद्याश्चाथ वातिकः ।  
 विषवैद्यो जाङ्गलिको व्यालग्राह्याहितुण्डिकः ॥ २५ ॥  
 गोधा निहाका मुसली वृक्षजा सा शयण्डकः ।  
 अथ गौघेरगौधारौ भुजगीगोधयोः सुते ॥ २६ ॥  
 गौघेयश्चाथ चिक्रोहस्तालको रोमर्शाति च ।  
 नकुलः पिङ्गलोऽथैष कर्शो रोमशपुच्छकः ॥ २७ ॥  
 नकुलस्तु महान् बभ्रुर्धरीको नकुलाकृतिः ।  
 कृकलासः प्रतिरिबिः शयानः सरटः शयः ॥ २८ ॥  
 स कामरूपी बिम्बः स्यात् कृकवाकुः सुदुष्प्रभः ।  
 हालाहलस्त्वञ्चनिका ब्राह्मणी रक्तपुच्छिका ॥ २९ ॥  
 सृजया चाथ दैवज्ञा ज्येष्ठा स्याद् गृहगौलिका ।  
 टट्टनी मुसली पल्ली माणिक्या गृहगोधिका ॥ ३० ॥

कुड्यमत्स्या सुरश्वेता कुण्डणाची सुराजिका ।  
 उन्दुरुर्मूषिकः काण्डमाखुस्तु खनकः क्रमः ॥ ३१ ॥  
 चुचुन्दरी तु गन्धाखुर्गिरिका बालमूषिका ।  
 वृश्चिके त्वात्यलिद्रूणा मलं तत्पुच्छकण्टकः ॥ ३२ ॥  
 खर्जूरौ वृश्चिका न क्ली शूकक्रीटोऽपि वृश्चिकः ।  
 आढा शतपदी कर्णजल्लका ढारिकापि च ॥ ३३ ॥  
 मूषिका लूतिका लूता तन्तुवायश्च जालिकः ।  
 ऊर्णनाभस्तन्तुनाभः कृमिर्मर्कटकोऽपि च ॥ ३४ ॥  
 ऊर्णाबहिश्चोर्णवाहीराशाबन्धोऽस्य जालकम् ।  
 लूतापट्टस्तु तत्कोश उदंशो मत्कुणः समौ ॥ ३५ ॥  
 घुणः कृमिः काष्ठमवा लूतातः स्यात् पिपीलिका ।  
 ब्राह्मणी स महान् पिङ्गः कपिशा तु गृहेडिका ॥ ३६ ॥  
 उलङ्कलो महान् कृष्णः सा मर्कोटपिपीलिका ।  
 या कृष्णाऽल्पाऽथ सूक्ष्माऽन्या जातिः कन्यापिपीलिका ॥ ३७ ॥  
 वन्नो वन्नयुपदीकोपजिह्विका चोपदेहिका ।  
 तत्प्राया शिथिली पिङ्गा यूकस्तु शिरसि क्रिमिः ॥ ३८ ॥  
 नीलाङ्गा कृमेरन्तर्जः क्षुद्रः कीटो बहिर्भवः ।  
 पुल्लकास्तूमयेऽपि स्युः कीकसाः कृमयोऽणवः ॥ ३९ ॥  
 सरीसृपास्तु सर्पाद्या दन्दशूकास्तु दंशकाः ।  
 शलभाद्याः पतङ्गाः स्युर्योदांसि जलजन्तवः ॥ ४० ॥  
 पृथुरोमा ऋषो मत्स्यो मीनो वैसारिणस्तिमिः ।  
 जलपिप्पिक आत्माशी शकुली स्वकुलक्षयः ॥ ४१ ॥  
 स्थिरजिह्वः सङ्गचारी विसारः शम्बरोऽण्डजः ।  
 अथो सहस्रदंष्ट्रः स्याद् गलेषालौ उपदालकः ॥ ४२ ॥  
 वदालस्त्वहिकश्चित्रः पाठीनो मृदुकण्टकः ।  
 फलकी स्याच्चित्रफली लोहितस्त्वावतारिकः ॥ ४३ ॥  
 एत्थालः स्याच्चीननको महाशल्कः सितायुधः ।  
 शृङ्गी तु सर्पशफरी प्रोष्ठी तु शफरी न षण् ॥ ४४ ॥  
 नलमीनश्चिलिचिमो गण्डकाः शकुलार्भकाः ।  
 क्षुद्राण्डो मत्स्यसङ्घातः पोताघानं नमुंसकम् ॥ ४५ ॥  
 उदण्डपालनदलद्वेकशजीवकोत्पलाः ।  
 कुलीरः कर्कटः पृष्ठचक्षुः पार्श्वोदरग्रियः ॥ ४६ ॥



बिल्वकोऽण्डप्रहरणः षोडशाङ्घ्रिद्विधागतिः ।  
 भेके शालुः प्लवव्यङ्गशालूराण्डुककेण्डुकाः ॥ ४७ ॥  
 मण्डूकश्चैष गृहजो म्लानः कोणेपिशाचकः ।  
 पीतेऽस्मिन् कूलमण्डूको वारिपिण्डोऽश्ममध्यजः ॥ ४८ ॥  
 कृष्णास्या कृतभीः श्वेता कोटिका तद्विपर्यये ।  
 चित्रे चित्राणुकः कूपे भवः कूपेपिशाचकः ॥ ४९ ॥  
 कूर्मः कच्छप ओहारः पञ्चगूढश्चतुर्गतः ।  
 गुहाशयस्तूपपृष्ठः कश्यपो जीवथो मृथः ॥ ५० ॥  
 दुली दुणी च तत्कान्ता मकरो मत्स्यराट् मूषः ।  
 खड्गनामा खड्गपुच्छस्तिमिशत्रुस्तिमिङ्गिलः ॥ ५१ ॥  
 तद्भेदो हस्तिमकरोऽथ स्याद् वारुणपाशकः ।  
 ग्राहस्तन्त्रस्तन्तुनागस्तन्द्रश्चाभोघतन्तुकौ ॥ ५२ ॥  
 नके तु कुम्भी कुम्भीरो गोमुखश्च महामुखः ।  
 तालुजिह्वः शङ्खमुख आलास्यस्त्वम्बुसूकरः ॥ ५३ ॥  
 चद्रस्तु जलमार्जारः पारी परकुलो वशी ।  
 शिशुमारस्त्वम्बुकपिरुष्णवीर्यो महावसः ॥ ५४ ॥  
 असिप्लवोऽम्बुलुकी' स्त्री वीरलस्तु महामूषः ।  
 त्रयी तु कम्बुः शङ्खोऽस्त्री सुग्रीवो मधुरस्वनः ॥ ५५ ॥  
 त्रिरेखः षोडशावर्तः स तु शङ्खनखोऽल्पकः ।  
 मुक्तास्फोटोऽब्धिमण्डूकी शुक्तिर्युक्ता तु मौक्तिकम् ॥ ५६ ॥  
 मुक्ताफलं शौक्तिकेयं गङ्गेष्टिः कटशर्करा ।  
 शम्बूकः क्षुल्लकः शङ्खः कपर्दस्तु वराटकः ॥ ५७ ॥  
 स्त्री चूर्णिरथ शुक्तिः स्याद् दुर्नामा दीर्घकोशिका ।  
 जल्लुका तु जलालोका सृक्था भूम्नि जलौकसः ॥ ५८ ॥  
 या जलौका वृणचरी सा स्यात् वृणजलायुका ।  
 गण्डूपदः किञ्चुलुको भूलता तत्प्रिया शिल्ली ॥ ५९ ॥  
 स्थले करिनराश्वाद्या यावन्तः सन्ति जन्तवः ।  
 ते जलेऽपि जलाख्याः स्युर्जलपर्यायपूर्वकाः ॥ ६० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां बैजयन्त्यां

पातालकाण्डे सरीसृपाध्यायः ॥ १ ॥

## जलाध्यायः ॥ २ ॥

सलिलं मलिनं तोयं मरुतं मेघजं कतम् ।  
 नीरं वारि पयोऽम्भोऽर्णो मेघपुष्पं कुलीनसम् ॥ १ ॥  
 पानीयं जीवनीयं कं जलमम्बूदकं दकम् ।  
 विषं पाथो घनपदं भुवनं जीवनं वनम् ॥ २ ॥  
 वानं पुंसि स्त्रियो भूमन्यापो घनरसः पुमान् ।  
 वल्खरं तु सितं तोयमतिक्षारं तु किट्टिमम् ॥ ३ ॥  
 काचिमं स्यादतिस्वच्छमूतं कलुषमाविलम् ।  
 शीतलं स्वादुर्नि जले द्राग्भृतं तत्क्षणोद्धृतम् ॥ ४ ॥  
 जलाशया जलाधारास्ते त्वगाधजला हृदाः ।  
 अखातं देवखाते स्यात् पुष्करिण्यां तु खातकम् ॥ ५ ॥  
 आधारस्तु तटाकोऽस्त्री कासारः सरसी सरः ।  
 आवाहो दीर्घिका वापी वेशन्तस्त्वल्पपल्वले ॥ ६ ॥  
 अन्धुरब्धः प्रहिः कूपश्चुण्डी चौण्डश्च चूतकः ।  
 अवखातस्तु कीर्णः स्यादुत्कीर्णश्च पुरी स्त्रियाम् ॥ ७ ॥  
 विकिरः स्यात् कीर्णजल उद्भिदस्तु जलोद्गमः ।  
 पीनाहस्तु स्त्रियां नेमिः कूपस्य मुखबन्धनम् ॥ ८ ॥  
 आहावश्च निपानश्च कूपपार्श्वजलाश्रयः ।  
 प्रदरस्तूदपानोऽस्त्री बद्धाम्बु स्रोतसो धृतम् ॥ ९ ॥  
 आवालमालवालं स्यात् सेतौ वारणसंवरो ।  
 उदधिः सागरोऽपारो जलराशिरपांपतिः ॥ १० ॥  
 रत्नाकरो जलनिधिः समुद्रो मकरालयः ।  
 उदन्वान् वरुणावासः सरितांपतिरुपतिः ॥ ११ ॥  
 सरित्पतिरकूपारः पारावारोऽब्धिर्धरणवः ।  
 मितद्रुः संवरः पेरुः स्तम्भी स्तम्भिर्महोदधिः ॥ १२ ॥  
 कूजेऽस्य वेला मर्यादा पूर्णर्वेलाम्बुवर्धनम् ।  
 डिण्डीरोऽम्बुकफः फेनो बुद्बुदस्थासकौ समौ ॥ १३ ॥  
 भङ्गस्तरङ्गो वीधिः स्त्री तस्मिन्स्त्वेव महत्यषण् ।  
 ऊर्मिः कल्लोल उल्लोलो लहर्युत्कलिकेति च ॥ १४ ॥

पोहित्थं तु प्रवहणं पोथश्चाप्यथ मङ्गिनी ।  
 नौस्तरिस्तरणी वेटी द्रोणी काष्ठाम्बुवाहिनी ॥ १५ ॥  
 उडुपं तु प्लवो भेल आरोहोऽसौ तरण्डकः ।  
 केनिपातास्त्वरित्राणि पोलिन्दास्तु पुलिन्दकाः ॥ १६ ॥  
 कर्णं पृष्ठस्थितारित्रं नौशिरो मङ्गमस्त्रियाम् ।  
 नावो दण्डः क्षेपणी स्त्री कूपस्तु गुणवृक्षकः ॥ १७ ॥  
 आतरस्तरपण्यं स्यात् सेकपात्रं तु सेचनम् ।  
 सांयात्रिकः पोतवणिक् पोतवाहो नियामकः ॥ १८ ॥  
 कर्णधारस्तु निर्यामो नावारोहास्तु नाविकाः ।  
 अगाधमतलस्पर्शमस्थानञ्च गभीरकम् ॥ १९ ॥  
 गम्भीरश्चाथ नौतार्यं नाव्यं स्यान्ते नव त्रिषु ।  
 घट्टोऽवतारस्तीर्थोऽस्त्री प्रणाल्यङ्की पयोवहा ॥ २० ॥  
 सरणी हरणिर्भूणिर्निर्गमद्वारि तु भ्रमः ।  
 उद्धाटनं घटीयन्त्रं पादावर्तोऽरघट्टकः ॥ २१ ॥  
 नदी स्रोतस्विनी कुल्या स्रवन्ती निम्नगा सरित् ।  
 हिरण्यवर्णा गिरिजा रोधोवक्त्रा पयस्विनी ॥ २२ ॥  
 तरङ्गिणी शैवलिनी तटिनी ह्लादिनी धुनी ।  
 अन्धा कूलङ्कषा सिन्धुरापगा वाहिनी बहा ॥ २३ ॥  
 त्रिस्रोता जाह्नवी गङ्गा देवसिन्धुस्त्रिमार्गगा ।  
 भागीरथी विष्णुपदी स्वर्वापी हरशेखरा ॥ २४ ॥  
 धर्मद्रवी त्रिमार्गा च पाताले भोगवत्यसौ ।  
 यमस्वसा तु यमुना कालिन्द्यर्कात्मजा यमी ॥ २५ ॥  
 नर्मदा स्यात् सोमभवा रेवा मेकलकन्यका ।  
 बाहुदा त्वर्जुनी सैता श्यामाङ्गी सैतवाहिनी ॥ २६ ॥  
 टापी तु तापिनी शैव्या चन्द्रभासा तु चन्द्रिका ।  
 शतद्रस्तु शुतुद्री स्याद्विषाशा तु विपाट् क्षियाम् ॥ २७ ॥  
 गोदावरी तु गोदा स्यात् कावेरी त्वर्धजाह्नवी ।  
 शरावती वेत्रवती तुङ्गभद्रा सरस्वती ॥ २८ ॥  
 ताम्रपर्णी कृष्णवर्णा गोमत्याद्याश्च निम्नगाः ।  
 नदः सरस्वान् मिथोद्धयौ कुल्या कर्षूः कृता नदी ॥ २९ ॥

वेणिर्धारा प्रवाहौघौ पूरस्तु जलबृंहणम् ।  
 चक्राणि पुटभेदाः स्युरावर्तः पयसां भ्रमः ॥ ३० ॥  
 जलोच्छ्वासाः परीवाहाः कूपकास्तु विदारकाः ।  
 सञ्छेद्यं सङ्गमो नद्योः सम्भेदोऽप्यथ रोधसि ॥ ३१ ॥  
 तीरं कूलं प्रपातश्च प्रान्ते कच्छस्तटी त्रयी ।  
 पारावारे परात्रत्ये कूले पात्रं तदन्तरम् ॥ ३२ ॥  
 अस्त्री द्वीपोऽन्तरीपं छी पुलिनं तज्जलोत्थितम् ।  
 सैकतं सिकताप्रायं सिकता भूमिर्न बालुकाः ॥ ३३ ॥  
 उत्पल स्यात् कुवलयं कुवेलं कुवलं कुवम् ।  
 नीलोत्पलश्च कन्दोष्ठं कन्दोब्जं कर्णभूषणम् ॥ ३४ ॥  
 इन्दीवरश्च नीलाब्जं रक्तपाणिकमुत्पले ।  
 वरोत्पलं तु कल्हारं सौगन्धिकशिशुप्रिये ॥ ३५ ॥  
 कंसोत्पलं विगन्धि स्याद् वनजं वन्यकं जले ।  
 पद्मोऽस्त्री पद्मजं कञ्जं कुविलीनं सरोरुहम् ॥ ३६ ॥  
 सरसीजं सरसिजं सारसं सरसीरुहम् ।  
 सरोजमब्जमप्युष्पमरविन्दं महोत्पलम् ॥ ३७ ॥  
 सहस्रपत्रं नलिनं शतपत्रं कुशेशयम् ।  
 बिसप्रसूनं राजीवं निर्लेपं बिसनाभिजम् ॥ ३८ ॥  
 पद्मेरुहं तामरसं कमलं दारदोलके ।  
 रक्ते तु पद्मे कण्डारं बिसखण्डमथोऽम्बुजम् ॥ ३९ ॥  
 चारुनालं कोकनदं श्वेते तु शुचिकर्णिकम् ।  
 पुण्डरीकं महापद्मं पवित्रं पुण्यगन्धिकम् ॥ ४० ॥  
 श्रीपुष्पं स्वर्णराजश्च कुमुदं गर्दभाङ्गयम् ।  
 गन्धसोमं कुमुच्चन्द्रं कैरवश्चाथ लोहिते ॥ ४१ ॥  
 अस्मिन् कोकनदं जारं सुनालं रक्तकुण्डलम् ।  
 करहाटः शिफा कन्दं नाला नालमथ त्रिषु ॥ ४२ ॥  
 मृणाली शतपर्वं छी बिसश्च नलिनी पुनः ।  
 बिसिनी पद्मिनीत्याद्याः पद्मस्तम्बे सरस्यपि ॥ ४३ ॥  
 भवेत् पुटकिनी पद्मस्तम्बमात्रे प्रकीर्तिता ।  
 कुमुद्वती कुमुदिनी शाल्कं कन्दमौत्पलम् ॥ ४४ ॥



संवर्तिका नवदलं पद्मं स्त्री कुसुमच्छदः ।  
 किञ्चलकः केसरो न स्त्री बीजकोशो वराटकः ॥ ४५ ॥  
 कर्णिका कर्णिकं चाथ पद्माक्षं पद्मकर्कटी ।  
 हठः कुम्भी वारिपर्णी किञ्चोलस्त्वङ्गलोड्यकः ॥ ४६ ॥  
 शुक्रकारं तु कृसरं वृष्यकन्दं कशेरु च ।  
 शृङ्गाटकस्तु गरुलो दन्तबीजस्त्रिकण्टकः ॥ ४७ ॥  
 क्षीरबीजः क्षीरशुक्रस्तर्पणो जलकण्टकः ।  
 चिञ्चोटिका स्यादवका स्वादुमुस्ता गरोलिका ॥ ४८ ॥  
 शैवलो जलशूरः स्यादवका जलनील्यपि ।  
 शैवालश्चाथ शेवालं चूर्णभं लोहितं जले ॥ ४९ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्या  
 पातालकाण्डे जलाध्यायः ॥ २ ॥

## पुराध्यायः ॥ ३ ॥

पुर्यना नगरी पूः स्त्री स्थानीयं नगरं पुटः ।  
 पुर्याः शाखापुरी गृह्या पुरेऽल्पे खेटमस्त्रियाम् ॥ १ ॥  
 ग्रामः पर्युपसन्निभ्यः प्रतेश्च वसथः परः ।  
 स्थानीयं तु महाग्रामो ग्रामाः क्षुद्राः परे क्रमात् ॥ २ ॥  
 स्युः कर्वेटं कार्वटिकं कार्वटं नृङ्गपट्टने ।  
 कर्वटोऽस्त्री द्रोणमुखं पट्टनं पुटभेदनम् ॥ ३ ॥  
 पत्तनं चाप्यथानृङ्गे नृङ्गो द्रङ्गं विवेशिका ।  
 कटकोऽस्त्री संवासः स्कन्धावारश्च राजधानी स्यात् ॥ ४ ॥  
 शिबिरं मार्गनिवेशो गामार्थे वाटकोऽस्त्री स्यात् ।  
 साकेतं स्यादयोध्यायां कोसलानन्दिनीति च ॥ ५ ॥  
 द्वारका तु द्वारवती मधुरा तु मधूषिका ।  
 मथुरा च मधूपन्ना कौशं तु स्यात् कुशस्थली ॥ ६ ॥  
 वाराणसी शिवपुरी वारणास्यपि काशिका ।  
 मिथिला पूर्वदेहेषु कन्याकुब्जो महोदयः ॥ ७ ॥  
 हस्तिनी हस्तिनपुरं नागाहं हस्तिनापुरम् ।  
 अथास्त्री खाण्डवप्रस्थं जयन्तीपुरमाहुकम् ॥ ८ ॥  
 अबन्ती स्यात्तक्षशिला काकुन्दी वारणावतम् ।  
 देवीकोट्टः कोटिवर्षं माहिष्मत्यां वृकस्थली ॥ ९ ॥  
 ग्रामादिभूमिर्वास्त्वस्त्री सन्दंशस्त्वस्य कोणभूः ।  
 ब्रह्मस्थली वास्तुमध्यं ब्रह्मधारा तदन्तभूः ॥ १० ॥  
 प्रशस्ता वास्तुभूमिर्या प्रवीरा नन्दिनी च सा ।  
 सीमा तु सीमा मर्यादा ग्रामसीमोपशत्यकम् ॥ ११ ॥  
 प्रान्तरं ग्रामयोर्मध्यमुपन्नं त्वन्तिकाश्रयः ।  
 पर्यन्तभूः परिसरः कटो ग्रामेयकः पुनः ॥ १२ ॥  
 ग्रामीणं च त्रिषु ग्राम्ये ग्रामधान्यं तु खेटकम् ।  
 खेयं तु परिखाऽथास्त्री वप्रः प्राकारमूलिकः ॥ १३ ॥  
 प्राकारो वरणः सालः प्राचीरं त्वेष सच्छदिः ।  
 आवेष्टकस्तु वाटोऽस्त्री विवृतश्च वृत्तिदुमैः ॥ १४ ॥

वारिकूटो हस्तिमुखो नगरद्वारकुट्टके ।  
 गोपुरं तु पुरद्वारं दिक्तु निस्सारणं मुखम् ॥ १५ ॥  
 रथ्या प्रतोली विशिखाऽप्युपरथ्या तु दर्शनी ।  
 राजमार्गे संसरणं श्रीषण्ठाभ्यां पथः परः ॥ १६ ॥  
 स एव पुरि दिङ्मार्गे बाहनी चोपविष्करम् ।  
 अगारं भवनं धाम वस्तं वस्त्यं निकेतनम् ॥ १७ ॥  
 शय्यं निवसनं सद्य बुन्दिरं वेश्म मन्दिरम् ।  
 निकायवासावसथनिकायनिलयालयाः ॥ १८ ॥  
 न नोदवसितं न स्त्री गेहं पुम्भूम्नि वा गृहम् ।  
 महाकीर्तनमोक्षश्च केसरं केतनं क्षयः ॥ १९ ॥  
 आथर्वणं शान्तिगृहमास्थानगृहमिन्द्रकम् ।  
 वासागारं तल्पगृहमरिष्टं सूतिकागृहम् ॥ २० ॥  
 कुयशाला तु सन्धानी पक्षिशाला कुनालिका ।  
 चतुरं हस्तिनां शाला वाजिशाला तु मन्दुरा ॥ २१ ॥  
 सन्दानिनी तु गोशाला हविशाला विषाणिका ।  
 आवेशनं शिल्पिशाला तन्त्रशाला तु गर्तिका ॥ २२ ॥  
 कुम्भशाला पाकपुटी चित्रशाला तु जालिनी ।  
 संवासनं कर्मशाला प्रपा पानीयशालिका ॥ २३ ॥  
 वेशनी मुखशाला च पक्षशाला तु पक्षकः ।  
 तैलिशाला यन्त्रगृहं पोटकी कटकी च सा ॥ २४ ॥  
 इक्षुपीडनयन्त्रस्य शालिका त्विक्षुसूनिका ।  
 वपनी स्यात् खरकुटी शिल्पा चाप्यथ कुण्डिनी ॥ २५ ॥  
 क्षणा बुशाल्याश्रमे तु पर्णशालोटजोऽस्त्रियाम् ।  
 चतुश्शालं सङ्गवनं सत्रशाला शुभा स्थली ॥ २६ ॥  
 मठावसथ्यौ छात्रादिवासो वेष्टं विटाश्रये ।  
 कुटीरस्तु कुटी पल्ली क्षेत्रपल्ली तु गर्गरी ॥ २७ ॥  
 सन्यासपल्ली निर्बीरा मण्डपोऽस्त्री जनाश्रयः ।  
 देवतायतनं चैत्यं बिहारो लयनालिकः ॥ २८ ॥  
 सौधोऽस्त्री सुधया श्वेतं मेढो हर्म्यं च मालिका ।  
 तदेव राजदेवानां स्यात् प्रासादः प्रसादनः ॥ २९ ॥  
 राजवेश्मोपकार्यो स्याद्युपकार्योपकारिका ।  
 स्वस्तिकः सर्वतोभद्रो नन्यावर्तादयोऽपि च ॥ ३० ॥

पिच्छन्दिना राजधानां सन्निवेशो निकर्षणम् ।  
 कूटागारं तु वलभी निर्यूहो मत्तवारणम् ॥ ३१ ॥  
 कुट्टिमोऽस्त्री वस्त्रभूमिः कोद्रजस्तु तमङ्गकः ।  
 इन्द्रकोशोऽप्यथो मञ्च उद्धातो हुण्डुरोऽपि च ॥ ३२ ॥  
 वेश्यागृहे कायमानं तथेदं केलिमण्डपे ।  
 अट्टालयोऽट्टः क्षौमोऽस्त्री तलिन्यट्टालिके समे ॥ ३३ ॥  
 चन्द्रशाला शिरोगेहं पणिकस्तु वणिग्गृहम् ।  
 आपणस्तु निषद्या स्यान्माटङ्को लवणापणः ॥ ३४ ॥  
 संवासो विपणिः पण्यवीथी हट्टस्तु पण्यभूः ।  
 आवालिर्हट्टवेशमाली वेशो वेश्याजनाश्रयः ॥ ३५ ॥  
 अवरोधः पराविद्धः शुद्धान्तोऽन्तःपुरं वृषम् ।  
 अङ्गणस्त्वजिरं चारं वेदिका तु वितर्दिका ॥ ३६ ॥  
 कुड्योऽस्त्री भित्तिका कन्थाऽप्येङ्गकं त्वन्तरस्थिकम् ।  
 नीघ्रं वलीकं चोलान्ते चोलोऽस्त्री पटलं छदिः ॥ ३७ ॥  
 सन्धिस्तु कुड्यच्छदिषोः कावातायनिका कला ।  
 अपशाला तु संहारी विटका तु विटाटिका ॥ ३८ ॥  
 गोपानसी तु वलभी छादने वक्रदारुणि ।  
 वेश्मस्थूणा गृहस्थूणमुल्बस्थूणा तु पादिका ॥ ३९ ॥  
 मेढी तु पादिकाशीर्षे स्थूणाशीर्षे शिली शिला ।  
 नासा धारकदारु स्यात् पालिकाष्ठं तु धारणा ॥ ४० ॥  
 कोणप्रतिमाहि शिरोविष्टब्धिकरमाढकम् ।  
 सूकरी तूपरिस्थूणा सन्धिकार्ष्टं तु वासिकम् ॥ ४१ ॥  
 द्वाः स्त्री द्वारं पक्षकं तु पक्षद्वारं खड्गिका ।  
 तोरणोऽस्त्री बहिर्द्वारं प्रच्छन्नद्वारमन्तरम् ॥ ४२ ॥  
 कवाटं द्वारबन्धोऽस्य धारके व्याघ्रकोऽस्त्रियाम् ।  
 उत्तराङ्गं तूर्ध्वदारु द्वारस्यैरुण्डकः पुनः ॥ ४३ ॥  
 गृहावग्रहणी देहल्यम्मरोदुम्बरोम्बुरा ।  
 सट्टं सपट्टी तत्पार्श्वे वृकवाला परालिनी ॥ ४४ ॥  
 नासा तु द्वार्यधोदारु शिला नासाविधारिणी ।  
 प्रधानप्रघणालिन्दाः पिण्डकोऽलिन्दवासनौ ॥ ४५ ॥  
 बहिर्द्वारप्रकोष्ठे स्युर्गृहश्रेणी तु वीथिका ।  
 अथ त्रयौ कवाटोऽपि कृवाटोऽप्यरं न पुम् ॥ ४६ ॥



पार्श्वद्वयस्थं तद्युग्ममनीरिति निगद्यतै ।  
 विष्कम्भकेऽस्य गुडको द्रुमशोऽप्यर्गला न षण् ॥ ४७ ॥  
 सूचिस्त्वयोर्गलैषा चेद् द्वारोर्ध्वं तूर्ध्वसूचिका ।  
 मर्कटं मर्कटी सूची विष्कम्भार्थमथाकुटः ॥ ४८ ॥  
 साधारणी कुञ्चिका च द्वास्थ्यन्त्रं तु तालकम् ।  
 एतस्योद्घाटनं यन्त्रं ताल्यपि प्रतिताल्यपि ॥ ४९ ॥  
 अर्गलं द्वारपटलं विदण्डस्त्वर्गला त्रयी ।  
 अस्त्री तु घर्घरोऽट्टादेरधोद्वारकवाटिका ॥ ५० ॥  
 गर्भागारोऽपवरको भ्रमन्तो गृहकोऽल्पकः ।  
 आरोहणं स्यात् सोपानं निश्रेणिस्त्वधिरोहणी ॥ ५१ ॥  
 कोणाश्रौ नर्यणिनं क्ली क्षियोऽश्रिस्तिकोदयः ।  
 सम्मार्जनी शोधनी तन्मलेऽवकरसङ्करौ ॥ ५२ ॥  
 दन्तिका नागदन्ताः स्थुर्लङ्गनी वस्त्रधारणी ।  
 कपोतपाली स्त्री न स्त्री विटक्कोऽथ गवाक्षकम् ॥ ५३ ॥  
 वातायनं गवाक्षश्च रसवत्यां महानसम् ।  
 उद्धानमश्मन्तमधिभ्रयणी चुञ्चिरन्तिका ॥ ५४ ॥  
 हसन्यङ्गारशकटी हसन्यङ्गारधान्यपि ।  
 पिठरः स्थाल्युखा कुम्भिः पिधानं स्यादुदञ्चनम् ॥ ५५ ॥  
 कंटाहः कर्परो लट्ठो मणिकः स्यादलिङ्गारम् ।  
 आष्ट्रः पुंस्यम्बरीषोऽस्त्री कन्दुर्नो स्वेदनी क्षियाम् ॥ ५६ ॥  
 श्रुधीषं पिष्टपचनं मल्लो मल्ली च कोशिका ।  
 वर्धनी तु गलन्त्यालुः कर्करी करकोऽपि च ॥ ५७ ॥  
 भृङ्गारो हेमकरकः करक्को नालिकेरजः ।  
 निपो घटः कुटः कुम्भः करीरः कलशी त्रयी ॥ ५८ ॥  
 घटी पारी कपाली तु त्रयी चोत्तश्च कर्परः ।  
 शालाजिरो वर्धमानः शरावोऽस्त्री दृतिस्तु ना ॥ ५९ ॥  
 खल्वं क्लीषे चर्ममयी त्वालुः करकवर्तिका ।  
 स्नेहपात्रं कुतूः कृत्तिः सैवालपा कुतुपः पुमान् ॥ ६० ॥  
 अवगाहो जलद्रोणिकृष्टिका काञ्चिकाविभृत् ।  
 भद्रकुम्भः पूर्णकुम्भः स्थालं स्यात् कांस्यपात्रकम् ॥ ६१ ॥  
 भाण्डमावपनेऽमत्रं भाजने पात्रमित्युभे ।  
 चर्मकोशं तु कललं करालं तरलं च तत् ॥ ६२ ॥

पेटकः पिटकः पेटा मञ्जूषा सा तु चर्मणा ।  
 वृता तरिः स्त्री तमतो वस्त्रकोशं करोटकम् ॥ ६३ ॥  
 स्यूतः प्रसेवकोऽथ स्यात् समुद्गः सम्पुटः पुटः ।  
 धान्यकोष्ठे कुसूलोऽथ कण्डोलः पिटकः पिटः ॥ ६४ ॥  
 प्रस्फोटनं शूर्पमस्त्री न स्त्री तितउ चालनी ।  
 अयोनिर्मुसलोऽस्त्री स्यादुदूखलरुलूखलम् ॥ ६५ ॥  
 प्रस्फोटनं तु पवनमवघातस्तु कण्डनम् ।  
 फलीकृतस्तण्डुलः स्याद्धान्यानां तु तुषस्त्वचि ॥ ६६ ॥  
 शम्बूकास्तु कणाः सूक्ष्मास्तण्डुलस्य च यो मलः ।  
 शम्बूकः कण्डनं चासौ ज्येष्ठाम्बु तु तदम्बुनि ॥ ६७ ॥  
 गोधूमचूर्णे शमिता चिक्षसो यवचूर्णके ।  
 पृथुकश्चिपिटो लाजाः पुंभूम्नि परिवारकः ॥ ६८ ॥  
 खदिका तु गुडाद्याढ्यलाजसक्तुषु तर्पणम् ।  
 सुस्विन्नभृष्टमृदिता उत्कुञ्चः कल्कपिण्डिकाः ॥ ६९ ॥  
 पिण्डिर्ना पिष्टधानादिचूर्णे गौडी तु मर्मरा ।  
 उलुम्बं बुम्बिका बुम्बी चक्षुष्या सक्तवः कणाः ॥ ७० ॥  
 ते घृतादियुता मन्थः करम्भो दधिसक्तवः ।  
 धानाः स्त्रियो भृष्टयवा दारपत्रस्तु पोलिकः ॥ ७१ ॥  
 पुपस्तु पिष्टकोऽपूपः कोकुन्दाः पिष्टपिण्डिकाः ।  
 उत्कारिका चूर्णपूपे कुलमाषा यवपिष्टकाः ॥ ७२ ॥  
 शमिता त्वम्लदुग्धार्द्रा पक्वा खण्डे घृतोत्तरे ।  
 संयावोऽयं युतश्चूर्णैः खण्डैलामरिचार्द्रकैः ॥ ७३ ॥  
 क्षीराढ्यः शमितापिण्डो घृतपूरो घृते शृतः ।  
 फेनकः शमिता शुक्ला घृतपक्वालपशर्करा ॥ ७४ ॥  
 शङ्कुली त्वायता पिष्टगुडतैलतिलैः कृता ।  
 जीवनाम्नाशनान्धांसि कूरं भक्तं प्रसादनम् ॥ ७५ ॥  
 पाजो वाजोऽप्योदनोऽस्त्री मिस्सा स्त्री दिदिविर्न षण् ।  
 पुन्नपुंसकयोश्चोरं करमाहार्यमित्यपि ॥ ७६ ॥  
 दग्धान्नं मिस्सिटा मिङ्गी परमान्नं तु पायसम् ।  
 क्षैरेयी चाथ मण्डोऽस्त्री रसाग्रोऽथ करोटिका ॥ ७७ ॥  
 द्वागुल्या स्याद्धानाम्लायां द्वागुली मण्डिका समे ।  
 मासराचामनिस्त्रावप्रस्त्रावा भक्तमण्डके ॥ ७८ ॥

वाट्यमण्डो यवैर्भृष्टैर्लाजमण्डोऽन्वितार्थकः ।  
 तिलतण्डुलमाषैस्तु त्रिरसा कृसरा त्रयी ॥ ७६ ॥  
 यवागूरुष्णिका श्राणा पिच्छा सा तु घनाद्रवा ।  
 विलेपी स्याद्विलेप्या च सा पेया तरणान्यथा ॥ ८० ॥  
 खलिः स्त्री तण्डुलैः पिष्टैर्जले पक्वा घनद्रवा ।  
 सौवीरं काञ्चिकं कुण्डमारनालं गृहोदकम् ॥ ८१ ॥  
 अवन्तिसोमं रक्षोघ्नं शुक्ताभिषुतकुञ्जलम् ।  
 गोलकुल्माषसन्धानान्यौदरो मधुरा न षण् ॥ ८२ ॥  
 तद्धान्ययोनि धान्याम्लं तुषाम्बु तुषसंहितम् ।  
 मूलकाद्यैः संहिते स्यान्मूलकादिसुतं न ना ॥ ८३ ॥  
 मूलकच्छदसन्धानं शिण्डाकी स्वादुसुद्रवा ।  
 यन्मस्त्वादि शुचौ भाण्डे सक्षौद्रगुडकाञ्चिकम् ॥ ८४ ॥  
 त्रिरात्रं धान्यराशिस्थं तच्छुक्तं शुद्धमित्यपि ।  
 निष्ठानं तेमनं तच्च व्यञ्जनं स्याद् घृतादि च ॥ ८५ ॥  
 सूपोऽस्त्री प्रहितं सूदोऽप्युपदंशोऽपदंशकः ।  
 स्त्री पकमृष्टे भरुटा सगुडाज्योषणैः पुनः ॥ ८६ ॥  
 वेशवारः पिष्टमांसे पके भूतिस्ततोऽन्यथा ।  
 रसको मांसनिष्काथः पिष्टमांसकृतो रसः ॥ ८७ ॥  
 सोरावासो निर्लवणः परिशुष्कं पुनर्घृते ।  
 सिक्त्वा मांसे मृदूष्णाम्बुपक्वं युक्तं कणादिभिः ॥ ८८ ॥  
 उत्तमं शुष्कमांसं स्याद्वल्बरा त्रय्यथ स्त्रियाम् ।  
 पेशिः शुण्ठः पिचिण्डस्तु निकृत्तोऽवयवः पशोः ॥ ८९ ॥  
 शाकोऽस्त्री हरितं शिम्रुः स्त्री तन्नाले कडम्बकः ।  
 कन्दमस्त्री मूलसस्यं वेशवार उपस्करः ॥ ९० ॥  
 लेह्यं पेयञ्च चूष्यञ्च खाद्यमास्वाद्यमित्यपि ।  
 पञ्चामृतमिदं स्वाद्यं मुक्त्वा त्वन्नं चतुर्विधम् ॥ ९१ ॥  
 त्रिष्वानुताम्रक्षयकारे द्वौ कान्दविकपौपिकौ ।  
 सूपकारे त्वारालिकसूदान्धसिकवल्गवाः ॥ ९२ ॥  
 गुणौदनिकसूपाश्च लवणो लवणोत्कटः ।  
 पक्वं तु रन्धितं सिद्धं भृष्टं पक्वं विनाम्बुना ॥ ९३ ॥  
 प्रणीतमुपसम्पन्नं प्रयस्तं स्यात् सुसंस्कृतम् ।  
 श्लाघ्यं भटित्रं च शूल्यमुक्तं तु पैठरम् ॥ ९४ ॥

सार्पिष्कदाधिकाथं स्यात्सपिर्दध्यादिसंस्कृते ।  
 शीनं स्त्यानं शृतं पक्वं विलीनं विद्रुतं द्रुतम् ॥ ६५ ॥  
 तक्रं कपित्थचाङ्गेरीमरीचाजाजिचित्रकैः ।  
 यत्पक्वं गुडजूषोऽसावलकाम्बलिकोऽपरः ॥ ६६ ॥  
 दध्यम्लो लवणस्नेहतिलमाषविपाचितम् ।  
 अपक्वतक्रं सव्योषचतुर्जातगुडार्द्रकम् ॥ ६७ ॥  
 सजीरकं रसालः स्यान्मार्जिता शिखरिण्यपि ।  
 सा जाजी ङाडिमव्योषं पटे घृष्टं च सट्टकम् ॥ ६८ ॥  
 बलकं स्याद् गुडक्षीरं यमकं तैलसर्पिषी ।  
 त्रिस्नेहं त्रैघृतं मार्जा चतुस्स्नेहं वसान्वितम् ॥ ६९ ॥  
 मधु सर्पिश्च मिथुनं यूषोऽस्त्री यूः पुमान् रसे ।  
 परिवेषणं वर्धनं च प्रतीच्छा पततो ग्रहः ॥ १०० ॥  
 कबलः कबतो आसो गुडः पिण्डो गुडेरकः ।  
 गण्डोरश्च गडोलश्च चर्वणं चूषणं रदैः ॥ १०१ ॥  
 जग्धिस्तु निघसो न्यादो लेपोऽप्यभ्यवहारवत् ।  
 प्रत्यवसानमशनं भोजनं जेमनादने ॥ १०२ ॥  
 स्वदनं परिपत्रं च सग्धिः स्त्री सहभोजनम् ।  
 चूषणं तु रसादानं जिह्वास्वादस्तु लेहनम् ॥ १०३ ॥  
 धीतिस्तु धयनं पानं जक्षा खादनभक्षणे ।  
 कामं निकामं पर्याप्तं प्रकामं च यथेप्सितम् ॥ १०४ ॥  
 पर्याप्तं तु परित्राणं हस्तवारणमित्यपि ।  
 वृत्तिः सुधा च सौहित्यं वृप्तं तु सुहितं त्रिषु ॥ १०५ ॥  
 करम्बः सेकमिश्रात्रे फेला पिण्डेऽधिकोऽभिज्ञते ।  
 खण्डपर्कटमुद्वेगं ताम्बूलं मुखभूषणम् ॥ १०६ ॥  
 अम्बलोर्णं चर्वितेऽस्य चूर्णेऽस्य त्वम्बला रसे ।  
 करङ्को वेडादिकृते पूगताम्बूलभाजने ॥ १०७ ॥  
 स्यात् पूगावपनी गन्त्री कर्त्तर्युद्वेगकर्त्तरी ।  
 भवेत् क्षुरसमुद्वेगं तु त्रिष्वार्कणकरन्धके ॥ १०८ ॥  
 अस्त्री तु पुस्तकं सिन्दूरदेर्दारवभाजने ।  
 चातुरीकं त्रिषु भवेन्नन्दनद्रवभाजने ॥ १०९ ॥  
 नागवल्लीपलाशानां तैलाक्तानां रसातलः ।  
 निष्ठानं वीतकं प्रोक्तं चन्द्रमन्दारचूर्णधृतम् ॥ ११० ॥



वीरस्नाका या तु शरशलाकायन्त्रनिमिता ।  
 पाठार्थमुद्गृहीता स्यात् कबली पत्रपञ्चिका ॥ १११ ॥  
 परिकर्माङ्गसंस्कारः कङ्कतस्तु प्रसाधनः ।  
 प्रसाधनं स्यादभ्यङ्गः सोत्पाताच्छुरिते समे ॥ ११२ ॥  
 उद्वर्तनं तूत्सादनं स्नानं त्वाप्लाव आप्लावः ।  
 उपस्पर्शोऽभिषेकश्च गोसव्यं गोमयेन तत् ॥ ११३ ॥  
 सुगन्धामलकैः स्नानं यत्तल्लक्ष्मीनिकेतनम् ।  
 यत्तु सर्वाषधिस्नानं तन्मङ्गल्यमलोचकम् ॥ ११४ ॥  
 यन्मृत्तिकाऽम्भसा स्नानं दिष्टं देशनिकं च तत् ।  
 ऋषीणां तर्पणं यत्तत् कौलकुल्यं कुलं च तत् ॥ ११५ ॥  
 सिक्खी पटोऽस्त्री सिचयो वासो वसनमंशुकम् ।  
 आच्छादनं निवसनं वसितं वस्त्रमम्बरम् ॥ ११६ ॥  
 चेलं च तच्चतुर्धा स्यात् त्वक्फलक्रिमिरोमजम् ।  
 बालकं क्षौमादिके वस्त्रे फाले कार्पासवावरौ ॥ ११७ ॥  
 कौशेयं कृमिकोशोत्थे राङ्गवं मृगरोमजे ।  
 पत्रोणं धौतकौशेयं महामूल्यं महाधनम् ॥ ११८ ॥  
 अग्निगौचं वक्रवल्लीपदे वज्रांशुकं तथा ।  
 राजावर्तं चित्रपटे राजवर्तो नवश्रियाम् ॥ ११९ ॥  
 अहतं निष्प्रवाणिः स्यात् तन्त्रकं च नवांशुके ।  
 निवीतं प्रावृते धौतयुग्मं तूद्गमनीयकम् ॥ १२० ॥  
 आप्रपदीनं प्रपदव्यापि बाल्कादयस्त्रिषु ।  
 अन्तरीयोपसंव्यानपरिधानान्यधोऽशुके ॥ १२१ ॥  
 चण्डातकं वरस्त्रीणां स्यादर्धोरुकमम्बरम् ।  
 संव्यानमुत्तरीयं क्षौमं सूक्ष्मं दुकूलं स्यात् ॥ १२२ ॥  
 बैकट्यं तु बृहतिका प्रावारश्चोत्तरासङ्गः ।  
 चन्द्रोदय उल्लोचः कदरश्चन्द्रातपो धितानोऽस्त्री ॥ १२३ ॥  
 मशकहरी तु चतुष्की शिरसि क्षिगुष्णीषमस्त्री स्यात् ।  
 काण्डपटः स्यादपटी प्रतिसारायवनिका तिरस्करिणी ॥ १२४ ॥  
 दूष्यं स्थूलं पटकुटी गुणलयनी केणिका तुल्याः ।  
 नालकं नलकं चापि नलिकं चेत्यपि त्रयः ॥ १२५ ॥  
 पर्याया धनुरादीनां कषचेऽप्राणिनाममी ।  
 निचोलः प्रच्छदपटो वरासी स्थूलशाटिका ॥ १२६ ॥

चोली तु शाटिका शाटो वंरकोऽस्त्री द्विखण्डकः ।  
 निशारो हिमसम्पातत्राणे जीर्णे पटश्चरम् ॥ १२७ ॥  
 निचोलः कञ्चुकश्चोलः कूर्पासश्चाङ्गिकोऽस्त्रियाम् ।  
 चीवरं भिक्षुसङ्घाटी कन्थाकन्थटिके समे ॥ १२८ ॥  
 कक्ष्यापटस्तु कौपीनं समौ रत्नककम्बलौ ।  
 विशालस्त्वाविकौरभ्रौ हस्तिकर्णस्तु रोचकः ॥ १२९ ॥  
 शाणी गोणी छिद्रवस्त्रैश्चिरं खण्डलमस्त्रियाम् ।  
 नक्तकः कर्पटो वस्त्रग्रन्थोऽस्त्री नीविरुचयः ॥ १३० ॥  
 कक्षः कच्छो गुह्यबन्धः कक्ष्या पृष्ठे कृतोऽञ्जलः ।  
 वस्त्रान्तस्त्वञ्जलो वस्तिस्त्वक्ली भूम्नि दशा न षण् ॥ १३१ ॥  
 पुष्कलस्तुम्बिका चाथ प्रान्तत्रसरकेसराः ।  
 आकल्पवेषौ नैपथ्यं प्रतिकर्म प्रसाधनम् ॥ १३२ ॥  
 अलङ्कारस्त्वाभरणं भूषणं मण्डनं पुनः ।  
 विभूषणं परिष्कारः कणिका कर्णभूषणम् ॥ १३३ ॥  
 उत्क्षिप्तिका तु कर्णाकस्तालपत्रं तु तालकम् ।  
 कर्णपूरस्तु पुष्पाद्यैस्ताडङ्गो दन्तकादिभिः ॥ १३४ ॥  
 बालिका कर्णपृष्ठस्था कुण्डलं कर्णवेष्टनम् ।  
 मौलिः कोटीर उष्णीषं किरीटं मकुटोऽस्त्रियाम् ॥ १३५ ॥  
 चूडामणिः शिरोरत्नं स्वस्तिकस्तु त्रिकोणकः ।  
 बालपाश्या पारितध्या पत्रपाश्या ललाटिका ॥ १३६ ॥  
 ग्रैवेयकं कण्ठभूषा लम्बनं तु ललन्तिका ।  
 स्वर्णैः प्रालम्बिकाऽथोरस्सूत्रिका मौक्तिकैः कृता ॥ १३७ ॥  
 हारो मुक्तावली स्त्री स्यात्तद्भेदा यष्टिसङ्ख्यया ।  
 देवच्छन्दः शतं साष्टमिन्द्रच्छन्दः सहस्रकम् ॥ १३८ ॥  
 तस्यार्धं विजयच्छन्दो हारस्त्वष्टोत्तरं शतम् ।  
 अर्धं रश्मिकलापोऽस्य द्वादशस्त्वर्धमाणवः ॥ १३९ ॥  
 द्विर्द्वादशोऽर्धगुच्छोऽथ पञ्च हारफलं लताः ।  
 अर्धहारश्चतुष्पष्टिर्गुच्छमाणवमन्दराः ॥ १४० ॥  
 अपि गोस्तनगोपुच्छावर्धमर्धं यथोत्तरम् ।  
 एकावत्यनुकण्ठी च हारः स्यादेकयष्टिकः ॥ १४१ ॥  
 यष्टिर्नक्षत्रमालैका सप्तविंशतिमौक्तिका ।  
 गुडकैर्मणिसोपानं चादुकारश्च हेमजैः ॥ १४२ ॥

हारमध्यस्थितं रत्नं तरलो नायकोऽपि च ।  
 केयूरमङ्गदं भूषा दोर्मूले कङ्कणं करे ॥ १४३ ॥  
 आवापकः पारिहार्यं वलयं कटकोऽस्त्रियाम् ।  
 पादेऽसौ हंसकः स्त्रीणामङ्गुलीयकमूमिका ॥ १४४ ॥  
 साक्षराऽङ्गुलिमुद्रा सा क्षुद्रघण्टा तु किङ्किणी ।  
 शिञ्जिनी ना तुलाकोटिर्मञ्जीरो नूपुरोऽस्त्रियौ ॥ १४५ ॥  
 कटिसूत्रं सारसनं मेखला रशनाऽथ सा ।  
 स्त्रीकट्यां सप्तकी काञ्ची पुंस्कट्यां शृङ्खला त्रयी ॥ १४६ ॥  
 स्त्री चर्त्तिर्वर्णकालेपावनुबोधः प्रबोधनम् ।  
 माष्टिश्चर्चा च चर्चिक्यं समालम्भनमित्यपि ॥ १४७ ॥  
 स्थासको हस्तबिम्बः स्यात् पत्तिच्छेदास्तु राजयः ।  
 चित्रं तमालपत्रं क्ली तिलकोऽस्त्री विशेषकम् ॥ १४८ ॥  
 पत्तिस्तु पत्रकं लेखा बाहुगण्डस्तनादिषु ।  
 पत्राङ्गुलिः पत्ररेखा सा ललाटे ललाटिका ॥ १४९ ॥  
 राढा शोभा ह्यवी रुक् त्विट् सुषमा परमा ह्यविः ।  
 त्रिगन्धमेलात्वक्पत्रैस्त्रिसुगन्धं त्रिजातकम् ॥ १५० ॥  
 चतुर्जातं तदेव स्यान्नागकेसरकेसरैः ।  
 सर्वगन्धमिदं सेन्दुतकोलागरुसिल्हकम् ॥ १५१ ॥  
 लवङ्गपूगतकोलजातीफलहिमांशवः ।  
 पञ्च पञ्चसुगन्धं स्यादथ तकोलकुङ्कुमैः ॥ १५२ ॥  
 कस्तूर्यगरुकर्पूराः सुगन्धो यक्षकदर्दमः ।  
 यावो द्रुमामयोऽलको लाक्षा रक्ता जतु क्रिमिः ॥ १५३ ॥  
 कालानुसार्यं कालेयं जावकं चाप्यथ स्रजि ।  
 मालाङ्किलिरथापीडे वतंसोत्तंसशेखराः ॥ १५४ ॥  
 केशेषु गर्भकं माल्यं प्रालम्बं कण्ठलम्बितम् ।  
 प्रभ्रष्टकं शिखालम्बि पुरोन्यस्तं ललामकम् ॥ १५५ ॥  
 वैकट्यं तिर्यगुरसि स्थितं निर्माल्यमुज्जिते ।  
 संस्कारो गन्धधूपार्घ्यैरपुमानधिवासनम् ॥ १५६ ॥  
 अञ्जनं त्वक्षिसंस्कारः कज्जलं धूमयोनि तत् ।  
 चूर्णानि वासयोगाः स्युः पिष्टातः पटवासकः ॥ १५७ ॥  
 रचना स्यात् परिस्कन्धो भावना वासना समे ।  
 अथोपकरणं सर्वं परिबर्हः परिच्छदः ॥ १५८ ॥

व्यजनं तालवृन्तं स्याद् धवित्रं चर्मणा कृतम् ।  
 आलावर्तस्तु वस्त्रेण चामरं तु प्रकीर्णकम् ॥ १५६ ॥  
 पन्तद्वहः प्रतिग्राहो वालोऽस्त्री दारुणा कृतः ।  
 आसन्दी स्त्री नरि प्रेङ्खो दीपवल्ली तु दीपिका ॥ १५७ ॥  
 दीपवृक्षस्तदाधारो दशा वर्तिरथ स्त्रियाम् ।  
 वर्तिर्गृहमणिर्दीपो गिरीयकगुडौ गिरिः ॥ १५८ ॥  
 दर्पणो मुकुरादशौ कन्दुको गण्डकः समौ ।  
 पादुकाऽनुपदीना स्यादुपानत् पादरक्षिणी ॥ १५९ ॥  
 उपला तु दृष्टपुत्रः शिला माता दृष्टसमाः ।  
 दर्विस्तु कम्बिस्तर्द्धः स्यात् खजाका दारुहस्तकः ॥ १६० ॥  
 विष्टरं त्वासनं पीठं दारुजं वेत्रजं पुनः ।  
 आसन्दी मञ्चकः खट्वापाश्रयो मत्तवारणम् ॥ १६१ ॥  
 शय्या पर्यङ्कपल्यङ्कौ शयनं शयनीयवत् ।  
 प्रस्तरः संस्तरः शय्या रचिता पल्लवादिभिः ॥ १६२ ॥  
 कटः किलिञ्जो वर्णस्तु परिस्तोमः कुथा त्रयी ।  
 नमतं चाप्यास्तरणं प्रस्तरस्तूत्तरच्छदः ॥ १६३ ॥  
 उपधानं तूपबर्हमुच्छीर्षमुपबर्हणम् ।  
 संवापः शयनं स्वापः संवासो वासनं सह ॥ १६४ ॥  
 शयने शयसंवेशाबुपशायोऽन्तिकेशयः ।  
 पर्यादेरथ पर्यायाः परिशायः समन्ततः ॥ १६५ ॥  
 कामध्वजः कामोत्सवः शृङ्गारः कामविक्रिया ।  
 परिरम्भः परिष्वङ्ग आश्लेष उपगूहनम् ॥ १६६ ॥  
 आलिङ्गनमपि क्रोडीकरणं चाङ्गपाल्यपि ।  
 ग्राम्यधर्मः कामकेली रतिर्निधुवनं रतम् ॥ १६७ ॥  
 मेहनं मिथुनत्वं च समे निसनचुम्बने ॥ १६८ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

पातालकाण्डे पुराध्यायः ॥ ३ ॥



## भूताध्यायः ॥ ४ ॥

भूतानि प्राणिनो जीवा जन्तवो जन्यवोऽङ्गिनः ।  
 पुंसः प्राक् त्रिषु गुल्माद्यमुद्भिदुद्भिज्जमुद्भिदम् ॥ १ ॥  
 स्वेदजा दंशयूकाद्या नृपश्वाद्या जरायुजाः ।  
 अण्डजाः पक्षिसर्पाद्याः पुमांस्तु पुरुषो वृषः ॥ २ ॥  
 पूरुषो नाऽप्यथ क्लीबः पण्डः षण्डो नपुंसकम् ।  
 तृतीयाप्रकृतिश्चाथ पोटा स्त्रीपुंसलक्षणा ॥ ३ ॥  
 स्त्री योषिज्जलना योषा वशा सीमन्तिनी वधूः ।  
 वनिता महिला नारी तद्भेदास्तु नितम्बिनी ॥ ४ ॥  
 प्रतीपदर्शिनी वामा प्रमदा भीरुरङ्गना ।  
 अबला भामिनी कान्ता कामिनी वामलोचना ॥ ५ ॥  
 सुन्दरी रमणी रामा वेणिनी चान्वितार्थकाः ।  
 कुमारी कन्यका कन्या किञ्चित्प्रौढा महोदया ॥ ६ ॥  
 अचिरव्यूढा तु वधूः पतिवरा तु स्वयंवरा वर्या ।  
 कुलपालिका कुलस्त्री कुल्याऽथ सती पतिव्रता साध्वी ॥ ७ ॥  
 स्त्रीव्यञ्जनकृता श्यामा चीरिणी तु सुवासिनी ।  
 प्राप्तर्तुर्दिङ्करी राका युवतिस्तलुनी चरी ॥ ८ ॥  
 वधूटी च चिरण्टी च द्वितीयवयसि स्त्रियाम् ।  
 स्वैरिणी घर्षिणी पुंश्चल्यसती कुलटेवरी ॥ ९ ॥  
 बन्धकी पांसुला चर्चा चला नग्ना तु कोट्टवी ।  
 भिक्षुकी श्रमणी मुण्डा तीव्रकोपा तु भामिनी ॥ १० ॥  
 विप्रशिनका त्वीक्षणिका दैवज्ञा प्रश्नवादिनी ।  
 कामुकेच्छुः कामुकी तु वृषस्यन्ती रतार्थिनी ॥ ११ ॥  
 वरारोहोत्तमा नारी सैव स्मन्मत्तक्राशिनी ।  
 कामात् कान्तं याति याऽसावविनीताऽभिसारिका ॥ १२ ॥  
 अभ्यूढा चाधिविन्ना च कृता यस्याः सपत्निका ।  
 वीरपत्नी वीरमार्या वीरमाता तु वीरसू ॥ १३ ॥  
 पतिवन्नी जीवपतिर्विष्यस्ता विधवाऽथ सा ।  
 कात्यायनी द्वितीयं चेद्वयः काषायमन्तरम् ॥ १४ ॥

उदक्या मलवद्वासा आत्रेयी पुष्पवत्यपि ।  
 रजस्वला च मलिना स्त्रीधर्मिण्यतुमत्यपि ॥ १५ ॥  
 ऋतुः पुंस्यार्तवं रक्तं पुष्पं चाथानृतुर्वधूः ।  
 निष्कलाऽऽपन्नसत्त्वा तु स्र्यन्तर्वन्नी च गर्भिणी ॥ १६ ॥  
 अद्यश्चीना तु सा या स्याद्य श्वः प्रसवोन्मुखी ।  
 विजाता तु प्रजाता च प्रसूता च प्रसूतिका ॥ १७ ॥  
 जनुर्जननजन्मानि जनिरुत्पत्तिरुद्भवः ।  
 गर्भाशयो जरायुः स्यादुल्बं च कललोऽस्त्रियाम् ॥ १८ ॥  
 बालस्य नाभिनालायाममरा कालिनीति च ।  
 सूतिमासो वैजननो जीवतोका तु जीवसूः ॥ १९ ॥  
 बिन्दुर्नश्यत्प्रसूतिः स्यादशिश्वी शिशुवर्जिता ।  
 अवीरा निष्पतिसुता किमिला बहुसूतिका ॥ २० ॥  
 कुटुम्बिनी तु गृहिणी पुरन्ध्री मातृकेति च ।  
 वृद्धा पलिकनी प्राज्ञी तु प्रज्ञा प्राज्ञा तु धीमती ॥ २१ ॥  
 उपाध्यायान्युपाध्यायी शूद्रचर्या क्षत्रियीति च ।  
 आचार्यानी च पुंयोगादर्यार्याण्यौ तु जातितः ॥ २२ ॥  
 क्षत्रिया क्षत्रियाणी च शूद्रा चेत्यपि जातितः ।  
 स्यादुपाध्याय्युपाध्यायाऽप्याचार्या च स्वयंकृता ॥ २३ ॥  
 पण्यस्त्री गणिका वेश्या वारस्त्री रूपजीवना ।  
 वारमुख्या सत्कृताऽसौ दूती सञ्चारिणी समे ॥ २४ ॥  
 कुट्टिनी शम्फली चुन्दी वयस्याली सखी सुहृत् ।  
 सैरन्ध्री परवेशमस्था स्वतन्त्रा शिल्पकारिणी ॥ २५ ॥  
 दासी तु चेटिका चेटा वडबा कुम्भधारिका ।  
 जनयित्री जनन्यम्बा माताऽथ भगिनी स्वसा ॥ २६ ॥  
 सा ज्येष्ठाम्बाऽप्यवन्ती च कनिष्ठा कन्यसाम्बिका ।  
 ननान्दा तु स्वसा पत्युः ननन्दा नन्दिनीति च ॥ २७ ॥  
 पत्न्यास्तु भगिनी ज्येष्ठा ज्येष्ठश्चश्रूः कुलीति च ।  
 कनिष्ठा स्यालिका हाली पत्रिणी केलिकुञ्जिका ॥ २८ ॥  
 बीजी तु जनको वप्ता तातो जनयिता पिता ।  
 पितामहः पितृपिता तत्पिता प्रपितामहः ॥ २९ ॥  
 मातुर्मातामहाद्येवं तदूर्ध्वं वृद्धपूर्वकाः ।  
 दम्पत्योर्व्यत्ययान्माता श्वश्रूः स्यात् श्वशुरः पिता ॥ ३० ॥

सहजः स्वसरो भ्राता कनिष्ठोऽवरजोऽनुजः ।  
 पूर्वजस्त्वग्रजो ज्येष्ठः पितृव्याः सहजाः पितुः ॥ ३१ ॥  
 ज्येष्ठतातः पितृज्येष्ठः क्षुल्लतातोऽनुजः पितुः ।  
 स्यालः स्यादनुजः पत्न्यास्तस्याः स्यादबलोऽग्रजः ॥ ३२ ॥  
 देवरो देवदेवानौ मातुर्भ्राता तु मातुलः ।  
 दम्पत्योराजिकोऽन्योन्यो वैमात्रेयो विमातृजः ॥ ३३ ॥  
 समानोदर्यसोदर्यौ सगर्भः सोदरः समाः ।  
 भार्या जाया सहचरी द्वितीया सहघर्मिणी ॥ ३४ ॥  
 सधर्मचारिणी पाणिगृहीती पालुषी बधूः ।  
 पत्नी क्षेत्रं कलत्रं च गृहाः पुंभूम्नि दारवत् ॥ ३५ ॥  
 जाया प्रजावती मातुर्ज्येष्ठभ्रातुः प्रिया बधूः ।  
 स्नुषा बधूर्जनी सूनुर्मातुलानी तु मातुली ॥ ३६ ॥  
 भ्रातृवर्गस्य या भार्या यातरस्ताः परस्परम् ।  
 रुच्यः प्रियः पतिर्भर्ता सेक्ता वरयिता घवः ॥ ३७ ॥  
 पतिर्ननान्दुः कौतूलो नशिको भगिनीपतिः ।  
 जारस्तु स्यादुपपतिर्जामाता दुहितुः पतिः ॥ ३८ ॥  
 वेश्यापतौ विदुर्गकुम्भमुजङ्गविटपल्लवाः ।  
 पुत्रस्तु तनयः सूनुरात्मजो नन्दनोऽङ्गजः ॥ ३९ ॥  
 सुतः पोतश्च पुङ्गवे नरो दुहितरि स्त्रियः ।  
 द्वयोश्च गर्भसन्तानौ प्रसवश्च नरः सदा ॥ ४० ॥  
 तोकापत्ये नपुं स्त्री तु प्रसूतिः सन्ततिः प्रजा ।  
 जामेयभागिनेयौ तु स्वस्त्रीयोऽथ पितृष्वसुः ॥ ४१ ॥  
 पुत्रे पैतृष्वसेयश्च पितृष्वस्त्रीय इत्यपि ।  
 एवं मातृष्वसुश्च द्वौ भ्रात्रीयो भ्रातुरात्मजः ॥ ४२ ॥  
 सौभागिनेयकानीनौ सुभगाकन्ययोः सुतौ ।  
 दास्या दासेयदासेरौ पौत्रलेयोऽसतीसुते ॥ ४३ ॥  
 बन्धुलबान्धकिनेयौ च कौलदेयश्च कौलदेरश्च ।  
 साध्वी तु मिश्रुकी चेत् कौलटिनेयश्च कौलदेयश्च ॥ ४४ ॥  
 पौनर्भवः पुनर्भूज उरस्यस्त्वौरसः स्वजः ।  
 नप्तारौ पौत्रदौहित्रौ प्रतिनप्ता प्रपौत्रकः ॥ ४५ ॥

परम्परस्तु तत्पुत्रस्तत्पुत्रोऽपि परम्परः ।  
 अयं पत्न्ययनोऽपि स्यात् कल्पनस्तु तदात्मजः ॥ ४६ ॥  
 सह प्रवाच्यौ भगिनीभ्रातरौ भ्रातराविति ।  
 मातापितरौ पितरौ मातरपितराविति प्रसूतातौ ॥ ४७ ॥  
 श्वश्रूश्चशुरौ श्वशुराविति पुत्राविति सुतापुत्रौ ।  
 जायापती तु मिथुने जम्पती दम्पती इति ॥ ४८ ॥  
 पितरस्तु पितुर्वश्या मातुर्मातामहाः कुले ।  
 अन्ववायोऽन्वयो वंशः सन्तानो जननं कुलम् ॥ ४९ ॥  
 राजबीजी राजवंश्यो बीज्यो वंश्यश्च वंशजः ।  
 स्युर्ज्ञातयः सगोत्राश्च सपिण्डास्तु सनाभयः ॥ ५० ॥  
 स्वजनो बान्धवो बन्धुः कुटुम्बन्तु सुतादिकम् ।  
 परिवारः परिजनः परिस्पन्दः परिग्रहः ॥ ५१ ॥  
 देहोऽस्त्री स्त्री तनुर्गात्रं क्षेत्रमङ्गं कलेबरम् ।  
 चतुश्शाखं संहननं शरीरं करणं सिनम् ॥ ५२ ॥  
 बन्धः प्रजानुकः कायो भूषणः सञ्चरोऽपि च ।  
 प्राया वयांस्यस्य दशास्तारुण्यं यौवनं वयः ॥ ५३ ॥  
 ज्यानिर्जीर्णिः स्थाविरं तु पात् स्त्री विस्रंसजा जरा ।  
 शिशुवं शैशवं बाल्यं सामुद्रं देहलक्षणम् ॥ ५४ ॥  
 गात्राण्यङ्गानि चास्यांशाः प्रतीकापचनावपि ।  
 अंशस्त्ववयवो भाग एकदेशः कलेति च ॥ ५५ ॥  
 भित्तं शकलखण्डे वा पुंस्यर्धोऽर्धं समेऽशके ।  
 अस्त्री चरणमङ्घ्रिर्ना पत् पादः क्रमणं पदम् ॥ ५६ ॥  
 तद्ग्रन्थी घुटिकौ गुल्फौ प्रपदं चरणाग्रकम् ।  
 गुल्फशीर्षस्त्विन्द्रवस्तिः कूर्चस्त्वङ्गुष्ठकान्तरम् ॥ ५७ ॥  
 पादाङ्गुष्ठाङ्गुलीमण्ड्ये क्षिप्रं क्षेपणमस्त्रियाम् ।  
 प्रसृता जाघनी जङ्घा पिण्डिका स्यात् पिचिण्डिका ॥ ५८ ॥  
 नलतीरं तूरुपर्व जानुरष्टीवदस्त्रियौ ।  
 सक्थि क्लीबं पुमान् बोरुहुरुमूलानि वङ्गणाः ॥ ५९ ॥  
 अङ्गुस्तूपस्थ उत्सङ्गः पीठीवं त्वण्डमूलकम् ।  
 पायुस्तु ना गुदापाने त्रिवलीकं बुलिश्च्युतिः ॥ ६० ॥



शङ्कुर्मैढः शोफकोशौ शिशनं मेहनशोफसी ।  
 पुषो भगं कामपदमक्ली योनिश्च्युतिर्बुलिः ॥ ६१ ॥  
 उक्तद्वयमुपस्थोऽस्त्री गुह्यप्रजनने नपुम् ।  
 सीवन्यस्मादधःसूत्रं गुह्यमध्यं गुडो मणिः ॥ ६२ ॥  
 धारका गुह्यधारायां पुष्फिका गुह्यजे मले ।  
 अस्त्रियो मुष्ककोशाण्डाः फेलुको वृषणोऽण्डुकः ॥ ६३ ॥  
 काञ्चीपदं कलत्रं च कटिः श्रोणिः ककुद्मनी ।  
 पुरोभागोऽस्य जघनो नितम्बोऽपरभागकः ॥ ६४ ॥  
 ऊखौ पुंसि कटिप्रोथौ पूलकौ च स्फिचौ स्त्रियौ ।  
 कुकुन्दरे कटीकूपौ कटौ तु कटिशीर्षकौ ॥ ६५ ॥  
 वंशस्तु पृष्ठमध्यास्थि (मूलभागोऽस्य तु त्रिकम्) ।  
 मूत्राशयो वस्तिरक्ली नाभिर्नाभी प्रतारिका ॥ ६६ ॥  
 कुक्षिको मलुकस्तुन्दं जठरं चोदरं न ना ।  
 अवलम्बलम्भौ तु मध्यमो मध्यमस्त्रियाम् ॥ ६७ ॥  
 हृदयं हृदुरो वक्षः स्तनो वक्षसिजः कुचः ।  
 स्तनाग्रे पिप्पलं वृन्तं चूचुकं मेचकं शिखा ॥ ६८ ॥  
 न ह्री कक्षा बाहुमूलं पार्श्वमस्त्री तयोरधः ।  
 पश्चिमाङ्गं तनोः पृष्ठमंससन्धी तु जघुणी ॥ ६९ ॥  
 उल्लखलं तु सन्धिः स्यात् कक्षाया वङ्गणस्य च ।  
 कण्ठेगुडः कण्ठमणिरंसान्तौ पीठबन्धनौ ॥ ७० ॥  
 स्कन्धो दोशिशखरोऽसोऽस्त्री बाह्या बाहुभुजौ न षण् ।  
 दोर्न स्त्री करपोणिर्ना हरणः करणः प्लवः ॥ ७१ ॥  
 प्रवेष्टश्च कफोण्यां तु कूर्परः कफणिर्न षण् ।  
 प्रगण्डः कूर्परादूर्ध्वं प्रकोष्ठः कूर्परादवाक् ॥ ७२ ॥  
 मणिबन्धो मणिः पाणिमूले पाणौ करः शयः ।  
 पञ्चशाखस्तलो हस्तस्त्वर्जनी तु प्रदेशिनी ॥ ७३ ॥  
 अनामिका तु सावित्री कनिष्ठा तु कनीनिका ।  
 ज्येष्ठा तु मध्यमाऽङ्गुष्ठस्त्वङ्गुलोऽथाङ्गुलिः स्त्रियाम् ॥ ७४ ॥  
 करशाखाऽथ करभो मध्यं मणिकनिष्ठयोः ।  
 तीर्थानि हस्तावयवा नखरस्तु नखोऽस्त्रियाम् ॥ ७५ ॥

पुनर्भवः पाणिरुहो महाराजः पुनर्भवः ।  
 खरुलः करजश्चाथ स प्रवृद्धः स्मराङ्कुशः ॥ ७६ ॥  
 चपेटश्चर्पटस्तालः प्रहस्तः प्रतलस्तलः ।  
 षट् ते तताङ्गुले हस्ते न्युञ्जेऽस्मिन् प्रसृते करे ॥ ७७ ॥  
 तौ संहतौ संहतलः सोऽञ्जलिः करभावपि ।  
 प्रसृते तु द्रवाधारे गण्डूषश्चुलुकश्चुलः ॥ ७८ ॥  
 पताकः कुञ्चिताङ्गुष्ठे संश्लिष्टप्रसृताङ्गुलौ ।  
 अक्लीबौ मुष्टिमुस्तू द्वौ सङ्ग्राहो मुचुटिः खियाम् ॥ ७९ ॥  
 घण्टाङ्गुष्ठेन भिन्ना सा खेटकस्त्वर्धमुष्टिकः ।  
 प्रदेशतालगोकर्णा वितस्तिः स्त्री यथाक्रमम् ॥ ८० ॥  
 तर्जन्यादिभिरङ्गुष्ठे वितते विततैः सह ।  
 अवटोमनहस्तः स्यात् सप्रकोष्ठं तताङ्गुलिः ॥ ८१ ॥  
 दग्नद्वयसमात्रास्तु जान्वादेस्तत्तदुन्मिते ।  
 व्यायामो न्यग्रोधो व्यासश्च भुजौ प्रसारितौ तिर्यक् ॥ ८२ ॥  
 त्रिषु तु परे चत्वारः पौरुषमुद्गाहुपुम्माने ।  
 गलो निगरणः कण्ठो गरो ग्रीवा तु कन्धरा ॥ ८३ ॥  
 शिरोधरावशुषिरा शिरोधिर्व्यापलण्डिका ।  
 कम्बुग्रीवा त्रिरेखा सा शिरःपीठः कृकाटिका ॥ ८४ ॥  
 घाटाऽप्यवदुरक्लीब उत्तमाङ्गं पुनः शिरः ।  
 उष्णीषं शीर्षमक्षत्रं पुंसि मूर्धा च मस्तिकः ॥ ८५ ॥  
 मुण्डोऽस्त्री मस्तकोऽप्यस्त्री मुखं तु वदनं घनम् ।  
 तेरं तुण्डं वक्त्रमास्यमाननं च द्विजालयम् ॥ ८६ ॥  
 ओष्ठस्याधस्तु चिबुकं चुबुकं चबुकं च तत् ।  
 अधरस्त्वधरोष्ठः स्यादोष्ठो दन्तच्छदोऽपि च ॥ ८७ ॥  
 दन्तवर्णं च तत्प्रान्तौ सूकणी दशनाः पुनः ।  
 रदनाः खादना दन्ता दंशा मल्ला रदा द्विजाः ॥ ८८ ॥  
 मध्यदन्ता राजदन्ता दंष्ट्रा तत्पार्श्वयोर्द्वयोः ।  
 तत्पार्श्वयोः स्थिता दन्ता जम्भास्तालु तु काङ्कुदम् ॥ ८९ ॥  
 रसज्ञा रसना जिह्वा राजिः सूनाऽप्यधः स्थिता ।  
 गण्डो गल्लः कपोलश्च तत्परा तु हनुर्न षण् ॥ ९० ॥

वक्रो नकुटकं घ्राणं घोणा नासा विघूणिका ।  
 शिङ्गाणी नासिका चाथ घमनौ नासिकापुटौ ॥ ६१ ॥  
 नासाग्रे दृष्टिबन्धोऽथ शिङ्गाणो नासिकामलः ।  
 पिण्डूषः कर्णजमलः कर्णः शब्दग्रहः श्रवः ॥ ६२ ॥  
 पैण्डूषोऽस्त्री श्रुतिः श्रोत्रं श्रोतश्च श्रवणं श्रवः ।  
 पालिस्तु कर्णलतिका वेष्टनं कर्णशङ्कुली ॥ ६३ ॥  
 ईक्षणं नयनं चक्षुरक्षि लोचनमम्बकम् ।  
 दृष्टिर्दृक् चाथ न पुमांस्तारकाक्षः कनीनिका ॥ ६४ ॥  
 बल्गु पद्म च दृग्लोमिन् दृक्छदो वर्त्मवर्त्मनी ।  
 बिडालको नेत्रपिण्डो दूषिका त्वक्षिजं मलम् ॥ ६५ ॥  
 ललाटमलिकं गोधिः स्त्री तत्प्रान्तौ तु शङ्खौ ।  
 भूर्मिल्लिकाऽथ शिरसः पृष्ठे नापितकोलिका ॥ ६६ ॥  
 जटुले कालकः पिप्लुस्तिलके तिलकालकः ।  
 तनूरुहं रोम लोम केशाः शिरसिजाः कचाः ॥ ६७ ॥  
 बालाः कञ्जास्तीर्थवाहाः कुन्तलाश्च शिरोरुहाः ।  
 कुञ्चितास्ते कर्कराला बर्बरा अलका अपि ॥ ६८ ॥  
 ते ललाटे भ्रमरकाः कुरुला भ्रमरालकाः ।  
 पर्यया स्याद्वल्लरीका मल्लर्या मल्लपटिः क्षुवः ॥ ६९ ॥  
 केशकूटस्तु धन्मिल्लः कबरी कर्परी समे ।  
 चोचुस्तु बालकूर्चालः सीमन्तः केशपद्धतिः ॥ १०० ॥  
 तद्ग्रन्थिः सन्धितोऽथ प्ता जालिनी गरुडा जटा ।  
 प्रलोभ्यं तु शिरस्यं च शीर्षण्यं चामलाः कलाः ॥ १०१ ॥  
 चूडा केशी केशपाशी शिखण्डी कमुजा शिखा ।  
 बालानां सा काकपक्षः शिखण्डश्च शिखण्डकः ॥ १०२ ॥  
 श्मश्रु तु व्यञ्जनं चोटः समे शिङ्गाणशिङ्गिनी ।  
 त्वक् स्त्री छदिस्तनुः कृत्तिः संछादन्यप्यसृग्धरा ॥ १०३ ॥  
 रसस्तु घनधातुः स्यादात्रेयः षड्रसासवः ।  
 मूलधातुर्बहिस्तो महाधातुरसृक्करः ॥ १०४ ॥  
 रुधिरं लोहितं रक्तमस्रं क्षतजमासुरम् ।  
 राक्थं शोष्यं मांसकरं रसतेजो रसोद्भवम् ॥ १०५ ॥

आग्नेयं प्राणदं विस्त्रं वासिष्ठं शोणितासृजी ।  
 मांसं तु काश्यपं क्रव्यं तरसं पललं पलम् ॥ १०६ ॥  
 रक्ततेजो रक्तभवं पिशितं कीनमामिषम् ।  
 मेदस्करं च मेदस्तु पलतेजः पलोद्भवम् ॥ १०७ ॥  
 विस्त्रमस्थिकरं स्नेहवरं गौतममित्यपि ।  
 अथास्थि कीकसं विडुं कललं क्रूरमाढिकम् ॥ १०८ ॥  
 कुल्यं मेदोभवं मेदस्तेजो मज्जाकरं बलम् ।  
 भारद्वाजं श्रुदयितं सारसङ्घातकर्कराः ॥ १०९ ॥  
 मज्जा स्त्री कौशिकं सूक्ष्ममस्थितेजोऽस्थिसम्भवम् ।  
 अस्थिस्नेहो वीर्यकरो मज्जतेजस्विनौ बली ॥ ११० ॥  
 रेतो बीजं वरं वीर्यं हर्षजं स्नेहु पौरुषम् ।  
 शुक्लं प्रधानधातुश्च धातवोऽमी नवाष्ट वा ॥ १११ ॥  
 तिलकं छोम गोर्दं तु मस्तिष्को मस्तुलुङ्गकः ।  
 पेशिर्मांसलताऽथ द्वौ वृक्ष्यौ पार्श्वगतौ गुडौ ॥ ११२ ॥  
 अस्त्री परीतदान्त्रं स्यात् कालखण्डं पुनर्यकृत् ।  
 गुल्मः ग्रीवा च डिम्बः स्यादष्ट्रीला गर्भसम्पुटः ॥ ११३ ॥  
 अग्रमांसं तु हृदयं हृद्वसा त्वामिषो रसः ।  
 कङ्कालोऽस्त्री तनोरस्थि करङ्कोऽप्यस्थिपञ्चरम् ॥ ११४ ॥  
 पार्श्वस्य बङ्क्रिः पर्वस्त्री पृष्ठस्यास्थि कशेरुना ।  
 कर्परो ना करोटिः स्त्री कपालोऽस्त्री शिरोऽस्थिनि ॥ ११५ ॥  
 शाखास्थि नलकं जानोरष्टी स्यात् कूर्परस्य च ।  
 धमनी त्वीलिका नाली सिरा दोषप्रणालिका ॥ ११६ ॥  
 ग्रीवायास्तु शिरा मन्या महास्नायुस्तु कन्धरा ।  
 नखास्तु स्नसा स्नावः स्नाय्वना सन्धिबन्धनम् ॥ ११७ ॥  
 लसीका लसिका रक्तरसमांसविपाकजाः ।  
 पूयं तु कुणपं दूष्यं पुरीषं शमलं शकृत् ॥ ११८ ॥  
 उच्चारो विण्ण ना गूथो वर्चस्को मलमस्त्रियाम् ।  
 विष्ठा चाप्यथ लण्डोऽस्त्री विष्ठा राजियुता दृढा ॥ ११९ ॥  
 प्रस्रावो देहवारि स्थान्मूत्रमेकाङ्गुलं च तत् ।  
 स्रुणिका स्यन्दिनी लाला मलं किट्टं च न स्त्रियाम् ॥ १२० ॥



पित्तं मायुर्नरि श्लेष्मा बलासः खेटकः कफः ।  
 क्षुत् स्त्री क्षुतः क्षवः पुंसि प्रतिश्यायस्तु पीनसः ॥ १२१ ॥  
 दशथुः परितापः स्याद् ग्लानिः स्त्री ग्लवथुः पुमान् ।  
 शोफोऽस्त्री श्वयथुः शोथः पादस्फोटो विपादिका ॥ १२२ ॥  
 स्फोटकः कीलको गण्डो विस्फोटः पिटका त्रयी ।  
 खसः पुमान् स्त्रियः कच्छूपामपामाविचर्चिकाः ॥ १२३ ॥  
 कण्डूकण्डूतिकण्डूयाः खर्जूः कण्डूयने स्त्रियः ।  
 यक्ष्मा यक्ष्मः क्षयः शोषः कोठः कुष्ठं च मण्डलम् ॥ १२४ ॥  
 श्वित्रं श्वेतोऽत्र चक्रं तु दद्रुः स्त्री मुखजः पुनः ।  
 पुंढलोऽपि वरण्डोऽपि व्यङ्गो नीलं वृषन्मुखे ॥ १२५ ॥  
 मङ्कुस्तु सिद्धम् सिद्धं च केशघ्नं त्विन्द्रलुप्तकम् ।  
 उद्गालो वमथूद्गारौ वान्तिः प्रच्छर्दिका वमिः ॥ १२६ ॥  
 म्लिणिका वातसञ्चारो हिक्का हेक्का च हिक्किका ।  
 उच्छ्वासरोधो योऽकस्मात् क्राथोऽसौ क्रथनं क्षणम् ॥ १२७ ॥  
 अश्मरी मूत्रकृच्छ्रं स्यात् प्रमेहस्त्वतिमूत्रतः ।  
 आनाहो मलविष्टम्भ उत्थानं तु मलस्रुतिः ॥ १२८ ॥  
 नातिभिन्नस्त्वतीसारो ग्रहणी स्त्री प्रवाहिका ।  
 गलगण्डो गण्डमालो रोहिणी तु गलाङ्कुरः ॥ १२९ ॥  
 गुल्मः स्यादुदरग्रन्थिः सीवनीजो भगन्दरः ।  
 शम्बूकावर्त एष स्यात् त्रिदोषोत्थोऽथ पित्तजः ॥ १३० ॥  
 स्यादुष्ट्रग्रीवकोऽथ स्त्री परिस्त्रावी कफोद्भवः ।  
 अशौं दुर्नाम वृद्धिस्तु कुरण्डआण्डवर्धने ॥ १३१ ॥  
 उपदंशो लिङ्गशोफ उदावर्तो गुदग्रहः ।  
 नेत्ररुक् कामला स्त्रीषं कुम्भः स्यात् सा महत्तरा ॥ १३२ ॥  
 स्त्रीपदः पदवल्मीको गतिर्नाडीव्रणः पुमान् ।  
 अर्बुदो मांसकीलः स्यात् पृष्ठग्रन्थिर्गुण्डो गड्डः ॥ १३३ ॥  
 मुपः कुक्कुट एकाङ्गग्रहश्च वरुणग्रहः ।  
 गजे ज्वरस्य नामानि सिंहे तोये च सोऽण्डिकः ॥ १३४ ॥  
 उष्ट्रे लसोऽमितापोऽश्वे व्याघ्रे पोतो गवीश्वरः ।  
 बिडाले कणकः पोत्रिण्यलसः छर्दनः शुचिः ॥ १३५ ॥

क्रमाद्धारिद्रेन्द्रमदौ मृगरोगौ पपा ततः ।  
 महिषे मत्स्यमृगयोः खगे चाक्षेपकोऽनिले ॥ १३६ ॥  
 धरण्यां करकोत्पाटावुद्भिजे पाण्डुवर्णकः ।  
 मारिर्मसूरी रुम्भेदाः शूलाद्या विद्रधिर्न षण् ॥ १३७ ॥  
 व्याधिव्याप्यामया माथरोगामा देहमर्दनः ।  
 सन्तापोऽपाटवं मान्द्यमाकुल्यं रुमुजे स्त्रियौ ॥ १३८ ॥  
 उपचर्या चिकित्सा स्याल्लङ्घनं त्वपतर्पणम् ।  
 कुशी भग्नास्थिबन्धः स्यादरिष्टो दंशबन्धनम् ॥ १३९ ॥  
 पट्टस्तु व्रणबन्धः स्यान्नस्यं नस्तं च नावनम् ।  
 अङ्गुल्यग्रेण चूर्णद्यैर्घर्षणं प्रतिसारणम् ॥ १४० ॥  
 जायुः पुंस्यगदस्तन्त्रं भैषज्यौषधभेषजम् ।  
 काथः कषायो निर्यूहः फाण्टोऽतिकाथजो रसः ॥ १४१ ॥  
 काथादेस्तु पुनः काथाद् घनीभावो रसक्रिया ।  
 वार्त पाटवमारोग्यं सङ्गथं स्वास्थ्यमनामयम् ॥ १४२ ॥  
 त्रिष्वतः पटुरुल्लाघो वार्तः कल्यो निरामयः ।  
 रोगहार्यगदङ्कारो भिषग्वैद्यश्चिकित्सकः ॥ १४३ ॥  
 निदानज्ञस्तु दोषज्ञ आयुर्वेदी तु शास्त्रवित् ।  
 आतुरोऽभ्यमितोऽभ्यान्तो विकृतो व्याधितोऽपटुः ॥ १४४ ॥  
 आमयावी समौ ग्लास्तुग्लानौ पामनकच्छुरौ ।  
 वातार्शोदद्गुमन्तः स्युर्वातलार्शसदद्गुणाः ॥ १४५ ॥  
 श्लेष्मसूः श्लेष्मलः खेटी सातिसारोऽतिसारकी ।  
 किलासी सिध्मलो वृद्धनाभौ तुन्दिभतुन्दिनौ ॥ १४६ ॥  
 खल्वाटः खलतिर्बन्धुः शिपिविष्टैन्द्रलुप्तिकौ ॥ १४६ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

पातालकाण्डे भूताध्यायः ॥ ४ ॥

चतुर्थः पातालकाण्डः समाप्तः ॥ ४ ॥

## ५. अथ सामान्यकाण्डः

गणाध्यायः ॥ १ ॥

पूगप्रकरसङ्घातविसरव्रातसञ्चयाः ।  
 वारस्कन्धगणस्तोमसमवायचयव्रजाः ॥ १ ॥  
 सन्दोहनिबहव्यूहसमूहनिकराकराः ।  
 समुदायः समुदयो निकुरुम्बं कदम्बकम् ॥ २ ॥  
 वृन्दं जातं चक्रवालं जालकं पेटकं जटा ।  
 धान्यादिवृन्दे कूटोऽस्त्री राशिपुञ्जोत्करा नरिः ॥ ३ ॥  
 वृन्दे तिरश्चां यूथोऽस्त्री निकायस्तु सधर्मणाम् ।  
 सङ्घसार्यौ तु जन्तूनां वर्गस्तु सदृशां गणे ॥ ४ ॥  
 पशूनां समजोऽन्येषां समाजो धीमतां समा ।  
 उद्विज्जानां तु षण्डोऽस्त्री स्कन्धोऽश्वनरहस्तिनाम् ॥ ५ ॥  
 पटल्यपुं सुश्लिष्टानां सजातीयगणे कुलम् ।  
 शौककापोतशावाद्याः शुकादीनां गणे नपुम् ॥ ६ ॥  
 क्ली गोत्रप्रत्ययान्तेभ्यः स्यादौपगवकादिकम् ।  
 माणवानां तु माणव्यं बाढव्यं तु द्विजन्मनाम् ॥ ७ ॥  
 राजन्यकं मानुष्यकं राजकं च पृथक् पृथक् ।  
 गर्भिणं यौवनं तासां गाणिक्यं गणिकागणे ॥ ८ ॥  
 जनबन्धुगजग्रामसहायानां गणे स्त्रियः ।  
 जनताबन्धुतेत्याद्या बाढवं बडवागणे ॥ ९ ॥  
 हास्तिकमौष्ट्रकमौक्षकमौरभ्रकमाजकं गजादीनाम् ।  
 एवं धैनुकवात्सकमाश्वीयं त्वाश्वमश्वानाम् ॥ १० ॥  
 सबर्मणां कावचिकं पादातं पादचारिणाम् ।  
 आपूपिकं शाष्कुलिकमित्यादिकमचेतसाम् ॥ ११ ॥  
 कैदारिकं तु कैदार्यं क्षैत्रं कैदारकं समम् ।  
 केशानां कैशिकं कैश्यं खल्या तु खलिनी समे ॥ १२ ॥  
 भैक्षसाहस्रकारीषवार्मणानि च तद्गणे ।  
 रथकट्या तु रथ्या स्याद् गोत्रा गव्या च गोगणे ॥ १३ ॥

धूम्या वात्या पाश्या हल्या गल्या नट्या वन्या तृण्या ।  
 पृष्ठ्यं तत्तद्वृन्दे सर्वं पार्श्वं वृन्दे पर्शूनां स्यात् ॥ १४ ॥  
 मिथुनं द्वितयं द्वैतं द्वयं द्वन्द्वं युगं यमम् ।  
 यमलं युगलं युग्मं युतकं च द्वयोर्गणे ॥ १५ ॥  
 त्रयं त्रयाणां त्रितयं मिथुनं तद्वति त्रिषु ।  
 स्त्रीपुंसयोस्तु मिथुनं कशिपुः स्यन्ननवस्त्रयोः ॥ १६ ॥  
 औशीरं शय्यासनयोलिङ्गं बुद्ध्यादिसङ्गतौ ।  
 ग्रामः परोऽस्त्राद्विषयाद् (गुणाद्) भूतेन्द्रियार्थकात् ॥ १७ ॥  
 पक्षः पाशश्च हस्तश्च केशार्थेभ्यः परो गणे ।  
 पशूनां गोयुगं युग्मे तत्तदाह्वयपूर्वकम् ॥ १८ ॥  
 गणपूरणं गणतिथं पूगतिथं चैवमेव सङ्गतिथम् ।  
 बहुतिथिसंवत्सरतममासतमान्यर्धमासतमम् ॥ १९ ॥  
 यावतिथैतावतिये तावतिथं कतिथमपि च कतिपयथम् ।  
 पञ्चमसप्तमनवमान्यष्टमदशमद्वितीयानि ॥ २० ॥  
 षष्ठं प्रथमतृतीये तुरीयतुर्ये चतुर्थञ्च ।  
 द्वादशमेकादशमिति रूपं स्याद् विंशतेरर्वाक् ॥ २१ ॥  
 विंशं विंशतितममेकविंशमिति वत्परं द्विधा सर्वम् ।  
 षष्टितममिति वदेकं रूपमसङ्ख्यादिषष्ट्यादेः ॥ २२ ॥  
 शततममेकशततमं सहस्रतममिति च सर्वमेकविधम् ।  
 ओजमयुग्मं युग्मं युगिति द्वितीयतुर्यादि ॥ २३ ॥  
 त्रिष्वेते पूरणार्थाः स्युः शब्दा गणतिथादयः ।  
 आवलिः पद्धतिः पङ्क्तिरालिलेखा च मालिका ॥ २४ ॥  
 एकादयश्च सङ्ख्येये शब्दाः प्राग्विशतेस्त्रिषु ।  
 द्वित्रा द्वौ वा त्रयो वा स्युरेवं त्रिचतुरा अपि ॥ २५ ॥  
 चतुःपञ्चाः पञ्चषाश्च षट्सप्ताद्याश्च तादृशाः ।  
 स्त्री पङ्क्तिर्विंशतिस्त्रिंशच्चत्वारिंशच्च पञ्चाशत् ॥ २६ ॥  
 षष्टिः सप्तत्यशीतिश्च नवतिश्च दशोत्तराः ।  
 क्रमेणाथ परेणाथ परे दशगुणोत्तराः ॥ २७ ॥  
 शतं सहस्रमयुतं नियुतं प्रयुतार्बुदे ।  
 न्यबुवं बुन्दस्त्रवे च निस्त्रव शङ्खमम्बुजम् ॥ २८ ॥



समुद्रो मध्यमन्तं च परार्धं च यथाक्रमम् ।  
 परं परार्धाद् द्विगुणमथ स्त्री कोटिरर्धदे ॥ २६ ॥  
 व्यत्यासेन च दृश्येते नियुतप्रयुते कचित् ।  
 वृन्दादिषु तु षट्स्वन्ये निखर्वं बहुमक्षितम् ॥ ३० ॥  
 व्योम चान्तश्च सर्वश्च समुद्राद्यास्तु वा त्रिषु ।  
 अन्ये त्वाहुः शतं कोटिः शङ्कुर्वृन्दं महागुणः ॥ ३१ ॥  
 पद्मं महाम्बुजं चेति क्रमास्तक्षगुणोत्तरम् ।  
 सहस्राणां शते लक्षा लक्षं च नियुतञ्च तत् ॥ ३२ ॥  
 पङ्क्त्यादयः स्युः संख्यायां संख्येयेषु च वस्तुषु ।  
 संख्यायां द्वयेकबहुताः संख्येयेषु सदैकता ॥ ३३ ॥  
 तद्यथा विंशतिर्गावः स्वावृत्तौ जातु नैकता ।  
 तद्यथा विंशतिर्विप्रास्तिस्रो विंशतयो भटाः ॥ ३४ ॥  
 बहुव्रीहौ बहुवचो वाच्यलिङ्गं च तद्यथा ।  
 उपविंशैर्भुजैर्भुक्तमुपत्रिंशा अजा इति ॥ ३५ ॥  
 कला गणनसंख्याने हननं ताडनं समे ।  
 वर्गस्तावत्कृतिश्चेति तावत्कृत्वः कृतेर्द्वयम् ॥ ३६ ॥  
 तन्मूले तु पुमान् हेतुर्गच्छा वाञ्छितराशयः ।  
 गण्डः कपर्दाश्चत्वारस्ते बोधो पञ्च तद्द्वयम् ॥ ३७ ॥  
 बिन्दुकोऽस्त्री तद्द्वये तु पणपाणिकपादिकाः ।  
 क्रमात्ततोऽङ्गजो रुच्यः कार्षिकश्च चतुर्गुणाः ॥ ३८ ॥  
 कार्षापणः कार्षिकः स्यात् स षोडशपणः कचित् ।  
 लोहे विंशतिमाषोऽसौ कार्षिके ताम्रिके पणः ॥ ३९ ॥  
 ताम्रकर्षकृता मुद्रा कचित् कार्षापणः पणः ।  
 स एव चाधिकेत्युक्ते धानका तत्तुष्टयम् ॥ ४० ॥  
 ता द्वादश सुवर्णोऽस्त्री निष्को दीनार इत्यपि ।  
 साशीतिपणसाहस्रो दण्ड उत्तमसाहसः ॥ ४१ ॥  
 त्रसरेणुभिरष्टामिलिक्षा सैव मरीचिका ।  
 रथरेणुश्च रेणुश्च तस्तिस्त्रो राजसर्षपः ॥ ४२ ॥  
 धुरणश्च यवाग्रश्च ते त्रयो गौरसर्षपः ।  
 तेऽष्टौ यवः षोडश तु यवा माषोऽथवा त्रिभिः ॥ ४३ ॥

यवैर्गुञ्जा पञ्च गुञ्जा माषः कुप्ये तु सप्त ताः ।  
 रूप्यमाषो द्विगुञ्जो वा धरणं षोडशैव ते ॥ ४४ ॥  
 शतमानं तु दशभिर्धरणैः पलमेव च ।  
 माषस्तण्डुलमात्रो वा हेम्नस्तैरष्टभिः पणः ॥ ४५ ॥  
 निष्कोऽस्त्री विंशतिपणस्तेऽष्ट वा दश वा पलम् ।  
 यः पञ्चकृष्णलो माषः कुप्ये वा सप्तकृष्णलः ॥ ४६ ॥  
 तौ द्वौ माषावर्णिका स्याज्जोहितीकं त्रिमाषकम् ।  
 शाणो मण्डः पिचूलं च माषाः स्युश्चतुरादयः ॥ ४७ ॥  
 मक्षुणं सप्तमाषं स्यादण्डिका तच्चतुर्थवा ।  
 द्रक्षुणं द्रक्षुमं कोलं वटकं चाष्टमाषके ॥ ४८ ॥  
 तृतीये ध्वानका शाणभागे मापास्तु षोडश ।  
 सुवर्णोऽक्षः पिचुः पाणिः कर्षोऽस्त्री क्रोडबिन्दुके ॥ ४९ ॥  
 बिडालपादकं हंसपदं ग्रासग्रहं तलम् ।  
 शतमानं तु कर्षे द्वे शुक्तिरष्टमिका न ना ॥ ५० ॥  
 ते द्वे चतुर्थिका वा क्ली निक्कुञ्च्याज्यपलानि च ।  
 बिल्वः प्रकुञ्चं मुष्टिश्च हेम्नोऽक्षे विस्तवारटौ ॥ ५१ ॥  
 पादिकं ताम्रकर्षं स्यादिन्दुः स्याद्रजते पले ।  
 कुरुविस्तः पले हेम्नः प्रसृतोऽस्त्री द्विमुष्टिके ॥ ५२ ॥  
 प्रसृतौ द्वावञ्जलिः स्यात् कुडपो वाहिकोऽध्युषः ।  
 तौ द्वौ मान्यष्टमानं च ते द्वे प्रस्थः स कुप्यके ॥ ५३ ॥  
 द्वात्रिंशत्पलकोऽन्येषां द्वादशैव पलानि सः ।  
 चतुष्प्रस्थः पुना राशिर्महोद्रेको बृहाणकः ॥ ५४ ॥  
 पात्रं शूर्पावरं पिष्टं सेहिका द्व्यष्टकोऽस्त्रियाम् ।  
 कंसं चाथ चतुष्के स्युर्द्रोणोऽस्त्री कलशो घटः ॥ ५५ ॥  
 अमर्णं नल्वलं शौर्पमुन्मानं तद्द्वयं पुनः ।  
 कुम्भः शूर्पोऽस्त्रियां तौ द्वौ गोणी वाहस्तु तद्द्वयम् ॥ ५६ ॥  
 तौ द्वौ खारी परे त्वेनां विदुः कुम्भी परे पुनः ।  
 खारीं कंसयुगेनान्ये मानीं वाहं परे विदुः ॥ ५७ ॥  
 वाहं केचिच्चतुःखारीं खारीभागं च गोणिकाम् ।  
 वाहं प्रस्थद्वयं केचित् कुम्भानां विंशतिर्जटी ॥ ५८ ॥

दश कुम्भाः पाञ्चमिकः कुम्भोऽयमिति केचन ।  
 धारणं तु पलान्यष्टौ हेम्नस्ताम्रस्य सप्ततिः ॥ ५६ ॥  
 दशान्येषां शतं मानं सार्धं रुष्यपलैस्त्रिभिः ।  
 तुला पलशतं तास्तु दशर्क्षं धटिकोऽस्त्रियाम् ॥ ६० ॥  
 तौ तु द्वौ शाकटो भारः शाकटीनः शलाटवत् ।  
 भारा दश समं सङ्गं धारभारं च शाकटम् ॥ ६१ ॥  
 आचितं द्वयाचितं होढं हेलकं समकं समम् ।  
 बाहितं भारितं चाष्टावृक्षादशगुणाः क्रमात् ॥ ६२ ॥  
 माषः शाणस्तलं मुष्टिरञ्जलिः प्रस्थ आढकः ।  
 द्रोणो गोणी च खारी च क्रमादेतच्चतुर्गुणम् ॥ ६३ ॥  
 पाय्यं हस्तादिभिर्मानं द्रुवयं कुडबादिभिः ।  
 पौतवं तुलया तस्य सूत्रं स्याद्रागसूत्रकम् ॥ ६४ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां  
 सामान्यकाण्डे गणाध्यायः ॥ १ ॥

## धर्मकर्माध्यायः ॥ २ ॥

रूपं तत्त्वं सतत्त्वं च स्वरूपं च सलक्षणम् ।  
 सहजं निजमाजानं धर्मसर्गौ निसर्गवत् ॥ १ ॥  
 स्वभावः प्रकृती रीतिरवस्था तु दशा स्थितिः ।  
 प्रभावः प्रभवन्ती स्यात् प्रभुता प्रभविष्णुता ॥ २ ॥  
 परभागो गुणोत्कर्षः प्राग्भारोऽतिशयो भरः ।  
 विस्तारो विग्रहो व्यासः स तु शब्दस्य विस्तरः ॥ ३ ॥  
 अनायासार्थकं फाण्टं दौर्मत्यं तु करैरकम् ।  
 विघ्नोऽन्तरायः प्रत्यूहो रोषे त्वादीनवाश्रवौ ॥ ४ ॥  
 दैर्घ्यमायाम आनाहः परिणाहो विशालता ।  
 वैपरीत्यं विपर्यासो व्यत्ययश्च विपर्ययः ॥ ५ ॥  
 व्यत्यासो व्यतिहारः स्यादन्तर्गङ्गु निरर्थकम् ।  
 तत्क्षणं स्यादेकपदं यदृच्छा नियमोऽस्मितिः ॥ ६ ॥  
 षण्टो विभागो भागोऽशः पादस्त्वंशश्चतुर्थकः ।  
 कला तु षोडशो भागो वारस्त्ववसरः क्षणः ॥ ७ ॥  
 प्रतिकूलानुकूलार्थे अपष्ठुरमपष्ठु च ।  
 पृष्ठमांसादनं पश्चाद् गतस्यार्थस्य गर्हणम् ॥ ८ ॥  
 आग्नेडनं ऋटप्पः स्याद्वक्त्रपः सम्पातपाटवम् ।  
 कर्म क्रियाऽप्यनुष्ठानं तद्भेदा गमनादयः ॥ ९ ॥  
 यात्रा ब्रज्या च गमनं प्रस्थानं च गतिर्गमः ।  
 चक्रावर्तो भ्रमो भ्रान्तिर्भ्रमिर्धूर्णिश्च धूर्णनम् ॥ १० ॥  
 ईहनं शीघ्रगमनं सारणं छद्मना गतिः ।  
 ब्रज्याऽटाटया पर्यटनमल्पेऽध्वनि गतागतम् ॥ ११ ॥  
 सविकारा गतिः सोरो भेलनं तरणं प्लवः ।  
 कादाचित्कस्तु भेयोऽसौ क्षेपो लङ्गनलङ्घने ॥ १२ ॥  
 निर्योणं स्यान्निर्गमनमंहनं वक्षसा गतिः ।  
 प्रतिबन्धः प्रतिष्ठम्भः सम्बन्धः प्राप्तिरापनम् ॥ १३ ॥  
 निर्बन्धोऽभिनिवेशः स्यात् प्रवेशोऽन्तरगाहनम् ।  
 आस्यासनोपवेशश्च निवेशो रचना स्थितिः ॥ १४ ॥



अथाभ्यादानमारम्भः प्रक्रमः स्यादुपक्रमः ।  
 प्रत्युत्क्रमः प्रयोगः स्यादारोहणमभिक्रमः ॥ १५ ॥  
 आक्रमोऽभिक्रमः क्रान्तिर्व्युत्क्रमस्तूत्क्रमो मृतम् ।  
 विक्रमः शौर्यकरणमत्याधानमतिक्रमः ॥ १६ ॥  
 भूमानं विक्रमः पङ्क्त्यां निर्हारोऽभ्यवकर्षणम् ।  
 अनुहारोऽनुकारः स्यात् परिहारो निवर्तना ॥ १७ ॥  
 प्रत्याहार उपदानमभिहारस्त्वभिग्रहः ।  
 समास उपसंहारः समाहारः समुच्चयः ॥ १८ ॥  
 अपहारस्त्वपादानं प्रहारस्त्वभिताडनम् ।  
 उपलम्भस्त्वनुभवो विलम्भस्त्वतिसर्जनम् ॥ १९ ॥  
 विप्रलम्भो विसंवादः प्रतिलम्भस्तु लम्भनम् ।  
 स्वतन्त्रवृत्तिर्व्युत्थानमभ्युत्थानं तु गौरवम् ॥ २० ॥  
 संस्थानं सन्निवेशः स्यादुपस्थानं तु सङ्गतिः ।  
 धान्योत्क्षेपणमुत्कारः पराकारस्तु विक्रिया ॥ २१ ॥  
 विकारो विप्रकारः स्यादाकारस्त्वङ्ग इङ्गितम् ।  
 उपक्रियोपकारः स्यादपकारोऽन्यतः कृतिः ॥ २२ ॥  
 प्रकार इत्थम्भावः स्यादपकारोऽन्यपीडनम् ।  
 प्रत्याख्यानं निराकारः प्रत्यादेशो निरासवत् ॥ २३ ॥  
 परिणामोऽन्यथाभावः सन्नामस्त्वन्यथाकृतिः ।  
 प्रणामः प्रणिपातः स्यादुन्नामस्तुङ्गतोन्नतिः ॥ २४ ॥  
 उद्योगोऽस्त्री समुत्थानं विनियोगोऽर्पणं फले ।  
 विधिर्नियोगः सम्प्रेष उपयोगः फलक्रिया ॥ २५ ॥  
 संयोगसम्प्रयोगौ सम्भेदः सन्निपातसंश्लेषौ ।  
 सम्पाते विश्लेषे तु विप्रयोगविरहवियोगाः ॥ २६ ॥  
 विगमोऽपगमोऽपायो मेलने सङ्गसङ्गमौ ।  
 शमथस्तु शमः शान्तिर्दान्तिस्तु दमथो दमः ॥ २७ ॥  
 बन्धनं प्रसितिर्बन्धः क्लान्तिस्तु क्लमथः क्लमः ।  
 परिसर्या परीसारः परिसर्पः परिक्रमः ॥ २८ ॥  
 लवे विलावो लवनं तेमः स्तेमः समुन्दनम् ।  
 प्रतिश्रवः प्रतिख्यातिरपेक्षा प्रतिज्ञागरः ॥ २९ ॥  
 संयामसंयमौ यामो वियामो वियमो यमः ।  
 संवाहनं मर्दनं स्यात् पर्यवस्था विरोधनम् ॥ ३० ॥

संस्तवः स्यात् परिचय उदजः प्रेषणे पशोः ।  
 पवनं पवनिष्पावौ जूतिस्तु जवनं जवः ॥ ३१ ॥  
 प्रेजनं स्यादपसरो रन्धनं पचनं पचा ।  
 क्षयः क्षिया नयो नायो मदो मादः स्नवः स्रवः ॥ ३२ ॥  
 उद्वेग उद्भ्रमः श्रायः श्रयणं प्रमितिः प्रमा ।  
 स्फातिस्तु वृद्धिः स्फुरणं स्फुलनं क्षेपणं क्षिपा ॥ ३३ ॥  
 उद्यमो गुरणं श्च्योतिः प्रघारः प्रथनं प्रथा ।  
 भङ्गिस्तु व्याकृतिः खेदो निर्वेदो घटना घटा ॥ ३४ ॥  
 यत्प्रेषणं समाहूय तस्मिन् स्यात् प्रतिशासनम् ।  
 वञ्चनं त्वतिसन्धानं व्यलीकं च प्रतारणम् ॥ ३५ ॥  
 निष्ठीवोऽस्त्री निष्ठीवनमपि निष्ठेवनं च निष्ठ्यूतिः ।  
 उपरत्यारत्यपरतिविरतय उपरमण उपरामः ॥ ३६ ॥  
 संविदागूः प्रतिज्ञाऽऽस्थाऽप्यभ्युपायः प्रतिश्रवः ।  
 अङ्गीकाराभ्युपगमनियमाश्रवसंश्रवाः ॥ ३७ ॥  
 प्रणीतिः स्यादनुनयः प्रश्रयः सान्त्वनं तथा ।  
 सपत्राकृतिनिष्पत्राकृती त्वत्यन्तपीडने ॥ ३८ ॥  
 वर्णनं स्याद्विभजनं प्रवाहस्तु परम्परा ।  
 ग्रन्थनं ग्रन्थनं गुम्फः सन्दर्भो रचना न ना ॥ ३९ ॥  
 विधूननं विधुवनं त्यागो हानं च वर्जनम् ।  
 आवर्जनं द्रवक्षेपे निधानं क्षेपणासने ॥ ४० ॥  
 सम्मूर्च्छनं व्यापनं स्याद् विदरः स्फुटनं मिदा ।  
 आवर्तनं काथनं स्यात् कथनं पाकवर्तनम् ॥ ४१ ॥  
 संवीक्षणं विचयनं लोटनं तु विवेष्टनम् ।  
 इत्यादयः क्रियाशब्दा लक्ष्या घातुषु लक्षणैः ॥ ४२ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

सामान्यकाण्डे धर्मकर्माध्यायः ॥ २ ॥

## गुणाध्यायः ॥ ३ ॥

गुणो जसुर्द्रव्यपदो द्वौ स्नेहे मार्जमार्जनौ ।  
 मसृणत्वे तु मारुङ्गकासनौ द्रवणे द्रुतिः ॥ १ ॥  
 खादीनां तु गुणाः शब्दः स्पर्शो रूपं रसः क्रमात् ।  
 गन्धश्चेतीन्द्रियार्थास्ते विषया गोचराश्च ते ॥ २ ॥  
 सत्यं तथ्यमृतं सम्यक् समीचीनं तथार्थवाक् ।  
 कर्कशे परुषो रूक्षो मठरः खोरणः खरः ॥ ३ ॥  
 उत्क्षुद्रलोऽथ मसृणे श्लक्ष्णसोमालचिकणाः ।  
 पिच्छिले स्याद् विज्विलः कठिने खरटः खटः ॥ ४ ॥  
 कठोरनिष्ठुरकूरदृढदारुणकक्खटाः ।  
 खरश्च सुकुमारे तु कोमलो मृदुलो मृदुः ॥ ५ ॥  
 शीतले शीकरः शीतः सुषिकः सुषिमो जडः ।  
 समीकः सोलिकः सोलः स्कन्दोलो मेकलस्तलः ॥ ६ ॥  
 तुषारः शिशिरः स्फीतः सेभ्यः सीमो हिमोऽपि च ।  
 उष्णं ज्वलः खरः क्रूरो बालस्तिग्मः कृशश्चुपः ॥ ७ ॥  
 सोमलो वह्निको व्यक्तस्तालको जलशीनकः ।  
 अङ्गारो दहनस्तप्तः प्रूष्वो धूम्रः प्रतापनः ॥ ८ ॥  
 तीक्ष्णश्चण्डोल्बणप्रोन्द्रकरालिविकारालिनः ।  
 मन्दोष्णमोष्णं कोष्णं च कवोष्णं च कदुष्णवत् ॥ ९ ॥  
 शुक्ले शुभ्रशुचिश्वेताः पुण्ड्रको घबलोऽर्जुनः ।  
 अवदातः सितो गौरो विशदश्येतपाण्डराः ॥ १० ॥  
 काले कृष्णासितश्यामनीलश्यामलमेचकाः ।  
 रोहिते लोहितो रक्तो हारिद्रे पीतपीतले ॥ ११ ॥  
 उत्पिशस्तु सितश्यामे हरिणे पाण्डुपाण्डरौ ।  
 कपोतस्तु कपोताभः पद्मः पीतसितासितः ॥ १२ ॥  
 पिङ्गो नीलसितश्यामः सोवालः कृष्णधूमलः ।  
 सितकाचस्तु पिङ्गाणः कण्डारः सितकाचरः ॥ १३ ॥  
 बरालः सितपिङ्गाणः स्तोकपाण्डुस्तु धूसरः ।  
 कोसलः पाण्डुलः श्यामश्चाटः कृष्णहरिः सितः ॥ १४ ॥

बलक्षस्तु सितश्यामः सैराभः श्वेतपीतलः ।  
 सितपीतहरित्रीलस्तरलो वृद्धपत्रवत् ॥ १५ ॥  
 रक्तपीतासितश्वेते बोलः कारीषभस्मवत् ।  
 उत्पिशाद्यास्त्वमी मिश्रवर्णाः शुक्लप्रधानकाः ॥ १६ ॥  
 शोणोऽरुणश्च सन्ध्याभः श्वेतरक्तस्तु पाटलः ।  
 मरालोऽल्पः पीतरक्तः पीतरक्तस्तु पिञ्जरः ॥ १७ ॥  
 बभ्रुः कडारः कपिलो विदग्धो दुष्टरक्तवत् ।  
 श्यावे तु कपिशः पिङ्गे पिशाङ्गः कटुपिङ्गलौ ॥ १८ ॥  
 नीलपीतारुणः शारो जोणालो नीललोहितः ।  
 इति लोहितवर्गीणा अथ पीतप्रधानकाः ॥ १९ ॥  
 सेरालोऽल्पसितः पीतः पेरालः पीतधूमलः ।  
 पीतश्यामल ओरालो गौरः स्यात् पीतलोहितः ॥ २० ॥  
 कीनाशः पीतहरितो हरितो नीलपीतलः ।  
 कृष्णवर्ग्याः पुनर्धूमधूमलौ कृष्णलोहिते ॥ २१ ॥  
 पीतकृष्णहरिद्राभः काचरः कृष्णधूमलः ।  
 कृष्णपीतस्तु काचोऽथ पालाशो हरितो हरित् ॥ २२ ॥  
 तारावतारकिर्मीरशबलैतास्तु चित्रके ।  
 स चान्योन्यानवष्टम्भान्नानावर्णसमुन्नयः ॥ २३ ॥  
 कर्बुरः शुक्लहरित आरुः स्यात् कृष्णपिङ्गलः ।  
 सितकृष्णस्तु कल्माषः पिञ्ज्रूषः सितकाचरः ॥ २४ ॥  
 कृष्णरक्तसितः शारः किमिरः सितलोहितः ।  
 मधुरस्तु रसज्येष्ठो गुली स्वादुर्मधूलकः ॥ २५ ॥  
 अम्लस्तु पाचनः शुक्तो लवणस्तु पटुः सरः ।  
 ऊषणस्तु कटुस्तीक्ष्णस्तिक्तस्तु विसरः कटुः ॥ २६ ॥  
 कषायोऽक्षी स्वप्रतिष्ठस्तुवरो मधुराङ्गकः ।  
 मधुराम्लौ सलवणौ कटुतिक्तकषायकाः ॥ २७ ॥  
 षट् ते मूलरसाः शेषा रसका योग्योनयः ।  
 स्युः शाडववराश्रयूषाः श्रयूष आसोऽपि च क्रमात् ॥ २८ ॥  
 अम्लाद्या मधुरोपेताः साम्लास्तु लवणादयः ।  
 चाटसस्तीक्ष्णचो रूषः शुक्तश्च लवणेन तु ॥ २९ ॥  
 युक्ता वैखारकः क्षारः स्वाद्यश्च कटुकादयः ।  
 तिक्तिकः कटुतिक्ते स्यात् कुल्या कटुकषायके ॥ ३० ॥



तैलित्सस्तिककषाय एवं पञ्चदश द्विकाः ।  
 क्रमेण शोणिकः श्यावो रातपं रागशालवः ॥ ३१ ॥  
 सस्वाद्वम्ला लवणाद्याः सस्वादुलवणेषु ते ।  
 कटुकादिषु कट्वारो माधुरो मधुकः क्रमात् ॥ ३२ ॥  
 तिक्तकषायौ सस्वादुकटू मधुमधूलिकौ ।  
 स्वादुतिक्तकषाये तु मधुलोऽमी दश त्रिकाः ॥ ३३ ॥  
 कट्वाद्याः साम्ललवणा बोसरः खलुषः क्रमात् ।  
 कोलश्चाथो साम्लकटू कलुषत्रिखरौ क्रमात् ॥ ३४ ॥  
 कषायतिक्तौ सोलस्तु शुक्ततिक्तकषायके ।  
 अम्लतिक्तकषायेऽस्मिन् बालाम्लो बालचूतकः ॥ ३५ ॥  
 कषार्यातिक्तौ सपटुकटू वेलानवेलजौ ।  
 कषायतिक्तलवणेऽसोलोऽथैलारसालकः ॥ ३६ ॥  
 कटुतिक्तकषाये स्यात् तदेवं विंशतिस्त्रिकाः ।  
 स्वाद्वम्ललवणोपेता कट्वाद्या मधुमालकः ॥ ३७ ॥  
 मधुबोलः सोरणश्च कचिदन्त्यः करोलकः ।  
 सस्वाद्वम्लकटौ तिक्ते लीमुषः परुषः पुनः ॥ ३८ ॥  
 कषायेऽत्रैव कलुषाकषायौ जालनः पुनः ।  
 स्वाद्वम्लतिक्ततुवरे सस्वादुलवणोषणे ॥ ३९ ॥  
 रसकोपशाडविकौ कषाये बलजः पुनः ।  
 तिक्ते तिक्तपटुस्वादुकषाये फलसोऽथुसौ ॥ ४० ॥  
 सस्वादुकटुतिक्ते तु कषाये स्यात् कलापकः ।  
 जलोलकः साम्लपटुकटौ तिक्ते कषायके ॥ ४१ ॥  
 तुवरः स्यात् कुवेलश्च खरस्तु लवणे युते ।  
 अम्लतिक्तकषायैस्तैः संयुते पलुषः कटौ ॥ ४२ ॥  
 कट्वाद्यालोढकास्त्वेवं चतुष्का दश पञ्च च ।  
 स्वादुमेकं विहायान्ये युक्ताः पञ्च स्युरोलकः ॥ ४३ ॥  
 आलुकस्तु विहायाम्लं पटुं हित्वा पराञ्जनः ।  
 ओलकः कटुकं हित्वा विना तिक्तेन चोलकः ॥ ४४ ॥  
 समोलकः कषायेण षडेवं पञ्चका रसाः ।  
 षट्कस्त्वेकः षड्रसः स्यात् त्रिषष्टिः स्युस्ततो रसाः ॥ ४५ ॥  
 मधुराम्लादिसंज्ञाश्च शाडवादौ समुज्जयेत् ।  
 न स्यात् पूर्वसस्याख्या परावररसाद्व्यात् ॥ ४६ ॥

सुरभ्यसुरभी गन्धौ विभिन्नौ तौ च योगतः ।  
 बहुधा तत्र सुरभिः कटुस्तिक्तः कषायकः ॥ ४७ ॥  
 समष्टिरप्यतोऽन्यो यो गन्धोऽसुरभिरित्यसौ ।  
 मल्लिकायां स्थितो गन्धो मङ्गल्या मङ्गलश्च सः ॥ ४८ ॥  
 जात्यां सौमनसो नागकेशरे गन्धसारणः ।  
 चम्पके सुरभिः पद्मे वासनः कुटजे घुणः ॥ ४९ ॥  
 कस्तूरिकायामामोदः कुङ्कुमे पलशीनकः ।  
 पारिहाव्यो मरुवके पाटले तृणशोणकः ॥ ५० ॥  
 चन्दने चन्द्रिकः साले शोणो गन्धिक उत्पले ।  
 केतके शोणितं सर्जधूपे सरलशोणिकः ॥ ५१ ॥  
 वकुले स्यात् परिमलो बलनोऽगरुधूपके ।  
 सहकारे सरलिको गुग्गुलौ त्ववलोलुकः ॥ ५२ ॥  
 कुन्दोपरातो मदने दुलो जम्बीर(के स्थितः) ।  
 मल्ल्यां (स्थितस्तु) खवुकः कर्पूरे मुखवासनः ॥ ५३ ॥  
 धाव्ये समशनोऽशोके सुरवस्तिलके कुलः ।  
 गात्रे गन्धो गन्धके तु गन्धिकः पित्तले लसः ॥ ५४ ॥  
 गुदवायौ तु दुर्गन्धः किट्टे कोलः कफे घनः ।  
 मस्त्यत्वच्यामिषो निम्बे तिक्तको गोमुखे सणिः ॥ ५५ ॥  
 उद्दंशे देहलिर्गोविण्मूत्रयोर्मुकमुर्मुरौ ।  
 शुक्ले मांसिर्मदे रूक्षो मूत्रिते त्वन्धमेहलः ॥ ५६ ॥  
 स्नेहदोषे मेचटिको गूढे स्थालिकवैणिकौ ।  
 चिस्रो यकृति पूये तु पूतिमूत्रे तु मेहलः ॥ ५७ ॥  
 दुष्टव्रणे तु कथितो रुधिरे त्वाममांसकः ।  
 गन्धशब्दास्त्वमी योज्याः साम्याद् द्रव्यान्तरेष्वपि ॥ ५८ ॥  
 एते सत्यादयः शब्दाः शब्दस्पर्शादिगोचराः ।  
 उक्तलिङ्गा गुणार्थास्ते सर्वेऽपि गुणिनि त्रिषु ॥ ५९ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

सामान्यकाण्डे गुणाध्यायः ॥ ३ ॥

## अर्थवल्लिङ्गाध्यायः ॥ ४ ॥

गुणयुक्तं क्रियायुक्तं द्रव्ययुक्तं च वक्ति यः ।  
 स शब्दो वाच्यवल्लिङ्गो बालो वक्ता धनी यथा ॥ १ ॥  
 बालो हिम्भोऽर्भकः शावः कुमारो दारकः शिशुः ।  
 अप्युत्तानशयो वत्सः स्तनपस्तु स्तनन्धयः ॥ २ ॥  
 वटुर्माणवकोऽथ स्याद् वयस्थस्तरुणो युवा ।  
 जीनो जीर्णो वृद्धवयाः प्रवयाः स्थविरो जरन् ॥ ३ ॥  
 वर्षीयान् दशमी न्यायान् कनिष्ठोऽवरजोऽनुजः ।  
 जघन्यजो बबीयांश्च पूर्वजे त्वग्निरोऽग्रजः ॥ ४ ॥  
 पितुर्विभक्तः संसृष्टी भ्रात्रार्थेनैकतां गतः ।  
 पृथिः किरातोऽल्पतनुर्दुर्बलस्तु कृशस्तनुः ॥ ५ ॥  
 पीनस्तु पीवरः पीवा प्रबलो मांसलोऽसलः ।  
 सिंहसंहननः स्वङ्गस्तुण्डिरुन्नतनाभिकः ॥ ६ ॥  
 पिचण्डिलस्तूदरिलस्तुन्दिलस्तुन्दितुन्दिकौ ।  
 बलिनो बलिभो बिभ्रद्वली राजीस्तु राजिलः ॥ ७ ॥  
 एवं सिरालमणिलौ प्रलम्बाण्डस्तु मुष्करः ।  
 केशवः केशिकः केशी रोमशो लोमशः समौ ॥ ८ ॥  
 शमश्रुलो जटिलश्चैवं दन्तुरः स्यादुदग्रदन् ।  
 किरिभस्तद्विपर्यासे मिर्मिरः स्तब्धलोचनः ॥ ९ ॥  
 आसीनः उपविष्टः स्यादूर्ध्वङ्गस्तूर्ध्वजानुकः ।  
 संङ्गुः संहतजानुः स्यात् प्रङ्गुः प्रगतजानुकः ॥ १० ॥  
 विकलाङ्गस्तु पोगण्डो गङ्गुले न्युञ्जकुञ्जकौ ।  
 खुरणाः स्यात् खुरणसो नःक्षुद्रः क्षुद्रनासिकः ॥ ११ ॥  
 खरणाः स्यात् खरणसो विग्रो विगतनासिकः ।  
 नतनासेऽवटीटः स्यादवनाटोऽप्यवभटः ॥ १२ ॥  
 केकरो बलिरोऽनेडमूकोऽन्धः काण एकहृक् ।  
 एडस्तु बधिरः कण्व एडमूकस्त्ववाक्कुत्तिः ॥ १३ ॥  
 अनेडमूकस्तु जडो जलो मूकः कलोऽप्यवाक् ।  
 पङ्गुः श्रोणे खङ्गकोलौ खोडेऽथ कुकरे कुणिः ॥ १४ ॥

शिपिविष्टस्तु दुश्चर्मो दुर्बालश्च द्विनम्रकः ।  
 क्षपणश्रमणौ नम्रो नम्राटश्च दिगम्बरः ॥ १५ ॥  
 आजीवो जीवको जैनो निर्ग्रन्थो मलवार्यपि ।  
 हृदयालुः सुहृदयो महेच्छस्तु महाशयः ॥ १६ ॥  
 प्रौढः प्रगल्भः प्रतिभायुक्तोऽन्यस्त्वपगल्भकः ।  
 धृष्टो धृष्णुर्विजातश्च शालीनस्तु विपर्यये ॥ १७ ॥  
 अधीरे कातरत्रस्तुभीरुभीरुकभीलुकाः ।  
 दरिते भीतचकितत्रस्ताः स्निग्धस्तु वत्सलः ॥ १८ ॥  
 प्रवीणोऽभिजनोऽभिज्ञो विज्ञो वैज्ञानिकः कृती ।  
 कृतकृत्यः कृतमुखो निष्णातो दक्षशिक्षितौ ॥ १९ ॥  
 अग्राम्ये सरलोदारविदग्धच्छेकदक्षिणाः ।  
 गर्विते स्तब्ध उद्वीवो बाहो धीरः स इत्यपि ॥ २० ॥  
 मूर्खे त्वनेढो देवानांप्रियो यो नामवर्जितः ।  
 अपि वैधेयमूढाज्ञा मातृशिष्टयथोद्भूतौ ॥ २१ ॥  
 नीचे तु हीनापशदपामरेतरबर्बराः ।  
 नैकृतः स्यान्नैकृतिकः शठः कौनृतिकोऽनृजुः ॥ २२ ॥  
 कुहकः स्यात् कापटिको दाण्डाजिनिकजालिकौ ।  
 ढौण्डुको ढण्डुकश्चाथ कोलाकोऽर्यरतः सदा ॥ २३ ॥  
 क्रूरो नृशंसोऽप्यदये धूर्ते व्यसकवञ्चकौ ।  
 कौकुटो मायिको मायी मायावी प्रातिहारिकः ॥ २४ ॥  
 ना दुर्जनः खले कर्णेजपः पिशुनसूचकौ ।  
 कद्वदः कुत्सितोऽत्यर्थं परिभोक्ता गुरुस्वभृत् ॥ २५ ॥  
 नीलीरागः स्थिरप्रेमा हरिद्रारागकः पुनः ।  
 अस्थिरप्रेम्णि गोष्ठश्वः पुनः स्थाने स्थितो द्विषन् ॥ २६ ॥  
 अन्वेष्टा स्यादनुपदी चिद्रूपस्तु सुमानसः ।  
 स्वच्छन्दोऽपावृतः स्वैरी स्वतन्त्रो निरवग्रहः ॥ २७ ॥  
 परच्छन्दः पराधीनः परवान् परतन्त्रकः ।  
 निम्नः प्रसव्य आयत्तो विधेयो गृह्यको वशः ॥ २८ ॥  
 अहंयुः स्यादहङ्कारी शुभंयुस्तु शुभान्वितः ।  
 सूक्ष्मदर्शी कुशाग्रीयधीर्विलक्षः सविस्मयः ॥ २९ ॥  
 यद्भविष्यो दैवपरो यद्वदः स्यादनुत्तरः ।  
 परीक्षकः कारणिक उद्युक्ते प्रसितोत्सुकौ ॥ ३० ॥



अन्तर्वाणिः शास्त्रचित् स्यादविनीतः समुद्धतः ।  
 प्रत्युत्पन्नमतिस्तु स्यात् तत्कालोत्पन्नधीर्नरः ॥ ३१ ॥  
 प्रणेत्यः प्रश्रितो वश्यो विधेयो निभृतो यतः ।  
 क्रोधनः कोपनोऽमर्षी चण्डस्तु भृशकोपनः ॥ ३२ ॥  
 सहिष्णुः सहनः सोढा तितिक्षुः क्षमिता क्षमी ।  
 हर्षमाणो विकुर्वाणः प्रमना मुदितः समुत् ॥ ३३ ॥  
 दुर्मना विमना अन्तर्मनाः स्यादुत्क उन्मनाः ।  
 दोषदर्शी पुरोभागी कमनः कामनोऽनुकः ॥ ३४ ॥  
 कामुकः कमिताऽमीकः कन्नः कमयिताऽभिकः ।  
 तृष्णक् तु गर्धनो गृध्नुर्लिप्सुर्लुब्धोऽभिलाषुकः ॥ ३५ ॥  
 लोलुपे लोलुभो लोलो लम्पटो लालसोऽपि च ।  
 लुभुक्षुः क्षुधितः श्रान्तो जिघत्सुरशनायितः ॥ ३६ ॥  
 पिपासितस्तु तृषितः पिपासुस्तषितः सरट् ।  
 मत्ते शौण्डोत्कटक्षीबा श्राद्धः श्रद्धालुरास्तिकः ॥ ३७ ॥  
 नास्तिकस्तद्विपर्यासे गृह्यालुर्गृहीतरि ।  
 संशयालुस्तु सन्देग्धा पतयालुस्तु पातुकः ॥ ३८ ॥  
 दयालुः स्यात् कारुणिकोऽनुकम्प्यः कारुणः समौ ।  
 स्वप्नक् शयालुर्निद्रालुर्निद्राणः शयितः समः ॥ ३९ ॥  
 लज्जाशीलोऽपत्रपिष्णुर्वर्तिष्णुर्वर्तनः समौ ।  
 निराकरिष्णुः क्षिप्नुः स्याद् वर्धिष्णुर्वर्धनः समौ ॥ ४० ॥  
 चन्मविष्णुस्तु सोन्मादोऽलङ्कारिष्णुस्तु मण्डनः ।  
 भूष्णुर्मविष्णुर्मविता प्रजनिष्णुस्तु भावुकः ॥ ४१ ॥  
 उत्पतिष्णुस्तूत्पतिता रोचिष्णू रोचनः समौ ।  
 स्थास्तुस्तु स्थायुकः स्थायी शरारुर्हिंस्रघातुकौ ॥ ४२ ॥  
 वेदिता विदुरो विन्दुः सान्द्रः स्निग्धस्तु मेदुरः ।  
 आशंसुराशंसितरि वन्दारुरभिवादकः ॥ ४३ ॥  
 जागरुको जागरिता ऋक्षणवाक् तु प्रियंवदः ।  
 शङ्को मधुरवाक् चाथ रूक्षो लूक्षो विपर्यये ॥ ४४ ॥  
 वदो वदावदो वक्ता वागीशो वाक्पतिः समौ ।  
 वाचोयुक्तिपटुर्वाग्मी वावदूकश्च दक्षवाक् ॥ ४५ ॥  
 जल्पकस्त्वपि वाचालो वाचाटो बहुगर्हवाक् ।  
 मुखरो दुर्मुखोऽबद्धमुखो मारुमुखोऽपि च ॥ ४६ ॥

कद्वदो गर्हवादी स्याल्लोहलोऽस्फुटभाषणः ।  
 अधरो दीनवादी स्यात् सम्मुखः प्रतिभातवाक् ॥ ४७ ॥  
 नालीकरस्तु नालीकवाक् स्वनोऽशोभनस्वरः ।  
 कुवदे कुचरः शब्दकारे रवणशब्दनौ ॥ ४८ ॥  
 व्युत्पन्नः प्रहतः क्षुण्णो वचनेस्थित आश्रवः ।  
 परान्नः परपिण्डादः परजातपरैधितौ ॥ ४९ ॥  
 सर्वाङ्गीनः सर्वभक्ष आमिषादी तु शौल्तिकः ।  
 आत्मम्भरिः कुक्षिम्भरिर्मक्षको घस्मरोऽध्वरः ॥ ५० ॥  
 आद्यूनः स्यादौदरिको विमुक्तो विजिगीषया ।  
 ह्रीणो ह्रीतो लज्जितः स्यादन्वेष्टा तीक्ष्णसाधनैः ॥ ५१ ॥  
 अद्भुते धीरविस्रब्धावुत्तालः कर्मणि द्रुतः ।  
 कुटुम्बव्यापृते तु द्वावभ्यागारिक उत्थितः ॥ ५२ ॥  
 दीर्घदृष्टिस्तु यो दूरादर्थानर्थौ निरीक्षते ।  
 आमुष्यायण उत्पन्नः प्रख्यातकुलतः पितुः ॥ ५३ ॥  
 वैरङ्गिको विरागार्ह उत्पश्यः पुनरुन्मुखः ।  
 चतुरः पेशलो दक्षः सूत्थानः पदुरुष्णकः ॥ ५४ ॥  
 मन्दस्तुन्दपरिमृज आलस्यः शीतकोऽलसः ।  
 क्षेमङ्करोऽरिष्टतातिः शिवतातिः शिवङ्करः ॥ ५५ ॥  
 लक्ष्मीवान् लक्ष्मणः श्रीलो महामात्रोऽधिकर्धिकः ।  
 उदारोदीर्घधन्यास्तु महात्मा सुकृतीति च ॥ ५६ ॥  
 समृद्धः स्यादुपचितो धनवानस्तिमान् समौ ।  
 आढ्यस्त्विम्यो धनी नेता त्वीश्वरो नायकः प्रभुः ॥ ५७ ॥  
 अधिभूरधिपोऽधीश ईशिताऽधिपतिः पतिः ।  
 ईशः परिवृढः स्वामी स्थूललक्षो बहुव्यये ॥ ५८ ॥  
 कदर्थे कृपणक्षुद्रकिम्पचानमितम्पचाः ।  
 आशयश्चाप्यदाता च दरिद्रे स्यादकिञ्चनः ॥ ५९ ॥  
 अपि दुस्स्थक्रूरदीननीचदुर्गतदुर्विधाः ।  
 मार्गणः स्याद् याचनको याचकोऽर्थी वनीपकः ॥ ६० ॥  
 आर्यः कौलेयको जात्यः कुलीनः कुलजोऽभिजः ।  
 जगत्त्रसचरप्राणमिषदिङ्गश्च जङ्गमम् ॥ ६१ ॥  
 स्थावरं तस्थिवच्चान्यदुभयं तु चराचरम् ।  
 वा ह्री प्रधानं प्रमुखप्रबर्हप्रवरोत्तमाः ॥ ६२ ॥

मुख्यवर्यवरेण्याश्च प्रवेकोऽनपराध्यवत् ।  
 श्रेष्ठः प्राग्रहरं प्राग्रमग्रमग्रीयमग्रियम् ॥ ६३ ॥  
 पराध्यं प्राग्रणीः स्पृध्यं जात्यं च वरमग्रणीः ।  
 उपग्रस्तु गुणः पुंसि छीवे स्यादुपसर्जनम् ॥ ६४ ॥  
 तत्तु स्यादासेचनकं न तृप्तिर्यस्य दर्शनात् ।  
 पवित्रं प्रयतं पूतं मेध्यं शुद्धं शुचीति च ॥ ६५ ॥  
 निर्णिकं शोधितं मृष्टं निश्शोध्यमनवस्करम् ।  
 विमले वीदध्रं मलिने द्वौ कश्चरमलीमसौ ॥ ६६ ॥  
 आतगन्धोऽभिभूतः स्याद् बद्धे कीलितसंयतौ ।  
 आक्षिप्तो हतकः क्षिप्तो विह्वलो विह्वलः समौ ॥ ६७ ॥  
 विहस्तो व्याकुलो व्यग्रश्चले सङ्कुसुकोऽस्थिरः ।  
 व्यसनार्तस्तूपरक्त आततायी बधोद्यतः ॥ ६८ ॥  
 शत्रूणां तापयितरि द्विषन्तपपरन्तपौ ।  
 द्वेष्यस्त्वक्षिगतोऽनिष्टो दुर्मगोऽपि च विप्रिये ॥ ६९ ॥  
 चक्षुष्यः सुभगः कान्तो दयितो वल्लभः प्रियः ।  
 गेहेनर्दी गृहेशूरः पिण्डीशूरो गृहे प्रमुः ॥ ७० ॥  
 वध्यो विष्यो विषेण स्यान्मुसल्यो मुसलेन च ।  
 निष्कासितोऽपकृष्टः स्यादपध्वस्तस्तु धिक्कृतः ॥ ७१ ॥  
 कर्मक्षमोऽलङ्कर्मिणः कर्मशूरस्तु कर्मठः ।  
 कर्मस्तु कर्मशीलः स्याद्दीर्घमूत्रश्चिरक्रियः ॥ ७२ ॥  
 कर्मण्यकृत् कर्मकरः कर्मकारस्तु तत्क्रियः ।  
 निर्वार्यः कार्यकृद्यः स्याद्युक्तः सन् सत्त्वसम्पदा ॥ ७३ ॥  
 क्रियावान् कर्मवान् कर्मी कुण्ठो मन्दः क्रियासु यः ।  
 स आयश्शूलिको यः स्यादन्वेष्टा तीक्ष्णसाधनैः ॥ ७४ ॥  
 गह्वोऽपकृष्टचेलावरेफयाप्याधमावमाः ।  
 प्रतिकृष्टावद्यखेटनिकृष्टाणककुत्सिताः ॥ ७५ ॥  
 जघन्यं तु कुपूयं स्यादसारं लघु फल्गु च ।  
 पुंस्यादिराद्यपौरस्त्यप्रथमप्रमुखादिमाः ॥ ७६ ॥  
 अग्रयं त्वग्रिममग्रस्थं मध्यमीयं तु मध्यमम् ।  
 अन्त्ये जघन्यपाश्चात्यचरमान्तिमपश्चिमाः ॥ ७७ ॥  
 करम्बः कम्बरो मिश्रः सम्पृक्तः खचितः समाः ।  
 चलाचलं तु प्रचलं चपलं चञ्चलं चलम् ॥ ७८ ॥

चिकुरं चटुलं कम्प्रं पारिप्लवपरिप्लवौ ।  
 स्थास्नवेकरूपं कूटस्थं स्थेयान् स्थेष्ठोऽप्यतिस्थिरे ॥ ७६ ॥  
 विशालमुरु विस्तीर्णं विपुलं पृथुलं पृथु ।  
 स्फारं भद्रं बृहद् व्यूढमुदूढं बहुलं बहु ॥ ८० ॥  
 प्रांशूश्चमुन्नतं तुङ्गमुदग्रं तूच्छिताग्रकम् ।  
 न्यङ्नीचह्रस्वखर्वास्तु वामने दीर्घमायते ॥ ८१ ॥  
 विशालं विकरालं स्याद् विकटं च विशङ्कटम् ।  
 वर्तुलं निस्तलं घृतं सुघृतं परिमण्डलम् ॥ ८२ ॥  
 चिपिटः पिच्छितो व्यूढे स्थपुटं विषमोन्नतम् ।  
 आनतं तु नतं नम्रं बन्धुरं तून्नतानतम् ॥ ८३ ॥  
 क्षीणं क्षामं विलिष्टं स्यात् स्थूलं तु बहलं दृढम् ।  
 प्रभूतं प्रचुरं प्राज्यं बहलं बहुलं बहु ॥ ८४ ॥  
 अदभ्रमधिकं भूरि भूयिष्ठं पुरुहं पुरु ।  
 समग्रं सकलं सर्वं समस्तं निखिलाखिले ॥ ८५ ॥  
 अखण्डकृत्स्ननिशेषपूर्णविश्वसमानि च ।  
 खण्डनेमोनविकलाः पूर्णे भरितपूरितौ ॥ ८६ ॥  
 सम्पूर्णश्चाथ वशिकं शून्यं तुच्छं च रिक्तकम् ।  
 पुराणे प्राक्तनप्रत्नपुरातनचिरन्तनाः ॥ ८७ ॥  
 नूतने त्वभिनवो नव्यो नवीनो नूतनो नवः ।  
 शाश्वते त्वमृतो नित्यः सनातनसदातनौ ॥ ८८ ॥  
 सद्यस्तने तु साद्यस्कप्रत्यग्राभ्यग्रशारदाः ।  
 ह्यस्तनश्चस्तनाद्याः स्युर्ह्यआदिस्थेषु वस्तुषु ॥ ८९ ॥  
 कालवाच्यव्ययेभ्यः स्यादन्येभ्योऽपि तथा तनः ।  
 न्यक् स्यादधोमुखं न्युब्जमुदुब्जोत्तानमुन्मुखे ॥ ९० ॥  
 उदक् प्रत्यक् परागर्वाक् प्राक् च तिर्यग्वागपाक् ।  
 विष्वक् चैवमुदीचीनप्रमुखाः स्युर्यथाक्रमम् ॥ ९१ ॥  
 दिग्देशकालवचनमुदगादिकमव्ययम् ।  
 दिग्देशकालसम्बन्धिपदार्थेष्वभिधेयवत् ॥ ९२ ॥  
 यः सहाञ्चति सध्र्यङ् स विष्वद्र्यङ् विष्वगाञ्चति ।  
 देवानञ्चति देवद्र्यङ् सधीचीनादि चोन्नयेत् ॥ ९३ ॥  
 अविलम्बितमुष्णं संशितं तु सुतेजितम् ।  
 उत्पिब्जलं समुत्पिब्जमिति द्वे भृशमाकुले ॥ ९४ ॥



अनादृते त्ववज्ञातमवतीर्णापहस्तितम् ।  
 चलितप्रेक्षिताधूतवेक्षिताकम्पिता ध्रुते ॥ ६५ ॥  
 रुचिते हृद्यलषितवाञ्छितेष्टेष्टितेहिताः ।  
 संवीतं स्याद् बलयितं वेष्टितं रुद्धमावृतम् ॥ ६६ ॥  
 नुन्नास्तनुत्तप्रहितक्षिप्तविद्धाः स्युरीरिते ।  
 बद्धे सन्नाहितं नद्धं मुद्रितं सन्दितां सितम् ॥ ६७ ॥  
 सन्तापितं धूपायितं दूनं तप्तञ्च धूपिते ।  
 मार्गिते मृगितान्विष्टावन्वेषितगवेषितौ ॥ ६८ ॥  
 लब्धाप्तासादितप्राप्तभूतविज्ञास्तु भाविते ।  
 प्रयत्ने मुद्रितप्रीतदृष्टाः सुहिततृप्तवत् ॥ ६९ ॥  
 आबर्हिते तूद्वृद्धितोन्मूलितोत्पादितोद्वृताः ।  
 ऊतगोपायितत्रातत्राणगुप्तास्तु रक्षिते ॥ १०० ॥  
 मनिते विदितज्ञातौ बुधिते बोधबुद्धवत् ।  
 त्यक्ते तु विधुतोत्सृष्टहीनधूतसमुज्झिताः ॥ १०१ ॥  
 कृत्ते लूनच्छिन्नदातवृक्कणच्छातच्छितादिताः ।  
 स्रस्ते भ्रष्टध्वस्तपन्नगलितस्कन्नविच्युताः ॥ १०२ ॥  
 प्रेङ्खोलितं तरलितं लुलितं प्रेङ्खितं च तत् ।  
 भजमाने प्राप्तयुक्तन्यायान्यौपथिकोचिते ॥ १०३ ॥  
 न्यस्ते त्वारोपितोऽध्यस्तो निहितोऽपहितो हितः ।  
 उपसन्नं तूपनतमुपप्राप्तमुपस्थितम् ॥ १०४ ॥  
 शुश्रूषितं परिवसितमुपासितञ्च बरिवसितञ्च समम् ।  
 अपचायितं नमसितं नमस्यितं सममपचितञ्च ॥ १०५ ॥  
 पणितपणायितपनिताः पनायितस्तुतनुतेडिताःशस्ते ।  
 वर्णितगीर्णौ च तथा सङ्कीर्णौपश्रुतौ प्रतिज्ञाते ॥ १०६ ॥  
 उन्नोत्ततिमितक्लिन्नस्नपितार्द्राणि सार्द्रवत् ।  
 स्युः प्रत्यवसिते प्सातजगधान्नाशितखादिताः ॥ १०७ ॥  
 प्रस्तग्लस्ताभ्यवहृतमुक्तभक्षितजक्षिताः ।  
 परिक्षिप्तं तु निवृतं निदिग्धोपचितौ समौ ॥ १०८ ॥  
 प्राप्ते प्रणिहितापन्नौ विस्मृतोऽन्तर्गतेऽस्मृते ।  
 सङ्गूढं स्यात् सङ्कलितं स्यन्नं रीणं क्षुतं स्नुतम् ॥ १०९ ॥  
 अवरीणो धिक्कृतः स्याद् हब्धे ग्रथितमुद्रितौ ।  
 सङ्कीर्णे सङ्कुलाकीर्णौ विस्मृते विस्मृतं ततम् ॥ ११० ॥

सिद्धे निर्वृत्तनिष्पन्नौ भिन्ने भेदितदारितौ ।  
 वेधितच्छिद्रतौ विद्धे तद्वृत्तवष्टौ तनूकृते ॥ १११ ॥  
 ऊतं स्यूतमुतं तन्तुसन्तते प्रार्थितेऽर्दितम् ।  
 उद्धृतं समुदस्तं स्यान्मर्मस्पृक् स्यादरुन्तुदम् ॥ ११२ ॥  
 गुण्डितं रुषिते क्लिष्टे क्लेशितं पूजितेऽञ्चितम् ।  
 झप्तं तु झपिते हन्नं गूले मीढं तु मूत्रिते ॥ ११३ ॥  
 पुषिते पुष्टमुद्गूणोद्यत(यत्ताः प्रयत्नवान्) ।  
 दमिते दान्तं शमिते शान्तमुद्धान्तमुद्गते ॥ ११४ ॥  
 पन्नं प्रपतिते सन्नं लिष्टे तुन्नं तु पीडिते ।  
 निष्पक्वे कथितं सोढे क्षान्तं निचितमाचिते ॥ ११५ ॥  
 मुषिते लुण्ठितं यस्ते निस्पृष्टं वृद्धमेधिते ।  
 काचितं शिक्नियते दिश्यं दिग्भवेऽभ्रभवेऽभ्रियम् ॥ ११६ ॥  
 यक्षियं यज्ञकर्माहं चक्षुष्यं चक्षुषे हितम् ।  
 तत्तद्वात्रभवे दन्त्वं हस्त्यमोष्ठ्यमितीदृशाः ॥ ११७ ॥  
 पुंसः पौस्नं स्त्रियाः स्त्रौणमग्नेराग्नेयमित्यपि ।  
 दण्डवान् दण्डिको दण्डीत्येवं नेयमदन्ततः ॥ ११८ ॥  
 ब्रीहिणो ब्रीहिमन्तः स्युर्यवमन्तो यवान्विताः ।  
 निर्जने स्थान एकान्तं विविक्तं विजनं तथा ॥ ११९ ॥  
 छन्नं गुह्यं निशशलाकं रहः क्लीबोऽथवाऽव्ययम् ।  
 गुह्यं रहस्यमित्येतावप्रकाशयेऽपि वस्तुनि ॥ १२० ॥  
 समं समानं सविधं सदृक्षं सदृशं सदृक् ।  
 तुल्यं सवर्णं शब्देभ्यः परे स्युः प्रतिमा प्रभा ॥ १२१ ॥  
 आभा प्रख्योपमाभिख्या प्रकारः सन्निभं निभम् ।  
 निकाशाद्याश्च साम्यार्थाः समे स्युः शब्दतः पराः ॥ १२२ ॥  
 परस्परं स्यादन्योन्यमितरेतरमित्यपि ।  
 वक्रं वृजिनमाविद्धमूर्मिमत् कुञ्चितं नतम् ॥ १२३ ॥  
 अरालं कुटिलं भुग्नमवक्रे प्रगुणोऽप्यजुः ।  
 सत्वरं त्वरितं तूर्णमरं क्षिप्रं लघु द्रुतम् ॥ १२४ ॥  
 अजिरं चपलं शीघ्रमविलम्बितमाशु च ।  
 विरलं तनु विश्लिष्टमघनं तलिनं तथा ॥ १२५ ॥

निबिडं निबिरीसं स्याद् घनं सान्द्रं निरन्तरम् ।  
 विकटं तु विरुपं स्यात् सम्बाधः सङ्कटः समौ ॥ १२६ ॥  
 प्रतीपं प्रतिकूलं स्यादनुकूलं विपर्यये ।  
 अनुलोममनुचीनं प्रतिलोमं विपर्यये ॥ १२७ ॥  
 अव्ययीभावोऽनुपदमन्वगन्वक्षमित्यपि ।  
 एकसर्गोऽनन्यवृत्तिरेकाग्रैकायनैकगम् ॥ १२८ ॥  
 अप्येकतान एकान्तोऽप्येकायनगतोऽपि च ।  
 साधारणं तु सामान्यं मोघं व्यर्थमपार्थकम् ॥ १२९ ॥  
 नित्यानवरताजस्रसतताश्रान्तसन्तताः ।  
 अनारतं चाविरतमसक्तं चानिशं नपुम् ॥ १३० ॥  
 अतिमात्रेऽतिमर्याद मतिवेलातिमानकम् ।  
 भृशमत्यन्तमत्यर्थमधिकोद्गाढनिर्भरम् ॥ १३१ ॥  
 तीव्रं तु गाढमेकान्तं नितान्तं दृढबाढवत् ।  
 वशेऽनर्गलमुद्दाममुच्छङ्खलमयन्त्रितम् ॥ १३२ ॥  
 परोक्षेऽतीन्द्रियोऽप्यक्षप्रत्यक्षौ तु समक्षवत् ।  
 सकाशं स्यात् सन्निहिते समन्तं तु समन्तिकम् ॥ १३३ ॥  
 प्रकाशं प्रकटं स्पष्टमुल्बणं विशदं स्फुटम् ।  
 सुन्दरं रुचिरं रुच्यं मनोज्ञं मञ्जु मञ्जुलम् ॥ १३४ ॥  
 शोभनं सुषमं चारु दृढं चौक्षं मनोहरम् ।  
 न्युङ्क्तं हारि प्रियं साधु लढहं च मनोरमम् ॥ १३५ ॥  
 अल्पं सूक्ष्ममणु स्तोकं दहं दहरमर्हकम् ।  
 किञ्चिन्मात्रं मितं दभ्रं श्लक्ष्णं तनु च पेलवम् ॥ १३६ ॥  
 अतिरिक्तोऽतिशयितो दृढः समधिकोऽधिकम् ।  
 चतुरं पेशलं दक्षं कटु तूल्बणमुत्कटम् ॥ १३७ ॥  
 विशेषणं क्रियाया स्युः समाद्याः क्ली च तद्यथा ।  
 पुत्रं धत्ते सममिति नित्याद्यास्तु गुणस्य च ॥ १३८ ॥  
 नित्यं धत्ते सितो नित्यमिति द्रव्ये पुनस्त्रिषु ।  
 उभयेऽपि यथा धत्ते समो नित्योऽर्थवानिति ॥ १३९ ॥

प्रथमं चरमं पूर्वमित्याद्यप्येवमुज्जयेत् ।  
समीपनिकटाभ्यप्राभ्यर्णाभ्याशान्तिमा इव ॥ १४० ॥

सदेशसविधासन्नसन्निकृष्टसवेशवत् ।  
उपकण्ठसमर्यादसवेधानि सनीडकम् ॥ १४१ ॥

उपान्ते विप्रकृष्टे तु दूरं व्यवहितं परम् ।  
भासुरं भविकं भव्यं कल्याणं श्रोवसीयसम् ॥ १४२ ॥

श्वश्रेयसं शिवं भद्रं कुशलं सूनुतं शुभम् ।  
श्रेयश्चैते समीपाद्या धर्मे क्ली तद्वति त्रिषु ॥ १४३ ॥

सुखं दुःखं मलं छिद्रं किलासं सिध्ममर्मरौ ।  
रभसः पलितं श्वित्रमेतेऽपि त्रिषु धर्मिणि ॥ १४४ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां सामान्यकाण्डे

अर्थवर्णिताध्यायः ॥ ४ ॥

पञ्चमः सामान्यकाण्डः समाप्तः ॥ ५ ॥





## ६. अथ द्यक्षरकाण्डः

पुलिङ्गाध्यायः ॥ १ ॥

अथ काण्डैरनेकार्थाः प्रोच्यन्तेऽत्र परैस्त्रिभिः ।  
 द्व्यक्षरास्त्र्यक्षराः शेषा इति काण्डेषु ते क्रमात् ॥ १ ॥  
 अकारादिहकारान्तं नाम्नामाद्यक्षरक्रमात् ।  
 संग्रहो द्व्यक्षरादीनां प्रोक्तान् प्रायो विना पुरा ॥ २ ॥  
 अर्थः स्याद्विषये मोक्षे शब्दवाच्ये प्रयोजने ।  
 व्यवहारे घने शास्त्रे वस्तुहेतुनिवृत्तिषु ॥ ३ ॥  
 अर्कोऽर्कपणे स्फटिके ज्येष्ठभ्रातरि भास्वति ।  
 अवयः शैलमेषार्का अद्रयोऽर्कगिरद्रुमाः ॥ ४ ॥  
 अट्टावतिशयक्षौमावर्धौ पूजाप्रतिक्रयौ ।  
 अर्याः शास्त्रस्वामिवैश्याः सर्पे वृत्रासुरेऽप्यहिः ॥ ५ ॥  
 अंशुः सूत्रादिसूक्ष्मांशोऽप्यङ्गुलिह्येऽन्तिकोरसोः ।  
 आत्मा जीवे धृतौ देहे स्वभावे परमात्मनि ॥ ६ ॥  
 यत्नेऽर्केऽमौ मतौ वातेऽप्याखू सूकरमूषिकौ ।  
 आधिस्तु व्यसने चित्तदुःखेऽधिष्ठानबन्धयोः ॥ ७ ॥  
 इन्द्रो विषात्मशक्रार्कैष्वीश्वरे नामतः परः ।  
 इष्णोऽभिलाष आचार्य ऊमो व्योम्नि पुरेऽपि च ॥ ८ ॥  
 ग्रीष्मोष्णबाष्पा ऊष्माण ऊर्जाबुत्साहकार्तिकौ ।  
 ऋषिस्तु वेदे भृगवादौ ज्ञानवृद्धे दिगम्बरे ॥ ९ ॥  
 ओषः परम्परायां स्याज्जलस्रोतसि सञ्चये ।  
 करो घनोपले हस्ते प्रत्याये रश्मिशुण्डयोः ॥ १० ॥  
 दातुं मूषितकन्यायां कूपो गर्ते प्रहावपि ।  
 क्षणो व्यापारवैकल्ये कालभेदाल्पकालयोः ॥ ११ ॥  
 उत्सवे परतन्त्रत्वे मध्यावसरपर्वसु ।  
 कन्तु कुसूलकन्दपौ प्राज्ञकाव्यकृतौ कवी ॥ १२ ॥

कण्ठो गलेऽन्तिके शब्दे कपयोऽर्कभवानराः ।  
 गुडभस्मरसाः क्षाराः क्षोदो रजसि पेषणे ॥ ११ ॥  
 क्रतू अश्वरसङ्कल्पौ कल्पान्तेऽपचये क्षयः ।  
 कुक्षौ वासे च कच्छस्तु पार्श्वे गुह्याम्बरे तटे ॥ १४ ॥  
 कारुस्तु विश्वकर्मापि धान्यांशे शीकरे कणः ।  
 कालो दिष्टे यमे काचो मृद्भेदे शिष्यदृष्टजोः ॥ १५ ॥  
 उत्पातेऽङ्के ध्वजे केतुः क्षेदौषधिशशाङ्कयोः ।  
 कोणाः शब्दाश्रितगुडा कल्पो न्याये सुरद्रुमे ॥ १६ ॥  
 विकल्पेऽपि च कक्षस्तु गुल्मे स्पर्धापदे वृणे ।  
 कान्यस्पृहास्मराः कामाः कलहेऽन्त्ययुगे कलिः ॥ १७ ॥  
 कुम्भो गजशिरोऽन्तेऽपि पद्म्यर्केष्वनिलाः खगाः ।  
 खरुः पुंस्मररुद्रेषु गर्मुद्रुक्मे खगे रवौ ॥ १८ ॥  
 गणाः प्रमथसङ्गथौघाः प्रावाणौ पर्वतोपलौ ।  
 तन्तुनागाग्रहौ ग्राहौ गुल्मो व्यूढा च वाहिनी ॥ १९ ॥  
 गण्डो गर्वेऽप्यथार्कादिसत्त्वादानाग्रहा ग्रहाः ।  
 गुणस्त्वावृत्तिशब्दादिज्येन्द्रियामुख्यतन्तुषु ॥ २० ॥  
 ग्रन्थो द्रव्यं वचशशास्त्रं द्वात्रिंशद्वर्णसञ्चयः ।  
 गर्भोऽपषरकेऽन्नेऽग्नौ सुते पनसकण्टके ॥ २१ ॥  
 कुक्षौ कुक्षिस्यजन्तौ च गन्धो लेशे महीगुणे ।  
 घृणिर्जालांशुवीचीषु चरुः स्थाल्यां हविष्यपि ॥ २२ ॥  
 चटुश्चाटुश्च राजादिस्तुतौ पशुपिचिण्डके ।  
 चक्री विष्णौ कुलालेऽहौ च्युपौ पवनसङ्क्रमौ ॥ २३ ॥  
 वशाभिप्राययोश्छन्दो जूर्णी रविहविर्भुजौ ।  
 टङ्कौ प्रमाणगर्वौ च डिम्बः ग्रीहखगाण्डयोः ॥ २४ ॥  
 तर्काः काङ्कावितर्कोहास्त्वष्टा तदिण युशिल्पिनि ।  
 मणिदोषे भये त्रासस्तिष्यः पुष्ये कलौ युगे ॥ २५ ॥  
 द्वारपाले यमे दण्डी दन्तोऽद्रिकटके रदे ।  
 दायो दाने यौतकादिधने वित्ते च पैतृके ॥ २६ ॥  
 दवदावौ वनारण्यवह्नयोः खगार्कयोर्द्युवा ।  
 धवो वृत्ते नरे पत्यौ ध्वाङ्कः स्याद् वायसे बके ॥ २७ ॥  
 घातुर्वातादिशब्दादिगैरिकादित्वगादिषु ।  
 महाभूतेष्विन्द्रियेषु शब्दयोनिस्वभावयोः ॥ २८ ॥

लोहेऽर्थे गैरिकस्वर्णरेतोऽस्थिषु विशेषतः ।  
 नरोऽर्जुने मनुष्ये च नाकः स्वर्गान्तरिक्षयोः ॥ २६ ॥  
 ग्राह्याभ्राहिगजा नागा नाभिः क्षत्रे महानृपे ।  
 न्यङ्कुर्गुरुकुलेवासी शिष्यो मुनिमृगावपि ॥ ३० ॥  
 नाशः पलायने मृत्यौ परिध्वंसेऽप्यदर्शने ।  
 नम्रा वैतालिकाद्याश्च पिण्डो वृत्ते तनौ गुडे ॥ ३१ ॥  
 पीयुः काल उल्लूके च पीलुः काण्डे गजे द्रुमे ।  
 पुण्ड्राः कृमीक्षुतिलकाः पत्री श्येने शरे खगे ॥ ३२ ॥  
 प्रेषणे मर्दने प्रैषः पुङ्खः श्वेतशराङ्गयोः ।  
 पवी वातास्त्रधारे च पाकपोतौ शिशावपि ॥ ३३ ॥  
 पट्टो नेत्रेऽपि शाणे स्यात् पिण्डः कल्केऽपि तैलजे ।  
 पणो मूल्ये ग्लहे माने कार्षिकव्यवहारयोः ॥ ३४ ॥  
 धूते विक्रयशाकादिबद्धमुष्टौ भृतौ घने ।  
 पक्षः पार्श्वगरुत्साध्यसहायबलभित्तिषु ॥ ३५ ॥  
 पार्श्वद्वारे विरोधेऽर्धमासे चुल्लिबिलेऽन्तिके ।  
 प्रायो वयसि बाहुल्ये तुल्यानशनमृत्युषु ॥ ३६ ॥  
 पाशो रज्जौ कर्णशब्दात् परः कर्णेऽतिशोभने ।  
 क्रमनिम्नमहीभागकपिप्लुतिखगाः प्लवाः ॥ ३७ ॥  
 प्राणस्तु प्रणवे जीवे जीविते परमात्मनि ।  
 इन्द्रिये वायुभेदे च बलान्तर्यामिणोरपि ॥ ३८ ॥  
 श्वेतार्के ढाडिमे फालो बन्धाः सीसाधियन्त्रणाः ।  
 बलिः पूजोपहारे च दैत्यभेदे करेऽपि च ॥ ३९ ॥  
 बाष्पोऽश्रूण्यम्बुधूमे च मानवोऽर्कहरांशवः ।  
 भ्रूणोऽर्भके स्त्रैणगर्भे गर्भिण्यां श्रोत्रियद्विजे ॥ ४० ॥  
 भवो भद्रे हरे प्राप्तौ रुत्तासंसारजन्मसु ।  
 भागा भाग्यांशतुर्याशा भरभारौ गरिम्प्यपि ॥ ४१ ॥  
 भरबीवधयोश्चान्त्यौ भूस्पृशौ वैश्यमानवौ ।  
 विश्लेषे दारणे भेदो भेनः सूर्ये निशाकरे ॥ ४२ ॥  
 भावो लीलाक्रियाचेष्टाभूत्यभिप्रायजन्तुषु ।  
 पदार्थमात्रे सत्तायामात्मयोनिस्वभावयोः ॥ ४३ ॥  
 भोगो राज्ये घने सौख्ये पालनाभ्यवहारयोः ।  
 फणे वेहे च सर्पस्य वेश्यादीनां भृतावपि ॥ ४४ ॥

मन्त्रावृगादिगुह्योक्ती मन्युर्दैन्येऽध्वरे क्रुधि ।  
 मार्को मनसि वायौ च मोहाः क्रुन्मौख्यमूढताः ॥ ४५ ॥  
 मार्गो मृगपदे मासि सौम्यर्क्षेऽन्वेषणेऽध्वनि ।  
 मूत आतञ्जने ब्रीहौ ब्रीह्यादेर्बन्धने रुणैः ॥ ४६ ॥  
 मृगस्तु मृगशीर्षेऽपि मोक्षो मृत्यौ मरुद्गिरौ ।  
 यन्ता हस्तिपके सूते यक्षोऽग्न्यात्महरीष्टिषु ॥ ४७ ॥  
 यथुरश्वेऽश्वमेधाश्चे योगो विस्रब्धघातिनि ।  
 प्राप्नोति सन्नह्नोपायध्यानसङ्गतिर्युक्तिषु ॥ ४८ ॥  
 रसो राने विषे वीर्ये तिक्तादौ पारदे द्रवे ।  
 रेतस्यास्वादने हेम्नि निर्यासेऽमृतशब्दयोः ॥ ४९ ॥  
 रश्मी ज्वालाप्रग्रहौ च रदो दन्तविलेखयोः ।  
 राजा तु क्षत्रिये चन्द्रे लताभेदे नृपे प्रभौ ॥ ५० ॥  
 रागोऽनुरागे लाक्षादौ त्विषि राकस्तु पूष्णि च ।  
 रङ्गौ तु स्थानरागौ च भूप्रदेशे मृगे लिङ्गुः ॥ ५१ ॥  
 भोजने लेपने लेपो लोकः स्याद् विष्टपे जने ।  
 वंशः पृष्ठास्त्रि गोहोर्ध्वकाष्ठे वेणौ गणे कुले ॥ ५२ ॥  
 नासोर्ध्वास्त्रीक्षुभेदे च वहिरुद्दिण ह्येऽनले ।  
 बलो धान्येऽसुरे काके गवां आसेऽनिले वहः ॥ ५३ ॥  
 वेणू वेदसहस्रांशू गोष्ठाध्वनिवहा व्रजाः ।  
 बालौ पुच्छाश्चपुच्छौ च व्याजश्छद्वापदेशयोः ॥ ५४ ॥  
 विधी तु दैवकालौ च वाजी त्वश्वे शरे खगे ।  
 विधुर्निशाकरे काले विष्णौ वातेऽग्निरक्षसोः ॥ ५५ ॥  
 वृन्दविन्यासयोर्व्यूहो वृषोऽप्यग्रथे पुमिन्द्रयोः ।  
 वृत्राः शत्रुतमोदैत्या वेगः किम्पाकरंहसोः ॥ ५६ ॥  
 वेघसो विष्णुघातज्ञाः शादः कर्दमशष्पयोः ।  
 शम्भुर्घातहरार्हत्सु शक्रः कुटजवज्रिणोः ॥ ५७ ॥  
 शम्भो वज्रे लोहमयबलये मुसलाग्रगे ।  
 शरो रसामसारेऽपि शूकोऽनुक्रोशशुङ्गयोः ॥ ५८ ॥  
 शब्दोऽक्षरे यशोगीत्योर्वाक्ये स्वे श्रवणे ध्वनौ ।  
 शङ्कुः पत्रसिराजाले कीलेऽस्त्रे मेढ्रसङ्ख्ययोः ॥ ५९ ॥  
 कुक्कुटेऽमौ मयूरैः शौ वृत्ते केतुग्रहे शिखी ।  
 पद्ये यशसि च श्लोकः षण्ढौ विट्चरपण्डकौ ॥ ६० ॥



ण्ड्यूमसूमौ जले चन्द्रे तन्तुमङ्गलरश्मिषु ।  
 सम्राजोऽग्नीन्द्रविष्णवर्का यश्च स्यान्मण्डलेश्वरः ॥ ६१ ॥  
 राजसूयेन येनेष्टं राज्ञः शास्त्याज्ञया च यः ।  
 सर्गास्तु सर्जनाध्यायस्वभावोत्साहनिश्चयाः ॥ ६२ ॥  
 सन्धिः श्लेषे सुरुङ्गायां नाट्याङ्गे योनिरन्ध्रयोः ।  
 स्वरोऽकाराद्युदात्ताद्योः षड्जादौ प्राणिनां स्वने ॥ ६३ ॥  
 सरटौ पक्षिजलदौ स्पशौ तु चरसंयुगौ ।  
 स्तम्भौ स्थूणाजडीभावौ यूपांशे कुलिशे स्वरुः ॥ ६४ ॥  
 स्कन्दो धाता नदीकूलं साद्यश्चःरोहसूतयोः ।  
 सालो मत्स्ये वृक्षभेदे प्राकारदुममात्रयोः ॥ ६५ ॥  
 सिक्थो ना भक्तपूलाके मधूच्छिष्टे कचिन्नपुम् ।  
 सुतः पुत्रे सोमरसे सोमौ व्योमनिशाकरौ ॥ ६६ ॥  
 स्तूपा वायुरणोच्छ्वाया आङ्गाऽऽह्वानाध्वरा हवाः ।  
 हर्तुर्मृत्यौ महारागे हरा रुद्राग्निगर्दभाः ॥ ६७ ॥  
 हंसोऽश्वेऽर्के हरे विष्णौ खगे निर्लोभभूभुजि ।  
 जीवे श्वेतवृषे भिक्षौ पार्श्विकाप्रसभौ हठौ ॥ ६८ ॥  
 वारिपर्णी च हेतुस्तु कारणे कर्मजन्मनोः ।  
 हीरः सर्पे हरे सिंहे हेलिरालिङ्गने रवौ ॥ ६९ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

द्वयक्षरकाण्डे पुंलिङ्गाध्यायः ॥ १ ॥

## स्त्रीलिङ्गाध्यायः ॥ २ ॥

अर्चा पूजाप्रतिमयोरर्तिश्चापाग्रपीडयोः ।  
 अन्दूस्तु शृङ्खला पादभूषाऽप्यष्टी फलास्थयपि ॥ १ ॥  
 आस्था गोष्ठ्यां प्रतिज्ञायां तत्परत्वेऽवलम्बने ।  
 आशीरुगदंष्ट्रायां शुभवाक्याभिलाषयोः ॥ २ ॥  
 आलिः सेतौ सखीपङ्क्त्योराशा दिगतिनृणयोः ।  
 आजिः समेऽपि भूभागे गोनाडीभूद्युवाच्चिडा ॥ ३ ॥  
 इलाऽप्येतासु चार्घे च स्यादिज्या यागपूजयोः ।  
 इष्टिः स्पृहायजनयोरिरा भूवाक्सुराम्बुषु ॥ ४ ॥  
 अन्ने च स्यादथो ईतिरुपसर्गप्रवासयोः ।  
 ईहा तु लिप्सोद्यमयोरुतिः सूत्यभिरक्षयोः ॥ ५ ॥  
 ऊर्णा भ्रमध्यगावर्ते तन्तौ मेषादिलोमसु ।  
 हिंसाविक्षेपयोः कीणिः कीर्तिः पङ्के यशस्यपि ॥ ६ ॥  
 कक्ष्या कच्छे वरत्रायां काञ्च्यां गेहप्रकोष्ठके ।  
 कर्मा हाटकपुत्र्यां स्यादापि शालापलालयोः ॥ ७ ॥  
 कासूर्बुद्धौ कुवाच्यस्त्रे कान्तिः शोभाभिकामयोः ।  
 काष्ठोत्कर्षे सीन्नि दिशि क्षोण्यां वासे क्षये क्षितिः ॥ ८ ॥  
 क्रिया तु निष्कृतौ शिक्षाचिकित्सोपायकर्मसु ।  
 करणारम्भपूजासु चेष्टायां सम्प्रधारणे ॥ ९ ॥  
 काले शिल्पे वित्तवृद्धौ चन्द्रांशे कलने कला ।  
 महाभूतेष्विन्द्रियेषु ज्ञानावयवयोरपि ॥ १० ॥  
 कोटिस्त्वश्रौ प्रकर्षेऽग्रे दशोपायगमे गतिः ।  
 गुप्तिः क्षितिर्व्युदासेऽपि गुञ्जा भाण्डेऽपि वादने ॥ ११ ॥  
 घृणा जुगुप्साकृपयोर्घोणाऽपि रथकणिका ।  
 चिन्ताचिकित्थयोश्चर्चा चूर्णिग्रन्थे कपर्दके ॥ १२ ॥  
 चापाग्रे पिष्टके चूलिशङ्खर्दिरुद्धान्तिरेतसोः ।  
 छाया त्वनारूपे कान्तौ प्रतिबिम्बार्कजाययोः ॥ १३ ॥

जनिर्वरस्त्रीपत्योश्च जामिः स्वसृकुलस्त्रियोः ।  
जातिश्छन्दसि मालत्यां सामान्ये जन्मगोत्रयोः ॥ १४ ॥  
अलक्ष्यप्रजयोर्ज्येष्ठा गृहगोत्र्यक्षभेदयोः ।  
जिह्वा वाग्रसनाचिष्णु तन्द्रा निद्राप्रमीलयोः ॥ १५ ॥  
तन्त्रीगुह्यचीसिरयो रज्ज्वां वीणादिगो गुणे ।  
तन्दूद्रोणिप्लवे दर्व्या वाये काले लवे तुष्टिः ॥ १६ ॥  
तुला साम्ये स्तम्भपीठे लेशसंशययोस्तुष्टिः ।  
तूली शय्याकूर्चिकयोस्त्रेता त्वमित्रये युगे ॥ १७ ॥  
दरदो भीतिहृद्गूढा दृष्टिर्धीदर्शनादिषु ।  
द्रोणी स्यादम्बुवाहिन्यां द्रवभाण्डे गिरिप्लवे ॥ १८ ॥  
दिष्टिः सुखे च दाने च धात्री भूव्युपमातरि ।  
धनुः सुखीधनुर्ज्योसु धानो बीजेऽपि भूरुहाम् ॥ १९ ॥  
धारास्त्राग्रेऽम्बुसन्तत्यां सैन्याग्रेऽश्वगतिष्वपि ।  
धीता सुतायां बुद्धौ च धृतिः सौख्येऽपि धारणे ॥ २० ॥  
निष्ठोत्कर्षे व्यवस्थायां नाशेऽन्ते व्रतयज्ञयोः ।  
भित्तिमूले प्रधौ नेमिर्निन्दा कुत्साऽपवादयोः ॥ २१ ॥  
पालिरग्निः प्रदेशोऽङ्कः सश्मश्रुः स्त्री त्सरश्छदः ।  
छन्दः सङ्ख्यावली पङ्क्तिः पक्तिर्गौरवपाकयोः ॥ २२ ॥  
क्षुद्रग्रामेऽपि पल्ली स्यात् प्रभाऽर्चिषि च भासि च ।  
प्रज्ञा प्राज्ञस्त्रियां बुद्धौ प्रजा तु जनपुत्रयोः ॥ २३ ॥  
प्रसूर्जनन्यामन्वायां पारिः सृणिगुणेऽपि च ।  
पादुकोपानहोः पादूः प्राप्ती अभिगमोदयौ ॥ २४ ॥  
पीडाऽवमर्दकृपयोः प्रीतिः प्रेमप्रमोदयोः ।  
प्रेक्षा नृत्तेक्षणे बुद्धौ बाधा दुःखनिषेधयोः ॥ २५ ॥  
भसदौ गुणवित्कोष्ठौ भक्तिर्माणे निषेवणे ।  
भिक्षा तु भिक्षितान्नादौ याच्न्वायां भृतिसेवयोः ॥ २६ ॥  
भूमिः क्षितौ स्थानमात्रे भूतिः श्रीजन्मभस्मसु ।  
मतिः काङ्क्षा शेमुषी च मल्लिर्नृत्पात्रपीठयोः ॥ २७ ॥

माता तु गव्यकारादौ ब्राह्मयाद्यासु प्रसूमयोः ।  
मूर्तिर्देहप्रतिमयोः काककाठिन्ययोरपि ॥ २८ ॥

पुंश्चल्यां मौक्तिके मुक्ता कारासंयमयोर्यतिः ।  
गमने जीवने यात्रा रुजा रुग्भृङ्गमृत्यवः ॥ २९ ॥

राजिः पङ्क्तौ राजसर्पे क्षेत्रेऽधो रसनस्य च ।  
रीतिर्दग्धसुवर्णादिमले स्थित्यारकूटयोः ॥ ३० ॥

प्रचारे श्रवणे पङ्क्तौ रण्डा स्याद्विधवाऽपि च ।  
रुचिः कान्त्यर्चिषोर्भाक्षि तिन्निडीके स्पृहाश्रियोः ॥ ३१ ॥

रेटिर्वह्नेश्च रटितं वाणी चासंयतोत्कटा ।  
रेखायामावलयौ रेखा लङ्का पूर्वोदशाखयोः ॥ ३२ ॥

लीला क्रिया विलासश्च वपा गोण्डो बिलं तथा ।  
बलिर्मध्यगरेखोर्मिजीर्णत्वग्गृहदारु च ॥ ३३ ॥

वर्धी स्नायुनि नध्रया च ब्रज्या पर्यटने गतौ ।  
विधा विधाने हस्त्यन्त्रे भृत्यामृद्धिप्रकारयोः ॥ ३४ ॥

वीरुधौ गुल्मगुल्मिन्यौ वीथी पङ्क्त्यध्वनोरपि ।  
वीचिः पङ्क्त्यूर्मिलेशेषु व्युष्टी फलसमृद्धते ॥ ३५ ॥

वृत्तिग्रन्थाजीवयोश्च वेलाऽन्धिजलवर्धने ।  
काले सीम्नि च वेणी तु केशबन्धे जलस्रुतौ ॥ ३६ ॥

वृद्धिः सुखेऽपि जङ्घापि वारुः शुक्तिस्तु ह्रस्वजि ।  
अन्धावर्ते च शाला तु गृहाङ्गस्कन्धशाखयोः ॥ ३७ ॥

शक्तिः कासूर्बलं लक्ष्मीः शारदावृत्तुवत्सरौ ।  
शङ्का वितर्कभययोः श्रद्धाऽऽस्तिक्याभिलाषयोः ॥ ३८ ॥

शाखा वेदप्रभेदेषु बाहौ पाददुमाङ्गयोः ।  
श्यामा कन्या निशा चाथ शान्तिः प्रशममङ्गले ॥ ३९ ॥

शिखा श्वालाकेकिमौलयोः शिफा शाखाग्रमौलिषु ।  
शुण्डा करिकरे मध्ये श्रुतिर्वेदे अवस्यपि ॥ ४० ॥

शय्या तल्पे ग्रन्थगुल्फे शंसा तु स्तववाक्ययोः ।  
संविद् युद्धे प्रतिज्ञायां सङ्केताचारनामसु ॥ ४१ ॥



सम्भाषणे क्रियाकारे विज्ञाने तोषणेऽपि च ।  
 सभा तु संसदि द्यूते गृहे सामाजिकेषु च ॥ ४२ ॥  
 संज्ञाऽर्कभार्या चैतन्यं हस्ताद्यैः सूचनाऽभिधा ।  
 संस्था व्यवस्थाप्रणिधिसमाप्त्याकारमृत्युषु ॥ ४३ ॥  
 सन्धाऽवधौ प्रतिज्ञायां सातिर्दानावसानयोः ।  
 सीमसीमे तु कूलेऽपि स्थानमर्यादयोः स्थितिः ॥ ४४ ॥  
 गङ्गेष्टिमूर्वयोः स्नुह्यां लेपभेदेऽमृते सुधा ।  
 राशमेखलयोः स्यूना सीता सस्ये हलाध्वनि ॥ ४५ ॥  
 स्थूणा सूर्या गृहस्तम्भे हिंसा चौर्यादिके वधे ।  
 हेलोऽवज्ञाभावचारौ हेतिर्ज्वालांशुरायुधम् ॥ ४६ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां  
 द्वयक्षरकाण्डे श्रीलिङ्गाध्यायः ॥ २ ॥



## नपुंसकलिङ्गाध्यायः ॥ ३ ॥

अम्रं सलिलदे व्योमन्यस्त्रं कोदण्ड आयुधे ।  
 अम्रं पुरःशिखामानशैष्ट्याधिक्यफलेषु च ॥ १ ॥  
 मुष्के पद्म्यादिकोशेऽण्डं दुःखैनोव्यसनेष्वघम् ।  
 अर्शसी व्याधिदुर्नाम्नी आज्ये श्रीवाससर्पिषि ॥ २ ॥  
 वर्षार्थजीवितेष्वायुरास्यं मुखविले मुखे ।  
 उरस्तु वक्षसि श्रेष्ठ ऋतं तथ्यशिलोऽब्जयोः ॥ ३ ॥  
 ओजोऽवष्टम्भबलयोरोकसी मन्दिराश्रमौ ।  
 क्रियायजनयोः कर्म क्षीरं दोहजमम्बु च ॥ ४ ॥  
 कुण्डं स्थाल्यां जलाधारविशेषेऽनलगर्तके ।  
 पिण्याको नम्रहूः किण्वं कूलं तीरे चमूकटौ ॥ ५ ॥  
 क्षेत्रं गृहे पुरे देहे केदारे योनिभार्ययोः ।  
 पुण्यस्थाने समूहे च घृतं त्वाज्येऽम्बुसर्पिषोः ॥ ६ ॥  
 चक्रं सैन्ये जलावर्ते रथाङ्गे चयराष्ट्रयोः ।  
 संसारे मण्डले वृत्ते छद्मभेदास्त्रभेदयोः ॥ ७ ॥  
 चैत्यं चिताङ्के बुद्धाण्डे उद्देशेऽद्रौ सुरालये ।  
 चिह्नमङ्के पताकायां छद्म सङ्घानि कैतवे ॥ ८ ॥  
 छन्दः श्रुतीच्छापद्येषुच्छिद्रं रन्ध्रापराधयोः ।  
 जालं गवाक्ष आनाये क्षारके कपटे गणे ॥ ९ ॥  
 जीलं चर्मपुटः कोशो दृतिः करकपत्रिका ।  
 ज्योतिस्ताराग्निभाज्ज्वालाह्वपुत्रार्थाध्वरात्मसु ॥ १० ॥  
 तन्त्रं स्वराष्ट्रव्यापारे तन्तुवाने परिच्छदे ।  
 शास्त्रौषधान्त्रमुख्येषु प्रयोगेऽध्वरकर्मणम् ॥ ११ ॥  
 एकस्यैवोभयार्थत्वे कुड्मुम्बव्यापृतावपि ।  
 तल्पं शय्यादृजायासु तनुषी तनुविस्तृती ॥ १२ ॥  
 त्रपु सीसे च रङ्गे च तरसी बलरहसी ।  
 तीर्थ मन्त्राद्युपाध्यायशास्त्रेष्वम्भसि पावने ॥ १३ ॥  
 पात्रोपायावतारेषु स्त्रीपुष्पे योनियज्ञयोः ।  
 तेजो बले प्रभावेऽन्ते ज्योतिष्यर्चिषि रेतसि ॥ १४ ॥

नवनीतेऽनले धर्मे दानं हस्तिमदेऽपि च ।  
 द्रव्यं गुणानामाधारे भेषजे योगवित्तयोः ॥ १५ ॥  
 द्वन्द्वं युग्मं हिमोष्णादि मिश्रुनं कलहो रहः ।  
 धाम जन्मप्रभावान्नभाःसु खे भोजने गृहे ॥ १६ ॥  
 नेत्रं नाड्यां तरोर्मूले वस्त्रे दृशि मथो गुणे ।  
 नाट्यं तौर्यत्रिके नृत्ते नालं विवरशेषसोः ॥ १७ ॥  
 पदं स्थाने शरे त्राणे पादाङ्के पादचिह्नयोः ।  
 शब्देऽशुवस्तुवाक्येषु व्यवसायापदेशयोः ॥ १८ ॥  
 पर्व ग्रन्थौ पञ्चदश्यां प्रस्तावे विषुवादिके ।  
 पद्म सूत्राद्यवयवे किञ्चलके नेत्रलोमसु ॥ १९ ॥  
 पत्रं तु वाहने पर्णे क्षुरिकागरुतोरपि ।  
 पयोऽम्भसि च दुग्धे च पाथसी सलिलौदनौ ॥ २० ॥  
 पात्रं तु भाजने योग्ये वित्ते कूलद्वयान्तरे ।  
 पार्थीषि स्वर्गचन्द्रार्का पिच्छं बर्हे खगच्छदे ॥ २१ ॥  
 पोत्रं मुखाग्रदेशे स्यात् सूकरस्य हलस्य च ।  
 नवनीतं पयः पीथं बर्हं पर्णशिखण्डयोः ॥ २२ ॥  
 बीजं शुक्ले फलास्थ्यङ्गे भर्मणी स्वर्णवेतने ।  
 वणिक्मूलधने पात्रे भाण्डं भूषाश्वभूषयोः ॥ २३ ॥  
 भाग्यं कर्मण्यन्यजन्मकर्मण्यपि शुभाशुभे ।  
 भर्गसी रेतआलोकौ महसी तेजउत्सवौ ॥ २४ ॥  
 माल्यं पुष्पे पुष्पदाम्नि मूल्यं वेतनवस्त्रयोः ।  
 मुखं तु वदने मुख्ये तान्त्रे द्वाराभ्युपाययोः ॥ २५ ॥  
 मूलं वशीकृतौ स्वीये शिफातारान्तिकादिषु ।  
 गमने वाहने यानं रत्नं श्रेष्ठे मणावपि ॥ २६ ॥  
 रहो रहस्ये सुरते रिष्टं नाशे शुभेऽशुभे ।  
 रुक्मं हेम सुलोहं च रेतसी शुक्लमम्बु च ॥ २७ ॥  
 रूपं शब्दे पशौ श्लोके ग्रन्थावृत्तौ सितादिषु ।  
 सौन्दर्ये च स्वभावे च शरद्रेण्वार्तवे रजः ॥ २८ ॥  
 ललं पल्लव उद्याने लक्ष्म चिह्नवरिष्ठयोः ।  
 स्यादुपच्छन्दने लालं गुह्यार्थपरभार्ययोः ॥ २९ ॥  
 लिङ्गं शोफसि वेषेऽशे चिह्ने बुद्ध्यादिसंहतौ ।  
 वयः खगेऽङ्गे वषेऽर्थे शुभाकारे तनौ वपुः ॥ ३० ॥

वर्चोऽर्चिरूपविडभाःसु वनं भास्यप्सु कानने ।  
 व्रतं विष्णुवृत्तुवर्षेज्यातपोमासाग्निभुक्तिषु ॥ ३१ ॥  
 वीर्यं पराक्रमे रेतस्यन्नमाहात्म्ययोरपि ।  
 वेष्टं ब्रह्मणि नाके च शल्के शकलवल्कले ॥ ३२ ॥  
 शस्त्राण्यस्त्रमयःशंसा शास्त्रं ग्रन्थनिदेशयोः ।  
 शार्ङ्गं चापे हरेश्चापे शीलं वृत्तस्वभावयोः ॥ ३३ ॥  
 शुल्बं ताम्रे यज्ञकर्मण्याचारे जलसन्निधौ ।  
 शोचिः शोकांशुपैङ्गल्यशुद्धत्वेषु सरोऽप्सु च ॥ ३४ ॥  
 यज्ञभेदे सदादाने सत्रमाच्छादने वने ।  
 सर्पिर्घृते च तोये च सान्त्वे दाक्षिण्यसान्त्वने ॥ ३५ ॥  
 स्नानीयेऽभिषवे स्नानं स्थानं स्यादाश्रये स्थितौ ।  
 सूत्रं तन्तौ सङ्ग्रहोक्तौ सुखमानन्दतोययोः ॥ ३६ ॥  
 स्रोतोऽम्बुनिर्गमद्वार इन्द्रियेऽप्सु जलस्रुतौ ।  
 हविर्हव्ये घृते तोये हेम्नी काञ्चनवेतने ॥ ३७ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

द्वयक्षरकाण्डे नपुंसकलिङ्गाध्यायः ॥ ३ ॥



## अर्थवलिङ्गाध्यायः ॥ ४ ॥

अर्धयोऽर्थयुक्तात्मवतोरन्त्योऽन्त्यजनिऋष्टयोः ।  
 कलृप्तेऽर्घ्यार्घ्यमर्घाहोऽप्यदस्त्वत्र परत्र च ॥ १ ॥  
 अन्यौ विभिन्नसदृशावार्यः साधुकुलीनयोः ।  
 आद्यमादिभवे मध्येऽप्युत्पत्तिरहितेऽप्यृजुः ॥ २ ॥  
 मुख्यान्यकेवलेष्वेकः कष्टौ गहनदुःखितौ ।  
 कल्या नीरुग्दक्षसज्जा योग्ययुक्तहिताः क्षमाः ॥ ३ ॥  
 कटुस्तिक्ताप्रियाकार्यसुरभ्यूषणमत्सरे ।  
 क्रूरो भयङ्करे क्रुद्धे नृशंसे कठिनोष्णयोः ॥ ४ ॥  
 गौरोऽरुणे सिते पीते गृह्यस्त्वस्वैरिपद्ययोः ।  
 छिन्नाक्षे छिन्ननेत्रे च चित्तं चुल्लं च पिङ्गवत् ॥ ५ ॥  
 चोद्यं चित्रे चोदनाहं चारु चित्रवचस्यपि ।  
 जडो जाल्मश्च निर्बुद्धौ स्तब्धेऽनालोच्यकारिणि ॥ ६ ॥  
 ज्यायान् ज्येष्ठश्चाग्रजन्मन्यतिवृद्धातिशस्तयोः ।  
 जात्यः श्रेष्ठे कुलीने च डिम्भो बालिशबालयोः ॥ ७ ॥  
 दुतं शीघ्रे शीघ्रगतेऽप्यवदीर्णविलीनयोः ।  
 दृढं गाढेऽधिके स्थूले धूतं त्यक्ते प्रकम्पिते ॥ ८ ॥  
 धृष्णुर्धृष्टे प्रगल्भे च कुटिले बन्धुरे नतम् ।  
 न्यक्षं छिष्टे निकृष्टे च निजमात्मीयनित्ययोः ॥ ९ ॥  
 नीचं खर्वे निकृष्टे च समर्थेऽधिपतौ प्रभुः ।  
 प्राप्तं न्याय्ये च लब्धे च विपुलानेकयोर्बहु ॥ १० ॥  
 बालो मूर्खे शिशौ भव्यो भावी योग्यः शुभोऽपि च ।  
 मिश्रेऽपि मित्रं म्लिष्टं तु म्लानाविस्पष्टवाक्ययोः ॥ ११ ॥  
 मुग्धं सौम्ये नवे मूढे मूढो मोहिनि तन्द्रिते ।  
 मृद्वतीक्षणे कोमले च बद्धोपरतयोर्यतः ॥ १२ ॥  
 याप्यं गह्वं यापनीये पृथक्संयुक्तयोर्युतम् ।  
 न्याय्यसंयुक्तयोर्युक्तं रूक्षो निष्प्रेम्यचिक्कणे ॥ १३ ॥  
 रथ्यो रथहितेऽमुष्य स्वीयेऽस्याश्वे च वोढरि ।  
 रागवद्रोहितौ रक्तौ रामश्चरौ सितेऽसिते ॥ १४ ॥

न्याय्यलब्धव्ययोर्लभ्यं लिप्तो भक्षितदिग्धयोः ।  
 लघु त्वसारागुरुणोरिष्टे क्षिप्रमनोज्ञयोः ॥ १५ ॥  
 लोलं चले लोलुपे च व्यग्रो व्यापृत आकुले ।  
 वल्गु मञ्जौ च वामस्तु सौम्ये सव्यप्रतीपयोः ॥ १६ ॥  
 विष्ठं विदारिते तुल्ये विन्नं लब्धे विचारिते ।  
 शितिः श्वेते च नीले च शुभो मञ्जुप्रशस्तयोः ॥ १७ ॥  
 शुभ्रं शुक्ले भास्वरे च शुक्तं तु परुषाम्लयोः ।  
 सभ्यः सामाजिके साधौ सव्यो दक्षिणवामयोः ॥ १८ ॥  
 सन्नमल्पे विशीर्णादौ स्वादुर्मधुरमृष्टयोः ।  
 स्फुटाः स्पष्टव्याप्तफुल्लाः स्थूलौ तु जडपीवरौ ॥ १९ ॥  
 मन्त्रिण्यपि सुहृत्स्निग्धे प्रतिज्ञावत्यपि स्थितः ।  
 मन्दस्वच्छन्दयोः स्वैरो हीनो मुक्तविगर्हयोः ॥ २० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

द्वयक्षरकाण्डे अर्थवलिज्ञाध्यायः ॥ ४ ॥

## नानालिङ्गाध्यायः ॥ ५ ॥

नानालिङ्गेषु सर्वत्र स्वयमेव क्वचित् क्वचित् ।  
 उन्नेयमर्थवत्लिङ्गं गुणद्रव्यक्रियार्थकम् ॥ १ ॥  
 अक्षो रथाङ्ग आधारे व्यवहारे विभीतके ।  
 शकटे पाशके कर्षे द्यूतभेदेऽक्षमिन्द्रिये ॥ २ ॥  
 अङ्गो धन्वन्तरौ शङ्खे चन्द्रे क्ली लवणेऽम्बुजे ।  
 प्रदेशेऽश उपायेऽङ्गमङ्गो देशेऽङ्गशालिनि ॥ ३ ॥  
 अविर्भूष्पवत्योः स्त्री वायुप्राकारभाःसु ना ।  
 अजः पितामहेऽनादौ छागे विष्णौ हरे रवौ ॥ ४ ॥  
 अन्तोऽस्त्र्यवसिते मृत्यौ स्वरूपे निश्चयेऽन्तिके ।  
 नार्धमासेऽणिरक्ल्यश्रौ रूप्येऽक्षामध्रुवे ध्रुवे ॥ ५ ॥  
 अर्हन्तौ जिनसम्मान्यावर्चन्तौ ह्यकुत्सितौ ।  
 अन्धोऽचक्षुस्तमोऽप्यन्धमर्चिर्मात्स्वालयोर्न ना ॥ ६ ॥  
 अस्र आस्रश्च पुंलिङ्गौ क्लेशे क्ली रुधिराऽश्रुणि ।  
 आद्यो मुख्ये घातपूर्वेष्वाभ्यामोऽपकेऽपि रुज्यपि ॥ ७ ॥  
 इनास्त्वात्माधिपार्काढ्या उष्णोऽग्नौ चतुरेऽपि च ।  
 उशिर्नागनावुशीरेऽस्त्री न नोषः कल्यसन्व्ययोः ॥ ८ ॥  
 उल्लः किरण उल्ला गौर् ऋशं निर्लोमनीन्द्रिये ।  
 कम्ब्वस्त्री बलये शंखे शम्बूके कणसंख्ययोः ॥ ९ ॥  
 कल्को ना सिङ्घके न स्त्री किट्टे दम्भेऽघपिष्टयोः ।  
 कारा बन्धनगोहे स्त्री करे ना बन्धने न षण् ॥ १० ॥  
 कांस्थं कंसोऽस्त्रियां पानपात्रे तैजस आढके ।  
 काण्डोऽस्त्रीषौ बले नाले गार्होऽवसरवर्गयोः ॥ ११ ॥  
 ग्रन्थौ स्तम्बे प्रकाण्डेऽप्सु कश्यं मद्यकशार्हयोः ।  
 क्षुद्रो दरिद्रे कृपणे नृशंसेऽल्पनिकृष्टयोः ॥ १२ ॥  
 क्षुद्रा व्यङ्गा नटी वेश्या सरघा कण्टकारिका ।  
 कूटोऽस्त्री पुञ्जमायावेष्वाद्रिःशृङ्गेषुभेदयोः ॥ १३ ॥  
 अयोधनेऽनृते फाले दम्भे निश्चलयन्त्रके ।  
 कृष्णं सीसावलोहेषु कृष्णो नीले नले कलौ ॥ १४ ॥

शूद्रे काके पिके व्यासे ध्वान्तपक्षेऽङ्गुने हरौ ।  
 कोशोऽस्त्री कुङ्मले द्रव्ये शास्त्रेऽथौघे गृहे तनौ ॥ १५ ॥  
 गुह्येऽण्डे वेष्टके पेश्यां पुस्तकासिपिधानयोः ।  
 कोलं बदरतक्कोलशुण्ठीव्योषेऽर्धकर्षके ॥ १६ ॥  
 कोला चव्येऽस्त्रपिप्पल्योः कोलः खञ्जे प्लवे किटौ ।  
 कायो लक्ष्ये तनौ वृन्दे पुमांस्त्रिषु कदैवते ॥ १७ ॥  
 कर्षूः स्त्री तुषकोष्ठे कुल्यायां ना च ना करीषाग्नौ ।  
 श्रोण्यां भृशे किलिस्त्रे गजगण्डे शवरथे शवे च कटः ॥ १८ ॥  
 किष्कुर्वितस्तावनपुं सप्रकोष्ठकरे पुमान् ।  
 कीलोऽस्त्री कफणौ ज्वाले वाहौ ना शङ्कुशर्वयोः ॥ १९ ॥  
 पीठे श्मश्रुणि कूर्चोऽस्त्री भ्रूमध्ये कथने कुशे ।  
 कृत्या क्रियादेवतयोः कार्ये स्त्री कुपिते त्रिषु ॥ २० ॥  
 युगेऽक्षपाते पर्याप्ते कृतं स्त्री विहितेऽर्थवत् ।  
 द्रवेडा वेणुशलाकायां सिंहनादे विषे तु ना ॥ २१ ॥  
 क्षेमो ना प्राप्तरक्षायां मोक्षेऽप्यस्त्री तु मङ्गले ।  
 स्वीयेऽन्तःकुक्षि कोष्ठोऽस्त्री कुसूलेऽन्तर्गृहे पदे ॥ २२ ॥  
 क्रोढं स्त्री कर्ष उत्सङ्गे सूकरे ना न नोरसि ।  
 औषधे रुजि कुष्ठोऽस्त्री कुब्जोऽस्त्री गह्वरे हनौ ॥ २३ ॥  
 दर्मे कुशोऽस्त्री तोये क्ली कुटिवेक्रे गृहे नषण् ।  
 कृष्टिर्विलेखे प्राज्ञे ना खेटो ग्रामे कफेऽधमे ॥ २४ ॥  
 अर्धे गुडविकारे च खण्डोऽस्त्री खण्डिते त्रिषु ।  
 खलं भूस्थानकल्केषु खलो नीचः खलेत्वरि ॥ २५ ॥  
 गन्धूतौ गोगणे गव्या ज्यायागद्रव्ययोर्नपुम् ।  
 भाण्डागारे पुमान् गञ्जः स्त्री तु खन्यां सुरागृहे ॥ २६ ॥  
 गुडौ पिण्डेऽभुविकृती स्नुहीगुलिकयोर्गुडा ।  
 गुरुर्गोष्पतिपित्राद्योः पौरोहित्यकरे च ना ॥ २७ ॥  
 मात्रादौ स्त्री बृहत्खातदुर्मरालघुषु त्रिषु ।  
 गोत्रा गोनिचये भूम्यां गोत्रं नान्नि कुलेऽचले ॥ २८ ॥  
 गङ्गुः पृष्ठगुडे कुब्जे गदो रोगो गदायुधम् ।  
 गोप्यो रक्ष्ये दाससुते घ्राणमाघ्रातनासयोः ॥ २९ ॥  
 घनाः कठिनसङ्घातमेषकाठिन्यमुद्गराः ।  
 चित्रा सुभद्रा तारा च चित्रमालेख्यमिश्रयोः ॥ ३० ॥



चेत्तं वासोऽक्षमं काम्यं गर्हितं बर्हिचन्द्रकः ।  
 चुम्नो नाशे विषण्णे च चोक्षो गीतमनोज्ञयोः ॥ ३१ ॥  
 छेको विदग्धे गृह्ये च जिह्वं मन्देऽघवक्रयोः ।  
 जन्यं रणे जनितरि विगीतजननीययोः ॥ ३२ ॥  
 ज्ञातिभृत्या नवोढाया जन्याः स्निग्धा वरस्य च ।  
 जीवः प्राणे त्रयी ना तु जन्तवात्मनि गीष्पतौ ॥ ३३ ॥  
 त्रिषु जीवति मौर्व्या स्त्री स्याज्जीर्णो वज्रवृद्धयोः ।  
 भ्रूया नागबलायां स्त्री ना मत्स्ये मकरे वने ॥ ३४ ॥  
 तनुः स्त्री त्वचि देहे च त्रिष्वल्पे विरले कुरो ।  
 तमा राहुस्तमोऽघं शुक् स्वरूपेऽघस्तलोऽस्त्रियाम् ॥ ३५ ॥  
 क्ली तुल्यदेशे तारस्तु मुक्ताशुक्तौ समौक्तिके ।  
 उडुहृद्वाध्ययोरक्ली तुच्छं त्वसुखशून्ययोः ॥ ३६ ॥  
 ताम्रं शुल्बे शुल्बनिभे तिग्मास्तीक्ष्णोष्णभास्कराः ।  
 तीक्ष्णमुष्णे क्षणुते युद्ध आत्मत्यजि विषेऽयसि ॥ ३७ ॥  
 कर्णमूलेऽभ्रहरितोस्तोक्मं तोक्मो हरिद्यवः ।  
 दण्डोऽस्त्री शासने राज्ञां हिंसायां लगुडे दमे ॥ ३८ ॥  
 मिथ्याऽऽज्ञायां सैन्यभेदे दलो भागे दलं छदे ।  
 दरोऽस्त्री शङ्खभीगर्तेष्वल्पार्थे त्वन्यथं दरम् ॥ ३९ ॥  
 दंष्ट्री प्राहे सदंष्ट्रेऽहौ शार्दूले मूषिके किटौ ।  
 परिमाणे दारुपात्रे द्रोणोऽस्त्री वायसे पुमान् ॥ ४० ॥  
 दिग्धो विषप्रलिप्तेषौ लिप्ते स्नेहप्रवृद्धयोः ।  
 दुर्गो राष्ट्रे वने दुर्गं दुर्गमे नरके पुरे ॥ ४१ ॥  
 दृश्या स्यात् पृतना दृश्यं दर्शनीये विभूषणे ।  
 धर्मोऽस्त्री सुकृते साम्ये स्वभावे ना तु सोमपे ॥ ४२ ॥  
 न्यायाचारयमार्हिसास्वस्त्री मेढ्राङ्गयोर्ध्वजः ।  
 धिष्ण्यौ शुक्रानलौ धिष्ण्यमृत्ते स्थाने बले गृहे ॥ ४३ ॥  
 ध्रुवो धात्रीशकीलर्क्षनित्येषु स्त्री तु भूस्त्र्यचोः ।  
 ह्री तर्के निश्चिते व्योम्नि धीरोऽन्धौ मन्थरे बुधे ॥ ४४ ॥  
 निष्कोऽस्त्री हेम्नि दीनारे साष्टे कर्षशते पले ।  
 वक्षोविभूषणे कर्षे नाथस्त्वन्द्रे प्रभावपि ॥ ४५ ॥  
 न्युब्जं कुब्जे कर्मरङ्गे न्युब्जो व्याघावधोमुखे ।  
 नेमः पुरोहिते तुल्ये प्रस्थोऽस्त्री सातुमानयोः ॥ ४६ ॥

बन्धने दूरमार्गे च प्राध्वं क्ली प्रवणे त्रिषु ।  
 पूर्वोऽर्थलिङ्गः प्राच्यादौ पूर्वजेषु नृभूमवान् ॥ ४७ ॥  
 पद्मोऽस्त्रयब्जेऽष्टकायां स्त्री सङ्ख्यायां गजबिन्दुषु ।  
 ना तु नागे निधौ व्यूहे पङ्कोऽस्त्री कर्दमैनसोः ॥ ४८ ॥  
 परं दूरान्यमुख्येषु परोऽरिपरमात्मनोः ।  
 पार्थिणरुन्मत्तनार्या स्त्री पादग्रन्थेरधोऽपि च ॥ ४९ ॥  
 पुमांस्तु पृतनाकट्यां पापं स्यात् कूरपाप्मनोः ।  
 पुण्यं धर्मे जले हेम्नि पुष्पे स्त्री सुन्दरेऽर्थवत् ॥ ५० ॥  
 पार्श्वमस्त्री समीपेऽपि पूज्यः श्वशुरमान्ययोः ।  
 स्नेहे केलौ प्रेम न स्त्री पीतिः पाने ह्ये तु ना ॥ ५१ ॥  
 स्यात् परेत इव प्रेतो मृतप्राणिविशेषयोः ।  
 लाभनिष्पत्तिभोगेषु बीजे फाले घने फलम् ॥ ५२ ॥  
 फली ताम्रादिफलके बहिर्नाऽग्नौ नपुं कुशे ।  
 ब्रह्मा रुद्रेन्द्रभृग्वादिविप्रर्त्विग्यज्ञघातृषु ॥ ५३ ॥  
 अर्केऽग्नौ स्त्री तु वेदेऽन्ने स्वाध्यायात्मतपःसु च ।  
 बलं रूपेऽस्थनि स्थौल्ये शक्तिरेतश्चमूपु च ॥ ५४ ॥  
 बलो रामे बलाढ्ये च बाढं त्वनुमते दृढे ।  
 बिम्बोऽस्त्री मण्डलसमप्रतिमामुखलक्ष्मसु ॥ ५५ ॥  
 प्रतिबिम्बे तत्प्रकृतौ क्ली तु स्याद् बिम्बिकाफले ।  
 साज्ये मधुनि तक्केले बोलं बोलोऽम्भसां भ्रमः ॥ ५६ ॥  
 बोधिरर्थे सुविज्ञाने कुक्कुटाश्वत्थयोस्तु ना ।  
 बालोऽक्ली नीलफिण्ट्यां च मेलौ तूडुपभीरुकौ ॥ ५७ ॥  
 भगं योन्यां भगो यत्ने यशोवीर्याकर्मभूतिषु ।  
 कान्तीच्छाज्ञानवैराग्यधर्मैश्वर्यतपःसु च ॥ ५८ ॥  
 खादौ जन्तौ च भूतं क्ली समातीतोचिते त्रिषु ।  
 भास्वानिन्दौ भास्वरेऽर्के मेको वर्षाभिव कातरे ॥ ५९ ॥  
 अन्नतत्परयोर्मक्तं मद्रं कल्याणसौख्ययोः ।  
 मन्दाः सरोगनिर्भाग्यस्वल्पाज्ञापदसूर्यजाः ॥ ६० ॥  
 क्षौद्रादौ तद्रसेऽप्यस्त्री ना वसन्ते रसेऽसुरे ।  
 चैत्रे मधूके क्ली त्वप्सु मद्ये पुष्परसे मधु ॥ ६१ ॥  
 अक्ली मणिरजाकण्ठस्तने रत्नेऽप्यलिङ्गरे ।  
 मात्रा परिच्छदेऽर्थेशे प्रवृत्तौ कर्णभूषणे ॥ ६२ ॥

अक्षरावयवे माने मात्रं कात्स्न्येऽवधारणे ।  
 मध्यं युक्तेऽन्तराले च महद्राज्यविशालयोः ॥ ६३ ॥  
 मोचा कदल्यां स्त्री वृक्षरसे ना पाटले नषण् ।  
 मौलिः संयतकेशेषु चूडायां मुकुटेऽप्यवण् ॥ ६४ ॥  
 मलं किट्टाघयोश्चास्त्री यमजान्तकयोर्ममः ।  
 ययुर्ना मोक्षमार्गेऽश्वे स्त्री त्वाप्तौ दोर्घयष्टिके ॥ ६५ ॥  
 युगोऽस्त्री स्यन्दनाद्यङ्गे क्ली तु युग्मे कृतादिके ।  
 योनिः स्त्रीणां भगे स्थाने कारणे ताम्रकेऽप्यवण् ॥ ६६ ॥  
 योग्यं यन्त्रक्षमापूपयानोपायिषु चन्दने ।  
 योग्याभ्यासः क्षमापुण्ये रोको रश्मौ बिले नपुम् ॥ ६७ ॥  
 राजते भूपणे रूप्यं रजते हेम्नि चाहते ।  
 त्रिपु प्रशस्तरूपेऽथ रणोऽस्त्री युधि ना ध्वनौ ॥ ६८ ॥  
 राष्ट्रोऽस्त्री विपये जन्तौ लोहोऽस्त्री तैजसायसोः ।  
 लक्षं नपुं शरव्ये ना स्त्री व्याजे नियुते न ना ॥ ६९ ॥  
 वर्णो नीलादिविप्रायोः कीर्तौ गीतिक्रमे स्तुतौ ।  
 कुथे वृतेऽक्षरे त्वस्त्री प्रकारे लेपशोभयोः ॥ ७० ॥  
 वशा करिण्यां बन्ध्यायां रामायां दुहितर्यपि ।  
 वशो जनस्पृहायत्तेष्वायत्तत्वप्रभुत्वयोः ॥ ७१ ॥  
 वरो ना रूपजामात्रोर्देवादेरीप्सिते वृत्तौ ।  
 त्रिष्वप्रथे क्ली मनागिष्टे व्यक्तं स्पष्टे बुधे तु ना ॥ ७२ ॥  
 वत्सो ना कुटजे वर्षे तर्णके तनयादिके ।  
 बाले च वक्षसि त्वस्त्री वज्रोऽस्त्री हीरकाखयोः ॥ ७३ ॥  
 व्यालो दुष्टगजे सर्पे श्वापदे च पुमांस्त्रिषु ।  
 शठेऽथ वित्तमर्थे क्ली त्रिषु ख्याते विचारिते ॥ ७४ ॥  
 वीतं शान्ते दुर्गजाश्वे वधो हिंसितृहिंसयोः ।  
 वार्ता वातिङ्गणोदन्तवाणिज्यादिषु वर्तने ॥ ७५ ॥  
 निःसारारोग्ययोः षण्डो वृत्तिमञ्जीरुजोऽस्त्रिषु ।  
 वृत्तं स्वरूपे चरिते वृत्तौ छन्दोविधासु च ॥ ७६ ॥  
 त्रिष्वतीतद्वदाधीतवर्तुलेष्वथ गीष्पतौ ।  
 श्रेष्ठोक्षाश्रावुरेतःसु पुंघर्मेन्द्रबले वृषः ॥ ७७ ॥  
 वसुर्हृदेऽग्नौ योक्त्रेऽशौ वसु तोये घने मणौ ।  
 विश्वं जगति सर्वस्मिन्स्त्रिषु शुण्ठ्यां पुनर्न ना ॥ ७८ ॥

वप्रः पितरि ना न स्त्री क्षेत्रे रोधसि सानुनि ।  
 वर्षोऽस्त्री भारताद्यब्दवृष्टिषु प्रावृष्टि स्त्रियः ॥ ७६ ॥  
 वास्त्वस्त्री गृहभूपूर्योगृहे सीमसुरुङ्गयोः ।  
 वानं शुष्के गतौ व्यूतौ गन्धे वृद्धौ सुधीयमौ ॥ ८० ॥  
 वर्ष्म न स्त्री शुभाकारे सौम्ये देहप्रमाणयोः ।  
 विभुः सर्वगते पत्यौ चन्द्रे रविकुवेरयोः ॥ ८१ ॥  
 वीरो राहौ हरे शक्रे शूरे स्कन्दकुवेरयोः ।  
 गजग्रहणभूमौ स्त्री वारिः स्यात् सलिलं नपुम् ॥ ८२ ॥  
 शङ्खोऽस्त्री बलये कम्बौ संख्यायां च निधौ तु ना ।  
 अमावस्यां च नागे च शितौ बाणतनूकृतौ ॥ ८३ ॥  
 शिवा हरीतकी क्रोष्टा शमी नद्यामलक्युमा ।  
 शिवो घोले पद्मरागे हरे कीले शिवं जले ॥ ८४ ॥  
 भद्रे चाथोपधा शुद्धसचिवेऽभौ हरौ शुचिः ।  
 चन्द्रेऽर्के च त्रिषु त्वेष शुद्धेऽनुपहते शिते ॥ ८५ ॥  
 शुक्रः सिते कवौ चन्द्रे मासभेदेऽनले द्विजे ।  
 शुक्रं मध्येऽप्सु पुण्येऽर्थे रुक्मेऽक्षिरुजि रेतसि ॥ ८६ ॥  
 क्रीडाम्बुयन्त्रे शृङ्गोऽस्त्री पर्वताग्रप्रभुत्वयोः ।  
 पञ्चङ्गे चाथ शेषस्त्रिष्वन्यस्मिन्नुपयुक्ततः ॥ ८७ ॥  
 माल्याक्षतादिदाने स्त्री ना नागेशाप्रधानयोः ।  
 ना पर्याणे विहङ्गे स्त्री शारिर्द्युते गुडे नषण् ॥ ८८ ॥  
 पथि देये शुल्कमस्त्री जामात्रा यच्च दीयते ।  
 श्रुतं शास्त्रावधृतयोर्नपुमाकर्णितेऽर्थवत् ॥ ८९ ॥  
 सजातिशिल्पसंहत्यामषण्डः श्रेणिराबलौ ।  
 शौण्डी जलदमालायां शौण्ढौ समदकुक्कुटौ ॥ ९० ॥  
 शको विष्ठा पशूनां स्याद्देशे च गवये शकाः ।  
 शबले मारुते शारः शुद्धाः पूतार्ककेवलाः ॥ ९१ ॥  
 शुभ्रिर्नाकैर्ऽर्थवत्सौम्ये शूरौ विक्रान्तकुक्कुटौ ।  
 शूलोऽस्त्री रुजि शस्त्रे च श्वेतं धवलरूप्ययोः ॥ ९२ ॥  
 शीतो ना वेतसे शैलौ शैत्ये क्ली तद्वति त्रिषु ।  
 सत्त्वोऽस्त्री जन्तुषु क्ली तु व्यवसाये पराक्रमे ॥ ९३ ॥  
 आत्मभावे पिशाचादौ द्रव्ये सत्तास्वभावयोः ।  
 प्राणे बलेऽन्तःकरणे स्वामी पत्यौ षडानने ॥ ९४ ॥



समा स्त्री वत्सरे साधुसर्वतुल्येषु वाच्यवत् ।  
 परमार्थेऽर्थवत् सत्यं षण्डः शपथतध्ययोः ॥ ६५ ॥  
 स्पर्शः संस्पर्शने स्पर्ष्टर्युपतापप्रदानयोः ।  
 साधुस्त्रिषृचिते सौम्ये सज्जने वार्धुषौ पुमान् ॥ ६६ ॥  
 सारो बले स्थिरांशेऽर्थे पुमान् न्याये वरेऽर्थवत् ।  
 स्त्री नद्यां ना नदे सिन्धुर्देशभेदेऽम्बुधौ गजे ॥ ६७ ॥  
 सौम्यो विप्रे सोमजेऽब्दे सुन्दरे सोमदैवते ।  
 सखा सहाये बन्धौ ना सूक्ष्ममध्यात्मदभ्रयोः ॥ ६८ ॥  
 सूतं पुष्पे सुतायां स्त्री स्नेहोऽस्त्री द्रवहार्दयोः ।  
 विष्णुचन्द्रेन्द्रवातार्कयमाशवांशुशुक्रामिषु ॥ ६९ ॥  
 कपिभेकाहिसिंहेषु हरिनो कपिले त्रिषु ।  
 हृद्यो वशीक्रिया मन्त्रे हृद्यं दध्युपलेपने ॥ १०० ॥  
 हृत्प्रिये हृद्धिते हृज्जे ह्रीकौ नकुललज्जितौ ।  
 यमेऽल्पे वामने ह्रस्वो हरित् स्त्री दिशि षण् तृणे ॥ १०१ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां कैजयन्त्यां

द्वयक्षरकाण्डे नानालिङ्गाध्यायः ॥ ५ ॥

द्वयक्षरकाण्डः समाप्तः ॥ ६ ॥



## ७. अथ त्र्यक्षरकाण्डः

पुंलिङ्गाध्यायः ॥ १ ॥

अविनौ विहगाध्वर्यु अरन्नी हस्तकूर्परौ ।  
 अत्ययोऽतिक्रमे कृच्छ्रे मरणे दण्डदोषयोः ॥ १ ॥  
 आसारः स्यात् प्रसरणे वेगवृष्टौ सुहृद्वले ।  
 आग्रहः स्यात् स्वीकरणे निर्बन्धेऽनुग्रहेऽपि च ॥ २ ॥  
 आम्नायोऽध्ययने वेदे सम्प्रदाये कुलेऽपि च ।  
 आकर्षः शारिफलको द्यूत आकृष्टिपाशकौ ॥ ३ ॥  
 गन्धमाल्योपहारे स्यादायोगो व्यापृतावपि ।  
 आनर्त्तो नृत्तशालायां देशभेदे जने युधि ॥ ४ ॥  
 आक्रन्दः क्रन्दने रावे नाथे घोररणेऽपि च ।  
 आधार आलवालेऽम्बुबन्धेऽधिकरणेऽपि च ॥ ५ ॥  
 आशिरः क्षीरविकृतौ भोजने पावके रवौ ।  
 आवापो न्यास आवाले स्मरे घातरि चात्मभूः ॥ ६ ॥  
 ओण्याञ्चरोह आकारस्त्वाकृतावात्मवैकृते ।  
 आमोदौ हर्षसौगन्धे आभोगौ यत्नपूर्णते ॥ ७ ॥  
 आघातौ घातसीमानावाहारौ भक्षणाब्धसी ।  
 आलोकौ दर्शनोद्योतावागमौ शास्त्रमागतिः ॥ ८ ॥  
 रुग्भीतितापेष्वातङ्क आशुगोऽर्के शरेऽनिले ।  
 तदात्वे पात आपात आकरो निकरे खनौ ॥ ९ ॥  
 अप्याकर्षणमाक्षेप आलम्भः स्पर्शहिंसयोः ।  
 ईशानौ हरिधाताराबुत्सेधौ वपुरुन्नती ॥ १० ॥  
 उपाधिर्धर्मचिन्तायां कुडुम्बव्यापृतेऽपि च ।  
 उत्सवस्त्विच्छाप्रसर उत्सेधामर्षयोर्महे ॥ ११ ॥  
 उदकं उत्तरे काले यश्च स्यात् फलमुत्तरम् ।  
 उदान उदरावर्त्ते सर्पवायुप्रभेदयोः ॥ १२ ॥  
 ऊर्णायुर्पूर्णनाभे स्यान्मेषतल्लोमकम्बले ।  
 ऋषभोऽग्रये मत्तगजे ओत्ररन्ध्रे स्वरे वृषे ॥ १३ ॥

कुम्भीरपुच्छे च जलस्थाने त्वृक्षर ऋत्विजि ।  
 वेणौ द्रुमाङ्गे रोमाङ्गे क्षुद्रशत्रौ च कण्टकः ॥ १४ ॥  
 कञ्चुकः सर्पनिर्मोके कवचे वारवाणके ।  
 कलापो भूषणे काञ्च्यां सङ्घाते बर्हतूणयोः ॥ १५ ॥  
 क्षारको मत्स्यपक्ष्यादिपिटके पुष्पजालके ।  
 दैवे कृतान्तः सिद्धान्ते यमाकुशलकर्मणोः ॥ १६ ॥  
 कौशिको गुग्गुलुलक्षशक्रषिष्वाहितुण्डिके ।  
 कलङ्कोऽङ्केऽपवादे च कलहो द्वन्द्वयुद्धयोः ॥ १७ ॥  
 कलमोऽङ्कुरलेखन्योः कठाकुः खगशिल्पिनोः ।  
 कारुजः कलभे नाके क्षवथुः क्षुतकासयोः ॥ १८ ॥  
 कर्परोऽग्नौ कपालेऽपि करभांऽपि खरोष्ट्रयोः ।  
 शरे किंशारुकादम्बौ कुरण्डस्तु ऋषेऽपि च ॥ १९ ॥  
 कुटीरस्तु कुलीरेऽपि कुम्भीलस्तस्करेऽपि च ।  
 कपोतः पारावतेऽपि कोकिलस्तूल्मुकेऽपि च ॥ २० ॥  
 वायौ वसन्ते क्षिपणुः क्षिपणो वायुकालयोः ।  
 कुषाकुः पावके सूर्ये केसरी हयसिंहयोः ॥ २१ ॥  
 किङ्किरौ क्रोष्टुखट्वाङ्गौ खेचरः पवनेऽपि च ।  
 खपुरः पूगवेष्टेऽपि पूगनिर्यासयोरपि ॥ २२ ॥  
 खोलकः पूगकोशे स्याद् भग्नभाण्डे शिरस्त्रके ।  
 गोलको मणिके पिण्डे कम्बले विधवासुते ॥ २३ ॥  
 अन्तराभवसत्त्वे स्याद् गन्धर्वो गायने हये ।  
 गरुत्मान् विहगे तार्क्ष्ये वृषार्केन्द्रेषु गोपतिः ॥ २४ ॥  
 चङ्कुरः स्यन्दने दैत्ये चाक्रिकौ तैलघाण्टिकौ ।  
 चिकिरोऽहौ गोह्वयौ जसुरिः पावके शनौ ॥ २५ ॥  
 जम्बुकौ क्रोष्टुवरुणौ जम्बालौ पङ्कशैबलौ ।  
 श्वेतस्तिलोऽपि जामाता जीमूतौ मेघपर्वतौ ॥ २६ ॥  
 जगलो मेदके पिष्टमद्येऽपि कितवेऽपि च ।  
 जनिमा मातापितरावुत्पत्तिस्तनयोऽपि च ॥ २७ ॥  
 त्रिवर्गस्त्रिफला व्योषं स्थितिवृद्धिक्षया अपि ।  
 तमोनुदोऽग्निचन्द्रार्कास्तक्षकौ नागवर्धकी ॥ २८ ॥  
 तपनो भास्करे ग्रीष्मे त्रिदिवो व्योम्नि दिव्यपि ।  
 त्रिशङ्कु तार्क्ष्यमार्जारौ त्रिधामा केशवेऽनले ॥ २९ ॥

सपिण्डपुत्रौ दायदौ द्वापरौ युगसंशयौ ।  
 दिवौकाश्चातके देवे द्रुघणौ धातुमुद्गरौ ॥ ३० ॥  
 दरथो विवरे भीत्यां दिक्षु चापि प्रसारणे ।  
 द्विजातिश्च द्विजन्मा च ब्राह्मणादिपतत्रिणोः ॥ ३१ ॥  
 द्रुहिणौ हरिधातारौ शास्त्रोदाहरणयोस्तु दृष्टान्तः ।  
 दोषज्ञौ बुधभिषजौ धरुणाः स्तनधातुलोकार्काः ॥ ३२ ॥  
 धाराटश्चातकेऽश्वे च नभसौ व्योमसागरौ ।  
 निवेशौ शिबिरोद्वाहौ निरोधौ रोधसंक्षयौ ॥ ३३ ॥  
 निदेशावाज्ञाकथने विग्रहः सीम्नि भर्त्सने ।  
 निवहो वायुभेदेऽपि निषङ्गस्तूणसङ्गयोः ॥ ३४ ॥  
 ऊर्णाविकारे नमतो धूमे दिनकरेऽपि च ।  
 निगमो निश्चये वेदे पुरे पथि वणिक्पथे ॥ ३५ ॥  
 नितम्बः पश्चिमश्रोणिभागेऽद्रिकटके कटौ ।  
 निष्क्रमो बुद्धिसामर्थ्ये निगतौ चाथ भूपतौ ॥ ३६ ॥  
 नरेन्द्रो विषवैद्ये च नैगमस्तु श्रुतावपि ।  
 निकारस्तु तिरस्कारे धान्यस्योत्क्षेपणेऽपि ॥ ३७ ॥  
 द्वार्यापीडे काथरसे निर्यूहो नागदन्तके ।  
 निषधोऽद्रौ देशभेदे कठिने तस्य राजनि ॥ ३८ ॥  
 निहवः स्यादविश्वासेऽपह्वे निकृतावपि ।  
 निर्वेशः सम्मूर्च्छने स्यात् कर्मभृत्युपभोगयोः ॥ ३९ ॥  
 प्रतिज्ञायन्त्रणाऽऽज्ञासु नियमो निश्चये व्रते ।  
 पतङ्गः शलभे शालौ मार्जारेऽग्नौ रवौ खगे ॥ ४० ॥  
 परिधिर्यज्ञिये काष्ठे प्राकारे परिवेषणे ।  
 परिघाते मूढगर्भे परिघोऽर्गलदण्डयोः ॥ ४१ ॥  
 परागः पुष्परेणौ च स्नानीयादौ रजस्यपि ।  
 पर्जन्यो गर्जदभ्रेऽभ्रध्वाने शक्नेऽस्त्रयन्त्रके ॥ ४२ ॥  
 प्रलयो मरणे श्लेषे मूर्च्छासंवर्तयोरपि ।  
 प्रवहो वायुभेदे स्याद् वायुमात्रे बहिर्गतौ ॥ ४३ ॥  
 प्रयोगो प्राम्यधर्मे स्यात् कुसीदे कर्मणां विधौ ।  
 प्रणयः स्यात् परिचये याच्यायां सौहृदेऽपि च ॥ ४४ ॥  
 प्रबाहस्तु प्रकृष्टाश्वे जलवेगे प्रवर्तने ।  
 पादपः पादपीठे स्यात् पादयाने द्रुमेऽपि च ॥ ४५ ॥



पिण्याकः सिंहके किण्वे श्रीवासतिलकल्फयोः ।

पुरुषो धातुपुन्नागपुंस्त्वात्मपरमात्मनोः ॥ ४६ ॥

पुलकोऽस्त्रे रत्नराज्यां रोमास्त्रे हीरके क्रिमौ ।

पुलाकस्तुच्छधान्ये स्यात् सङ्क्षेपे भक्तसिक्थके ॥ ४७ ॥

प्रसवो जननानुज्ञापुत्रेषु फलपुष्पयोः ।

पारम्पर्ये प्रसङ्गेऽपि प्राणिनां गर्भमोचने ॥ ४८ ॥

तुलासूत्रेऽश्वादिश्मौ प्रग्रहः प्रग्रहः पुनः ।

तयोश्च संयमोद्योतपूलाबन्धगर्वधेषु च ॥ ४९ ॥

प्रभवः स्यादपां मूले विक्रमे जन्मकारणे ।

आद्योपलब्धिस्थाने च पुद्गलो देह आत्मनि ॥ ५० ॥

प्रत्ययस्तु ख्यातिरन्ध्रविश्वासाधीनहेतुषु ।

विज्ञाने शपथे शब्दे प्रस्तरोऽश्मा मणिः कुशः ॥ ५१ ॥

पर्यस्त्यामपि पर्यङ्कः प्रकोष्ठोऽलिन्दकेऽपि च ।

गजस्कन्धेऽपि पणवः प्रघणौ लोहमुद्गरौ ॥ ५२ ॥

प्रियकः कृकलासेऽपि पेचकस्त्वचि दृष्टिनाम् ।

पुच्छमूले प्रपातस्तु पाते रोधसि सौप्तिके ॥ ५३ ॥

पदाजिर्युधि मार्गे च रक्षोवृक्षौ पलाशिनौ ।

प्रतिघौ रुट्प्रतीघातौ प्रतापौ पौरुषातपौ ॥ ५४ ॥

प्रसादौ स्वाच्छयानुरोधौ पर्यायोऽवसरे क्रमे ।

प्रदोषौ दोषराज्यशौ प्रणिधिः प्रार्थने चरे ॥ ५५ ॥

वरुणेऽनले प्रचेताः प्रनापमाहात्म्ययोः प्रभावः स्यात् ।

भेदसमते प्रकारौ विपर्यये विस्तरे प्रपञ्चः स्यात् ॥ ५६ ॥

रुग्भङ्गबाणाः प्रदराः श्रेष्ठोक्षाणौ तु पुङ्गवौ ।

पिशाचौ सत्त्वमार्जारौ पिचण्डः कुक्षिशय्ययोः ॥ ५७ ॥

पृथुक्रत्रिपिटे बाले पृदाकुर्व्याघ्रसर्पयोः ।

भासन्तावर्कनक्षत्रे सूर्यश्चाग्निश्च भास्करौ ॥ ५८ ॥

भ्रातृव्यौ भ्रातृजामित्रौ भुरण्यु विष्णुभास्करौ ।

भूमिस्पृशौ वैश्यनरौ भुवन्यौ वह्निभास्करौ ॥ ५९ ॥

भूतात्मा पवने देहे यश्च कर्मा तनौ पुमान् ।

राजभेदाहिमार्जारश्चार्कशुक्रेषु मण्डली ॥ ६० ॥

धुतूरे सर्पभेदे च मातुलो मदनः पुनः ।

सिक्थे वंसन्ते धुतूरे कन्दर्पेऽप्यथ माधवः ॥ ६१ ॥

विष्णौ वसन्ते वैशाखे मरुकौ भेककेकिनौ ।  
 मिहिषा वायुमेघार्का यज्वरौ तु ह्याध्वरौ ॥ ६२ ॥  
 युञ्जानः सारथौ विप्रे रभसो विषवेगयोः ।  
 रक्ताश्रौ रक्षोमहिषौ रमती स्वर्गमन्मथौ ॥ ६३ ॥  
 रुचको भूषणे दन्ते रुचथः कुक्कुटे ध्वनौ ।  
 वञ्चथः कौकिले काले वतकोऽश्वसुरे खगे ॥ ६४ ॥  
 व्यवायो मैथुनेऽन्तर्धौ चित्रे दर्पे च विस्मयः ।  
 बाहसौ बह्वथजगरौ द्रुप्रवालौ तु विद्रुमौ ॥ ६५ ॥  
 विस्मभौ स्नेहविश्यासौ विबुधौ सुरपण्डितौ ।  
 विकारौ रोगविकृती विष्किरौ शिखकुन्कुटौ ॥ ६६ ॥  
 रहःप्रकाशौ वीकाशौ विपाकः स्वेदपाकयोः ।  
 विश्वात्मार्केऽपि विष्कम्भो विस्तारप्रतिबन्धयोः ॥ ६७ ॥  
 स्पर्धायां पौरुषे व्यामे व्यायामोऽथ परिक्रमे ।  
 विहारः सौगतावासे क्रीडायां चाथ विग्रहः ॥ ६८ ॥  
 युद्धे देहे विस्तरे च कुशमुष्टौ च विष्टरः ।  
 विभ्रमः संशये भ्रान्तौ शोभायां चाथ बालुका ॥ ६९ ॥  
 विकीर्णोऽर्थश्च विकिरौ विसर्गौ मुक्तिवर्चसी ।  
 विनयो धर्मविद्याधीशिक्षाचारप्रशान्तिषु ॥ ७० ॥  
 विवधो वीवधश्च द्वौ पर्याहारेऽध्वभारयोः ।  
 वृत्तान्तः स्यात् प्रकरणे कात्स्न्ये वार्ताप्रकारयोः ॥ ७१ ॥  
 वासरौ नागदिवसौ वैकुण्ठाविन्द्रकेशवौ ।  
 विषयो यस्य यो ज्ञातस्तत्र शब्दादिकेष्वपि ॥ ७२ ॥  
 शपथः कर आक्रोशे शपने च सुतादिभिः ।  
 बालके शिशुमारे च शिशुकोऽथाध्वरे पशौ ॥ ७३ ॥  
 अध्वर्यौ च श्रपाय्यः स्याच्छकुन्तौ भासपक्षिणौ ।  
 कक्ष्यान्तरेऽपि शुद्धान्तः श्वशुर्यौ स्यालदेवरौ ॥ ७४ ॥  
 मन्त्री सहायः सचिवः सहुरी वृषभास्करौ ।  
 स्यमीकौ वृक्षवल्मीकौ समीकौ मिथुनार्णवौ ॥ ७५ ॥  
 सरण्यू वायुजलदौ संस्तरौ प्रस्तराध्वरौ ।  
 क्षये रोषे च संरोधः संवर्तोऽब्दे जगत्क्षये ॥ ७६ ॥  
 सङ्घर्षौ घर्षणं स्पर्धा शरखड्गौ तु सायकौ ।  
 समिको वृक्षवल्मीकौ सृदाक्व व्याघ्रपावकौ ॥ ७७ ॥

सविता सारथौ रुद्रे पितर्यर्के सुजातिभिः ।  
 सन्निवेशे गणे गेहे संस्त्यायः संग्रहाः पुनः ॥ ७८ ॥  
 स्वीकारोच्छ्वायसङ्क्षेपाः सम्भ्रमोऽत्यादरे भये ।  
 सम्भवो जन्मसंहत्योराधारानतिरेचने ॥ ७९ ॥  
 आधेयस्याथ सम्भोगो भोगे करिकरे रते ।  
 प्रत्यक्षे सन्निधाने च सन्निधिः स्थपतिः पुनः ॥ ८० ॥  
 स्थापत्येऽधिपतौ तद्दिण बृहस्पतिसखी च यः ।  
 समाधिध्याननीवाकप्रतिज्ञासु समर्थने ॥ ८१ ॥  
 सन्नयः समवाये च पृष्ठस्थायिबलेऽपि च ।  
 समयस्तु क्रियाकारे सङ्केते चरिते सताम् ॥ ८२ ॥  
 सिद्धान्ते शपथे काले स्वाध्यायो जपवेदयोः ।  
 सारसो विहगे चन्द्रे हिमरिः पावके रवौ ॥ ८३ ॥  
 हर्यक्षो घनदे सिंहे ब्रीह्याब्दाचिषु हायनः ।  
 महोदरेऽपि हेरम्बो हरिमा मृत्युरोगयोः ॥ ८४ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां दैजयन्त्यां

अक्षरकाण्डे पुंलिङ्गाध्यायः ॥ १ ॥

## स्त्रोलिङ्गाध्यायः ॥ २ ॥

अमनिः पशुवङ्क्षण्यां जलपात्रे च दारवे ।  
 अदितिः शैलकन्यायां पृथिव्यां देवमातरि ॥ १ ॥  
 अभिरूपा त्विड्यशोनामस्वम्बिका मातुलान्युमा ।  
 अमतिर्मरणे मोहेऽप्याकारे देह आर्कृतः ॥ २ ॥  
 आयतिर्दीर्घतायां स्यात् प्रभावागामिकालयोः ।  
 उपधा सुपरीक्षाऽपि कृपाण्यामपि कर्तरी ॥ ३ ॥  
 कल्पना समर्थनाऽपि कषिके सस्यमक्षिके ।  
 कणिका तिलकाण्डेऽशे गोधूमे तस्य चूर्णके ॥ ४ ॥  
 करिका यातनायां स्याच्छ्लोके विवरणे कृतौ ।  
 कूर्चिका मस्तुपिण्डेऽपि सूचितूलिकयोरपि ॥ ५ ॥  
 तुर्थेऽशे मापदण्डस्य माषस्यापि च काकणी ।  
 विंशतौ च कपर्दानां पादुकैककर्पदयोः ॥ ६ ॥  
 गृहिणी काञ्चिकं जाया देहली गृहकारिका ।  
 वेश्याकरिण्योर्गणिका वेष्टनेऽपि च गोलका ॥ ७ ॥  
 पार्या कालेऽपि घटिका रथ्यायामपि चत्तरी ।  
 जुगुप्सा निन्दाघृणयोर्जननी करुणाऽम्बयोः ॥ ८ ॥  
 जगती विष्टपे मह्यां वास्तुच्छन्दविशेषयोः ।  
 छत्रान्तालाम्बिवस्त्रेऽपि मङ्गरी केशवाद्ययोः ॥ ९ ॥  
 चापे तृणत्वे तृणता दारिद्र्येऽपि च दुर्गतिः ।  
 पद्माकरेऽब्जे नलिनी स्वास्थ्ये नाशे च निर्वृतिः ॥ १० ॥  
 निवृत्तिस्तु मनस्तोषे मोक्षेऽस्तमयबाढयोः ।  
 नालिका चुञ्जिकारन्ध्रे विवरे वेणुमाजने ॥ ११ ॥  
 नाले काले देशमाने नियतिः संयमे विधौ ।  
 प्रकृतिः पञ्चभूतेषु स्वभावे मूलकारणे ॥ १२ ॥  
 छन्दःकारणगुह्येषु जन्त्वमात्यादिमातृषु ।  
 पक्षतिर्गर्भतो मूले द्वयोः प्रतिपदोरपि ॥ १३ ॥  
 अधिकारे प्रकारे च प्रक्रियोत्पादनेऽपि च ।  
 गृहादिधिष्ये पिण्डे च जङ्घामांसे च पिण्डिका ॥ १४ ॥  
 परीष्टिर्मार्गणे भक्तौ पङ्क्तौ पथि च पङ्क्तिः ।  
 प्रतिष्ठे स्थितिमाहात्म्ये प्रवृत्तौ तत्तिवीरुधौ ॥ १५ ॥



बोधे तिथौ च प्रतिपत् प्रवृत्तिर्वृत्युदन्तयोः ।  
 प्रवेणी तु कुथावेण्योः प्रसूतिः पुत्रजन्मनोः ॥ १६ ॥  
 पाताली वागुरा स्थाली बन्धकी तु करिण्यपि ।  
 वृद्धती पद्यवार्ताक्योः कण्टकार्यं च वाचि च ॥ १७ ॥  
 भित्तिका तु शतावर्या वज्रे चाप्यथ मेखला ।  
 श्रोणिस्थानेऽद्रिकटके कटिबन्धेऽसिबन्धने ॥ १८ ॥  
 महिषी पशुराट्पत्न्योर्मर्यादा सीम्नि धारणे ।  
 पेटा पुरी च मञ्जूषा मनाका कामिनी गजी ॥ १९ ॥  
 गव्यक्षेत्रे रेवती देव्यां शुक्लायां रजनी निशि ।  
 रोचना रक्तकल्हारे गवां पित्ते वरस्त्रियाम् ॥ २० ॥  
 पथ्यायां गव्युमाकन्यालोहिनीषु च रोहिणी ।  
 नक्षत्रे कण्ठरोगे च वर्तनी वृत्तिमार्गयोः ॥ २१ ॥  
 विपणिस्तु निषद्यापि बालुकोमिश्रं बालुका ।  
 बडवा स्त्रीविशेषेऽपि वाशिता करिणीस्त्रियोः ॥ २२ ॥  
 वसतिस्तु निशि स्थित्यां जैनानामाश्रमे गृहे ।  
 वाणिनी तु विदग्धायां नर्तक्यां मत्तयोषिति ॥ २३ ॥  
 वीणा विपञ्ची सैवालपदण्डा सा नवतन्त्रिका ।  
 वृषल्युत्तुमती कन्या शूद्रा वन्ध्या मृतप्रजा ॥ २४ ॥  
 वनिता स्निग्धनार्याश्च नार्याश्चाप्यथ वेदिका ।  
 वेदिश्चाङ्गुलिमुद्रा च काञ्ची छन्दश्च शकरी ॥ २५ ॥  
 शङ्कुल्यपूपभेदेऽपि शिक्षिनी नूपुरव्ययोः ।  
 शर्करा तु शिलाभेदे रुग्भेदाल्पकपालयोः ॥ २६ ॥  
 शर्करावत्प्रदेशेषु सितायां शकले गुडे ।  
 समितिः परिषत्स्थाने युद्धे संसदि सङ्गमे ॥ २७ ॥  
 सन्ततिस्त्वन्ववाये स्यात् पारम्पर्ये मुतेऽपि च ।  
 संहिता वर्णसंयोगे शास्त्रवेदैकदेशयोः ॥ २८ ॥  
 सिद्धौ स्वभावे संसिद्धिर्वाञ्छाऽनुज्ञा च सम्मतिः ।  
 संविक्ती ज्ञानसंवादौ ह्यादन्यौ वज्रविद्युतौ ॥ २९ ॥  
 हरिणी हरिता पाण्डुः सुवर्णप्रतिमा मृगी ॥ २९ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

अक्षरकाण्डे लौलिङ्गाध्यायः ॥ २ ॥

## नपुंसकलिङ्गाध्यायः ॥ ३ ॥

अयनं निलये मार्गे सूर्योदग्दक्षिणागतौ ।  
 अंशुकं केवले वस्त्रे सूक्ष्मवस्त्रोत्तरीययोः ॥ १ ॥  
 अभीक्ष्णमव्ययं वा स्यात् पौनःपुन्यभृशार्थयोः ।  
 अरुलं सलिले पोतेऽप्यलीकं त्वप्रियेऽनृते ॥ २ ॥  
 अनूकमन्वये शीलेऽप्यास्पदं स्थानकृत्ययोः ।  
 स्तम्भमात्रेऽपि चालानं हस्तिनोऽसेऽपि चासनम् ॥ ३ ॥  
 रेतसीन्द्रियमच्चे च दर्शनेऽक्षणि चेक्षणम् ।  
 उद्यानं सङ्ग्रहोदगत्योवेनभेदे प्रयोजने ॥ ४ ॥  
 उत्थानमुद्यमे वास्तौ तन्त्रेहापौरुषेषु च ।  
 उद्धानमुदगमे चुल्ल्यामौशीरे दण्डचामरे ॥ ५ ॥  
 कटीरं कन्दरे कट्यां कलत्रं श्रोणिभार्ययोः ।  
 क्रन्दनं रुदिते ध्वाने कार्मुकं शस्त्रचापयोः ॥ ६ ॥  
 कारणं हेतुबधयोः कारकं हिंसकेऽपि च ।  
 कीलालं रुधिरे तोये कुहरं गङ्गरे बिले ॥ ७ ॥  
 कुरीरं ग्राम्यधर्मेऽब्जे कुन्नानं कुण्डशिक्ययोः ।  
 कैतवं कपटे द्यूते कृपीटमुदरे जले ॥ ८ ॥  
 करणं कारणे काये साधने बबकादिषु ।  
 स्पृष्टाद्युच्चारणाभेदध्यानपद्मासनादिषु ॥ ९ ॥  
 रतबन्धे नाड्यभेदे गीतके कर्मणीन्द्रिये ।  
 कौतुकं विषयाभोगे हस्तसूत्रे कुतूहले ॥ १० ॥  
 कामे ख्याते मङ्गले च हस्तसूत्रेऽपि कङ्कणम् ।  
 कटित्रं चर्म सुस्यूतं कटीवेष्टनचर्म च ॥ ११ ॥  
 कोदण्डं तु चतुर्हस्तं धनुर्वेणुर्धनुर्धरः ।  
 केतौ तु केतनं चापे कृत्यार्थोपनिमन्त्रणे ॥ १२ ॥  
 कौलीनं प्राणिभिर्द्युते कुलीनत्वापवादयोः ।  
 गुह्यकार्ये च कौपीनं गन्धनं तु प्रकाशने ॥ १३ ॥  
 सूचनेऽपि च हिंसायां परस्योत्साहनेऽपि च ।  
 ग्रहणं चन्दिरादानमादरोऽर्काद्युपप्लवः ॥ १४ ॥

गह्वरं कन्दरे दम्भे चलनं पादयन्त्रयोः ।  
 जघनं स्यात् कटौ पूर्वश्रोणिभागापराङ्गयोः ॥ १५ ॥  
 तलिमं कुट्टिमे तल्पे तर्पणं त्विन्धनेऽपि च ।  
 तानितं तूलितपटे गुणवादित्रभाण्डयोः ॥ १६ ॥  
 तेमनं व्यञ्जने क्लेदे तोत्रे तोदे च तोदनम् ।  
 दर्शनं चक्षुषि स्वप्ने बुद्धिशान्धोपलब्धिषु ॥ १७ ॥  
 दुकूलं शुक्लवस्त्रेऽपि द्योतनं दीपनेऽद्दिण च ।  
 धाराप्रभवतारेऽश्रौ निमित्तं हेतुलक्षयोः ॥ १८ ॥  
 नाभीलं नाभिगन्धश्च वङ्गुणं च वरस्त्रियाः ।  
 निर्याणं हस्तिनेत्रान्ते मरणे निर्गमेऽपि च ॥ १९ ॥  
 निर्वाणं निर्धृतौ मोक्षे विनाशे गजमज्जने ।  
 निदानमपदाने स्यात् खण्डनेऽप्यादिकारणे ॥ २० ॥  
 पललं तिलचूर्णे स्यान्मांसकर्दमभेदयोः ।  
 प्रयाणं गजदृक्पूर्वप्रदेशे मरणे गतौ ॥ २१ ॥  
 प्रज्ञानं लाञ्छने बुद्धौ प्रसूनं फलपुष्पयोः ।  
 पातालं लोक और्वश्च पतत्रं खे गरुत्यापि ॥ २२ ॥  
 नवसूतगावीदुग्धे पीयूषममृतेऽपि च ।  
 प्रमाणं बोधनेयत्तामर्यादाशास्त्रहेतुषु ॥ २३ ॥  
 सम्यग्वक्तरि चाथ स्यात् प्रायणं मरणे गतौ ।  
 पुष्करं हस्तिहस्ताग्रे जले वाद्यमुखे शुषि ॥ २४ ॥  
 खेऽब्जे दिव्यसिधारायां तीर्थभेषजभेदयोः ।  
 ब्राह्मण्यं ब्राह्मणत्वे स्याद्विप्रौघे विप्रकर्मणि ॥ २५ ॥  
 बाह्वीकं कुक्कुमं हिङ्गु मण्डनं कवचे रणे ।  
 भूतिकं भूमिनिम्बे च भूस्त्रुणे कत्तुणेऽपि च ॥ २६ ॥  
 मणीचमग्रहस्तेऽपि पुष्पमौक्तिकयोरपि ।  
 मन्दिरं देहपुर्योश्च सम्बन्धे मैथुनं रते ॥ २७ ॥  
 यापनं स्यान्निरसने नृत्ते प्रस्थापनेऽपि च ।  
 लक्षणं कार्षिके चिह्ने नास्ति मुद्राङ्गसम्पदोः ॥ २८ ॥  
 लाङ्गूलं बालघौ मेढ्रे वर्जनं त्यागहिंसयोः ।  
 वराङ्गं स्त्रीभगे मूर्ध्निच्छेदे वृद्धौ च वर्धनम् ॥ २९ ॥  
 व्यञ्जनं श्मश्रुनिष्ठानचिह्नेष्ववयवेऽक्षरे ।  
 वृद्धत्वे वृद्धसङ्घाते वृद्धकर्मणि वार्द्धकम् ॥ ३० ॥

बालकं त्वङ्गुलीये स्याद् बर्हिष्ठे वलयेऽपि च ।  
 व्युत्थानं प्रतिकूलत्वे स्वातन्त्र्यकरणेऽपि च ॥ ३१ ॥  
 व्यसनं शक्तिविपदोदैवानिष्टफलैऽहसि ।  
 पैशुन्यादौ च कोपोत्थे मृगयादौ च कामजे ॥ ३२ ॥  
 विधानं हस्तिकबले प्रेरणेऽभ्यर्चने धने ।  
 वेतने चाप्युपाये च प्रकारे वैरकर्मणि ॥ ३३ ॥  
 वेष्टने मकुटोष्णीषौ शकले खण्डवल्कले ।  
 शाल्लकं पङ्कजे कन्दे जले शमलमप्यघे ॥ ३४ ॥  
 शासनं निग्रहे लेख्ये वेदवाक्येषु कर्मणि ।  
 वाङ्मनियोगे प्रहरणे शास्त्रे ग्रामे च निष्करे ॥ ३५ ॥  
 साधनं शेर्फास धने सिद्ध्युपायनिवृत्तिषु ।  
 मारणे मृतसंस्कारे दापनेऽनुगमे गमे ॥ ३६ ॥  
 सेनाङ्गे यातनायाञ्च सेवनं स्यूतिसेवयोः ।  
 मृत्यौ समाप्तौ संस्थानं सन्निवेशे चतुष्पथे ॥ ३७ ॥  
 मणौ शीघौ शीघुपाने सरकं मद्यभाजने ।  
 सामर्थ्ये शक्तिसम्बन्धौ हृदयं तु मनस्यपि ॥ ३८ ॥  
 हिरण्यं काञ्चने वित्ते मानभेदेऽप्यकुप्यके ।  
 हरणं करणे नृत्ते चापेनान्यास्त्रवारणे ॥ ३९ ॥  
 हतौ कथितशीताप्सु पणने यौतकादिके ॥ ३९ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां  
 त्र्यक्षरकाण्डे नपुंसकलिङ्गाध्यायः ॥ ३ ॥



## अर्थवलिङ्गाध्यायः ॥ ४ ॥

अधमौ गर्हितन्यूनावभीकौ निर्भयाभिकौ ।  
 प्रत्यक्षेऽधिकृतेऽध्यक्षमखिलं गर्ह्यकृत्स्नयोः ॥ १ ॥  
 आविष्टौ क्षिप्रकुटिलावाहतौ सादरार्चितौ ।  
 विपन्नप्राप्तावापन्नावभीलौ कष्टभीषणौ ॥ २ ॥  
 आप्लुतौ स्नातकस्नातावाहतं गुणिते हते ।  
 आयस्तः कुपिते क्षिप्ते क्लेशिते तेजितेऽपि च ॥ ३ ॥  
 इरिणं तूषरस्थाने भूभागे च निराश्रये ।  
 उदारो महति ख्याते दक्षिणे दानशौण्डिके ॥ ४ ॥  
 उद्धृतं भुक्तनिर्मुक्ते तुलिते चाप्यथोच्छ्रितम् ।  
 वृद्धे तुङ्गे समुत्पन्नेऽप्युदितौ कथितोद्गतौ ॥ ५ ॥  
 उद्धूढावूढप्रथुलावुत्तमौ प्रवरान्तिमौ ।  
 महत्युदात्त उच्चोक्तेऽप्युपोढो निकटोढयोः ॥ ६ ॥  
 अभ्यस्तेऽप्युचितं न्याग्येऽप्युषितं स्थितदग्धयोः ।  
 उत्तालो द्रुत उत्तानेऽप्युत्कटो मत्त उद्भटे ॥ ७ ॥  
 करालो दन्तुरे तुङ्गे विशाले विकृतेऽपि च ।  
 कर्कशः प्रखरस्पर्शे निर्दये साहसिन्यपि ॥ ८ ॥  
 द्वौ कनिष्ठकनीयांसौ यून्यत्यल्पेऽनुजेऽपि च ।  
 क्षुब्धका नीचनिःस्वाल्पाः कलितो ज्ञातबद्धयोः ॥ ९ ॥  
 कल्माषौ कृष्णमिश्रौ च कुहकोऽपीर्ष्या युते ।  
 क्षेत्रियं दुष्प्रतीकारे व्याधौ क्षेत्रोद्भवे वृणे ॥ १० ॥  
 देहान्तरचिकित्सार्हे गरले पारदारिके ।  
 चतुरौ दक्षधीमन्तौ जघन्योऽन्त्यकुपुपयोः ॥ ११ ॥  
 जरठः कठिने जीर्णे तलिनो विरलालपयोः ।  
 पशुः कालेऽपि निःशृङ्गो नरोऽश्मश्रुश्च तूपरौ ॥ १२ ॥  
 दुर्विधो निर्धने नीचे निहृतो न्यक्स्वरे हते ।  
 निर्मन्थः श्रमणे निःस्वे निरस्तस्तु निराकृते ॥ १३ ॥  
 निष्ठयते प्रास्तवान्ते च वचने च द्रुतोदिते ।  
 निघातो दृढसन्नाहे निर्वातेऽप्याश्रयेऽपि च ॥ १४ ॥  
 निर्दयः परदोषोक्तिपरे निष्ठुरभाषिणि ।  
 प्रणायोऽसम्मतेऽपि स्यादनभिष्वङ्गवत्यपि ॥ १५ ॥

प्रतीतो भूषिते ख्याते ज्ञाते प्रत्ययिते बुधे ।  
 प्रार्थितं त्वभियुक्ते स्यान्निहिते याचितेऽपि च ॥ १६ ॥  
 पिण्डलः स्थूलजङ्घे च गणनाकुशलेऽपि च ।  
 प्रतीक्ष्यौ प्रतिपाल्याच्यौ प्रथमौ प्रवरादिमौ ॥ १७ ॥  
 प्रहतौ क्षुण्णव्युत्पन्नौ प्रयतौ पूतसंस्कृतौ ।  
 सव्यायतौ प्रसव्यौ द्वौ प्रवृद्धौ प्रसृतैर्धितौ ॥ १८ ॥  
 पिण्डितौ घनसङ्ख्यातौ प्रसिद्धौ ख्यातभूषितौ ।  
 पेशलौ चारुचतुरौ पूर्णश्रेष्ठौ तु पुष्कलौ ॥ १९ ॥  
 मिश्रास्त्रिगधौ च परुषौ प्रगाढो गहने दृढे ।  
 पामरोऽपशदेऽङ्गे च बालशो बालमूर्खयोः ॥ २० ॥  
 बीभत्सौ कृरविकृतौ बहलौ सान्द्रपुष्कलौ ।  
 बन्धुरौ नम्रसुन्दरौ भङ्गुरौ वक्रनश्वरौ ॥ २१ ॥  
 भावितौ लब्धवासितौ भुजिष्यौ स्वैरिकिङ्करौ ।  
 मधुरौ स्वादुसुन्दरौ मूर्च्छितौ मूढसोच्छ्रयौ ॥ २२ ॥  
 विधुतौ त्यक्तकम्पितौ विदितौ ज्ञातसंश्रुतौ ।  
 विलीनौ लीनविद्रुतौ वेक्षितौ धूतकुञ्चितौ ॥ २३ ॥  
 विगतौ वीतनिस्पृहौ विविक्तौ शुद्धनिर्जनौ ।  
 विवर्णौ मूर्खदुर्वर्णौ व्यायतो व्यापृते दृढे ॥ २४ ॥  
 विकृतौ रोगिदूरुपौ विशदो धवले शुचौ ।  
 वल्लभौ दयिताभ्यक्षौ वरिष्ठोऽतिवरेऽत्युरौ ॥ २५ ॥  
 पृथौ कराले विकटो विसृतं विगते तते ।  
 वदान्यो बल्लुवागदात्रोर्वरीयान् सत्तमेऽत्युरौ ॥ २६ ॥  
 विवशस्त्वस्वतन्त्रात्माप्यरिष्टेन च दुष्टधीः ।  
 त्रिधुरः पत्न्यपेते स्यात् क्षिष्टविस्मिष्टयोरपि ॥ २७ ॥  
 संस्कृतं लक्षणोपेते कृत्रिमे निर्मलीकृते ।  
 मिश्रीकृते च संसृष्टं शुद्धे च वमनादिभिः ॥ २८ ॥  
 साधीयोऽनुमतेऽत्यर्थं सत्तमे शोभनेऽपि च ।  
 तथ्यपथ्यार्थवाक्येऽपि सूनृतोऽथ क्षमे हिते ॥ २९ ॥  
 सम्बद्धेऽपि समर्थः स्यात् स्तिमितं स्तम्भवत्यपि ॥ ३० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

अक्षरकाण्डे अर्थवलिज्ञाप्यायः ॥ ४ ॥

## नानालिङ्गाध्यायः ॥ ५ ॥

गुणाद्यर्थेऽर्थलिङ्गत्वमिहाप्यूहं स्वयं क्वचित् ।  
 अन्तरः परिधानीये बाह्ये स्वीयेऽन्तरात्मनि ॥ १ ॥  
 क्ली तु मध्येऽवकाशे च तादर्थ्येऽवसरेऽवधौ ।  
 विशेषविवरान्तर्धिष्ववसानविनार्थयोः ॥ २ ॥  
 अक्षरोऽसौ हरौ धातर्यक्षरं प्रणवे विधौ ।  
 धर्मे वर्णे तपःक्रत्वोः खे मोक्षे मूलकारणे ॥ ३ ॥  
 अनन्तो नागराड्विष्णुरनन्तं खनिरन्तयोः ।  
 अनन्ता पूर्णिमा दूर्वा यवाषः शारिबा मही ॥ ४ ॥  
 अर्जुनः पाण्डवे पाण्डौ मातुरेकसुते द्रुमे ।  
 नेत्ररोगे चाङ्गुलं तु तृणे हेमन्यर्जुनी गवि ॥ ५ ॥  
 विषारुणारुणं ताम्रमरुणः सूर्यसारथौ ।  
 अव्यक्तरागे शशिजे सन्ध्याध्रे लोहिते रवौ ॥ ६ ॥  
 अमृतं व्योम्नि देवान्ने यज्ञशेषे रसायने ।  
 अयाचिते जले जग्धौ मोक्षेऽन्ने हेम्नि गोरसे ॥ ७ ॥  
 क्लीबो ना त्वमरे स्त्री तु गुल्फ्यां मद्यमिश्रयोः ।  
 आमलक्यां हरीतक्यां त्रिषु तु स्वादुनित्ययो ॥ ८ ॥  
 अरिष्टो वायसे निम्बे गोरसे निरुपद्रवे ।  
 क्ली तु वर्णे मृत्युचिह्ने मद्ये तान्ने शुभेऽशुभे ॥ ९ ॥  
 अङ्गजो ना सुतेऽनङ्गे क्ली रोगे रुधिराऽपि च ।  
 न ना कवाटे क्ली लोहे सोमे स्यादररः पुमान् ॥ १० ॥  
 लाजेऽवश्योषमभ्योषाः साव्याम्भःपेयसक्तवः ।  
 कृकलासेऽण्डजो मत्स्ये खगे कसूरिकाऽण्डजा ॥ ११ ॥  
 अविषो निर्विषेऽम्भोधावविषो दिवि पुंसि वा ।  
 अपानो देहजो वायुरपानं वृषणे गुदे ॥ १२ ॥  
 प्रधानेऽव्यक्तमव्यक्तो ब्रह्मण्यस्पष्टमूर्खयोः ।  
 अमरेन्द्रपुरी स्थूणा गुडूची चामराः सुराः ॥ १३ ॥  
 क्लृप्तक्षतं तण्डुले धान्ये न ना लाजेषु ना यवे ।  
 अजिरं जर्जरे कामे विषयाङ्गणयोर्द्रुते ॥ १४ ॥  
 अलसौ पादरुम्भन्दावण्डीरौ शक्तपूरुषौ ।  
 विद्युत्पवोरुद्धयशनिरनीकोऽस्त्री चमूयधोः ॥ १५ ॥

अधरोऽनूर्ध्वहीनोष्ठेऽध्वनृतं वितथे कृषौ ।  
 आश्रमोऽस्त्री मुनिस्थाने ब्रह्मचर्यादिके मठे ॥ १६ ॥  
 कोट्टारे कृपणे जीर्णे स्थानेऽभिप्राय आशयः ।  
 शर्करायां दृषत्पुत्रे स्यस्यश्मन्युपलो मणौ ॥ १७ ॥  
 उत्तरं प्रतिवाक्ये स्यादुदीच्ये प्रवरोर्ध्वयोः ।  
 स्त्रीलिङ्गत्वे धनुर्लक्ष्म्यां पुरुषे पावके च ना ॥ १८ ॥  
 करीरो ना घटे न स्त्री पादपे वैणवाङ्गुरे ।  
 करेणुस्तु करिण्यां स्त्री कर्णिकारे गजे च ना ॥ १९ ॥  
 भिक्षापात्रे तु कमठं कमठौ खर्बकच्छपौ ।  
 अस्त्री कशिपु शय्यायां वस्त्रेऽन्ने तद्द्वयेऽपि च ॥ २० ॥  
 करटो दुर्दुरुटे स्याद् बिल्वे काकेभगण्डयोः ।  
 कल्याणी दमोमयोः क्ली तु मङ्गलेऽक्षयरुक्मयोः ॥ २१ ॥  
 रागे काथे कषायोऽस्त्री निर्यासे सौरभे रसे ।  
 कान्तार इक्षुभेदे ना न स्त्री व्यध्वे महावने ॥ २२ ॥  
 कीनाशो रक्षसि यमे कदर्ये कर्षकेऽर्थवत् ।  
 कुहनो मूषिके सेर्ष्ये कुहना दम्भशीलता ॥ २३ ॥  
 कुशलं निपुणे पुण्ये पर्याप्तौ मङ्गले क्षमे ।  
 कुक्कूलं शङ्कुभिः कीर्णे श्वभ्रे ना तु तुषानले ॥ २४ ॥  
 कुण्डली चित्रलमृगे सर्पे कुण्डलवत्यपि ।  
 कुङ्कुमे महारजने कुसुम्भं ना कमण्डलौ ॥ २५ ॥  
 केवलं निश्चिते क्लीवे वाच्यवत्त्वेककृत्स्नयोः ।  
 कमलं छुरिकादीनां हेमाद्यैश्चित्रिताजिने ॥ २६ ॥  
 रक्ताब्जोऽप्सु च श्रीस्तु कमला कमलो मृगः ।  
 अक्ली कोल्यां क्रोष्टुकोल्यां कर्कन्धूः स्त्री तु संयुगे ॥ २७ ॥  
 तथा मध्वाज्यसंसिक्तधवलाजजतर्पण ।  
 कुमारः स्याद् गुहे बाले वरणेऽश्वानुचारके ॥ २८ ॥  
 युवराजे च ना क्ली तु द्वीपे पुंस्त्री मृगोमयोः ।  
 कुतपो भागिनेयेऽर्के विप्रेऽग्नावतिथौ गवि ॥ २९ ॥  
 अस्त्री त्वहोऽष्टमे भागे तिलेषु छागकम्बले ।  
 दर्भे च केसरस्त्वस्त्री सिंहकेशाश्वकेशयोः ॥ ३० ॥  
 कलिलं गहने वृन्दे सैन्येऽपि कटकोऽस्त्रियाम् ।  
 किञ्चल्कः केसरे खे क्ली कृषकौ फालकर्षकौ ॥ ३१ ॥



कातरः पण्डके त्रस्तौ चेत्रज्ञावात्मशिक्षितौ ।  
 कुसीदमृणवृद्धौ क्ली वाच्यवद् वृद्धिजीविनि ॥ ३२ ॥  
 कलिङ्गं तु यवे ना तु देशपक्षिविशेषयोः ।  
 खनको भूमिवित्तज्ञे मूपिकेऽप्यवदारके ॥ ३३ ॥  
 गर्जितो मत्तमातङ्गे क्ली तन्नादेऽम्बुदध्वनौ ।  
 गण्डवोऽस्त्री गण्डपूर्तौ प्रसृते गजपुष्करे ॥ ३४ ॥  
 पार्थचापे चापमात्रे गाण्डीवो गाण्डिवोऽस्त्रियौ ।  
 कशेरुद्देम्नोर्गाङ्गेयं गाङ्गेयो गुहभीष्मयोः ॥ ३५ ॥  
 ग्रामणीः स्वामिनि श्रेष्ठे ग्रामेशे नापिते तु ना ।  
 गोमुखोऽस्त्री वाद्यभेदे नक्रे नाले वने नपुम् ॥ ३६ ॥  
 गोष्पदं गोखुरश्वभ्रे मानगोगम्ययोरपि ।  
 वृत्तैकमक्ते चरणे चरणा बहुचादयः ॥ ३७ ॥  
 स्थण्डिले प्राङ्गणे च क्ली चत्वरं ना चतुष्पथे ।  
 चातुरः शकटे चक्रगण्डे नयनगोचरे ॥ ३८ ॥  
 चपलः पारदे शीघ्रे दुर्विनीते चले कपौ ।  
 चले केशे च चिकुरो जराटवस्त्र्यम्बुजेऽपि च ॥ ३९ ॥  
 जृम्भितं जृम्भणोऽङ्गुलविष्वद्वेषु विचेष्टिते ।  
 जीवकः प्रवरे जन्तौ श्रमणे वृद्धिजीविनि ॥ ४० ॥  
 जर्जरस्त्रिषु जीर्णे स्यात् पुमानिन्द्रध्वजे पिके ।  
 टगरटङ्गनक्षारे ना केकरदृशि त्रिषु ॥ ४१ ॥  
 स्त्री नौनद्योर्ब्रजस्तम्भे तरणिर्नार्णवे रवौ ।  
 भुवीन्द्रपुत्र्यां तविषी ताविष्यब्धिदिवोर्नरौ ॥ ४२ ॥  
 तमिस्रा स्त्री ध्वान्तनिशि निश्यन्धतमसे न ना ।  
 तातगुः शूद्रताते ना ताताय तु हिते त्रिषु ॥ ४३ ॥  
 तातलो लोहकूटे ना त्रिषु तप्ते मनोजवे ।  
 तरलो भास्वरे हारे चञ्चलेऽप्यथ तारका ॥ ४४ ॥  
 न नाक्षिमध्ये नक्षत्रे द्विजिह्वौ सूचकोरगौ ।  
 दुर्वर्णं दुष्प्रभे रूप्ये देयभेदे तु दक्षिणा ॥ ४५ ॥  
 त्रिष्ववाक्सरलाधामेष्वन्यच्छन्दानुवर्तिनि ।  
 कनिष्ठपत्न्यामरतौ पुनर्भूपरिविन्नयोः ॥ ४६ ॥  
 स्त्री पुनर्भ्वास्तु पत्यौ ना दिधिषुर्दिधिषूरपि ।  
 स्याद् दीपकमलङ्कारे स्वरूपे दीप्तिमत्यपि ॥ ४७ ॥

दुन्दुभिः पुंसि भेर्या स्त्री त्वक्षबिन्दुत्रिकद्वये ।  
 घर्षणं सुरते घाष्ट्यै कुलटायां तु घर्षणी ॥ ४८ ॥  
 चारौ श्रेष्ठे वृषे श्वेते धवलो धवली गवि ।  
 धौताञ्जले रजक्याञ्च धावनी धावनं गतिः ॥ ४९ ॥  
 धिषणा स्त्री धियां गौर्या स्त्रीचिह्ने ना तु गीष्पतौ ।  
 नागरं पुरंजे चुक्रे शुण्ठीराजकशेरुणोः ॥ ५० ॥  
 निधनोऽस्त्री कुले नाशे निखिंशः क्रूरखङ्गयोः ।  
 नालीकमञ्जे बाणे ना निशान्तं गृहशान्तयोः ॥ ५१ ॥  
 केशादिशौक्ये पलितं शैलेये ना तु कर्दमे ।  
 पटलं द्रुक्छदिषोः क्ली न ना पटके गणे ॥ ५२ ॥  
 पर्याप्तं स्याद्यथाकामे तृप्तौ शक्तौ निवारणे ।  
 प्रवणो दक्षिणे प्रह्वे क्रमनिम्ने चतुष्पथे ॥ ५३ ॥  
 प्रकाशोऽर्चिषि दीधित्यां ना तुल्यस्फुटयोस्त्रिषु ।  
 मुखे प्रतीकस्त्रिषु तु प्रतिकूलानुरूपयोः ॥ ५४ ॥  
 वीणादण्डे प्रवालोऽस्त्री विद्रुमे नवपल्लवे ।  
 असूनमर्थवज्जाते पुष्पे क्ली सारथौ पुमान् ॥ ५५ ॥  
 प्रग्रीवमस्त्री कलशे ग्रीवाप्रासादयोरपि ।  
 पाटला गवि पाटल्यामाशुग्रीहिस्तु पाटलः ॥ ५६ ॥  
 पिनाकोऽस्त्री रजोवर्षे शूले शङ्करधन्वनि ।  
 त्रिषूर्ध्वबाहुपुमात्रे क्ली पुंसो भावकर्मणोः ॥ ५७ ॥  
 पौरुषं पल्लवं त्वस्त्री प्रकोष्ठेऽप्यतिविस्तृतौ ।  
 पवित्रोऽग्नौ हरौ पूते क्ली तु ताम्रेऽप्सु गोमये ॥ ५८ ॥  
 मन्त्रे दधिन् ब्रह्मसूत्रे हेम्नमर्थे कलशे कुशे ।  
 पुलस्त्यवंश्ये पुरुषे पौलस्त्यः क्ली तु संयुगे ॥ ५९ ॥  
 फलकी चन्दने स्त्री न स्त्री दार्वासनचर्मणोः ।  
 फेनिलं बदरे फेनयुक्तेऽथ ब्राह्मणो द्विजे ॥ ६० ॥  
 आमन्त्रे क्ली तु विधिवद्वेदभागतदंशयोः ।  
 बहुलः कृष्णपक्षेऽग्नौ पुमांस्त्रिष्वसिते बहौ ॥ ६१ ॥  
 स्त्री स्यात् पृथिव्यामुस्त्रायामेलायां कृत्तिकासु च ।  
 भविलं भवने भव्ये भ्रमरः कामुकेऽलनि ॥ ६२ ॥  
 उद्याने मलयं ना तु गिर्यशगिरिभेदयोः ।  
 मत्सरोऽन्योदयद्वेषे तद्वत्कृपणयोस्त्रिषु ॥ ६३ ॥

मन्थरः सूचके कोपे मन्थाने मन्दगामिनि ।  
 मार्गणं मृगणायां स्यान्मार्गणो याचके शरे ॥ ६४ ॥  
 दूर्वायां स्त्रीक्षुमूले क्ली गोरसेऽपि च मोरटम् ।  
 त्रिलिङ्गं मण्डलं वृन्दे ग्रामौघप्रतिबिम्बयोः ॥ ६५ ॥  
 उपसूर्यं कुष्ठरोगे देशे द्वादशराजके ।  
 मुचिरौ धर्मदातारौ मोदकौ स्वाद्यहर्षकौ ॥ ६६ ॥  
 पित्रादेः कन्वयाऽऽप्तेऽर्थे क्ली स्वीये त्रिषु यौतकम् ।  
 युतकं युगले युक्ते यौतके वसनाञ्जले ॥ ६७ ॥  
 संश्रयेऽग्रे च शूर्पस्य वस्त्रभेदे च योषितः ।  
 रसनं क्ली कषायेऽन्ने द्रवे स्नेहे विषे फले ॥ ६८ ॥  
 निर्यासे हेम्नि रूप्ये च जिह्वास्वादनयोर्न ना ।  
 रेवटं दक्षिणावर्तशङ्खे रेणौ तु रेवटः ॥ ६९ ॥  
 वातूले विषवैद्येऽथ रजतं शोणिते हृदे ।  
 श्वेते हारेऽप्यथोष्ट्रेऽलौ रवणः शब्दनेऽर्थवत् ॥ ७० ॥  
 रोषाणो रोषणे स्वर्णघर्षणग्राणि पारदे ।  
 रौहिषं रक्तकतृणे मत्स्यभेदे मृगे च ना ॥ ७१ ॥  
 लालसा तु ना नौत्सुक्ये दौहदाद्यभिलाषयोः ।  
 ललामोऽस्त्री ललामापि प्रभावे पौरुषे ध्वजे ॥ ७२ ॥  
 श्रेष्ठे भूषापुण्ड्रशृङ्गपुच्छचिह्नाश्वलिङ्गिषु ।  
 लोचको मांसपिण्डे स्यान्नीलिन्यां चर्मणि भ्रूवि ॥ ७३ ॥  
 रक्तांशुके दुष्टबुद्धौ क्रोष्टृधूर्तौ तु वस्त्रकौ ।  
 विनीतस्त्रिष्वपि प्राप्ते निभृते विजितेन्द्रिये ॥ ७४ ॥  
 विनयं ग्राहिते चैष सुखवाहिहये पुमान् ।  
 विषयी रात्रि कन्दर्पे विषयस्थजने च ना ॥ ७५ ॥  
 अर्थवद्विषयोपेत इन्द्रिये तु नपुंसकम् ।  
 अस्त्री वितानमुल्लोचे विस्ताराध्वरयोः क्षणे ॥ ७६ ॥  
 त्रिषु शून्ये च मन्दे च विषाण्युक्षेमशृङ्गिषु ।  
 भेक्यां पुनर्नवायां स्त्री वर्षाभूर्दुर्दुरे न षण् ॥ ७७ ॥  
 वयःस्थाऽऽमलक्रीपध्यान्नाह्वीषु तरुणे त्रिषु ।  
 बलजा वरनार्या च क्षेत्रे द्वारि च सा न ना ॥ ७८ ॥  
 वर्णकोऽस्त्री प्रकारे स्याच्चन्दने स्यञ्जलेपने ।  
 दुःखे विलम्बे व्यलीकमप्रियाकार्योस्तु ना ॥ ७९ ॥

वातूलो वातसङ्घाते वातले मरुतोऽसदे ।  
 विहायाः पुंनपुं व्योम्नि पुमानैव पतत्रिणि ॥ ८० ॥  
 विशिखा तु खनित्री च क्ली चित्ते ना त्वसौ शरे ।  
 विमानोऽस्त्री देवयाने सप्तभूमे च सदमनि ॥ ८१ ॥  
 विटपोऽस्त्री द्रुविस्तारे पल्लवे स्तम्बशाखयोः ।  
 विषाणस्त्रिषु लिङ्गेषु पश्वङ्गगजदन्तयोः ॥ ८२ ॥  
 वेदना दुःखानुभवे ज्ञाने च स्त्रीनपुंसकम् ।  
 स्कन्दे विशाख ऋद्धे स्त्री विहायः स्फुटहासयोः ॥ ८३ ॥  
 पापेऽपि वृजिनं केशे पुमानिन्दुस्तु शर्वरः ।  
 स्त्री रात्रिसन्ध्याशर्वर्योदैत्ये ना शम्बरोऽप्सु षण् ॥ ८४ ॥  
 शयथुस्त्रिषु निद्रालौ मृत्यावजगरे च ना ।  
 शय्यायां शयनं न स्त्री निद्रासुरतयोर्नपुम् ॥ ८५ ॥  
 शरत्पक्वादिशालीनौ प्रत्यग्रोऽब्जश्च शारदः ।  
 गम्भार्या कट्फले श्रीपर्ण्यग्निमन्थाब्जयोर्नपुम् ॥ ८६ ॥  
 यमेऽपि शमनो ध्वान्ते क्ली हिंसे त्रिषु शार्वरः ।  
 करञ्जभेदे षड्ग्रन्थः षड्ग्रन्था ग्रन्थिकं वचा ॥ ८७ ॥  
 समानः प्राणभेदे ना त्रिष्वेकसमसाधुषु ।  
 संस्कारो ना संस्कृतिः स्त्री सङ्कल्पप्रतियत्नयोः ॥ ८८ ॥  
 स्पर्शनः पवमाने स्यात् स्पर्शनं सृष्टिदानयोः ।  
 सारङ्गः शबलो वर्णश्चातकः षट्पदो मृगः ॥ ८९ ॥  
 छिद्रे छिद्रान्विते वाद्ये सुपिरं सुषिरो नडः ।  
 सुमनाः पुष्पमालत्योः स्त्री देवबुधयोः पुमान् ॥ ९० ॥  
 सैन्धवोऽश्वेऽश्वभेदे ना न स्त्री तु लवणोत्तमे ।  
 बदरेऽपि च सौवीरं ना नीवृद्रोपघोण्टयोः ॥ ९१ ॥  
 सङ्गरो ना क्रियाकारे प्रतिज्ञाविपदोर्युधि ।  
 शमीफले तु षण्डोऽथ सम्बाधौ योनिः सङ्कटौ ॥ ९२ ॥  
 सुरभिर्वाच्यवत् सौम्ये सुगन्धौ स्त्री त्वसौ गवि ।  
 पुमांश्चैत्रे वसन्ते च सेवकौ स्यूतभाजकौ ॥ ९३ ॥  
 सुकृतं शोभने धर्मे हर्षुलो मृगकामिनोः ॥ ९३ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

अक्षरकाण्डे नानाकिङ्गाध्यायः ॥ ५ ॥

अक्षरकाण्डः समाप्तः ॥ ७ ॥



## ८. अथ शेषकाण्डः

पुलिङ्गाध्यायः ॥ १ ॥

अकारादिक्रमेणादाविहोक्त्वा चतुरक्षरान् ।  
 अध्यायान्तेषु सङ्कीर्णाः कृताः पञ्चाक्षरादयः ॥ १ ॥  
 अनुबन्धो दोषभावे प्रकृत्यादेर्विनश्वरे ।  
 मुख्यानुयायिनि शिशौ प्रकृतस्यानुवर्तने ॥ २ ॥  
 अपहारः पुनश्चोरे द्यूतयुद्धादिविश्रमे ।  
 निमन्त्रणोपनेतव्यद्रव्ये ग्राहाख्ययादसि ॥ ३ ॥  
 अवग्रहो वृष्टिरोधे प्रतिबन्धे गजालिके ।  
 अवष्टम्भः समालम्भे स्तब्धिकाञ्जनयोरपि ॥ ४ ॥  
 पिशाचादिग्रहे तीर्थेऽप्यवतारोऽवतारणे ।  
 अवरोहोऽवतरणं शाखाप्यामादुगताङ्घ्रितः ॥ ५ ॥  
 अधिवासो निवासे स्थादु गन्धधूपादिसंस्कृतौ ।  
 अपवर्गः क्रियासाध्यफलाप्तौ त्यागमोक्षयोः ॥ ६ ॥  
 अपभ्रंशोऽपशब्दे स्यादु भाषामेदप्रपातयोः ।  
 अपदेशस्तु लक्ष्णे स्यान्निमित्तव्याजयोरपि ॥ ७ ॥  
 अनुभावः प्रभावे स्यान्निश्चये भावसूचके ।  
 पश्चात्तापे त्वनुशयो दीर्घद्वेषानुबन्धयोः ॥ ८ ॥  
 अनुषङ्गस्तु कारुण्ये प्रकृतस्यानुवर्तने ।  
 अभिमानस्तु विज्ञाने प्रणये दर्पहिंसयोः ॥ ९ ॥  
 अभिषङ्गस्त्वभिभवे सङ्ग आक्रोशनेऽपि च ।  
 अभिहारोऽभियोगे च चौर्यसन्नाहयोरपि ॥ १० ॥  
 स्नाने मद्यस्य सन्धानेऽभिषवः सवनेऽपि च ।  
 अभिग्रहोऽभियोगे च समन्ताद्ग्रहणेऽपि च ॥ ११ ॥  
 संयुगे स्यादभिमरः सबलादपि साध्वसे ।  
 कुले त्वभिजनो जन्मभूमौ चाथामरे ऋषे ॥ १२ ॥  
 अनिमेपोऽप्यनिमिषोऽप्यथ चण्डालशिष्ययोः ।  
 स्यादन्तेवास्यथर्वज्ञे त्वथर्वाणिः पुरोहिते ॥ १३ ॥  
 नृपरक्षिष्वनीकस्थो हस्तिशिक्षाविचक्षणे ।  
 अपवादौ तु निन्दाज्ञे स्तुतिस्नेहावपह्नवौ ॥ १४ ॥

वह्निवातावपाङ्गभौ गुह्यगूधाववस्करो ।  
 कूर्मेशोऽन्धावकूपारोऽवलेपो लेपगर्वयोः ॥ १५ ॥  
 अशिःस्कौ बाहुरुण्ढाववलोणेऽस्फुटापि वाक् ।  
 आशाचनी तु वह्नीन्दू आत्मयोनी स्मरानिलौ ॥ १६ ॥  
 ब्रह्माऽप्यथोपचर्यायामुपचार उपायने ।  
 उपनाहो वैरबन्धे वीणायाश्च निबन्धने ॥ १७ ॥  
 उपक्रमश्चिकित्सायामुपधाऽऽरम्भयोरपि ।  
 उपग्रहस्तु बन्दौ स्याद् ग्रहणेऽप्यनुकूलने ॥ १८ ॥  
 उपतापौ रुजातापौ द्वारपालेऽप्युदास्थितः ।  
 स्नानाचान्त्योरुपस्पर्शो हरावुच्चैःश्रवा ह्ये ॥ १९ ॥  
 दात्यौहाली कलकाणौ खड्गिखड्गौ करालिकौ ।  
 कलहंसो राजहंसे कादम्बे श्रेष्ठभूभुजि ॥ २० ॥  
 कुरुविन्दो द्विजुलेऽपि मुस्तेऽप्यथ गुहाशयः ।  
 श्चेत्ते सिंहे च कूर्मे च ग्रहराजोऽर्कचन्द्रयोः ॥ २१ ॥  
 घनाघनो मत्तगजे वासवे वार्षुकाम्बुदे ।  
 चक्रपादौ रथगजौ चित्रभानू इनानलौ ॥ २२ ॥  
 देशे जने जनपदश्चन्द्रेऽर्केऽग्नौ तमोनुदः ।  
 तमोपहोऽप्यथोल्हके तस्करे कुमुदाकरे ॥ २३ ॥  
 दिवाभीतो दिवाकीर्ती पुनश्चण्डालनापितौ ।  
 ददुरीकोऽनले वाद्ये पार्थाग्नीन्द्रा धनञ्जयाः ॥ २४ ॥  
 अग्न्युत्पातौ धूमकेतू धन्वन्तरिरिनाब्जयोः ।  
 पर्परीकौ वह्निभक्ष्यौ शौर्योद्योगौ पराक्रमौ ॥ २५ ॥  
 अग्निरुद्रौ पशुपती नाशावज्ञपराभवौ ।  
 रक्षःसन्तौ पुण्यजनौ नीचमूर्खौ पृथग्जनौ ॥ २६ ॥  
 द्वारद्वाःस्थौ प्रतीहारौ स्तनाम्भोदौ पयोधरौ ।  
 काशे नडे पोटगलः पवमानोऽग्निवातयोः ॥ २७ ॥  
 परिमर्देऽपि परिमलः पितामहौ ब्रह्मपितृतातौ ।  
 परिवारः प्रावारेऽपि नृपार्हाथेऽपि परिबर्हः ॥ २८ ॥  
 परिवर्तो जगन्नाशे निमयेऽब्दे परिभ्रमे ।  
 पर्युप्तौ च परीवाप आलवाले परिच्छदे ॥ २९ ॥  
 पत्नीस्वीकारशपथमूलेष्वपि परिग्रहः ।  
 परिक्षेपो हस्तिपादपार्श्वे सम्परिवेष्टने ॥ ३० ॥

प्रतियत्नस्तु संस्कार उपग्रहणलिप्सयोः ।  
 स्थाने गोष्ठ्यां सत्रशाले प्रत्याहारे प्रतिश्रयः ॥ ३१ ॥  
 प्लवङ्गमः कपौ भेके प्लवङ्गप्लवगाविव ।  
 मौक्तिकेऽस्त्रे पारशवो विप्राच्छूद्रासुतेऽयसि ॥ ३२ ॥  
 विवेके स्यात् परिकरः पर्यस्तिपरिवारयोः ।  
 प्रगाढगात्रिकाबन्धे समूहारम्भयोरपि ॥ ३३ ॥  
 प्रतिग्रहः क्रियाकारे चमूपृष्ठे पतद्ब्रहे ।  
 दानद्रव्ये स्वीकृतौ च त्वष्ट्यर्के प्रजापतिः ॥ ३४ ॥  
 दक्षादिष्वभिजामात्रो राज्ञि ब्रह्मणि धातरि ।  
 ब्रह्मपुत्रस्तु रुद्रेऽपि बाहुलेयो गुह्ये वृषे ॥ ३५ ॥  
 धूम्याटेऽलौ भृङ्गराजो महाराजौ नृपार्थपौ ।  
 महालयो महागोह्ये विहारे परमात्मनि ॥ ३६ ॥  
 महाकालस्तु किम्पाके हरे बाणासुरेऽपि च ।  
 रजसानू धर्ममेधौ रौहिणेयौ हलीन्दुजौ ॥ ३७ ॥  
 लक्ष्मीपुत्रोऽश्व आढ्ये च राज्ञि लक्ष्मीपतिर्हरौ ।  
 लोकपालो नृपेन्द्राद्योर्हये वातप्रसीमृगौ ॥ ३८ ॥  
 बाह्वेयोऽश्विनोर्विप्रे वासुदेवो ह्ये हरौ ।  
 विश्वगोप्ता हरौ शक्रे चन्द्रेऽर्केऽग्नौ विभावसुः ॥ ३९ ॥  
 वृषसानुः पुंसि मृत्यौ विष्णौ रुद्रे वृषाकपिः ।  
 वानप्रस्थौ मधुष्ठीलपलाशावथ सङ्करे ॥ ४० ॥  
 व्यसने च व्यतिकरो विश्वकर्माब्जजो रविः ।  
 त्वष्टा च विप्रलापस्तु विप्रलम्भोपमर्दयोः ॥ ४१ ॥  
 वारवाणिज्यौतिषिके धर्माध्यक्षेऽप्यथो वटे ।  
 वनस्पतिर्वृक्षमात्रेऽप्यग्नीन्द्रर्का विरोचनाः ॥ ४२ ॥  
 व्यवहारो वाक्प्रयोगे सम्बन्धे द्यूतदण्डयोः ।  
 शासने वित्तसंवादे विवादेऽसिवणिज्ययोः ॥ ४३ ॥  
 वर्धमानः शरावे स्यादेरण्डे भूषणेऽपि च ।  
 शकुकर्णौ गर्दभोष्ट्रावलिबाणौ शिलीमुखौ ॥ ४४ ॥

श्रीवत्साङ्कौ हरिवृकौ सिंहकाकौ सकृत्प्रजौ ।  
सहसानुर्मयूरेऽहौ सम्प्रयोगो रतेऽन्वये ॥ ४५ ॥

स्तनयितुर्गर्जितेऽभ्रे विरोधे तु समुच्छ्रयः ।  
उन्नतावप्यथ क्रोष्टौ शुनि सालावृको वृके ॥ ४६ ॥

समाहारस्तु सङ्क्षेप एकत्र करणेऽपि च ।  
समाह्वयस्तु पद्याद्यैर्द्युते नामनि संयुगे ॥ ४७ ॥

सम्परायस्तु सङ्ग्राम आपदागामिकालयोः ।  
स्थूलोच्चयस्त्वसाकल्ये गजानां मध्यमे गते ॥ ४८ ॥

सोमथोनिः सुरे विप्रे हरिरोमाब्जजेन्द्रयोः ।  
हस्तिमल्लो गणपतौ महेन्द्रस्य च कुक्षरे ॥ ४९ ॥

( इति चतुरक्षराः )

वर्णमात्रेऽभिनिष्ठानो हरीशावपराजितौ ।  
आशुशुक्ष्णिरर्केऽमौ यज्वन्यप्यासुतीवलः ॥ ५० ॥

शौण्डिके चाप्यथानन्ते कुबेरे चैककुण्डलः ।  
आत्रे चामरपुष्पः स्यात् काशकेतकयोरपि ॥ ५१ ॥

ज्योतिषाम्पतिरर्के च चन्द्रे चाप्यथ चुम्बने ।  
ओष्ठे च दशनोच्छिष्ट उच्छ्वासेऽप्यथ नीपके ॥ ५२ ॥

धूलीकदम्बो वरुणफलेऽथो नागवारिकः ।  
गणस्थे हस्तिपाले च यमेऽपि पृथिवीपतिः ॥ ५३ ॥

प्राचीनबर्हिर्निद्राग्न्यो रुद्रेन्द्रौ मेषवाहनौ ।  
मातुलपुत्रस्तून्मत्तफले मातुलसुतेऽपि स्यात् ॥ ५४ ॥

कुटजेऽपि च यवफलको बडबामुख और्ववह्नौ च ।  
विकङ्कते गोक्षुरे च कोल्यां च स्वादुकण्टकः ॥ ५५ ॥

निम्बेऽपि हिङ्गुनिर्यासो हिङ्गुवृक्षरसेऽपि च ।  
हिरण्यबाहुः शोणाख्ये नदे विषमलोचने ॥ ५६ ॥

( इति पञ्चाक्षराः )

निदाघ ऊष्मणि ग्रीष्मे स्वेदे घर्मस्तु तेषु च ।  
आतपे च दिने चाथ वरुणे यादसांपतिः ॥ ५७ ॥



यादस्पतिश्च तावन्धावप्यथो यक्षगुह्यकौ ।  
घनदेऽप्यथ वृद्धेऽद्रौ शिखर्यगनगागमाः ॥ ५८ ॥

भ्रमरेष्टालिप्रियाद्या आग्ने जम्बूकनीपयोः ।  
वतंसोत्तंसावतंसाः कर्णपूरेऽपि शेखरे ॥ ५९ ॥

अंशौ च केतुसूक्ष्माग्रा अप्यद्रौ शृङ्गिभैरवौ ।

( इति विषमाक्षराः )

आकाशे दिवसे च द्युर्विः पक्षिपरमात्मनोः ॥ ६० ॥  
पुमांसौ पुरुषात्मानौ मासौ मासनिशाकरौ ॥ ६०३ ॥

( इत्येकाक्षराः )

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां  
शेषकाण्डे पुंलिङ्गाध्यायः ॥ १ ॥



## स्त्रीलिङ्गाध्यायः ॥ २ ॥

अर्चनायामपचितिः प्रक्षये निष्कृतौ व्यये ।  
 अजमोदा शाल्मलेश्च निर्यासेऽथ गदद्रुहि ॥ १ ॥  
 घाट्यां पाल्यां चाक्कपालिरभिशस्तिस्तु दूषणे ।  
 प्रार्थने चान्तशय्या तु भूमिशय्याश्मशानयोः ॥ २ ॥  
 अनर्थवाचीतिकथा स्यादश्रद्धेयवाचि च ।  
 रहस्यार्थे तूपनिषद्धर्मवेदान्तयोरपि ॥ ३ ॥  
 उपलब्धिस्तु शेमुष्यां प्राप्तिविज्ञानयोरपि ।  
 ऋश्यप्रोक्ता शतावर्या कण्डूरातिबलर्धिषु ॥ ४ ॥  
 फलिनी स्याद् गण्डफली कलिका चम्पकस्य च ।  
 वाद्यभेदे घर्घरिका वाद्यानां लगुडेऽपि च ॥ ५ ॥  
 श्रीवेष्टे तैलपर्णी स्याद् धवलेऽपि च चन्दने ।  
 दाक्षायणी भवान्यां भुव्यश्विन्याद्युडुषु श्रियाम् ॥ ६ ॥  
 गौरीदिशोर्दक्षकन्या प्रतिपत्तिस्तु गौरवे ।  
 प्रत्याप्तिप्रतिभाज्ञानेष्वथ नीलीविशल्ययोः ॥ ७ ॥  
 मधुपर्णीत्यथ द्राक्षादूर्वे मधुरसेत्युभे ।  
 चुच्छन्दर्या राजपुत्री राजकन्या पिचिण्डके ॥ ८ ॥  
 वैजयन्ती पताकायां जयन्त्यां केशवस्रजि ।  
 गुह्यायूध्यौ शिखण्डिन्यौ द्राक्षा स्वादुरसा सुरा ॥ ९ ॥  
 समुद्रान्ता यवापे च कार्पासीस्पृक्षयोरपि ।  
 गौर्यामपि सिनीवाली मदिरापि हरिप्रिया ॥ १० ॥  
 गङ्गा पथ्या हैमवती गौरी शुक्लवचापि च ।

( इति चतुरक्षराः )

गोरक्षजम्बूगोधूमधान्ये गोरक्षतण्डुले ॥ ११ ॥  
 चिलिमीलिकातसी स्यात् खद्योते कण्डभूषणे चापि ।  
 योजनगन्धा सीता कस्तूरी व्यासमाता च ॥ १२ ॥  
 वृषाकपायी श्रीगौर्योः शोफल्यां प्रावृषायणी ।  
 हरिद्रायां वरायां च रामायां वरवर्णिनी ॥ १३ ॥

( इति पञ्चाक्षराः )

व्यथने सूचना सूचा दर्शनेऽभिनयेऽपि च ।  
 पार्वत्यामपि मातङ्गी रौद्रयुगा कौशिकीति च ॥ १४ ॥

माषपण्या कृष्णवृन्ता सिंहपुच्छी महासहा ।  
 रात्रावप्यर्जुनी सौम्या शिखा चूडा शिरस्यपि ॥ १५ ॥  
 ( इति विषमाक्षराः )

भूः क्षितौ स्थानमात्रे च वन्निकायोषितोः स्त्रियौ ।  
 उपायद्वारयोर्द्धाः स्यात् पूः स्यान्नगरदेहयोः ॥ १६ ॥  
 धूः स्याद्यानमुखे भारे नौस्तु काले तरावपि ।  
 ज्या पृथिव्यां च मौर्व्या च स्वर्व्योर्न्योर्द्योर्दिवावुभौ ॥ १७ ॥  
 ऋशब्दः स्याद्दिव्यदितौ त्विद् ज्वालाकान्तिदीप्तिषु ।  
 उत्साहेऽन्नरसेऽप्यूर्क् स्यात् झुक् झुवे शोपणे गतौ ॥ १८ ॥  
 लक्ष्मीरिव लवङ्गे श्रीः पद्मायां कान्तिसम्पदोः ।  
 रुग्ज्वालाकान्तिवाञ्छासु वृट् तु लिप्सापिपासयोः ॥ १९ ॥  
 यथा तृष्णा यथा तर्षस्त्वगन्धद्रव्यवत्कयोः ॥ १९ ॥  
 ( इत्येकाक्षराः )

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां दैजयन्त्यां  
 शेषकाण्डे छीलिङ्गाध्यायः ॥ २ ॥



## नपुंसकलिङ्गाध्यायः ॥ ३ ॥

आत्याहितं महाभीत्यां प्राणानाकाङ्क्षिकर्मणि ।  
 अपादानं कर्मणि स्यादतिवृत्तेऽवखण्डने ॥ १ ॥  
 आभ्याधानमभिन्यासे वह्नयर्थं चेधमसङ्ग्रहे ।  
 अन्वाहार्यममावास्याश्राद्धमिष्टेश्च दक्षिणा ॥ २ ॥  
 समूहे स्यादाकलनं कलनज्ञानयोरपि ।  
 आच्छादनं संविधाने स्यादावरणवाससोः ॥ ३ ॥  
 आतश्चनं प्रतीवापे जपाप्यायनयोरपि ।  
 आराधने तोषणाप्ती घात आयोधनं रणे ॥ ४ ॥  
 जन्मोद्गमामुत्पत्तने रहोऽन्तिकमुपह्वरे ।  
 उद्भासने वधोद्भासावप्युत्सादनमुन्नतौ ॥ ५ ॥  
 स्यादुद्धरणमुद्धान्तभक्तेऽप्युत्पाटनेऽपि च ।  
 तिन्त्रिडीकं तु वृक्षाम्ले चिञ्चायामम्लवेतसे ॥ ६ ॥  
 त्रिवर्णकं त्रिगन्धे स्यात् त्रिफलायां कटुत्रये ।  
 निर्यातनं प्रतीकारे दाने न्यासघनार्पणे ॥ ७ ॥  
 निर्भर्त्सनमलक्तेऽपि मोक्षे निःश्रेयसं शुभे ।  
 शस्त्रे युद्धे प्रहरणं कार्ये हेतौ प्रयोजनम् ॥ ८ ॥  
 प्रतिदानं परीवर्ते न्यासद्रव्यस्य चार्पणे ।  
 पारायणं कात्स्न्यवचस्यकुशस्य च बन्धने ॥ ९ ॥  
 प्राणिधूतं तु सङ्ग्रामे द्यूते च पशुपक्षिभिः ।  
 शुण्ठ्यामतिविषायां च लशुने च महौषधम् ॥ १० ॥  
 रतर्धिकं सुखे स्नाने दीनमङ्गलयोरपि ।  
 विदारणं तु काष्ठादेद्वैधीकारे विडम्बने ॥ ११ ॥  
 संसारे स्यात् संसरणमसन्बाधचमूगतौ ॥ १२ ॥  
 समापनायां हिंसायां समाप्तौ च समापनम् ।

( इति चतुरक्षराः )

अवतरणं भूतादिग्रहे निवसनाञ्चले ॥ १३ ॥  
 स्यादुपस्पर्शनं स्पर्शे स्नानाचमनयोरपि ।  
 दुग्धाम्ने दुग्धतालीयं स्यात् फेनेऽपि च दुग्धजे ॥ १४ ॥



निन्दोपालम्भ आलापे नियमे परिभाषणम् ।

( इति पञ्चाक्षराः )

पराक्रमे घने द्युम्नं द्रविणं तु ग्रहेऽपि च ॥ १५ ॥

आगः किल्बिषमेनश्च त्रीणि पाप्मापराधयोः ।

शकुनं च निमित्तं च शुभादेः सूचकेऽपि च ॥ १६ ॥

यज्ञोपवीतोपवीते ब्रह्मसूत्रोत्तरीययोः ।

गम्भीरं गहनं रत्नं गह्वरं शरणं वपुः ॥ १७ ॥

स्नेहं सेव्यं महच्छुद्धं धरुणं सर्वतोमुखम् ।

पातालं स्वादु दिव्यं च तानि पञ्चदशास्त्वपि ॥ १८ ॥

( इति विषमाक्षराः )

स्वमिन्द्रिये दिवि व्योम्नि रन्ध्रनक्षत्रयोरपि ॥ १८३ ॥

( इत्येकाक्षरः )

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

शेषकाण्डे नपुंसकलिङ्गाध्यायः ॥ ३ ॥



## अभिधेयवल्लिङ्गाध्यायः ॥ ४ ॥

( अर्थवल्लिङ्गाध्यायः )

अभिजातः कुलीने च न्याय्यपण्डितयोरपि ।  
अभिनीतः सुयुक्ते स्यादमर्षवति संस्कृते ॥ १ ॥  
अभिपन्ना विपन्नाप्तप्रस्तात्तद्रुतदक्षिणाः ।  
अधिक्षिप्तं प्रणिहिते प्रेषिते भत्सितेऽपि च ॥ २ ॥  
निश्चिते स्यादवसितं समाप्त उषितेऽपि च ।  
अवदातः सिते गौरे शुद्धे चाथावलम्बिते ॥ ३ ॥  
अविदूरेऽप्यवष्टब्धमसम्पृक्तो रहस्यपि ।  
उज्झिते धिक्कृतेऽपि स्यादवध्वस्तोऽवचूर्णिते ॥ ४ ॥  
स्यादभ्यारूढमारूढे सातिरेके च सम्पदा ।  
उत्कीर्णे स्यादुल्लिखितमनुषक्ते तनूकृते ॥ ५ ॥  
उद्ग्राहितमुपन्यस्ते बद्धग्राहितयोरपि ।  
कौक्कुटिको दाम्भिके स्याद् यश्चादूरेरितेक्षणः ॥ ६ ॥  
दशमीस्थस्तु स्थविरे नष्टबीजे मृताशने ।  
परिप्राप्ते परिगतं प्रज्ञाते परिवेष्टिते ॥ ७ ॥  
प्रतिशिष्टप्रतिक्षिप्तावाहूय प्रेषितास्तयोः ।  
विशिष्टे स्यात् प्रतिहतं प्रतिस्खलितवस्तुनि ॥ ८ ॥  
समाहिते प्रणिहितं न्यस्ताभिप्राप्तयोरपि ।  
पुरस्कृतः पूजिते द्विडभियुक्तेऽग्रतः कृते ॥ ९ ॥  
पौरुषेयं वधे पुंसो बृन्दे कार्यविकारयोः ।  
ब्रह्मबन्धुरधिक्षेत्रे निर्देश्ये ब्राह्मणाधमे ॥ १० ॥  
यातयामं यातयामे जीर्णे भुक्तोज्झितेऽपि च ।  
लालाटिकः प्रमोश्छन्ददर्शी कार्याक्षमश्च यः ॥ ११ ॥  
विशारदो बुधे धृष्टे वञ्चिते तु विलम्बितम् ।  
मन्दे चाथ समुन्नद्धौ पण्डितम्मन्यगर्वितौ ॥ १२ ॥

( इति चतुरक्षराः )

कथाप्रसङ्गस्तु विषवैद्ये वाताधिकेऽपि च ।

( इति पञ्चाक्षरः )

प्रहृष्टो हृषितो हृष्टः प्रहर्षवति विस्मिते ॥ १३ ॥

सरोमाञ्चे प्रतिहृतेऽप्यथ सप्रभदग्धयोः ।

स्युः प्रदीप्तप्रज्वलितदीप्ता ज्वलित इत्यपि ॥ १४ ॥

कुत्सिते वाच्यवक्तव्यौ वदितव्यविहीनयोः ।

प्राप्तरूपोऽभिरूपश्च पण्डिते रूपवत्यपि ॥ १५ ॥

( इति विषमाक्षराः )

सन् सत्येऽभ्यर्हिते श्रेष्ठे साधीयसि भवत्यपि ।

किं प्रश्नात्तेपकुत्सानां वितर्कस्य च गोचरे ॥ १६ ॥

( इत्येकाक्षरौ )

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

शेषकाण्डे अभिधेयवह्निशाखायाः ॥ ४ ॥



## नानालिङ्गाध्यायः ॥ ५ ॥

सुखाब्ध्यर्का अन्यथिषा अन्यथिष्यौ निशाक्षिती ।  
 अवगीतं मुहुर्दृष्टे निर्वोदे गर्हितेऽपि च ॥ १ ॥  
 पुमानधिपतिर्मूर्ध्ना आवर्तेऽधीश्वरे त्रिषु ।  
 काञ्चने शारिफलके स्यादष्टापदमस्त्रियाम् ॥ २ ॥  
 अम्बरीषं रणे वर्षे तृणे नार्ककिशोरयोः ।  
 आत्मनीनः सुते स्याले प्राणधारिणि दूषके ॥ ३ ॥  
 आढम्बरोऽस्त्री संरम्भे पटहे गजगर्जिते ।  
 उदुम्बरो दुदेहल्योर्ना स्त्री हेमाक्षताम्रयोः ॥ ४ ॥  
 वचाजमोदयोरुग्रगन्धा ना लशुने सिते ।  
 कलधौतं रूप्यहेम्नोः षण्डस्त्री तु कलध्वनौ ॥ ५ ॥  
 कर्णपूरो वतसे ना स्त्री सौगन्धिक उत्पले ।  
 काण्डपृष्ठः क्रीतसुते दत्ते शूद्रासुताम्भसोः ॥ ६ ॥  
 शास्त्राजीवे च यश्चान्यकुलं याति स्वकं विना ।  
 नासा गन्धवहा गन्धवहो मृगनभस्वतोः ॥ ७ ॥  
 जलेशयो जलकपौ मत्स्ये पद्मं जलेशयम् ।  
 जीवितेशः प्रेतनाथे दयिते द्रविणागमे ॥ ८ ॥  
 जैवातृकश्चन्द्रभिषगायुष्मत्सु कृषीवले ।  
 अम्ललोण्यां दन्तशठा त्रिष्वम्लेऽम्लगुणे तु ना ॥ ९ ॥  
 दुरोदरे नपुं द्यूते पणे द्यूतकरे तु ना ।  
 नारायणी शतावर्या लक्ष्म्यां गौर्या च ना हरौ ॥ १० ॥  
 निश्चारको निर्गमके पुरीषोत्सर्गिमारुते ।  
 निषद्वरी निशा कामकर्दमौ तु निषद्वरौ ॥ ११ ॥  
 निरूपणा नपुं स्त्री च निरीक्षणविचारयोः ।  
 निशाचर्यसती फेरु रक्षःसर्पौ निशाचरौ ॥ १२ ॥  
 यूथभ्रष्टे पक्षचरः स्यादेकचरपक्षिणोः ।  
 परायणमभिप्रेते तत्परे परमाश्रये ॥ १३ ॥  
 प्रतिष्कशः पुमान् द्यते त्रिष्वग्रसहाययोः ।  
 अस्त्री प्रतिसरो हस्तसूत्रे ना तु चमूकटौ ॥ १४ ॥



आरत्ने व्रणशुद्धौ च नियोज्ये त्वभिधेयवत् ।  
 पारावतः खगातस्योरीषत्पाण्डौ च पारदे ॥ १५ ॥  
 नीचे ग्रीहाविन्द्रनीले प्राणनाथो यमे प्रिये ।  
 पुण्डरीकं सितच्छत्रे कुण्ठभेदे सिताम्बुजे ॥ १६ ॥  
 ना त्वाम्रे दिग्गजे व्याघ्रे राजिलाहौ गजे ज्वरे ।  
 दीप्त्यां प्रद्योतनं नार्के घोरे प्रतिभयं भये ॥ १७ ॥  
 नकुले मूषिकेऽहौ ना गोघायां स्त्री बिलेशयः ।  
 वृन्दारकः पुमान् देवे श्रेष्ठसुन्दरयोस्त्रिषु ॥ १८ ॥  
 भागधेयं नपुं भाग्ये दायादे ना करे न षण् ।  
 मस्तुलुङ्गः शिरःस्नेहे न स्त्री क्ली दधिमण्डके ॥ १९ ॥  
 श्रोतौ चारौ धौतिदेशे मार्जालीयोऽङ्गशोधने ।  
 महावीरो यज्ञपात्रे गरुडे सुमटे खगे ॥ २० ॥  
 वज्रेऽश्वे तनये हंसे शूरेऽग्नौ अवरे हरौ ।  
 राजादनं प्रियाले ना क्षीरिकायां पलाशके ॥ २१ ॥  
 चारवाणं तु कूर्पासे कवचेऽपि च न स्त्रियाम् ।  
 विश्वम्भरा धरित्री स्यादमौ विश्वम्भरो हरौ ॥ २२ ॥  
 विश्वावसुस्तु गन्धर्वभेदे ना स्त्री पुनर्निशि ।  
 वेणौ ना दूर्वावचयोः स्त्री बिले शतपर्व षण् ॥ २३ ॥  
 शिपिविष्टस्तु खलतौ दुश्चर्मणि महेश्वरे ।  
 पलमाने षोडशिका न ना न स्त्री पलद्वये ॥ २४ ॥  
 सनातनो हृषीकेशे चतुर्वक्त्रे सदातने ।

( इति चतुरश्वराः )

आशितम्भवमन्नादि वृष्टिः स्यादाशितम्भवः ॥ २५ ॥  
 पर्याप्तावुपसम्पन्नं मृते प्राप्ते सुसंस्कृते ।  
 नक्षत्रनेमी रेवत्यां स्त्री ना विष्णौ हिमद्युतौ ॥ २६ ॥  
 मूर्धाभिषिक्तो ना रात्रि क्षत्रिये चार्थवत् प्रभौ ।  
 हरिचन्दनमस्त्री स्वाश्वन्दने देवपादपे ॥ २७ ॥

( इति पञ्चाश्वराः )

श्रेष्ठे वृषाङ्गे राजाङ्गे ककुदोऽस्त्री ककुम्भ षण् ।  
 तपस्वी शिशिरे शोच्ये चन्द्रे मांसी तपस्विनी ॥ २८ ॥  
 द्वीपवत्यौ घरानद्यौ द्वीपवानम्बुधौ नदे ।  
 धर्मे वाद्ये प्रसूत्वा ना प्रतिपत्तिः प्रसूत्वरी ॥ २९ ॥

पद्मी गजे पद्मिनी तु नलिन्यां हस्तिनीश्रियोः ।  
 ब्रह्मचारी व्रती स्कन्दो दुर्गा तु ब्रह्मचारिणी ॥ ३० ॥  
 भगवत्युमा भगवान् बुद्धे पूज्ये हरे हरौ ।  
 भोगी ग्रामाद्यधिकृते सर्पे सुखिमहीभुजोः ॥ ३१ ॥  
 विहाय महिषीमेकां भोगिन्योऽन्या नृपस्त्रियः ।  
 श्रेयोऽत्यन्तं प्रशस्ते स्यात् कल्याणे धर्ममोक्षयोः ॥ ३२ ॥  
 श्रेयसी हस्तिपिप्पल्यामभयाराक्षयोरपि ।  
 सरस्वती सरिद्वेदे सरिन्मात्रे गवि क्षितौ ॥ ३३ ॥  
 मत्स्याद्यां वाचि गङ्गायां सरस्वानम्बुधौ नदे ।

( इति विषमसङ्ख्याः )

विभूतिर्भूतिरैश्वर्यमणिमादिकसम्पदोः ॥ ३४ ॥  
 ईशेश्वरौ प्रभौ रुद्रे पार्वत्यामीश्वरेश्वरी ।  
 स्वभावे स्यान्निसर्गश्च सृष्टिश्चोत्पादनेऽपि च ॥ ३५ ॥  
 गेहे कुलायो नीलोऽस्त्री रेतस्यपि रजो मदः ।

( इति विषमाक्षराः )

काश्चित्तात्मार्कधीघातृवाता मूर्ध्नि सुखेऽप्सु कम् ॥ ३६ ॥  
 द्युपन्धिष्वंशुवज्राम्बुभूवाग्दिग्दक्षु गौर्न षण् ।  
 दृक् स्त्री स्यादर्शने बुद्धौ नेत्रे द्रष्टरि तु त्रिषु ॥ ३७ ॥  
 स्वोऽस्त्री घने त्रिषु स्वीय आत्मनि स्वजने तु ना ।  
 गूर्गुदे स्त्री प्रयत्ने ना रा न स्त्री धनरुक्मयोः ॥ ३८ ॥  
 आत्मनि ज्ञातरि ज्ञः स्यान्ना विड् वैश्ये जने न षण् ।  
 तेशब्दः क्रीडने स्त्री स्यात् क्रीडके त्वभिधेयवत् ॥ ३९ ॥  
 सेशब्दः सेवने स्त्री स्यात् सेवके त्वभिधेयवत् ॥ ३९ ॥

( इत्येकाक्षराः )

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां  
 शेषकाण्डे नानालिङ्गाध्यायः ॥ ५ ॥

## पर्यायसंयोगन्यायप्रदर्शनाध्यायः ॥ ६ ॥

घातुः सर्वेऽपि पर्याया रुद्राक्षे स्युश्चतुर्मुखे ।  
 तस्मिन् पञ्चमुखे शम्भोः कुमारस्य तु षण्मुखे ॥ १ ॥  
 गुग्गुलुल्लङ्घककुटजेष्विन्द्रस्याग्नैश्च चित्रके ।  
 भज्जातकेऽप्यथार्कस्य भज्जातक्यर्कपर्णयोः ॥ २ ॥  
 कर्पूरकम्पिप्लवकयोरिन्दोर्वज्रस्य हीरके ।  
 गौर्यैस्त्वत्तस्यां कौबेरा वन्दाके क्षीरवृक्षजे ॥ ३ ॥  
 खस्याभ्रके ब्रह्मणि च मेघस्याभ्रकमुस्तयोः ।  
 भुवो नामानि सौराष्ट्राणां शैलेये प्रावशैलयोः ॥ ४ ॥  
 शर्वर्यास्तु हरिद्रायां प्रियङ्गुव्रततौ स्त्रियाः ।  
 ध्वजधूममृगेन्द्राणां श्वेक्षरासमहस्तिनाम् ॥ ५ ॥  
 वायसस्य पर्यायाः क्रमात् पूर्वादिवेशसु ।  
 हंसेन्दुकुमुदां रूप्ये कुमुदेऽपि खरस्य षण् ॥ ६ ॥  
 स्योनाके तु सृगालस्य वानरस्य तु सिंहके ।  
 स्पृक्कायां तस्करस्य स्युरुशीरे समरस्य हि ॥ ७ ॥  
 वाट्यालकेऽस्य सान्नस्य शोणितस्य तु कुङ्कुमे ।  
 कुष्ठाख्यभेषजे व्याघेर्मातुर्गौर्यां हृषद्गवोः ॥ ८ ॥  
 पिण्डारे त्वबटोः पाणेऽप्युधस्य त्वयस्यपि ।  
 अपरावे तु रन्ध्रस्य बदरस्य तु नागरे ॥ ९ ॥  
 रुक्मस्यास्त्रनभेदे क्लीं पुलिङ्गा नागकेसरे ।  
 उन्मत्तेऽपि च बिन्दोस्तु सिध्मादौ देहवैकृते ॥ १० ॥  
 रूप्यस्यास्त्रनभेदे स्युरटव्यां जलमुस्तके ।  
 षण्डाः केशस्य बर्हिष्ठे शिरसः शिखरे तरोः ॥ ११ ॥  
 माक्षिके क्लीं स्त्रियो लक्ष्म्यां नरः पद्मस्य सारसे ।  
 त्वचो लवङ्गे पर्णस्य पक्षे ह्रीं किंशुके नरः ॥ १२ ॥  
 गणस्याब्धेऽपि सङ्ख्यायां बर्हिष्ठे मुस्तकेऽप्यपाम् ।  
 मकराम्बुजकूर्माणां निधिभेदेषु ते नरः ॥ १३ ॥  
 सङ्ख्याभेदेऽपि शङ्खस्य मीनमेषविषाणिनाम् ।  
 मिथुनस्य कुलीरस्य सिंहकन्यातुलालिनाम् ॥ १४ ॥

धनुर्मकरकुम्भानां क्रमाद् द्वादशराशिषु ।  
 सर्पस्य सीसके नागकेसरे द्विपसर्पयोः ॥ १५ ॥  
 अगस्त्ययसो गुन्द्रे शरस्य मकरे त्वसेः ।  
 शुभस्य फेनिले पुंसि कार्पासे वाससो नरः ॥ १६ ॥  
 धूल्यश्वयोरश्वकन्दे पर्पटे मरिचेऽयसः ।  
 इत्यादीन्यन्यनामानि बोद्धव्यान्यन्यवस्तुषु ॥ १७ ॥  
 वृक्षस्य गृहनामान्ता नरः पक्षिमयूरयोः ।  
 वीरात् परास्ते भङ्गाते ततः शक्राच्च तेऽर्जुने ॥ १८ ॥  
 पलाशे ब्रह्मतोऽश्वत्थे श्रीतः कारस्करो विषात् ।  
 मुनेः पलाशसरलस्योनाकेङ्गुचगस्तिषु ॥ १९ ॥  
 नौस्तम्भे गुणतश्चैत्यादश्वत्थोद्देशवृक्षयोः ।  
 व्याघाते राजतो दीपाहीपमालाविधारके ॥ २० ॥  
 नरो भुगन्ताः सर्पस्य राजसर्पमयूरयोः ।  
 तार्क्ष्ये चाथारिनामान्ता नकुले केकितार्क्षयोः ॥ २१ ॥  
 पञ्चपूर्वास्तु षक्त्रस्य व्याघ्रे सिंहे हरे नरः ।  
 कण्ठस्य नीलनामभ्यो ग्रीवायाश्चेशकेकिनोः ॥ २२ ॥  
 नखस्य शस्त्रनामान्ता नरो मार्जारसिंहयोः ।  
 कुचन्दने कुङ्कुमे च रक्तादेश्चन्दनादयः ॥ २३ ॥  
 एवं संयोगनामानि सलिङ्गान्युन्नयेत् स्वयम् ।  
 पूर्वोक्तेष्वपि शब्देषु योगसम्प्राप्तवृत्तयः ॥ २४ ॥  
 स्वयमूहा यथा कन्दः कं ददातीति वारिदः ॥ २४३ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां शेषकाण्डे  
 पर्यायसंयोगन्यायप्रदर्शनाध्यायः ॥ ६ ॥



## अनेकार्थान्वय्याध्यायः ॥ ७ ॥

उक्ता लिङ्गान्विताः शब्दा निर्लिङ्गान्वययान्यतः ।  
 आङ्गीषदर्थेऽभिविधौ सीम्नि कर्मविशेषणे ॥ १ ॥  
 आ प्रगृह्यः स्मृतौ वाक्य आस्तु सन्तापकोपयोः ।  
 ऐ दुःखभावेने कोपे प्रत्यक्षे सन्निधावपि ॥ २ ॥  
 ओ स्याद् ब्रह्मण्यनुज्ञायां कं सुखेऽऽम्भसि मूर्ध्नि च ।  
 प्रश्ने क्षेपे विलम्बे किं कु पापेऽल्पार्थकुत्सयोः ॥ ३ ॥  
 चान्वाचये समाहारे मिथोयोगे समुच्चये ।  
 तु भेदावधारणयोदुरशोभनदुःखयोः ॥ ४ ॥  
 धिग्भर्त्सने कुत्सने च नि न्यग्भावनिकामयोः ।  
 नाभावान्यविरोधेषु निर्निर्णयनिषेधयोः ॥ ५ ॥  
 प्रश्ने विकल्पे नु स्वित्वा प्रादौ यात्राप्रकृष्टयोः ।  
 वि निषेधे पृथग्भावे वा विकल्पोपमानयोः ॥ ६ ॥  
 समुच्चये च वै पापे वाक्यारम्भप्रसिद्धयोः ।  
 स्मृतौ वृत्ते निषेधे स्म स्वः स्वर्गपरलोकयोः ॥ ७ ॥  
 समभेदे समीचीने सुष्ठुपूजासुखेषु सु ।  
 प्रत्यारम्भे प्रसिद्धौ ह हा विषादश्रुगतिषु ॥ ८ ॥  
 हि स्याद्विशेषणे हेतौ हि हेतावधारणे ।  
 आमन्त्रणे भर्त्सने हुं हूं सम्प्रश्नवितर्कयोः ॥ ९ ॥  
 उ तापेऽव्ययमीशे ना मा निषेधे श्रियां स्त्रियाम् ।  
 अ निषेधे पुमान् विष्णावि विचित्रे स्मरे पुमान् ॥ १० ॥  
 तद्धेतौ त्रिष्वमुष्मिन् स्याद्यद्धेतौ प्रगते त्रिषु ।  
 ह ह्यु तु स्म च वै पादपूरणेऽपि प्रयुज्यते ॥ ११ ॥  
 ( इत्येकाक्षराः )

अमा संहार्ये सामीप्येऽप्यद्धा प्रत्यक्षसत्ययोः ।  
 अयि प्रश्ने सानुनये विनियोगे क्रियास्वह ॥ १२ ॥  
 पीडित्याऽनुमतिष्वस्तु स्यादध्यधिक ईश्वरे ।  
 अलं तु भूषणे शक्तौ पर्याप्तौ विनिवारणे ॥ १३ ॥  
 अपि सम्भाषनाप्रश्नगर्हाशङ्कासमुच्चये ।  
 अथाथोऽनन्तराऽप्यर्थविकल्परम्भमङ्गले ॥ १४ ॥

अति स्यादधिकार्थोक्तौ प्रशंसायामतिक्रमे ।  
 पश्चाद्धेतूनसाम्येषु भागे वीप्साप्रकारयोः ॥ १५ ॥  
 लक्षणेऽप्यनु वीप्सादित्रयेऽप्यभिमुखेऽप्यभि ।  
 अतो निन्दाहेतुचित्रेष्वादा दूरसमीपयोः ॥ १६ ॥  
 इति हेतुप्रकरणप्रकारादिसमाप्तिषु ।  
 विस्तारेऽङ्गीकृतावूरी स्यादुर्युररी यथा ॥ १७ ॥  
 उपाधिकेऽन्तिके हीनेऽप्युत प्रश्नविकल्पयोः ।  
 समुच्चयेऽनुमत्यां चाप्येव साम्येऽवधारणे ॥ १८ ॥  
 पादपूरणकृषायमेवं साम्याभ्यनुज्ञयोः ।  
 कश्चित् प्रश्ने कामवादे वार्तासम्भाव्ययोः किल ॥ १९ ॥  
 निषेधे वागलङ्कारे झीप्सनेऽनुनये खलु ।  
 तूष्णीमर्थे मुखे जोषं तर्हि स्यात् प्रश्न उत्तरे ॥ २० ॥  
 तथा समुच्चये साम्ये परमार्थाभ्यनुज्ञयोः ।  
 तिरोऽन्तर्द्धौ तिरश्चीने दिष्ट्या स्यान्मङ्गलादिषु ॥ २१ ॥  
 तर्कनिश्चितयोर्नूनं नानाऽनेकोभयार्थयोः ।  
 प्रश्नावधारणैतिह्यसमीहानुमते ननु ॥ २२ ॥  
 नाम प्रकाश्यसम्भाव्यक्रोधोपगमकुत्सने ।  
 प्रबन्धे निकटेऽतीते पुराणेऽनागते पुरा ॥ २३ ॥  
 पुनरप्रथमे प्रश्ने व्यावृत्तावधारणे ।  
 प्रतिदाने प्रतिनिधौ तुल्ये मात्राभिमुख्ययोः ॥ २४ ॥  
 भागे प्रकारकथने वीप्सायां लक्षणे प्रति ।  
 भागादिष्वेषु परि च वर्जनेऽप्यपवत् परि ॥ २५ ॥  
 परा निहीनेऽनावृत्तौ बत त्वामन्त्रणेऽदभुते ।  
 तोषे खेदे कृपायाञ्च बाढं त्वनुमते भृशे ॥ २६ ॥  
 मुहुः क्षणेऽनुक्षणे च मिथोऽन्योन्यरहस्ययोः ।  
 यथा सादृश्ययोग्यत्ववीप्सास्वर्थानतिक्रमे ॥ २७ ॥  
 यावत्तावच्च साकल्यमानावध्यवधारणे ।  
 वृथा निष्कारणाविध्योः शश्वद् भूयः सदेति च ॥ २८ ॥  
 सकृत् सदैकवारे च सामि स्यादर्धनिन्दयोः ।  
 स्वस्ति मङ्गलनिष्पापक्षेमेष्वाशीर्वचस्यपि ॥ २९ ॥  
 साक्षात् प्रत्यक्षसदृशोः पृथगर्थेऽन्तिके हिरुक् ।  
 वाक्धारम्भेऽनुकम्पायां हन्त हर्षविषादयोः ॥ ३० ॥  
 ( इति द्व्यक्षराः )

अस्त्रसा त्वरिते तत्त्वेऽप्यहहाद्भुतखेदयोः ।  
 समीपोभयतश्शीघ्रशाकल्याभिमुखेऽभितः ॥ ३१ ॥  
 रहस्येऽर्थ उपांशु स्यादश्रुतोच्चारणेऽपि च ।  
 परितोऽन्तिके सर्वतोऽर्थे पूर्वद्युः प्रत्युषेऽपि च ॥ ३२ ॥  
 पुरस्तात् पूर्वदिश्यन्ने पुराप्रथमयोरपि ।  
 शीघ्रे सपदि सद्योऽर्थे समयाऽन्तिकमध्ययोः ॥ ३३ ॥  
 सद्योऽर्थे सहसा हेतुशून्ये युक्तेऽपि साम्प्रतम् ॥ ३३ ॥

( इति त्र्यक्षराः )

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां नैजयन्त्यां  
 शेषकाण्डे अनेकार्थान्वयाध्यायः ॥ ७ ॥

## अव्ययपर्यायाध्यायः ॥ ८ ॥

शीघ्रार्थे भटिति स्नाग्राक् मङ्गद्वहाय सपद्यपि ।  
 चिरेण चिररात्राय दीर्घकाले चिराच्चिरम् ॥ १ ॥  
 विकल्पे किमुताहोस्वित् किमुताहो किमूत च ।  
 सम्बोधने ननु प्याट् पाट् हे है भो अङ्ग हन्त च ॥ २ ॥  
 वौषड्वोषड्वषड्वौक्षड्वोक्षट् श्रौषड्वषट्कृतौ ।  
 परितः सर्वतो विष्वक् समन्ताच्च समन्ततः ॥ ३ ॥  
 किमुतातीव बलवत् स्वति सुष्ठु च साधिके ।  
 पृथग्विना हिरुङ् नानाऽन्तरेणर्ते च वर्जने ॥ ४ ॥  
 कालेऽस्मिन्नधुनेदानीं सम्प्रत्येतर्हि साम्प्रतम् ।  
 यदा यर्हि तदा तर्हि तदानीं सर्वदा सदा ॥ ५ ॥  
 शश्वत् सनात् सना ज्योक् च युगपत्त्वेकदा सकृत् ।  
 द्विस्त्रिश्चतुष्पञ्चकृत्व इत्याद्यावर्तने कृते ॥ ६ ॥  
 कदाचिषजातु सद्यस्तु तत्क्षणेऽन्यक्षणेऽन्यदा ।  
 दोषा नक्तं च निश्यहि दिवाद्यैतदहर्निशम् ॥ ७ ॥  
 अपरेऽह्यपरेद्युः स्यादेवं पूर्वैतराधरे ।  
 उत्तरेऽन्यान्यतरयोस्तर्क्याः पूर्वैद्युरादयः ॥ ८ ॥  
 उभयेद्युस्तूभयद्युः परे त्वहि परेद्यवि ।  
 ह्यो गतेऽनागते तु श्वः परश्वस्तु ततः परे ॥ ९ ॥  
 सायं साये प्रगे प्रातः काल्ये संवत्तु वत्सरे ।  
 अतीतानन्तरे वर्षे परारि परुदेषमः ॥ १० ॥  
 अतीते वर्तमाने च स्यादन्ते रजनेरुषा ।  
 सुहुः पुनःपुनः शश्वत् पुरस्तु पुरतोऽग्रतः ॥ ११ ॥  
 सङ्कोचे चिञ्चन व्यर्थे मुधा शश्वत्तु शाश्वते ।  
 किञ्चनेषन्मनाक् किञ्चिद् विकल्पेऽवश्यं तु निश्चिते ॥ १२ ॥  
 निष्पमं दुष्पमं दुष्ठु गर्ह्ये सुष्ठु सु शोभने ।  
 मिथ्या मृषा च वितथे यथार्थं तु यथातथम् ॥ १३ ॥  
 मतप्रदाने यदि चेद् यथास्वं तु यथायथम् ।  
 युक्ते स्थाने रुषोक्तावूम् बहिर्बाह्ये नमो नतौ ॥ १४ ॥



मौने तु तूष्णीं तूष्णीकां समया निकषा हिरुक् ।  
 सान्ये व वैवमेवेव प्रेत्यामुत्र भवान्तरे ॥ १५ ॥  
 प्राध्वं स्यादानुकूल्यार्थमशीघ्रे शनकैः शनैः ।  
 अहो ही विस्मये प्रायो भूमन्यस्तमदर्शने ॥ १६ ॥  
 समकं तु सज्जुः साकं सार्धं सत्रा समं सह ।  
 सुखे दिष्ट्योपजोषं शमेवमां परमं मते ॥ १७ ॥  
 हठे प्रसह्य मध्ये स्यादन्तरेणान्तरेऽन्तरा ।  
 प्रादुराविः प्रकाशेऽर्वागवरे स्वयमात्मनि ॥ १८ ॥  
 उपरिष्ठादुपयूष्वे स्यादधस्तादवागधः ।  
 तिरस्त्रि साच्युच्च च्चच्चैर्नीचैर्नीच्युच्चकैर्भुशे ॥ १९ ॥  
 प्रकारेऽन्यथेतरथा कथमित्थं यथा तथा ।  
 द्विधा द्वेषा त्रिधा त्रेधा चतुर्धा द्वैधमादि च ॥ २० ॥  
 अर्थे यत्रादि सप्तम्याः पञ्चम्या यत आदिकम् ।  
 इतिह स्यात् सम्प्रदाये पारेऽपारे दृशौ पशु ॥ २१ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां  
 शेषकाण्डे अनेकार्थाव्ययाध्यायः ॥ ८ ॥

## लिङ्गसङ्ग्रहाध्यायः ॥ ९ ॥

नाम्नां पूर्वमिहोक्तानामनुक्तानां च कृत्स्नशः ।  
 सामान्यैर्लक्षणैः कैश्चित् क्रियते लिङ्गसङ्ग्रहः ॥ १ ॥  
 अवाधिते विशेषोक्त्या भवेत् सामान्यलक्षणम् ।  
 एकस्वरं हलादीदृद् दृङ् मा श्रीभूरिति स्त्रियाम् ॥ २ ॥  
 इच्च सर्वमुदन्तेषु पाकुरज्ज्वादि किञ्चन ।  
 नदीनामाह्वयाः सर्वे प्रायेण च लताह्वयाः ॥ ३ ॥  
 णचोऽन्वि व्यवहार्याद्या अङ्ङन्तास्तु पचादयः ।  
 अप्रत्यये जुगुप्साद्या युजन्ता भावनादयः ॥ ४ ॥  
 क्तिन्नन्तास्ततिगत्याद्याः क्तिन्नन्ताः सम्पदादयः ।  
 इन्वि स्युः कारिबोध्याद्या ण्वुलि प्रच्छर्दिकाऽऽदयः ॥ ५ ॥  
 क्रीडाप्रहरणे णान्ताः पाल्लवाद्या घञस्तु वे ।  
 क्रियायां दाण्डपाताद्यास्तल्ल्याबूङ्क्ष्यन्धतादयः ॥ ६ ॥  
 अके वैरादिवीप्सादौ स्युः काकोल्लुक्किदादयः ।  
 क्यपि तु ब्रह्महत्याद्या दल्याद्यल्पत्वकीर्तने ॥ ७ ॥  
 त्रिलोकीत्यादयोऽदन्तैः समाहरार्थकद्विगौ ।  
 त्रिपात्रत्रियुगाद्याः षण्णभवन्यादयस्त्वनौ ॥ ८ ॥

( इति स्त्रीलिङ्गाः )

अदन्ताः पुंस्युपान्ताश्चेत् कणौ भरमटास्तथौ ।  
 षसौ च सान्ता ये च स्युरुदन्ताः प्रायशो नरः ॥ ९ ॥  
 इदन्नेष्वरतिर्वर्म्मिर्वर्णित्वोर्हिर्ग्रहिः प्रहिः ।  
 स्तम्भिः कपिः सनीरालिरर्दनिर्वमतिर्नरः ॥ १० ॥  
 अङ्क्ष्याबन्ताश्च वृक्षार्थाः प्रायो रोहित्तरत्तथा ।  
 शैलानामह्वयाः सर्वे गोत्राख्याश्चरणाह्वयाः ॥ ११ ॥  
 कन्यन्ता राजतक्षाद्या ऋदोरपि करादयः ।  
 इकस्तिपोः शासिशास्त्याद्याः स्युरेरचि जयादयः ॥ १२ ॥  
 अवश्यायादयो णान्ता घान्ता दन्तच्छदादयः ।  
 प्रध्याद्याः प्रादितो घोः कौ स्युर्वमध्वादयोऽधुचि ॥ १३ ॥  
 प्रशनाद्या नङ् पाकाद्या घञ् ल्यौ नन्दनादयः ।  
 प्रथिमाद्या इमनिचि कुणप्पीलुकुणादयः ॥ १४ ॥

( इति पुल्लिङ्गाः )

त्रान्तद्वयच्चासिसुस्नान्तं लोपधं युक्तयोपधम् ।  
 अम्बुपुष्पाणि च क्लीवे रेचकं त्वभयाफले ॥ १५ ॥  
 ब्रह्मोद्याद्या भावकृत्यः शब्दोऽणि त्रिष्टुभादयः ।  
 स्मिताद्या भावनिष्ठान्ताः कर्णजाहादि जाहचि ॥ १६ ॥  
 समूहकर्मभावार्थतद्धिते वार्धकादयः ।  
 साराविणोपमानदि नोपान्तं भावसंज्ञयोः ॥ १७ ॥  
 एकद्वन्द्वाव्ययीभावाः स्युरितोऽकर्मधारये ।  
 अनवत्पुरुषे शब्दाः कन्थोशीनरनामसु ॥ १८ ॥  
 यथा सौशमिकन्थं स्याद् बाहुल्ये तु समासभाक् ।  
 छाया यथा खगच्छायं नृपामर्त्यार्थकात् परा ॥ १९ ॥  
 अराजतः सभा भूयत्सभं रक्षःसभं यथा ।  
 न काष्ठादेरशालार्था सैव दासीसभं यथा ॥ २० ॥  
 उपज्ञोपक्रमान्तं च तदादित्वे विवक्षिते ।  
 पाणिन्युपज्ञमित्यादि पथस्सङ्ख्याऽव्ययात् परः ॥ २१ ॥  
 शशादूर्णा गृहात् स्थूणा क्रियाऽव्ययगुणानुगम् ।  
 एकत्वञ्चास्य पुण्यात्तु सुदिनादप्यहः परः ॥ २२ ॥  
 कुटिलं गच्छतीत्यादि क्रियाणां तु विशेषणम् ।  
 नपुंसकं तु भद्रं स्वरित्यव्ययविशेषणम् ॥ २३ ॥

( इति नपुंसकलिङ्गाः )

स्त्रीप्राण्यर्थाः स्त्रियां पुंसि पुंप्राण्यर्था विना त्विङ् ।  
 स्त्रीत्वेनोक्तैस्तथाऽपत्येऽणादि च्चुञ्जादि शिल्पिनि ॥ २४ ॥  
 कचिद्भ्रश्मिमयूखांशुघृणिघृष्टिगभस्तयः ।  
 सृपाटी त्रिसरा सूर्मिः सुषुम्ना यष्टिरिङ्गुदी ॥ २५ ॥  
 कलम्बी शङ्ककी मल्ली वरटा जाटलिः कुटी ।  
 शाटी रेणुहरेणूरुजल्लकाकोलिधूलयः ॥ २६ ॥  
 उत्कण्ठा कङ्कती कन्दूवितस्ती रथिरञ्जलिः ।  
 कूपस्य च त्रिका व्रीडा प्रेङ्खोलिः फलकी कटी ॥ २७ ॥

( इति स्त्रीपुंसलिङ्गाः )

अर्धर्चादिगणे प्रोक्तं सर्वं नृस्त्रीबलिङ्गकम् ।  
 तत्र लिङ्गान्तरेऽनुक्तं सर्वमुक्तं घृतादि च ॥ २८ ॥

तत्र केचिद् घृतादीनां पुंस्त्वाद्यं वैदिकं विदुः ।  
 अत एकेन लिङ्गेन ते पूर्वमिह वर्णिताः ॥ २६ ॥  
 पिशाचादिषु भूतोऽस्त्री शङ्कुरप्राणिगोचरः ।  
 विशेषकञ्च तिलकं पुण्ड्रे ब्रह्मा द्विजेऽब्जजे ॥ ३० ॥  
 द्वेडाश्च कन्दलाः कालकूटाद्याः स्युः कमण्डलुः ।  
 सक्तः परीतन्महिमा कर्म पर्व च लोम दोः ॥ ३१ ॥

( इति नृषण्डाः )

अपुंसि चालनी दाम वणिज्याऽशसन्तिका स्थली ।  
 शरव्यार्चिर्चर्गुडा पत्री स्यात् कुथे वर्णतणिका ॥ ३२ ॥  
 सगरी नटने कृत्या त्वभिचारजदैवते ।  
 मद्ये मधूलकं चेति क्षाप्यथाकर्मधारये ॥ ३३ ॥  
 अनन्तत्पुरुषे सेनाच्छाया शाला निशा सुरा ।  
 नृसेनं पादपच्छायं गोशालं श्वनिशं यथा ॥ ३४ ॥  
 नृसेनेत्यादयोऽप्येवं कुत्रचिद्भावकर्मणोः ।  
 साहायकं साहायिका मैथ्र्यं मैत्री च वृक्ष्यव्योः ॥ ३५ ॥  
 द्विगुरन्तन्त आबन्तोऽप्येवं नश्चात्र लुप्यते ।  
 यथा त्रितक्षं त्रितक्षी क्षिखट्वं च त्रिट्व्यपि ॥ ३६ ॥

( इति स्त्रीषण्डाः )

त्रिलिङ्गथां तु कचिच्छुङ्गा कलशी कन्दरी दरी ।  
 पेटी पुटी पटी वाटी कवाटी पिटका वटी ॥ ३७ ॥  
 अर्गला दाडिमी पात्री विडङ्गा कुवली तटी ।  
 मृणाली कन्दली नाली मुस्ता जृम्भा हरीतकी ॥ ३८ ॥  
 त्रिजातकी गन्धिघना मठी स्थाने तपस्विनाम् ।

( इति त्रिलिङ्गाः )

गुणद्रव्यक्रियायुक्तं बुवन्तो वाच्यलिङ्गकाः ॥ ३९ ॥  
 येनार्थः प्रस्तुतो नाम्ना तल्लिङ्गं वाच्यलिङ्गकम् ।  
 न त्रिषु स्युर्विशिष्टार्थस्पर्शिनः पङ्कजादयः ॥ ४० ॥  
 भेदनिष्ठत्वमेकार्थवृत्तिमात्रैककारणम् ।  
 अतन्त्रीकृत्य भेदोक्तिः कैश्चिदाभीयते पुनः ॥ ४१ ॥



ते स्युरर्थसमा यद्वत् सत्त्वाद्या वाक्यगोचराः ।  
 मच्चर्चिका मतझिका प्रकटण्डमुद्धतझजौ ॥ ४२ ॥  
 अमीषु नार्थलिङ्गता प्रशस्तवाचकेष्वपि ।  
 योनिस्सम्बन्धवाचिन्यः पुत्राद्याः पुंगिरो नरि ॥ ४३ ॥  
 मात्राद्याः स्त्रीगिरः स्त्रीत्वे विद्यासम्बन्धगोचराः ।  
 आचार्यैर्विगुपाध्यायशिष्या याज्यार्थिकास्तथा ॥ ४४ ॥  
 शास्त्रार्था वैदिकार्थाश्च स्थपतिश्रोत्रियादयः ।  
 अधिकारकृता मन्त्रिस्थापत्याद्यभिधास्तथा ॥ ४५ ॥  
 भट्टारको भट्टारको भट्टस्तत्रभवान् भवान् ।  
 भगवान् पूज्यपादश्च देवाश्चार्चार्थिकास्तथा ॥ ४६ ॥  
 शत्रुमित्रज्ञशिल्प्यर्थाः प्रायस्तद्वज्र तु त्रिषु ।  
 वाच्यवत् स्याद् बहुव्रीहिर्दिङ्नामसु तु स स्त्रियाम् ॥ ४७ ॥  
 कृतः कर्तर्यसंज्ञायां कृत्याद्या ल्युट् च कारके ।  
 सर्वनामान्यणाद्याश्च तद्धिताः संज्ञया विना ॥ ४८ ॥  
 तद्धिताः चतुर्थ्या ये सङ्केतात् कृतकाङ्क्षयाः ।  
 षट्संज्ञा युष्मदस्मच्च त्रिषु लिङ्गेष्वभेदवत् ॥ ४९ ॥

( इत्यभिधेयवल्लिङ्गाः )

कृतद्धितसमासाख्या प्रसिद्धाख्ये च लिङ्गिनि ।  
 तद्यथा चक्रभृद्विष्णुर्लताभेदाभिधा यथा ॥ ५० ॥  
 द्वन्द्वस्तत्पुरुषोऽप्यन्त्यलिङ्गोऽग्न्यबडनौ नरि ।  
 तथैवोक्षवशावह्वरात्राहाश्च दजन्तकाः ॥ ५१ ॥  
 क्लीबे सङ्ख्यापरं रात्रमर्धाङ्गा पञ्चस्वार्थना ।  
 त्रिष्वर्थः प्राक् चतुर्थ्यन्तस्तद्धितार्थो द्विगुलिषु ॥ ५२ ॥  
 प्रादिप्राप्तालमापन्नात् परं च प्रवरो यथा ।  
 प्राप्तार्थोऽलङ्कुमारिश्च पुमान् स्त्रीपुंसयोर्युतौ ॥ ५३ ॥  
 ग्राम्यानेकशफाबालबहुपश्वन्वये स्त्रियः ।  
 क्लृप्तक्लीयुतौ षण्णैक्यं वा व्यक्त्यादि लुपि युक्तवत् ॥ ५४ ॥  
 परवद् वानुवादेषु तिङ्गन्वयमलिङ्गकम् ।  
 अचः पुंसि हलो दीर्घाः स्त्रियां लोपघनत्रसाः ॥ ५५ ॥

षण्डे सर्वे गुणद्रव्यक्रियायुक्तार्थकास्त्रिषु ।  
 बहुत्वमेकता च स्याज्जात्याख्यायां यथा यवाः ॥ ५६ ॥  
 यवश्च ग्रीहयो ग्रीहिरित्यथ स्याद् विशाखयोः ।  
 द्वित्वं बहुवचश्चैवं द्वयं प्रोष्ठपदास्वपि ॥ ५७ ॥  
 अनेकमिति शब्दस्य तद्विशेषस्य चैकता ।  
 सङ्ख्यार्थस्याबहुग्रीहेर्यथाऽनेका वधूरिति ॥ ५८ ॥  
 विरोधे पूर्वदौर्बल्यं लोकतः शेषमुन्नयेत् ।

( इति सामान्यन्यायाः )

सर्वे जनाः सहस्रास्या युगपद्वक्तुमुद्यताः ॥ ५९ ॥  
 न कलामपि भारत्या ब्रूयुर्वर्षशतैरपि ॥ ५९½ ॥  
 इति भगवता विदितनिखिलनिगमनिचयरहस्यविद्येन दिनमणिसमतेजसा  
 सकलतत्त्वप्रकाशेन यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां  
 शेषकाण्डे लिङ्गसङ्ग्रहाध्यायः ॥ ९ ॥

अष्टमः शेषकाण्डः समाप्तः ॥ ८ ॥

## ग्रन्थोपसंहारः

इति यतिवरसङ्गपूजिताङ्घ्रिः

प्रथितयशा भुवि यादवप्रकाशः ।

व्यरचयदभिधानशास्त्रमेतत्

सह वचनैः सह लिङ्गसङ्ग्रहेण ॥ १ ॥

एतां शुभामष्टभिरुक्तकाण्डै-

र्भूतस्वरूपैरिव नाममालाम् ।

धत्तां विशाले हृदये मुरारि-

स्त्वां वैजयन्तीमिव वैजयन्तीम् ॥ २ ॥

एवं सूक्ष्मैर्न्यायनिर्णीतशब्दैः

सर्वार्थानां व्यञ्जकोऽसौ निघण्टुः ।

संविक्तीनां भूषणं सत्कवीनां

प्राप्तः पारं वैजयन्तीनिघण्टुः ॥ ३ ॥

[ नानाविद्यावेद्यवाग्रजमाला

मूर्तं वेदं वेदयन्ती त्रिवेद्याः ।

रोद्धुं बुद्धिध्वंसकध्वान्तचक्रं

प्राज्ञैर्ज्ञेया वैजयन्ती जयन्ती ॥ ४ ॥ ]

( इति वैजयन्ती समाप्ता )



## परिशिष्टम्

वैजयन्तीस्थानम्: काण्डाशुद्धा: कोशान्तरस्थानम्: कोशान्तरनामानि स्थलनिर्देशाः

मिहुरम्	११२।१३	मिहिरम्	अमरकोषः ( व्याख्यासुधा )	१११।४७
कृकरः, ककरः	२।३।३६	कृकरः, ककणः	"	२।५।९
मवकः	२।४।१०	मवकः	" ( व्याख्यासुधा )	१।७।८
रुशती	२।४।१८	उषती	" "	१।७।८
फणिर्जकः	३।३।१२०	फणिर्जकः	"	२।४।७९
पिण्या	३।३।१४०	पण्या	"	२।४।१५०
बिम्बोष्ठी	३।३।१४७	बिम्बिका	"	२।४।१३९
वाध्रीणसः	३।४।८	वाध्रीणसः	त्रिकाण्डशेषः	२।५।३
		वाधीनसः	"	२।५।३
नैषिकी	३।४।४६	नैषिकम्	"	२।९।२२
स्थूरी	३।४।५६	स्थूरी	अमरकोषः	२।८।४६
कुक्कुरः	३।४।६९	कुक्कुरः	अभिधानचिन्तामणिः	४।३।४५
		कुक्कुरः	"	४।३।४५
कदम्बिका	३।६।३१	कलिन्दिका	"	२।१।७२
		कलिन्दिका	" ( मणिप्रभा )	२।१।७२
		कलिन्दिका	" "	२।१।७२
वैष्णुतम्	३।६।९५	वैष्णुतम्	"	३।५।०१
		वैष्णुतम्	त्रिकाण्डशेषः	२।७।७
वृषी	३।६।१४९	वृषी	अमरकोषः	२।७।४६
		वृषी	" ( व्याख्यासुधा )	२।६।४६
क्रियदेहिफा	३।६।१६६	क्रियदेहिफा	त्रिकाण्डशेषः ( व्याख्या )	१।७।४
दूषा	३।७।८४	दूषा	अमरकोषः	२।८।४२
जगरः	३।७।१५३	जगरः	अभिधानचिन्तामणिः	३।४।३०
		जगरः	अभिधानचिन्तामणिः	२।३।०४
मिण्डिपालः	३।७।१६६	मिण्डिपालः	अमरकोषः	३।८।९१
		"	अभिधानचिन्तामणिः	३।४।४९



वैजयन्तीस्थशब्दाः काण्डायङ्काः कोषान्तरस्थशब्दाः कोषान्तरनामानि स्थलनिर्देशाः

समिकम्	३७।२०३	समीकम्	अमरकोषः	२।८।१०४
खले पाली	३।८।३१	खलेवाली	अभिधानचिन्तामणिः	३।५।५८
मरिष्टक-मयष्टकौ	३।८।३८	मकुष्टक-मयुष्टकौ	"	४।२४०
			अमरकोषः	२।९।१७
विटङ्गः	३।८।९७	विटङ्गम्	"	२।२।१५
यष्टिमधुका	३।८।१०३	यष्टीमधुकम्	"	२।४।१०९
		मधुयष्टी	" ( व्याख्यासुधा )	२।४।१०९
		यष्टी	"	
मणिमन्	शितशिवम् ३।८।१२०	शीतशिवं माणिमन्धम्	"	२।९।४२
		सितशिवम्	" ( व्याख्यासुधा )	२।९।४२
		माणिबन्धम्	" ( श्रीरस्वामी )	२।९।४२
मूका	३।९।१७	मूषा	"	२।१०।३३
कुठारः	३।९।३२	कुठरः, कुटरः	"	२।९।७४
		कुटरः	अभिधानचिन्तामणिः	४।८९
कल्लरवम्	३।९।८५	कल्लरवम्	"	२।२२०
निकार्यं	४।३।१८	निकार्यः	अमरकोषः	२।२।५
		निकार्यः	"	२।२।५
		निकार्यः	अभिधानचिन्तामणिः	४।५६
कुण्डिनी	४।३।२५	कण्डनी	त्रिकाण्डशेषः	२।९।६
मण्डपः	४।३।२८	मण्डपः	अमरकोषः	२।२।९
		"	अभिधानचिन्तामणिः	४।६९
मिस्सिटा	४।३।७७	मिस्सटा	"	३।६०
		"	अमरकोषः	२।९।४९
मुकुटः	४।३।१३५	मुकुटः	"	२।६।२०२
		मुकुटः	" ( व्याख्यासुधा )	२।६।२०२
		"	अभिधानचिन्तामणिः	३।३।१४
		मुकुटः	" ( स्वोपश्रुतिः )	३।३।१४
पिचिण्डिका	४।४।५८	पिचण्डिका	"	२।२७९

दैजयन्तीस्थशब्दाः काण्डायङ्काः कोषान्तरस्थशब्दाः कोषान्तरनामानि स्थलनिर्देशाः

प्रसृतः	४।४।७७	प्रसृतिः	अमरकोषः	२।६।८५
कलाः	४।४।१०१	कचाः	"	२।६।९८
गोर्दम्	४।४।११२	गोदम्	"	२।६।६५
		गोदः	" ( मणिप्रभा )	२।६।६५
परीतवान्त्रम्	४।४।११३	पुरीतत्, अन्त्रम्	"	२।६।६६
वातकः	४।४।१४५	वातकी ( -किन् )	"	२।६।५९
श्लेष्मस्	४।४।१४६	श्लेष्मणः	"	२।६।६०
यौवनम्	५।१।८	यौवत्तम्	"	२।६।२२
निर्वायः	५।४।३३	निर्वायः	" ( व्याख्यासुधा )	३।१।१३



## वैजयन्तीकोषस्य शब्दानुक्रमणिका

[ इस अनुक्रमणिका में क्रमशः शब्द, लिङ्गादि के अङ्क ( १. पुंलिङ्ग, २. स्त्रीलिङ्ग, ३. नपुंसकलिङ्ग, ४. अव्यय ), ए. = एकवचन, द्वि. = द्विवचन, व. = बहुवचन तथा ( ) इस कोष्ठक के अन्तर्गत ग्रन्थान्तरस्थ पाठान्तर और अन्त में क्रमशः काण्डाङ्क, अध्यायाङ्क, तथा श्लोकाङ्क दिये गये हैं ] ।

अ ]

[ अगच्छ

शब्दाः लिङ्गाद्याङ्काः	काण्डाङ्काः अध्यायाङ्काः श्लोकाङ्काः	शब्दाः लिङ्गाद्याङ्काः	काण्डाङ्काः अध्यायाङ्काः श्लोकाङ्काः	शब्दाः लिङ्गाद्याङ्काः	काण्डाङ्काः अध्यायाङ्काः श्लोकाङ्काः
अ		अकुत्स १.	३११५५	अक्षपात १.	३१९६१
अ ४.	८१७१०	अकुप्य ३.	३१८७४	अक्षफल १.	३३३७९
अंश १.	४१४५५	अकुप्यसहाय १.	५११५४	अक्षर ३.	३१६१६२
„ १.	५२२६	अकूपार १.	४२१२२	„ १ ब.	७५५३
अंशु १.	२१११५	„ १.	८१११५	अक्षरचुम्बु १.	३१९२३
„ १.	२१११६	अकृत १.	३१६१७	अक्षरजीवन १.	३१९२३
„ १.	२११२६	अक्ष १.	३१७१३१	अक्षरपातक १.	२११५२
„ १.	६११६	„ १.	३१८१५	अक्षवती २.	३१९५९
„ १.	८१९२५	„ ३.	३१८१२५	अक्षि ३.	४१९९४
अंशुक ३.	४३११६	„ १.	३१९६०	अक्षिगत १.२.३.	५११६९
„ ३.	७३११	„ ३.	५११४९	अक्षित ३.	५११३०
अंशुमत् १.	२१११५	„ १. ३.	६५५२	अक्षिस्स्कार १.	४३१५७
अंस १. ३.	४१४७१	अक्षकील १.	३१७१३१	अक्षीव ३.	३१८१२०
अंसल १. २. ३.	५११६	अक्षज ३.	३१९७३	अक्षोद १.	३३३४६
अंससन्धि १.	४१४६९	अक्षजीविन् १.	३१९५९	अक्षौहिणी २.	३१७५८
अंसान्त १.	४१४७०	अक्षत १. २. ३.	७५५१४	अखण्ड १. २. ३.	५१४८६
अंहति २.	३१६११९	अक्षताडन ३.	३१९१३७	अखत ३.	४२५५
अंहन ३.	५२११३	अक्षति २.	३१६९०	अखिल १. २. ३.	५१४८५
अंहस् ३.	३१६१६८	अक्षत्न ३.	४१४८५	„ १. २. ३.	७५५१
अक्षाय १.	५३३३९	अक्षदर्शक १.	३१८१४	अग १.	३२११
अकार्यसेवन ३.	३१६११७	अक्षधूर्त १.	३१९५८	„ १.	८११५८
अकिञ्चन १.२.३.	५१४५९	अक्षधूर्तिक १.	३१४५२	अगच्छ १.	३३३५

अगद १. ४४१४१  
 अगदङ्कार १. २. ३. ४४१४३  
 अगम १. ८११५८  
 अगरी २. ३३१८६  
 अगर १. ३८११०६  
 अगस्ति १. ३३१५६  
 „ १. ३३१५१  
 अगस्त्य १. ३३१५६  
 „ १. ३३१५१  
 अगाध १. ४११२  
 „ १. २. ३. ४२११९  
 अगार ३. ४३११७  
 अगुहीतदिष् १. २. ३. ३७२१९  
 अग्रायी २. १२११९  
 अग्नि १. १२११५  
 „ १. ८६१२  
 अग्निक १. ३३२२१  
 अग्निकारिका २. ३३११४  
 अग्निकार्य ३. ३३११४  
 अग्निगौच ३. ४३११९  
 अग्निचित् १. ३३१७५  
 अग्निजा २. ३३१४३  
 अग्निपूर्णमा २. २११७४  
 अग्निबीज ३. ३२२२०  
 अग्निमन्य १. ३३१८६  
 „ १. ३८१८४  
 अग्निमुखी २. ३३१९५  
 अग्निविष् २. १२२३२  
 अग्निशिख ३. ३८११७  
 अग्निष्टोम १. ३३१८७  
 अग्निष्ठ १. २. ३. ३३१३०४  
 अग्निसख १. १२२४९  
 अग्निसङ्ग्रह १. ३३१६८  
 अग्निसम्पत्क १. ३८१८२  
 अग्निहोत्र ३. ३३१७०  
 अग्निहोत्रहवणी २. ३३११००  
 अग्निहोत्री २. ३३१९५  
 अग्नीन्धन ३. ३३११४  
 अग्न्याधान ३. ३३१६९

अग्न्याहित १. ३३१७३  
 अग्न्युत्पात १. १२२३३  
 अग्र १. ३३११९८  
 „ १. २. ३. ५४१६३  
 „ ३. ६३११  
 „ १. ८११६०  
 अग्रज १. ४४१३१  
 „ १. २. ३. ५४१४  
 अग्रजन्मन् १. ३३११  
 अग्रणी १. २. ३. ५४१६४  
 अग्रतः ( -सू ) ४. ८८१११  
 अग्रतःसर १. २. ३. ३७१४५  
 अग्रदिधिषु १. ३३१४४  
 अग्रद्वयसंहतिर. ३८१४७  
 अग्रमांस ३. ४४११४  
 अग्रयान ३. ३७२०३  
 अग्रसन्धानी २. १२२३६  
 अग्रस्य १. २. ३. ५४१७७  
 अग्राम्य १. २. ३. ५४१२०  
 अग्रिम १. २. ३. ५४१७७  
 अग्रिय १. २. ३. ५४१४  
 „ १. २. ३. ५४१६३  
 अग्रीय १. २. ३. ५४१६३  
 अग्रेदिधिषु १. ३३१४४  
 अग्रेदिधिषू १. ३३१४४  
 „ २. ३३१४५  
 अग्रेसर १. २. ३. ३७१४५  
 अग्रय १. २. ३. ५४१७७  
 अघ ३. ३३११६८  
 „ ३. ६३१२  
 अघन १. २. ३. ५४१२५  
 अघायु १. २. ३. ३३१११  
 अङ्क १. २१२२९  
 „ १. ३३११००  
 „ १. ४४१६०  
 „ १. ६३११६  
 अङ्कण १. ४३१३६  
 अङ्कति १. १२२४८  
 अङ्कपालि २. ८२२२  
 अङ्कपाली २. ४३११७०  
 अङ्कलि २. ४३११५४

अङ्कुट १. ४३१४८  
 अङ्कुर १. ३. ३३११०  
 अङ्कुष १. ३. ३७८४  
 अङ्कूर १. ३. ३३११०  
 अङ्कूढ १. ३३१४१  
 अङ्कूल १. ३३१४१  
 अङ्कथ १. ३३११२९  
 अङ्ग १ व. ३११३१  
 „ ३. ३३१२०८  
 „ ३. ४४१५२  
 „ ३. ४४१५५  
 „ १. २. ३. ६१५३  
 „ ४. ८८१२१  
 अङ्गचेष्टा २. ३३१९८  
 अङ्गज १. ४४१३९  
 „ १. ५११३८  
 „ १. ३. ७५११०  
 अङ्गजा २. ४४१३९  
 अङ्गद ३. ४३११४३  
 अङ्गद्वीप ३. ३३११३  
 „ ३. ३३११४  
 „ ३. ३३११५  
 अङ्गना २. २११९  
 „ २. ४४१५  
 अङ्गनाम्रिय १. ३३२२५  
 अङ्गमर्दिन् १. ३३११५  
 अङ्गलोक्त्यक १. ४२१४६  
 अङ्गचित्तेप १. ३३१९७  
 अङ्गसंस्कार १. ४३११२  
 अङ्गहार १. ३३१९७  
 अङ्गार १. ३. १२२३२  
 „ १. २११३१  
 „ १. ५३१८  
 अङ्गारधानी २. ४३१५५  
 अङ्गारशकटी २. ४३१५५  
 अङ्गारशाकट १. २. ३. ३३१३२  
 अङ्गिन् १. ४४११  
 अङ्गीकार १. ५२१३७  
 अङ्गु १. २३११  
 अङ्गुल १. ३. ३३१५२



अङ्गुल १.	३३३२७	अजिर ३.	४४१३६	अणु ३.	३८११९
„ १.	३६१५९	„ १. २. ३.	५४१२५	„ १. २. ३.	५४१३६
„ १.	४४१७९	„ १. २. ३.	७५११४	अणुराजि २.	३४१६३
अङ्गुलाल १.	३८११२	अजीगव ३.	१११५०	अण्व ३.	२३१५०
अङ्गुलि २.	४४१७४	अङ्गुका २.	३९१०३	„ १.	३४१६२
अङ्गुलित्र ३.	३४१५६	अङ्ग १. २. ३.	५४१२१	„ १. ३.	४४१६३
अङ्गुलिमुद्रा २.	४३१४५	अङ्गति १.	१२११८	„ ३.	६३१२
अङ्गुलीयक ३.	४३१४४	अङ्गन ३.	३६३३९	अण्डज १.	४११४२
अङ्गुष्ठ १.	४४१७४	अङ्गल १.	४३१३१	„ १. २. ३.	४४१२
अङ्गुष्ठकान्तर १.	४४१५७	अङ्गित १. २. ३.	५४११३	„ १.	७५१११
अङ्गुष्ठि १.	४४१५६	अङ्गन १.	२११८	अण्डजा २.	७५१११
अङ्गुष्ठिनामन् १.	३३१३२	„ १.	३६१०७	अण्डप्रहरण १.	४११४७
अङ्गुष्ठिप १.	३३१३	„ ३.	४३१५७	अण्डमूलक ३.	४४१६०
अचल १.	३२११	अङ्गनकेशी २.	३८१०१	अण्डवर्धन ३.	४४१३१
अचला २.	३११४	अङ्गनवह्निका २.	३३१३५	अण्डिक १.	४४१३४
अचिरव्यूहा २.	४४१७	अङ्गनावती २.	२११९	अण्डिका २.	५११४८
अच्छभङ्ग १.	३४१७	अङ्गनिका २.	४११२९	अण्डीर १.	७५११५
अच्युत १.	१११११	अङ्गलि १.	४४१७८	अण्डुक १.	२३३३४
अज १.	३४१६२	„ १.	५११५३	„ १.	४११४७
„ १. २. ३.	६१५४	„ १.	५११६३	„ १.	४४१६३
अजगर १.	४१११७	„ १.	८११२७	अतः (—स्) ४.	८११६
„ १.	४१११९	अङ्गलिकारिकार.	३३१४८	अतलरूपार्थ १. २. ३.	४२११९
अजगव ३.	१११५०	„ २.	३९११३	अतसी २.	३८१४५
अजगाव ३.	१११५०	अङ्गसा ४.	८११३१	अति ४.	८११५५
अजन्य ३.	३६१९०	अङ्गि १.	३३१८२	„ ४.	८११४
अजप १. २. ३.	३६१११	अटनी २.	३११७७	अतिकृच्छक ३.	३६१३९
अजमोदा २.	३८१०२	अटवी २.	३१११	अतिक्रम १.	३६११४
„ २.	८२११	„ २.	८६१११	„ १.	५२११६
अजस्य ३.	३६११८६	अटाव्या २.	५२१११	अतिचरा २.	३८१८९
अजवीथी २.	२११४६	अट्ट १.	४३१३३	अतिचाटुवाच् २.	२४१२५
अजशृङ्गी २.	३३११४१	„ १.	६११५	अतिच्छत्र १.	३३१२३४
अजन्न १. २. ३.	५४१३०	अट्टहास १.	३९१८४	अतिजव १. २. ३.	३११५०
अजहा २.	३३१२९	अट्टालिका २.	४३१३३	अतिथि १.	३६१६८
अजा २.	३४१६३	अट्टन ३.	३११२००	अतिम्यर्थ १. २. ३.	३६१६७
आजाजी २.	३८१८३	अणक १. २. ३.	५४१७५	अतिपथिन् १.	३११४९
आजाजीव १.	३९१२९	अणन्य १. २. ३.	३८१२०	अतिपात १.	३६११४
अजित १.	११११२	अणि १.	२११७९	अतिबला २.	३३१२८
अजितनेमि १.	३६११९	„ १. २.	३११३१	अतिमर्याद १. २. ३.	५४१३१
अजिन ३.	३६१२१	„ १. २.	४३१५२	अतिमान्न १. २. ३.	५४१३१
अजिनपत्रा २.	२३१४४	„ १. २.	६१५५	अतिमानक १. २. ३.	५४१३१
अजिनयोनि १.	३४१२५	अणिकूर्च १.	२११८०	अतिमुक्त १.	३३१३८

अतिमुक्तक १. ३।३।४३  
 अतिमुक्ता २. ३।३।१७२  
 अतियव १. ३।८।५२  
 अतिरिक्त १. २. ३. ५।४।१३७  
 अतिविषा २. ३।८।९०  
 अतिवेल १. २. ३. ५।४।१३१  
 अतिशय १. ५।२।३  
 अतिशयित १. २. ३. ५।४।१३७  
 अतिसन्धान ३. ५।२।३५  
 अतिसर्जन ३. ५।२।१९  
 अतिसारकिन् १. २. ३. ४।४।१४६  
 अतिस्थिर १. २. ३. ५।४।७९  
 अतिहस्तक १. ३।७।७०  
 अतिहास १. ३।५।८५  
 अतिहिंसन ३. ३।७।२८  
 अतीन्द्रिय १. २. ३. ५।४।१३३  
 अतीव ४. ८।८।४  
 अतीसार १. ४।४।१२९  
 अत्यन्त १. २. ३. ५।४।१३१  
 अत्यन्तीन १. २. ३. ३।७।१४९  
 अत्यन्ता २. ३।३।३४  
 अत्यय १. ७।१।१  
 अत्यर्थ १. २. ३. ५।४।१३१  
 अत्यर्थस्वादु ३. ३।८।१३६  
 अत्याकार १. ३।६।१७१  
 अत्याधान ३. ५।२।१६  
 अत्याहित ३. ८।३।१  
 अत्यूह १. ३।७।८०  
 अत्रिनेत्रज १. २।१।२५  
 अथ ४. ८।७।१४  
 अथर्वाणि ३. ८।१।१३  
 अथो ४. ८।७।१४  
 अदन ३. ४।३।१०२  
 अद्व १. २. ३. ५।४।८५  
 अद्वय १. २. ३. ५।४।२४  
 अदसू १. २. ३. ६।४।१  
 अदात् १. २. ३. ५।४।५९  
 अदिति २. ३।६।९१  
 " २. ७।२।१  
 अदितिनन्दन १. १।१।३

अदृष्ट ३. ३।७।१४  
 अदृष्टि २. ३।९।९०  
 अद्धा ४. ८।७।१२  
 अद्भुत १. १।२।२७  
 " १. ३।७।७५  
 " १. ३।७।७७  
 " १. २. ३. ३।७।७८  
 अक्षर १. २. ३. ५।४।५०  
 अथ ४. ८।८।७  
 अथर्वीन्द्र २. ४।४।१७  
 अद्रि १. २।१।११  
 " १. ३।२।२  
 " १. ६।१।४  
 अद्रिज ३. ३।२।१६  
 अद्रिजा २. १।१।५८  
 अद्रिष्ट १. १।१।२५  
 अद्रुत १. २. ३. ५।४।५२  
 अद्वयवादिन् १. १।१।३४  
 अघः ( -स् ) ४. ८।८।१९  
 अघःपुष्पी २. ३।३।१५७  
 अघम १. २. ३. ५।४।७५  
 " १. २. ३. ७।४।१  
 अघमर्ण १. २. ३. ३।८।९  
 अघर १. ४।४।८७  
 " १. २. ३. ५।४।४७  
 " १. २. ३. ७।५।१६  
 अघरा २. २।१।६  
 अघरेणुः ( -स् ) ४. ८।८।८  
 अघरोष्ठ १. ४।४।८७  
 अघर्म १. ३।६।१६८  
 अघस्तात् ४. ८।८।१९  
 अधि ४. ८।७।१३  
 अधिक १. २. ३. ५।४।८५  
 " १. २. ३. ५।४।१३१  
 " १. २. ३. ५।४।१३७  
 अधिकधिक १. २. ३. ५।४।५६  
 अधिका २. ५।१।४०  
 अधिकाङ्ग ३. ३।७।१५६  
 अधिकार १. २।४।४१  
 अधिकृत १. २. ३. ३।७।१९  
 अधिकृष्ट १. २. ३. ८।४।२

अधिलेप १. २।४।३२  
 अधित्यका २. ३।३।९  
 अधिप १. २. ३. ५।४।५८  
 अधिपति १. २. ३. ५।४।५८  
 " १. २. ३. ८।५।२  
 अधिमू १. २. ३. ५।४।५८  
 अधिरोहिणी २. ४।३।५१  
 अधिवास १. ८।१।६  
 अधिवासन २. ३. ४।३।१५६  
 अधिविज्ञा २. ४।४।१३  
 अधिश्रयणी २. ४।३।५४  
 अधिष्ठात्त्व ३. १।१।४८  
 अधीतवेदक १. ३।६।८  
 अधीर १. २. ३. ५।४।१८  
 अधीश १. २. ३. ५।४।५८  
 अधीश्वर १. ३।७।२  
 अधुना ४. ८।८।५  
 अधोऽशुक ३. ४।३।१२१  
 अधोऽञ्ज १. १।१।१३  
 अधोनापित १. ३।५।४१  
 अधोभुवन ३. ४।१।१  
 अधोमुख १. २. ३. ५।४।९०  
 अध्यक्ष १. २. ३. ३।७।१९  
 " १. २. ३. ५।४।१३३  
 " १. २. ३. ७।४।१  
 अध्यापडा २. ३।३।१२९  
 " २. ३।३।१७७  
 अध्यायन ३. ३।६।६३  
 अध्यायसाय १. ३।६।१६७  
 अध्यास्त १. २. ३. ५।४।१०४  
 अध्यापन ३. ३।६।६३  
 अध्याय १. ३।३।३२  
 अध्युष १. ५।१।५३  
 अध्यूडा २. ४।४।१३  
 अध्येषणा २. ३।६।१२०  
 अध्वन् १. ३।१।४९  
 अध्वर १. ३।६।८२  
 अध्वर्यु १. ३।६।७९  
 अनंशुमत्फला २. ३।३।१७३  
 अनक्षर १. २. ३. २।४।१६  
 अनमिक १. ३।६।७३

अनङ्ग १. १११२७  
 अनङ्गुह १. ३१४५२  
 अनङ्गुही २. ३१४५२  
 अनङ्गवाही २. ३१४५२  
 अनन्त १. ४११३  
 „ १. २. ३. ७५१४  
 अनन्तशायिन् १. ११११३  
 अनन्ता २. २११५  
 „ २. ३३१२५  
 „ २. ७५१४  
 अनन्यज १. १११२८  
 अनन्यवृत्ति १. २. ३. ५४१२८  
 अनपराध्य १. २. ३. ५४१६३  
 अनशु १. २३३२  
 अनर्गल १. २. ३. ५४१३२  
 अनर्थक १. २. ३. २४११८  
 अनल १. १२११५  
 „ १. ३१८८१  
 अनलज्वाला २. ३३१९७  
 अनलोपल १. ३२१३७  
 अनवधानता २. ३३११७८  
 अनवरत १. २. ३. ५४१३०  
 अनवस्कर १. २. ३. ५४१६६  
 अनस् ३. ३३१२५  
 अनादर १. ३३११७१  
 अनादृत १. २. ३. ५४१५५  
 अनामय ३. ४४११४२  
 अनामिका २. ४४१७४  
 अनारत १. २. ३. ५४१३०  
 अनालम्बी २. ३३१११८  
 अनावृष्टि २. २२१८  
 अनाशक ३. ३३११४४  
 अनाशकिन् १. ३३११६०  
 अनि १. २. ३३७१३१  
 अनिष्ट १. ३३३२२६  
 अनिमिष १. ८१११३  
 अनिमेष १. ८१११३  
 अनिरुद्ध १. १११२९  
 अनिर्वद्ध १. २. ३. २४११७  
 अनिर्वाप १. २११३३

अनिल १. १२१४७  
 „ १. ३३७१६१  
 अनिलाशन १. ४११६  
 अनिश ३. ५४१३०  
 अनिष्ट १. २. ३. ५४१६९  
 अनी २. ४३१४७  
 अनीक १. ३. ७५११५  
 अनीकवत् १. १२१२५  
 अनीकस्थ १. ८१११४  
 अनीकिनी २. ३३७५५  
 „ २. ३३७५८  
 अनु ४. ८३१६  
 अनुक १. २. ३. ५४३३४  
 अनुकण्ठी २. ४३११४१  
 अनुकम्पा २. ३३११९२  
 अनुकर्ष १. ३३७१३३  
 अनुकर्षण ३. ३३१५३  
 अनुकल्पक १. ३३१११३  
 अनुकामीन १. ३३७१५०  
 अनुकार १. ५२११७  
 अनुकूल १. २. ३. ५४१२७  
 अनुक्रम १. ३३१११३  
 अनुक्रोश १. ३३११९२  
 अनुग १. ३३७१६  
 अनुचर १. ३३७१६  
 अनुज १. ४४३३१  
 „ १. २. ३. ५४१४  
 अनुजीविन् १. ३३७१७  
 अनुताप १. ३३११८५  
 अनुत्तर १. २. ३. ४४१२५  
 अनुदात्त १. २. ३. ३३१३७  
 अनुद्वीप १. ३३११३  
 अनुनय १. ५२३३८  
 अनुनासिक १. २. ३. ३३१३७  
 अनुपद ४. ५४१२८  
 अनुपदिन् १. २. ३. ७३३२७  
 अनुपदीना २. ४३११६२  
 अनुपमा २. २१११९  
 अनुपात्यय १. ३३१११४  
 अनुधान १. ३३१८२  
 अनुचीन १. २. ३. ५४१२७

अनूप १. २. ३. ३११४५  
 अनूराध १ व. २११४४  
 अनूसारयि १. २११११  
 अनूङ्ग १. ४३३४  
 अनूष्ट १. १३३४  
 „ १. २. ३. ५४१२२  
 अनूत १. २. ३. २४११७  
 „ ३. ३८३३  
 „ ३. ७५११६  
 अनेक १. २. ३. ८११५८  
 „ १. २. ३. ८११५८  
 अनेकप १. ३३७६०  
 अनेह १. २. ३. ५४१२१  
 अनेहमूक १. २. ३. ५४१३३  
 „ १. २. ३. ५४१३४  
 अनेहस् १. २११५२  
 अनोकह १. ३३३५  
 अन्त १. ३३११७६  
 „ १. २. ३. ५४१२९  
 „ १. ५४३३१  
 „ १. ३. ३५११  
 अन्तःकरण ३. २३११७३  
 अन्तःपुर ३. ४३३३६  
 अन्तक १. १२३३४  
 अन्तर ३. २११७  
 „ ३. २११५३  
 „ १. २. ३. ३३८१०  
 „ १. ७५११  
 अन्तरगाहन ३. ५२११४  
 अन्तरद्वीप १. ३३११२  
 अन्तरा ४. ८१८१८  
 अन्तराय १. ५२१४  
 अन्तराल ३. २११७  
 अन्तरिक्ष ३. २१११  
 अन्तरिक्षासन ३. ३३३२१९  
 अन्तरीप ३. ४३३३६  
 अन्तरीय ३. ४३३१२१  
 अन्तरेण ४. ८१८१८  
 „ ४. ८१८१८  
 अन्तर्गद्ग ३. ५२३३  
 अन्तर्धि १. २११६३

अन्तर्मनस् १. २. ३. पा४३४	अन्ध १. ३५५३	अपकृष्ट १. २. ३. पा४७५
अन्तर्यामि १. ३६५२	" १. ३५५१७	अपक्रम १. ३७२१०
अन्तर्वाक्षिक १. ३७२२	अक्ष ३. ४३७५	अपगम १. पा२२७
अन्तर्वर्त्ती २. ४४१६	" १. २. ३. पा४१०७	अपगमभक्त १. २. ३. पा४१७
अन्तर्वाणि १. २. ३. पा४३१	" ३. ८६८	अपघन १. ४४५५
अन्तश्चक्षुः २. ८२२२	अक्षमञ्जिका २. ३३५२७	अपचायित १. २. ३. पा४१०५
अन्तस्था २. ३६३६	अज्ञाद १. १२२७	अपचित १. २. ३. पा४१०५
अन्तावसायिन् १. ३५४९	अन्य १. २. ३. ६४२	अपचिति २. ३७४४
" १. ३५८७	अन्यतरेषुः ( -स् ) ४. ८८८	" २. ८२१
" १. ३५१०७	अन्यथा ४. ८८२०	अपक्षयज्ञ १. ३६७७
" १. ३५२६	अन्यथाकृति २. पा२२४	अपटी २. ४३१२४
अन्तिका २. ४३५४	अन्यथाभाव १. पा२२४	अपटीका २. ३९८६
अन्तिकाश्रय १. ४३१२	अन्यदा ४. ८८७	अपटु १. २. ३. ४४१४४
अन्तिकेशय १. ४३१६८	अन्यनिहति २. २४४०	अपतर्पण ३. ४४१३९
अन्तिम १. २. ३. पा४७७	अन्यपीडन ३. पा२२३	अपत्य ३. ४४४१
" १. २. ३. पा४१४०	अन्यपुष् १. २३१६	अपत्रपा २. ३६१९४
अन्तेवासिन् १. ८११३	अन्यभृत १. २३२६	अपत्रपिण्णु १. २. ३. पा४४०
अन्त्य १. २. ३. पा४७७	अन्यलोहक ३. ३२२८	अपथ ३. ३१५०
" १. २. ३. ६४११	अन्यवाप १. २३१६	अपथिन् १. ३१५०
अन्यजाति १. ३५२	अन्यशाखास्थ १. २. ३. ३६१३	अपदंश १. ३९५२
" २. ३५१२१	अन्यानुरक्ता २. ३६४८	अपदंशक १. ४३८६
अन्यजालय १. ३९३२	अन्येद्युः ( -स् ) ४. ८७४	अपदरोहिणी २. ३३८४
अन्यवर्ण १. ३९११	अन्योन्य १. २. ३. पा४१२३	अपदान ३. ३७२०९
अन्तुक १. ३७८३	अन्वक्ष १. २. ३. पा४१२८	" ३. ८३१
अन्दू २. ६२११	अन्वच् १. २. ३. पा४१२८	अपदालक १. ४१४२
अन्ध १. २. ३. पा४१३	अन्वय १. ४४४९	अपदिश ४. २१३३
" १. ६५६	अन्ववाय १. ४४४९	अपदेश १. ८१७
अन्धक १. ३६२०१	अन्वाहार्य ३. ८३२	अपध्वंसज १. ३५१२०
(इन्धक)	अन्वाहार्यवचन १. १२२३	अपध्वस्त १. २. ३. पा४७१
अन्धकसूदन १. ११४३	अन्विष्ट १. २. ३. पा४९८	अपभरणी २. २१४१
अन्धकार १. ३. २१४२	अन्वेपणा २. ३६१२१	अपभ्रंश १. ८१७
अन्धकी २. २१४४	अन्वेषित १. २. ३. पा४९८	अपरगन्धिक १. ३१८
अन्धतमस ३. २१४२	अन्वेष्ट १. २. ३. पा४२७	अपरति २. पा२३६
अन्धता २. ८९६	अप् २ व. ४२३	अपररात्रक १. २१६६
अन्धमेहल १. पा४५६	" २. ८७१३	अपराजित १. ८१५०
अन्धस् ३. ४३७५	अप ४. ८७२५	अपराजिता २. २१५
अन्धु १. ४२३	अपकार १. पा२२२	" २. ३३१३३
अन्ध १ व. २३३२	" १. पा२२३	" ३. ३६२०८
" १. ३५३५	अपकृष्ट १. २. ३. पा४७१	अपराद्धशर १. २. ३. ३७२१८
" १. ३५५२		अपराध १. ३७४७
		अपरान्त १ व. ३१३५



अपराह १.	२।१।६५	अपान्नपात् १.	१।२।२३	अब्द १.	२।२।१
अपरुजा २.	१।१।५९	अपामार्ग १.	३।३।११५	अब्ध १.	४।२।७
अपरेष्टुः (-स्) ४.	८।८।८	अपाप्पति १.	४।२।१०	अब्धा २.	४।२।२३
अपर्णा २.	१।१।५९	अपाप्पित्त ३.	१।२।१९	अब्धि १.	४।२।१२
अपलाप १.	२।४।३०	अपाय १.	३।७।२१०	" १.	८।६।१३
अपलासिका २.	३।६।१८१	" १.	५।२।२७	अब्धिजा २.	१।१।३६
अपर्वण १.	३।७।७७	अपार १.	४।२।१०	अब्धिमण्डूकी २.	४।१।५६
अपवन ३.	३।३।२	अपार्थक १.२.३.	५।४।१२९	अब्धिवक्षा २.	३।१।३
अपवरक १.	४।३।५१	अपावृत्त १. २. ३.	५।४।२७	अब्धग्रहण्य ३.	३।९।१०९
अपवर्ग १.	८।१।६	अपाश्रय १.	४।२।१६४	अभय ३.	३।३।२३२
अववर्जन २.	३।६।११९	अपि ४.	८।७।१४	अभया २.	३।३।१७८
अपवाद १.	२।४।३३	अपिधान ३.	२।१।६५	अभवनि २.	८।९।८
" १.	३।७।१७	अपुञ्ज १.	१।२।२१	अभि ४.	८।७।१६
" १.	८।१।१४	अपुनर्भव १.	३।६।२३८	अभिक १. २. ३.	५।४।३५
अपवारण ३.	२।१।६३	अपूप १.	४।३।७२	अभिक्रम १.	३।७।२०२
अपव्यय १.	२।४।३०	अपेक्षा २.	५।२।२९	" १.	५।२।१५
अपवाब्द १.	३।५।१२०	अपोनपात् १.	१।२।२३	" १.	५।२।१६
" १. २. ३.	५।४।२२	अपौर १.	३।८।३३	अभिख्या २.	५।४।१२२
अपशाला २.	४।३।३८	अप्पति १.	१।२।४५	" २.	७।२।२
अपष्ट ३.	५।२।८	" १.	४।२।११	अभिस्थान ३.	२।४।३२
अपष्टु ३.	५।२।८	अप्पित्त ३.	१।२।१९	अभिग्रह १.	५।२।१८
अपसर १.	५।२।३२	अप्पुष्य ३.	४।२।३७	" १.	८।१।११
अपसर्य १.	३।७।२९	अप्फल ३.	३।३।२२०	अभिचार १.	३।६।११७
अपसव्य १.	१।२।२८	अप्य ३.	३।८।८०	अभिज १. २. ३.	५।४।६१
अपस्कर १.	३।७।१३५	अप्रकाण्ड १.	३।३।७	अभिजन १.२.३.	५।४।१९
अपस्नान ३.	३।६।६४	अप्रच्छन्न ३.	३।६।१३६	" १.	८।१।११
अपहस्तित १.२.३.	५।४।९५	अप्रहत १. २. ३.	३।८।१८	अभिजात १. २. ३.	८।४।१
अपहार १.	५।२।१९	अप्रहृष्टक १.	२।३।१६	अभिज्ञ १. २. ३.	५।४।१९
" १.	८।१।३	अप्सरस् २.	१।३।१	अभिज्ञान ३.	२।१।२९
अपहास १.	३।९।८५	अप्सरसाप्पति १.	१।२।६	अमितः (-स्) ४.	८।७।३१
अपहित १.२.३.	५।४।१०४	अफला २.	३।३।९९	अमिताढन ३.	५।२।१९
अपह्व १.	२।४।३०	अबद्ध १. २. ३.	२।४।१८	अमिताप १.	४।४।१३५
" १.	८।१।१४	अबद्धमुख १.२.३.	५।४।४६	अमिधा २.	२।४।३१
अपाङ्गर्भ १.	८।१।१५	अबल १.	४।४।३२	अभिधान ३.	२।४।३१
अपाच् ४.	५।४।९१	अबला २.	४।४।५	अभिध्या २.	३।६।१७९
अपाचीन १.२.३.	५।४।५१	अबाल ३.	३।३।२२०	अभिनय १.	३।९।९८
अपाटव ३.	४।४।१३८	अब्ज ३.	४।२।३७	" १.	३।९।९८
अपादान ३.	५।२।१९	" १.	६।५।३	अभिनव १. २. ३.	५।४।८८
अपान ३.	४।४।६०	अब्जल १.	३।७।९६	अभिनिवेश १.२.३.	५।२।१४
" १.	७।५।१२	अब्जादि १.	२।१।२६	अभिनिष्ठान १.	३।६।३७
अपानिक १.	३।३।९२	अब्द १.	२।१।९०	" १.	८।१।५०



अमृताक्षन

शब्दानुक्रमणिका

[ अरुन्ध

अमृताक्षन १.	१११४	अमृत्वास १.	२११४५	अरणि १.	२१४२२
अमृतोद्भव १.	३१३२०४	अमृत्वेतस १.	३१३३०	„ १.	३१३८६
अमोघ १.	४११५२	अमृत्सूकर १.	४११५३	„ २.	३१४५०
अमोघा २.	३१३९०	अमृत्कृत १.२.३.	२१४१८	„ १. २.	३१४१०८
„ २.	३१८९७	अमृत् ३.	४२११	अरण्य ३.	३१३११
अमृत् ३.	४१४९४	अमृत् २.	४१३४४	अरण्यजतिल १.	३१८३९
अमृत् ३.	२११२	अमृत् १.	५१३२६	अरण्यमक्षिका २.	२१३४५
„ ३.	४१३११६	अमृत्तुण्डी २.	३१८१४१	अरण्यानी २.	३१३२
अमृत्रीष १. ३.	४१३१५६	( अमृत्तुण्डी )		अरति १.	८१९१०
„ १.	८१५३	अमृत्तिक्तकपाय १.		अरति १.	३११५५
अमृत्ला २.	४१३१०७		५१३३५	„ १.	७१११
अमृत्लोण ३.	४१३१०७	अमृत्तुण्डी २.	३१८१४१	अरर ३.	४१३४६
अमृत् १.	३१५४	अमृत्लोणी २.	३१३१६३	„ १.	७१५१०
„ १.	३१५६५	अमृत्वेतस १.	३१८१३३	अरविन्द ३.	४१२७
„ १.	३१५६६	अमृत्तान १.	३१३१८८	अराति १.	३१७४०
„ १.	३१५७०	अमृत्तिका २.	३१३८१	अराल १.	३१८१११
अमृत्छा २.	३१३१३१	अमृत् १.	३१३९४	„ १. २. ३.	५१४१२४
„ २.	३१३१६३	अय १.	३१६१८९	अरि १.	३१७४०
„ २.	३१८७७	„ १.	३१६६१	अरिचिन्तन ३.	३१८१४
अमृत् २.	३१९१०६	अयन ३.	७१३१	अरिज ३.	३१२३२
„ २.	४१४२६	अयन्त्रित १.२.३.	५१४१३२	अरिज ३.	४१२१६
„ २.	४१४२७	अयश्शलाका २.	३१७१८४	अरिन् ३.	३१७१३४
अमृत्का २.	४१४२७	अयस ३.	३१२३	अरिम १.	३१३६४
„ २.	७१२२	„ ३.	८१६१६	अरिमर्दन १.	११२१२
अमृत् ३.	४१२२	„ ३.	८१६१७	अरिमेवक १.	३१३६४
„ ३.	८१९१५	अयस्कान्त १.	३१२२८	अरिमेघी २.	२११७७
अमृत्क १.	३१३६५	अयस्कार १.	३१९१६	अरिष्ट १.	२१३१७
„ १.	३१३१९४	अयाचित ३.	३१८२	„ १.	३१३३२
अमृत्कपि १.	४११५४	अयि ४.	८१७१२	„ १.	३१३२०४
अमृत्कफ १.	४१२१३	अयुगच्छद १.	३१३४६	„ ३.	३१६१९०
अमृत्कान्तार १.	११२४५	अयुगम १. २. ३.	५१३२३	„ ३.	४१३२०
अमृत्कुक्कुट १.	२१३१२	अयुत ३.	५१३२८	„ १.	४१४१३९
अमृत्ज १.	२१३३२	अयोप्या २.	४१३५	„ १. २. ३.	७१५९
„ १.	३१३६७	अयोनि १.	४१३६५	अरिष्टाति १.२.३.	५१४५५
„ ३.	४१३३९	अयोमणि १.	३१२३७	अरिष्टेमेमि १.	११११२
„ ३.	५१३२८	अयोमल ३.	३१२३६	अरुण १.	५१३१७
„ १.	८१६१३	अयोमुख ३.	३११२०	„ १. २. ३.	७१५६
अमृत्जा २.	११३३६	अयोर्जाला २.	४१३४८	अरुणा २.	३१८९०
अमृत्सुत १.	२१२२	अर १.	३१७१३५	„ २.	७१५६
अमृत्वर्धन ३.	४१२१३	„ १. २. ३.	५१४१२४	अरुणोपल १.	३१२२०
अमृत्वल्ली २.	३१३१६४	अरघटक १.	४१२२१	अरुन्ध १. २. ३.	५१४११२

[ अरुल ]

वैजयन्तीकोषः

[ अललोहित ]

अरुल ३.	७३१२	अर्थ १.	३१८१७३	अर्जुन १.	४४११३३
अरुत्कर १.	३१३१५	" १.	३११३	" ३.	५११२८
अरुत् ३.	३१७२१७	अर्थना २.	३१६१२०	अर्मक १. २. ३.	५११२
अर्क १.	२१११०	अर्थवाद १.	२११३७	अर्मण ३.	४११५६
" १.	३१२१७	" १.	३१६३३	अर्थ १.	३१८१
" १.	५१४४	अर्थशास्त्र ३.	३१६३०	" १.	६११५
" १.	८१६२	अर्थसञ्चय १.	३१७४४	अर्थमन् १.	२१११०
अर्कवन्धु १.	१११३५	अर्थिन् १. २. ३.	५१४६०	अर्या २.	४१४२२
अर्कस्मिजा २.	४१२२५	अर्थ्य १.	२१३३६	अर्याणी २.	४१४२२
अर्कट ३.	३१८११३	" ३.	३१२१६	अर्या २.	४१४२२
अगल ३.	३१७५१	" १. २. ३.	६१४१	अर्वण १. २. ३.	६१५६
" १. २. ३.	४१३४७	अर्दना २.	३१६१०	अर्वती २.	३१७१०७
" ३.	४१३५०	अर्दनि १.	८१९१०	अर्वन् १. २. ३.	५१४७५
" १. २. ३.	४१३५०	अर्दित १. २. ३.	५१४१०२	" १. २. ३.	६१५६
" १. २. ३.	८१९३८	" १. २. ३.	५१४११२	अर्वाक् ४.	८१८१८
अर्ग्वध १.	३१३१४८	अधे १.	४१४५६	अर्वाच् ४.	५१४९१
अर्घ १.	३१८१७०	अर्धचन्द्र १.	३१७१८२	अर्वाचीन १. २. ३.	५१४९१
" १.	६११५	अर्धगुच्छ १.	४१३१४०	अर्कस ३.	४१४१३१
अर्घ्य १. २. ३.	६१४१	अर्धजाह्नवी २.	४१२२८	" ३.	६१३२
अर्घ्या २.	३१४११	अर्धतूर १.	३१९१३९	अर्कस १. २. ३.	४१४१४५
अर्चना २.	३१६३९	अर्धनाकुल ३.	३१६२१८	अर्कोग्न १.	३१३२०८
अर्चा २.	३१६३९	अर्धनाराच १.	३१७१८१	" ३.	३१८१४९
" २.	६१२१	अर्धपद १.	३११५१	अर्कोग्नी २.	३१३२०३
अर्चिष्मत् १.	११२१६	अर्धपद्मासन ३.	३१६२११	अर्हक १. २. ३.	५१४१३६
अर्चिस् ३.	११२२९	अर्धमुकुट १.	१११४७	अर्हणा २.	३१६३९
" २. ३.	६१५६	अर्धमाणव १.	४१३१३९	अर्हत् १. २. ३.	१११३५
" २. ३.	७१५३२	अर्धमानव १.	३१९६५	" १.	६१५६
अर्जक १.	३१३११९	अर्धमानुष १.	३१९६५	अलक १.	४१४९८
अर्जुन १.	३१३३९	अर्धमायूरी २.	३१९१३१	अलकाम्बलिक १.	४१३९६
" ३.	३१३२३५	अर्धमास १.	२११७९	अलक्त १.	४१३१५३
" १.	५१३१०	अर्धमासुतम १. २. ३.	५१११९	अलक्ष्मी २.	१११४२
" १. २. ३.	७१५५	अर्धमुष्टिक १.	४१४८०	अलगर्भ १. ३.	४१११९
अर्जुनी २.	४१२२६	अर्धरात्र १.	८१९५२	अलङ्कारिण्यु १. २. ३.	५१४४१
" २.	७१५५	अर्धरात्रक १.	२११६६	अलङ्कर्मिण १. २. ३.	५१४७२
" २.	८१२१५	अर्धरूपक १.	३१८३७	अलङ्कार १.	४१३१३३
अर्ण १. ३.	२१४२१	अर्धर्च १. ३.	८१९२८	अलङ्कारसुवर्ण ३.	३१२२२
अर्णव १.	४१२१२	अर्धशक्य ३.	३१७१८१	अलङ्कामारि १. २. ३.	५१४५३
अर्णसू ३.	४१२१	अर्धसूची २.	३१६२१५	अलम् ४.	८१७१३
अर्णिका २.	४१४४	अर्धहस्तक १.	३११५८	अलम्बक १.	३१३६४
अर्ति २.	३१७१७८	अर्धहार १.	४१३१४०	अलर्क १.	३१७३९
" २.	६१२१	अर्धोलक ३.	४१३१२२	अललोहित १.	११२४०



अलस १. ४४१३५  
 „ १. २. ३. ५४१५५  
 „ १. २. ३. ७५१५५  
 अलसान्द्र १. ३६८४६  
 अलस्फुटिन् १. ३६११२  
 अलात ३. १२३३२  
 अलावू २. ३३३१६७  
 अलि १. २३३४२  
 अलि (-न्) १. ४१३३२  
 अलिक ३. ४४१९६  
 अलिङ्ग ३. ३६११६२  
 अलिक्षर ३. ४३१५६  
 अलिन् १. २३३३२  
 „ १. ८६११४  
 अलिन्द १. ४३३४५  
 अलिप्रिय १. ८११५९  
 अलीक १. २. ३. २४११७  
 „ ३. ७३३२  
 अलीमक ३. ३११५७  
 अलोचक ३. ४३१११४  
 अल्प १. १२१५३  
 „ १. २. ३. ५४१३६  
 अल्पतनु १. २. ३. ५४१५  
 अल्पतुम्बी २. ३३११६८  
 अल्पपच १. ३३११२०  
 अल्पपल्लव ३. ४२१६  
 अल्पपुष्प ३. ३३३७०  
 अल्पफला २. ३३११७५  
 अल्पमात्र १. ३३११२१  
 अल्पहृदि १. ३३११३  
 अवकटा २. ३११८६  
 अवकर १. ४३१५२  
 अवकरालय १. ३६११११  
 अवका २. ३६१६०  
 „ २. ४२१४८  
 „ २. ४२१४९  
 अवकाश १. २११७  
 अवकीर्णिन् १. २. ३. ३६११३  
 अवकील १. ३६१२६  
 अवकेशिन् १. २. ३. ३३३८  
 अवक्र १. २. ३. ५४१२४

अवक्रय १. ३६१७०  
 अवक्षेपणी २. ३७११४  
 अवखात १. ४११३  
 „ १. ४२१७  
 अवगति २. ३६११६४  
 अवगाह १. ४३१६१  
 अवगीत १. २. ३. ३६१२२  
 „ १. २. ३. ८५११  
 अवग्रह १. ८११४  
 अवग्राह १. २२१४  
 अवघात १. ४३१६६  
 अवचूड १. ३७१३४  
 अवच्छेद १. ३६१३३  
 अवज्ञा २. २४१३०  
 „ २. ३६१७२  
 अवज्ञात १. २. ३. ५४१५५  
 अवट १. २३३४  
 „ १. ३११५४  
 „ १. ४११३  
 अवटीट १. २. ३. ५४१२  
 अवटु १. २. ४११८५  
 „ १. २. ८१६९  
 अवटोमनहस्त १. ४११८१  
 अवतंस १. ८११५९  
 अवतमस ३. २११६३  
 अवतरण ३. ८३१३३  
 अवतार १. ४२१२०  
 „ १. ५३१२३  
 „ १. ८११५  
 अवतारण १. २. ३. ३९११४१  
 अवतीर्ण १. २. ३. ५४१५५  
 अवतोका २. ३११४७  
 अवदात १. ५३११०  
 „ १. २. ३. ८११३  
 अवधारण ३. ३६१२८  
 अवदाह १. ३३१२३२  
 अवद्य १. २. ३. ५४१७५  
 अवधारणा २. २४१४०  
 अवधि १. ४११३  
 अवधीरण ३. ३७१३३  
 अवध्वस्त १. २. ३. ८११४

अवनाट १. २. ३. ५४१२  
 अवनि २. ३११४  
 „ २. ३३१६७  
 अवन्ति १. ३. ३११३७  
 अवन्तिसोम ३. ४३१८२  
 अवन्ती २. ४३१९  
 „ २. ४४१२७  
 अवन्ध्य १. २. ३. ३३१८  
 अवपात १. ३७१५२  
 अवभट १. २. ३. ५४१२  
 अवम १. २. ३. ५४१७५  
 अवमर्द १. ३७१२०७  
 अवमानना ३. ३६१७२  
 अवमुण्ड १. २. ३. ३६१६  
 अवयव १. ४४१५५  
 अवर ३. ३७१७८  
 (अपर)  
 अवरक्षणी २. ३७११२  
 अवरज १. ४४१३१  
 „ १. २. ३. ५४१४  
 अवराविला २. २११७६  
 अवरीण १. २. ३. ५४११०  
 अवरोट १. ३११६०  
 अवरोध १. ४३१३६  
 अवरोह १. ३३१३२  
 „ १. ८११५  
 अवरोहक २. ३६१३३  
 अवर्ण १. ३. २४१३२  
 अवर्णवाद १. २४१३३  
 अवलम्ब १. ४४१६७  
 अवलेप १. ८१११५  
 अवलोक १. ३११९०  
 अवलोर्ण १. ८१११६  
 अवलोलुक १. ५४१५२  
 अवलुज १. ३३११०८  
 अवश्यम् ४. ८६१२  
 अवश्याय १. २२१९  
 „ १. ८११३  
 अवष्टम्भ १. २. ३. ८११४  
 „ १. ८११४

[ अवसविक्या ]

वैजयन्तीकोषः

[ अष्टावक्र ]

अवसविक्या २.	३१६१५०
अवसर १.	५१२१७
अवसाद १.	३१६१९१
अवसादनी २.	३१३१९१
अवसित १. २. ३.	८१४३
अवसुधिरा २.	४१४८४
अवस्कन्द १.	३१७२०३
” १.	३१८१७
अवस्कर १.	८१११५
अवस्था २.	५१२२
अवहित्या २. ३.	३१९८६
अवहेल ३.	३१६१७२
अवाक ४.	८१८१९
अवाकश्रुति १. २. ३. ५१४१३	
अवाच् १. २. ३. ५१४१४	
” ४.	५१४९१
अवाची २.	२११५
अवाचीन १. २. ३. ५१४९१	
अवाच्य १. २. ३. २१४१६	
अवान्तरदिशा २.	२११३
अवार ३.	४१२३२
अवि १.	३१४६४
” १.	५१४४
” १. २.	६१५४
अविदूष ३.	३१८१४७
अविन १.	७११९
अविनीत १. २. ३. ५१४३१	
अविनीता २.	४१४१२
अविमरीस ३.	३१८१४७
अविरत १. २. ३. ५१४१३०	
अवलम्बित १. २. ३. ५१४९४	
” १. २. ३. ५१४१२५	
अविला २.	३१४६५
अविशेष १.	३१६२०५
अविष १. २. ३. ७१५१२	
अविषाद १.	३१७२८
अविसोढ ३.	३१८१४७
अविस्तर १.	२१४४०
अवीची १.	११२३७
अवीरा २.	४१४२०
अन्यक्त ३.	३१६१६२
” १. २. ३. ७१५१३	

अव्यय १.	३१३१९१
अव्यथा २.	३१३१७८
” २.	३१८८९
अव्यथिष १. २.	८१५१
अव्यय १. ३.	१११४८
” ३.	८१७१
अव्यादा २.	३१८५८
अशन ३.	४१३७५
” ३.	४१३१०२
अशानाया २.	३१६१८२
अशानायित १. २. ३. ५१४३६	
अशानि १. २.	२१२६
” १. २.	२१२६
” १. २.	७१५१५
अशिक्ष १. २. ३.	३१६६
अशित १. २. ३. ५१४१०७	
अशिरस् १.	३१७२१६
अशिरस्क १.	८१११६
अशिक्षिषा २.	३१६१८२
अशिक्षी २.	४१४२०
अशीतांशु १.	२११११
अशीति २.	५११२७
अशूर १. २. ३. ३१७१४७	
अशोक १.	३१३४०
अशोकवनिता २.	११२४४
अशोका २.	३१८८६
अशोभनस्वर १. २. ३.	
” ५१४४८	
अश्मकुट्टक १.	३१९२२
अश्मगर्भ ३.	३१२३८
अश्मज ३.	३१२१६
अश्मन् १.	३१२८
” १.	३१६१०२
अश्मन्त ३.	४१३१०४
अश्मन्तक १	३१६१९४
अश्मन्तिका २. ३. ८१८३२	
अश्मरी २.	४१४१२८
अश्मरीरिपु १.	३१३४१
अश्ममारक १.	३१२३४
अश्म १.	४१३५२
अश्मान्त १. २. ३. ५१४१३०	

अश्रि २.	४१३५२
अश्रु ३.	३१९८७
अश्रुष्टार्थ १. २. ३. २१४१७	
अश्व १.	१११३०
” १.	३१७९०
” १.	८१६१७
अश्वकन्द १.	३१६१२८
अश्वकर्ण १.	३१३३८
अश्वखुरी २.	३१३१३४
अश्वगन्धी २.	३१३१२८
अश्वतर १.	३१७१०८
अश्वस्थ १.	३१३२७
अश्वपण्य १.	३१५१२
” १.	३१५७१
अश्वपोत १.	३१७१०७
अश्वम्रिय १.	३१८५२
अश्वबडव १ द्वि.	८१९५१
अश्वमारक १.	३१३१९२
अश्वमुख १.	११३३
अश्वयुज २.	२११४२
अश्वरिपु १.	३१३१९२
अश्ववाल १.	३१३२२७
अश्वा २.	३१७१०७
अश्वारि १.	३१४८
अश्विन् १ द्वि.	११३२
अश्विनी २.	२११४२
अपाढा १ व.	२११४३
अष्टकर्मपरिअष्ट १.	१११३५
अष्टप्रास १. २. ३. ३१६१३३	
अष्टपाद १.	३१४३२
अष्टम १. २. ३. ५११२०	
अष्टमक १. २. ३. ५११५०	
अष्टमकालमुज् १. २. ३.	
” ३१६१२६	
अष्टमङ्गल १.	३१७९३
अष्टमान ३.	५११५३
अष्टमिका २.	५११५०
अष्टवर्ग १.	३१७९
अष्टाङ्ग १.	३१६२०८
अष्टापद १. ३.	८१५२
अष्टावक्र १.	३१६१५७

अष्टी २.	३१६११६
” २.	३१२१
अष्टीला २.	४४१११३
अष्टीवत् १. ३.	४४१५९
असक्त १. २. ३.	५४११३०
असङ्ग्रह १.	३१६१२०९
असव ३.	३१६११६२
असती २.	४४१९
असतीसुत १.	४४१४३
असदभ्येतु १. २. ३.	३१६१११
असन १.	३१६१३९
असम्पुष १.	११११५
असम्पुषत १. २. ३.	८१४४
असहन १.	३१७४१
असार १. २. ३.	५४१७६
असि १.	३१७१५८
” १.	३१७१५९
” १.	८१६१६
असिक्ती २.	३१७३९
असित १.	२११३५
” १.	२११७९
” १.	३१९१४९
” १.	५३१११
असितानन १.	३१४१४०
असिद १.	३१८१३०
असिधावक १.	३१९१५
असिधेनुका २.	३१७१६३
असिपत्त्रिका २.	३१३१९७
असिपुत्री २.	३१७१६३
असिप्लव ३.	४११५५
असु १ व.	३१६१२०३
असुर १.	११३१९
” १.	३१७१६१
” १.	३१८१२४
असुरभि १.	५३१४७
” १.	५३१४८
असुराचार्य १.	२११३३
असुराह्वय ३.	३१२१८
असुषचिका २.	३१८१२९
असूया २.	३१६११८४
असुर्ध्वज ३.	३१६११७२

असृक्कर १.	४४११०४
असृग्धरा २.	४४११०३
असृज् ३.	४४११०६
असोढ १.	३१७१६९
असोल १.	५३१३६
अस्त १.	३१२१६
” १. २. ३.	५४१९७
अस्तम् ४.	८१८१६
अस्तमयाचल १.	३१२१६
अस्तिमत् १. २. ३.	५४१५७
अस्तु ४.	८१७१३
अस्तेय ३.	३१६१२०९
अन्न ३.	३१७१५७
अन्नग्राम १.	५१११७
अन्नजीवन १. २. ३.	३१७१४३
अस्त्रशासन ३.	३१६१३०
अस्त्रिन् १. २. ३.	३१७१४३
अस्थान ३.	३१७५६
” १. २. ३.	४१२१९
अस्थि ३.	४४११०८
” ३.	४४११०८
अस्थिखाद १.	३१४१००
अस्थितेजस् ३.	४४१११०
अस्थिपक्षर ३.	४४१११४
अस्थिमत् १.	३३११३०
अस्थिर १. २. ३.	५४११६८
अस्थिप्रेमन् १२३.	५४१२६
अस्थिसङ्घात १.	३३११३०
अस्थिसज्जन १.	४४११३०
अस्थिसम्भव ३.	४४१११०
अस्थिस्नेह १.	४४१११०
अस्पन्दनस्थिति २.	३१९१८९
अस्फुटभाषण १. २. ३.	५४१४७
अस्मद् १. २. ३.	८१९१४९
अस्मिता २.	३१६११६९
अन्न ३.	४४११०५
” १. ३.	३१५७
अन्न ३.	३१९१८७
अन्वम १.	११११३

अह ४.	८१७१२
अहंयु १. २. ३.	५४१२९
अहङ्कार १.	३१६१६९
अहङ्कारिन् १. २. ३.	५४१२९
अहत ३.	४३१२०
अहन् ३.	३११५६
अहमहमिका २.	३१६१७१
अहम्पूर्विका २.	३१६१७०
अहर्गण १.	३१६१८४
अहर्षति १.	२१११२
अहर्मुख ३.	२११६८
अहस्कर १.	२१११२
अहस्तान १.	११२२६
अहह ४.	८१७३२
अहार्य १.	३१२११
अहि १.	४११५
” १.	६११५
अहिंसा २.	३१६१२०९
अहिक १.	४११४३
अहिच्छत्र १ व.	३११२६
” ३.	३३११५३
अहित १.	३१७४०
अहिनिवयनी २.	४११२१
अहिपताक १.	४१११८
अहिपृष्ठ ३.	३१७५३
अहिभय ३.	३१७१५
अहिर्बुध्न्य १.	१११४२
अहिमतिन् १. २. ३.	३१६१३१
अहीन १.	३१६१८५
” १.	३१६१८५
अहीरिणि २.	४११२०
अहेरु २.	३३१४२
अहो ४.	८१८१६
अहोत्र ३.	३१६१९६
अहोरात्र ३.	२११५५
अह्नाय ४.	८१८१

आ

आ ४.	८१७११
” ४.	८१७१२

[ आ ]

वैजयन्तीको

[ आख्य ]

आः ४. ८७१२  
 आकम्पित १.२.३. पा३१५  
 आकर १. ३११०  
 " १. पा११२  
 " १. ७११९  
 आकर्णक १.२.३. ४३१०८  
 आकर्णकर्षण ३. ३११९१  
 आकर्ष १. ३७७२  
 " १. ७११३  
 आकलन ३. ८३१३  
 आकल्प १. ४३१३२  
 आकार १. पा२१२२  
 " १. ७११७  
 आकारगोपना २. ३११८६  
 आकारणा २. २१३३०  
 आकालिकी २. २१२४  
 आकाश १. ३. २११२  
 आकीर्ण १.२.३. पा३११०  
 आकुल्य ३. ४३१३८  
 आकृत ३. ३६१७४  
 आकृति २. ३६१७४  
 आकृति २. ७११२  
 आक्रन्द १. ७११५  
 आक्रम १. पा२११६  
 आक्रीड १. ३३३३  
 आक्रोश १. १३३२  
 आक्षारण ३. २३३४  
 आक्षरित १.२.३. ३६१११  
 आक्षिप्त १. २. ३. पा३६७  
 आक्षेप १. ७११०  
 आक्षेपक १. ४३१३६  
 आक्षोड १. ३३३४६  
 आखण्डल १. १२३६  
 आखनिक १. ३३३६  
 आखु १. ४१३१  
 " १. ६१३७  
 आखुखुज् १. ३३३७१  
 आखुयान १. १११५४  
 आखेट १. ३१३३९  
 आखोर १. २१३८८  
 आख्या २. २३३३१

आख्यान ३. २३३३८  
 आख्यायनी २. २३३२५  
 आख्यायिका २. २३३३८  
 आगन्तु १. ३६३६८  
 आगम १. ७१३८  
 आगस् ३. ३७३४७  
 " ३. ८३३१६  
 आगू (-अगुर्) २. ३६३४७  
 आग्निमास ३. ३६३५२  
 आग्नीध्री २. ३६३५४  
 आग्नेय ३. २१३९०  
 " १. २१३९०  
 " १. २१३९२  
 " ३. ३६३५५  
 " १. ३६३५२  
 " ३. ४३३१०६  
 " १. २. ३. पा३११८  
 आग्नेयी २. २१३४  
 " २. २१३९१  
 आग्रह १. ७१३२  
 आग्रहायणिक १. २१३८१  
 आग्रहायणी २. २१३३८  
 " २. २१३७४  
 आग्रायणी २. २१३७४  
 आघट्टिका २. ३७३२५  
 आघात १. ७१३८  
 आघारण १. ३६३१००  
 आङ्गलौकिक १. ३६३१९८  
 आङ्गिक १. २. ३. ३७३९९  
 " १. ३. ४३३१२८  
 आङ्गिरस १. २१३३३  
 आचाम १. ४३३०८  
 आचार १. ३६३११५  
 आचारा २. ११३१६  
 आचार्य १. ३५३५६  
 " १. ३६३२२  
 " १. २. ८१३४४  
 आचार्या २. ४३३२३  
 आचार्यानी २. ४३३२२  
 आचित ३. पा१३६२  
 " १. २. ३. पा३११५

आच्छादन ३. २१३६४  
 " ३. ४३३११६  
 " ३. ८३३३  
 आच्छुरित ३. ४३३११२  
 आच्छुरितक ३. ३१३८४  
 आच्छोटन ३. ३१३३८  
 आजक ३. पा१११०  
 आजान ३. पा२११  
 आजानज १. ११३६  
 आजानेय १. ३७३९४  
 आजि २. ६२३३  
 आजीव १. ३६३१  
 " १. ३. ३. पा३१३६  
 ( आजिल )  
 आज्ञा २. ३७३३४  
 " २. ३७३४८  
 आज्ञागणिका २. ३७३३४  
 आज्य ३. ३६३३८  
 " ३. पा१३५१  
 " ३. ६३३२  
 आज्याधिवासन ३. ३६३९०  
 आज्याधिअयण ३. ३६३९०  
 आज्यावेक्षण ३. ३६३९०  
 आटक १. २३३१८  
 आठरूप १. ३३३१०१  
 आदि ३. २३३११  
 आटोप २. ३१३८९  
 आढम्बर १. ३१३३८  
 " १. ३. ८१३४४  
 आधिष्ठिक ३. ३६३६  
 आढक ३. ४३३४१  
 " १. पा१३६३  
 आढकिक १.२.३. ३६३२१  
 आढकी २. ३२३१७  
 " २. ३६३४८  
 आढा २. ४१३३३  
 आढिक ३. ४३३१०८  
 आख्य १. २. ३. पा३१५७



# आणवीन ]

आणवीन १.२.३.	३८१२०
आतङ्क १.	७११९
आतञ्जन ३.	३८११४४
” ३.	८३३४
आततायिन् १.२.३.	५४१६८
आनति २.	२११६२
आतप १.	१२३३१
” १.	२११२२
आतपत्र ३.	३७११६
आतर १.	४२११८
आताना २.	३३११८६
आतपिन् १.	२१३२८
आताल १.	३७११३
आति २.	२३१११
आतिथ्य १.२.३.	३६१६७
” १.	३६१६८
आतिवाहिक १.	१२३३८
आतुर १.२.३.	४४११४४
आतोद्य ३.	३९१११४
आत्तगन्ध १.२.३.	५४१६७
आत्मगुप्ता २.	३३१२२९
आत्मघोष १.	२३११५
आत्मज १.२.	४४३३९
आत्मन् १.	६११६
आत्मनीन १.	८५३३
आत्मन् १.	७११६
आत्मम्भरि १.२.३.	५४१५०
आत्मयोनि १.	८१११६
आत्मसम्बन्ध १.	११११४८
आत्माशिन् १.	४११४१
आत्मीय १.२.३.	३७१४३
आत्रेय १.	४४११०४
आत्रेयी २.	४४११५
आथर्वण ३.	३६१३७
” ३.	४३१२०
आदर्श १.	४३१३६२
आदान ३.	३७११८९
आदाली २.	३३११६२
आदि १.	५४१७६
आदितेय १.	१११३
आदित्य १.	१११३

# शब्दानुक्रमणिका

आदित्य १.	११११९
” १.	१३१८
” १.	२१११५
आदिदेव १.	१११५
आदिम १.२.३.	५४१०६
आदीनव १.	५२१४
आहत १.२.३.	७४१२
आदेशिन् १.	३७१२५
आद्य १.२.३.	५४१७६
” १.२.३.	६४१३
” १.	६५१७
आद्यून १.२.३.	५४१५१
आधान ३.	३६१६९
आधानिक ३.	३६१३
आधार १.	४२१६
” १.	७११५
आधि १.	६११७
आधिक १.	३८१७०
आधूत १.२.३.	५४१९५
आधेय ३.	३६१६९
आधोरण १.	३७१८८
आध्यात्मिक १.	३६१२०८
आन १.	३६१२०४
आनक १.	३९११३३
” १.३.	३९११३४
आनककुन्दुभि १.	१११२६
आनत १.२.३.	५४१८३
आनद्ध ३.	३९१११५
आनन ३.	४४१८६
आनन्द १.	३६११८८
आनन्द्वन ३.	३६११८६
आनन्दना २.४.	२१११८
आनर्त १.	७११४
आनाय १.	३६१७
” १.	७११४३
आनाह १.	३११६१
” १.	४४११२८
” १.	५२१५
आनील १.	३७११००
आनुपूर्वी २.	३९१११४
आनुपूर्व्य ३.	३६१११३

# [ आभिगामिकगुण

आन्तरालिक १.	३५१११९
आन्त्र ३.	३४१११३
(अन्त्र)	
आन्दोल १.	३७११३७
आन्दोलन ३.	३७११३७
आन्धसिक १.२.३.	४३१९२
आन्वीक्षकी २.	३६१३१
आपगा २.	४२१२३
आपण १.	४३१३४
आपद् १.	३६११९१
आपन ३.	५२११३
आपन्न १.२.३.	५४११०९
” १.२.३.	७४१२
आपन्नसत्वा २.	४४११६
आपमिष्यक ३.	३८१६
आपव १.	३६११५५
आपाण्डुफल १.	३३११६६
आपात १.	७११९
आपान ३.	३९१५०
आपिक्कलक १.	३६११२२
आपिञ्जन	३८१११४
आपीड १.	४३११५४
आपीन ३.	३४१५१
आपूपिक ३.	५४१११
आस १.२.३.	३७१४३
” १.२.३.	३८१९
” १.२.३.	५४१९९
आप्रपदीन १.२.३.	
	४३११२१
आप्राप्त १.	३६१९१
आप्लव १.	४३१११३
आप्लाव १.	४३१११३
आप्लुत १.२.३.	७४१३
आबद्ध १.२.३.	३७११४२
आबन्ध १.	३८१२८
आबर्हित १.२.३.	५४११००
आबुक् १.	३९११०६
आभरण ३.	४३११३३
आभा १.२.३.	५४११२२
आभाषण ३.	२४१२३
आभिगामिकगुण १.	३७१४
” १.	३७१८

आभीर ]

आभीर १.	३१५६
" १.	३१५९
" १.	३१५२८
आभीरपक्षी २.	३१५३२
आभील ३.	११२३९
" १. २. ३.	३१५०९
" १. २. ३.	७१४२
आभोग १.	७११७
आभ्यन्तरवृत्त ३.	३१५७४
आम् ४.	८१८१७
आम १.	४१४१३८
" १.	६१५७
आमण्ड १.	३१३६५
आमनस्य ३.	११२३९
आमन्त्रण ३.	२१४३१
आमन्त्रणिक ३.	३१६३३
आमपात्र ३.	३१६६४
आममांसक १.	५१३७६
आमय १.	४१४१३८
आमयाविन् १. २. ३.	४१४१४५
आमलक १. २. ३.	३१३१७७
आमिषा २.	३१६१८
आमिष १.	३१७४६
" ३.	४१४१०७
" १.	४१४११४
" ३.	५१३५५
आमिषाशिन १. २. ३.	५१४५०
आमिषी २.	३१८१००
आमुक्त १. २. ३.	३१७१४२
आमुप्यायण १. २. ३.	५१४५३
आमोद १.	५१३५०
" १.	७११७
आम्नाय १.	७११३
आम्न ३.	३१३२१
" १.	३१३२५
आम्नात १.	३१३३१
आम्नेहन ३.	५१२९
आम्नेहित १. २. ३.	२१४२२

आय १.	३१७४४
आयत १. २. ३.	५१४८१
आयति २.	७१२३
आयत्त १.	३१५४
" १. २. ३.	५१४२८
आयस्क ३.	३१६१७८
आयश्चलिक १. २. ३.	५१४७४
आयस्त १. २. ३.	७१४३
आयान ३.	३१७११६
आयाम १.	३१६१६७
" ३.	३१७१९१
" १.	५१२५
आयास १.	३१६१९३
आयु १.	११२२५
आयुधू २.	३१७१५७
" २.	३१७२०६
आयुध ३.	३१२३३
" ३.	३१७१५७
" ३.	८१६९
आयुधाय २.	३१७१७२
आयुधिक १. २. ३.	३१७१४३
आयुधीय १. २. ३.	३१७१४३
आयुर्वेद १.	३१६२९
आयुर्वेदिन् १. २. ३.	४१४१४४
आयुस् ३.	३१७२२१
" ३.	६१३५
आयोग १.	७११४
आयोगव १.	३१५२२
" १.	३१५२९
" १.	३१५८२
" १.	३१५८६
आयोधन ३.	३१७२०४
" ३.	८१३४
आर १.	२११३१
" १.	३१२२६
आरकूट १. ३.	३१२२६
आरक्ष १.	३१७१८
" १.	३१७७४
आरग्वध १.	३१३४८
आरह १ व.	३११३४

आरह १. २. ३.	३११४६
" १.	३१७९६
आरणिन् १.	२१३१३
आरति २.	५१२३६
आरनाल ३.	४१३८१
आरभट १. २. ३.	३१७१४७
आरभटी २.	३१९१०१
आरम्भ १.	३१९१४०
" १.	५१२१५
आरल्ल १.	३१३६९
आरव १.	२१४३
आरा २.	३१९१३
आराग्र ३.	३१७१८५
आरात् ४.	८१७१६
आराधन ३.	३१६३८
" ३.	८१३४
आराम १.	३१३२
आरालिक १. २. ३.	४१३९२
आराव १.	२१४३
आरु १.	३१३१५४
" १.	५१३२४
आरुह १.	३१८५२
आरेवत १.	३१३४८
आरोग्य ३.	४१४१४२
आरोपित १. २. ३.	५१४१०४
आरोह १.	३१७८८
" १.	७११७
आरोहण ३.	४१३५१
" ३.	५१२१५
आर्ग्वध १.	३१३४८
आर्जिक १. २. ३.	४१४३३
आर्तगल १.	३१३१९०
आर्तव ३.	४१४१६
आर्ति २.	३१६१८७
" २.	३१७१७८
आर्द्र १. ३.	३१३२१४
" १. २. ३.	५१४१०७
आर्द्रक १. ३.	३१३२१४
आर्द्रा २.	२११४०
आर्य १.	३१७२३
" १.	३१९१०६

आर्य १. २. ३.	पा४१६१
” १. २. ३.	६१४३
आर्यक ३.	३१६६६
आर्यपुत्र १.	३१९१०६
आर्या २.	१११५८
आर्यावर्त १.	३११२३
आर्यभ ३.	३१११९
आर्यभी २.	२११४७
आर्यभ्य १. ३.	३१४१५५
आल ३.	३१२१४
आलगन्धिका २.	३१७३४
आलम्भ १.	७१११०
आलय १.	४३११८
आलवाल ३.	४१२१०
आलस्य ३.	३१६१५८
” १. २. ३.	पा४४५५
आलान ३.	३१७८२
” ३.	७३३३
आलाप १.	२१४२३
आलावर्त १.	४३१५९
आलास्य १.	४१०५३
आलि १.	४११३२
” २.	पा११२४
” २.	६१२३
आलिङ्गन ३.	४३१७०
आलिङ्ग्य १.	३१९१२९
आलिन्द १.	४३१४५
आली २.	३१८२६
” २.	४१४२५
आलीढ ३.	३१७१८७
आलु २.	४३१५७
आलुक १.	पा३१४४
आलेख्यलेखा २.	३१९२४
आलेप १.	४३१४७
आलोक १.	११२३१
” १.	७११८
आवतारिक १.	४११४३
आवन्त्य १.	३१५५३
” १.	३१५१०१
आवपन ३.	४३१६२
आवर्जन ३.	पा२१४०

आवर्त १.	४२१३०
आवर्तन ३.	३१९११
” ३.	पा२१४१
आवल्लि २.	पा११२४
आवसथ १.	४३१८
आवसथ्य १.	११२२५
” १.	४३१२७
आवसित १. २. ३.	३१८६७
आवाप १.	३१७१४
” १.	७११६
आवापक १.	४३१४४
आवाल ३.	४२११०
आवालि २.	४३३३५
आवाह १.	४२१६
आविः (-स्) ४.	८१८१८
आविक १.	४३१२९
आविद्ध १. २. ३.	पा४१२३
” १. २. ३.	७१४२
आविध १.	३१९१८
आविल ३.	४२१४
आविश १.	३१६१६१
(आवश)	
आवृत्त १.	३१९१०७
आवृत् २.	३१६११३
” २.	३१६११४
आवृत्त १.	३१५५
” १.	३१५९०
” १. २. ३.	पा४९६
आवेग १.	३१९८९
आवेशन ३.	४३१२२
आवेशिक १.	३१६६८
आवेष्टक १.	४३१४
आर्षसित् १. २. ३.	पा४४३
आर्षसु १. २. ३.	पा४४३
आर्षाङ्का २.	३१६१७६
आशय १.	३१६१७४
” १. २. ३.	पा४११४
” १.	७१५१७
आशर १.	११२४१

आशा २.	२११२
” २.	६१२३
आशावन्ध १.	४११३५
आशासन ३.	३१६१२०
आशितम्भव १.	८१५२५
आशिर १.	११२१९
” १.	७११६
आशिस् २.	६१२२
आशीविष १.	४११५
” १.	४११३
आशु ३.	३१२२२
” १. २. ३.	पा४१२५
आशुत १.	११२४९
” १.	७११९
आशुशुषणि १.	८११५०
आशोचनि १.	३१११६
आश्रय १. २. ३.	३१९७८
आश्रम १. ३.	४३१२६
” १. ३.	७१५१६
आश्रय १.	३१७६
आश्रयाश १.	११२१७
आश्रव १.	पा२१४
” १.	पा२३७
” १. २. ३.	पा४४९
आश्लेष १.	४३११६९
आश्लेषा २.	२११४३
आश्व ३.	पा१११०
आश्वकिनी २.	२११४२
आश्वस्य ३.	३३१२२
आश्वयुज १.	२११८५
आश्वस १.	३१६२०५
आश्विक १.	३१५७१
आश्विन १ द्वि.	१३१६
” १.	२११८५
आश्विनी २.	२११७६
आश्विनेय १ द्वि.	१३१६
आश्वीन १. २. ३.	३१७१०८
आश्वीय ३.	पा१११०
आषाढ १.	२११८४
” १.	३१२३

आषाढ ]

आषाढ १.	३।६।१८
आषाढी २.	२।१।७६
आस १.	३।७।१७२
„ १.	५।३।२८
आसक्त ३.	२।१।६२
आसक्त ३.	३।१।१३
„ १.	३।७।१५९
आसन ३.	३।६।२।०
„ ३.	३।७।६
„ ३.	४।३।१६४
„ ३.	५।३।४०
„ ३.	७।३।३
आसना २.	५।२।१४
आसन्दी २.	४।३।१६०
„ २.	४।३।१६४
आसन्न १. २. ३.	५।४।१४१
आसव १.	३।३।२।७
„ १.	३।९।४७
„ १.	३।९।४९
„ १.	३।९।५१
„ १.	३।९।५२
आसादित १. २. ३.	५।४।९९
आसार १.	३।७।२०१
„ १.	७।१।२
आसारी २.	३।१।४२
आसाविक १.	३।५।११२
आसिक ३.	३।७।१९४
आसीन १. २. ३.	५।४।१०
आसुतीबल १.	३।९।४४
„ १.	८।१।५०
आसुर १.	२।३।१७
„ ३.	३।२।३४
„ १.	३।८।१२४
„ ३.	४।४।१०५
आसुरी २.	३।८।४२
आसृति २.	३।९।५१
आसेचनक १. २. ३.	५।४।६५
आस्कन्दन ३.	३।७।२०३

वैजयन्तीकोषः

आस्कन्दित १. २. ३.	३।७।११८
आस्कन्दितक १. २. ३.	३।७।१२०
आस्तरण ३.	४।३।१६६
आस्ताव १.	३।६।११०
आस्तिक १. २. ३.	५।४।३७
आस्था २.	३।८।१३
„ २.	५।२।३७
„ २.	६।२।२
आस्थान ३.	३।८।१४
आस्थानगृह ३.	४।३।२०
आस्थानी २.	३।८।१४
आस्पद ३.	७।३।३
आस्फोटनी २.	३।९।१८
आस्फोट १.	३।३।२९
आस्फोता २.	३।३।१३४
„ २.	३।३।१८५
आस्य ३.	४।४।८६
„ ३.	६।३।३
आस्या २.	५।२।१४
आस्त ३.	३।९।८७
„ १.	६।५।७
आस्वाद्य ३.	४।३।९१
आहत १. २. ३.	२।४।१७
„ १. २. ३.	७।४।३
आहति २.	३।६।८९
आहर १.	३।६।२०४
आहव १.	३।७।२०५
आहवनीय १.	१।२।२४
आहार १.	७।१।८
आहार्य ३.	३।८।११४
„ १. २. ३.	३।९।९९
„ ३.	४।३।७६
आहाव १.	४।२।९
आहिक १ व.	२।१।३७
„ १.	३।६।१५४
आहिण्डिक १.	३।५।४४
(आहिण्डिक)	१. ३।५।९३

[ इच्छु

आहिताग्नि १	३।६।७३
आहितुण्डिक १.	४।१।२५
आहुक ३.	४।३।८
आहुति २.	३।६।६९
आहोपुरुषिका २.	३।६।१७०
आहोस्वित् ४.	८।८।२
आहिक १.	३।६।३२
आह्वय १.	२।४।३१
आह्ला २.	२।४।३१
आह्वान ३.	२।४।३१
इ	
इ ४.	८।१।१०
इच्छु १.	३।३।२२५
इच्छुगन्धा २.	३।३।१४१
इच्छुगन्धिका २.	३।३।१९६
(गण्डिका)	
„ २.	३।३।२२७
इच्छुपालिका २.	३।३।२२६
इच्छुमेद १.	३।३।२२६
इच्छुर १.	३।३।१०१
इच्छुविदारिका २.	३।३।१९६
इच्छुशाकट १. २. ३.	३।८।२२
इच्छुशाकिन १. २. ३.	३।८।२२
इच्छुसूनिका २.	४।३।२५
इच्छुदक ३.	३।१।११
इच्छुवाक् १.	३।३।४९
„ २.	३।३।१६८
इक्ष १.	५।२।२२
इक्षत् १. २. ३.	५।४।६१
इक्षाल १.	१।२।३२
इक्षित ३.	५।२।२२
इक्षुव १. २. ३.	३।३।७८
इक्षुवी २.	३।३।१३९
इच्छा २.	३।६।१७९
„ २.	३।६।१८२
इच्छावसु १.	१।२।५८
इच्छु २.	४।४।११



## इज्जल ]

इज्जल १.	३१३६७
इज्या २.	३१३३९
” २.	३१३१४
इज्याशील १.	३१३७५
इट्ठवर १.	३१३५३
इडा २.	३१३३३
इतर १. २. ३.	५१३२२
इतरथा ४.	८१८२०
इतरेतर १. २. ३.	५१३२३
इतरेषु: (-स्) ४.	८१८१८
इति ४.	८१७१७
इतिकया २.	८१२३३
इतिह ४.	२१३३८
” ४.	८१८२१
इतिहास १.	२१३३८
इत्थम् ४.	८१८२०
इत्थम्भाव १.	५१२२३
इत्थरी २.	४१३१९
इत्वास १.	३१३१९९
इदानीम् ४.	८१८१५
इद्ध ३.	२११२२
इध्म १. ३.	२११८८
” १.	३१६१६
इध्मप्रोक्षण ३.	२१६१०
इध्मवाहक १.	३१६१५७
इन १.	६१५१७
इन्द्विन्दिर १.	२१३१३३
इन्दिरा २.	१११३६
इन्दीवर ३.	४१२३५
इन्दीवरी २.	३१३१४२
इन्दु १.	२११२५
” १.	५११५२
” १.	८१६३३
” १.	८१६३६
इन्द्र १.	११२११
” १.	६१११८
” १.	८१६३३
इन्द्रक ३.	४१३२०
इन्द्रकोश १.	४१३३२
इन्द्रच्छद १.	४१३१३८
इन्द्रजाल ३.	३१३१३

## शब्दानुक्रमणिका

इन्द्रजित् १.	११२१४४
इन्द्रवारद १.	४११२४
इन्द्रधनुस् ३.	२१३३३
इन्द्रनील ३.	३१२१४०
इन्द्रभगिनी २.	१११६२
इन्द्रमद १.	४१३१३६
इन्द्रमह १.	३१३६९
इन्द्रयव १. ३.	३१३७३
इन्द्रलसक ३.	४१३१२६
इन्द्रवस्ति १.	४१३५७
इन्द्रवारुणी २.	३१३१७२
इन्द्रवृद्धि १.	३१३१९८
इन्द्रव्रतादिक ३.	३१३१६
इन्द्रसुरस १.	३१३११८
इन्द्रस्वम् २.	१११६२
इन्द्राणी २.	११२१११
इन्द्राणीमह १.	३१६१५७
इन्द्रायुध ३.	२१३३३
” १.	३१३१९२
इन्द्रावरज १.	१११११९
इन्द्रिय ३.	३१६२०३
” ३.	७१३१४
इन्द्रियग्राम १.	५११११७
इन्द्रियार्थ १.	५१११२
इन्धन ३.	३१६१९६
इन्वका २ व.	३१३३९
इभ १.	३१३६०
इभ्य १. २. ३.	५१३५७
इभ्या २.	३१३१०३
इरम्मद १.	११२१२०
इरा २.	३१९१४५
” २.	६१२१४
इरिण १. २. ३.	३१८११८
” १. २. ३.	७१३१४
इर्वाह १.	३१३१६६
” २.	३१३१७२
इला २.	३११३३
” २.	६१२१४
इलावृत्त ३.	३११३७
इलिक १.	३१३१६३
इली २.	३१३१६०

## [ ईश्वर

इक्ष्वाला २ व.	२११३९
इच ४.	८१८१५
इष १.	२११८५
इषीक १ व.	३११३४
इषीका २.	३१३२३५
इषु १. २.	३१३१८०
इषुधि १. २.	३१३१७९
इष्ट ३.	३१६११५
” १. २. ३.	३१३१३३
” १. २. ३.	५१३१६
इष्टका २.	३१८२५
इष्टि २.	६१२१४
इष्वा १.	६११८
इष्वास १.	३१३१७२
ई	
ईक्षण ३.	४१३१९४
” ३.	७१३१४
ईक्षणिका २.	४१३१११
ईजान १.	२११८४
ईडित १. २. ३.	५१३१६
” १. २. ३.	५१३१०६
ईति २.	६१२१५
ईहस् १.	११३११०
ईप्सा २.	३१६१८०
ईरित १. २. ३.	५१३१९६
ईर्म १. ३.	३१३२१७
ईर्यापयस्थिति २.	
	३१६११६
ईर्या २.	३१६१८४
ईषिका २.	४१३११६
ईली २.	३१९३७
ईहा १.	१११३०
” १. २. ३.	५१३१५८
” १.	८१५३५
ईहाक्षति २.	१११३९
ईहान १.	१११३०
” १.	७१११०
ईशित् १. २. ३.	५१३१५८
ईश्वर १.	१११३०
” १.	३१३३७
” १.	३१३५३

ईश्वर १.	४१४१३५
" १. २. ३.	५१४५७
" १.	७५१३५
ईश्वरप्रिय १.	२३३३५
ईषत् ४.	८८११२
ईषा २.	३८१२७
ईषादन्त १.	३७१६९
ईषान्तबन्धन ३.	३७१३०
ईषिर १.	११२१९
ईहन् ३.	५२१११
ईहा २.	३६१७९
" २.	६२१५
ईहाभृग १.	५५१८
" १.	३७१००
ईहित १. २. ३.	५४१९६
उ	
उ ४.	८७११०
" ४.	८७१११
उक्थ ३.	३६११११
उक्षतर १.	३६१५५
उक्षन् १.	३६१५२
" १.	८६१५
उक्षवश १.	८९१५१
उक्षा २.	४३१५५
उक्ष्य १. २. ३.	४३१९४
उग्र १.	१११४६
" १.	३१५१३
" १.	३१५७२
" १.	३१५७६
" १.	३१५११६
" ३.	३८१२४
" ३.	३८१४८
" १. २. ३.	३९१७९
उग्रगन्ध १.	३३१७५
" १.	८५१५
उग्रगन्धा २.	३३१९७
" २.	३८१०२
" २.	८५१५
उग्रता २.	३६१९२
उग्रधन्वन् १.	१२१६
उग्रविष १.	३३१९३

उग्रा २.	३३१९७
" २.	३८१०२
" २.	८२११४
उग्रिका २.	३६१९२
उचित १. २. ३.	५४१०३
" १. २. ३.	७४१७
उच्च १. २. ३.	५४१८१
उच्चैः (-स्) ४.	८८११९
उच्चण्ड १. २. ३.	५४१९४
उच्चतालक ३.	३९१५४
उच्चन्द्र १.	२११६६
उच्चय १.	४३१३०
उच्चल ३.	३६१७२
" ३.	३७१७५
उच्चलित ३.	३७१७२
उच्चस्वन १.	२४१३
उच्चार १.	४३११९
उच्चारणा २.	३६१३५
उच्चूढ १.	३७१३४
उच्चैः (-स्) ४.	८८११९
उच्चैःश्रवस् १.	१३१११
" १.	८१११९
उच्छिष्टभोजिन् १. २. ३.	
	३६११०
उच्छीर्ष ३.	४२१६७
उच्छुन ३.	२११८३
उच्छूर १.	२११६५
उच्छृङ्खल १. २. ३.	
	५४१३२
उच्छ्राय १.	३३११६
उच्छ्रित १. २. ३.	७४१५
उच्छ्रिताग्रक १. २. ३.	
	५४१८१
उच्छ्रास १.	३११३२
" १.	३६२०४
उज्जट १. २. ३.	३३१४५
उज्जासन ३.	३७२१५
उज्ज्व १.	३८१२
उज्ज १. २.	४३१२६
उज्ज २. ३.	२११३८
उज्जप ३.	४२११६

उड्डराज १.	२११२७
उड्डीन ३.	२३१५०
उड्डिषा १.	१११४५
उत १. २. ३.	५४११२
" ४.	८७११८
" ४.	८८१२
उताहो ४.	८८१२
उत्क १. २. ३.	५४१३४
उत्कट १.	३३१२३०
( इट्कट, तिस्कट )	
" ३.	३६१२१६
" ३.	३८१८०
" ३.	३८१०४
" १. २. ३.	५४१३७
" १. २. ३.	५४१३७
" १. २. ३.	७४१७
उत्कण्ठ १. २. ३.	८९१२७
उत्कण्ठा २.	३६१७८
उत्कर १.	३६१११
" १.	५११३
उत्कलिका २.	३६१७८
" २.	४२१२४
उत्कार १.	५२१२१
उत्कारिका २.	४३१७२
उत्कीर्ण १.	४२१७
उत्कुञ्ज १.	४३१६९
उत्कोच १.	३७१४६
उत्क्रम १.	५२११६
उत्क्रोश १.	२६१३४
उत्क्रिसिका २.	४३१३४
उत्क्रुल १.	५३१४
उत्खात १.	३६१२२९
उत्सैद १.	३६१८३
उत्त १. २. ३.	५४१०७
उत्तंस १.	४३१५४
" १.	८११५९
उत्तस ३.	४३१८९
उत्तम १. २. ३.	५४१६२
" १. २. ३.	७४१६
उत्तमर्णक १. २. ३.	३८१८
उत्तमसाहस १.	५११४१

उत्तमा २.	३३११६०	उत्पिच १.	३३३३५	उदरग्रन्थि १.	४१४१३०
उत्तमाङ्ग ३.	४१४८५	उत्पिष्टा १.	५३११२	उदरत्राण ३.	३१७१५४
उत्तमोत्खात १.	३३६१२३०	उत्प्रास १.	२१४३५	उदरिल १. २. ३.	५१४७
उत्तमोत्तमिक ३.	३३९१५२	उत्प्रेक्षा २.	३३६१७४	उदर्क १.	७१११२
उत्तर ३.	२१४३७	उत्फुल्ल १. २. ३.	३३३९	उदर्चिस् १.	११२१५
” ३.	३३८११६	उत्स १.	३३२७	उद्वसित १. २. ३.	
” १. २. ३.	७५११८	उत्सङ्ग १.	३३७७६		४३३१९
उत्तरच्छुद १.	४३३१६६	” १.	४१४६०	उद्विष्ट ३.	३३८१५०
उत्तराङ्ग ३.	४३३१४३	उत्सन्नामि १.	३३६७१	उदात्त १. २. ३.	३३६३७
उत्तरायण १.	२११९०	उत्सर्जन ३.	३३६११९	” १. २. ३.	८१७६
उत्तरासङ्ग १.	४३३१२३	उत्सव १.	३३६६१	उदान १.	७१११२
उत्तरीय ३.	४३३१२२	” १.	७११११	उदार १. २. ३.	५१४२०
उत्तरेद्युः (-सू) ४. ८१८८		उत्सादन ३.	८३३५	” १. २. ३.	५१४५६
उत्तान १. २. ३.	५१४९०	उत्साधन ३.	४३३११३	” १. २. ३.	७१४४
उत्तानशय १. २. ३.	५१४२	उत्साह १.	३३६१६७	उदारक १.	३३८५९
उत्ताल १. २. ३.	५१४५२	” १.	३३९७६	उदावर्त १.	४११३२
” १. २. ३.	७१४७	उत्साहा २.	३३२१५	उदासीन १.	३३७४०
उत्त्रास १.	३३६१०६	उत्सुक १. २. ३.	५१४३०	उदास्थित १.	३३७२७
उत्थान ३.	४१४१२८	उत्सृष्ट १.	३३३१५१	” १.	८१११९
” ३.	७३३५	” १. २. ३.	५१४०१	उदाहार १.	२१४४१
उत्थित १. २. ३.	३३८११८	उत्सेध १.	७१११०	उदित १. २. ३.	७१४५
” १. २. ३.	५१४५२	उदक ३.	४२१२	उदीची २.	२११५
उत्थुस १.	५३३४०	उदक्या २.	४१४१५	उदीचीन १. २. ३.	
उत्पतन ३.	८३३५	उदग्र १. २. ३.	५१४८१		५१४९१
उत्पतित् १. २. ३.	५१४४२	उदग्रदत् १.	३३७६९	उदीच्य १.	३३१२२
उत्पतिष्णु १. २. ३.	५१४४२	” १. २. ३.	५१४९	उदीर्ण १. २. ३.	५१४५६
उत्पत्ति २.	४१४१८	उदच् ३.	२११८	उदुञ्ज १. २. ३.	५१४९०
उत्पल ३.	३३८१९९	” १. २. ३. ४.		उदुम्बर १ व.	३३१३९
” १.	४११४६		५१४९१	” ३.	३३२२५
” ३.	४२३३४	उदज १.	५२३३१	” १.	३३३२८
” ३.	४२३३५	उदञ्जन ३.	४३३५५	” १. ३.	८१५४
उत्पलावर्त १ व.	३३१३३	उदधि १.	४२३१०	उदुम्बरा २.	४३३४४
उत्पश्य १. २. ३.	५१४५४	उदन्त १.	२१४३९	उदूखल २.	४३३६५
उत्पाट १.	४१४१३७	उदन्त्या २.	३३६१८१	उदूढ १. २. ३.	५१४८०
उत्पादित १. २. ३.		उदन्वत् १.	४२३१०	” १. २. ३.	७१४६
	५१४१००	उदपान १. ३.	४२३९	उद्वत १. २. ३.	५१४११४
उत्पात १.	३३६१९०	उदय १.	३३२३६	उद्वमनीयक ३.	४३३१२०
उत्पाद् १.	३३४३३२	” १.	३३७४४	उद्गाल १. २. ३.	५१४३३१
उत्पादशयन १.	२३३३३४	उदयनीय १.	३३६५८	उद्गात् १.	३३६७९
उत्पिञ्जल १. २. ३.		उदयाद्रि १.	३३२३६	उद्गार १.	४१४१२६
	५१४९४	उदर ३. २.	४१४६७	उद्गाल १.	४१४१२६

[ उद्गूर्ण ]

वैजयन्तीकोषः

[ उपताप ]

उद्गूर्ण १. २. ३.	पा३११४
उद्गाहित १. २. ३.	८१४६
उद्गीव १. २. ३.	पा३१२०
उद्ग १.	८११४२
उद्गन १.	३१९३५
उद्गाटन ३.	४१२११
उद्गात १.	२१४४१
” १.	३१७२४
” १.	४१३३२
उद्गंश १.	४११३५
उद्गण्ड १.	४१४६
उद्गाम १.	११२४६
” १. २. ३.	पा३१३२
उद्गाल १.	३१३६०
” १.	३१९४३
उद्ग्राव १.	३१७२११
उद्गन १.	३१६१०२
उद्गुरण ३.	८१३६
उद्गर्ष १.	३१६६१
उद्गव १.	३१६६१
उद्गान ३.	४१३५४
” ३.	७३१५
उद्गार १.	३१८४
उद्गूम १.	२१४२८
उद्घत १. २. ३.	पा३११००
” १. २. ३.	पा३११२
” १. २. ३.	७१४५
उद्घय १.	४१२२९
उद्घन्ध १.	३१५४१
उद्घन्धपम १.	३१६१२२
उद्घुद्ध १. २. ३.	३१३१९
उद्घुहित १. २. ३.	पा३११००
उद्घव १.	४१४१८
उद्घिज १. २. ३.	४१४१
उद्घिद् २.	४१४१
उद्घिद् ३.	३१८१२२
” १.	४११८
” १. २. ३.	४१४१
उद्घ्रम १.	पा२१३३

उद्यत १. २. ३.	पा३११४
उद्यम १.	३१६१६७
” १.	पा२१३४
उद्यान ३.	३१३३
” ३.	७३३४
उद्युक्त १. २. ३.	पा३३०
उद्योग १. ३.	पा२१२५
उद्योत १.	२१११६
उद्ग १.	४११५४
( द्र )	
उद्गकलाहक १.	३१८१०१
उद्गर्तन ३.	४३११३
उद्गन्त ३.	३१७६८
” १. २. ३.	पा३११४
उद्गासन ३.	३१७२१४
” ३.	८३१५
उद्गाह १.	३१६५५
उद्गेग १.	३१६१६७
” ३.	४३१०६
” १.	पा२१३३
उद्गेगकर्तरी २.	पा३१०८
उद्गुर १.	४१३१
उद्ग १. २. ३.	पा३१०७
उद्गत १. २. ३.	पा३१८१
उद्गतनासिक १. २. ३.	पा३१६
उद्गतानत १. २. ३.	पा३१८३
उद्गति २.	पा२१२४
उद्गाम १.	पा२१२४
उद्गाल १.	३१८५५
उद्गिद् १. २. ३.	३१३१९
उद्गत्त १.	३१३७६
उद्गदिष्णु १. २. ३.	पा३१४१
उद्गनसू १. २. ३.	पा३१३४
उद्गन्ध १.	३१७२११
उद्गन्ध १.	३१९४०
उद्गाम १.	३१६१७७
उद्गान ३.	पा११५६
उद्गपित १. २. ३.	३१३१९

उन्मीलन ३.	३१९९०
उन्मीलित १. २. ३.	३३३१९
उन्मुख १. २. ३.	पा३१५४
” १. २. ३.	पा३१९०
उन्मूलित १. २. ३.	पा३११००
उन्मेष १.	३१९९०
उप ४.	८१७१८
उपकण्ठ १. २. ३.	३१८१२०
” १. २. ३.	पा३१४१
उपकर्या २.	४३३३०
उपकषप १.	३३३११३
उपकार १.	पा२१२२
उपकारिका २.	४३३३०
उपकार्या २.	४३३३०
उपकुञ्जिका २.	३१८१८५
” २.	३१८१८७
उपकुर्वाण १.	३१६१८
उपकुल्या २.	३१८१७७
उपक्रम १.	२१४४१
” १.	३१६१२५
” १.	पा२११५
” १.	८१११८
उपक्रिया २.	पा२१२२
उपक्रोश १.	३१६१९३
उपखिल ३.	३१६३३३
उपगूहन ३.	४३३१६९
उपग्रह १.	८१११८
उपग्राह्य ३.	३१७४५
उपग्र ३.	४३३१२२
उपचर्या २.	४३३१३९
अपचार १.	८१११७
उपचित १. २. ३.	पा३१५७
” १. २. ३.	पा३११०८
उपचित्रा २.	३३३११३
उपच्छन्दन ३.	२१४२३
उपजाप १.	३१७१३
उपजिह्विका २.	४११३८
उपजोषम् ४.	८१८१७
उपज्ञा २.	३१६१२५
उपताप १.	८१११९



[ उपस्यका ]

शब्दानुक्रमणिका

[ उपानह ]

उपस्यका २.	३।२।९	उपरचण ३.	३।७।५९	उपसत्र १.२.३.	५।४।१०४
उपत्रिंश १. २. ३. ४.	५।१।३५	उपरति २.	४।२।३६	उपसम्पन्न १. २. ३.	३।७।२२०
उपदंश १.	३।१।५२	उपरथ्या २.	४।३।१६	" १. २. ३. ४।३।९४	
" १.	४।३।८६	उपरमग ३.	५।२।३६	" १. २. ३. ८।५।२६	
" १.	४।४।३२	उपराग १.	२।१।३०	उपसम्भाषण ३.	२।४।३३
उपदा २.	३।७।४५	उपराम १.	५।२।३६	उपसर्ग १.	३।६।१९०
उपदीका २.	४।१।३८	उपरि ४.	८।८।१९	उपसर्जन ३.	५।४।६४
उपदेहिका २.	४।१।३८	उपरिष्ठात् ४.	८।८।१९	उपसर्ग २.	३।४।४६
उपद्रव १.	३।६।१९०	उपरिस्थूणा २.	४।३।४१	उपस्कर १.	४।३।९०
उपद्रष्टृ १.	३।६।८१	उपल १.	३।२।८	उपस्करस्वलिनी २.	३।७।५४
उपधा २.	३।६।१९५	" १. २. ३.	७।५।१७	उपस्करव्रत ३.	३।६।१४८
" २.	७।२।३	उपलब्धि २.	३।६।१६४	उपस्थ १.	३।६।१०३
उपधान ३.	४।३।१६७	" २.	८।२।४	( उपस्थाव )	
उपनत १.२.३.	५।४।१०४	उपलम्भ १.	५।२।१९	" १.	४।४।६०
उपनय १.	३।६।७	उपलवण १.	३।८।१२६	" १. ३.	४।४।६७
उपनाय १.	३।६।७	उपला २.	४।३।१६३	उपस्थान ३.	५।२।२१
उपनाह १.	३।९।१२१	उपलङ्ग ३.	३।६।१९०	उपस्थित १. २. ३.	५।४।१०४
" १.	८।१।१७	उपवन ३.	३।३।२	उपस्पर्श १.	४।३।११३
उपनिधि १.	३।८।१२	उपवर्ण १.	३।५।२	" १.	८।१।१९
उपनिमन्त्रण ३.	३।६।९३	उपवर्तन ३.	३।७।४९	उपस्पर्शन ३.	८।३।१४
उपनिवेशिनी २.	२।१।७५	" ३.	३।७।१११	उपहसित ३.	३।९।८४
उपनिषद् २.	८।२।३	उपवर्ष १.	३।६।१५४	उपहार १.	३।७।४५
उपन्यास १.	२।४।४१	उपवसथ १.	४।३।२	उपहालक १. ४.	३।१।१७
उपपत्ति १.	४।४।३८	उपवस्तु १.	३।६।१४४	उपह्वर ३.	८।३।५
उपप्राप्त १. २. ३.	५।४।१०४	उपवास १.	३।६।१४४	उपांशु १.	३।६।९२
उपप्लव १.	२।१।३०	उपविंश १. २. ३. ४.	५।१।३५	" ४.	८।७।३२
" १.	३।६।१९०	उपविषा २.	३।८।९०	उपाग्न १. २. ३.	५।४।६४
उपबर्ह ३.	४।३।१६७	उपविष्कर ३.	४।३।१७	उपात्यय १.	३।६।११४
उपबर्हण ३.	४।३।१६७	उपविष्ट १. २. ३.	५।४।१०	उपादान ३.	५।२।१८
उपमृत् २.	३।६।१००	उपवीत ३.	३।६।२०	उपाधि १.	७।१।११
उपमन्त्रण ३.	२।४।४	" ३.	८।३।१७	उपाध्याय १.	३।६।२२
उपमा २.	५।४।१२२	उपवेद १.	३।६।३०	" १. २. ३. ८।९।४४	
उपमान ३.	३।९।२१	उपवेश ३.	५।२।१४	उपाध्याया २.	४।४।२३
" ३.	८।९।१७	उपवैणव ३.	२।१।६७	उपाध्यायानी २.	४।४।२२
उपयम १.	३।६।५५	उपशाल्यक ३.	४।३।११	उपाध्यायी २.	४।४।२२
उपयाम १.	३।६।५४	उपशाय १.	४।३।१६७	" २.	४।४।२३
उपयोग १.	५।२।२५	उपश्रुत १.२.३.	५।४।१०६	उपानह २.	४।३।१६२
उपरक्त १.	२।१।३०	उपसंख्यान ३.	४।३।१२१		
" १. २. ३.	५।४।६८	उपसंहार १.	५।२।१८		
		उपसंग्रहण ३.	३।६।४०		

[ उपान्त ]

उपान्त १. २. ३.	५४१४२
उपायन ३.	३७४५
उपालम्भ १.	२४३५
उपावृत्त १. २. ३.	३७१०७
उपासङ्ग १.	३७१७८
उपासन ३.	३७१९५
उपासना २.	३६३८
उपासित १. २. ३.	५४१०५
उपाहित १.	१२१७
उपेक्षा २.	३७१३
उपेन्द्र १.	१११९
उपोह १. २. ३.	७४६
उपोदिका २.	३३१४४
उपोद्गत १.	२४४१
उसकृष्ट १. २. ३.	३८२३
उभयद्युः (-स्) ४.	८८९
उभयेद्युः (-स्) ४.	८८९
उमा २.	१११५८
" २.	३८४५
उमापति १.	१११४५
उमासुत १.	१११५४
उम्बुरा २.	४३४४
उम्य १. २. ३.	३८२०
उरग १.	४११५
उरगाशन १.	१११३७
उरण १.	३४६४
उरञ्ज १.	३४६४
उररी ४.	८७१७
उरस् ३.	४४६८
" ३.	६३३
उरसिल १. २. ३.	३७१५१
उरस्य १.	४४४५
उरस्वत् १. २. ३.	३७१५१
उरस्त्रिका २.	४३१३७
उराह १.	३७१०१
उरु १. २. ३.	५४१८०
उरुकम १.	१११९
उरुवह्नी २.	३३१६४

वैजयन्तीकोपः

उर्वरा २.	३११४
" २.	३८१७
उर्वारि २.	३३१६७
" १.	३३१७२
उर्वी २.	३१११
उलङ्कल १.	४१३७
उलन्द १.	१११४६
उलप १.	३३३७
" १.	३३२२९
उलुम्ब ३.	४३३७०
उल्लङ्ग १.	२३२२
उल्लङ्गचेटी २.	२३२१
उल्लङ्गारि १.	२३१६
उल्लङ्गल १.	३६१९
" ३.	४३६५
" ३.	४४७०
उल्लङ्गली २.	३७१११
उल्लु १.	३६५७
उल्का २.	११३२
उल्ल ३.	४४१८
उल्लङ्ग १.	५२१९
" १. २. ३.	५४१३४
" १. २. ३.	५४१३७
उल्लङ्गक ३.	३९८२
उल्लङ्गस्थूणा २.	४३३९
उल्लङ्ग ३.	१२३२
उल्लङ्गनक ३.	३९८२
उल्लङ्ग १. २. ३.	४४१३
उल्लङ्ग १.	२४२९
उल्लङ्गित १. २. ३.	८४१५
उल्लङ्ग १.	३३२०८
उल्लङ्ग १.	३३२२९
उल्लङ्गनीय १.	३३३२
उल्लोच १.	४३१२३
उल्लोल १.	४२१४
उल्लङ्ग १.	२१३४
उल्लि १. ३.	६५८
उल्लिरी १. ३.	३३२३१
उप १.	२११६८
उपङ्ग ३.	३८७९
उपङ्गुध १.	१२१५

[ ऊरव्य ]

उपस् २. ३.	२१३६९
" २. ३.	६५८
उपा २.	२११५७
" २.	३४४१
" ४.	८८११
उपापति १.	११२९
उषित १. २. ३.	७४७
ऊरु १.	३४६७
ऊरुङ्गीक १.	४४१३१
ऊरुङ्गपुच्छिका २.	३३१२६
उरुङ्ग २.	४३६१
उरण १.	२१८८
" १.	३३१५६
( कृष्ण )	
" ३.	५३३७
" १. २. ३.	६५८
उरणक १. २. ३.	५४१५४
उरणवीर्य १.	४११५४
उरणगम १.	२१८८
उरणिका २.	४३८०
उरणिष १. ३.	४३१२४
" ३.	४३१३५
" ३.	४४८५
उरु १.	२११३६
" १. २.	६५९
उरु २.	३४४२
ऊ	
ऊक १.	२३३३
ऊक १.	४४६५
ऊत ३.	४२४
" १. २. ३.	५४१००
" १. २. ३.	५४११२
ऊति २.	६२१५
ऊधस् ३.	३४५१
ऊधस्य ३.	३८१४६
ऊन १. २. ३.	५४८६
ऊम् ४.	८८१४
ऊम १.	६११८
ऊररी ४.	८७१७
ऊरव्य १.	३८११

[ क्री ]

शब्दानुक्रमिका

[ एकविंशतितम ]

क्री ४.	८७१७	ऊपणा २.	३८७६	ऋवम १.	३७९७
ऊह १. २.	४४५५	( हूपणा )		" १.	३९१३२
" १. २.	८९१२६	ऊपर १. २. ३.	३८१८	" १.	७११३
ऊरुज १.	३८१	ऊपरज ३.	३८१२३	ऋपभा २.	३६५१
ऊरुपर्वन् ३.	४४५५	ऊपवत् १. २. ३.	३८१८	ऋपभी २.	३३१२९
ऊरुमूल ३.	४४५५	ऊम्मक १.	२११८८	ऋपि १.	११३०
ऊर्ज २.	८२१८	ऊम्मन् १.	२११८८	" १.	३६१५०
ऊर्ज १.	६११२	" १.	३६३६	" २.	३८१९४
ऊर्जस्वल १. २. ३.		" १.	५४१९	" १.	६११९
	३७१५१	ऊह १. २.	३६१७५	ऋष्टि १. २.	३८१५८
ऊर्जस्विन् १. २. ३.		ऊहन ३. २.	३६१७५	ए	
	३७१५१	ऋ		एक १. २. ३.	५११२५
ऊर्जित १. २. ३.	३७१५१	ऋ २.	८२१८	" १. २. ३.	६४३३
ऊर्णनाम १.	४११३४	ऋच १.	३३१६९	एककुण्डल १.	८११५१
ऊर्णबाहि १.	४११३५	" १.	३४१७	एकग १. २. ६.	५४१२८
ऊर्ण २.	३४१२५	" ३.	५११६०	एकगुरु १.	३६१२४
" २.	३९१३३	" १. २. ३.	६५१९	एकग्रन्थ १.	३६३३३
" २.	६२१६	ऋक्षगन्धिका २.	३३१९६	एकतान १. २. ३.	
ऊर्णायु १.	७११३३	ऋक्षर १.	७१११४		५४१२९
ऊर्णविहि १.	४११३५	ऋच २.	३६१२६	एकतीर्थिन् १.	३६१२४
ऊर्ध्वक १.	३९१२९	ऋचीप ३.	४३१५७	एकदन्त १.	१११५३
ऊर्ध्वजालुक १. २. ३.		ऋजु १. २. ३.	५४१२४	एकदा ४.	८८१६
	५४११०	" १. २. ३.	६४१२	एकदृष्ट १. २. ३.	५४१३३
ऊर्ध्वजु १. २. ३.	५४११०	ऋण ३.	३८१४	एकदेश १.	४४१५५
ऊर्ध्वधन्वन् १.	१२१३	ऋत ३.	३८१३	एकधुर १. २. ३.	३६१५८
ऊर्ध्वनापित १.	३५१६७	" १. २. ३.	५३१३	एकधुरीण १. २. ३.	
ऊर्ध्वमूल १.	३३१२२९	" ३.	६३३३		३४१५८
ऊर्ध्वलोक १.	११११	ऋतु १.	२११८६	एकपक्षति २.	२११६९
ऊर्ध्वसूचिका २.	४३१४८	" १.	४४११६	एकपटलमाली २.	
ऊर्ध्वा २.	२११६	ऋतुमती २.	४४११५		३३१८५
ऊर्मि १. २.	४२११४	ऋते ४.	८८१४	एकपद ३.	५२१६
ऊर्मिका २.	४२११४४	ऋत्विज् १.	३६१७८	एकपदी २.	३११४९
ऊर्मिमत् १. २. ३.		" १.	८११४४	एकपर्णा २.	१११६१
	५४१२३	ऋज्ज १. २. ३.	३८१६७	एकपाटला २.	१११६१
ऊर्मिला २.	३६१४५	ऋजु १.	१११३	एकपिङ्ग १.	१२१५८
ऊवध्य ३.	३६१२०५	ऋजुक्षिन् १.	१२१४	एकरूप १. २. ३.	५४१७९
ऊप १.	३८१२५	ऋश्य १.	३४११४	एकवर्ण १.	३५१३
" ३.	३८१२३	ऋश्यकेतु १.	१११२९	एकविंश १. २. ३.	
" १.	५३१२८	ऋश्यप्रोक्ता २.	३८१३		५४१२२
ऊपण ३.	३८१७५	" २.	८२१४	एकविंशतितम १. २. ३.	
" १.	५३१२६	ऋषणी २.	३३१२४		५४१२२

एकशततम ]

वैजयन्तीकोपः

[ ओपधि

एकशततम १. २. ३.	५११२३
एकसर्ग १. २. ३.	५४१२८
एकहायनी २.	३१४४५
एकाक्ष १.	२३१५५
एकानि १.	३१६७३
एकाम्र १. २. ३.	५४१२८
एकाङ्ग १.	२११३२
एकाङ्गग्रह १.	४४११३४
एकाङ्गुल ३.	४४११२०
एकादश १. २. ३.	५११२१
एकादशी २.	३१९११८
एकान्त १. २. ३.	५४१११९
" १. २. ३.	५४११२९
" १. २. ३.	५४११३२
एकान्तरितित् १. २. ३.	३१६१३५
एकान्तरित् १. २. ३.	३१६१३५
एकायन १. २. ३.	५४११२८
एकायनगत १. २. ३.	५४११२९
एकावली २.	४३११४१
एकाष्टील १.	३३११९४
एकाष्टीला २.	३३११३०
एकाह १.	३१६१८४
एजन ३.	३१९१८९
एड १. २. ३.	५४११३
एडक १.	३१४६४
एडगज १.	३३११५८
एडमूक १. २. ३.	५४११३
एडक ३.	४३१३७
एण १.	३१४१२
एणीकृत १. २. ३.	२१४१४
एत १.	५३१२३
एतन १.	३३१२०४

एतर्हि ४.	८१८१५
एतश १.	३१६११
एतावतिथ १. २. ३.	५११२०
एतिन् १.	३१६२०५
एत्थाल १.	४११४४
एध १.	३१६१९६
एधस् ३.	३१६१९६
एधित् १. २. ३.	५४१११३
एनस् ३.	३१७४७
" ३.	८१३१६
एरका २.	३३३२३३
एरुण्ड १.	३३३१६४
एलक १.	३३३३६
एला २.	३३३१०३
" २.	३१८१८७
एलारसालक ३.	५३३३६
एलावालुक ३.	३१८१५५
एव ४.	८१७१८
" ४.	८१८१५
एवम् ४.	८१७१९
" ४.	८१८१५
" ४.	८१८१७
एषण १.	३१७१८०
एषणा २.	३१८१५०
एषणिका २.	३१९११९
एषमः (-स्) ४.	८१९११०
ऐ	
ऐ ४	८१७१२
ऐकागारिक १.	३१९१५५
ऐकगुव ३.	३३३२२
ऐतिहा ३.	२१४३८
ऐन्द्र १.	३१६१८६
ऐन्द्रलुप्तिक १. २. ३.	४१४१४७
ऐन्द्रि १.	२३३१७
ऐन्द्री २.	१११६२
" २.	२११४
" २.	३३३१७२
ऐरावण १.	११२१२

ऐरावत १.	११२१२
" १.	२११८
" ३.	२११४९
" ३.	२१२३
" ३.	३१८११५
ऐरावती २.	२११४६
" २.	२१२५
ऐरुक् ३.	३१६१८८
ऐरुण्डक १.	४३३४३
ऐलविल १.	११२१५६
ऐलेय ३.	३१८१९५
ऐश्वर ३.	३११५८
" ३.	३१९११०
ऐश्वर्य ३.	१११४७
" ३.	८१५३४
ऐह १.	३३३१६५
ओ	
ओकस् ३.	४३३१९
" ३.	६३३४
ओघ १.	३१९१२३
" १.	४२३३०
" १.	६१११०
ओङ्कार १.	३३३२३३
ओज १. २. ३.	५११२३
ओजस् ३.	६३३४
ओजस्विन् १. २. ३.	३१७१५१
ओद्वित ३.	३३३५
ओत १. २. ३.	३१९१२
ओतु १.	३१४७१
ओदन १. ३.	४३३७६
ओम् ४.	८१७३
ओराल १.	५३३२०
ओलक १.	३३३१५१
" १.	५३३४३
" १.	५३३४४
" १.	५३३४४
ओलहन् १.	३१८४४
ओषक ३.	३१७५६
ओपधि २.	३३३३६
" २.	३१८१७५



[ ओषधीष ]

शब्दानुक्रमणिका

[ कटक ]

ओषधीष १.	२११२५	औष्टक ३.	५११५	कङ्काल १. ३.	४१११४
ओष्ठ १.	४११८७	औष्णिह ३.	३१६३४	कङ्कलि १.	३१३४०
ओष्ठय १. २. ३.	५१११७	क		कङ्क २. ३.	३१८५५
ओष्ण ३.	५३१९	क १.	१११७	कघ १.	३१५१५
ओसर १.	३१८८४	" ३.	४१२२	" १.	५११९७
ओहार १.	४११५०	" १.	८१५३६	कचङ्कला २.	३११४२
औ		कंवि २.	४३१२३	कचू १.	३१३२०८
औष्टक ३.	५३११०	कंस ३.	५११५५	कघर १. २. ३.	५११६६
औजस ३.	३१२१८	" १. ३.	६१५११	कचित् ४.	८१७१९
औत्सुक्य ३.	३१६१७८	कंसरिपु १.	११२२६	कघोर ३.	३१३२०३
औदनिक १. २. ३.	४३१९३	कंसोरपल ३.	४१२७२	कच्छ १.	४१३३३
औदर १.	४३१८२	ककुद् १. २.	८१५२८	" १.	६१११४
औदरिक १. २. ३.	५११५१	ककुद् ३.	३१७८०	कच्छप १.	११२६०
औदुम्बर १.	३१६१२५	" ३.	८१५२८	" १.	४११५०
औदुम्बरायण १.	३१६१८	ककुदावर्त १.	३१७९७	कच्छपी २.	४१११९
औदालक ३.	३१८१३६	ककुदिन् १.	३१४५४	कच्छुर १. २. ३.	४११४५
औपगवक ३.	५११७	ककुदात् १.	३१४५४	कच्छुरा २.	३१३१२५
औपयिक १. २. ३.	५११०३	ककुदाती २.	४१६४	" २.	३१३१२९
औपरोधिक १.	३१६१९	ककुम् २.	२११२	कच्छू २.	४११२३
औपचाय १.	३१७६९	ककुम् १.	३११२०	कच्छूदार १.	३१३५४
औसिका २.	३१९१०६	ककुडा २ ब.	२११२१	( कच्छूदार )	
औमीन १. २. ३.	३१८२०	कक्खट १.	५३१५	कच्छूरक १	३१३११७
औरञ्ज १.	४३१२९	कक्खटी २.	३१२१३	कज्जल ३.	४३१५७
औरञ्जक ३.	५१११०	कच १.	४३१३१	कम्बुक १.	४११२१
औरस १.	४३१४५	" १.	६१३४	" १.	४३१२८
और्ध्वरन्ध्रक १. २. ३.	३१६१७	" १. २. ३.	४१६७	" १.	७११५५
और्व १.	११२२१	कच्यक ३.	३३११	कम्बुकिन् १.	३१७२३
और्वमतिन् १. २. ३.	३१६१३५	कचया २.	३१७८४	कज ३.	४१३३६
और्वशेय १.	३१६१५१	" २.	४३१३१	" १.	४१९८
औल्लूक १. २. ३.	३१६१३२	" २.	६१२७	कजल ३.	४१३३६
औशीर ३.	५१११७	कचयापट १.	४३१२९	कट १.	३१७७५
" ३.	७३१५	कङ्क १.	२३३३१	" १.	३१७२१६
औषध ३.	३१८७५	कङ्कट १.	३१७१५३	" ३.	३१८७५
" ३.	४१११४१	कङ्कटीक १.	१११५५	" १.	४११२३
		कङ्कण ३.	४३१४३	" १.	४३१२२
		" ३.	७३१११	" १.	४३१६६
		कङ्कत १.	४३११२	" १.	४१४६५
		" १. २. ३.	८१९२७	" १. २. ३.	६१५१८
		कङ्कपत्र १.	३१७१८१	" १. २. ३.	८१९२७
		कङ्कमुख १.	३१९१७	कटक १. ३.	३१२८

कटक ]

वैजयन्तीकोपः

[ कतृण

कटक १. ३.	४३१३४
" १. ३.	४३११४४
" १. ३.	७५३१
कटक ३.	३१८११९
कटकर १.	३१५१७
" १.	३१५७६
कटकर्मन् १.	३१५१७
कटकी २.	४३१२४
कटकुटेरी २.	३३१२१३
कटम् १.	१११४६
कटमी २.	३३११३९
कटमोष १.	३३१२०१
कटशर्करा २.	४११५७
कटाटङ्क १.	१११४४
कटाह १.	३३११०
" १.	४३१५६
कटि २.	४३१६४
कटिका २.	३३११९९
कटिन्न ३.	७३१११
कटिप्रोथ १.	४३१६५
कटिल्लक १.	३३११६३
कटिल्लका २.	३३११४६
कटिशीर्षक १.	४३१६५
कटिसूत्र ३.	४३११४६
कटी २.	८११२७
कटोकूप १.	४३१६५
कटीर ३.	७३१६
कटु १.	३३१५३
" १.	३३११२८
" १.	३३१२०४
" ३.	३३१२१३
" ३.	३१८७९
" ३.	३१८८०
" २.	३१८८६
" १.	३१८१३०
" १.	५३१२६
" १.	५३१२६
" १.	५३१४७
" १. २. ३.	६१११३७
" १. २. ३.	६१४४
कटुकपायक १.	५३१३०

कटुका २.	३१८५०
कटुफाण १.	२३१३४
कटुतिक्त १.	५३१३०
कटुतिक्तकपाय १.	
कटुतुम्बी २.	५३१३७
कटुमङ्ग ३.	३३१२१४
कटुम्भरा २.	३१८८६
कटुरोहिणी २.	३१८८८
कटूकट ३.	३३१२१३
" ३.	३१८८०
कटुफल १.	३३१५८
कटुवङ्ग १.	३३१६८
कटुवर ३.	३१८१४९
कटुवाङ्ग १.	३३१६८
कटुवार १.	३१८१३९
" १.	५३१३२
कटाकु १.	७१११८
कठार १.	३११३२
कठिञ्जर १.	३३१११८
कठिन १.	५३१४
कठिनी २.	३३१२३
कठोर १.	५३१५
कडङ्गर १.	३१८६४
कडम्बक १.	४३१९०
कडार १.	५३११८
कज १.	३१५३०
" १.	४३१३७
" १.	४३१७०
" १.	६१११५
कणकुक्कुट १.	३१५३४
कणजीरण १.	३१८८४
कणय १.	३३११६७
कणा २.	३१८८४
कणि १.	२३१२
कणिका २.	३१९२५
" २.	३१९१२०
" २.	७३१४
कणिश ३.	३१८६४
कण्टक १.	२३११५
" १.	३१८८४

कण्टक १.	७१११४
कण्टकच्छेदन १.	३३११६५
कण्टकप्रतीसार २.	
कण्टका २.	३३१४७
कण्टकानना २.	३३१४७
कण्टकारी २.	५३११०५
कण्टकाली २.	५३११०६
कण्टकिन् १.	३३१५०
" १.	३३१६४
कण्टकिफल १.	३३१७४
" १.	३३११४१
कण्ट १. २. ३.	४३१८३
" १.	६१११३
कण्टकूणिका २.	३१९११७
कण्टदोष १.	३१९११२
कण्टपाल १.	२३१२६
कण्टभूषा २.	४३११३७
कण्टमणि १. २.	४३१७०
कण्ठीरव १.	३३१२
कण्टकाल १.	१११४५
कण्ठेगुह १.	४३१७०
कण्डन ३.	४३१६६
" ३.	४३१६७
कण्डार ३.	४३१३९
" १.	५३११३
कण्डू २.	४३१२४
कण्डूति २.	४३१२४
कण्डूयन ३.	४३१२४
कण्डूया २.	४३१२४
कण्डूर १.	३३१२०८
कण्डूरा २.	३३१२९
कण्डोल ३.	४३१६४
कण्डोलवीणा २.	३१९१२७
कण्व १. २. ३.	५३११३
कत ३.	४३११
कतक १.	३३१४२
" ३.	३१८५०
कतिथ १. २. ३.	५११२०
कतिपयथ १. २. ३.	५११२०
कतृण ३.	३३१२३४

कथम् ४.	८८१२०	कथा २.	४३३३७	कपालिनी २.	१११६४
कथा २.	२१४३८	" २.	४३१२८	कपाली २.	४३१५९
" २.	३१९१४२	कन्द १. ३.	३३३२०८	कपि १.	३१४३९
कथाप्रसङ्ग १. २. ३.	८१४१३	" १. ३.	४२१४२	" १.	३१४६१
कथित १.	५३१५८	" १. ३.	४३१९०	" १.	६१११३
कदम्बन् १.	३११५०	" १.	८६१२५	" १.	८१९१०
कदन ३.	३१७२१५	कन्दर १. २. ३.	३२११६	कपिकच्छ २.	३३१२९
कदन्निका २.	३३३३१	" १.	३३३३०	कपिकोटा २.	३३३१७९
कदम्ब १.	३३३६०	" १. २. ३.	८१९३७	कपिञ्जल १.	२३३२०
" १.	३३३६७	कन्दराल १.	३३३५९	कपिस्थ १.	३३३३२
कदम्बक १.	३८१४१	कन्दरी २.	८१९३७	( कृप )	
" ३.	५११२	कन्दल १.	३३३२१०	कपिस्थपत्नी २.	३३३१५७
कदर १.	३३३६३	" १.	८१९३१	कपिप्रिया २.	३३३८१
" १.	४३१२३३	" १. २. ३.	८१९३८	कपिल १.	१११३०
कदर्य १. २. ३.	५११५९	कन्दली २.	३३३२१०	" १.	१११३१
कदल १.	३३३१७३	" २.	८१९३८	" १.	३३३६९
कदलि २.	३३३८६	कन्दु १.	४३३५६	" १.	३८१११०
कदली २.	३३३१७४	" १. २. ३.	८१९२७	" १.	५३३१८
" २.	३३३१८	कन्दुक १.	४३३१६२	कपिला २.	२११९
" २.	३३३२५	कन्दोव्ज ३.	४२३३४	" २.	३३३२७
कदाचित् ४.	८८१७	कन्दोष्ठ ३.	४२३३४	" २.	३३३९२
कदुष्ण ३.	५३३९	कन्धरा २.	४३३८३	" २.	३३३३३
कद्रु १.	५३३१८	" २.	४३३११७	" २.	३८१९५
कद्वद १. २. ३.	५३३२५	कन्यका २.	४३३६	कपिलोहक ३.	३३३२७
" १.	५३३९७	कन्यसा २.	४३३२७	कपिवल्ली २.	३८१७८
कनक ३.	३२३१९	कन्या २.	३३३६७	कपिश १.	३१९३८
कनकाक्षी २.	२३३२१	" २.	३३३१८८	" १.	५३३१८
कनिष्ठ ३.	३८१२२२	" २.	४३३६	कपिशा २.	४३३३३
कन्दर्प १.	१११२७	" २.	८६११४	कपी २.	३३३१५६
" ३.	४३३३१	कन्याकुब्ज १.	४३३७	कपीतन १.	३३३३१
" १. २. ३.	५३३४	कन्यापिपीलिका २.	४३३३७	" १.	३३३५९
" १. २. ३.	७३३९	कन्याप्रसूतिजा २.	३३३४८	" १.	३३३७२
कनिष्ठा २.	४३३२७	कप १.	३३३७२	कपोत १.	२३३२३
" २.	४३३७४	( कृपा )		" १.	३८१२९
कनीनिका २.	४३३७४	कपट १. ३.	३३३१९५	" १.	५३३१२
" २.	४३३९४	कपर्द १.	१११५०	" १.	७३३२०
कनीयस् १. २. ३.	७३३९	" १.	४३३५७	कपोतपाली २.	४३३५३
कनीयस ३.	३२३२४	कपर्दिन् १.	११३४०	कपोताङ्घ्रि २.	३८११००
कन्तु १.	६३३१२	कपाल १. २. ३.	४३३५९	कपोताञ्जन ३.	३३३४२
कन्थटिका २.	४३३१२८	" १. ३.	४३३११५	कपोल १.	४३३९०
		कपालिन् १.	११३४०	कपोल २.	३८१६३

[ कप्याख्य ]

वैजयन्तीकोषः

[ कर्क ]

कप्याख्य १.	३।८।११०
कफ १.	४।४।१२१
कफाणि १. २.	४।४।७२
कफहरी २.	३।८।४८
कफिल १.	३।९।११३
कफोणि १. २.	४।४।७२
कचत १.	४।३।१०१
कचन्ध १. ३.	३।७।२१६
कबरी २.	४।४।१००
कवल १.	४।३।१०१
कवली २.	४।३।१११
( कपिली )	
कम् ४.	८।७।३
कमठ १. २. ३.	७।५।२०
कमण्डलु १.	३।६।१२४
” १. ३.	८।९।३१
कमन १. २. ३.	५।३।३४
कमनीय १.	३।३।८२
कमल ३.	३।८।९२
” ३.	४।२।३९
” १. २. ३.	७।५।२६
कमलच्छद् १.	२।३।३१
कमित् १. २. ३.	५।४।३५
कमुजा २.	४।४।१०२
कम्प २.	३।९।८९
कम्पिष्ठ १ ब.	३।३।९५
कम्प १. २. ३.	५।४।७९
कम्बर १. २. ३.	५।४।७८
कम्बल १.	४।३।१२९
कम्बु १.	३।७।६२
” १. २. ३.	४।१।५५
” १. २.	६।५।९
कम्बुग्रीवा २.	४।४।८४
कम्बोज १.	३।३।७०
कम् १. २. ३.	५।४।३५
कर १.	३।७।४५
” १.	३।८।३३
” ३.	४।३।७६
” १.	४।४।७३
” १.	६।१।१०
” १.	८।९।१२

करक १.	२।२।७
” १.	३।३।२५
” १.	३।३।७२
” १.	४।३।५७
” १.	४।४।१३७
करकवर्तिका २.	४।३।६०
करङ्क १.	४।३।५८
” १.	४।३।१०७
” १.	४।४।११४
करज ३.	३।८।९९
” १.	४।४।७६
करज १.	३।३।६२
करजक १.	३।६।१०७
करट १.	२।३।१७
” १.	३।७।७५
” १.	३।८।११६
” १.	७।५।२१
करटा २.	३।४।४९
करण १.	३।५।१७
” १.	३।५।५५
” १.	३।५।७४
” १.	३।५।१०३
” ३.	३।६।६०
” ३.	३।६।२१०
” १.	३।९।२३
” ३.	३।९।९८
” ३.	४।४।५२
” १.	४।४।७१
” ३.	७।३।९
करणीपरिवर्तन ३.	
	३।९।१४१
करण्डी २.	३।९।३३
करपत्र ३.	३।९।३६
करपोणि १.	४।४।७१
करभ १.	३।४।६७
” १.	३।४।६७
” १.	४।४।७५
” १.	७।१।१९
करमर्च १.	३।३।८३
करमर्दिका २.	३।३।८४
करम्भ १.	४।३।१०६

करम्भ १. २. ३.	५।४।७८
करम्भ १.	४।३।७१
करवालिका २.	३।७।१६०
करवी २.	३।८।१३२
करवीरक १.	३।३।१९१
करवीरा २.	३।२।१२
करवीरिका २.	३।८।४८
करवाखा २.	४।४।७५
करहाट १.	४।२।४२
कराल १.	३।३।१२२
” ३.	४।३।६२
” १. २. ३.	७।४।८
करालिक १.	३।३।५
” १.	८।१।२०
करालिका २.	१।१।६१
करालिन् १.	३।७।९७
” १.	५।३।९
कराली २.	१।२।३०
करिणा २.	३।७।७०
करिणीचार ३.	२।१।७
करिन् १.	३।७।६०
करिशोलुक ३.	२।१।६
करीर १.	४।३।५८
” १.	७।५।१९
करीरपृष्ठ ३.	३।७।१७६
करीष १. ३.	३।४।६१
करीषामि १.	१।२।२०
करुण १.	३।३।६५
” १.	३।३।१५०
” १.	३।९।७५
” १. २. ३.	३।९।७९
करुणा २.	३।६।१९२
करुषा १ ब.	३।१।३६
करेणु २.	३।७।७०
” २. १.	७।५।१९
करैरक ३.	५।२।४
करोटक ३.	४।३।६३
करोटि २.	४।४।११५
करोटिका २.	४।३।७७
करोलक १.	५।३।३८
कर्क १.	३।७।९९



कर्कट १.	४११४४	कर्णिका २.	३१७७१	कर्मण्यकृत् १. २. ३.	
कर्कटस्कन्ध १.	२३३३१	" २.	३१८६७		पा३३७३
कर्कटि १.	३३३१६६	" २.	३१९३०	कर्मण्या २.	२१९६
कर्कटिनी २.	३३३२१३	" २.	४२१४६	कर्मदेव १.	१११६
कर्कटि १. २.	७११२७	" २.	४३१३३३	कर्मन् ३.	३३३३७
कर्कर १.	४१११०९	कर्णिकार १.	३३३७२	( कर्मठ )	
कर्कराल १.	४११९८	कर्णिकारल १.	३३७१८२	" ३.	३१९८
कर्करी २.	४३३१७	कर्णिरथ १.	३३७१२६	" ३.	पा२१९
कर्कश १.	३३३१९५	" ३.	३३७१२७	" ३.	६३३३
" १.	३३३१६५	कर्णजप १. २. ३.	पा३२५	" १. ३.	८१९३१
" १.	पा३३३	कर्तन ३.	३३७१११	कर्मन्दिन् १.	३३३१६०
" १. २. ३.	७३३८	" ३.	३१९१०	कर्मफल १.	३३३३७
कर्कशिन् १.	३३३७४	" १.	३१९३६	कर्मसेद १.	पा३१९
कर्कशी २.	३३३८९	कर्तनमाण्ड ३.	३१९१९	कर्मरङ्ग १.	३३३३७
कर्कश १.	३३३१६८	कर्तनी २.	३१९२६	कर्मयत् १. २. ३.	पा३३४
" १.	३३३१६९	कर्तरी २.	३३३१८५	कर्मवाटी २.	२१९६९
कर्कोट १.	३३३१६४	" २.	३१९३७	कर्मशाला २.	४३३२३
कर्कोटकी २.	३३३१६१	" २.	४३१०८	कर्मशील १. २. ३.	
कर्ण १. २. ३.	३३३५९	" २.	७२३३		पा३३२
" ३.	४२११७	कर्तु १.	३३३३७	कर्मशूर १. २. ३.	पा३३२
" ३.	४३३९२	कर्त्रिका २.	३१९२६	कर्मसाक्षिन् १.	२११३३
कर्णजमल १.	४३३९२	कर्दम ३.	२३३८	कर्मार १.	३३३२१४
कर्णजलदा २.	४३३३३	कर्दम १.	३१८२५	" १.	२१९१६
कर्णजाह्न ३.	८१९१६	कर्पट १.	४३३१३०	कर्मारिणी २.	२१९१३१
कर्णधार १.	४२११९	कर्पर १.	४३३५६	कर्मिन् १. २. ३.	पा३३४
कर्णपूर १.	३३३७०	" १.	४३३५९	कर्मी २.	६३३७
" १.	पा३३३४	" १.	४३३१५	कर्कट १. ३.	४३३३
" १. ३.	८१५६	" १.	७३३१९	कर्कट ३.	४३३३
कर्णपूरक १.	३३३४०	कर्पराल १.	३३३४६	कर्प १. ३.	पा३३९
" १.	३३३१००	कर्परी २.	३३३४३	कर्पक १.	२१३३२
कर्णभूषण ३.	४२३३४	" २.	४३३१००	" १.	३३३१७
" ३.	४३३१३३	कर्पूर १.	३३८१०५	" १. २. ३.	३३८८
कर्णमोटी २.	११३६४	कर्पूर ३.	३३२२०	कर्पफल १.	३३३१७६
कर्णलतिका २.	४३३९३	" १.	पा३३२४	कर्पफला २.	३३३१७७
कर्णविहीन १. २. ३.		कर्मकर १. २. ३.	२१९५	कर्पाट १.	३३३४५
	३३३५९	" १. २. ३.	पा३३३	कर्पू १. २.	४२३२९
कर्णवेष्टन ३.	३३३८७	कर्मकार १. २. ३.		" १. २.	६३३१८
कर्णशङ्कुली २.	४३३९३		पा३३३	कल १. २. ३.	२३३१३
कर्णाक १.	४३३१३४	कर्मचम १. २. ३.		" १.	३३३१२१
कर्णिक ३.	३३३२१		पा३३७२	" १. २. ३.	पा३३१४
" ३.	४२३४६	कर्मठ १. २. ३.	पा३३७२	कलकण्ठ १.	२३३२७

कलकल ]

वैजयन्तीकोषः

[ कविका

कलकल १.	२४१२७	कला २.	३१९८	कलक १. ३.	३५५१०
कलकाण १.	८११२०	" २.	४३३३८	कलकत्व ३.	३१९८५
कलङ्क १.	७१११७	" २.	४३१५५	कलिकन् १.	१११३१
कलत्र ३.	४४३५	" २.	५११३६	कल्प १.	२११२३
" ३.	४४३६४	" २.	५२१७	" १.	३३१११
" ३.	७३३६	" २.	६२११०	" १.	३३१२८
कलधौत ३. २.	८१५५	कलाद १.	२१११६	" १.	३३११३
कलपाठक १.	३३१२३	कलानिधि १.	२११२६	" १.	३१११६
( कालपाठक )		कलाप १.	७१११५	कल्पन ३.	३१११०
कलभ १.	३३३६६	कलापक १.	२३३३९	" १.	४३३४६
कलम १.	३३८३४	" १.	३३७८३	कल्पना २.	३३७७०
" १.	७१११८	" १.	३३८३४	" २.	७२१७
कलम्य १.	३३७१७९	" १.	३३८७३	कल्पवृत्त १.	१३११४
" १. २. ३.	८११२६	" १.	५३३४१	कल्पाणि १.	३१११४
कलम्बी २.	३३३१४९	कलापिन् १.	३३३२८	कल्पान्त १.	२११२४
कलम्बू २.	३३३१४९	कलापिनी २.	११११०	कल्मष ३.	३३३१६८
कलम्ब १.	२३३१४	कलाय १.	३३८४३	कल्माष १.	५३३२४
कलल ३.	४३३६२	कलावती २.	३११११९	" १. २. ३.	७३३१०
" १. ३.	४३३१८	कलाह १.	३३७१०३	कल्य १. २. ३.	४३३१४३
" ३.	४३३१०८	कलि १.	२२११२	" १. २. ३.	६३३३
कलविङ्क १.	२३३१८	" १.	३३३१७५	कल्या २.	२३३१८
" १.	२३३१९	" १.	३३७२०४	" २.	३११४५
कलश १.	३३५२६	" १.	३११६२	कल्याण ३.	३३३६२
" १.	३३५३१	" १.	६१११७	" १. २. ३.	५३३१४२
" १. २. ३.	४३३५८	कलिका २.	३३३१९	" २. ३.	७५२१
" १.	५११५५	कलिकारक १.	३३३६२	कल्यापाल १.	२११४४
" १. २. ३.	८११३७	कलिङ्ग १.	२३३२७	कल्लोल १.	४२११४
कलशि २.	३३३१३६	" १ व.	३११४०	कलह १. २. ३.	२३३१५
कलशी २.	४३३५८	" १.	७५३३३	कलहार ३.	४२३३५
कलशीनक १.	३३३२४	कलिङ्गक १ व.	३११२६	कव १.	२३३१
कलशीपुत्र १.	३३३१५१	कलित १. २. ३.	७३३१	कवक १.	३३३१५२
कलशीमुख १.	२११२४	कलिद्रुम १.	३३३१७५	कवच १. ३.	३३७१५२
कलशोदक १.	३३३१८९	कलिल १. २. ३.	७५३३१	कवचित १. २. ३.	३३७१४२
कलशोदधि १.	३३३१११	कलुप १.	३३३९	कवट १.	३५२४
कलह १.	७१११७	" १.	३५११४	कवाट ३.	४३३४३
कलहंस १.	२३३८	" ३.	४२३४	" १. ३. ३.	४३३४६
" १.	८११२०	" १.	५३३३४	कवि १.	२१३३४
कलहप्रिय १.	१३३७	" १.	५३३३९	" १.	३३३१५३
कला २.	२११५३	कलुपी २.	३३८८८	" १.	६१११२
" २.	३२११२	कलेवर ३.	४३५२	कविका २.	३३७१३३
" २.	३३८५	कलेवरा २.	१११४९		

[ कविथ ]

शब्दानुक्रमणिका

[ कानना

कविथ १. ३.	३७११३	काककञ्ज २.	३८१५९	काकोली २.	३३११२
कवी २.	३७११३	काकचिञ्चा २.	३३११८०	,, २.	३११५०
कवोपण ३.	५३१९	काकजङ्घा २.	३३११११	काकोल्लिका २.	८११७
कव्यवाहन १.	१२१२२	,, २.	३३११८०	काक्षी २.	३२११६
कश १.	२५१२०	काकजम्बु २.	३३११९३	काक्षीव १.	३३१५६
,, १.	३११२७	काकणी २.	७२१६	काङ्क्षा २.	३३११७९
कशप १.	३११५०	काकतिक्ता २.	३३११८०	काच १.	३११७
कशा २.	३७११४	काकतिन्दुक १.	३३१५१	,, १.	५३१२२
कशिपु २.	५१११६	काकतुण्ड १.	३८११०८	,, १.	३१११५
,, १. ३.	७५१२०	काकतुण्डिका २.	३३१८७	काचमालिका २.	३११४६
कशेरु ३.	३२१४७	काकवृक्षा २.	३३११८०	काचर १.	५३१२२
,, २. ३.	३३११५	काकनखी २.	३३११८०	काचस्थाली २.	३३१९०
कश्मल ३.	३३१२००	काकनासा २.	३३१११२	काचित १. २. ३.	५३११६
कश्य ३.	३७११०	,, २.	३३११९३	काचिम ३.	३२१४
,, ३.	३१११५	काकपक्ष १.	३३११०२	काञ्चन ३.	३३११९
,, ३.	३१११२	काकपीथी २.	३३११८०	काञ्चनार १.	३३१४८
कप १.	३१११९	काकपीलु १.	३३१५१	काञ्चना १.	३३१७७
कषाय १.	३३१२७	,, २.	३३११८०	काञ्चनी १.	३२१२७
,, १.	३३१११	काकपुष्ट १.	२३१२६	,, २.	३३१२१
,, १. ३.	५३१२७	काकमर्दक १.	३३१८०	काञ्चिक ३.	३३१८१
,, १. ३.	७५१२२	काकमाची २.	३३१११२	काञ्ची २.	३३११४६
कषायक १.	५३१४७	काकमाली २.	३३११८४	काञ्चीपद ३.	३३१४६
कषायतिकलवण १.	५३१३६	काकर्द्व १.	३३१५०	काटिका २.	३३११
		काकली २.	३३१११४	काण १. २. ३.	५३११३
कषायिका २.	२३१४६	काकशीर्ष १.	३३११९३	काणमारिष १.	३३११५१
कषिका २.	७२१४	काकाङ्गी २.	३३१११२	काणा २.	३३११७
कष्ट १. २. ३.	१२१३९	काकाणती २.	३३११८०	काण्ड १. ३.	३८१६३
,, १. २. ३.	३३१३३	काकाणन्ती २.	३३११८०	,, ३.	३३१३१
कस्तम्भिन् १. ३.	३७१३१	काकाण्ड १.	३८१४७	,, १. २. ३.	३५१११
		काकादनी २.	३३११८०	काण्डपट १.	३३११२४
कस्तीर ३.	३२१३२	काकारि १.	२३१२२	काण्डपृष्ठ १. २. ३.	३७१४३
कस्तूरिका २.	३८१०४	काकी २.	३३१११२	,, १. २. ३.	८११६
कस्तूरी २.	३३१३५	काकु २.	२३१७	काण्डवीणा २.	२३११२८
,, २.	३३१३६	काकुद ३.	३३१८९	काण्डी २.	३८१७८
कहाला २.	३३११२६	काकुन्दी २.	३३१९	काण्डीर १. २. ३.	३३११४४
कह्ल १.	२३११०	काकेन्दु १.	३३१५१	,, १.	३३१७८
कांस्य ३.	३२१२८	काकोदर १.	३३११२	कण्ठेडु १.	३३११०१
कांस्यताली २.	३३११२४	काकोदुम्बरिका २.	३३११११	कातना २. ३.	२३११९
कांस्यपात्रक ३.	३३१३१	काकोल १.	२३११७		
काक १.	२३११५	,, १.	३३१२४		

[ कातर ]

वैजयन्तीकोषः

[ कार्पासी

कातर १. २. ३.	५१४१८
„ १. २. ३.	७५५३२
कातुलक १.	३३३८५
कात्यायन १.	३६१५८
कात्यायनी २.	१११६२
„ २.	४१४१४
कादम्ब १.	३३३८
„ १.	७१११९
कादम्बरी २.	३११४६
कादम्बिनी २.	२१२२
कान ३.	२१४२
कानन ३.	३३३१
कानीन १.	४१४४३
कान्त १.	३३३८२
„ १.	३३३८५
„ ३.	३३३१२३
„ १. २. ३.	५१४७०
कान्तनाला १.	३३३१८७
कान्ता २.	४१४५
कान्तार १.	३३३२२६
„ १. ३.	७५५२२
कान्तारवासिनी २.	१११६३
कान्ति २.	६१२८
कान्दविक १. २. ३.	४३३९२
कान्दशीक १. २. ३.	३७२१८
कापटिक १.	३७२७
„ १. २. ३.	५१४२३
कापथ १.	३११५०
कापिषायन ३.	३११४४
कापिशेय १.	१३३४
कापोत १.	३६१२५
„ ३.	५११६
कापोताञ्जन ३.	३१२४२
काम १.	११२७
„ १.	३३१५४
„ १.	३६१७९
„ १.	६१११७
कामकेलि २.	४३१७०

कामध्वज १.	२१११३७
„ १.	४३३१६९
कामन १. २. ३.	५१४३४
कामपद ३.	४१४६१
कामपाल १.	१११२४
कामम् ४.	४३३१०४
कामयितु १. २. ३.	५११३५
कामरूप १ व.	३१२२९
कामरूपिणी २.	३१२३
कामरूपिन् १.	३१४५
कामल १. २. ३.	४१४३२
कामचक्रियार.	४३३१६९
कामाङ्ग ५.	३३३२५
कामारि १.	१११४१
कामिक १.	३६३३२
„ १.	३६३९८
कामिकान्त ३.	३१२४८
कामिन् १.	२३३३५
कामिनी २.	४१४५
कामुक १. २. ३.	५१४३५
कामुका २.	४३३१५
कामुकी २.	४३३११
कामोत्सव १.	४१४१६७
काम्बल १. २. ३.	३७१२९
काम्बविक १.	२१११७
काम्बोज १.	३७१५५
काम्बोजी २.	३३३१०७
काम्य ३.	३२२२५
काम्यदान ३.	३६१२२०
काम्रा २.	३७११४
काय १.	४१४५३
„ १. २. ३.	६१५१७
कायमान ३.	४३३३३
कायस्थ १.	३१२२३
कायाङ्ग ३.	३३३२०४
कथिका २.	३८१५
कारक ३.	७३३७
कारकुलीय १ व.	३११३८

कारण ३.	३८११६
„ ३.	७३३७
कारणा २.	११२३९
कारणिक १. २. ३.	५१४३०
कारणध्व १.	२३३११
कारम्मा २.	३३३६६
कारवाही २.	३३३११०
कारवी २.	३८१८५
„ २.	३८१००२
„ २.	३८१३२२
„ २.	३१११२९
कारवेष्ट १.	३३३१६३
कारा २. १.	६१५१०
कारावर १.	३१५४२
„ १.	३१५४३
कारि २.	८११५
कारिका २.	११२३२
„ २.	३८१६
„ २.	८१२५
कारीष ३.	५१११३
कारु १.	११२४
„ १.	३१५५८
„ १.	३११७
„ १.	६१११५
कारुज १.	७१११८
कारुण ५. २. ३.	५१४३८
कारुणिक १. २. ३.	५१४३८
कारुण्य ३.	३६११९२
कारुबिन्द १.	३१५७
कारोत्तर १.	३११५२
कार्तस्वर ३.	३२११८
कार्तान्तिक १.	३७२५
कार्तिक १.	२११६६
कार्तिकिक १.	२११६६
कार्तिकी २.	२११७७
कार्तिकेय १.	१११५६
कार्पास १.	३८११०६
„ १. २. ३.	४३३११७
कार्पासवृक्ष १.	३११९
कार्पासी २.	३३३९९



[ कार्य ]

शब्दानुक्रमणिका

[ काष्ठीला ]

कार्य १. २. ३.	५१७२	कालभाग १.	३१७७८	काली २.	३१९९१
कार्मण ३.	३१६११७	कालमालक १.	३३१२२२	कालीची २.	१२२३६
कार्मुक ३.	३१७१७२	कालमेपिका २.	३३१२८१	काल्य २.	३३११७६
" ३.	७३३६	कालमेपी २.	३३१२०८	" २.	३३१२१३
कार्य ४.	३१६२३६	कालरात्री २.	१११६१	" ३.	३३११५४
कार्वट ३.	४३३३	कालवृन्ती २.	३३१२७९	कालोत्तिन् १.	२११८९
कार्वटिक ३.	४३३३	कालशीनक १.	३१५२५	कालोदक १.	३१११५
कार्यापण १.	५११३९	कालशेख ३.	३१८१४८	कालिपक १.	३३१७३
" १.	५११४०	कालस्कन्ध १.	३३३१५१	काल्य ३.	२११६९
कार्यिक १.	५११३८	" १.	३३३८७	काल्यक १.	३३३११७
" १.	५११३९	काला २.	३२११२	कावचिक ३.	५११११
" १.	५११३९	" २.	३३३१३८	कावाट १.	३१७१९९
कार्ण ३.	३१६१०	" २.	३१८१८५	कावातायनिका २.	
( कार्य )		कालागार ३.	३१८१०८		३३३३८
कार्मरी २.	३३३१५७	कालाची २.	३३३२०९	कावेर ३.	३१८८०
कार्मर्य १.	३३३१५७	कालानुसार्य ३.	३१८१९६	कावेरी २.	३१२२८
कर्त्यक १.	३३३१८८	" ३.	३३३१५४	कान्य ३.	२१४४२
काल १.	१२३३५	कालायस ३.	३२३३५	काण १. ३.	३३३२२७
" १.	२११५२	कालावलोक १. २. ३.	३३६१३५	काशशाकट १. २. ३.	३१८२०
" ३.	३२३३३	कालिक १.	३१७२२	काशशाकिन् १. २. ३.	३१८२०
" १.	५३३११	कालिका २.	२३३१६	काशि १ व.	३३३१४०
" १.	६१११५	" २.	३३६१४९	" १.	३३३२२७
कालक १.	४३३१७७	" २.	३३७१११	काशिका ३.	३३३३७
कालकण्ठक १.	२३३३६	" २.	३३८१५	काश्मीर १ व.	३३३२७
कालका २.	३३३२०	" २.	३३८८४	" ३.	३३८८८
( कालिका )		" २.	३३९८१	काश्मीरज ३.	३३८११७
कालकिञ्च १.	३३५८	कालिङ्ग १.	३३३३२	काश्मीरी २.	३३३१९८
कालकुण्डक १.	३३५२९	" १.	३३३३६९	काश्यप ३.	३३३१०६
कालकुन्ध १.	११११४	कालिङ्गी २.	३३३३६९	काश्यपसुत १.	१११३७
" १.	११३३५	कालिनी २.	२११४०	काश्यपी २.	३३३१४
कालकूट १.	४११२२	" २.	४३३१९	काष्ठ ३.	३३३१३
" १.	४११२३	कालिन्दी २.	४२२२५	काष्ठतप्त १.	३३३१३४
" १.	८११३१	कालिन्दीकर्षण १. १११२३	१११४९	काष्ठा २.	२११२३
कालकृणिका २.	३३३१७८	काली २.	१२३३०	" २.	६२२८
कालखण्ड ३.	४३३११३	" २.	२२२२	काष्ठाश्रुवाहिनी २.	
कालधर्म १.	३३३२०१	" २.	३२२१७		४२२१५
कालनिर्घास १.	३३३१५३	" २.	३३३१०४	काष्ठी २.	३३३१७५
कालपर्णी २.	३३३१२२	" २.	३३३१२७	काष्ठीला २.	३३३१९१
कालपुच्छ १.	३३३२९	" २.	३३८७७	" २.	३३३१७३
कालपूर १.	३३८३३				
कालपूरक १.	३३८३३				

[ काष्ठेन्धन ]

वैजयन्तीकोषः

[ कुकर

काष्ठेन्धन ३.	३१६१७
काष्मरी २.	३१६१७
कासलुद् १.	३१८१२७
कासमर्दक १.	३१३१५४
कासर १.	३१४१९
कासार १.	४१२१६
कासू २.	३१७१६६
„ २.	६१२१८
काहला २.	३१९१२६
किंवदन्ती २.	२१४३९
किंशार १.	७१११९
किंशुक १.	३१३२९
„ १.	३१३७८
„ १.	४१११४
किक्कीदिवि १.	२१३२९
किक्कीसाव १.	४१११५
किसि २.	३१४३९
किङ्कर १.	३१९३३
किङ्किणी २.	४१३१४५
किङ्किराट १.	३१३१८९
किङ्किरात १.	३१३१८९
किङ्किर १.	२१९१२९
„ १.	७११२२
किञ्चन ४.	८१८१२
किञ्चित् ३. ४.	३१६१६
„ ३.	५१४१३६
„ ४.	८१८१२
किञ्चलुक १.	४११५९
किञ्चोल १.	४१२१६
किञ्ज १ व.	३११२८
किञ्जक १.	४१२१५
„ १. ३.	७१५३१
किट १.	३१५२१
किटि १.	३१४३६
किट्ट १. ३.	४१४१२०
किट्टिम ३.	४१२३३
किण १.	३१६१२१
„ १.	३१७२१७
किणिही २.	३१३११५
„ २.	३१३१३३
किण्व ३.	३१५५०

किण्व ३.	६१३१५
कित्तव १.	३१३१७६
„ १.	३१९१५८
किविर १.	३१३१७०
किनाटक ३.	३१३११४
किन्नर १.	११३३३
किन्नरी २.	३१९१२८
किन्नरेश्वर १.	११३१५५
किम् १. २. ३.	८१४१६
„ ४.	८१७३३
„ ४.	८१८१२
किमिला २.	४१४१२०
किमु ४.	८१८१२
किमुत ४.	८१८१४
किम्पचान १. २. ३.	५१४१५९
किम्पाक १.	३१३१८०
किम्पुरुष १.	११३३३
„ १.	३१११६
कियदेतिका २.	३१६१६६
( कियदेहिका )	
कियाह १.	३१७१०१
किरण १.	२१३१३६
किरात १.	३१५१४६
„ १. २. ३.	५१४१५
किरातज ३.	३१८११४
किरि १.	३१४१६
„ २.	३१७१७८
किरिभ १. २. ३.	५१४१९
किरीट ३.	४१३१३५
किरीटिन् १.	३१७७२
किर्मरि १.	५१३१२३
किल ४.	८१७१९
किलास १. २. ३.	५१४१४४
किलासन्न १.	३१३१६४
किलासिन् १. २. ३.	४१४१४६
किलिकिञ्चित ३.	३१९१९४
किलिञ्ज १.	४१३१६६
किलिञ्ज ३.	८१४१३६

किह्वी २.	३१७१८०
किशालिन् १.	११२१५७
किशोर १.	३१७१०७
किष्कु १.	३१११५४
„ १.	३१११५६
„ १. २.	६१५१९
किसल १.	३१३११७
किसलय ३.	३१३११७
किसिद्धक १.	३१७१०९
कीकट १ व.	३११३१
कीकस १.	४११३९
„ ३.	४१४१०८
कीचक १ व.	३१३२१५
कीट १.	४११३९
कीन ३.	४१४१०७
कीनाश १.	११२३५
„ १.	५१३१२१
„ १. २. ३.	७१५१२३
कीर १.	२१३१२५
„ १ व.	३११२७
कीर्ण १.	४१२१७
कीर्णजल १.	४१२१८
कीर्ण २.	६१२१६
कीर्ति २.	२१४३६
„ २.	६१२१६
कीर्षा २.	२१३१२४
कील १. २.	११२१२९
„ १.	३१७१८५
„ १. ३.	३१७१३१
„ १. २. ३.	६१५१९
कीलक १.	४१४१२३
कीला २.	११२१२९
कीलाल ३.	७१३१७
कीलित १. २. ३.	५१४१६७
कीलिनी २.	३१११४
कीलुष १.	३१५११४
कीषा १.	३१४३९
कु २.	३११११
„ ४.	८१७३३
कुकर १. २. ३.	५१४१४

[ कुकुण्ड ]

शब्दानुक्रमिका

[ कुवर ]

कुकुण्ड १.	३१३१५२
कुकुन्दर ३.	४१४६५
कुकुल १. ३.	७१५२४
कुनकुट १.	२३३१३
,, १.	२३३३२
,, १.	२३३४०
,, १.	३३३१४९
,, १.	३३५२३
,, १.	३३५२५
,, १.	३३५२६
,, १.	३३५२६
,, १.	४३३१३४
कुक्कुटध्वज १.	११२५७
कुक्कुटाक्ष १.	३३३१६८
कुक्कुटि २.	३३३१९६
कुक्कुर १.	३३३१९
,, ३.	३३८१२२
कुक्किक १.	४३३१६७
कुक्किकृजित ३.	२३३८
कुक्किभरि १. २. ३.	५३३५०
कुक्कयनि १.	१३३२१
कुक्कण १.	३३५३३
कुक्कुम ३.	३३८११६
कुक्कुखणी २.	२३३१२८
कुक्क १.	४३३१६८
कुक्कन्दन ३.	३३८११४
,, ३.	३३८११५
कुक्कर १. २. ३.	५३३४८
कुक्कार १.	३३३७२
कुक्क १.	२३३३१
,, १ ब.	३३३२९
,, १.	३३३५
कुक्किका २.	४३३४९
कुक्कित १. २. ३.	५३३१२३
कुक्क १.	३३२१०
,, १. ३.	६३५२३
कुक्कना २.	२३३२७
कुक्कर १.	३३७६१
कुक्कल ३.	४३३८२
कुक्किका २.	३३३१३५

कुट १.	३३५१३
,, ३.	३३८११९
,, १.	४३३१०८
कुटच १.	३३३७३
कुटज १.	३३३७३
कुटजट १.	३३३६८
,, ३.	३३३२०१
कुटपुरि १.	२३३३२
कुटर १.	३३३२
कुटि २.	३३३३३
,, १. २. ३.	६३५२४
,, १. २. ३.	८३३२६
कुटिल १. २. ३.	५३३१२१
,, १. २. ३.	८३३२४
कु. टी२	४३३२७
,, २.	८३३२६
कुटीर १.	४३३२७
,, १.	७३३२०
कुटम्ब ३.	४३३५१
कुटम्बध्यापृत १. २. ३.	५३३५२
कुटम्बिका २.	३३३१८७
कुटम्बिनी २.	४३३२१
कुट्मन्ती २.	३३३१६४
कुट्मिति ३.	३३३२५
कुट्टार १.	३३३१
कुट्टिनी २.	४३३२५
कुट्टिम १. २.	४३३३२
कुट्टीर १.	३३३१
कुट्टमल १. ३.	३३३१९
,, ३.	३३३२१५
कुठ १.	३३३५
कुठरणा २.	३३३१३८
कुठार १.	३३३३२
,, १. २. ३.	३३३३६
कुठेरक १.	३३३११८
कुठ १.	१३३५८
कुठर १. ३.	३३३१०
कुठप १.	५३३५३
कुठम्बिनी २.	४३३२१
कुठय १. ३.	४३३३७

कुठयमास्या २.	४३३३१
कुण १.	२३३१५
कुणप १.	३३३२१६
,, ३.	४३३११८
कुणि १.	३३३८५
,, १. २. ३.	५३३१४
कुण्ड १. २. ३.	५३३७४
कुण्ड १.	३३५६०
,, ३.	३३३२०९
,, ३.	४३३८१
,, ३.	६३३५
कुण्डगोलक १.	३३५६१
कुण्डधान्य १.	३३३४१
कुण्डनी २.	४३३२५
कुण्डल १.	३३३१६३
,, ३.	४३३१३५
कुण्डलिन् १.	४३३५
,, १. २. ३.	७३३२५
कुण्डली २.	३३३१३१
कुण्डिका २.	३३३१२४
कुण्डिन् १.	३३३९०
कुण्डणाची २.	२३३२६
,, २.	४३३३१
कुतलु १.	१३३५५
कुतप १.	३३३१४०
,, १.	७३३२९
कुतपविन्यास १.	३३३१४०
कुतप १.	४३३६०
कुत २.	४३३६०
कुतल ३.	३३३१८७
कुतफला २.	३३३६०
कुत्स १.	३३३५५
कुत्सना २.	२३३३३
कुत्सा २.	३३३१९३
कुत्सित १. २. ३.	५३३७५
कुत्सिता २.	३३३५०
कुय १.	३३३२२७
,, १.	३३३२३
,, १. २. ३.	४३३१६६
कुवर १.	३३३११

[ कुदानव ]

कुदानव ३.	३१३२३२
कुधाम्य ३.	३१८६३
कुध १.	३१२२
कुनटी २.	३१२११
” २.	३१२१७
कुनालिका १.	३१३२१
कुनाशक १.	३१३१२६
कुन्त १.	३१७१६५
कुन्तल १ व.	३११३३
” १ व.	३११४०
” १	३१४१८
कुन्ति २.	३१८८७
कुन्द १.	१३३६१
” १.	३३ ९१
” १.	३१९१८
कुन्दाळ ३.	३१८२९
कुन्दिल ३.	३३३१
कुन्दोपराळ १.	५३३५३
कुज्ञान ३.	७३३८
कुपूय १. २. ३.	५३३७६
कुप्य ३.	३१८७४
” ३.	३१८१२२
कुप्यप्रस्थ १.	५११५३
कुप्यमाष १.	५११४४
कुप्यशाला २.	३३३२१
कुवेर १.	१२१५५
” १.	८६३३
कुवेराक्षी २.	३३३९०
कुब्जक १. २. ३.	५३३११
कुब्जा २.	३३३४९
कुमार १.	१११५४
” १.	३१७२०
” १.	३१९१०५
” १. २. ३.	५३३२
” १. २. ३.	७१५२८
” १.	८६३१
कुमारी २.	३१११०
” २.	३३३१७८
” २.	३३३२६
” २.	३१८१०
” २.	३३३६

वैजयन्तीकोषः

कुमालक १ व.	३११२८
कुमुल १.	३३३६
कुमुद १.	२११८
” ३.	४२३४१
कुमुदवान्वव १.	२११२५
कुमुदा २.	३३३५८
” २.	३३३५८
कुमुदिनी २.	४२३४४
कुमुद्वत् १. २. ३.	३१३४३
कुमुद्वती २.	४२३४४
कुमुद्वतीशत्रु १.	२१११२
कुम्वा २.	३३३१०५
कुम्भ १.	४३३५८
” १.	४३३६९
” १.	४३३३२
” १.	५११५६
” १.	६१३३८
” १.	८६३१५
कुम्भकर्णारि १.	१११२१
कुम्भकार १.	३१५५
” १.	३१५६७
” १.	३१९२७
कुम्भकारी २.	३२३४४
कुम्भधारिका	४३३२६
कुम्भफल १.	३३३८२
कुम्भयोनि १.	३३३१५१
कुम्भशाला २.	४३३२३
कुम्भ २.	४३३५५
कुम्भिन् १.	३१७६०
” १.	४३३५३
कुम्भी २.	३३३५८
” २.	४२३४६
कुम्भीनस १.	४३३१२
कुम्भीर १.	४३३५३
कुम्भीरमक्षिका २.	२३३४६
कुम्भील १.	७३३२०
कुम्भोल्लखलक ३.	३३३५४
कुरङ्ग १.	३३३१४
” १.	३३३४०
कुरण्ड १.	३३३१९०
” १.	४३३३३१

[ कुलिक ]

कुरण्ड १.	७१११९
कुरण्डक १.	३३३१८८
कुरर १.	२३३३४
कुररी २.	३३३४५
कुरवक १.	३३३६१
” १.	३३३६१
” १.	३३३१८९
” १.	३३३१९०
” १.	३३३१९१
कुरिन् १.	३३३४३
कुरीर ३.	७३३८
कुर १.	३३३७८
कुरुकुक्षिका २.	२३३२३
कुरुल १.	४३३९९
कुरुवर्ष ३.	३३३१९
कुरुविन्द १.	३२३४०
” ३.	३२३४५
” १.	८११२१
कुरुविस्त १.	५११५२
कुरुवत्र १.	३३३१३३
कुर्दन ३.	३१९८७
कुल ३.	४३३११५
” ३.	४३३४९
” ३.	५१३६
” १.	५३३५४
कुलक १.	३३३५१
कुलकालक १ व.	३१३३४
कुलचर १.	३३३३४
कुलज १. २. ३.	५३३६१
कुलटा २.	४३३९
कुलपालिका २.	४३३७
कुलस्त्री २.	४३३७
कुलस्थक १.	३१८३७
” १.	४३३१२
कुलाय १.	२३३४९
” १.	८१५३६
कुलाल १.	२१९२७
कुलालकुक्षुट १.	२३३२१
कुलालिका २.	३२३४४
कुलिक १.	३३३१८५
” १.	२१९७



[ कुलिङ्गादी ]

कुलिङ्गादी २.	३८८३५
कुलिङ्गा १. २.	१२२१३
कुली २.	३८११०४
॥ २.	४४२८
कुलीन १.	३८७५४
॥ १. २. ३.	५४६१
लीनस ३.	४२११
कुलीसक १.	३८८३८
कुलीर १.	४२१४६
॥ १.	८११५४
कुलुत्थिका २.	३२१४४
॥ २.	३८१४८
कुल्माष १.	३२१४०
॥ १.	२८८५३
॥ १.	४३१७२
॥ ३.	४३१८२
कुल्य १ व.	३११२८
॥ १ व.	३११३४
॥ १ व.	३११४०
॥ ३.	४४११०९
कुल्यरपृषी २.	३३११०५
कुल्या २.	३३११८५
॥ २.	४४१२२
॥ २.	४२१२९
॥ २.	४४१७
॥ २.	५३१३०
कुव ३.	४२१३४
कुवक १.	३३१६१
( कुरुवक )	
कुवद १. २. ३.	५४१४८
कुवल ३.	४२१३४
॥ १. २. ३.	८११३८
कुवल्य ३.	४२१३४
कुवलायिक १.	२३१९
कुवली २.	३३१८७
॥ २.	८११३८
कुवाट १. २. ३.	४३१४६
कुवादुष्क १.	३५२५
कुविन्दक १.	१५१९
॥ १.	२११८
कुविलीन ३.	४२१३६

शब्दानुक्रमिका

कुवीणा २.	२१११२८
कुवेणी २.	२११४२
कुवेल ३.	४२१३४
॥ १.	५३१४२
कुषा १.	३३१२२७
॥ १. ३.	६५२४
कुषाद्वीप ३.	३१११४
॥ ३.	३१११७
कुषाल १. २. ३.	५४१४३
॥ १. २. ३.	७५२४
कुषाचट १.	३३१४४९
कुषास्थली २.	४३१६
कुषा २.	३३११०८
॥ २.	३७११४
कुषाग्रीयधी १. २. ३.	५४२९
कुषापीड १.	३३१४४९
कुषारणि १.	३३१५५६
कुषिन् १.	३३१५५३
कुषी २.	३२१३५
॥ २.	४११३३९
कुषीलव १.	३५१९८
॥ १.	३११११४
कुषोषय ३.	४२१३८
कुषाङ्ग १.	७११२१
कुषिन् १.	३७१६२
कुष्ठ ३.	३८१९९
॥ १.	४११२५
॥ ३.	४४१२४
॥ १. २.	६५२३
कुष्ठनुद २.	३३१९९
कुसट १ व.	३११४०
कुसीद ३.	३८१४
॥ १. २. ३.	७५३२
कुसीदिक १. २. ३.	३८११८
( कुसीदिक )	
कुसुम ३.	३३११८
कुसुमच्छद १.	४२१४५
कुसुमाञ्जन ३.	३२१४३
कुसुमित १. २. ३.	३३१८

( ३९ )

[ कूबर ]

कुसुम्भ ३.	३८१९१
॥ १.	७५२५
कुसूल १.	४३१६४
कुस्तुम्बरी २.	३८१४९
कुस्तुम्बुर ३.	३८१५१
कुहक १.	३७१३
॥ १. २. ३.	५४२३
॥ १. २. ३.	७४१०
कुहन १. २. ३.	७५२३
कुहर ३.	४११२
॥ ३.	७३१७
कुहलि २.	३३१५९
कुहिड १. ३.	२२११०
कुह्व २.	२११७१
कुहेडि २.	२२११०
कुहेलि २.	२२११०
कुह्वरी २.	३११४
कुजन ३.	२४१३
कुजित ३.	२४१३
कूट १. ३.	३२१८
॥ १. २. ३.	३४१५६
॥ १.	३५१९९
॥ ३.	३३१९५
॥ १. ३.	३७१८४
॥ १.	३११२२
॥ १. ३.	५११३
॥ १. ३.	६५१३
कूटयन्त्रक ३.	३११४०
कूटशास्त्रमलि १. २.	३३१९१
कूटसाविन् १. २. ३.	३८११०
कूटस्थ १. २. ३.	५४१७९
कूटागार ३.	४३१३१
कूणिका २.	२११२०
कूप १.	४२१७
॥ १.	४२११७
॥ १.	३११११
कूपक १.	४२१३१
कूपेपिशाचक १.	४२१४९
कूबर १. ३.	३७१२७

[ कृवर ]

वैजयन्तीकोषः

[ कृष्णधूमल

कृवर १.	३७१३२
कृ ३.	४३३७५
कृदूषक १.	३८८५४
कृच १.	४४१५७
" १. ३.	६५१२०
चकेसर १.	३३३२२०
कृचाल १.	३६११२
कृचिका १.	३८११४८
" २.	७२१५
कृची २.	३९११३
कृपर १.	४४३७२
कृपास १.	४३१२२८
कृर्म १.	३७७७६
" १.	३७७७९
" १.	४११५०
" १.	८६११३
कृल ३.	४२१३२
" ३.	६३१५
कृलकृपा २.	४३१२३
कृलमण्डक १	४११४८
( स्थूलमण्डक )	
कृली २.	३३३८७
कृलमण्डक १.	१११५१
" १.	३३११७०
कृकण १.	२३३२६
कृकणपत्रिका २.	३३३२३०
कृकर १.	२३३३६
कृकलास १.	४११२८
कृकवाकु १.	२३११३
" १.	३३३७९
कृकाटिका २.	४४१८४
कृच्छ्र १ २. ३.	१२१३९
" १. ३.	३६११३६
कृच्छ्रक ३.	३६११३६
कृच्छ्रातिकृच्छ्र १.	३६११३८
कृच्छ्रातिकृच्छ्रक ३.	३६११३१
कृत ३.	२११९१
" ३.	३६१९८

कृत ३.	३९१६२
" १. २. ३.	६५१२१
कृतकृत्य १. २. ३.	५४११९
कृतकोटिकवि १.	३६११७९
कृतज्ञ १.	३४१७०
कृतपुङ्गव १. २. ३.	३७१४९
कृतमी २.	४११४८
कृतमाल १.	३३३४८
" १.	३४३२८
कृतमालक १.	२३३२३
" १.	४४१०६
कृतमुख १. २. ३.	५४११९
कृतवेधन १.	३३११५९
" १.	३३११६०
कृतहस्त १. २. ३.	३७१४८
कृताकृत ३.	३६१९७
कृतान्त १.	१२१३५
" १.	७१११६
कृताह १.	३४३२७
कृतालक १.	१११५७
कृतास्त्र १. २. ३.	३७१४९
कृति २.	४४३६६
कृतिन् १.	३३३२९
" १. २. ३.	५४११९
कृतोद्वाह १.	३६१८
कृत् १. २. ३.	५४१०२
कृत्ति २.	३६३२१
" २.	४३३६०
" २.	४४१०३
कृत्तिका २ ब.	२११४३
कृत्तिकापिश्र १.	३३३९८
कृत्तिवासस् १.	१११४२
कृत्य ३.	३६३२३६
" १. २. ३.	६५१२०
" २. ३.	८६१३३

कृत्रिम ३.	३२१२८
" १.	३८१११०
" १.	३८११११
" १.	३८११२४
कृत्रिमाचारी २.	२११७६
कृत्स्न १. २. ३.	५४१८६
कृपण १. २. ३.	५४१५९
कृपा २.	३६१९२२
कृपाण १.	३७१५९
कृपाणी २.	३९१३७
कृपीट ३.	७२१८
कृपीटयोनि १.	१२११६
कृमि १.	३५३३३
" १.	४१३३४
कृमिकोशोत्थ १. २. ३.	४३१११८
कृमिज ३.	३८११०७
कृवी १.	३९१२६
कृश १ ब.	२११३७
" १.	५३३७
" १. २. ३.	५४१५
कृशानु १.	१२११७
कृशानुरेतम् १.	१११४५
कृशाश्विन् १.	२९१६३
कृपक १.	३८१२८
" १. २. ३.	७५३३१
कृषि २.	२८३३
कृषीवल १.	३७१२७
" १. २. ३.	३८१७
कृष्टक १. २. ३.	३८१२२
कृष्टि २.	६५१२४
कृष्ण १.	११११५
" १.	१११२५
" १.	३३३८३
" १.	५३१११
" १.	६५११४
कृष्णकाक १.	२३३१७
कृष्णकोहल १.	३९१५८
कृष्णद्वैपायन १.	१११३२
कृष्णधूमल १.	५३११३
" १.	५३३२२

[ कृष्णनवाशुद्ध ]

कृष्णनवाशुद्ध १.	२।२।२
कृष्णपाक १.	३।३।८३
कृष्णपाकफल १.	३।३।८३
कृष्णपिक्कल १.	५।३।२४
कृष्णपीत १.	५।३।२२
कृष्णफल १.	३।३।८३
कृष्णफला २.	३।३।१०८
कृष्णभगिनी २.	१।१।६२
कृष्णभूम १. २. ३.	३।१।४५
कृष्णमेदी २.	३।८।८६
कृष्णरक्तसित १.	५।३।२५
कृष्णला २.	३।३।१७९
कृष्णलोहित १.	५।२।१
कृष्णवर्ण १.	३।८।४३
कृष्णवर्णा २.	४।२।२९
कृष्णवर्मन् १.	१।२।१४
कृष्णधिपाणा २.	३।६।१०९
कृष्णधृन्त १.	३।८।४७
कृष्णधृन्ता २.	३।३।९०
” २.	८।२।१५
कृष्णधृन्तिका २.	३।३।५७
कृष्णशालि १.	३।८।३३
कृष्णःशिम्वि २.	३।८।४७
कृष्णशृङ्गक १.	३।४।९
कृष्णसर्प १.	४।१।१२
” १.	४।१।१३
कृष्णसार १.	३।४।१२
कृष्णस्वसु २.	१।१।६२
कृष्णाजिन ३.	३।६।२१
कृष्णायस ३.	३।२।३३
कृष्णिका २.	३।३।१८९
कृसर १.	३।३।७८
” ३.	४।२।४७
” १. २. ३.	४।३।७९
केकर १. २. ३.	५।४।१३
केका २.	२।३।३९
केकालि १.	२।३।३८
केकिन् १.	२।३।३७
केणिका २.	४।३।१२५

शब्दानुक्रमणिका

केण्डुक १.	४।१।४७
केतक १. २. ३.	३।३।२२३
केतन ३.	३।७।१७६
” ३.	४।३।१९
” ३.	७।३।१२
केतर २.	४।३।१९
केतु १ व.	१।३।३७
” १.	६।१।१६
” १.	८।१।६०
केतुमाल ३.	३।१।७
केवर १.	३।८।१७
केदार १.	३।८।१७
केनिपात १.	४।२।१६
केयूर ३.	४।३।१४३
केरल १ व	३।१।३४
केलक १.	३।९।६४
केलि १. ३.	३।९।८८
केलिकिल १.	१।१।५१
” १.	३।७।१७
” १.	३।९।६७
केलिकुञ्जिका २.	४।४।२८
केलिसहायक १.	३।७।१७
केवल १. २. ३.	७।५।२६
केवलिन् १.	१।१।३५
केश १.	४।४।९७
” १.	८।६।११
केशकार १.	३।७।११७
केशकूट १.	४।४।१००
केशान्न ३.	४।४।१२६
केशपञ्च १.	५।१।१८
केशपद्धति २.	४।४।१००
केशपाश १.	५।१।१८
केशपाशी २.	४।४।१०२
केशव १.	१।१।१४
” १. २. ३.	५।४।८
केशवप्रिय १.	३।२।५
केणवायुध ३.	३।७।१३४
केशहस्त १.	५।१।१८
केशिक १. २. ३.	५।४।८
केशिका २.	३।३।१३७
केशिन् १. २. ३.	५।४।८

[ कोकिल ]

केशिनी २.	३।३।११६
केशी २.	४।४।१०२
केसर १.	३।२।५
” १.	३।३।२६
” १.	४।२।४५
” १.	४।३।३२
” १. ३.	७।५।३०
केसरा २.	३।३।९९
केसरिन् १.	३।३।३३
” १.	७।१।२१
कैकसेय १.	१।२।४१
कैटमारि १.	१।१।१५
कैटभी २.	१।१।६२
कैढर्य १.	३।३।५०
” १.	३।३।५८
कैढर्यद्वेषिन् १.	३।३।७५
कैतव १.	७।३।८
कैदारक ३.	५।१।१२
कैदारिक ३.	५।१।१२
कैदार्य ३.	५।१।१२
कैरव ३.	४।२।४१
कैराती २.	३।७।९२
कैलास १.	३।२।५
कैलासनाथ १.	१।२।५६
कैवर्त १.	३।५।३२
” १.	३।५।९१
” १.	३।९।४२
कैवर्तसुस्तक १.	३।३।१९९
कैवल्य ३.	३।६।२३८
कैशिक ३.	५।१।१२
कैशिकी २.	२।९।१०१
कैश्य ३.	५।१।१२
कोक १.	२।३।९
” १.	३।४।८
कोकनद ३.	४।२।४०
” ३.	४।२।४२
कोकहित १.	२।१।५६
कोकाह १.	३।७।९९
कोकिल १.	२।३।२६
” १.	७।१।२०

[ कोकिलाच ]

कोकिलाच १.	३१३१०१
कोकुन्द १.	४३१७२
कोकुराह १.	३७१०५
कोटर १. ३.	३१३१४
कोटि २.	४३१५२
” २.	५११२९
” २.	५११३१
” २.	६२१११
कोटिका २.	४११४९
कोटिवर्ष ३.	४३१९
कोटिश १.	३१८२९
कोटी २.	३१८१७८
कोटीर १.	४३१३५
कोट्टी २.	४११०
कोठ १.	४११२४
कोण १.	२११३५
” १. २. ३.	२१२२९
” १. २. ३.	२११३६
” १.	४३१५२
” १.	६१११६
कोणप्रतिग्राहिन् ३.	४३१४१
कोणेपिशाचक १.	४११४८
कोण्ट १.	२१३१२
कोतना २ व.	२१११९
कोदण्ड ३.	३७१७२
” ३.	३७१७३
” ३.	७३११२
कोदङ्ग १.	३१३३४
कोद्रङ्ग १.	४३३३२
कोद्रव १.	३१८५४
कोप १.	३१६१८३
कोपन १. २. ३.	५४३२
कोमल १.	५३१५
कोयष्टि १.	२३१२०
कोरक १.	३३११९
कोरण ३.	२१४२
कोरदूषक १. ३.	३१८५४
कोराक्री २.	३१८८८
कोल १.	२११३६
” ३.	३१८८०

वैजयन्तीकोषः

कोल ३.	५११४८
” १.	५३३३४
” १.	५३१०५
” १. २. ३.	५४११४
” १. २. ३.	६५११६
” १.	६५११७
कोलक ३.	३१८१०५
” १.	४१११८
कोलदल ३.	३१८१०१
कोलम्बक १.	२१११२०
कोलवल्ली २.	३१८७८
कोला २.	३१८८१
” २.	६५११७
कोलाक १. २. ३.	२१४२३
कोलाङ्गक १.	३१४३३
कोलाहल १.	२१४२७
कोलि २.	३३१८७
” १. २.	८११२६
कोलिण्ट १.	३१४६६
कोविद १.	३१४२३४
कोविदार १.	३३१४७
कोश १.	२३१५०
” १.	३७३३
” १.	३७४४
” १.	३७१६८
” १. ३.	३११७४
” १.	४११६१
” १. ३.	४११६३
” १. २. २.	६५११५
कोशफल ३.	२१८१०५
” १.	३१८१०५
कोशफला २.	३३११५८
” २.	३३११६१
” २.	३३११६१
कोशातकी २.	३३११५८
कोशिका २.	३३११७
” २.	४३१५७
कोष्टिका २.	३३११९६
कोष्ठ १. ३.	३१४२२
कोष्ठकारी २.	२३१४७

[ कौलटिनेय

कोष्ण ३.	५३१९
कोसल १ व.	३११३७
” १ व.	३११४०
” ३.	३७१७४
” १.	५३११४
कोसलानन्दिना २.	४३१५
कोहल ३.	३११२७
” १.	३१५१८
कोहली २.	३१६४९
कोङ्कट ३.	३१६१९२
” १. २. ३.	५४२४
कौक्कुटिक १. २. ३.	३१६१७
” १. २. ३.	८११६
कौक्कुलेयक १.	३७१५९
कौट १.	३१६८०
कौटतच्च १.	३१६३४
कौटिक १.	३१६३७
कौटिल्य १.	३१६१५९
कौतुक ३.	६१६१८७
” ३.	७३११०
कौतूल १.	४११३८
कौतूहल ३.	३१६१८७
कौटवीण १. २. ३.	३१८१९
कौनृतिक १. २. ३.	५४२२
कौन्तिक १. २. ३.	३७११४४
कौन्ती २.	३१८१५
कौपीन ३.	४३१२९
” ३.	७३११३
कौबेरी २.	२११५
कौमारी २.	१११६५
कौमुद १.	२११८६
कौमुदी २.	२११२८
कौमोदकी २.	११११८
कौम्भ ३.	३१८१३८
कौरक्रिया २.	२१४२८
कौलकुक्ष्य ३.	४३११५
कौलटिनेय १.	४१४४४



[ कौलटेय ]

कौलटेय १.	४४४४४
" १.	४४४४४
कौलटेर १.	४४४४४
कौलीन ३.	७३११३
कौलेयक १.	३१४७०
" १. २. २.	५४१६१
कौश ३.	४३१६
कौशिक ५.	४४१११०
( कौशिक )	
" १.	७१११७
कौशिकी २.	८१११४
कौशेय १. २. ३.	
	४३१११८
कौपीतकी २.	३१११५३
कौसल्यानन्दवर्धन १.	
	१११२१
कौसीय ३.	३१११७८
कौस्तुभ १.	११११७
कौहोल ३.	३१११८२
क्रकच १.	३१११६
" १. ३.	३११३६
क्रकचिक १.	३१११५३
क्रतु १.	५४११४
क्रतुभुज् १.	१११३
क्रवमि १.	११२१३
क्रयन ३.	४४११२७
क्रन्दन ३.	२४११०
" ३.	७३१६
क्रन्वित ३.	३१११८७
क्रपुक १.	३१८१६९
क्रम १.	३११११३
" १.	३११११३
" १.	४११३१
क्रमण १.	३१७१९१
" ३.	४४१५६
क्रमुक १.	११२३२
" १.	३३३२१७
क्रमेलक १.	३१४१६७
" १.	३१५४५
क्रथ १.	३१८१६९
क्रथविक्रयिक १.	३१८१७२

शब्दानुक्रमणिका

क्रयिक १. २. ३.	३१८१६८
क्रय १. २. ३.	३१८१६८
क्रय्य ३.	४४११०६
क्रय्याद् १.	११२१२२
" १.	११२१४०
क्रय्याद् १.	११२१४०
क्राकचिक १.	३१११५६
क्राथ १.	४४११२७
क्रान्ति २.	५१२१६
क्रामणक १.	३१८१३०
क्रायिक १. २. ३.	३१८१८८
क्रासन १.	५३११
क्रिमि १.	४३११५३
क्रिमिज १.	३१८१९७
क्रिमिज ३.	४३१११७
क्रिमिपर्वत १.	३१११४८
क्रिमिर १.	५३१२५
क्रिमिरा २.	३४१२६
क्रिया २.	३११२२३
" २.	५२१९
" २.	६२१९
क्रियावत् १. २. ३.	५४१७४
क्रीडा २.	३११८७
" २.	२११८८
क्रुञ् १.	२३१३४
क्रुध् २.	३१११८३
क्रुधा २.	३१११८३
क्रुष्ट ३.	२११८७
क्रूर १.	३३१२१७
" ३.	४४११०८
" ३.	५३१५
" ३.	५३१७
" १. २. ३.	५४१२४
" १. २. ३.	५४१६०
" १. २. ३.	६४१४
क्रुरा २.	३३३८७
क्रेणी २.	३३३६९
क्रेतव्य १. २. ३.	३१८१६८
क्रेतु १. २. ३.	३१८१६८
क्रेय १. २. ३.	३१८१६८
क्रोड १.	२११३५

[ काथन ]

क्रोड ३.	५११४९
" १. २. ३.	६११२३
क्रोडीकरण ३.	४३११७०
क्रोध १.	३१११८३
" १.	३१११७६
क्रोधन १.	३१११६९
" १. २. ३.	५४१३२
क्रोधविवशा २.	३१११७७
क्रोधा १.	२४१३
" १.	३१११६२
क्रोष्टु १.	३४१३२
क्रोष्टुककटि ३.	३३११६९
क्रोष्टुमेखला २.	३३११६७
क्रौञ्च १.	२३११०
" १.	२३३३४
क्रौञ्चारि १.	११११५७
कलम १.	५२१२८
कलमथ १.	५२१२८
कलान्ति २.	५२१२८
किलञ्ज १. २. ३.	५४११३३
किलष्ट १. २. ३.	५४११३३
कलीतक ३.	३१८१०३
कलीतकी २.	३३१११०
कलीच १. २. ३.	३७११४७
" १.	४४१३
कलेदन् १.	६१११६
कलेदु १.	२११२६
कलेश १.	३१११९३
कलेशित १. २. ३.	
	५४१११३
कलोमन् ३.	४४१११२
कण १.	२४१११
कणक १.	४४११३५
कणन ३.	२४१११
कणित ३.	२४१११
कथन ३.	५२१४१
कथित २.	५४१११५
काण १.	२४१११
काथ १.	४४११४१
काथन ३.	३१७२१५
" ३.	५२१४१

काथसम्भव ]

वैजयन्तीकोषः

[ चुर

काथसम्भव ३.	३।२।४३
काथि १.	३।६।१५२
कण १.	२।१।५४
” १.	३।६।६२
” ३.	४।४।१२७
” १.	५।२।७
” ३.	५।४।११
कणदा २.	२।१।५६
कणन ३.	३।७।२१४
कणा २.	४।३।२६
( कणा )	
कणांशु २.	२।२।४
कणिका २.	२।२।४
कणितु १.	३।७।२१७
कत ३.	३।७।२१७
कतज ३.	४।४।१०५
कतव्रत १. २. ३.	३।६।१३
कत् १.	३।५।८५
” १.	३।५।११६
” १.	३।७।२४
” १.	३।७।१३७
कत्त १.	३।७।१
कत्तकुण्ड १.	३।५।६२
कत्त्रिय १.	२।५।२
” १.	३।७।१
कत्त्रियगोलक १.	३।५।६२
कत्त्रिया २.	४।४।२३
कत्त्रियाणी २.	४।४।२३
कत्त्रियी २.	४।४।२२
कपण १. २. ३.	५।४।१५
कपा २.	२।१।५६
कम १. २. ३.	६।४।३
कमा २.	१।१।४७
” २.	३।१।१
” २.	३।६।१८४
कमित् १. २. ३.	५।४।३३
कमिन् १. २. ३.	५।४।३३
कय १.	३।७।७५
” १.	४।३।१९
” १.	४।४।१२४

कय १.	५।२।३२
” १.	५।४।१४
कयि १.	२।३।९
करि २.	३।१।१
करिन् १.	२।१।८८
कव १.	४।४।१२१
कवधु १.	७।१।१८
काणिन् १.	३।६।२२
काणिनी २.	२।१।५
( कणिनी )	
काणी २.	२।१।५७
कान्त १. २. ३.	५।४।२१५
कान्ति २.	३।१।१
काम १.	१।२।२१
” १. २. ३.	५।४।८४
कार १.	३।८।१२७
” १.	३।८।१२९
” १.	५।३।३०
” १.	५।४।१३
कारक १.	७।१।१६
कारण ३.	२।४।३३
कारपत्रक १.	३।३।१५४
कारमृत्तिका २.	३।८।२५
कालन २.	३।६।१८७
चिति २.	६।२।८
चितिसम्भवा २.	३।४।४२
चिपण १.	७।१।२१
चिपणु १.	७।१।२१
चिपा २.	५।२।३३
चित्स १. २. ३.	५।४।६७
” १. २. ३.	५।४।९७
चिन्तु १. २. ३.	५।४।४०
चिप्र १.	२।३।१९
” ३.	४।४।१०८
” १. २. ३.	५।४।१२४
चिप्रा २.	५।४।८४
चीव १. २. ३.	५।४।३७
चीर ३.	३।८।१४५
” ३.	६।३।४
चीरक १.	४।१।२०
चीरज ३.	३।८।१३९

चीरबीज १.	४।२।४८
चीरविदारी २.	३।३।१९६
चीरक्षर १.	३।६।९८
” १.	३।८।१४७
चीरशुक्ल १.	४।२।४८
चीरशुक्ला २.	३।३।१९६
चीरावधि १.	३।१।११
चीराश १.	२।३।७
चीराहार १. २. ३.	३।६।१३४
चीरिका २.	३।७।८०
चीराद १.	३।१।११
चीरोदसुता २.	१।१।३६
चुण १. २. ३.	५।४।४९
चुणक ३.	३।९।१३९
चुत् २.	४।४।१२१
चुत १.	४।४।१२१
चुद् १.	३।५।२६
चुद् १.	४।१।३९
” १. २. ३.	५।४।१०९
” १. २. ३.	६।५।१३
चुद्क ३.	३।८।१२२
” ३.	३।८।१३४
चुद्घण्टा २.	४।३।१४५
चुद्घनासिक १. २. ३.	५।४।११
चुद्घनीवृत् १ व.	३।१।४१
चुद्घपक्षिन् १.	२।३।४१
” १.	२।३।४८
चुद्घर्हस १.	२।३।९
चुद्घाण्ड १.	४।१।४५
चुद्घोपाय १.	३।७।१२
चुध् २.	३।६।१८२
चुधा २.	३।८।४२
चुधामिजनन १.	३।८।४२
चुधित १. २. ३.	५।४।३६
चुप १.	३।३।६
” १.	३।८।६३
चुमा २.	३।८।४५
चुर १.	३।३।१०१
” १.	३।३।१४१

[ खर ]

शब्दानुक्रमिका

[ खर ]

खुर १.	३११२६
खुरक १.	३१३१०१
खुरकर्मन् ३.	३१६१४
खुरप्र १.	३१७१८२
खुरमदिन् १.	३१९१२६
खुरसमुद्र ३.	३१३१०८
खुरिका २.	३१७१६३
खुलक १. २. ३.	७१४१९
खुलतात १.	३१९१०८
” १.	४१४३२
खुव १.	४१४१९९
खेत्र ३.	३१८११७
” ३.	४१४३५
” ३.	४१२५२
” ३.	६१३६
खेत्रज १.	३१६१६१
” १. २. ३.	७१५३२
खेत्रपल्ली २.	४१३२७
खेत्राजीघ १. २. ३.	३१८१४
खेत्रिक १.	३१८११०
खेत्रिय १. २. ३.	७१४१९
खेत्रिया २.	३१८१६०
खैय ३.	३१८१२३
खेप १.	५१२१२
खेपण १.	४१४५८
” ३.	५१२३३
” ३.	५१२४०
खेपणी २.	४१२१७
खेपणीय १.	३१७१६६
खेम १.	६१५२२
खेमङ्कर १. २. ३.	५१४५५
खेत्र ३.	५१११२
खैरेयी २.	४१३७७
खोड १.	३१३१६२
खोणी २.	३११११
” २.	३१६१७
खोद १.	६१११३
खोम्य ३.	३१२३१
खौद्र ३.	३१८१३५
खौम १. ३.	४१३३३
” १. २. ३.	४१३११७

खौम ३.	४१३१२२
खौरकार १.	३१७११७
खणुत १. २. ३.	३१७१९७
खणू २.	३१८१२९
खमा २.	३११११
खमाभृत् १.	३१२११
खिवङ्क १.	३१४१४१
खवेड १.	२१४११
” १. २. ३.	६१५२१
” १. ३.	८१९३१
खवेल १.	४११२२
” १.	४११२२
ख	
ख ३.	२११११
” ३.	८१३१९
” ३.	८१६१४
खग १.	२१११४
” १.	२१३३३
” १.	२१३३२
” १.	३१७१७८
” १.	६१११८
खगच्छाय ३.	८१९१९
खचित १. २. ३.	५१५७८
खजक १.	३१९३१
खजाका २.	४१३१६३
खञ्ज १.	३१३२०८
” १.	३१५६
” १. २. ३.	५१४१४
खञ्जन १.	२१३२३
खञ्जरीट १.	२१३२३
खञ्जरीटी २.	२१३३४
खट १.	५१३१४
खटी २.	३१२१६
खट्टास १.	३१४३५
खट्टासिका २.	३१४३५
खट्वा १.	४१३१६४
खट्वाङ्ग १.	१११५९
खट्वाङ्गिन् १.	१११४६
खट्टिका २.	४१३४२
खट्टा १.	३१४७
” १.	३१७१५८

खट्टगानामान् १.	४११५१
खट्टगपत्र १.	३१४२२६
खट्टगपुच्छ १.	४११५१
खट्टगाङ्ग १.	११२३१
खट्टगाम्बु ३.	३१७१६१
खट्टगिन् १.	३१४७
खण्ड ३.	३१८११९
” १. ३.	३१८१३४
” १. ३.	४१४५६
” १. २. ३.	५१४८६
” १. २. ३.	६१५२५
खण्डना २.	६१६५३
खण्डपरशु १.	१११४३
खण्डपर्कट ३.	४१३१०६
खण्डल १. ३.	४१३१३०
खण्डवर्करा २.	३१८१३३
खण्डिक १.	३१८१३३
खण्डिका २.	३१६३२
खण्डित १. २. ३.	
	२१४२०
खण्डिता २.	२११६०
खण्डिन् १.	३१८१३८
खण्डीर १.	३१८१३६
खतिलक १.	११२१४
खदरी २.	३१३१४८
( खद्विरी )	
खदिका २.	४१३१७
खदिर १.	११२६
” १.	३१३१६३
खद्योत १.	२१३१७
खनक १.	३१५४०
” १.	४१३११
” १. २. ३.	७१५३३
खनि २.	३१२१८
खनित्र ३.	३१८२८
खनित्री २.	३१६१२३
खपुट १. २. ३.	३१६१३२
खपुर १.	३१३११
” १.	३१३२२२
” १.	७११२२
खर १.	३१३३९

[ खर ]

वैजयन्तीकोषः

[ खोड ]

खर ३.	३३३२१८
" १.	३३३२२८
" १.	३३३६५
" १.	५३३३
" १.	५३३५
" १.	५३३७
" १.	५३३४२
" ३.	८३३६
खरक १.	२३३१०
खरकुटी २.	३३३२५
खरकोमल १.	२३३८४
खरक्षण १.	२३३३५
खरच्छद १.	३३३२२९
खरट १.	५३३४
खरटी २.	३३३२६
खरणस् १. २. ३.	५३३१२
खरणस १. २. ३.	५३३१२
खरमञ्जरी २.	३३३११५
खरमुख ३.	३३३१२५
खरम्भर १ व.	३३३२३
खरागरी २.	३३३८६
( खरा, गरी )	
खरारि १.	१३३२१
खरारवा २.	३३३१०२
खर १. २. ३.	३३३१२
" १.	६३३१८
खरुञ्जक १. ३.	३३३१०
खरुहा २.	३३३१३२
खरुल १.	३३३७६
खर्जनी २.	३३३१०९
खर्जू २.	३३३१२४
खर्जूर ३.	३३३१३
" ३.	३३३२४
" १.	३३३२२२
" १.	३३३३३
खर्जूरिका २.	३३३२२२
खर्व ३.	५३३२८
" १. २. ३.	५३३८१

खल १.	३३३३१
" १. २. ३.	३३३१४२
" १.	५३३२५
खलकुल ३.	३३३४७
खलति १. २. ३.	३३३१४७
खलधान ३.	३३३३१
खलपू १. २. ३.	३३३६७
खला २.	६३३२५
खलि २.	३३३२७
" २.	३३३८१
खलिनी २.	५३३१२
खलीन १. ३.	३३३११३
खलु ४.	८३३२०
खलुकी २.	३३३८८
खलुष १.	५३३३४
खलुरिका २.	३३३१९४
खलेपाली २. १.	३३३३१
खल्या २.	५३३१२
खल्व १.	३३३३६
" ३.	३३३६०
खलवाट १. २. ३.	३३३१४७
खलुक १.	५३३५३
खप १.	३३३४९
" १.	३३३५६
" १.	५३३५२
खस १.	३३३१२३
खसुम ३.	३३३४७
खाङ्ग १.	२३३१४
खाटि १.	३३३२१६
खाङ्गिक १. २. ३.	३३३१४४
खाण्डवप्रस्थ १. ३.	३३३८
खातक ३.	३३३५
खादन ३.	३३३१०४
" १	३३३८८
खादित १. २. ३.	५३३१०७
खाद्य ३.	३३३११

खाध्वनीन १.	२३३१४
खारी २.	५३३५७
" २.	५३३५७
" २.	५३३६३
खारीक १. २. ३.	३३३२२
खावेय १.	१३३१
खिल ३.	३३३३३
" १. २. ३.	३३३१८
खिलखिल १.	२३३४०
खुडार १.	३३३४४
खुडुक १.	३३३२२१
( खुडुक )	
खुर १.	३३३७४
" १.	३३३१०१
खुरणस् १. २. ३.	५३३११
खुरणस १. २. ३.	५३३११
खुरुराह १.	३३३१०५
खेचर १.	१३३३
" १.	७३३२२
खेट १. ३.	३३३१
" १. २. ३.	५३३७५
" १. २. ३.	६३३२४
खेटक ३.	३३३१९७
" ३.	३३३१३
" १.	३३३८०
" १.	३३३१२१
खेटन ३.	३३३४०
खेटिन् १. २. ३.	३३३१४६
खेद १.	५३३३२
खेय ३.	३३३१३
खेल १.	३३३२१५
खेला २.	३३३८७
खेलि १.	३३३४४
खेलाह १.	३३३१०३
खोझाह १.	३३३१९
खोड १.	२३३३५
" १. २. ३.	५३३१४



# खोरण ]

## शब्दालुक्रमणिका

## [ गमन

खोरण १.	पा३३३
खोलक १.	७११२३
ख्यातगर्हण १. २. ३.	३१६११
ख्याति २.	२१४३६
” २.	३१६१६३
ग	
गगन ३.	२११११
गङ्गा २.	४१२१२४
गङ्गाधर १.	१११४२
गङ्गेष्टि २.	४११५७
गच्छ १.	पा१३७
गज १.	३१७६०
गजचिम्रिता	३१३१७२
गजच्छाया २.	२११३१
गजजीवन १.	३१७८८
गजता २.	पा११९
गजमण्डन १.	३१७८६
गजवीथिका २.	२११४८
गजानन १.	१११५३
गजाराति १.	३१४३२
गज १. २. ३.	६१५२६
गज्ज ३.	२१४१२
गज्जा-२.	३१२१०
गड्ड १.	४१४१३३
” १. २. ३.	६१५२९
गड्डल १. २. ३.	पा१११
गड्डी २.	३१८४५
गड्डोल १.	४१३१०१
गण १.	३१७५८
” १.	पा१११
” १.	६१११९
” १	८१६१३
गणक १.	३१७२५
गणतिथ १. २. ३.	पा१११९
गणन ३.	पा११३६
गणपतिप्रिय १.	१११५१
गणपूरण १. २. ३.	पा१११९
गणरात्र ३.	२११५९

गणाधिप १.	१११५४
गणि १.	३१६१८२
गणिका २.	३१७३३
” २.	४१४२४
” २.	७१२१७
गणिकाराण १.	पा११८
गणिकारी २.	३१३१८६
गणोत्साह १.	३१४१८
गण्ड १.	३१७७५
” १.	४१४९०
” १.	४१४१२३
” १.	पा१३७
” १.	६११२०
गण्डक १.	३१४१७
” १.	३१७११६
” १.	४११४५
गण्डकली २.	३१३१४८
गण्डफली २.	८१२१५
गण्डमाल १	४१४१२९
गण्डमालहन् १.	३१३१७७
गण्डरी २.	३१३१९८
गण्डशैल १.	३१२१९
गण्डरी २.	३१८१७८
गण्डुक १.	४१३१६२
गण्डूपद १.	४११५९
गण्डूप १.	४१४१७८
” १. ३.	७१५३४
गण्डूपक १.	३१६१००
गण्डोर १.	४१३१०१
गण्डोली २.	२१३१४६
गति २.	३१६१२३६
” २.	४१४१३३
” २.	पा२११०
” २.	६१२११
” २.	८१२१५
गद १. २.	६१५२९
गदाम्रज १.	१११२५
गदापाणि १.	११११३
गद्व १. २. ३.	२१४१५
गद्वस्वर १.	३१४१८
गद्यपद्यमयी २.	२१४४२

गन्त्री १.	३१७१२७
” २.	४१३१०८
गन्ध १.	पा३१२
” १.	पा३१५४
” १.	६११२२
गन्धक १.	३१२१४
( गन्धिक )	
गन्धकुटी २.	३१८१९८
गन्धचेलिका २.	३१४१३६
गन्धन ३.	७१३१३
गन्धनाकुला २.	३१८१९७
गन्धमुण्डक १.	३१३१५९
गन्धसूरा १.	३१४३५
गन्धरस १.	३१२१५
गन्धर्व १.	११२३८
” १.	११३१२
” १.	३१४३२
” १.	७१३१४
गन्धर्वगण १.	११३१११
गन्धर्वहस्त १.	३१३१६५
गन्धवह १.	११२४७
” १. २.	८१५३७
गन्धवाह १.	११२४७
गन्धसार १.	३१८११३
गन्धसारण १.	पा३१४९
गन्धसोम ३.	४१२४१
गन्धाखु २.	४११३२
गन्धाश्मन् १.	३१२१४
गन्धाहिक १.	४१११८
गन्धिक १.	पा३१५१
” १.	पा३१५४
गन्धिघना २. १. ३.	
	१११३९
गन्धिनी २.	३१८१९८
गमस्ति १.	२१११३
” १.	२१११६
” १. २.	८१२१५
गमीरक १. २. ३.	४१२१९
गम १.	पा२११०
गमन ३.	पा२१९
” ३	पा२११०

गमि ]

गमि १.	३१६२०१
( निमि १ )	
गम्भीरी २.	३३१५८
गम्भीर १. २. ३.	४२१२०
" ३	८३११७
गर १.	४११२२
" १.	४११२३
गरल १.	३३१५०
" १.	४११२२
गरवायु १.	१२१५३
गरह ३.	३३१५७
गरी २.	३३१८६
गरुड १.	१११३७
गरुडभञ्ज १.	११११४
गरुडा-२.	४१११०१
गरुत् १.	२३१४८
गरुत्त १.	१११३७
" १.	७११२४
गरुल १.	४२१४७
गरोलिका २.	४२१४८
गर्गर १.	३१५३४
गर्गरी २.	३१५३२
" २.	४३१२७
गर्ज १.	२११३३
" १.	३१७६०
गर्जन ३.	२११३३
" ३.	३३१२०६
गर्जना २.	२११३३
गर्जा २.	२११३३
गर्जितः २.	२२१२५
" १.	७११३४
गर्त २.	४२१३३
गर्तकुङ्कुट १.	२३१२१
गर्तिका २.	४३१२२
गर्दनक १.	३११६६
गर्दभ १.	३११६५
गर्दभाण्ड १.	३३१५९
गर्दभाह्वय ३.	४२१४१
गर्धन १. २. ३.	५११३५
गर्धना २.	३३११८०
गर्भ १.	३१८१४१

वैजयन्तीकोषः

गर्भ १	४११४०
" १.	४११२१
गर्भक ३.	२११५८
( गर्भित )	
" ३.	४३११५५
गर्भपाकिन्	३१८३४
गर्भसम्पुट १.	४११११३
गर्भागार १.	४३१५१
गर्भाजि १.	३३११५७
गर्भाधान ३.	३३१६२
गर्भाशय १.	४१११८
गर्भिणी २.	४१११६
गर्भोपवातिनी २.	३३१४७
गर्भुट १.	३११३०
गर्भुटिका २.	३१८५९
गर्भुत् २.	३१८५९
" २.	६१११८
गर्व १.	३३११६९
गर्वहारिका २.	२११२८
गर्वि २.	३३११६९
गर्वित १. २. ३.	५११२०
गर्वण ३.	२११३३
गर्वणा २.	३३११९३
गर्हा २.	३३११९३
गर्हा १. २. ३.	५११७५
गर्हावादिन् १. २. ३.	
गल १. २. ३.	४११४७
गलकम्बल १.	३३१६०
गलगण्ड १.	४११२९
गलन्ती २.	४३१५७
गलस्तनी २.	३३१६२
गलाङ्कुर १.	४११२९
गलित १. २. ३.	५१११०२
गलेवाल १.	४११४२
गल्या २.	५१११४
गल्ल १.	४११९०
गल्वर्त १.	३११५३
गवय १.	३३१३३
गवल १.	३३१११

[ गान्धर्व

गवल ३.	३१८११८
गवली २.	३३११२३
गवाच १.	४३१५४
गवाचक ३.	४३१५३
गवाक्षी २.	३३११३४
" २.	३३११७३
" २.	३३११८३
गवाक्षिनी २.	३२११४९
गवाक्षुका २.	३१८५९
गवेधु २.	३१८६१
गवेधुका २.	३१८६१
गवेपणा २.	३३११२१
गवेधित १. २. ३.	५१११८
गव्य ३.	३१८१४५
गव्या २.	३११६२
" २.	५१११३
" २. ३.	६११२६
गव्यूत ३.	३११६२
गव्यूति २.	३११६२
गहन ३.	३३११
" ३.	८३११७
गह्वर ३.	७३११५
" ३.	८३११७
गाङ्गी २.	२११७६
गाङ्गेय १.	१११५६
" १. ३.	७११३५
गाङ्गेरुकी २.	३१८६१
गाढ १. २. ३.	५१११३२
गाढास्य ३.	३१८१४१
गाणिक्य ३.	५१११८
गाण्डिव १. ३.	३१७१७४
" १. ३.	७११३५
गाण्डीव १.	७११३५
गातु १.	२११२
गात्र ३.	३१७७५
" ३.	४११५२
" ३.	४११५५
गात्रसङ्कोचिन् १.	३३१७२
गान ३.	२११२
" ३.	३१११०९
गान्धर्व १.	१३१२

गान्धर्व ३.	३।६।२९	गुच्छ १.	३।३।२०	गुण्डा २.	३।३।९५
” ३.	३।९।११०	” १.	४।३।१४०	गुण्डित १. २. ३.	५।४।११३
गान्धार १ व.	३।१।२४	गुच्छा २.	३।८।३५	गुद ३.	४।४।६०
” १.	३।९।१३२	” २.	३।८।६०	गुदग्रह १.	४।४।१३२
गायत्र १.	३।६।८	गुच्छार्ध १.	४।३।१४०	गुदानिल १.	३।६।२०५
” ३.	३।६।३४	गुज १.	३।३।२०६	गुध १.	३।८।१३३
गायत्री २.	३।६।३४	गुञ्जन ३.	२।४।२	गुन्दिल १.	२।४।१०
गारुड ३.	३।२।१९	गुञ्जा २.	३।३।१४९	गुन्त्र १.	३।३।२२८
गारुत्मत् ३.	३।२।३८	” २.	५।१।४४	गुन्त्रा २.	३।३।६६
गार्भिण ३.	३।६।३	” २.	६।२।११	” २.	३।३।१९९
” ३.	५।१।८	गुड १.	३।३।२७	” २.	३।८।६०
गार्हपत्य १.	१।२।२४	” १.	४।३।१०१	गुप्त १. २. ३.	५।४।१००
गालव १.	३।३।४९	” १.	४।३।१६१	गुप्तराग १.	३।३।२२५
” १.	३।३।५२	” १.	४।४।६२	गुप्ति २.	६।२।११
गालि २.	२।४।३३	” १.	४।४।१३३	गुम्फ १.	५।२।३९
गिर २.	१।१।९	” १. २.	६।५।२७	गुम्फा ३.	५।२।३४
गिरि १.	३।२।१	” ३. २.	८।९।३२	गुरु १.	१।१।३४
” ३.	३।८।९६	गुडक १.	४।३।४७	— ” ३.	३।२।२८
” १.	४।३।१६१	गुडजूष १.	४।३।९६	” १.	३।६।२२
गिरिकर्णिका २.	३।१।१	गुडपुष्प १.	३।३।४४	” १.	३।८।५३
गिरिकर्णी २.	३।३।१३४	गुडफल १.	३।३।४५	” ३.	३।८।१३९
गिरिका २.	४।१।३२	गुहा २.	६।५।२७	” १. २. ३.	६।५।२७
गिरिकोलि २.	३।३।७८	” २.	८।९।३३	गुरुपत्र ३.	३।३।३२
गिरिजा २.	४।२।२२	गुहाका २.	३।६।१९७	गुरुस्वमृत १. २. ३.	५।४।२५
गिरिप्रिया २.	३।३।१०५	गुह्वरी २.	३।३।१३१	गुलिन् १.	५।३।२५
गिरिमल्लिका २.	३।३।७३	गुह्वरक १.	४।३।१०१	गुलुम्फ १.	३।३।२०
गिरिलक्ष्मण १.	३।३।२८	गुण १.	३।६।१६२	गुल्फ १.	४।४।५७
गिरिष्ठा १.	१।१।३९	” १.	३।९।३०	गुल्फशीर्ष १.	४।४।५७
गिरिसार १.	३।२।३४	” १. २. ३.	४।३।९३	गुल्म १.	३।३।७
गिरिस्तनी २.	३।१।३	” १.	५।३।१	” १.	५।३।५८
गिरीयक १.	४।३।१६२	” १.	५।४।६४	” १.	४।४।११३
गिरीष्ठा १.	१।१।३९	” १.	६।१।२०	” १.	५।४।१३०
गिल १.	३।५।१५	गुणग्राम १.	५।१।६७	” १.	६।१।१९
गीत ३.	३।९।१०९	गुणलयनी २.	४।३।२२५	गुलिमनी २.	३।३।७
गीतिज्ञासन ३.	३।६।२९	गुणवृक्ष १.	८।६।२०	गुवाक १.	३।३।२१७
गीत्युपक्रम १.	३।९।१४०	गुणवृक्षक १.	४।२।१७	गुह १.	१।१।५५
गीर्ण १. २. ३.	५।४।१०६	गुणसामान्य ३.	३।६।१६२	गुहा २.	३।२।६
गीर्वाण १.	१।१।२	गुणावली २.	३।४।३६	” २.	३।३।१३६
गीष्पति १.	२।१।३३	( गुणापणी )		गुहाक्षय १.	३।३।८०
गुगुलु १.	३।३।५३	गुणित १. २. ५.	२।४।२२	गुहाशय १.	४।१।५०
गुघ १.	२।८।६३	गुणोत्कर्ष १.	५।२।३		

गुहाशय ]

गुहाशय १.	८११२१
गुह्य ३.	४४४६२
„ १. २. ३.	५४४१२०
„ १. २. ३.	५४४१२०
गुह्यक १.	१३३३
„ १.	८११५६
गुह्यकेश्वर १.	१३३५७
गुह्यधारा २.	४४४६३
गुह्यवन्प १.	४३३१३१
गुह्यमन्त्र १.	४४४६२
गू १. २.	८१५३८
गूकोश १.	१३३६०
गूढपद ३.	३३३१७३
गूढपाद १.	४११६
गूढपुरुष १.	३३७२६
गूढवृक्ष १.	३३३५५
गूघ १.	४४४११९
गून १. २. ३.	५४४११३
गुञ्ज १.	३३३५७
„ १.	३३३२०४
„ १.	३३३२०६
„ १.	३३३२०७
गुण्डव २.	३३३३९
गुप्ता १. २. ३.	५४४३५
गुप्त १.	२३३३०
गुप्ति २.	३३३५८
„ २.	३४४४८
गृह ३.	४३३१९
„ १ व.	४४४३५
गृहकाण्ड १.	३३८७८
गृहकारिका २.	२३३४३
गृहगोधिका २.	४१३३०
गृहगौलिका २.	४१३३०
गृहजालक १. २. ३.	३११८६
गृहद्रुम १.	३३३५४
गृहपति १.	१३२२४
„ १.	३३७२७
गृहमणि १. २.	४३३१६१
गृहसूग १.	३४४६९
गृहमेधिनू १.	३३६४०

वैजयन्तीकोपः

गृहयालु १. २. ३.	५४४३८
गृहश्रेणी २.	४३३४६
गृहस्थ १.	३३६४०
गृहस्थूण ३.	४३३३९
„ ३.	८१५२२
गृहान्तर ३.	३११५२
गृहाचग्रहणी २.	४३३४४
गृहिणी २.	२३३४६
„ २.	४४४२१
„ २.	७२३७
गृहिन् १.	३३६४०
गृहीति २.	३३३१६५
गृहेडिका २.	४१३३६
गृहेश्वर १.	५४४७०
गृहोच्छिष्ट १.	३३३२०४
गृहोदक ३.	४३३८१
गृह्य १.	२३३५
„ १. २. ३.	६४४५
गृह्यक १.	५४४२८
गैय ३.	११११०९
गोह १. ३.	४३३१९
गोहेनर्दिनू १. २. ३.	५४४७०
गौरिक ३.	३३३११
„ ३.	३३३२०
गौरुष १.	३५३३३
गौरैय ३.	३३३१६
गौरैयक ३.	३३३२१९
गो १.	११३२
„ २.	१११९
„ २.	३३३४१
„ १.	३३४५२
„ २.	३३४५२
„ १. २.	८१५३७
गोकण्टक १.	३३३१४१
गोकरीपेन्धन ३.	३३३१७७
गोकर्ण १.	३३४१५
„ १.	५११८०
गोकर्णी २.	३३३११४
गोकुल ३.	३३४६१
गोकुल ३.	३३३१३९

[ गोनस

गोक्षुर १.	३३३१४१
गोगण १.	११११३
गोगन्धि १.	३३४६०
गोगन्धन १.	१३३५४
गोचर १.	५३३२
गोजिह्वा २.	३३३११६
„ २.	३३३६०
गोक्षुम्बा १.	३३३१७३
गोणिका २.	५११५८
गोणी २.	४३३१३०
„ २.	५११५६
„ २.	५११६३
गोतम ३.	३३३१७४
गोत्र १.	३३३११
„ ३. २.	६५३२८
गोत्रमिद १.	१३३३
गोत्रा २.	५१११३
„ २.	६५३२८
गोदर्भ ३.	३३३२०१
( गोनर्द )	
गोदा २.	४३३२८
गोदारण ३.	३३३२७
„ ३.	३३३२९
गोदावरी २.	४३३२८
गोदुह १.	१३३१२
„ १.	३३३२८
गोध १.	३३५१
„ २. ३.	३३३१५५
गोधन ३.	३३४६१
गोधा १.	३३५१
„ २.	३३३१५५
„ २.	४१३२६
गोधासाली २.	४१३१८४
गोधासन ३.	३३३२२०
गोधि २.	४४४१६
गोधूम १.	३३३१५३
गोधूमचूर्ण ३.	४३३६८
गोनर्द १.	२३३३३
गोनर्दीय १.	३३३१५७
गोनस १.	४१११३
„ १.	४१११४



# गोनास ]

गोनास १.	३१११४
गोनिपदन ३.	३११२२५
गोप १.	३११२२
” १.	३११२८
गोपघोष्ठा २.	३१३१८८
गोपति १.	३११५३
” १.	७११२४
गोपभद्रा २.	३१३५७
गोपा २.	३१३१३९
गोपानसी २.	४३३३९
गोपायित १. २. ३.	५१११००
गोपाल १.	३११२८
गोपाली २.	३११५६
गोपुच्छ १.	४३११४१
गोपुर ३.	३१३२०१
” ३.	४३११५
गोप्य १.	३११३
” १. २. ३.	६१५२९
गोमत् १. २. ३.	३११५९
गोमत ३.	३१३६२
गोमतखिलका २.	३११४६
गोमती २.	४३२२९
गोमय १. ३.	३११६०
गोमायु १.	३११३८
गोमिन् १. २. ३.	३११५९
गोमुख १.	४११५३
” १. ३.	७११३६
गोरछजम्बू २.	८१२११
गोरक्षतण्डुल १.	३१८१६२
गोरस १.	३१८१३९
” १.	३१८१४९
गोरुत ३.	३११६२
गोर्गल १.	३१३२३३
(होर्गल)	
गोर्द ३.	४११११२
गोल १.	३१२१५
” ३.	४३३८२
गोलक १.	३१५६०
” १.	३१५६२
” १.	३१५६३

# शब्दानुक्रमणिका

” १.	३१५६३
” १.	७११२३
गोलका २.	७२१७
गोलसिका २.	२३१२४
गोलपुस १.	३११३२
गोला २.	३१२१७
गोलाङ्गूल १.	३११४०
गोलोक १.	३१३२०७
गोलोमी २.	३१३१९७
” २.	३१३२३३
गोवन्दिनी २.	३१३६६
गोवाहिन् १.	३१३३३
गोविन्द १.	११११५
” १. २. ३.	२११५९
गोवीथी २.	२११४७
गोवृष १.	३११५४
गोव्रत ३.	३१३१४८
गोशकृत् ३.	३११६०
गोशाल १. २. ३.	८११३४
गोशाला २.	४३३२२
गोक्षीर्ष ३.	३१८११३
गोष्ठ १.	३११३१
गोष्ठवातिक्रम १.	३१३१०३
गोष्ठश्च १. २. ३.	५११२६
गोष्ठी २.	३१८१३
गोष्पद १. २. ३.	७११३७
गोसङ्ख्य १.	३११२८
गोसर्ग १.	२११६८
गोसम्य ३.	४३११३
गोस्तन १.	४३११४१
गोस्तनी २.	३१३१८१
गोस्वामिन् १. २. ३.	३११५९
” ३.	३१११०५
गोहरीतकी २.	३१३३०
गौतम १.	१११३५
” १.	३१११५६
” ३.	४१११०८
गौतमी २.	१११५९
गौधार १.	४११२६
गौधेय १.	४११२७

# [ ग्रहराज

गौधेर १.	४११२६
गौर १.	३१३१७
” ३.	३१३२३२
” ३.	५१३१०
” ३.	५१३२०
” १. २. ३.	६११५
गौरव ३.	३१८११६
” ३.	५१२२०
गौरशाक १.	३१३१४
गौरसर्ज १.	३१३३९
गौरसर्प १.	५११४३
गौरार्द्र १.	४११२३
गौरावस्कन्दिन् १.	११२१७
गौरी २.	१२१४६
” २.	३१३१२१
” २.	३१३२११
” २.	८११३
गौर्य १.	१११५६
गौष्ठीन ३.	३११३१
ग्मा २.	३११३
ग्रथित १. २. ३.	५१११०
ग्रन्थ १.	६११२१
ग्रन्थन ३.	५१२३९
ग्रन्थि १.	३१३११
” १.	३११३१
ग्रन्थिक ३.	३१८११
ग्रन्थिनी २.	३१८७७
ग्रन्थिपर्ण ३.	३१८१२
ग्रन्थिल १.	३१३३८
ग्रस्त १. २. ३.	५१११०८
ग्रह १.	१२१३८
” १.	२११३०
” १.	२११५०
” १.	३११६३
” १.	३११५७
” १.	६११२०
ग्रहकल्लोल १.	२११३६
ग्रहण ३.	७३११४
ग्रहणी २.	४११२९
ग्रहभोजन १.	३१७११
ग्रहराज १.	८११२१

ग्रहि १.	८१११०	ग्लास्तु १. २. ३.	४४११४५	घनश्रेणी २.	३१११
ग्रहीतृ १. २. ३.	३८८९	ग्लौ १.	२११२५	घनसागर १.	३८१०५
" १. २. ३.	५४३८	घ		घनाघन १.	८११२२
ग्राम १.	३११११०	घह्वोर १.	३१११६९	घनागम १.	२११८९
" १.	४३३२	घट १.	४३३५८	घनास्थय १.	२११८९
ग्रामणी १. २. ३.	५४३६६	" १.	५११५५	घनागला २.	४३३७८
" १. २. ३.	७५३६	घटना २.	५२३३४	घनोपल १.	२२२७
ग्रामणीकुल ३.	३११२०	घटा २.	३७७७०	घरिन् १.	३८३३५
ग्रामतच्च १.	३११३४	" २.	३८११४	घर्घर १.	३१११८
ग्रामता २.	५११९	" २.	५२३३४	" १.	३११३०
ग्रामधान्य ३.	४३३१३	घटिका १. ३.	५११६०	" ३.	३१११९४
ग्रामग्रैष्य १.	३११६२	घटिका २.	२११५४	" १. ३.	४३३५०
ग्रामसीमा २.	४३३११	" २.	७२१८	घर्घरक १.	२३३२२
ग्रामस्कर १.	३११७१	घटिकालवण ३.	३८११२४	घर्घरिका २.	३१११३१
ग्रामार्थ १.	४३३५	घटी २.	४३३५९	" २.	८२१५
ग्रामीण १. २. ३.	४३३१३	घटीयन्त्र ३.	४२२२१	घर्घरी २.	३१११३१
ग्रामीणा २.	३३३११०	घट्ट १.	४२२२०	घर्म १.	३११८१
ग्रामेयक १. २. ३.	४३३१२	घण्टा २.	३३३१५८	" १.	८११५७
ग्राम्य १.	२३३४१	" २.	४४१८०	घस्मर १. २. ३.	५४३५०
" १. २. ३.	४३३१३	घण्टाताड १.	४३३३०	घस्र १.	२११५५
ग्राम्यधर्म १.	४३३१७०	घण्टापथ १.	४३३१६	घाटा २.	४४३८५
ग्राम्या २.	३३३१६०	घण्टारवा २.	३३३९८	घाण्टिक १.	३११३७
ग्रावन् १.	३३३१०२	घण्टाला २.	४२११५८	" १.	३७३३०
" १.	६१११९	घण्टास्वन ३.	३२२२९	घात १.	३७२११
" १.	८३३४	घन १.	२२२१	घातुक १. २. ३.	५४३४२
ग्रस १.	३३३१५	" ३.	३२२३२	घारि २.	२११५७
" १.	४३३१०१	" १.	३३३१५	घास १.	३४३७४
ग्रसग्रह ३.	३३३१५०	" १.	३३३१०२	घासहार १.	३११६३
ग्राह १.	४११५२	" १.	३७३७१	घासि १.	१२११४
" १.	६१११९	" ३.	३११११५	घासिक १.	३७३११७
ग्राहिन् १.	३३३३२	" ३.	३११११६	घिमिण १.	३११२१
ग्रीषा २.	४४३८३	" ३.	३१११२३	घुटिक १.	३७३८६
ग्रीष्म १.	२११८८	" ३.	४४३८६	" १.	४४३५७
ग्रीष्मसुन्दर १.	३३३१५७	" १.	५३३५५	घुण १.	४१३३६
ग्रीवेयक ३.	४३३१३७	" १. २. ३.	५४३१२६	" १.	५३३४९
ग्रीष्मिका २.	३३३१८६	" १. २. ३.	६५३३०	घुणामीष्टा २.	३३३१९८
ग्लवथु १.	४४३१२२	घनगोलक १. ३.	३२२२३	घुलुम्ब १.	३८३५९
ग्लस्त १. २. ३.	५४३१०८	घनघातु १.	४४३१०४	घुसुण ३.	३८३११६
ग्लह १.	३११६०	घनपद ३.	४२२	घूर्णन ३.	५२११०
ग्लानि १. २. ३.	४४३१४५	घनरस १.	४२३	घूर्णि २.	५२११०
ग्लानि २.	४४३१२२	घनवासक १.	३३३१६९	घृणा २.	३३३१९२

घृणा २.	३६११९	घोष १.	२४१२	चक्रावर्त १.	५२११०
( मृणा )		" १.	३३११५८	चक्राङ्गयाङ्ग्य १.	२३१९
" २.	३२११२२	" १.	३११३२	चक्रिन् १.	११११२
घृणि १.	२११५५	घोषवती २.	३११११६	" १.	३६१४०
" १.	३११२२	घोषित १. २. ३.	२४१२२	" १.	४१११६
" १.	८११२५	घोष १.	४११२५	" १.	३११२३
६ त ३.	३८१३८	ग्राण ३.	४११९१	चक्रीवत् १.	३११६५
" ३.	३३१३६	" १. २. ३.	६५१२९	चक्रोष्ठी २.	३३१२१०
" १.	८११२८	च		चक्षत् १.	२११३३
घृतपूर १.	४३१७४	च ४.	८१७४	चक्षुष्य १.	३८१३७
घृतमुञ्ज १. २. ३.		" ४.	८१७११	" १.	४३१७०
	३६१३५	चकित १. २. ३.	५४११८	" १. २. ३.	५४१७०
घृतलेखनी २.	३६१०१	चकोर १.	२३३३५	" १. २. ३.	५४११७
घृताञ्जन ३.	३६१९२	चक्र ३.	३३३२१८	चक्षुष्या २.	३२१४४
घृताशिन १. २. ३.		चक्षण ३.	३३३२१८	" २.	३३३१२४
	३६१३५	चक्र १.	२३३९	चक्षुस् ३.	४११९४
घृतिन् १.	३६१३५	" ३.	३७१५५	चक्र १.	७११२५
( घृतिन् )		" ३.	३७१३४	चक्रटक १.	३३११५२
घृषि १.	३१११९	" ३.	४२१३०	चक्ररीक १.	२३३४३
घृष्टि १.	२१११६	" ३.	४४१२५	चञ्चल १.	२३३२४
" १.	३३१३६	" ३.	६३३७	" १. २. ३.	५४१७८
" १.	८११२५	चक्रकारक ३.	३८१९९	चञ्चला २.	२२३३
घृष्व १.	३१११९	चक्रचर १.	३६१४२	चञ्चु २.	२३१५०
घोटक १.	३७१९१	चक्रधारण ३.	३७१३१	" १.	३३३६५
घोण १.	३४१५४	चक्रपद्म १.	२३३५	चटक १.	२३३१४
घोणस १.	४१११४	चक्रपाणि १.	११११०	( पण्डक )	
घोणा २.	२३३४६	चक्रपाद १.	८११२२	" १.	२३३१८
" २.	४११९१	चक्रप्रान्त १.	३७१३५	चटिका २.	३८१९१
" २.	६२१२२	चक्रभृत् १.	८११५०	चटिकाशिर १	३८१९१
घोणिन् १.	३४१५	चक्रमर्दन १.	३३११५८	चटु १.	६११२३
घोण्टा २.	३३३२१७	चक्रलक्षणा २.	३३३१३२	चटुल १. २. ३.	५४१७९
घोर १.	३३३३८	चक्रवर्तिन् १.	३७१२	चटक १.	२२३३
" ३.	३८१११७	चक्रवर्तिनी २.	३८१८९	चण १.	३८१३३
" १. २. ३.	३११७९	चक्रवाक १.	२३३९	चण्ड १.	५३३९
घोरबाधिन ३.	२३१४	चक्रवाल ३.	२३३६	" १. २. ३.	५४३२२
घोरित ३.	२३१५	" ३.	३२३३	चण्डकोलाहला २.	
घोल १.	३५१२१	" ३.	५११३		३११२६
" ३.	३८११४८	चक्रवृत्ति २.	४८१६	चण्डमुण्डा २.	१११६३
" १.	३८११४९	चक्रसंज्ञ ३.	३२११५	चण्डांशु १.	२१११५
" ३.	३८११५०	चक्राङ्का २.	३३३१४३	चण्डात १.	३३३१९२
" १.	४३१५९	चक्राङ्क २.	३८१८६	चण्डातक ३.	४३३१२२

चण्डाल १.	३१५१२२
„ १.	३१५१८३
„ १.	३१५१०७
„ १.	३१५१५४
चण्डालवस्त्रकी २.	३१५१२७
चण्डाल १.	३१५१२६
चण्डाली २.	११११६२
चतुर ३.	३१५१९२
„ ३.	४३३२१
„ १. २. ३.	५४४५४
„ ४.	५४४१३७
„ १. २. ३.	७४४१११
चतुरङ्गक ३.	३१७५९
चतुरङ्गल १. २. ३.	३११५२
„ १.	३१३४८
चतुरा २.	३१४१९
चतुरुषण ३.	३१८८१
चतुर्गति १.	४११५०
चतुर्थ १. २. ३.	५११२१
चतुर्थक १. २. ३.	५११५१
चतुर्थकालिक १. २. ३.	३१६१२६
चतुर्द्व १.	१२११२
चतुर्दशी २.	२११७०
„ २.	३१५११७
चतुर्धा ४.	८१८२०
चतुर्भद्र १.	३१६१२३
चतुर्मुख १.	११११७
चतुर्वर्ग १.	३१६१२५
चतुर्विधा ३.	४३३९१
चतुर्हस्त १.	३११५७
चतुर्शाख ३.	४४५२
चतुर्शाल ३.	४३३२६
चतुष्क ३.	५११५५
चतुष्की २.	४३३१२४
चतुष्कृतः-(स्) ४. ८१८१६	

चतुष्पञ्च १. २. ३.	५११२६
चतुष्पथ १.	३११५१
चतुष्पाद् १.	११२४३
„ १.	३११५२
चतुष्प्रस्थ १.	५११५४
चतुष्टोम १.	३१६१८६
चतुस्तेज ३.	४३३९९
चत्वर १.	७५३३८
चत्वरी २.	३१६१६६
„ २.	७२१८
चत्वारिंशत् २.	५११२६
चन ४.	८१८१२
चनका २.	३१४२३
चन्दन १. ३.	३१८११२
„ ३.	३१८११३
चन्दनद्रवभाजन ३.	४३३१०९
चन्द्र १.	२११२४
„ ३.	३१३१९
„ १.	३३३९५
„ १.	३१८१०५
„ ३.	४२१४१
चन्द्रकान्त १.	३१३३७
चन्द्रकिन् १.	२३३३८
„ १.	३१४३३
चन्द्रगोलिका २.	२११२८
चन्द्रपाद् १.	२११२८
चन्द्रवाला २.	३१८१८७
चन्द्रभासा २.	४२१२७
चन्द्रभीरु ३.	३१२२३
चन्द्रमणि १.	३१३३७
चन्द्रमस् १.	२११२४
चन्द्रमातृ २.	२११७२
चन्द्रमौलि १.	११३३९
चन्द्रमत ३.	३१६१३६
चन्द्रमतिक १. २. ३.	३१६१२७
चन्द्रशाला २.	४३३३४
चन्द्रहास १.	१२१४३
„ १.	३१७१६०

चन्द्रा २ व.	२११२०
चन्द्रातप १.	४३३१२३
चन्द्रिक १.	५३३५१
चन्द्रिका २.	२११२८
„ २.	४३३२७
चन्द्रिकाप्रिय १.	२३३३५
चन्द्रिमा २.	२११२८
चन्द्रोदय १.	४३३१२३
चप १.	३३३२१५
चपल १.	३३३३३
„ १.	३१८११०
„ १. २. ३.	५४४७८
„ १. २. ३.	५४४१२५
„ १. २. ३.	७५३३९
चपला २.	२२३३
चपेट १.	४४४७६
चक्रुक ३.	४४४८७
चमक ३.	३३३२०२
चमर १.	३४४२९
चमरिक १.	३३३४७
चमरी २.	३४४२९
चमस १. ३.	३१६१०१
चमू २.	३१६१०२
„ २.	३१७५५
„ २.	३१७५८
चमूणार्णि १.	३१७५९
चमूरु १.	३४४२३
„ १.	३४४२४
चम्पक १.	३३३८१
चम्पकद्वीप ३.	३१११७
चम्पा २.	२२२४
चम्पुक १.	२३३४
चम्पू २.	२४४४२
चम्पोपलक्षण १ व.	३१३३१
चय १.	५११११
चर १. २. ३.	५४४६१
चरण ३.	३१६११५
„ १. ३.	४४४५६
„ १. ३.	७५३३७
चरणाग्रक ३.	४४४५७



चरम १. २. ३. पा११७७	चल १. २. ३. पा११७८	चान्द्री २. २११२८
„ ४. पा११७८	चलचञ्चल १. २३३३५	„ २. २११७२
चराचर १. २. ३. पा११६२	चलदल १. ३३३२७	चाप १. ३. ३३३१७२
चराशा २. २११४	चलन ३. ७३३१५	चामर ३. ३३३२०२
चरि १. ३३३७२	चला २. २१२६	„ ३. ४३३१५९
चरित्र ३. ३३३११५	„ २. ४३३१०	चामरपुष्प १. ८११५१
चरी २. ४३३८	चलाचल १. २. ३. पा११७८	चामीकर ३. ३३३१८
चरु १. ३३३२२	चलित ३. ३३३२०१	चामुण्डा २. ११३३३
चर्कि २. ४३३१४७	„ १. २. ३. पा११९५	चाम्पेय १. ३३३८१
चर्च १. १२३६१	चविक ३. ३३३८८१	„ १. ३३३८२
चर्चरी २. २३३२७	चव्य ३. ३३३८८१	चार १. ३३३२६
चर्चा २. ११३६३	„ ३. ३३३८८१	„ ३. ४३३३६
„ २. ४३३१४७	चपक १. ३. ३३३१५३	चारटी २. ३३३८९
„ २. ४३३१०	चपाल १. ३. ३३३१०५	चारण १. ३३३६४
„ २. ३३३१२	चाक्रगिरि ३. ३३३११५	चारणी २. ३३३१३४
चर्चिक्य ३. ४३३१४७	चाक्रिक १. ३३३२३	चारित्र ३. ३३३११५
चर्पट १. ४३३७७	„ १. ३३३७८	चारी २. ३३३६७
चर्भटि २. २३३२७	„ १. ३३३२७	चारु १. २३३३३
चर्मकार १. ३३३४०	„ १. ७३३२५	„ १. २. ३. पा११३५
„ १. ३३३४०	चाङ्गेरी २. ३३३१६३	„ १. २. ३. ३३३३
„ १. ३३३४२	चाट १. पा३१४	चारु १. ३३३३०
„ १. ३३३४३	चाटस १. पा३२९	चारुनाल ३. ४३३४०
चर्मकोश ३. ४३३६२	चाटु १. ३३३२३	चार्वी २. ३३३११५
चर्मन् ३. ३३३२१	चाटुकार १. ४३३१४२	चाल १. ३३३६९
„ ३. ३३३१९७	चाणक्यमूलक ३. ३३३१५५	चालन ३. २. ८३३३२
चर्मपर्णी २. ३३३१४४	चाण्डाल १. ३३३१५४	चलनी २. ४३३६५
चर्मप्रसेदिनी २. ३३३१४३	चाण्डालिका २. ३३३१२७	चाष १. २३३२९
चर्मप्रसेधिका २. ३३३१७	चातक १. २३३३२	चिकित्सक १. २. ३. ४३३१४३
चर्ममय ३. ३३३१९७	चातिक १. ३३३३०	चिकित्सा २. ४३३३९
चर्मिक १. ३३३४५	चातुर १. २. ३. ७३३३८	चिकिर १. ७३३२५
चर्मिन् १. १३३५२	चातुरीक १. २. ३. ४३३१०९	चिकिल १. ३३३२६
„ १. ३३३४५	चातुर्जात ३. ४३३१५१	( चिकिष्कुल )
„ १. २. ३. ३३३१४४	चातुर्मास्य १. ३३३१४५	चिकुर १. २. ३. पा११७९
चर्या २. ३३३११६	चात्वा १. ३. ३३३१११	„ १. २. ३. ७३३३९
चवर्ण ३. ४३३५१	चान्द्रमसायनि १. २३३३२	चिक्कण ३. ३३३२१८
चवर्णा २. २३३४५	चान्द्रायण ३. ३३३१३६	„ १. पा३३४
चल १. १३३४९	चान्द्रायणरत १. २. ३. ३३३१२७	चिक्कस १. ४३३६८
„ ३. ३३३२०७		चिक्काण ३. ३३३५५
„ १. ३३३११०		चिक्कोड १. ४३३२७
„ १. २. ३. पा११६८		चिञ्चा २. ३३३८१

[ चिञ्चिलिक ]

चिञ्चिलिक १.	११२५१
चिञ्चोटिका २.	४२१४८
चिह्न २.	३१११६४
” ४.	८८१२२
चितकावेर ३.	३८१११६
चिता २.	३१०२१६
चिति २.	३१६१६४
” २.	३१७२१६
चितकृत ३.	२४१९
चित्त ३.	३१६१७२
चित्तविभ्रम १.	३१६१७७
चित्तभोग १.	३१६१७४
चित्तोन्मादकरी २.	१११४९
चित्या २.	३१७२१६
चित्र १. २. ३.	३१९१७८
” १.	४११४३
” ३.	४३११४८
” ३.	६१५३०
चित्रक १.	३८८८२
” १.	४१११५
” १.	५३१२३
चित्रकूट १.	३१२१२
चित्रकूट १.	३१३१४६
” १.	३१९१२
चित्रगुप्त १.	११२३६
चित्रतण्डुला २.	३८८१७
चित्रदण्ड १.	३३१२०८
चित्रपक्ष १.	२३१२०
चित्रपट १.	४३१११९
चित्रपत्रक १.	२३३३७
चित्रपर्णिका २.	३३३१३६
चित्रपिङ्गल १.	२३३३७
चित्रपुङ्गव १.	३१७१८०
चित्रफलिन् १.	४११४३
चित्रभारु १.	८११२२
चित्ररथ १.	१२१५
चित्रल १.	३३११६८
चित्रला २.	३१४१३
चित्रवाल १.	३३१२९
चित्रशाला २.	४३१२३

वैजयन्तीकोष

चित्रशिल्पिण्डज १.	२११३३
चित्रशिल्पिण्डन् १.	२११५०
चित्रा २.	२११६०
” २.	३३११३
” २.	३३१३८
” २.	३३१७३
” २.	४१११७
” २.	६१५३०
चित्राङ्ग १.	३१४४
चित्राङ्गि २.	३३१३७
चित्राणुक १.	४११४९
चित्रावनि २.	३६३३५
चित्रोपपन्ना २.	२११६०
चिञ्चिट १.	३३१७२
चिद्रूप १. २. ३.	५३१२७
चिपाट १.	३१७१३२
चिपिट १.	४३१६८
” १. २. ३.	५३१८३
चिबुक ३.	४३१८७
चिरक्रिय १. २. ३.	५३१७२
चिरजीविन् १.	१११७
” १.	२३११५
चिरण्टी २.	४३१९
चिरन्तन १. २. ३.	५३१८७
चिरम् ४.	८८११
चिरमेहिन् १.	३१४६६
चिररात्र ३.	२११५९
चिररात्राय ४.	८८११
चिरसूता २.	३१४४८
चिरात् ४.	८८११
चिरि १.	१२११८
चिरिचिञ्चक १.	३३३६२
चिरेण ४.	८८११
चिलिचिम १.	४११४५
चिलिमीलिका २.	८१२१२
चिल्ल १.	६३१५
चिल्लाक १.	२३३४

[ चूचुक ]

चिल्लिक १.	२३१२८
चिख १.	३३१५२
चिख १.	५३१५७
चिह्न ३.	२३१२९
” ३.	६३३८
चीन १ व.	३११२३
” ३.	३२३३३
” १.	३३१५०
” १.	३३१२१
” १.	३८३३७
” १.	३८५५९
चीनक १.	३३११३
चीननक १.	४११४४
चीनपट्ट ३.	३२३३०
चीनसी २.	३३१२१
चीना २.	३३१५०
चीर ३.	४३१३०
चीरिणी २.	४३१८
चीरी २.	२३३४८
चीवर ३.	४३१२८
चुक्र ३.	३८१३२
” १.	३८१३३
चुक्रिका २.	३३१६३
चुचुन्दरी २.	४११३२
चुण्डिन् १.	४२१७
चुन्दी २.	४३१२५
चुप १.	५३१७
चुबुक ३.	४३१८७
चुम्बक १.	३२३३८
चुम्बन ३.	४३१७१
चुन्न १. २. ३.	६१५३१
चुल १.	४३१७८
चुल्लक १.	३३३३
” १.	४३१७८
चुल्लम्पा २.	३३३३
चुल्ल १.	६३१५
चुल्लि २.	४३१५४
चूचु १.	३१५५१
” १.	३१५५३
चूचुक १.	३१५५४
” १.	३१५६१

चूचक ]

शब्दानुक्रमणिका

[ छाग

चूचक ३.	४४१६८	चैत्री २.	२११७५	छत्त्रा २.	३३१२४
चूचक १.	३८४५	चैथ १ व.	३११३६	" २.	३३१२४
चूडा २.	४४१०२	चोह १. २. ३.	६५३१	" २.	३८४९
" २.	८२१५	चोच ३.	३३११४	छत्राक १.	३३१५३
चूडाकरण ३.	३३१४	" ३.	३८१०४	छत्राकी २.	३८१२४
चूडामणि २.	३३१७९	चोचु १.	४४१००	छत्रिन् १.	३८२८
" १. २.	४३१३६	चोट १.	४४१०३	छद १.	२११६२
चूत १.	३३१२५	चोटलिङ्गक १.	३७१८५	" १.	२३१४९
चूतक १.	४२१७	चोवनिका २.	३८१४७	" १.	३३११६
चूर्ण ३.	४३१५७	चोदनी २.	३३११६७	छदन ३.	२३१४९
चूर्णपूप ३.	४३१७२	चोद्य १. २. ३.	६४१६	" ३.	३३११६
चूर्णि २.	४११५८	चोर १.	३११५५	छदावलि ३.	३७१८५
" २.	६२१२२	" १. ३.	४३१७६	छदिसू ३.	३६१९१
चूलि २.	६२११३	चोरपुष्पी २.	३३१११६	" २. ३.	४३३३७
चूलिक १.	२३१३३	चोरिक १.	३७१२०	" २.	४४१०३
" १.	३८१३९	चोल १ व.	२३३३३	छविस्तृण ३.	३८१६७
चूलिका २.	३६१२२२	" १.	३३१८३	छद्मन् ३.	३६१९५
" २.	३७१७३	" १. ३.	४३३३७	" ३.	६३३८
चूपण ३.	४३३१०३	" १.	४३३१२८	छद्मप्रधारवत् १.	३७१२८
चूपा २.	३७१८४	चोलक १. ३.	३३३१३	छन्द १.	६३१२४
चूप्य ३.	४३३९१	चोलान्त १.	४३३३७	छन्दना २.	३६१९५
चेटक १.	३९१२	चोली २.	४३३१२७	छन्दस् ३.	३६१२७
चेटा २.	४४१२६	चौह १. २. ३.	५४१३५	" ३.	३६१२८
चेटिका २.	४४१२६	चौण्ड १.	४२१७	" ३.	६३१९
चेत् ४.	८८११४	चौरिक १.	३९१५९	छन्दोभेद १.	३६३३४
चेतकी २.	३३३१७८	चौरिका ३.	३९१५८	छन्न १. २. ३.	५४१२०
चेतना २.	३६१६३	चौर्य २.	३९१५८	छन्नपथ ३.	३७१५४
चेतस् ३.	३६१७२	चौल २.	३६१४	छन्ना २.	३३३१३१
चेदि १ व.	३१३३६	ज्यवन १.	३६११५७	( छिन्ना )	
चेन्नाल १.	३६१६९	च्युति २.	४४१६०	छर्दन १.	३३३५०
चेल ३.	४३३११७	" ३.	४४१६१	" १.	३३३७५
" १. २. ३.	५४१७५	च्युप १.	६३१२३	" १.	४४१३५
" १. २. ३.	६५३३१			छर्वनी २.	३३३१७१
चेखलाण १.	३३३१६८			छर्दि २.	६२११३
चैत्य ३.	३६१९०	छग १.	३३३६२	छल ३.	३६१९५
" ३.	४३३२८	छगल १.	३३३६२	छलवाच् २.	२३३१९
" ३.	६३३८	छगी २.	३३३६२	छल्ली २.	३३३१३
चैत्यधुच १.	८६३२०	छण्डकट १.	३१३३६	छवि २.	४३३१५०
चैत्र १.	२१३८३	छत्र ३.	३६३१६	छाग १.	३३३३५
चैत्ररथ ३.	१२३५९	छत्रक १.	३३३१६९	( भाग )	
चैत्रिक १.	२१३८३	छत्रघर १. २. ३.	३७१४५	" १.	३३३६२

# छागण ]

## वैजयन्तीकोषः

## [ जपा

छागण १.	२।१।२०
छागणक १	३।५।२७
छात १. २. ३.	५।४।१०२
छात्र १.	३।६।२५
” १.	३।७।२७
” ३.	३।८।१३६
छादिषेय १. २. ३.	३।८।६७
छान्दस १.	३।६।८१
छाया २.	२।१।२३
” २.	६।२।१३
छायाकर १. २. ३.	३।७।१४५
छायापुत्र १.	२।१।३५
छित १. २. ३.	५।४।१०२
छिद्र ३.	३।८।१८
” ३.	४।१।२
” ३	५।४।१४४
” ३	६।३।९
छिद्रित १. २. ३.	५।४।१११
छिन्न ३.	३।८।१४२
” १. २. ३.	५।४।१०२
छिन्नपुच्छक १. २. ३.	३।४।५९
छिन्नरुहा २.	३।३।१३१
छेक १.	२।३।५
” १. २. ३.	५।४।२०
” १. २. ३.	६।५।३२
छोटिका २.	३।६।२२९
( चोटिका )	
ज	
जहा २.	४।३।१०४
जहित १. २. ३.	५।४।१०८
जगत् १.	१।२।४८
” १. २. ३.	५।४।६१
जगती २.	७।२।९
जगत्स्थ १.	२।१।९४
जगत्प्राण १.	१।२।४७
जगल १.	३।९।५१

जगल १	५।४।२७
जगध १. २. ३.	५।४।१०७
जग्धि २.	४।३।१०२
जघन १.	४।४।६४
” ३.	७।३।१५
जघनपिण्डिका २.	३।७।७८
जघनभाग १.	३।७।७६
जघनेफल १.	३।३।७४
जघनेफला २.	३।३।१११
जघन्य ३.	३।८।११५
” १. २. ३.	५।४।७६
” १. २. ३.	५।४।७७
” १. २. ३.	७।४।११
जघन्यज १.	३।९।१
” १. २. ३.	५।४।४
जङ्गम १. २. ३.	५।४।६१
जङ्गित १.	३।५।३
जङ्गा २.	४।४।५८
जङ्गात्राण ३.	३।७।१५४
जङ्गापद १.	३।१।५२
जङ्गल १. २. ३.	३।७।१५०
जटा २.	३।३।१२
” २.	३।३।२०२
” २.	३।८।१००
” २.	४।४।१०१
” २.	५।१।३
जटाम्नाट १.	१।१।४४
जटाटीर १.	१।१।४४
जटायु १.	३।३।५४
जटिन् १.	३।३।२८
जटिल ३.	३।३।२०२
” १. २. ३.	५।४।९
जटिला २.	३।३।१९७
” २.	३।८।१००
जटी २.	३।३।२०३
” २.	५।१।५८
जटुल १.	४।४।९७
जठर ३.	४।४।६७
जठरोत्सव १.	३।६।६२
जड १.	५।३।६

जड १. २. ३.	५।४।१४
” १. २. ३.	६।४।६
जडा २.	३।६।४९
जतु ३.	४।३।१५३
जतुक ३.	३।८।१३१
जतुका २.	३।३।४४
जतुकाहला २.	३।९।१२६
जतुकुत् २.	३।८।८९
जतुका २.	३।८।८९
जत्रु ३.	४।४।६९
जन १.	३।६।२०२
जनक १.	४।४।२९
जनङ्गम १.	३।९।५४
जनता २.	५।१।९
जनन ३.	४।४।१८
” ३.	४।४।४९
जननी २.	४।४।२६
” २.	७।२।८
जनपद १.	३।१।२१
” १.	८।१।२३
जनयितृ १.	४।४।२९
जनयित्री २.	४।४।२६
जनवाद १.	२।४।३४
जनश्रुति २.	२।४।३९
जनस् १. ४.	३।६।२०७
जनार्दन १.	१।१।१०
जनाश्रय १.	४।३।२८
जनि २.	३।१।१८
” २.	६।२।१४
जनिमन् ३.	७।१।२७
जनी २.	३।३।१२८
” २.	४।४।३६
जनुस् ३.	४।४।१८
जन्तु ३.	४।४।१
जन्तुधर १.	३।४।३४
जन्तुफला २.	३।८।६१
जन्मन् ३.	४।४।१८
जन्य १. २. ३.	६।५।३२
जन्या २.	३।८।८९
जन्त्यु १.	४।५।१
जपा २.	३।३।१९५



[ जपापुष्प ]

शब्दानुक्रमणिका

[ जागर

जपापुष्प ३. ३१८१६७  
जगपति १ द्वि. ४४४८  
जम्बाल १. ३१८२६  
" १. ७११२६  
जम्बीर १. ३१३३५  
" १. ३१३१२०  
जम्बु ३. ३१३२२  
जम्बुक १. ७११२६  
जम्बुल १. ३१३२३  
जम्बू २. ३१३२२  
" २. ३१३९२  
जम्बूरत १. ३१७१६१  
जम्बूट १. ३१३९४  
जम्बूद्वीप १. ३१११०  
जम्बूलमालिका २. ३१६५०  
जम्भ १. ४४४८९  
जम्भक १. ३१३३५  
" १. ३१५८५  
जम्भरिपु १. १२१४  
जम्भल १. ३१३३५  
जम्भीर १. ३१३३५  
जय १. १२१६  
" १. १२१८  
" १. ३१३८५  
" १. ३१७२०९  
" १. ३१८३६  
" १. ८१९१२  
जयदत्त १. १२१८  
जयन्त १. १२१८  
" १. २११२६  
जयन्ती २. १२१९  
" २. २११७८  
" २. ३१३१६  
जयन्तीपुर ३. ४३१८  
जयवाहिनी ३. १२१११  
जया २. ३१३८९  
" २. ३१३१९७  
" २. ३१८१८३  
जयिन् १. २. ३. ३१७१४७  
जयोदाहरण ३. २१४३६  
( जनोदाहरण )

जय्य १. २. ३. ३१७१४८  
जरठ १. २. ३. ७४१२  
जरत् १. २. ३. ५४१३  
जरत्कार १. ३१६१५६  
जरद्वार १. ३१४५५  
जरन्त १. ३१४९  
जरा २. ४४५४  
जराभीरु १. १११२९  
जरायु १. ४४१८  
" १. ३. ७५३९  
जरायुज १. २. ३. ४४१२  
जरुर्वद १. ३१७९७  
जर्जर १. ३१९१२९  
" १. ५३३४१  
जर्ण १. २११२७  
" १. ३१३५  
जर्तिल १. ३१८३९  
जल ३. ४२१२  
" १. २. ३. ५४११४  
जलक १. ३१३३३  
जलकण्टक १. ४२१४८  
जलकरिन् १. ४११६०  
जलकाक १. २३१११  
जलकोलि २. ३१३८९  
जलचर १. २३१४१  
जलजन्तु १. ४११४०  
जलजम्बुक २. ३१३१०३  
जलजा २. ३१८५८  
जलतस्कर १. २१११२  
जलद १. २१२१  
जलदा २. २१२४  
जलद्रोणि २. ४३१६१  
जलनर १. ४११६०  
जलनिधि १. ४२१११  
जलनीली २. ४२१४९  
जलपालिका २. २१२४  
जलपिप्पिक १. ४११४१  
जलप्रिय १. ३१४५  
जलबृंहण ३. ४२१३०  
जलभूषण १. १२१४६  
जलमार्जसि १. ४११५४

जलमुच १. २१२१  
जलमुस्त ३. ३१३२०१  
जलरङ्ग १. २३१११  
जलराशि १. ४२११०  
जललम्बिका २. ३१३१९८  
जलवालक १. ३१२३  
जलब्याल १. ४१११९  
जलशीनक १. ५४१८  
जलशूर १. ४२१४९  
जलसम्भवा २. ३१४४३  
जलाचार १. २. ३. ३१६१३१  
जलात्मन् १. ३१४८  
जलाधार १. ४२१५  
जलालोका २. ४११५८  
जलाशय १. ३१३२३१  
" १. ४२१५  
जलारव १. ४११६०  
जलाहार १. २. ३. ३१६१३५  
जलक १. २. ३. ८१९२६  
जलका २. ४११५८  
जलेशय १. ८१५८  
जलोच्छ्वास १. ४२१३१  
जलोद्गम १. ४२१८  
जलोलक १. ५३१४१  
जलौकस् १ व. ४११५८  
जलपाक १. २. ३. ५४१४६  
जल्ल १. ३१५५४  
जव १. १२१५५  
" १. २. ३. ३१७१५०  
" १. ५२१३१  
जवन १. २. ३. ३१७१५०  
" ३. ५२१३१  
जविन् १. ३१४१६  
" १. २. ३. ३१७१५०  
जसु १. ५३११  
जसुरि १. ७११२५  
जागर १. २. ३. ३१६१९६

# जागर ]

जागर १.	३१७१५३
जागरण ३.	३१६१९६
जागरित ३.	३१६१९६
जागरित् १. २. ३.	५१४४४
जागरूक १. २. ३.	५१४४४
जागर्या २.	३१६१९६
जागृषि १.	११२१८
जाघनी २.	४१४५८
जाङ्गल १. २. ३.	२१४२०
„ १ ख.	३११४०
„ १. २. ३.	३११४५
„ ३.	३१८१०७
जाङ्गलिक १.	४११२५
जाटलि २.	८१९२६
जाढ्य १.	३१८१४४
जात ३.	५११३
जातरूप ३.	३२११८
जातवेदस् १.	११२१४
जातारणि १.	३१६१७२
जाति २.	३१३२३
„ २	३१३१८२
„ २	३१५१११
„ २	६१२१४
जातिकोश ३.	३१८१०६
जातु ४.	८१८१७
जातोष १.	३१४१४
जात्य १. २. ३.	५१४६१
„ १. २. ३.	५१४६४
„ १.	६१४७
जानकीकान्त १.	१११२०
जालु १. २.	४१४५९
जालुक १. २. ३.	३१६१३३
जालुद्वन्द्व १. २. ३.	४१४८२
जालुद्वयस १. २. ३.	४१४८२
जालुनिकृष्टन ३.	३१६२२२

# वैजयन्तीकोषः

जानुभक्षिनी २.	३१७५२
जानुमात्र १. २. ३.	४१४८२
जानुमात्री २.	३१७५२
जावाल १. ३.	३१९२९
जामदग्न्य १.	१११२०
जामातृ १.	४१४३८
„ १.	७११२६
जामि २.	६१२१८
जामेय १.	४१४४१
जाम्बव ३.	३१३२२
जाम्बूनद ३.	३१२२०
जाया २.	४१४३४
जायाजीव १.	३१९६२
जायापति १ द्वि.	४१४४८
जायु १.	४११४१
जार ३.	४१४४२
„ १.	४१४३८
जारण ३.	३१८१२६
जारद्वन्द्व ३.	२११४९
जारद्वी २.	२११४७
जारवायु १.	११२५४
जारी २.	१११५९
„ २.	३१६४८
जाल ३.	३१११३
„ ३.	३१३१९
„ १.	३१५३३
„ ३.	३१९४३
„ ३.	६१३१९
जालक ३.	३१३१९
„ १.	३१८३९
„ ३.	५११३
जालकिनी २.	३१४५५
जालन १.	५१३३९
जालन्धर १ ख.	३११२६
जालपाद १.	२१३१२
जालपादक १.	२१३१६
जालभूषण १.	३१५३६
जालिक १.	३१९३८
„ १.	३११३४
„ १. २. ३.	५१४२३

# [ जीर्णक

जालिका २.	३१७१५३
जालिन् १.	३१५४२
जालिनी २.	३१८१७७
„ २.	४१३२३
„ २.	४१४१०१
जाली २.	३१३१५९
जालम १. २. ३.	६१४६
जालक ३.	४१३१५४
जालह १.	३१४७२
जाल्ही २.	४१२२४
जिघत्सा २.	३१६१८२
जिघत्सु १. २. ३.	५१४३६
जिघांसु १.	३१७४१
जिह्वा २.	३१३१३५
„ २.	३१३१६०
जित १. २. ३.	३१७१४८
जितकाशिन् १. २. ३.	३१७२१८
जितरण १. २. ३.	३१७२१८
जित्तर १. २. ३.	३१७१४७
जिन १.	१११३३
„ १.	१११३५
जिष्णु १.	१२१४
„ १. २. ३.	३१७१४७
जिह्वा १.	४११५
„ १. २. ३.	६१५३२
जिह्वा २.	१२१२९
„ २.	४१४९०
„ २.	६१२१५
जिह्वापान १.	३१४७०
जिह्वास्वाद १.	४१३१०३
जीन १. २. ३.	५१४३
जीमूत १.	७११२६
जीरक १.	३१८१८३
जीरण १.	३१८१८३
जीर्ण १. २. ३.	५१४३
„ १.	६१५३४
जीर्णक ३.	३१३२०५

जीर्णि २.	४४५५४
जील ३.	६३११०
जीव १.	३६११६१
” १. २. ३.	३७२२०
” १.	३७२२०
” १.	४४११
” १. २. ३.	६५३३३
जीवक १. २. ३.	५४११६
” १. २. ३.	७५४४०
जीवक्षीव १.	२३१४०
जीवत् १. २. ३.	३७२२०
जीवतोका २.	४४११९
जीवथ १.	४११५०
जीवधन ३.	३४६६१
जीवन ३.	३८११
” ३.	४२२२
” ३.	४३१७५
जीवनी २.	११११६
” २.	३३३१४३
जीवनीय ३.	३८११४६
” ३.	४२२२
जीवनीया २.	३३३१२२
” २.	३३३१४३
जीवन्ती २.	३३३८४
” २.	३३३१३२
” २.	३३३१४०
” २.	३३३१४३
जीवपति २.	४४११४
जीवबोधिनी २.	३३३१४५
जीवलोक १.	३६१२०६
जीववृत्ति २.	३८१४
जीवशाक १.	३३३१५०
जीवसू २.	४४११९
जीवा २.	३३३१४३
” २.	३७११८८
जीवातु १.	३७२२१
जीवान्तक १.	३११३७
जीविका २.	३८११
जीवित ३.	३७२२०
जीवितकाल १.	३७२२१
जीवितागद १.	३७२२१

जीवितेश १. २. ३.	८१५८
जुगुप्सन ३.	३११७६
जुगुप्सा २.	२४३३३
” २.	३६११९३
” २.	७२२८
” २.	८११४
जुहुराण १.	१२११९
जुहु २.	३६११००
जूति २.	५२२३१
जूर्णा २.	३३३२३०
जूर्णाक्षय १.	३८१५७
जूर्णि २.	६१२२४
जृम्भ १. २. ३.	८११३८
जृम्भण १. २. ३.	३११८८
जृम्भा २.	३११८८
” २.	८११३८
जृम्भिका २.	३११८८
जृम्भित १. २. ३.	७५४४०
जेतृ १. २. ३.	३७११४८
जेमन ३.	४३१०२
जेय १. २. ३.	३७११४८
जैत्र १. २. ३.	३७११२८
” १. २. ३.	३७११४८
जैत्री २.	३३३१३३
जैन १. २. ३.	५४११६
जैवातृक १. २. ३.	८११९
जोक्क ३.	३७१०७
जोटिङ्ग १.	१११४५
जोड ३.	३३३२१८
जोणाल १.	५३११९
जोनल १.	३८१५६
जोन्नला २.	३८१५७
जोषम् ४.	८७२२०
ज्ञ १. २. ३.	८११३९
” १.	८११४७
ज्ञपित १. २. ३.	५४१११३
ज्ञप्त १. २. ३.	५४१११३
ज्ञप्ति २.	३६११६४
” २.	३६११६४
ज्ञात १. २. ३.	५४११०१

ज्ञाति २.	४४१५०
ज्ञान ३.	१११४७
” ३.	३६११६४
ज्ञानिन् १.	३७१५०
ज्या २.	३७११७८
” २.	८२११७
ज्यानि २.	४४१५४
ज्यानिवारण ३.	३७११५५
ज्यायस् १. २. ३.	५४१४
” १. २. ३.	६४१७
ज्येष्ठ १.	२३३६
” ३.	३२२२८
” ३.	३२२३१
” ३.	३३३२०२
” ३.	३८११४५
” १.	४४३३१
” १. २. ३.	६४१७
ज्येष्ठही २.	२११४१
ज्येष्ठतात १.	४४३३२
ज्येष्ठरवश्च २.	४४२२८
ज्येष्ठा २.	१११४९
” २.	१२२४२
” २.	१३३४१
” २.	४११३०
” २.	४४२७
” २.	४४१७४
” २.	६२२१५
ज्येष्ठामूलीय १.	२११८४
ज्येष्ठाम्बु ३.	४३३६७
ज्यैष्ठ १.	२११८४
ज्यैष्ठी २.	२११७५
ज्योक् ४.	८८१६
ज्योतिरानुष्य ३.	३६१८७
ज्योतिरिङ्गण १.	२३३४७
ज्योतिरशास्त्र ३.	२११५०
ज्योतिषामयन ३.	२११५०
” ३.	३६३३३
ज्योतिषाम्पति १.	८११५३
ज्योतिष्मती २.	३३३१३९
” २.	३८१६०

ज्योतिषोम ]

वैजयन्तीकोषः

[ तथा

ज्योतिषोम १.	३१६८६	शिल्लिका २.	४१४९६	हारिका २.	४११३३
ज्योतिष ३.	६३११०	सिल्ली २.	४३१७७	हौण्डक १. २. ३.	४१४२३
ज्योत्स्ना २.	२११२८	शीरिका २.	२३१४८	त	
ज्योत्स्नी २.	३३११६०	ट		तक्षो ३.	३१८१०५
ज्यौतिष १.	२११८१	टगर १. २. ३.	७५१४१	तक्र ३.	३१८१४९
ज्यौतिषिक १.	३१७१५	टङ्क १.	३१८१३१	तक्रज ३.	३१८१३६
ज्यौत्स्नी २.	२११५८	" १.	३१९१२२	तक्रपिण्ड ३.	३१८१४४
ज्वल १.	५३१७	" १.	६११२४	तक्रवासन १.	३३३३६
ज्वलन १.	२१११५	टङ्कण ३.	३१८१३०	तचक १.	७११२८
ज्वलित १. २. ३.	८१११४	टट्टनी २.	४११३०	तचन् १.	३५१३९
ज्वाल १.	११२२९	टट्टर १.	२११११	" १.	३५१८६
ज्वाला २.	११२२९	टट्टरी २.	३१९१३५	" १.	३९१३४
म्ह		टर्क १ व.	३११२७	" १	८१९१२
झम्मानिल १.	१११५२	टिट्ठिम १.	२३३३४	तक्षशिला २.	४३१९
झटप्प १.	५१२१९	टिट्ठिभासन ३.	३१६१२५	तगर १.	३३३१९४
झटा २.	३३३१७७	ड		तङ्क १. ३.	३१६१८५
झटिति ४.	८१८११	डक्कन ३.	२३१८	तट १.	३१२१६
झण्डाली २.	३३३१५९	डङ्क १.	३१४५३	" १. २. ३.	४१२३२
झप्प १.	५१२१९	डमर १.	३१६१९०	" १. २. ३.	८१९३८
झम्पटि २.	४१४९९	डमरु १.	३१९१३५	तटाक १. ३.	४१२१६
झर १.	३१२१७	डयन ३.	२३१५०	तटित् २.	२१२१४
झरसी २.	३३३१५७	डहु १.	३३३७५	तटित्पति १.	२१२१२
झरा २.	३३३१५७	डिण्डिक १.	३१५१५	तटित्वत् १.	२१२११
झरुका २.	३१८१२५	डिण्डिम १.	३१९१३५	तटिनी २.	४१२२३
झर्झर १.	३१९१३५	डिण्डीर १.	४१२१३	तटी २.	८१९३८
झर्झरक १.	२११९२	डिण्डीश १.	१११४५	तण्डुल १.	३१८१७७
झलका २.	११२२९	डिम १.	३१९१००	" १.	४३१६६
झल्लरी २.	४१४९९	डिम्ब १.	२३१५०	तण्डुला २.	३१८७७
" २.	७१२१९	" १.	३१६१९०	तण्डुलीयक १.	३३३१५०
झष १.	४११४१	" १.	४१४११३	तत ३.	३१९११५
" १.	४११५१	" १.	६११२४	" १. २. ३.	५१४११०
" १. २.	६१५३४	डिम्म १. २. ३.	५१४१२	तति २.	८१९५५
झपा २.	३१८१६१	" १. २. ३.	६१४७	तक्षिय १. २. ३.	५१४७३
झपापर १.	३१५१४	डुण्डुम १.	३१९१९	तख ३.	३१९१२३
झाट १.	३३३१८९	डुण्डुर १.	४३३३२	" ३	५१२११
झाण्ड १.	१११४६	डोम्ब १.	२१५४९	तखधी २.	३३३१६५
झिङ्गि १.	३१९१२४	ड		तत्र ४.	३३३२१
झिणिका २.	४१४१२७	डक्का २.	२१९१३४	तत्रभवत् १. २. ३.	८१९४६
झिण्टी २.	३३३१९०	डक्कारी २.	३१९१२८	तथा ४.	८१७२१
झिण्टीकान्त १.	१११४४	डङ्क ३.	२३३१६९	" ४.	८१८२०
झिखिका २.	२३३४८	डण्डुक १. २. ३.	५१४२३		



तथागत १.	१११३३	तन्त्री २.	६१२१६	तमोजुद्ध १.	७११२८
तथार्थवाच् १.	५१३३	तन्वन ३.	२१४५	तमोजुद्ध १.	८११२३
तथ्य ३.	५१३३	तन्दू २.	६१२१६	तमोपह १.	८११२३
तद् १. २. ३.	५१४२०	तन्द्रा १.	४११५२	तमोरिपु १.	२१११४
” ४.	८१७११	तन्द्रा २.	३१६१७८	तम्पा २.	३१४४२
तदा ४.	८१८५	” २.	३१६१९७	तम्बा २.	२१४४२
तदानीम् ४.	८१८५	” २.	६१२१५	तम्बिकी २.	३१९११३
तनय १.	४३३३९	तन्मान्न ३.	३१६२०५	तरशु १.	३१४४४
तनु १.	३१३८५	तन्वी २.	३१८७७	तरङ्ग १.	३१३१६२
” २.	४१४५२	तपन १.	२११११	” १.	४१२१४
” २.	४१४१०३	” १.	३१६१५१	तरङ्गिणी २.	३१३२१२
” १. २. ३.	५१४५	” १.	७११२९	” २.	४१२२३
” १. २. ३.	५१४१२५	तपनीय ३.	३१२१८	तरण ३.	५१२१२
” १. २. ३.	६१५३५	तपस् ३.	१११४७	तरणा २.	४३१८०
तनुकूबर ३.	३१७१३२	” १.	२११८२	तरणि १. २.	७१५४२
तनुत्र ३.	३१७१५२	” ३.	३१६१३६	तरणी २.	४१२१५
तनुस् ३.	६१३१२	” ३.	३१६२०७	तरण्डक १.	४१२१६
तनूकृत १. २. ३.	५१४१११	” ३.	३१६१०९	तरत् १.	८१९११
तनूनपात् १.	११२१४	तपस १.	२११२६	तरस्सम १.	११२२१
तनूरुह ३.	२१३१४९	तपस्य १.	२११८३	तरपण्य ३.	४१२१८
” ३.	४१४१७	तपस्विन् १. २. ३.	३१६१२६	तरल ३.	४३१६२
तन्तु १.	३१३८७	” १. २. ३.	८१५२८	” १.	४३१४३
” १.	३१९११	तपस्विनी २.	३१८१००	” १.	५१३१५
” १.	४१११३	तपिनी २.	४१२२७	” १.	७१५४४
तन्तुक १.	४११५२	तप्त १.	५१३८	तरलित १. २. ३.	५१४१०३
तन्तुनाग १.	४११५२	” १. २. ३.	५१४९८	तरवारि २.	३१७१६२
तन्तुनाभ १.	४११३४	तप्तकृच्छ्र ३.	३१६१३९	तरस् ३.	११२५५
तन्तुवाय १.	३१५९७	तप्तकृच्छ्र ३.	३१६१३९	” ३.	३१७२१०
” १.	३१९८	तप्तकृच्छ्र ३.	३१६१३९	” ३.	३१६१३
” १.	४११३४	तप्तकृच्छ्र ३.	३१६१३९	तरस ३.	४१४१०६
तन्तुसन्तत १. २. ३.	५१४११२	तप्तकृच्छ्र ३.	३१६१३९	तरि १.	११२२८
तन्त्र ३.	३१७१४	” ३.	३१६१३९	” २.	४१२१५
” १.	४११५२	” ३.	३१६१३९	” २.	४३१६३
” ३.	४११४१	” १. २.	६१५३५	तरीष १.	३१६१६७
” ३.	६३१११	तप्तस्विनी २.	२११५७	तरु १.	३३१५
तन्त्रक १. २. ३.	४३१२०	तमाल १. ३.	३१३८७	तरुण १.	३३३६५
तन्त्रशाला २.	४३१२२	तमालपत्र ३.	४३१४८	” १. २. ३.	५१४३
तन्त्री २.	३१९३०	तमिन्ना २.	२११५७	तरुणी २.	३३३१८८
		” २.	७१५४३	तर्क १. ३.	३१६१७६
		तमी २.	२११५७	” १.	६१२२५

तर्कविद्या ]

बैजयन्तीकोपः

[ तालपत्रिका

तर्कविद्या २.	३।६।३२
तर्कारी २.	३।३।९६
( तक्कारी )	
तर्कु १.	३।९।९
तर्जनी २.	४।४।७३
तर्द्ध २.	४।३।१६३
तर्णक १.	३।४।५१
तर्पण १.	४।२।३३
” ३.	४।३।६९
” ३.	७।३।१६
तर्मन् ३.	३।६।५२
तर्ष १.	८।२।२०
तर्पित १. २. ३.	५।४।३७
तर्पु १.	२।१।१३
तर्हि ४.	८।७।२०
” ४	८।८।५
तल १.	३।३।२१६
” १. २. ३.	३।७।१५५
” १.	३।९।१२२
” ३.	४।१।१
” १.	४।४।७३
” १.	४।४।७७
” ३.	५।१।५०
” ३.	५।१।६३
” १.	५।३।६
” १. ३.	६।५।३५
तलपोट १.	३।३।१०६
तलप्रोह १.	३।७।७८
तलयन्त्र ३.	३।७।५१
तलसारक ३.	३।७।११४
तला २.	३।७।१५५
तलिका २.	३।७।११४
तलिन १. २. ३.	
” १. २. ३.	५।४।१२५
” १. २. ३.	७।४।१२
तलिनी २.	४।३।३३
तलिम ३.	७।३।१६
तलुनी २.	४।४।८
तलेक्षण १.	३।४।५
तत्प ३.	६।३।१२
तक्षपगृह ३.	४।३।२०

तल्लज १.	८।९।४२
तविष १.	७।५।४२
तष्ट १. २. ३.	६।१।१११
तस्कर १.	३।९।५६
” १.	८।६।७
तस्थिवस् १. २. ३.	
” ५।४।६२	
ताटिक १.	३।३।१५२
ताडङ्क १.	४।३।१३४
ताडन ३.	५।१।३६
ताडी २.	३।३।२२४
ताण्डव १. ३.	३।९।७३
तात १.	४।४।२९
तातगु १. २. ३.	७।५।४३
तातल १. २. ३.	७।५।४४
तान १. ३.	३।९।१११
तानित ३.	७।३।१६
तान्त १.	२।१।८०
तापस १. २.	३।६।१२४
” १. २. ३.	३।६।१२६
तापिन्त्र १.	३।३।८७
तापी २.	४।२।२७
तामरस ३.	४।२।३९
तामसी २.	२।१।६०
” २.	३।६।१९७
तामिस्त्र ३.	२।१।६२
ताम्बूल ३.	४।३।१०६
ताम्बूलकरङ्गिका २.	
” ३।७।३८	
ताम्बूलवह्निका २.	८।५।२८
ताम्बूली २.	८।५।२८
ताम्र ३.	३।२।२४
” १. २. ३.	६।५।३७
ताम्रकर्ष १.	५।१।५२
ताम्रकुट्टक १.	३।९।१५
ताम्रचूड १.	२।३।१३
ताम्रजीव १.	३।५।३९
ताम्रधारण ३.	५।१।५९
ताम्रपर्णी २.	२।१।९
” २.	४।२।२९
ताम्रपाकिन् १.	३।३।५९

ताम्रमूला २.	३।३।१२५
ताम्रवृस्त १.	३।८।१७
ताम्रसार ३.	३।८।११३
ताम्रा २.	३।३।१७९
ताम्राक्ष १.	२।३।२६
तार १. २. ३.	२।४।१३
” १.	३।६।२३३
” १.	५।३।२३
” १. २. ३.	६।५।३६
तारक ३.	३।६।२३३
” १. २. ३.	४।४।९४
” १. २. ३.	७।५।४४
तारकारि १.	१।१।५४
तारजीवन ३.	३।२।१९
तारण १.	२।१।८०
तारणी २.	३।८।१४
तारा २.	२।१।३८
तारावट १.	३।३।१९४
तारावर्त्मन् ३.	२।१।२
तारुण्य ३.	४।४।५३
तार्य १.	१।३।१९
” १.	१।१।३७
” १.	३।७।९१
” ३.	३।८।१२५
तार्यशैल ३.	३।२।४१
तार्यसिन ३.	३।६।२२८
तार्ण १.	१।२।२१
” ३.	३।१।२०
तार्णसौम ३.	३।१।२०
ताल १.	३।२।१४
” ३.	३।३।२१६
” १.	३।७।१८५
” १.	३।९।१२३
” १.	४।४।७७
” १.	४।४।८०
तालक १.	४।१।२७
” ३.	४।३।४९
” ३.	४।३।३४
” १.	५।३।८
तालपत्र ३.	४।३।१३४
तालपत्रिका २.	३।९।१२४

तालपर्णी २.	३१८१८	तिप्तीक १.	३३३७	तिलाट १.	३१८१४८
तालमूली २.	३३२०३	तिथि १. २.	२११६९	( किलाट )	
तालवृन्त ३.	४३१५९	तिन्तुडीक १.	३३३८१	तिलिस्स १.	४१११४
तालाङ्क १.	१११२३	तिन्तुणी २.	३३३८१	तिलिस्सक १.	३१४१४
” १ व.	१३१३३	तिन्तुणीक ३.	३१८१३२	तिव्य १. २. ३.	३१८२०
ताली २.	३३२०३	तिन्त्रिडीक ३.	८३३६	तिव्य १.	३३१७५
” २.	३३२२४	तिन्दुक १.	३३३५१	” १.	६११२५
” २.	३९१२४	तिमि १.	४११४१	तिव्या २.	३३१७७
” २.	४३१४९	तिमित १. २. ३.		तीषण ३.	३२३३४
तालु २.	३३१७१		५४११०७	” १.	३३११९
” ३.	४१४८९	तिमिर ३.	२११६४	” १.	३३१२१
तालुजिह्व १.	४११५३	तिमिङ्गिल १.	४११५१	” १. २. ३.	३३१२८
ताव ४.	८३२८	तिमिला २.	३९१३५	” १.	५३१९
तावतिथ १. २. ३.		तिमिष १.	३३३४६	” १.	५३२६
	५११२०	तिमिषाशु १.	४११५१	” १. २. ३.	६५३७
तावत्कृति २.	५१३६	तिरश्चीन १. २. ३.		तीषणगन्ध १.	३३३५६
तावत्कृत्वः-(सु) ४.	५१३६		५४१९१	” १.	३३११९
ताविष १. २.	७५४२	तिरस् ४.	८३२१	तीषणच १.	५३२९
तिक्त १.	३३३५३	तिरस्करिणी २.	४३१२४	तीषणतण्डुला २.	३१८७७
” १.	३३३२८	तिरस्कार १.	३३३७१	तीषणधूमा २.	३३३९१
” १.	३३३६६	तिरित १. २. ३.	३१८११	तीषणरस १.	३१८१२७
” १.	५३२६	तिरीट १.	३३३५२	तीषणा २.	३३३९७
” १.	५३३७	तिरीटिका २.	३३३८७	तीषणाग्र ३.	३१८६५
तिक्तक १.	५३३५५	तिरोधान ३.	२१३६४	तीषणार्जक १.	३१८१२१
तिक्तकापाय १.	५३३३१	तिर्यग्गामिन् १.	२१३३४	तीर ३.	४२३३२
तिक्तच्छदन १.	३३३६३	तिर्यच् ४.	५४१९१	तीरतरङ्गिका २.	३९९९१
तिक्तपदुस्वादुकपाय १.		तिल १.	३१८३९	तीरमुक्ति २.	३१३३०
	५३३४०	तिलक १.	३३३६१	तीरित १. २. ३.	२४११९
तिक्तपटोलिका २.		” १.	३३३६९	तीरी २.	३३३८३
	३३३६१	” ३.	३१८१२५	तीर्थ १. ३.	४२२०
तिक्तवस्का २.	३३३११४	” १. ३.	४३१४८	” ३.	४३७५
तिक्तशाक १.	३३३४१	” १.	४३१७७	” ३.	६३३३
तिक्तसार १.	३३३६३	” ३.	४३११२	तीर्थवाह १.	४३१८८
तिक्तिक १.	५३३३०	” १. ३.	८१३३०	तीवर १.	३५१२
तिग्म १.	५३३७	तिलककण्टक १.	२३३१८	तीव्र १. २. ३.	५४३३२
” १.	६५३७	तिलकालक १.	४३१७७	तीव्रकोपा २.	४३१०
तित्त १. ३.	४३३५	तिलखल १ व.	३१३३९	तु ४.	८३७४
तितिचा २.	३३३८४	तिलपर्णी २.	३१८११५	” ४.	८३७११
तितिष्ठ १. २. ३.	५४३३३	तिलपिञ्ज १.	३१८३९	तुक १.	३५७५
तिचिरि १.	२३३३५	तिलपुष्प ३.	३१८३०	तुङ्ग १. २. ३.	५४६८१
” १.	३११५१	तिलपेज १.	३१८३९	तुङ्गता २.	५२२३४

सुक्रभद्रा ]

वैजयन्तीकोषः

[ वृष

सुक्रभद्रा २.	४२१२८
सुच्छ १. २. ३.	५४१८७
” १. २. ३.	६५१३६
सुटि २.	२११५२
” २	६२११६
सुण्ड ३.	४४१८६
सुण्डि १. २. ३.	५४१६
सुण्डिकेरी २.	३३१९९
” २.	३३११४७
सुण्डिन् १.	२३१४
सुण्डिभ १. २. ३.	४४११४६
सुण्डिल १. २. ३.	४४११४६
सुथ ३.	३२१४३
सुत्वा २.	३३१११०
” २.	३३१८७
सुत्वाञ्जन ३.	३२१४२
सुन्द ३.	४४१६७
सुन्दपरिमृज १. २. ३.	५४१५५
सुन्दि १. २. ३.	५४१७
सुन्दिन् १. २. ३.	५४१७
सुन्दिळ १. २. ३.	५४१७
सुन्न १. २. ३.	५४१११५
सुन्नवाय १.	३११११
सुसुल १. २. ३.	२४११२
” १. २. ३.	३३१२१७
सुसुलाक्षक १.	३३११७६
सुम्बा २.	३३११३५
सुम्बिका २.	४३११३२
सुम्बी २.	३३११६७
सुम्बुक १. २. ३.	२४११६
सुम्बुका २.	३३११६८
सुरग १.	३३११९०
सुरङ्ग १.	३३११९०
सुरङ्गम १.	३३११९०
सुरायण ३.	३३११४४
सुरावाह १.	१२१७
सुरीय १. २. ३.	५४१२१
सुरुष्क १ व.	३३११२७

सुरुष्क १.	३३११११
सुर्य १. २. ३.	५४१२१
सुर्यकालमुज १.	३३११२५
सुलसी २.	३३१११९
सुला २.	५४१६०
” २.	६२११७
” २.	८६११४
सुलाकोटि १.	४३११४५
सुलापुरुष १.	३३११४३
” १.	३३११४३
सुलिका २.	३३१६
सुल्य १. २. ३.	५४१२२१
सुल्यविक्रम १.	३३११
सुवर १.	३३११५२
” १.	५३१२७
” १.	५३१४२
सुवरी २.	३२११७
” २.	३३१४८
सुव १.	३३११७६
” १.	४३१६६
सुपानल १.	१२१२०
सुपाम्बु ३.	४३१८३
सुपार १.	२२११९
” १.	५३१७
सुपित १ व.	१३१८
सुष्ट १.	३३१८५
सुष्टि २.	३३११६६
सुहिन ३.	२२११९
सूण १.	३३११७८
” २. (आण)	३३१११०
सूणी २.	३३११७८
सूणीर १.	३३११७८
सूपर ३.	३३११०५
” १. २. ३.	७४११२
सूपर १.	३३११७३
सूर १.	३३११३७
सूर्ण १. २. ३.	५४११२४
सूर्य १. २.	३३११३६
सूल १. २.	३३११९
सूलपुष्प १.	३३११९३

( स्तूलपुष्प )

सूलफला २.	३३११९१
सूलिका २.	३३११२३५
” २.	३३११३३
सूलिनी २.	३३११९१
सूली २.	६२११७
सूणीकाम् ४.	८६११५
सूणीम् ४.	८६११५
सूङ्गी २.	३३१११२
सूण ३.	३३११८४
” ३.	३३१२२५
” २.	३३१२३३
” २.	३३१२३५
सूणकोल १.	३३११५९
सूणजलायुका २.	४३११५९
सूणता २.	७२११०
सूणद्रुम १.	३३१२२४
सूणधान्यक ३.	३३११५८
सूणध्वज १.	३३१२१४
सूणपञ्चिका २.	३३१६४
सूणराज १.	३३१२१६
” १.	३३१२२०
सूणशान्य १. २. ३.	३३११३१
सूणशून्यक ३.	३३११८३
सूणशोणक १.	५३११०
सूणसंवर १.	३३११२
सूणसञ्जय १.	३३११६५
सूणसिंह १.	३३११२
सूणस्तम्ब १.	३३१२३५
सूणाटवी २.	३३११२
सूणोन्धन ३.	३३११९६
सूण्या २.	५४११४
सूतीय १. २. ३.	५४११२१
सूतीयाकृत १. २. ३.	३३११२२
सूतीयाप्रकृति १.	४३११३
सूपत् १.	२३११२७
सूपि १.	२३११२७
सूष १. २. ३.	३३११०५
” १. २. ३.	५४११९



[ वृत्ति ]

वृत्ति २.	३१६१७८
” २.	३१६१७५
वृत्तक १.	३१६१९९
वृत् २.	८१२१९९
वृत्ति २.	३१६१७९
वृत्तित १. २. ३.	५१४३७
वृत्तज् १. २. ३.	५१४३५
वृत्तणा १.	८१२१९९
ते १. २. ३.	८१५३९
तेजन १.	३१३२१५
” २. ३.	३१७१९९
तेजनक १.	३१३२२८
तेजनी २.	३१३११४
तेजस् ३.	११२१९९
” ३.	३१३११४
तेजस्विन् १.	५१४११०
तेजित १. २. ३.	३१७१९७
तेम १.	५१२२९
तेमन ३.	५१३८५
” ३.	७१३१७
तेर १.	३१३४२
” ३.	५१४८६
तैत्तुल १ ब.	३११२६
तैल ३.	३१८१३७
तैलपणिक ३.	२१८११४
तैलपर्णी २.	८१२१६
तैलपायिका २.	२१३४४
तैलिस्त १.	५१३३२
तैलिम् १.	३१९२७
तैलिशाला २.	५१३२४
तैलीन १. २. ३.	३१८२०
तैष १.	२११८२
तोक ३.	५१४४१
तोक्म १.	६१५३८
तोच्चार १ ब.	३११२५
तोटक १.	३१८११
तोष्टमी २.	३१९१२६
तोड ३.	३१६१५
तोत्त्र ३.	३१७८२
” ३.	३१८२९
तोदन ३.	७१३१७

शब्दानुक्रमणिका

तोमर १. ३.	३१७१६६
तोय ३.	५१२११
तोयपणिका २.	३१८१५३
तोयपिप्पली २.	३१३१९७
तोयप्रवाह १.	३१२१७
तोयप्रसादन १.	३१३४२
तोरण १. ३.	५१३४२
तोरणस्तम्भ १.	३१६१५८
तोपणी २.	३१३२१२
तौर्यत्रिक ३.	३१९७१
त्यक्त १. २. ३.	५१४१०१
त्यक्तभर्तृका २.	३१६४५
त्यक्तसंवास १. २. ३.	३१६१३
त्यक्तात्मन् १. २. ३.	३१६१३
त्याग १.	३१६११८
” १.	५१२४०
त्रपा २.	३१६१९७
त्रपु ३.	३१२३०
” ३.	३१२३१
” ३.	३१३१३
त्रपुष १. २. ३.	३१३१७१
त्रय ३.	५१११६
त्रयी २.	३१६२६
त्रयीतनु १.	२१११३
त्रयीपुष १.	३१६११
त्रयोदशी २.	३१९११८
त्रस १. २. ३.	५१४६१
त्रसर १.	३१९१९
” १.	५१३१३२
त्रसरेणु २.	२११२३
” १. २.	५११४२
त्रस्त ३.	३१६१६८
” १. २. ३.	५१४१८
त्रस्तु १. २. ३.	५१४१८
त्राण १. २. ३.	५१४१००
त्रात १. २. ३.	५१४१००
त्रापुष ३.	३१२२३
त्रायन्ती २.	३१३१०९
त्रायमाणा २.	३१३१०९

[ त्रिधात्मन् ]

त्रास १.	६११२५
त्रिधात् २.	५११२६
त्रिः(-स्) ४.	८१८११
त्रिक ३.	५१४६६
” १. २.	८१९२७
त्रिककुट्ट १.	११११०
” १.	३१२२२
त्रिकट्ट ३.	३१८८०
त्रिकण्टक १.	३१३९८
” १	३१३१४१
” १.	३१६१६५
” १.	५१२४७
त्रिकल १.	३१२३३
त्रिकालदर्शिन् १.	३१६१५०
त्रिकालदृश् १.	१११३५
त्रिकुट ३.	३१८११९
त्रिकूट १.	३१२२२
” ३.	३१६११०
” ३.	३१८११९
त्रिकेतु १.	२१३२५
त्रिकोणक १.	५१३१३६
त्रिखट्व १. २.	८१९३६
त्रिखर १.	५१३३४
त्रिगन्ध ३.	५१३१५०
त्रिगर्त १ ब.	३११२६
त्रिगुणाकृत १. २. ३.	३१८२२
त्रिचतुर १. २. ३.	५११२५
त्रिजातक ३.	५१३१५०
” १. २. ३.	८१९३९
त्रितच्च २. ३.	८१९३६
त्रितय ३.	५१११६
त्रिदश १.	१११४
त्रिदिव १.	१११२
” १.	७११२९
त्रिदिवा २.	३१८८७
त्रिधा ४.	८१८२०
त्रिधात्मन् १.	११११५
” १.	७११२९

[ त्रिपक्षी ]

वैजयन्तीकोषः

[ दक्षिणाशारत ]

त्रिपक्षी २.	३१६६६
त्रिपदी २.	३१७८३
त्रिपणक १.	३१३२९
” ३.	८३१९
त्रिपात्र ३.	८११८
त्रिपाद १.	३११५२
त्रिपुट १.	३१८४४
त्रिपुटा २.	३१३१३७
” २.	३१८८७
त्रिपुटी २.	३१३१३७
त्रिपुर १.	३१३७७
त्रिपुरारि १.	१११४३
त्रिफळा २.	३१८८२
त्रिमार्गागा २.	४२२२४
त्रिमार्गा २.	४२२२५
त्रियामा २.	२११५६
त्रियुगा ३.	२११९२
” ३.	८१९८
त्रियूह १.	३१७१००
त्रिरसा २.	४३१७९
त्रिरेख १.	४११५६
त्रिलोकी १.	८१९८
त्रिलोचन १.	१११४२
त्रिवर्ग १.	३१६२३५
” १.	७११२८
त्रिवलीक ३.	४१४६०
त्रिविक्रम १.	११११९
त्रिविक्रमासन १.	३१६२२८
त्रिविष्टप ३.	१११११
त्रिवीथिका २.	२११४५
त्रिवृत २.	३१३१३७
” १. २. ३.	३१९१०
त्रिवृत १. २. ३.	३१९१०
त्रिशङ्कु १.	७११२९
त्रिशिरस् १.	११२४४
” १.	११२५६
त्रिष्कृष्ट १. २. ३.	३१८२३
त्रिष्टुभ १.	३१८४१
त्रिष्टुभा २.	३१८४२
त्रिसन्ध ३.	२११६७

त्रिसर १. २. ३.	८१९२५
त्रिसरा २.	४३१७९
त्रिसारा २.	३३१९२
त्रिसीत्य १. २. ३.	३१८२२
त्रिसुगन्ध ३.	४३१५५०
त्रिस्नेह ३.	४३१९९
त्रिस्रोतस २.	४३१२४
त्रिहृत् १. २. ३.	३१८२२
त्रुटि २.	२११५२
” २.	३१८८७
” २.	३१२१७
त्रेता २.	२११९१
” २.	३१९६२
” २.	३१२१७
त्रेधा ४.	८१८२०
त्रैधस् ४.	८१८२०
त्रैपुर १ च.	३११३६
त्रैवृत ३.	४३१९९
त्रैष्टुभ ३.	८१९१६
त्रैहोत्र ३.	३१६९१
त्रोटि २.	२१३५०
त्र्यश्रा २.	३१३१३७
त्र्यूपण ३.	३१८८०
त्वक्कीरा २.	३१८९०
त्वक्त्र ३.	३१७१५२
त्वक्पत्र ३.	३१८१०४
त्वक्सार १.	३१३२२५
त्वग्गन्ध १.	३१३३६
त्वग्ज ३.	४३११७
त्वग्बल व १.	३१७१८३
त्वच् २.	३१३१३
” २.	४३११०३
” २.	८१२२०
” २.	८१६१२
त्वच १. २.	३१३१३
” ३.	३१८१०४
त्वक्षिसार १.	३१३२१५
त्वरा १.	३१९८९
त्वरित १. २. ३.	५१११२४

त्वरी २.	३१९८९
त्वष्ट १. २. ३.	५१३१११
त्वष्टृ १.	१३१७
” १.	३१९३४
” १.	६१३२५
त्वाष्ट्र १.	३१६१०८
त्वाष्ट्रक १.	३१८४२
त्वाष्ट्री २.	२११२३
त्विष् २.	४३१५५०
” २.	८२११८
त्विषाम्पति १.	२१११२
त्सर १.	३१७१६८
द	
दंश १.	२१३४५
” १.	४३१९०
दंशन ३.	३१७१५२
दंशबन्धन ३.	४३१३९
दंशालिक १.	३१३१०
दंशित १. २. ३.	३१७१४२
दंशी २.	२१३४५
दंष्ट्रा २.	४३१८९
दंष्ट्रिन् १.	६१५४०
दक ३.	४२२
दक्ष १.	२१३१३
” १. २. ३.	५१३१९
” १. २. ३.	५१३५४
” १. २. ३.	५१३१३७
दक्षकन्या २.	८२२७
दक्षवाच् १. २. ३.	५१३४५
दक्षा २.	३१११
दक्षाध्वराराति १.	१११४१
दक्षिण १. २. ३.	५१३२०
” १. २. ३.	७१५४५
दक्षिणस्थ १.	३१७१३८
दक्षिणाधिप १.	१२१३५
दक्षिणानल १.	१२१२३
दक्षिणापथ १.	३११३२
दक्षिणायन ३.	२११८९
दक्षिणाशारत १.	३१६१५२

[ दक्षिणोर्मन् ]

दक्षिणोर्मन् १.	३।९।४०
दक्षिणोर्मन् १.	१।१।१३८
दक्षिणोर्मन् ३.	४।३।७६
दण्ड १.	३।६।१८
" १.	३।७।४६
" १.	६।५।२८
दण्डक ३.	२।४।४२
" १ य.	३।१।३३
दण्डधर १.	१।२।३३
दण्डनीति २.	३।६।३०
दण्डपञ्चासन १.	३।६।२२८
दण्डपाल १.	३।७।२१
दण्डपाशिक १.	३।७।२०
दण्डवत् १. २. ३.	पा४।१।१८
दण्डाजिन ३.	३।६।१९५
दण्डासन ३.	३।६।२२६
" १.	३।७।१८१
दण्डाहत ३.	३।८।१४८
दण्डिक १.	३।७।१८१
" १. २. ३.	पा४।१।१८
दण्डिका २.	३।९।१२९
दण्डिन् १.	२।३।२५
" १. २. ३.	पा४।१।१८
" १.	६।१।२६
दण्डोत्पल १.	३।३।१०६
दक्षत्रेय १.	१।१।३१
दक्ष २.	४।४।१२५
दक्ष १.	३।३।१५८
दक्ष ३.	३।८।१३५
दक्ष १. २. ३.	४।४।१४५
दक्षनाशिनी २.	३।३।१०३
दक्षमत् १.	४।४।१४५
दक्षि ३.	३।८।१०९
" ३.	३।८।१३९
दक्षिणी ३.	३।६।९९
दक्षिण १.	३।३।३२
दक्षिण १.	३।३।३२
दक्षिण ३.	३।८।१४२

शब्दानुक्रमिका

दक्षिमण्डक ३.	३।८।१४४
दक्षिमुख १.	३।४।४०
दक्षिसक्त १.	४।३।७१
दक्ष्यम् १.	४।३।९७
दक्ष्याज्य ३.	३।६।९९
दक्ष्याली २.	३।३।१४३
दन्त १.	४।४।८८
" १.	६।१।२६
दन्तच्छद १.	४।४।८७
" १.	८।९।१३
दन्तधावन १.	३।३।६३
दन्तबीज १.	४।२।४७
दन्तभाग १.	३।७।८१
दन्तवस्त्र ३.	४।४।८८
दन्तवेष्ट १.	३।७।११०
दन्तशठ १.	३।३।३२
" १.	३।३।३५
" १.	३।३।३७
" १. २. ३.	८।५।९
दन्तशठा २.	३।३।६३
दन्ताली २.	३।७।११२
दन्तावल १.	३।७।६१
दन्तिका २.	४।३।५३
दन्तिन् १.	३।७।६०
दन्तुर १. २. ३.	पा४।९
दन्तोल्लखलक १. २. ३.	३।६।१३२
दन्त्य १. २. ३.	पा४।१।१७
दन्दशूक १.	४।१।४
" १.	४।१।४०
दक्ष १. २. ३.	पा४।१।३६
दक्ष १.	३।७।४६
" १.	पा२।२७
दक्षमण्डक १.	३।५।९
दक्षय १.	पा२।२७
दक्षनक ३.	३।३।१२३
दक्षयन्तिका २.	३।६।१८
दक्षित १. २. ३.	पा४।१।१४
दक्षुनस् १.	१।२।१८
दक्षपति १ द्वि.	४।४।४८

[ दलकूर्चिका ]

दम्भ १.	३।६।१९५
दम्भोलि १.	१।२।१३
दम्भ १.	३।४।५४
दम्भ २.	३।६।१९२
दम्भालु १. २. ३.	पा४।३९
दम्भित १. २. ३.	पा४।७०
दम्भ १. ३.	६।५।३९
" १. २. ३.	८।९।३७
दम्भ १.	२।३।२५
दम्भ १.	७।१।३१
दम्भ २.	६।२।१८
दम्भि १. २.	३।८।२४
दम्भित १. २. ३.	पा४।१८
दम्भित १. २. ३.	पा४।५९
दम्भ २.	३।२।६
" २.	८।९।३४
दम्भ १.	३।७।७४
" १.	३।९।१२४
दम्भुरीक १.	८।१।२४
दम्भक १.	१।१।२७
दम्भण १.	४।३।१६२
दम्भ १.	३।३।२२७
" १.	३।३।२२७
" १.	३।३।२२९
दम्भ १.	१।३।३
दम्भ १.	२।३।१०
" २.	४।३।१६३
दम्भितुण्ड १.	२।३।१०
दम्भित २.	२।३।१०
दम्भ २.	३।६।१०१
दम्भिकर १.	४।१।७
" १.	४।१।८
" १.	४।१।१०
" १.	४।१।११
दम्भ १.	२।१।७०
दम्भक १.	३।७।२४
दम्भन ३.	३।७।१७
दम्भनी २.	४।३।१६
दम्भ ३.	३।३।१६
" १.	६।५।३९
दलकूर्चिका २.	३।३।२०८

वल्क १.	४११४६	दाक्षिणात्य १.	३१३२२०	दारु ३.	३१३७१
वली २.	८११७	दाक्षी २.	३१४४३	दारुक १.	१११२६
वव १.	११२२१	दाक्षीपुत्र १.	३१६१५४	दारुकण्टक ३.	२१२३७
” १.	६११२७	दाक्षिम १. २. ३.	३१३७२	दारुण १. २. ३.	३११७९
ववथु १.	४११२२	” १. २. ३.	८११३८	” ३.	५१३५
वव १ २. ३. ४.	४१३१३१	दाण्डपाता २.	२११७५	दारुतक्षणी २.	३१९३६
ववश १.	४११८८	” २.	८१९६	दारुफला २.	३१३१८१
ववशोष्णिष्ठ १.	८११५२	दाण्डाजिनिक १. २. ३.		दारुहरिद्रा २.	३१३२१२
ववशपुर ३.	३१३२०१		५१४२३	दारुहस्तक १.	४१३१६३
ववशबल १.	१११३३	दात १. २. ३.	५१४१०२	दारुदर ३.	३१११६
ववशबाहु १.	१११४७	दात्यूह १.	२१३१२	दारुण्ड १.	२१३३८
ववशम १. २. ३.	५११२०	” १.	२१३३६	दारुवाघाट १.	२१३३३
ववशमिन् १. २. ३.	५१४४	दात्र ३.	३१८३०	दारुविका २.	३१२४३
ववशमीस्थ १. २. ३.		दाधिक १. २. ३.	४१३१५	” २.	३१३११६
	८१४७	दान ३.	३१६६३	दारुवी २.	३१३२१२
ववशरथात्मज	१११२२	” ३.	३१६११८	दाल ३.	३१८१३५
ववशा १ व.	४१३१६१	” ३.	६१३१५	दास्मि १.	११२६
” २.	४१४५३	दानव १.	१३१९	दाव १.	६११२७
” २.	५१२२	दानवाञ्जन ३	३१३१२२	दावा १.	३१२४२
ववशाकुल १. २. ३.		दान्त ३.	३१३१२३	दाशरथि १.	१११२०
	३११५३	” १. २. ३.	५१४११४	दाशार्ह १.	१११२५
ववशानाह १.	३११६१	दान्ति २.	५१२२७	दाशेरक १.	३१४१७
ववशार्ण १ व.	३११३७	दामन् २. ३.	३१२२९	दास १.	३१२२
ववशान्यय १.	१११४७	” २. ३.	८१२३२	दासमोचित १.	३१२४
ववशारव १.	१२१४२	दामनी २.	३१२२९	दाससूनु १.	३१२३
ववशास्थ १.	१२१४२	दामा २.	३१२२९	दासी २.	३१३१११
ववशेरक १ व.	३११३८	दामाञ्जन ३.	३१७११२	” २.	३१३१९०
ववस्यु १.	३१५११२	दामोदर १.	१११२५	” २.	४१४२६
” १.	३१५२१५	दाय १.	६११२६	दासीसभ ३.	८१२२०
” १.	३१७४०	दायाद १.	७११३०	दासेय १.	४१४३३
” १.	३१९५६	दार ३.	४१२३९	दासेर १.	४१४३३
ववस्युजाति २.	३१५२०८	” १ व.	४१४३५	विक्करी २.	४१४८
वव १ द्वि.	१३३६	दारक १. २. ३.	५१४२	दिगन्त १.	२११६
ववहन १.	१२११५	दारद १ व.	३११२७	दिगम्बर १. २. ३.	
” १.	५१३८	” १.	३१२४४		५१४१५
ववहर १. २. ३.	५१४१३६	दारपत्र १.	४१३७१	दिग्गज १.	२११८
ववह १. २. ३.	५१४१३६	दारसङ्ग्रह १.	३१६५४	दिग्ध १.	६१५४१
दा २.	३१७५२	दारित १. २. ३.		दिग्भव १. २. ३.	
दाक्षायण ३.	३२११९		५१४१११		४१४११६
दाक्षायणी २.	८१२६	दारिपत् १.	३१८२६	दिव्युम्भ ३.	२११७
दाक्षाय्य १.	३१३३०	दारु ३.	३१३३३	दिग्वासस् १.	१११४६



दिङ्मण्डल ३.	२११६	दिष्टि २.	३११५३	दीर्घपत्री २.	३३११९६
दिङ्मण्ड ३.	२११७	" २.	३११५९	दीर्घपर्णी २.	३३११७४
दिङ्मार्ग १.	४३११७	दिष्टया ४.	८१७२१	दीर्घपाद १.	२३३३१
दिधिपु १. २.	७१५४७	" ४.	८१८१७	दीर्घपृष्ठ १.	४११६
दिधिपूपति १.	३३१४३	दिहण्ड १ ब.	३११२४	दीर्घफला २.	३३३१६०
दिन ३.	२११५६	दीक्षणीयेष्टि २.	३३१८७	दीर्घरोमक ३.	३३३२०२
दिनत्रयिन् १.	३३१४१	दीक्षा १.	३३१८७	दीर्घरोमन् १.	३३१७
दिनप्रणी १.	२१११०	दीक्षि १.	२११३४	दीर्घवल्ली २.	३३३१३३
दिनम्मन्या २.	२११५८	" १. २.	४३३७६	दीर्घवाच् १.	२३३१३
दिनादि १.	२११६४	दीक्षिति २.	२११२२	दीर्घवृन्त १.	३३३१८
दिव् २.	११११	दीन १.	३३३७०	" १.	३३३२१८
" २.	८१२१७	" १.	३३३२२३	दीर्घशूक १.	३३८६१
दिवस १. ३.	२११५५	" १. २. ३.	५३३६०	दीर्घसूत्र १. २. ३.	५३३७६
दिवस्पति १.	११२१	दीनवादिन् १. २. ३.	५३३७७	दीर्घिका २.	४३३६
दिवा ४.	८१८७	दीनार १.	५३३४१	दीर्घाङ्ग १.	२३३२०
दिवाकर १.	२१११०	दीप १.	४३३१६१	दीर्घा २.	२३३२
दिवाकीर्ति १.	८११२४	दीपक १.	३३१४१	दुःख १. २. ३.	१२३९
दिवाचर १.	२१११०	" १. २. ३.	७३३४७	" ३.	३३३१८७
दिवाटन १.	२३३१५	दीपन १.	३३३६०	" १. २. ३.	५३३४४
दिवाभीत १.	८११२४	दीपवल्ली २.	४३३१६०	दुःखदोषा २.	३३३४९
द्विषद् १.	१११३	दीपवृक्ष १.	४३३१६१	दुःकृत् ३.	४३३१२२
द्विषौकस् १.	१११३	" १.	८३३२०	" ३.	७३३१८
" १.	७३३३०	दीपिका २.	४३३१६०	दुग्ध ३.	३३८१४५
द्विष्य ३.	२३३१	दीप्त १. २. ३.	८३३१४	दुग्धतालीय ३.	८३३१४
" ३.	३३३२०४	दीप्ता २.	२३३१४	दुग्ध १.	३३३२०५
" ३.	३३८१२	दीप्ति २.	२३३२२	दुग्ध १.	१३३२१
" ३.	३३९११०	दीप्य १.	३३८१८३	दुग्ध १.	१३३२६
" ३.	८३३१८	दीप्यका २.	३३८१०२	दुग्धुम ३.	३३३२००
द्विष्यकालिनी २.	४३३१७	दीर्घ १. २. ३.	५३३८१	दुग्धुमि १.	१३३४५
द्विष्येलक १.	४३३१५	दीर्घकोशिका २.	४३३५८	" १.	३३३१३३
द्विष्योलर्क १.	४३३१७	दीर्घदण्ड १.	३३३५९	" १. २.	७३३४८
द्विष् २.	२३३२	( द्विष्यदण्ड )		दुर् ४.	८३३४
" २.	४३३१५	दीर्घदर्शिन् १.	३३३२३५	दुर्ध्व १.	३३३५०
दिशा २.	२३३२	दीर्घदृष्टि १. २. ३.	५३३५३	दुराचार १. २. ३.	३३३१२
दिशान १.	३३३२२	दीर्घनादिन् १.	३३३६९	दुरालभा २.	३३३१२५
दिश्य १. २. ३.	५३३११६	( रत्तिकल )		दुरासव १.	१३३१६
दिष्ट १.	२३३५२	दीर्घनिद्रा २.	३३३२०१	दुरित ३.	३३३१६८
" ३.	२३३२५	दीर्घनिर्वेश १.	३३३१६३	दुरोदर १.	८३३१०
" ३.	३३३१८९	दीर्घपत्र ३.	३३३२०६	दुर्ग ३.	३३३३
" ३.	४३३११५				
दिष्टान्त १.	३३३२०१				

दुर्ग ]

दुर्ग ३.	३७७५
” १. २. ३.	६५७१
दुर्गात १. २. ३.	५७७०
दुर्गाति २.	१२१३७
” २.	७२१०
दुर्गन्ध ३.	३८१२५
” १.	५३१५५
दुर्गम १.	३२११
दुर्गा २.	१११६२
दुर्जन १.	५७२५
दुर्दर्शा २.	३६७९
दुर्दिन ३.	२२१८
दुर्नामन् २.	७११५८
” ३.	७७१३१
दुर्गल १. २. ३.	५७१५
दुर्बाल १. २. ३.	५७१५
दुर्भग १. २. ३.	५७६९
दुर्भनस् १. २. ३.	५७३३
दुर्मुख १. २. ३.	५७७६
दुर्योधनासन ३.	३६२२७
दुर्घर्ण १. २. ३.	७५७५
दुर्वासस् १.	३६१५६
दुर्विध १. २. ३.	५७६०
” १. १. ३.	७७१३
दुर्विनीतक १. २. ३.	३७१०७
दुर्हृद् १.	३७७२
दुल १.	५३१५३
दुली २.	७११५१
दुर्धर्मन् १. २. ३.	५७१५
दुर्ध्ववन १.	१२११
दुष्कृत ३.	३३१६८
दुष्टसाक्षिन् १. २. ३.	३८१९
दुष्ट ४.	८८१३
(दुष्ट)	
दुष्प्रवर्षिणी २.	३३१०२
दुष्पम ४.	८८१३
दुस्पर्श १.	३३१२६
दुस्पर्शा २.	३३१०६

वैजयन्तीकोपः

दुहितृ २.	७७७०
दूत १.	२११३४
” १.	३७२९
दूती २.	७७२४
दून १. २. ३.	५७९८
दूर ३.	५७१४२
दूरदर्शिन् १.	२३३३०
” १.	३६२३५
दूर्वा २.	३३२३२
दूपक १.	३७७१
दूपणारि १.	१११२१
दूपिका २.	३६७७
” २.	७७९५
दूप्य ३.	७३१२५
” ३.	७७११८
दूप्याङ्गी २.	३३३३
दृक्छन्द १.	७७९५
दृक्श्रवस् १.	७११६
दृग्यक्ष १.	२११३
दृगायुध १.	१११४३
दृग्लोमन् ३.	७७९५
दृढ ३.	३२३३
” ३.	३३२३२
” १.	५३१५
” १. २. ३.	५७८४
” १. २. ३.	५७१३२
” १. २. ३.	५७१३७
” १. २. ३.	६७८
दृढच्युत् १.	३६१५७
दृढदला २.	३३२२४
” २.	३३२३०
दृढा २.	३३१७७
दृति १.	७३१५९
दृढ्य १. २. ३.	५७११०
दृश् २.	७७९४
” २.	८५३७
” २.	८१२
दृशान १.	२१११४
दृशीकु १.	३६८१
दृश्य १. २. ३.	६५७२
दृष्ट्युत् १.	७३१६३

[ देवभिन्न

दृष्ट २.	३२१८
” २.	७३१६३
दृष्ट ३.	३७१४
दृष्टान्त १.	७१३२
दृष्टि २.	७७९४
” २.	६२१८
दृष्टिबन्ध १.	७७९२
देव १.	१११२
” १.	३७१५८
” १.	३९१०३
” १. २. ३.	८१७६
देवकुसुम ३.	३८१०३
देवखात ३.	७२१५
देवगिरि १.	१३१२
देवच्छन्द १.	७३१३८
देवजग्ध ३.	३३२३४
देवजन १.	१३३३
देवतरु १.	१३१४
देवता २.	१११५
देवतागण १.	१३३८
देवताड १.	३३३६
देवतायतन ३.	७३२८
देवतार्चनार्थ १. ३.	३९१३८
देवदारु ३.	३३३७१
देवदाली २.	३३१६२
देवदण्ड १.	३७१७१
देवदुन्दुभि १.	१२१७
” १	३३१२१
” २.	३३१९८
देवद्रीचीन १. २. ३.	५७९३
देवद्वयच् (अ)	१. २. ३.
देवधान्य ३.	३८१५७
देवधूप १.	३३१५३
देवन् १.	७७३३
देवन १.	३९१६०
देवनन्दिन् १.	१२१९
देवप्रेम्य १.	३५७२
देवभिन्न १.	७११४

[ देवभूय ]

देवभूय ३.	३१६१२३७
देवमणि १. ३.	३१७१११०
देवमातृक १. २. ३.	३११४६
देवमारिप १.	३१३१५१
देवमाली २.	३१३१८४
देवयज्ञ १.	३१६१६३
देवयान १.	२११४५
देवयु १.	३१६१७८
देवयोनि १.	११३१५
देवर १.	४१४३३
देवरथ १.	३१७१२६
” १.	३१९१६६
देवल १. २. ३.	३१६१११
देववधू २.	२१११२
देववेद्य १ द्वि.	११३१६
देवसभा २.	११३११
देवसिन्धु २.	४१२१२४
देवा २.	३१३१०६
देवाग्नि १.	११२१२२
देवाज १.	१११५३
देवाजीव १. २. ३.	३१६१११
देवार्ह ३.	३१२१२२
देवानाम्प्रिय १. २. ३.	५१४१२२
देविका २.	३१३१३४
देवी २.	३१३११४
” २.	३१३१३२
” २.	३१७१३१
” २.	३१९१४५
” २.	३१९१०४
देवीकोट्ट १.	४१३१९
देष्ट १.	४१४३३
देष्ट १.	३११२१
देशनिक ३.	४१३११५
देशरूप ३.	३१७१४८
( दशरूप )	
देशिक १.	३१८१३३
देह १. ३.	४१४५२
देहमर्दन १.	४१४१३८

शब्दानुक्रमणिका

देहलक्षण ३.	४१४५४
देहलि १.	५१३१५६
देहली २.	४१३१४४
देहवारि ३.	४१४१२०
दैतेय १.	११३१९
दैत्य १.	११३१९
” १.	३१३१७६
” ३.	३१३१२३
दैत्यक्षय १.	४११११
दैत्यदेव १.	११२११८
दैत्यमदन १.	३१३१२०८
दैत्या २.	३१८१९८
दैत्यारि १.	१११११०
दैन्य ३.	३१६११८३
दैर्घ्य ३.	५१२१५
दैव ३.	३१६११८९
दैवज्ञ १.	३१७२५
दैवज्ञा २.	४११३०
” २.	४१४११
दैवत ३.	११११५
दैवपर १. २. ३.	५१४३०
दैविक ३.	३१८११२
दैष्ट ३.	३१६१८९
( नैष्ट )	
दोलक ३.	४१२३९
दोला २.	३१७१३६
” २.	३१७१३७
दोलिका २.	३१७१३७
दोशिक्षर १.	४१४७१
दोष १.	३१६१९३
दोषग्रह १.	३१३१४२
दोषज्ञ १. २. ३.	४१४१४४
” १.	७११३२
दोषदर्शिन् १. २. ३.	५१४३४
दोषप्रणालिका २.	५१४११६
दोषा ४.	८१८७
दोस् १. ३.	४१४०१
” १. ३.	८१९३१
दोहल ३.	३१४६१

[ द्रविण ]

दोहल ३.	३१६११८०
दौन्दुभि २.	३१६१९५
दौन्दुमी २.	३१६१५६
दौर्मत्य ३.	५१२१४
दौवारिक १.	३१७२४
दौष्यन्त १.	३१५६७
” १.	३१५७२
दौहित्र १.	४१४४५
दौहव ३.	३१६१८०
द्यावापृथिवी २.	३११५
द्यु १.	२११५६
” १.	८११६०
द्युचर १.	११३१४
द्युमणि १.	२११११
द्युमत् १.	२१११२
द्युमयी २.	२११२३
द्युम्न ३.	३१८७३
” ३.	८१३१५
द्युचर १.	६११२७
द्युवर्धकि १.	११३१६
द्युत १. ३.	३१९५९
द्युतकारक १.	३१९५९
द्युतकृत् १.	३१९५८
द्यो २.	१११११
” २.	८१२१७
द्योत १.	११२३१
द्योतन ३.	७१३१८
द्योता २.	३१६५१
द्रक्षण ३.	५११४८
द्रक्ष ३.	४१३१४
द्रष्ट १.	२१२१८
” ३.	३१८१४२
द्रमिड १.	३१५५६
द्रमिल १.	३१५१०२
( द्रविड )	
द्रव १.	३१६१२६
द्रवक्षेप १.	५१२१४०
द्रवण ३.	५१३११
द्रवन्ती २.	३१३११३
द्रविण ३.	३१८७३
” ३.	८१३१५

द्रव्य ३.	६३३१५	द्रोणिका २.	३३३१२४	द्विजायनी २.	३३६२०
द्रव्यपद १.	५३३१	द्रोणी २.	४३२१५	द्विजालय ३.	४३३८६
द्राक् ४.	८८८१	” २.	६३२१८	द्विजिह्व १. २. ३.	७३५४५
द्राक्षा २.	३३३१८१	द्रोह १.	३३५१९	द्वितय ३.	५३११५
द्राक्षाफल १.	३३३२७	द्रौणिक १. २. ३.	३८८२१	द्वितीय १. २. ३.	५३१२०
द्रागृष्ट ३.	४३२४	द्रन्ध्र ३.	५३११५	द्वितीया २.	२३१७०
द्रावण १.	३३३४२	” ३.	६३३१६	” २.	४३३३४
” १.	३८८१२४	द्रय ३.	५३११५	द्वितीयाकृत १. २. ३.	३८८२३
द्राविडक १.	३३३१६७	द्वादश १. २. ३.	५३१२१	द्वित्र १. २. ३.	५३१२५
द्राविल १.	३३३१५९	द्वादशात्मन् १.	२३११०	द्विधा ४.	८८८२०
द्रु १.	३३३४	द्वादशाह १.	३३३१४४	द्विधागति १.	४३१४७
द्रुक्लिप्त ३.	३३३७१	द्रापर १.	२३१९२	द्विगमनक १. २. ३.	५३११५
द्रुचण १.	१३१९	” ३.	३३१६२	द्विप १.	३३७६०
” १.	३३७१७१	” १.	७३१३०	” १.	८३६१५
” १.	७३१३०	द्वार २.	४३३४२	द्विपद १.	१३११९
द्रुण ३.	३३७१७२	” २.	८३२१६	द्विपाद् १.	३३५११
द्रुणा २.	३३७७८	द्वार ३.	४३३४२	द्विमुखी २.	४३१२०
द्रुणी २.	४३१५१	द्वारका २.	४३३६	द्विमुष्टिक १.	५३१५२
द्रुत ३.	३३११२३	द्वारपटल ३.	४३१५०	द्विरद १.	३३७६०
” १. २. ३.	४३३५५	द्वारपाल १.	३३७२४	द्विरसन १.	४३१४
” १. २. ३.	५३३१२४	द्वारबन्ध १.	४३३४३	द्विरेफ १.	२३३४२
” १. २. ३.	६३३८	द्वारयन्त्र ३.	४३३४९	द्विवेदिनी २.	२३१७६
द्रुति २.	५३३१	द्वारवती २.	४३३६	द्विष् १.	३३७४१
द्रुम १.	३३३४	द्वारवतीपद ३.	३३११९	द्विषत् १.	३३७४०
” १.	३३३८५	द्वारस्थ १.	३३७२४	द्विषन्तप १. २. ३.	५३३६९
द्रुमका १.	४३३४७	द्विः(-स्) ४.	८८८६	द्विष्कृष्ट १. २. ३.	३३८२३
द्रुमामय १.	४३३१५३	द्विक १.	२३३१५	द्विसीत्य १. २. ३.	३३८२३
द्रुवय ३.	५३१६४	” ३.	३३७१०	द्विहृष्य १. २. ३.	३३८२३
द्रुह १.	३३५२६	द्विकालिक १. २. ३.	३३६१२८	द्विहायनी २.	३३३४५
द्रुहिण १.	१३१७	द्विलण्डक १.	४३३१२७	द्वीप १. ३.	४३२३३
” १.	७३१३२	द्विगुणाकृत १. २. ३.	३८८२३	द्वीपवत् १. २.	८३५२९
द्रुण १	४३१३२	द्विज १.	३३३३	द्वीपिन् १.	३३३३
द्रेकाण १.	२३१५१	” १.	४३३७८	द्वेषा ४.	८८८२०
द्रोण १.	२३३१७	द्विजकुत्सित १.	३३३५५	द्वेषण १.	३३७४१
” १. ३.	५३१५५	द्विजन्मन् ३.	३३५५७	द्वेषिन् १.	३३७४१
” १.	५३१६३	( विजन्मन् )	” १.	द्वेष्य १. २. ३.	५३३६९
” १. ३.	६३५४०	” १.	७३१३१	द्वैगुणिक १. २. ३.	३३८८
द्रोणक्षीरा २.	३३३५०	द्विजपोत १.	३३९११		
द्रोणदुग्धा २.	३३३५०	द्विजाति १.	७३१३१		
द्रोणपुष्पिका २.	३३३१२४				
द्रोणमुख ३.	४३३३				



[ द्वत ]

द्वैत ३.	५१११५
द्वैध ३.	३१७६
द्वैधम् ४.	५८१२०
द्वैप १. २. ३.	३१७१२८
द्वैपायन १.	१११३२
द्वैमातुर १.	१११५४
द्वैयाचित ३.	५११६२
द्वैयावक १. ३.	५११५५
द्वैयायोग ३.	२११९२

ध

धटिक १. ३.	५११६०
धटिनी २.	३१६१८
धन ३.	३१८७३
धनञ्जय १.	८११२४
धनद १.	१२१५६
धनवत् १. २. ३.	५११५७
धनाध्यक्ष १.	१२१५६
धनाया २.	३१६१८०
धनिन् १.	१२१५६
” १. २. ३.	५११५७
धनिष्ठा २ व.	२११४१
धनीयिका २.	३१८४९
धनु (धनुःपट) १.	३१३५७
” १. २.	३१७१७२
” २.	६१२१९
धनुर्ग्रह १.	३११५३
धनुर्दण्ड १.	३११५७
धनुर्धर १. २. ३.	३१७१४३
धनुर्वेद १.	३१६३०
धनुरश्रेणी २.	३१३११४
धनुष्पाणि १.	१११२२
धनुष्मत् १. २. ३.	३१७१४३
धनुस् ३.	३११५५
” ३.	३११५७
” १. ३.	३१७१७२
” १.	८१६१५
धनोत्पत्ति २.	३१७४४
धन्य १. २. ३.	५११५६
धन्या २.	३१३१०४

शब्दानुक्रमणिका

धन्या २.	३१८१४९
धन्याक ३.	३१८१५०
धन्येय ३.	३१८१५०
धन्वन् १.	३१२१४२
” ३.	३१७१७२
धन्वन्तर ३.	३११५७
धन्वन्तरसहस्र ३.	३११६२
धन्वन्तरि १.	८११२५
धन्वयास १.	३१३१२६
धन्ववन १.	३१५३३
धन्विन् १. २. ३.	३१७१४३
धमन १.	३१३१२२८
” १.	४१४९१
धमनी २.	३१८१०१
” २.	४१४११६
धम्मिल्ल १.	४१४१००
धयन ३.	४३१०४
धर १.	३१९९
धरण ३.	५११४४
धरणी २.	३११२
धरणीधर १.	११११३
धरा २.	३११२
” २.	३१३१३१
धरास्तुत १.	२११३१
धरित्री २.	३११२
धरीक १.	४११२८
धरुण १.	७११३२
” ३.	८१३१८
धर्म १. ३.	३१६१६८
” १.	३१७१५८
” १.	५१२१
” १. २. ३.	६१५४२
धर्मश्रुती २.	४१२२५
धर्मपत्तन ३.	३१८७९
धर्मपाल १.	३१७१५८
धर्मभ्रातृ १.	३१६२४
धर्ममाणव १.	३१६२३
धर्मराज १.	१११३३
” १.	१२१३५
धर्षण ३. २.	७१५४८

[ धारण ]

धर्षणी २.	३१६१४६
” २.	७१५४८
धव १.	३१३१९७
” १.	४१४३७
” १.	६११२७
धवल ३.	५१३१०
” १. २. ३.	७१५४९
धवला २.	३१४४३
धवित्र ३.	४३१५९
धातकि २.	३१३१९७
धातु १.	४१४१११
” १.	६११२८
धातृ १.	१११६
” १.	८१६११
धातृपुष्पिका २	३१३१९७
धान्नी २.	३११२
” २.	३१२१७७
” २.	६१११९
धानका २.	५११४०
धाना २.	३१८१४९
” १ व.	४३१७१
” २.	६१२१९
धानी २.	३१६६०
धानुष्क १. २. ३.	३१७१४३
धान्य ३.	३१८१३१
” ३.	३१८१५१
धान्यकोष्ठ १.	४३१६४
धान्यमञ्जरी २.	३१८१६४
धान्यराशि १.	३१८१६५
धान्यवृद्धि २.	३१८१५
धान्या २.	३१८१४९
धान्याम्ल ३.	४३१८३
धान्योत्तेपण ३.	५१२१६१
धामन ३.	४३११७
” ३.	६१३१६
धामार्गव १.	३३१११५
” १.	३३११६२
धारकवार ३.	४३१४०
धारका २.	४१४६३
धारण ३.	५११५९

धारणा ]

धारणा २.	३६१२३१
” २.	३६११५
” २.	३६१४०
धारणी २.	३६११७८
धारभार ३.	५११६१
धारा २.	३७११८
” २.	३७१८६
” २.	३८१३०
” २.	६१२२०
धाराप्र ३.	७३११८
धाराट १.	७११३३
धाराधर १.	२१११
धारिका २.	२११५४
धारोष्ण ३.	३६११४६
धार्तराष्ट्र १.	२३१७
धार्मिक १.	३६१२३
” १.	३७१२०
धावन २. ३.	७५१४९
धावनी २.	३३१३३६
धिक् ४.	८७१५
धिकृत १. २. ३.	५४१७१
” १. २. ३.	५४१११०
धिक्क्रिया २.	५२१२१
धिग्वन १.	३५१९७
धिग्वनक १.	३५१६
( धिश्चनक )	
धिषण १. २.	७५१५०
धिष्ण्य ३.	२११३८
” १. ३.	६५१४३
धी २.	३६११६३
धीकर १.	३१११६
( अधीक्रर )	
धीकर्मिक १.	३७१२०
धीता २.	६१२२०
धीति २.	३३११०४
धीमक ३.	३२१३३
धीमत् १.	३६१२३४
धीमती २.	४११२१
धीर १. २. ३.	३७११५०
” १. २. ३.	५४१२०

वैजयन्तीकोषः

धीर १. २. ३.	५४१५२
” १. २. ३.	६५१४४
धीरा २.	३३११३१
धीवर ३.	३२१३३
” १.	३५१२६
” १.	३५१८२
” १.	३५१४२
धुक्षिम ३.	३६११४५
धुत १. २. ३.	५४१९५
धुत्तर १.	३३१७६
धुनी २.	४१२२३
धुर् २.	३११३०
” २.	८१११७
धुरण १.	५११३३
धुरन्धर १.	३३१९४
” १. २. ३.	३४१६७
धुरीण १. २. ३.	३४१६७
धुर्धर १.	३३१७७
धुर्य १. २. ३.	३४१६७
धुर्यावर्तिक १. २. ३.	३६११३३
धुर्वी २.	३७१३०
धुस्तूर १.	३३१७६
( धुत्तर )	
धुष्कृणा २.	२३११८
धूत १. २. ३.	५४११०१
” १. २. ३.	६४१८
धूप १.	११२२८
धूपायित १. २. ३.	५४१९८
धूपित १. २. ३.	५४१९८
धूम १.	११२२८
” १.	८६१५
धूमक १. २. ३.	२१२१०
धूमकेतु १.	११२१६
” १.	८१२२५
धूमज १ ब.	२११३७
धूमयोनि १.	२१२११
धूमल १. ३.	३१११३८
” १.	५४१२१
धूमवर्णा २.	११२३०

[ धैवत

धूमिका २.	२१२११०
धूमोर्णा २.	११२३६
धूम्या २.	५१११४
धूञ्ज १.	५३१८
” १.	५३१२१
धूञ्जकर्ण १.	३४१६६
धूञ्जाट १.	२३१२७
धूर्जटि १.	१११४०
धूर्त ३.	३२१३६
” १.	३३१६०
” १.	३३१६१
” १.	३३१७६
” ३.	३६१११५
” १.	३११५८
” १. २. ३.	५४१२४
धूर्तार १.	३३१६०
धूलि २.	३६१२५
” २.	८६११७
” १. २.	८११२६
धूलिजङ्घ १.	२३११६
धूलिज्वज १.	११२४९
धूलिमक्त ३.	३६१५६
धूलिलुठित ३.	३७११११
धूलीकदम्ब १.	८११५३
धूसर १.	३११२७
” १.	५३११४
धृति २.	१११४७
” २.	३६११६६
” २.	३७१२०८
” २.	६१२२०
धृष्ट १. २. ३.	५४११७
धृष्टा २.	३६१५०
धृष्ट्यु १. २. ३.	५४११७
” १. २. ३.	६४१९
धेनु २.	३४१५०
” २.	३७१७०
धेनुप्या २.	३४१५०
धेनुक ३.	५१११०
धेनुकी २.	२११७७
धैर्य ३.	३७१२०८
धैवत १.	३११३३२

धोरण १.	२३१६	नकुटक ३.	४११९१	नटभूषण ३.	३१२१३
" ३.	३१७१२३	नकुल १.	४११२७	नटिति २.	३१९१७८
धोरि २.	३१६५७	नक्तक १.	२३३२३	नटी २.	३१८१००
धौत १. २. ३.	३१७१९७	" १.	५३१३३०	नटोत्साहन ३.	३१९१३९
धौतकौशेय ३.	४३११९८	नक्तञ्चर १.	२३३२२	नट्या २.	५१११४
धौतयुग्म ३.	४३११२०	नक्तम् ४.	८१८७	नटवत् १. २. ३.	३११४४
धोरण १. २. ३.	३१७१२१	नक्तमाल १.	३१६१२	नट्वल १. २. ३.	३११४४
धोरित १. २. ३.	३१७१२१	नक्र १.	४११५३	नण्ड १.	३१९६३
धोरितक १. २. ३.	३१७११८	नक्षत्र ३.	२११३८	नत १. २. ३.	५१४८३
" १. २. ३.	३१७१२१	नक्षत्रकालिक १. २. ३.	३१६१२७	" १. २. ३.	५१४१२३
धोरिय १. २. ३.	३१४५७	नक्षत्रनेमि १. २.	८१५२६	" १. २. ३.	६१४९
धोर्य १. २. ३.	३१७१२१	नक्षत्रमाला २.	११७८७	नतजानु २.	३१६४७
ध्यान ३.	३१६१३२	" २.	४३११४२	नतनास १. २. ३.	५१४१२
ध्यामक ३.	३१३२३४	नख ३.	३१८१०१	नद १.	४१२२९
ध्रुव १.	३१७१३१	" १. ३.	४१४७५	नदनु १.	२१२१२
" १. २. ३.	६१५४४	नखर १. ३.	४१४७५	नदी २.	२१२२२
ध्रुवा २.	३३१९६	नखरायुध १.	४१४७२	" २.	८१९३
" २.	३३११००	नखसस्त्र १.	८१६२३	नदीभव ३.	३१८१२०
" २.	३१६१००	नखायुध १.	४१४७२	नदीमातृक १. २. ३.	३११४७
ध्रुणा २.	२१४२	नखारुस ३.	४१४११७	नद्व १. २. ३.	५१४९७
ध्वज १. ३.	३१७१३३	नग १.	३३३५	नद्वि २.	३१९४४
" १. ३.	६१५४३	" १.	३१८१०४	ननन्द २.	४१४२७
" १. ३.	८१६५	" १.	८११५८	ननान्द २.	४१४२७
ध्वजप्रहरण ३.	१२१४८	नगर ३.	४३११	ननु ४.	८१४२९
ध्वजिन् १.	३१९४४	नगरद्वारकुट्टक १.	४३१५	" ४.	८१८२
ध्वजिनी २.	३१७५५	नगरी २.	४३११	नन्दक १.	११११७
ध्वनि १.	२१४१	नगाधारा २.	३११३	नन्द्यु १.	३१६१८८
ध्वस्त १. २. ३.	३१७२१९	नग्न १.	३१६७३	नन्दन ३.	१२११०
" १. २. ३.	५१४१०२	" १. २. ३.	५१४१५	" १.	३१६१०२
ध्वक्क १.	२३११७	" १.	६११३१	" १.	४१४३९
" १.	६११२७	नग्नद्व १.	३१९५०	" १.	८१९१४
ध्वक्की २.	२१४४	नगना २.	४१४१०	नन्दनीनन्दन १.	३१६१५८
ध्वान १.	२१४१	नगनाट १. २. ३.	५१४१५	नन्दयन्त्री २.	१११६०
ध्वानका २.	५११४९	नचक्र १.	३१६१९९	नन्दा २.	१११६०
ध्वान्त ३.	२११६४	नट १.	३१६१९	" २.	३३३९७
ध्वान्तमणि १.	२३१४७	" १.	३१५५५	नन्दि २.	३१६१८८
न		" १.	३१५१०३	नन्दिक १.	३१६५८
न ४.	८१७५	" १.	३१९६२	नन्दिका २.	१२१११
नःकुद्र १. २. ३.	५१४११	नटन ३.	३१९७८	नन्दिकेश्वर १.	१११५१

नन्दिन् १.	१११५१	नयनोदक ३.	३१५८७	नवांशुक ३.	४३१२०
” १.	३१८३५	नर १.	३१५११	नवीन १. २. ३.	५४१८८
नन्दिनी २.	१११६०	” १.	६११२९	नव्य १. २. ३.	५४१८८
” २.	३१३१७८	नरक १.	११२३७	नसिक १.	४४१३८
” २.	३१८१८८	नरकाराति १.	१११२५	नश्यत्प्रसृति ४.	४४१२०
” २.	४३१११	नरकीलक १. २. ३.		नश्वर १. २. ३.	२१४१९
” २.	४१४२७		३१६१२	नष्टा २.	३१६४८
नन्दिवर्धन १.	१११४४	नरकोलि २.	३१३१८९	नस २.	३१५२३
” १.	२११७३	नरदेव १.	३१७१२	नस्त ३.	४४११४०
नन्दिसरस् ३.	२११११	नरनारायण १.	१११३०	नस्तित १. २. ३.	३१४५७
नन्दीचारी २.	३१५१४२	नरवाहन १.	११२५७	नस्य ३.	४४११४०
नन्दीमुखी २.	३१६२००	नरेन्द्र १.	३१७१२	नस्योत् १. २. ३.	३१४५७
नन्द्यावर्त १.	३१३१९४	” १.	७११३७	नहुष १.	३१५११
” १.	४३३३०	नर्तक १.	३१५६३	नाक १.	१११११
नपुंसक ३.	४१४३	नर्तन ३.	३१५७३	” १.	६११२९
नप्त् १.	४१४४५	नर्तनप्रिय १.	२३३३८	नाकु १.	३११४८
नप्र १.	३१५६३	नर्मदा २.	४२१२६	नाकुल ३.	३१६२१८
नभःप्राण १.	११२४८	नर्मन् ३.	३१५८८	नाकुली २.	३१८१९८
नभस् ३.	२११११	नल १.	३३३२२८	नाकुसुदमन् १.	४११६
” ३.	२११८४	नलक ३.	४३१२५	नाग ३.	३२२३०
नभस १.	७११३३	” ३.	४१११६	” ३.	३२२३२
नभसङ्गम १.	२३३२	नलकृवर १.	११२५९	” १.	४११४
नमस्य १.	२११८५	नलतीर ३.	४१५५९	” १.	६११३०
नमस्वत् १.	११२५०	नलद्व ३.	३३३२३१	नागकेसर १.	३३३८२
नमोङ्गण १.	३३३१९४	नलमीन १.	४११४५	नागजिह्वा २.	३२२१२
नमोजात १.	११२५०	नलान्तर १.	३११६१	” २.	३३३१३९
नभ्राज १.	२२२१	नलिक ३.	४३१२५	नागजीवन ३.	३२२३१
नमः (-स्) ४.	८८१४	नलिन ३.	४२२३८	नागदन्त १.	४३३५३
नमत ३.	४३१६६	नलिनी २.	४२१४३	नागदन्तक ३.	३१६२१४
” १.	७११३५	” २.	७२११०	नागदन्ती २.	३३३१०९
नमसित १. २. ३.		नलिवाह १.	३१७११७	नागपाश १.	३१७१९६
	५४१०५	नली २.	३१८१००	नागबला २.	३१८६१
नमस्कार १.	३१६३९	नल्व १.	३११६०	नागमातृ २.	३२२१२
नमस्कारी २.	३३३१४८	नल्वल ३.	५११५६	नागर १.	३३३६१
नमस्या २.	३१६३९	नल्विक १.	३११६०	” १. २. ३.	७१५५०
” २.	३१६३९	नव १. २. ३.	५११८८	नागरङ्ग १.	३३३३६
नमस्थित १. २. ३.		नवति २.	५११२७	नागराज १.	४११३
	५४१०५	नवनीत ३.	३१८१३८	नागरी २.	३३३१३७
नम्र १. २. ३.	५४१८३	नवम् १. २. ३.	५११२०	नागलोक १.	४१११
नय १.	५२२३२	नवमालिका २.	३३३१८६	नागवल्ली २.	३३३१४०
नयन ३.	४११९४	नवश्री १. २. ३.	४३३११९	नागवारिक १.	८११५३



[ नागवीथिका ]

नागवीथिका २.	२।१।४६
नागवृत्तिका २.	३।३।१२६
नागाङ्क ३.	४।३।८
नागी २.	२।१।६
नागोदरी २.	३।७।१५४
नागोन्नव ३.	३।८।११८
नाटक ३.	३।९।१००
नाटकी २.	३।९।७३
नाटिका २.	३।९।१००
नाट्य ३.	३।२।२८
” ३.	३।९।७१
” ३.	६।३।१७
नाट्यधर्मिका २.	६।९।७२
नाट्योक्त ३.	३।९।७२
नाडिजङ्घ १.	२।३।१६
नाडिन्धम १.	३।९।१६
नाडी २.	२।१।५४
नाडीघण १.	३।८।१३३
नाथ १. २.	६।५।४५
नाद १.	२।४।१
नादेय ३.	३।८।१२८
नादेयी २.	३।३।९६
” २.	३।३।१९९
नाना ४.	८।७।२२
” ४.	८।८।४
नानीकर १. २. ३.	५।४।४८
नानीकवाच १. २. ३.	५।४।४८
नानीपात १.	४।१।२०
नान्दी २.	३।९।६९
” २.	३।९।१३३
नापित १.	३।९।२६
नापितकोलिका २.	४।४।९६
नाभि २.	४।४।६६
” १.	६।१।३०
नामिका २.	३।७।१३५
नामिज १.	१।१।९
नाभिनाला २.	४।४।९
नाभी २.	४।४।६६

शब्दानुक्रमणिका

नाभीव ३.	३।१।५
नाभील ३.	७।३।१९
नाम ४.	८।७।२३
नामकर्मन् ३.	३।६।३
नामधेय ३.	३।१।३१
नामन् ३.	३।१।३१
नामवर्जित १. २. ३.	५।४।२१
नामशास्त्र ३.	३।६।३१
नाय १.	३।२।३२
नायक १.	४।३।१४३
” १. २. ३.	५।४।५७
नार ३.	३।१।१३
नारक १.	१।२।३७
” १.	१।२।३८
नारकी २.	२।१।६
नारङ्ग १.	३।३।३६
नारद १.	३।३।७
नारसिंही २.	१।१।६४
नाराच १.	३।७।१८०
नाराची २.	३।९।१९
नारायण १.	१।१।१०
” १. २.	८।५।१०
नारी २.	३।३।८१
” २.	४।४।४
नार्यङ्ग १.	३।३।३६
नाल १. २. ३.	३।८।१८
” १. २. ३.	३।८।६३
” १. २. ३.	४।२।४२
” ३.	६।३।१७
” १. २. ३.	८।९।३८
नालक ३.	४।३।१२५
नाला २.	४।२।४२
नालिका २.	३।१।५८
” २.	३।१।५८
” २.	३।६।९५
” २.	३।७।११०
” २.	३।७।११७
” २.	३।९।१७२
” २.	७।२।११
नालिकेर १.	३।३।२२०

[ निकाय्य ]

नाली २.	३।८।६३
” २.	४।४।११६
” २.	८।९।३८
नालीकर १. २. ३.	५।४।४८
नालीकवाच १. २. ३.	५।४।४८
नावन ३.	४।४।१४०
नावारोह १. २. ३.	४।२।१९
नाविक १.	३।५।३८
” १.	३।५।३००
” १. २. ३.	४।२।१९
नाव्य १. २. ३.	४।२।२०
नाश १.	३।७।२१०
” १.	६।१।३१
नासत्य १ द्वि.	१।३।५
नासत्यद्वय १ द्वि.	१।३।५
नासा २.	४।३।४०
” २.	४।३।४५
” २.	४।४।९१
नासाग्र ३.	४।४।९२
नासारज्जु २.	३।७।११२
नासिका २.	४।४।९१
नासिकापुट १.	४।४।९१
नासिकामल १.	४।४।९२
नासिक्य १ द्वि.	१।३।६
नासिर १. ३.	३।७।२०३
नासू २.	३।९।१३३
नास्तिक १. २. ३.	५।४।३८
नि ४.	८।७।५
निसन ३.	४।३।१७१
निकट ३.	५।४।१४०
निकर १.	५।१।२
निकर्षण ३.	४।३।३१
निकष १.	३।९।१९
निकषा ४.	८।८।५
निकामस् ४.	४।३।१०४
निकाय १.	५।१।४
निकाय्य १.	४।३।१८

[ निकार ]

निकार १.	७११३०
निकारण ३.	३७१२१२
निकार्य १.	४३११८
निकाश १ २. ३.	५४११२२
निकुञ्चिन् ३.	३६१५१
निकुञ्ज १. ३.	३११२०
निकुम्ब ३.	५११२
निकृष्ट १. २. ३.	५४१७५
निकेतन ३.	४३११७
निकृण १.	२४१११
निकाण १.	२४१११
निक्षेप १.	३८११२
निखर्व ३.	५११२८
” ३.	५११३०
निखिल १. २. ३.	५४१८५
निगण १.	३६१९५
निगम १.	७११३५
निगारण १. २. ३.	४४१८३
निगल १.	३७१८३
निगाल १.	३७११०९
निगूढक १.	३८१३८
निगूढचरण ३.	३६१२१२
निग्रह १.	७११३४
निघ १.	३९११८
निघण्टु १.	३६१३१
निघस १.	४३११०२
निघानका २.	३९१२०
निघृष्टा २.	३६१५०
निघ्न १. २. ३.	५४१२८
निघित १. २. ३.	५४११५५
निचुल १.	३३१६७
निचोट १.	३७११८४
निचोल १.	३३१४१
” १.	४३११२६
” १.	४३११२८
निज १. २. ३.	३७१४३
” ३.	५२११

वैजयन्तीकोषः

निज १. २. ३.	६४१९
नितम्ब १.	३११८
” १.	४४१६४
” १.	७११३६
नितम्बिनी २.	४४१४
नितान्त १. २. ३.	५४११३२
नित्य १. २. ३.	५४१८८
” १. २. ३.	५४११३०
नित्यशक्तिन् १.	३४११२
नित्यहोम १.	३६१७०
निदाघ १.	३९१८१
” १.	८११५७
निदान ३.	७३१२०
निदानज्ञ १.	४४११४४
निदिग्ध १. २. ३.	५४११०८
निदिग्धिका २.	३३११०५
” २.	३३११०६
निदेश १.	३७१४७
” १.	७११३४
निदेशक १.	३९१५९
निद्रा २.	३६१९७
निद्राण १. २. ३.	५४१३९
निद्राल १.	३३११५०
” १. २. ३.	५४१३९
निधन १. ३.	७५१५१
निधान ३.	१२१६०
” ३.	५२१४०
निधि १.	१२१६०
निधिपाल १.	१२१५७
निधुवन ३.	३११३४
( विधुवन )	
” १.	४३११७०
निन्दा २.	३९१३३
” २.	६२१२१
निप १.	४११५८
निपण्ति २.	२११७०
निपात १.	३६१२०१
निपान ३.	४२१९
निपीतिन् १.	३८११२७

[ निरक्षना ]

निर्वर्ण ३.	३७१२१२
निर्वह १. २. ३.	५४१२६
निर्वीर १. २. ३.	५४१२६
निभ ३.	३६१९५
” १. २. ३.	३९१२१
” १. २. ३.	५४१२२
निभृत् १. २. ३.	५४१३२
निमय १.	३८१७१
निमित्त ३.	७३११८
” १.	८३११६
निमित्तग्रहण ३.	३७११९०
निमिष ३.	३९१९०
निमीलन ३.	३३१२०१
” १.	३९१९०
निमेष १.	२११५३
निम्नक १.	३३१३६
निम्नगा २.	४२१२२
निम्ना २.	३३११७८
निम्ब १.	३३१७५
नियति २.	७२११२
नियन्तु १.	२७११३८
नियम १.	३६११४
” १.	३६१२०९
” १.	५२१३७
” १.	७११४०
नियमोक्तिरिति २.	५२१६
नियामक १.	४२११८
नियुत ३.	३३१२३२
” ३.	५११२८
” ३.	५११३०
” ३.	५११३२
नियुद्ध ३.	३७१२०७
नियोग १.	५२१२५
नियोज्य १.	३९१२
निर् ( निस् ) ४.	८७१५
निरक्षन १.	३३११२
निरक्षना २.	११११६
” २.	२११७२

निरन्तर १. २. ३.	५४११२६	निर्भर १. २. ३. ५४१३१	निवर्तना २.	५४११७	
निरय १.	१२१३७	निर्भर्त्सन ३.	८३१८	निवसथ १.	४३१२
निरर्थक ३.	५२१६	निर्मद १.	३७१६८	निवसन ३.	४३११८
निरवग्रह १. २. ३.	५४१२७	निर्माल्य ३.	४३११५६	" ३.	४३१११६
निरसन ३.	३४१२१३	निर्मुक्त १.	४११२०	निवह १.	५११२
निरस्त १. २. ३. ७४११३		निर्माक १.	४११२१	" १.	७११३४
निराकरिष्णु १. २. ३.	५४१४०	निर्याण ३.	५२११३	निवहा २.	३३११८६
निराकार १.	५२१२३	" ३.	७३११९	निवात १. २. ३. ७४११४	
निराकृति २.	३६१९	निर्यातन ३.	८३१७	निवाप १.	३३१६४
निरामय १. २. ३.	४४११४३	निर्याम १.	४२११९	निवीत ३.	३३१२१
निरायस १.	३४१६३	निर्यास १.	३३१११	" १. २. ३. ४३१२२०	
निरास १.	५२१२३	निर्यूह १.	४३१३१	निवृत्त १. २. ३. ५४११०८	
निरिणा २.	३६१४६	" १.	४४११४१	निवृत्ति २.	७२१११
निरीष १.	३८१२८	" १.	७११३८	निवेश १.	५२११४
निरुक्त ३.	३६१२८	निरलंभा २.	३६१४६	" १.	७११३३
" ३.	३६१३१	निरलिङ्ग ३.	८७११	निहारण ३.	३७१२१२
निरूपण १. २. ३.	८५११२	निरलेप ३.	४२१३८	निशा २.	२११५७
निरोध १.	७११३३	निर्वपण ३.	३६१११८	निशाकर १.	२११२४
निर्झति २.	१२१४२	निर्वहण ३.	३९११०९	निशाकेतु १.	२११२५
निर्गमन ३.	५२११३	निर्वाण ३.	७३१२०	निशाचर १. २. ८५११२	
निर्गीत ३.	३९१११०	निर्वाद १.	२४१३३	निशात १. २. ३.	३७११९७
निर्गण्डी २.	३३१११८	निर्वापण ३.	३७१२१३	निशादक्षिन् १.	२३१२२
" २.	३३११८६	निर्वार्य १. २. ३. ५४१७३		निशानाथ १.	२११२४
निर्ग्रन्थ १. २. ३. ५४११६		निर्वासन ३.	३७१२१२	निशान्त १. २. ३.	७५१५१
" १. २. ३. ७४११३		निर्विष १.	४११११	निशामणि १.	२३१४७
निर्ग्रन्थन ३.	३७१२१३	निर्विषा २.	४१११७	निशार १.	४३११२७
निर्घात १.	२२१६	निर्वीरा २.	४३१२८	निशित १. २. ३.	३७११९७
निर्जर १.	१११३	निर्वृत्ति २.	७२११०	निशीथ १.	२११६६
निर्झर १.	३२१७	निर्वृत्त १. २. ३. ५४११११		तिक्षिथिनी २.	२११५८
निर्णय १.	३६११७६	निर्वेद १.	३६११६७	निक्षिप्या २.	२११५८
निर्णिक १. २. ३.	५४१६६	" १.	५२१३४	निशुम्भन ३.	३७१२१२
निर्णैक १.	३५१४५	निर्वेसा १.	७११३९	निश्रय १.	३६११७६
निर्वय १. २. ३. ७४११५		निर्व्ययन ३.	४१११२	निश्वारक १. २. ३.	८५१११
निर्वेश १.	३७१४७	निर्वहरण २.	३७११९२	निश्रेणि २.	४३१५१
निर्वन्ध १.	५२११४	निर्वहार १.	५२११७	निश्वास १.	३६१२०४
		निर्हाव १.	२४११	निरालाक १. २. ३.	५४११२०
		निलय १.	४३११८		
		निलम्प १.	१११२		
		निलम्पिका २.	३६१४२		
		निलयनी २.	४११२१		
		निवर्तन ३.	३११६०		

निर्देश १. २. ३.	पा४८६	निष्ठा २.	६२२१	निस्पृहा २.	३६५०
निर्देश १. २. ३.	पा४६६	निष्ठान ३.	४३८५	निस्त्राव १.	४३८९
निश्चेयस ३.	८३८	" ३.	४३११०	निस्त्राध्याय १. २. ३.	३६५
निश्चास १.	३६२०४	निष्ठीव १. ३.	पा२३६	निहत १. २. ३.	३६३७
निपङ्ग १.	३१७१७८	निष्ठीवन ३.	पा२३६	" १. २. ३.	७४१३
" १.	७१३३४	निष्ठुर १. २. ३.	२४२१	निहन्नन ३.	३७२२
निपङ्गिन् १. २. ३.	३७१४३	" ३.	३२२७	निहित १. २. ३.	पा४१०४
निपद्या २.	४३३३	" १.	पा३५	निह्व १.	७१३९
निपट्ट १.	३८२६	निष्ठेवन ३.	पा२३६	नीच १. २. ३.	३६३७
" १. २.	८५११	निष्ठया २.	२१४०	" १. २. ३.	पा४२२
निपघ	७१३८	निष्ठयूत १. २. ३.	७४१४	" १. २. ३.	पा४६०
निषाद १.	३५४	निष्ठचूति २.	पा२३६	" १. २. ३.	पा४८१
" १.	३५६९	निष्ठात १. २. ३.	पा४१९	" १. २. ३.	६४२०
" १.	३५७०	निष्पक १. २. ३.	पा४११५	नीसुदार १.	३३५४
" १.	३५७२	निष्पतिसुता २.	४४२०	नीचैः ( -स् ) ४.	८८१९
" १.	३५८४	निष्पन्नाकृति २.	पा२३८	नीड १. ३.	२३४९
" १.	३९१३२	निष्पन्न १. २. ३.	पा४४६	" १. ३.	८५३६
निषादिन् १.	३७८७	निष्पाव १.	४२४६	नीडज १.	२३४
निषिद्धैकरुचि १. २. ३.	३६१२	" १.	४२४६	नीडिन् १.	२३२
निषूवन ३.	३७२१२	निष्प्रवाणि १. २. ३.	४३१२०	नीडोद्भव १.	२३२
निष्क १.	पा१४१	निष्प्रम ४.	८८१३	नीप १.	३३६०
" १. ३.	पा१४६	निसर्ग १.	पा२१	नीर ३.	४२१
" १. ३.	६५२०	" १.	८५३५	नील १.	१२६१
निष्कला २.	४४१६	निसृष्ट १. २. ३.	पा४११६	" १.	३४१७
निष्कासित १. २. ३.	पा४७१	निस्तर्हण ३.	पा१२१२	" १.	पा३११
निष्कुट १.	३३३	निस्तल १. २. ३.	पा४८२	नीलक १.	१२२९
" १.	३३१४	निष्पिंश १.	३७१६०	नीलकण्ठ १.	३३१५५
निष्कुटी २.	३८८७	" १. २. ३.	७५५१	" १.	८६२२
निष्कोटित १. ३.	३९१२२	निस्वन १.	२४१	नीलकेशी २.	३३११०
निष्कोश १.	३७७७	निस्वान १.	२४१	नीलक्रीव १.	११४२
निष्क्रम १.	७१३६	निस्सङ्ग १. २. ३.	३४२०	" १.	८६२२
निष्ठङ्ग १.	३३६२	निस्सङ्गजा २.	३३१८७	नीलजम्बूर १.	३३९४
निष्ठध १.	३५४६	निस्सारण ३.	३५४१	नीलवर्द्ध १.	११६७
निष्ठयान्ता २.	३३१३५			नीलपीतल १.	पा३२१
निष्ठा २.	३९१०९			नीलपुष्प १.	३८५८
				नीललोहित १.	११४०
				" १.	पा३१९
				नीलवासस् २.	२१३६
				नीलवृष १.	३६१२३



नीलशीर्ष ]

नीलशीर्ष १.	३११४१
नीलसितश्याम १.	५३१३३
नीलाक्ष १.	२१३५
नीलाङ्गा २.	४११३९
नीलाब्ज ३.	४२१३५
नीलाम्बर १.	१११२४
नीलिक १.	३५११९
नीलिका २.	३३११८६
नीलिङ्गी २.	३११४२
नीलिनी २.	३३१११०
नीली २.	३३१११०
नीलीराग १. २. ३.	४२१३४
नीलोत्पल ३.	४२१३४
नीवलक १.	३५१२४
नीवाक १.	३८१६६
नीवार १.	३८१५७
नीवि २.	४३१३०
नीवी २.	३८१७०
नीधृत् १.	३११२१
नीध ३.	४३१३७
नीहार १.	२१२९
नु ४.	८१७६
नुत १. २. ३.	५४१०६
नुति २.	३११३५
नुत्त १. २. ३.	५४१९७
नुन्न १. २. ३.	५४१९७
नूतन १. २. ३.	५३१८६
नूतना २ व.	२१११८
नून १. २. ३.	५४१८६
नूनम् ४.	८१७२२
नूपुर १. ३.	४३११४५
नृ १.	३५११
” १.	४१३३
नृगालिक १ व.	३११२८
नृङ्ग ३.	४३३३
” ३.	४३३४
नृदु १.	३११६३
नृत्त ३.	३११७३
नृप १.	३१७१

शब्दानुक्रमणिका

नृपति १.	३१७१
नृपलक्ष्मन् ३.	३१७१६
नृपात्मज १.	३३११७०
नृपात्मजा २.	३३११६७
नृपार्हक ३.	३८१५६
नृलिङ्गक १.	३११११२
नृशंस १. २. ३.	५४१२४
नृसिंह १.	११११८
नृसेन २. ३.	८११३४
” २. ३.	८११३५
नेतृ १.	३३१३७
” १. २. ३.	५४१५७
नेत्र ३.	६३१७७
नेत्रपिण्ड १.	४४१९५
नेत्ररुज् २.	४४१३२
नेम १. २. ३.	५४१८६
” १. २. ३.	६५१४७
नेमि १.	३३१६६
” २.	३१७१३५
” २.	४२१८
” २.	६२१२१
नेनिन् १.	३३१४७
नेमीय १.	३३१४७
नेरिन् १.	१२१५२
नैकृत १. २. ३.	५४१२२
नैकृतिक १. २. ३.	५४१२२
नैगम २.	३८१७२
” १.	७११३७
नैगमेय १.	६११५७
नैचिकी २.	३३१४६
” २.	३३१४६
नैपथ्य ३.	४३१३२
नैपाली २.	३२११७
नैयमोष १.	३३१२२
नैर्ऋत १.	१२१४०
नैर्ऋती २.	२११४
नैल ३.	३११८
नैषध ३.	३११६
नैष्किक १.	३१७२१
नैष्ठिक १.	३१७२१

[ पञ्चक

नौ २.	४२११५
” २.	८२११७
नौजीविन् १.	३११४२
नौतार्थ १. २. ३.	४२१२०
नौशिरस् ३.	४२११७
नौस १. २. ३.	३६१२७
न्यस्य १. २. ३.	६४१९
न्यमोष १.	३३१२७
” १.	४४१८२
न्यमोषी २.	३३११३
न्यङ्क १.	३३११५
” १.	६११३३
न्यच् १. २. ३.	५४१८१
” १. २. ३.	५४१९३
न्यक्षुब्ध ३.	५११२८
न्यस्त १. २. ३.	५४१०४
न्यस्तक १. ३.	३८११२
न्याद १.	४३१०२
न्याय १.	३१७४८
” १.	३८१५
न्यायगण १.	३३१२९
न्याय्य १. २. ३.	५४१०३
न्यास १.	३८११२
न्युक्त्त १. २. ३.	५४१३५
न्युक्त्त १.	३३३३७
” १. २. ३.	५४१११
” १. २. ३.	५४१९०
” १. २. ३.	६५१४६
प	
पक्ति २.	६२१२२
पक्तिका २.	३८१४२
पक्ष ३.	३८१४३
” १. २. ३.	४३१९३
” १. २. ३.	४३१९५
पक्षण १. ३.	३११३२
पञ्च १.	२११७९
” १.	२३१४९
” १.	६११४५
पञ्चक १.	४३१२४

[ पञ्चक ]

पञ्चक ३.	४३१४२
पञ्चचर १. २. ३.	८१५१३
पञ्चति २.	२११७०
” २.	७२१३३
पञ्चद्वार ३.	४३१४२
पञ्चभाग १.	३१७८१
पञ्चरचना २.	३१७१८६
पञ्चशाला २.	४३१२४
पञ्चाङ्ग ३.	२११५५
पञ्चान्त १.	३११७३
पञ्चिका २.	८११३
पञ्चिणी २.	२११५९
पञ्चिन् १.	२३११
पञ्चिपोत १.	२३१४
पञ्चिवन्धन ३.	३११४२
पञ्चिल १.	३११५९
पञ्चिशाला २.	४३१२१
पञ्चमन् ३.	४२१४५
” ३.	४३१५५
” ३.	६३११९
पञ्च १.	३१८२६
” १.	६१५४८
पञ्चक्रीडनक १.	३१४६
पञ्चज ३.	४२१३७
” ३.	८११४०
पञ्चरस १.	३११४७
पञ्चिल १. २. ३.	३११४३
पञ्चैरुह ३.	४२१३९
पञ्चि २.	५११२४
” २.	५११२६
” २.	५११३३
” २.	६१२२२
पञ्चु १. २. ३.	५१११४
पञ्चुल १.	३१७१०४
पञ्चन ३.	३११२७
” ३.	५१२३२
पञ्चम्पच १.	३३१८२
पञ्चम्पचा २.	३३१२१३
पञ्चा २.	५१२३२
” २.	८११४

वैजयन्तीकोषः

पञ्चि २.	११२१८
” २.	२३११८२
पञ्च १.	३११११
पञ्चक ३.	३१७१०
पञ्चकृत्वः (-स्) ४.	८१८६
पञ्चकोल ३.	३१८६३
पञ्चस्वार १. २. ३.	८११५४
पञ्चगूढ १.	४११६
पञ्चचीरोद्धित ३.	३१६५
पञ्चचूड १. २. ३.	३१६१२
पञ्चजन १.	३१५१
पञ्चजनीन १.	३१७२३
( पञ्चजनिनः )	
पञ्चरघ ३.	३१६२०२
पञ्चदशी २.	२११७३
पञ्चभद्र १.	३१७२३
पञ्चम १.	३१११३२
” १. २. ३.	५११२०
पञ्चलक्षण ३.	३१४३८
पञ्चलोह ३.	३१२२८
पञ्चवक्त्र ३.	८१६२२
पञ्चवायु १. २. ३.	३१६२०३
पञ्चशास्त्र १.	४१७३
पञ्चष १. २. ३.	५११२६
पञ्चसुगन्ध ३.	४३११५२
पञ्चहस्त १.	३११५८
पञ्चाङ्गी २.	३१७२१३
पञ्चाङ्गुल १.	३३१६५
पञ्चामृत ३.	४३१९१
पञ्चाशत् ५११२६	
पञ्चास्य १.	३१४१
पञ्चिका २.	३११५९
पञ्चैपु १.	१११२८
पञ्चोषण ३.	३१८८१
पञ्चर ३.	२३१४९
पञ्चिका २.	११२३६
पट १.	३३१५७
” १. ३.	४३१११६
” १. २. ३.	८११३७

[ पणव ]

पटकुटी २.	४३१२५
पटचर १ व.	३११४१
” १.	३११५७
” ३.	४३१२७
पटचोर १.	३११५७
पटल ४.	४३१३७
” १.	७१५५२
पटली २. ३.	५११६
पटवासक १.	४३११५७
पटह १. ३.	३१११३४
” १.	३१११३८
पटी २.	८११३७
पट्ट १.	३३११६५
” १. २. ३.	३१७१४७
” ३.	३१८१२०
” ३.	३१८१२३
” १. २. ३.	४३११४३
” १.	५३१२६
” १. २. ३.	५३१५४
पटच्छद १.	३३११६४
पटुञ्जिका २.	३३११४९
पटोलक १.	३३११६५
पटोली २.	३३११५९
पट्ट १.	३१७१५४
” १.	४३११४०
” १.	६११३४
पट्टन ३.	४३१३
” ३.	४३१३
पटवन्ध १.	३१५६२
पट्टस १.	३१७१६४
पठि १.	३१६२३
पट्वीश १.	३१७८६
पण १.	३१८६९
” १.	३१९६०
” १.	५११३८
” १.	५११३८
” १.	५११३९
” १.	५११४५
” १.	६११३४
पणव १.	३१११३४
” १.	७११५२

[ पणिक ]

पणिक ३.	३१६८८
„ १.	३३३३४
पणित १. २. ३.	५४१०६
पणितव्य १. २. ३.	३८६९
पणाधित १. २. ३.	५४१०६
पण्ड १. २. ३.	३४५९
„ १.	३४३३
पण्डा २.	३६१३४
„ २.	३६१३५
पण्डित १.	३६१३४
पण्य १. २. ३.	३८६९
पण्यभू २.	३३३३५
पण्यदीधी २.	३३३३५
पण्यस्त्री २.	३४२४
पण्यजीव १.	३८७२
पतरा १.	२३३१
पतङ्ग १.	२३३१
„ १.	२३३३३
„ १.	३११४०
„ १.	७११४०
पतङ्गना २.	३८६९
पतङ्गी २.	२३३४८
पतञ्जलि १.	३६१५७
पतव् १.	२३३१
पतत्र ३.	२३३४९
„ ३.	३३३१७
„ ३.	७३३२२
पतत्रि १.	२३३१
पतत्रिन् १.	२३३१
पतद्ग्रह १.	३३३३०
पतन ३.	३३३३६
„ ३.	३६११६
पतयालु १. २. ३.	५४३८
पताक १.	३४३७९
पताका २.	३४३३३
„ २.	३४३९३
पताकिन् १. २. ३.	३४३४५

शब्दानुक्रमिका

पताकिनी २.	३४५५
पति १.	३४३७
„ १.	५४५८
पतिवरा २.	३४३७
पतिघ्नी २.	३६५३
पतित १. २. ३.	३४२१९
पतितोत्पन्ना २.	३६३४९
पतिवर्त्नी २.	३४३१४
पतिव्रता २.	३४३७
पतेर १.	३४३३
पत्तन ३.	३३३४
पत्ति २.	३४५७
„ १.	३४३३९
„ २.	३३३१४९
पत्तिच्छेद १.	३३३१४८
पत्तर १.	३३३१५६
पत्नी २.	३४३३५
पत्नीसन्नहन ३.	३६८९
पत्र १.	३३३१६
„ १.	३३३२०
„ १. २. ३.	८१३३२
पत्रक ३.	३८१२८
„ ३.	३३३१४९
पत्रकूट १.	३८१२८४
पत्रणा २.	३४३१८६
पत्रताली २.	३३३२२४
पत्रपरशु १.	३४३३५
पत्रपाश्या २.	३३३१३६
पत्रफला २.	३४३१६४
पत्रमण्यसिरा २.	३३३३३
पत्ररथ १.	२३३१
पत्ररेखा २.	३३३१४९
पत्रल ३.	३८१३३
पत्रला २.	३३३२२४
पत्रसारक १.	३८१२८
पत्राङ्ग ३.	३८११५
पत्राङ्गुलि २.	३३३१४९
पत्रिणी २.	३४३२८
पत्रिन् १.	२३३१
„ १.	३४३१७९
„ १.	३१३३२

[ पद्यास्त ]

पद्मी २.	८१३३२
पद्मोर्ण १.	३३३३८
„ १.	३३३११८
पथिकृत् १.	१२२५
पथिन् १.	३१३४९
पथ्या २.	३३३१७८
पद्व १.	३४३५६
पद्व ३.	२११७
„ ३.	३४३५६
„ ३.	३३३१८
पद्वर्णिका २.	३३३१३६
पद्वमञ्जना २.	३६३३१
पद्वलमीक १.	३४३३३
पद्वी २.	३६३४९
पदाजि १.	३४३३९
„ १.	७११५४
पदाति १.	३४३३९
पदातिक १.	३४३३९
पदिक १.	३११५१
पद्म १.	३४३३४०
पद्धति २.	५१३२४
„ २.	७२१५
पद्म १.	१२३६०
„ १. ३.	३३३१९५
„ ३.	३४३८२
„ १. ३.	३२३३६
„ ३.	५१३३२
„ ३.	५३३२२
„ १. २. ३.	३५३४८
„ १.	८६३२
पद्मकर्कटी २.	३२३३६
पद्मासनान् १.	३६३२१
पद्मचारिणी २.	३८६९
पद्मनाभ १.	११११५
पद्मपत्र ३.	३८६८८
पद्मबन्धु १.	२११११
„ १.	२११५६
पद्मा २.	३३३१००
„ २.	३८६८१
„ २.	३८६८९
पद्मा ३.	३२३३६

[ पञ्चालया ]

वैजयन्तीकोषः

[ परिचिस ]

पञ्चालया २.	१२३६	परजात १	३१२	पराचल १.	३२३
पञ्चामन ३.	१११७	” १. १. ३.	५४४९	पराचीन १. २. ३.	
” ३.	३६२०५	परतन्त्रक १. २. ३.			५४१९१
पञ्चासनिन् १. २. ३.			५४२८	पराजक १.	३१५६
	३६१३४	परन्तप १. २. ३.	५३६९	पराजित १. २. ३.	३१७२१९
पञ्चिन् १.	४२४३	परपिण्डाद् १. २. ३.			५३६४४
पञ्चोत्तर ३.	३६१९१		५४४९	पराञ्जन १.	५३६४४
पद्य १. २. ३.	३११४७	परभाग १.	५२३	पराधीन १. २. ३.	
” १.	३९११	परभृत १.	२३१६		५४२८
पद्यमात्रिका २.	२४४२	परमन्यु १.	१२५	पराक्ष १. २. ३.	५४४९
पद्या २.	३११४९	परमम् ४.	८८१७	पराभव १.	८११२६
पनस १.	३३३७४	परमात्मन् १.	३६१६१	परामृत १. २. ३.	
पनायित १. २. ३.		परमान्न ३.	४३३७		३३२१९
	५४१०६	परमेश्वर १.	१११४१	परायण ३.	३६१४५
पनित १. २. ३.		परमेष्ठिन् १.	१११८	” ३.	८५१३
	५४१०६	परमेष्ठिनी १.	१११६०	परारि ४.	८८१०
पन्न १. २. ३.	५४१०२	परम्पर १.	३४१५	परारिका २.	३३२०७
” १. २. ३.	५४११५	” १.	४४४६	परार्थोक्ति २.	३१३३७
पन्नग १.	४१३६	” १.	४४४६	परार्थ १. २. ३.	५४६४
पन्नगारि १.	११३८	परम्परा २.	५२३९	परार्थ १. २. ३.	५४२९
पपा २.	४४१३६	परम्पराक २.	३६१९४	परालिनी २.	४३४४४
पय १.	३९१२४	परम्परावाहन ३.		परावसु ३.	३६१४५
पयस् ३.	३६१४५		३३३३७	पराविद्ध १.	१२५७
” ३.	४२२	परवत् १. २. ३.	५४२८	” १.	३५१८
” ३.	६३२०	परशु १.	३६१३१	” १.	४३३६
पयस्या २.	३६१९८	” १.	३९१३५	पराशक १.	३३२३०
पयस्विनी २.	४२२२	परशुभृत् १.	१११५४	पराशर १.	३६१५५
पयोगर्म १.	२२२	परश्वः (-सु) ४.	८८१९	परास ३.	३२३१
पयोण्ड १.	३३३७४	परश्व १.	३९१३५	परासन ३.	३३२१४
पयोधर १.	८१२७	परस्पर १. २. ३.		परासु १. २. ३.	३३२२०
पयोवहा २.	४२२०		५४१२३	परास्कन्दिन् १.	३९१५६
पयोवत ३.	३६१४७	परस्वत् १.	३३११	परि ४.	८३२५
पर १.	३६१६१	परा २.	३३१३४	परिकर १.	८१३३
” १.	३३३१	” २.	३३२२१	परिकर्मन् ३.	४३११२
” ३.	३६१०५	” ४.	८३२६	परिकर्मिन् १.	३९३
” ३.	५१२९	पराक १.	३६१४४	परिकर्ष १.	३३७२
” १. २. ३.	५४११२	पराकार १.	५२२१	परिकल्पना २.	३६१९६
” १. २. ३.	६५४९	पराक्रम १.	३३२०९	परिक्रम १.	५२२८
परकुल १.	४११५४	” १.	८११५०	परिक्रूरा २.	३३१०५
परच्छन्द १. २. ३.		पराग १.	४११२	परिक्रोणा २.	३३२२१
	५४२७	पराच् ४.	५४१९१	परिचिस १. २. ३.	५४१०८



परिचेष १.	८११३०	परिपेलव ३.	३३३२०१	परिव्याण ३.	३३३१०५
परिखा २.	४३३१३	परिप्लव १.	२३३१२	परिव्याध १.	३३३३०
परिगत १. २. ३.	८११७	" १. २. ३.	५३३७६	" १.	३३३७२
परिग्रह १.	२११३०	परिप्लाविन् १.	२३३६	परिघाज् १.	३३३१६०
" १.	४३३५१	परिर्वह १.	४३३१५८	परिहाय १.	४३३१६८
" १.	८११३०	" १.	८११२८	परिशुष्क ३.	४३३८८
परिघ्न १.	३३३१७१	परिवृढ १. २. ३.	५३३५८	परिषद् २.	३३३१३
" १.	७३३४१	परिभव १.	३३३१७१	परिष्कार १.	४३३१३३
परिघातन १.	३३३१७१	परिभाषण ३.	८३३१५	परिष्वङ्ग १.	४३३१६९
परिचय १.	३३३१९५	परिमोक्त १. २. ३.	५३३२५	परिसर १.	४३३१२
" १.	५३३३१	परिमण्डल १.	३३३१९९	परिसर्प १.	५३३२८
परिचर १. २. ३.	३३३१४१	" १. २. ३.	५३३८२	परिसर्पा २.	५३३२८
परिचर्या २.	३३३३८	परिमल १.	५३३५२	परिस्कन्द १.	३३३१२
परिचारक २.	३३३१२	" १.	८१३२८	परिस्कन्ध ३.	४३३१५८
परिचारिका २.	३३३३६	परिमोपिन् १.	३३३५५	परिस्तोम ३.	४३३१६६
परिच्छद १.	३३५८	परियष्ट १.	३३३७४	परिस्पन्द १.	४३३५१
" १.	४३३१५८	परिरम्भ १.	४३३१९४	परिस्नाही २.	४३३३३
परिजन १.	४३३५१	परिवत्सर १.	२३३९०	परिस्तुत २.	३३३४५
परिज्मन् १.	२३३२४	परिवर्जन ३.	३३३१४	परिहार १.	५३३१७
परिणत १.	३३३७८	परिवर्त १.	३३३७१	परीचक १. २. ३.	५३३३०
परिणय १.	३३३५४	" १.	८१३२९	परीच्छा १.	३३३१२२
परिणाम १.	५३३२४	परिवसथ १.	४३३२	परीतत् १. ३.	४३३१३
परिणाय १.	३३३६१	परिवसित १. २. ३.	५३३१०५	" १. ३.	८१३३१
परिणाह १.	५३३५	परिवाच् २.	२३३३५	परीचाप १.	८१३२९
परितः (-स्) ४.	८१३२	परिवाद १.	२३३३२	परीवार १.	३३३१६८
" ४.	८१३३	" १.	३३३१२१	परीवाह १.	४३३३१
परिताप १.	४३३२२	परिषादिनी २.	३३३११७	परीष्ट १.	३३३७४
परित्राण ३.	४३३१०५	परिषापण ३.	३३३४	परीष्टि २.	७३३१५
परित्राणी २.	३३३१०९	परिचार १.	४३३५१	परीसार १.	५३३२८
परिदेवन ३.	२३३२९	" १.	८१३२८	परीहास १.	३३३८८
परिधान ३.	४३३२२१	परिचारक १.	४३३६८	परु १.	३३३२९
परिधि १.	३३३१९	परिवित्त १.	३३३४३	परुका २.	३३३१०३
" १.	७३३४१	परिवित्ति १.	३३३४३	परु ४.	८१३१०
परिधिस्थ १. २. ३.	३३३१४१	परिवी २.	३३३६०	परुल १.	३३३९१
परिपण ३.	३३३८०	परिवृक्ति २.	३३३३१	परुष १. २. ३.	२३३२१
परिपत् १.	३३३२६	परिवेत्त १.	३३३४२	" १.	३३३२२२
परिपत्र ३.	४३३१०३	परिवेष १.	३३३५९	" १.	५३३३
परिपन्थिन् १.	३३३४२	परिवेषक १.	२३३३१	" १. २. ३.	७३३२०
परिपाटी २.	३३३११४	परिवेषण ३.	४३३१००	परुस् १.	३३३११
				परेत १.	३३३३८

परेत ]

परेत १. २. ३.	३।५।५२
परेतराज १.	१।२।३४
परेधवि ४.	८।८।९
परेन्दुका २.	३।५।४९
परैधित १.	३।९।२
" १. २. ३.	५।४।४९
परोक्ष १. २. ३.	५।४।१३३
परोक्षण्ट १.	३।७।१९८
परोक्षणी २.	२।३।४४
पर्कट १.	२।३।३१
" ३.	३।३।२१७
पर्कटिन् १.	३।३।२८
पर्जनी २.	३।३।२१२
पर्जन्य १.	७।१।४२
पर्ण ३.	३।३।१७
" १.	३।३।२९
" १.	८।३।१२
पर्णश १. २. ३.	३।३।१३१
पर्णशवर १.	३।५।४७
पर्णशाला २.	४।३।२६
पर्णादा २.	३।४।६३
पर्णासि १.	३।३।११९
पर्णिका २.	३।३।१२४
पर्वन ३.	२।४।८
पर्पट १.	२।४।१२८
पर्पटी २.	३।२।४१
" २.	३।३।२१३
पर्पण १.	३।३।१०७
पर्परा २.	३।३।२१३
पर्परी २.	४।४।९९
पर्परीक १.	८।१।२५
पर्यङ्क १.	३।३।२१३
" १.	४।३।१६५
" १.	७।१।५२
पर्यटन ३.	५।२।११
पर्युत्तुयोग १.	२।४।३७
पर्यन्तपर्वत १	३।१।७
पर्यन्तम् २.	४।३।१२
पर्यव १.	३।३।११४

वजयन्तीकोपः

पर्यवस्था २.	५।२।३०
पर्यवस्थात् १.	३।७।४२
पर्यस्ति २.	३।३।१५०
पर्याण ३.	३।७।११४
पर्याधात् १.	३।३।७४
पर्यासि ३.	४।३।१०५
" १. २. ३.	७।५।५३
पर्यासिम् ४.	४।३।१०४
पर्याय १.	३।३।११३
" १.	७।१।५५
पर्याहार १.	३।७।४५
पर्याहित १.	३।३।७४
पर्युदञ्चन ३.	३।८।४
पर्येषणा २.	३।३।१२१
पर्वत १.	३।२।१
पर्वन् ३.	२।१।७३
" ३.	३।३।११
" ३.	३।३।६२
" ३.	३।३।१९
" १. ३.	८।९।३१
पर्यु १. ३.	४।४।११५
पल ३.	४।४।१०६
" ३.	५।१।४५
" ३.	५।१।४६
" ३.	५।१।५१
पलगण्ड १.	३।९।१४
पलगण्डक १.	३।५।४८
पलङ्क १.	३।८।११२
पलङ्कषा २.	३।३।१४१
पलतेजस् ३.	४।४।१०७
पल्ल १.	३।३।६९
" ३.	४।४।१०६
" ३.	७।३।२१
पल्लव ३.	५।३।६०
पल्लवीनक १.	५।३।५०
पलाण्ड १.	३।३।२०५
" १.	३।३।२०७
पलाण्डक १.	३।३।१५३
पलायन ३.	३।७।२१०
पलाय १. ३.	३।८।६४

[ पवित्र

पलाश ३.	३।३।१६
" १.	३।३।२९
" १.	३।३।२०३
पलाशिका २.	३।३।१९५
पलाशिन् १.	७।१।५४
पलिकिनी २.	३।४।६३
पलिकिनी २.	३।४।४६
" २.	४।४।२१
पलित ३.	३।८।७९
" ३.	५।४।१४४
" १. ३.	७।५।५२
पलिन १.	३।५।१९
पलिपादक ३.	३।७।७५
पल्लव १.	५।३।४२
पलोद्भव ३.	४।४।१०७
पल्यङ्क १.	४।३।१६५
पल्ययन ३.	३।७।११४
" १.	४।४।४६
पल्ल १.	३।५।१४
पल्लव १. ३.	३।३।१७
" १.	४।४।३९
" १. ३.	७।५।५८
पल्लवाङ्कुर १.	३।३।१५
पल्ली २.	४।१।३०
" २.	४।३।२७
" २.	३।२।२३
पव १.	३।८।४६
( पल )	
" १.	५।२।३१
पवन १.	१।२।४९
" १.	१।२।५३
" ३.	४।३।६६
" ३.	५।२।३१
पवमान १.	१।२।२४
" १.	१।२।४८
" १.	८।१।२७
पवि १.	१।२।१३
" १.	३।१।३३
पवित्र ३.	३।२।२२
" ३.	३।३।२०
" १.	३।८।५२

पवित्र ३.	३१२४०	पाकशासन १.	११२३	पाण्ड्य १ ब.	२११३३
„ १. २. ३.	५११६५	पाकशुक्ला २.	३१२१३	पाण्डु १.	३१३१२२
„ १. २. ३.	७१५५८	पाकु २.	८१९३	„ १.	५३११२
पशु १.	३११३०	पाक्य ३.	३१८१२२	पाण्डुक १.	३१५२७
„ १.	३११६२	„ ३.	३१८१२४	पाण्डुकम्बलिन् १. २. ३.	३१७१२९
„ १.	३११७२	पागल १.	३१५१५	पाण्डुभूम १. २. ३.	३११४५
„ १.	३१६१८४	पाचन १.	५३१२६	पाण्डुल १.	५३११४
„ १.	३१६११२	पाज १.	४३१७६	बाण्डुवर्णक १.	४११३७
„ ४.	८१८२१	पाञ्चजन्य १.	११११७	पाण्डुसोपाक १.	३१५४३
पशुगोयुग १.	५१११८	पाञ्चमिक १.	५११५९	„ १.	३१५१०६
पशुपति १.	१११३८	पाञ्चालिका २	३१९१४	पाण्ड्य १ ब.	३११३३
„ १.	८११२६	पाट ४.	८१८१२	पात् २.	४१५५४
पशुबन्ध १.	३१६१८४	पाटल १.	५३११७	पातक ३.	३१६१६८
पशुसंस्कार १.	३१६१९३	„ १. २. ३.	७१५५६	पातन ३.	३१७१७४
पश्चात्ताप १.	३१६१८५	पाटला १. २. ३.	३३३१३	पाताल ३.	४१११
पश्चात्सुन्दर १.	३३३१५७	पाटलि १. २.	३३३१०	„ ३.	७१४२२
पश्चिम १. २. ३.	५११७७	पाटलिङ्गिका २.	३१८१४९	„ ३.	८३११८
पश्चिमाङ्ग ३.	४११६९	पाटली २.	३१६१६२	पातालमूलिक १. २. ३.	३१६१२९
पश्यतोहर १.	३१९५७	पाटव ३.	४१११४२	पाताली २.	७१११७
पद्मौही २.	३११४७	पादूर १.	२११७०	पातिक १.	३१७१४०
पांसु १.	३१८१५	पाठक १.	३३३१२३	पालुक १. २. ३.	५१३१८
पांसुचन्दन १.	१११३८	पाठा २.	३३३१३१	पाल्म १.	२११८८
पांसुज ३.	३१८१२३	पाठीन १.	४११४२	पान्न ३.	२३३२६
पांसुलवण ३.	३१८१२५	पाणि १.	४११७३	„ ३.	३१६१४६
पांसुला २.	४१११०	„ १.	५११४९	„ ३.	३१९१६८
पाक १.	३३३१८३	„ १.	८१६१९	„ ३.	४१२३२
„ १.	३१८१५	पाणिक १.	५११३८	„ ३.	५११५५
„ ३.	५१२४१	पाणिगृहीती २.	४११३५	„ ३.	६३३२१
„ १.	६११३३	पाणिग्रह १.	३१६१५५	„ १. २. ३.	८१९३८
„ १.	८१९१४	पाणिघ १.	३१७११	पाथस् ३.	४१२११
पाककृष्ण १.	३३३१८३	पाणिनि १.	३३३१५४	„ ३.	६३३२०
पाककृष्णफल १.	३३३१८३	पाणिन्युपज्ञ ३.	३१९१२१	पाथि १.	२१११३
पाकपुटी २.	४३३२३	पाणिपान्न १. २. ३.	३३३१३२	पाथिस ३.	६३३२१
पाकफल १.	३३३१८३	पाणिमुक्त ३.	३१७१९५	पाथेय ३.	३१९१७
पाकफलकृष्ण १.	३३३१८३	पाणिमूल ३.	४११७३	पाथोचक्रा २.	३३३२१९
पाकमण्डल ३.	३१९१२७	पाणिग्रह १.	८१५७६	पाव १.	२१११६
पाकयज्ञ १.	३३३१८३	पाणिवाद १.	३१९१७१	„ १.	३१२१७
पाक्यशिक १.	११२१२७	पाणिश १.	३१५२०	„ १.	४११५६
पाकल १.	३१७१९१	पाण्डर १.	५३११०		
„ ३.	३१८१९९	„ १.	५३११२		
पाकवर्तन ३.	५१२४१				

पाद ]

वैजयन्तीकोषः

[ गालघ्न

पाद १.	५१२७	पाप्मन् १.	३१६१७८	पारि २.	६१२२४
पाददण्ड १.	३१७१८३	पाप्मन् १.	३१७१२३	पारिकर्मिक १. २. ३.	
पादप १.	७११४५	पाप्मन् १. २. ३.			३१७१९
पादपच्छाय १. २. ३.			३१७१४५	पारिकाङ्क्षिक १. २. ३.	
	८११३४	पामर १.	३१५५०		३१६१२६
पादपाश १.	३१७११२	" १. २. ३.	५१४२२	पारिजातक १.	१३११४
पादपुटी २.	३१७११५	" १. २. ३.	७१४२०	" १.	३१३१४४
पादप्रसार १.	३१६२१७	पामा २.	३१७१२३	पारितथ्या २.	३१६१३६
पादफली २.	३१७११५	पामारि १.	३१२११४	पारिन् १.	३११५४
पादरक्षणी २.	३१७१५५	पायस ३.	३१८१०९	पारिपन्थिक १.	३१९५६
पादरक्षिणी २.	३१३१६२	" ३.	३१३७७	पारिप्रार्थिवक १.	३१९५७
पादवाहिक १.	३१११८	पायु १.	३१४६०	पारिप्लव १. २. ३.	५१४७९
पादस्फोट १.	३१३१२२	पाय्य १.	५११३४	पारिभद्र १.	३१३५४
( पादः, स्फोटः )		पार १.	३१२३२	" १.	३१६७१
पादात १.	३१७१३९	पारत १.	३१२४४	पारिभाव्य ३.	३१८९९
" ३.	५११११	पारद १ व.	३११२८	पारियाणिक १. २. ३.	
पादायुध १.	२३११४	पारधेनुक १.	३१५२२		३१७१२८
पादावर्त १.	३१२२१	" १.	३१५८४	पारियात्रक १.	३१२३३
पादिक ३.	३१७१४०	पाररक्षिक १.	३१६१६०	पारिषद १.	१११५१
" १.	५११३८	पारशव १.	३१२३४	परिहार्य ३.	३१७१४४
" ३.	५११५२	" १.	३१५४	पारिहाव्य १.	५१३५०
पादिका २.	३१३३९	" १.	३१५६८	पारी २.	३१३५९
( पालिका )		" १.	३१५७३	पारीन्द्र १.	३१३११
पादिकाशीर्ष ३.	३१३४०	" १.	३१५७६	पारे ४.	८१८२१
( पालिकाशीर्ष )		" १.	८११३२	पार्थिव १.	३१७११
पादुका २.	३१७५०	पारम्भधिक १. २. ३.		पार्थिवेन्द्र १.	१११२२
" २.	३१३१६२		३१७१४४	पार्वण ३.	३१६८३
पादू २.	६१२२४	पारसीक १.	३१७१४४	पार्वत १.	३१३७५
पादूक्य १.	३१९१३	" १.	३१७१४४	पार्वती २.	१११५८
पादोपवेश १.	३१६२१२	पारसीककुल ३.	३१११९	" २.	३१२१६
पान १.	३१६२०४	पारायण १.	३१६१४५	पार्श्व १. ३.	३१४६९
" ३.	३१३१०	" १.	८१३१९	" ३.	५१११४
पानगोष्ठिका २.	३१९५०	पारावत १.	२३११४	" १. ३.	६१५५१
पानीय ३.	३१२२	" १.	३१५१०	पार्श्वस्थ १.	३१९६९
पानीयशालिकार. ३१३२३		" १. २. ३.		पार्श्वोदरप्रिय १.	३११४६
पानीयसम्भव ३.			८१५१५	पार्णि १.	३१७७९
	३१८१२२	पारावतपदी २.	३१३१४०	" १. २.	६१५४०
पाप १.	३१३१७७	पारावर १.	३१५९४	पार्णिग्राह १.	३१७४०
" १.	३१६१६८	पारावार १.	३१२१२	" १. २. ३.	३१७१४१
" १. २. ३.	६१५५०	पाराक्षरिन् १.	३१६१६०	पालघ्न १.	३१३२३४
पापवेली २.	३१३१३०	पाराशर्य १.	१११३२	( बालघ्न )	



[ पालन ]

पालन १.	३११४६
पालाश १.	५३१२२
पालि १.	३१६५०
" २.	३१८२६
" २.	३१४९३
" २.	३१२१२
पालिकाष्ठ ३.	३३११०
पाली २.	३१६४९
" २.	३१९१२६
पालुखञ्जन १.	३१५१०
पालुपी २.	३१४३५
पालुक १.	३१९५
पाल्लवा २.	८१९६
पावक १.	११२१५
" १.	३३३८६
" १.	३१६९२
पावन १.	३१८१११
पावनक १.	३१८१३०
पावनी २.	३१६१५
पाश ३.	३१९३०
" १.	३११३७
पाशक १.	३१९६०
पाशबन्धन २.	३१४६१
( पादबन्धन )	
पाशिन् १.	११२४५
पाशुपत १.	३३११९४
पाशुपाल्य ३.	३१७४
पाशुबन्धिक १.	११२२५
पाश्चात्य १ ब.	३११३
" १. २. ३.	५१४७६
पाश्या २.	५१११४
पाषण्ड १.	३१६२३८
" १.	३१६२३९
पाषाण १.	३१२८
पाषाणदारक १.	३१९२२
पाषाणपुष्प १.	३१८९६
पासि १.	२१११४
पिक १.	२३१२६
पिङ्ग १.	३१११४
" १.	५३११८
पिङ्गल ३.	३३१२०२

शब्दालुक्रमणिका

पिङ्गल १.	३११२७
" १.	५३११८
पिङ्गलकेशाक्षी २.	
" १.	३१६५२
पिङ्गला १.	२११९
" २.	२३१२१
पिङ्गाण १.	५३११३
पिचण्ड १.	७११५७
पिचण्डिल १. २. ३.	
" १.	५१४७
पिचिण्ड १.	३३१८९
पिचिण्डिका २.	३१९५८
पिचु १.	३१९९
" १.	५११४९
पिचुमन्द १.	३३३७५
पिचुल १.	३३१५०
" १.	३३३७६
पिचूल ३.	५११४७
पिच्छट ३.	३२१३०
पिच्छनद १.	३३१२०६
पिच्छन्दका २.	३३३३१
पिच्छा २.	३३३८०
पिच्छित १. २. ३.	
" १.	५१४८३
पिच्छिल १. २. ३.	
" १.	५३३४
पिच्छिला २.	३३३९२
पिच्छीला २.	३१९१२६
पिच्छ ३.	२३३३९
" ३.	३३३२१
पिञ्ज १.	५३११३
पिञ्जा २.	३३३२११
पिञ्जप १.	५३३२४
पिट १.	३३३६४
पिटक १.	३३३६३
" १.	३३३६४
" १. २. ३.	३३३१२३
" १. २. ३.	८१९३७
पिटका २.	३३३१२३
" २.	८१९३७
पिठर १.	३३३५५

[ पितृव्य ]

पिण्ड १.	३२११५
" १.	३३११०१
" १.	३११३१
पिण्डक १.	१३३४
" १.	३११११०
" १.	३३३४५
पिण्डफला २.	३३३१६७
पिण्डा २.	३३३२११
पिण्डारक १.	३३३७८
" १.	३३३४४
पिण्डि १.	३३३७०
" १.	३११३४
पिण्डिका २.	३३३५८
" २.	७२११४
पिण्डित १. २. ३.	७३११९
पिण्डिल १. २. ३.	७३११७
पिण्डीक १.	३३३७८
पिण्डीतक १.	३३३४९
पिण्डीशूर १. २. ३.	
" १.	५३३७०
पिण्डूष १.	३३३९२
पिण्या २.	३३३१४०
पिण्याक १.	३१९२७
" १.	७११४६
पितामह १.	३३३२९
" १.	८११२८
पितृ १.	३३३२९
" १.	३३३४७
" १ ब.	३३३४९
पितृकार्य ३.	३३३६६
पितृज्येष्ठ १.	३३३३२
पितृदान ३.	३३३६४
पितृनख १.	३३३५९
पितृपति १.	१२३३३
पितृपितृ १.	३३३२९
पितृप्रपा २.	३३३६७
पितृप्रसू २.	२३३६९
पितृभोजन ३.	३३३६४
पितृयाण १.	२३३४६
पितृवन ३.	३३३४८
पितृव्य १.	३३३३१

पितृष्वक्षीय ]

पितृष्वक्षीय १.	४११४२
पित्त ३.	४११२१
पित्तल ३.	३१२२६
पित्या २.	२११७२
पित्तद १.	२३३१
पिधान ३.	२११६४
” ३.	४३३५५
पित्त १. २. ३.	३१७१४२
पिनाक १.	१११५०
” १. ३.	७१५५७
पिनाकिन् १.	१११३९
पिपतिषत् १.	२३३१
पिपासा २.	३१६१८१
पिपासित १. २. ३.	५११३७
पिपासु १. २. ३.	५११३७
पिपीलिका २.	४११३६
पिप्पल ३.	३३३२०
” १.	३३३२७
” ३.	४११६८
पिप्पलक १.	३१११२
पिप्पली २.	३१७७३
” ”	३१८७६
पिप्पलीमूल ३.	३१८९१
पिप्पिका २.	२३३२४
पिप्पु १.	४११९७
पिपाट १.	३१७७३
पिपल १.	६११५
पिपाङ्ग १.	५३३१८
पिपाच १.	१३३४
” १.	७११५७
पिशित ३.	४११०७
पिशुन १. २. ३.	५११२५
पिष्ट १.	५११५५
पिष्टक १.	४३३७२
पिष्टपचन ३.	४३३५७
पिष्टपिण्डका २.	४३३७२
पिष्टात १.	४३३१५७
पीठ ३.	४११६४
पीठबन्धन १.	४११८०
पीठमर्द १.	३११७०

वैजयन्तीकोपः

पीठर ३.	३३३२००
पीठीव ३.	४११६०
पीडन ३.	३१७२०७
पीडा २.	३१६१८७
” २.	६१२२५
पीडित १. २. ३.	५१११५
पीत १.	३२३१४
” १.	५३३११
पीतकङ्कु २	३१८५६
पीतघोषा २.	३३३१६२
पीतचन्दन ३.	३१८११३
पीततण्डुला २.	३१८५५
पीतदारु ३.	३३३७१
” १.	३३३२१२
” ३.	३१८११४
पीतघातु १.	३२३११
पीतधूमल १.	५३३२०
पीतन ३.	३२३१४
” १.	३३३३१
” ३.	३१८११७
पीतपुष्प १.	३३३१७०
पीतमुण्ड १.	२३३१९
पीतरक्त १.	५३३१७
पीतरसा १.	३३३१३९
पीतल ३.	५३३११
पीतलिका २.	३१७७३
पीतलोह ३.	३२३२५
पीतलोहित १.	५३३२०
पीतश्यामल १.	५३३२०
पीतसागर १.	३३३१५१
पीतशाल १.	३३३३९
पीतसितासित १.	५३३१२
पीतहरित १.	५३३२१
पीता २.	३३३२११
पीताम्बर ३.	१११११
पीताम्लान १.	३३३१८८
पीति १.	३१७९१
” १. २.	६१५५१
पीतु १.	२३३३
पीथ १.	१२३१९

[ पुञ्जील

पीथ ३.	३१८१३८
” ३.	३१८१४५
” ३.	६३३२२
पीन १. २. ३.	५११६
पीनकोशी २.	३१८१५
पीनस १.	४१११४
” १.	४११२१
पीनस्कन्ध १.	३११५
पीनस्तनी २.	३११४९
पीनाह १.	४२३८
पीनोष्णी २.	३११४९
पीयु १.	६१३३२
पीयूष ३.	३१८१४६
” ३.	७३३२३
पीलु १.	३३३४५
” १.	६१३३२
पीलुक १.	२३३४
पीलुकुण १.	८१११४
पीलुनी २.	३३३११४
पीलुपर्णिका २.	३३३११४
पीलुपर्णी २.	३३३१४७
पीवन् १. २. ३.	५११६
पीवर १.	३३३३९
” १.	५११६
पीवरी २	३३३१४२
पुञ्जली २.	४११९
पुंस् १.	४११२
” १.	८११६१
पुंसवन ३.	३३३३
” ३.	३१८१४५
पुंहुल १.	४११२५
पुङ्ग १.	३१७१८५
” १.	६१३३३
पुङ्गर्भः १.	४१३३९
पुङ्गव १.	७११५७
पुङ्गाह १.	३१७१००
पुच्छ १. ३.	३१७७४
पुच्छभाग १.	३१७८१
पुञ्ज १.	५१३३
पुञ्जिका २.	२२३७
पुञ्जील १.	३३३२३

पुट २.	३५२८	पुनरुद्धा २.	३६६४५	पुरीप ३.	३४१११८
" १. २. ३.	३९९३३	पुनर्नव १.	३४१७६	पुरु १. २. ३.	५४८५
" १.	३३११	पुनर्नवा २.	३३११४६	पुरुप १.	१११८
" १.	३३१६४	पुनर्नव १.	३४१७६	" १.	३४१२
" १. २. ३.	८९९३७	पुनर्भू २.	३६६४५	" १.	७११४६
पुटकिनी २.	३२१४४	पुनर्भूज १.	३४१४५	पुरुषव्याघ्र १.	२३३३०
पुटमेव १.	३२३३०	पुनर्युवन् १.	२११२५	पुरुषाव १.	१२१४१
पुटमेवज ३.	३३३३	पुनर्वसु १.	२११३९	पुरुषोत्तम १.	११११२
पुटानिल १.	१२१५३	" १.	३६६१५८	पुरुह १. २. ३.	५४८५
पुटी २.	३९९३३	पुज्जाग १.	३३३७०	प्रकृत १.	१२२२
" २.	८९९३७	पुष्पिका २.	३४१६३	पुरोग १. २. ३.	३३७१४५
पुण्ड्र १.	६११३२	पुर् २.	३६६१६३	पुरोगम १. २. ३.	३३७१४६
पुण्ड्रक १.	५३११०	" २.	३३११	पुरोगामिन् १.	३३७१४७
पुण्डरीक १.	२११८	" २.	८२११६	" १. २. ३.	३३७१४६
" ३.	३३३१२३	पुर १.	३३३५४	पुरोद्गाथ १.	३६६९९
" १.	३१११५	" ३.	३३३२३४	पुरोधस १.	३३७२४
" १.	३१११९	" १.	३५२७	पुरोनुवाक्या २.	३६६११२
" ३.	३११२३	" ३. २.	३३११	पुरोभागिन् १. २. ३.	५४३३
" ३.	३२१४०	पुरः(-स्) ४.	८८१११	पुरोवचस् ३.	२११४१
" १.	८५११६	पुरक्षक १ व.	३११३०	पुरोवात १.	१२१५४
पुण्डरीकाक्ष १.	११११०	पुरतः(-स्) ४.	८८१११	पुरोहित १.	३३७२४
पुण्ड्र १ व.	३११३०	पुरद्वार ३.	३३११५	पुरोहिन् १.	३३३३४
" १.	३३३२२६	पुरन्दर १.	१२१२	पुलक १.	३२१४१
पुण्ड्रलक्षण २.	३११३०	पुरन्ध्री २.	३४१२१	" १.	३३७१४३
पुण्ड्रा २.	३५१४३	पुरमध १.	३६६१०८	" १.	७११४७
पुण्य ३.	३६६१६८	पुररक्षिन् १.	३३७१८	पुलकिन् १.	३३३६०
" १. २. ३.	६५१५०	पुरस्कृत १. २. ३.	८११९	पुलाक १.	७११४७
पुण्यगान्धिक ३.	३२१४०	पुरस्तात् ४.	८७३३३	पुलाकिन् १.	३३३५
पुण्यजन १.	८११२६	पुरस्सर १. २. ३.	३३७१४५	पुलिन ३.	३२३३३
पुण्यजनेश्वर	१२१५८	पुरा ४.	८७२३	पुलिन्द १.	३५१४७
पुण्याह ३.	२११६७	पुराज १.	१२१८	" १.	३५१४७
" ३.	८९९२२	पुराण ३.	३३१३८	" १.	३५१८३
पुत्तिका २.	२३१४८	" ३.	३३३२९	पुलिन्दक १.	३२११६
पुत्र १.	३४१३९	" १. २. ३.	५४१८७	पुलोमजा २.	१२१११
" १.	३५१४८	पुराणान्त १.	१२३३५	पुलोमशत्रु १.	१२३३
" १.	८९९३३	पुरातन १. २. ३.	५४१८७	पुक्कस १.	३५१४८
पुत्रजीव १.	३३३७९	पुरावृत्त ३.	२१३३८	" १.	३५१८२
पुत्रल १.	८११४३	पुरी २.	३२१७	" १.	३५१८५
पुनःपुनः (२) ४.	८८१११	" २.	३३११	" १.	३५१८८
पुनर् ४.	८७२४	पुरीष ३.	३६६२४		

[ पुष्कस ]

पुष्कस १.	३।५।८९
" १.	३।५।९१
पुष १.	४।४।६१
पुषित १. २. ३.	५।४।११४
पुष्कर १.	३।८।८८
" ३.	७।३।२४
पुष्करसार १.	४।१।१६
पुष्कराह्वय १.	२।३।३३
पुष्करिणी २.	४।२।५
पुष्कल १.	३।६।१५
" ३.	३।६।१६
" १.	४।३।१२
" १. २. ३.	७।४।१९
पुष्ट १. २. ३.	५।४।११४
पुष्टि २.	१।१।१६
पुष्टिवर्धन १.	२।३।२८
पुष्प १.	३।३।१८
" ३.	४।४।१६
" ३.	८।९।१५
पुष्पक १. ३.	३।५।५४
" १.	४।१।१८
पुष्पकाल १.	२।१।८८
पुष्पकेतु १.	३।२।४३
पुष्पदन्त १.	२।१।८
पुष्पधन्वन् १.	१।१।२८
पुष्पफल १.	३।३।३२
पुष्पफलान् १.	३।३।६
पुष्परजस् ३.	३।८।११७
पुष्पलोलुप १.	२।३।४२
पुष्पव १.	३।५।५४
" १.	३।५।१०१
पुष्पवत् १.	२।१।२९
पुष्पवती २.	४।४।१५
पुष्पवाटी २.	३।३।४
पुष्पवीर्या २.	३।३।१२८
(पुष्पी, वीर्या)	
पुष्पसारण १.	२।१।८७
पुष्पाढ्य १. २. ३.	३।६।१२८
पुष्पाभिकीर्णक १.	४।१।११

वैजयन्तीकोषः

पुष्पाभिकीर्णक १.	४।१।१६
पुष्पिका २.	३।९।१२७
पुष्पित १. २. ३.	३।३।८
पुष्य १.	२।१।३९
" १.	२।१।९१
पुष्यफल १.	३।३।१७०
पुष्यरथ १.	३।७।१२६
पुष्यल १.	३।७।८५
पुस्त ३.	३।९।१६
पुस्तक ३.	४।३।१०९
पू २.	३।६।१६३
पूरा १.	३।३।२१७
" १.	५।१।१
पूरातिथ १. २. ३.	५।१।१९
पूरापट्ट १.	३।३।२२२
पूरापुष्पिका २.	३।६।५९
पूरावपनी २.	४।३।१०८
पूजा २.	३।६।३९
पूजित १. २. ३.	५।४।११३
पूज्य १. २. ३.	६।५।५१
पूज्यपाद १. २. ३.	८।९।४६
पूत १. २. ३.	३।८।६७
" १. २. ३.	५।४।६५
पूतना २.	२।१।१८
पूति १. २.	३।५।३५
" १.	५।३।५७
पूतिक १.	३।३।६२
पूतिकरज १.	३।३।६२
पूतिकाष्ठ ३.	३।३।७१
पूतिकाष्ठक ३.	३।३।७४
पूतिपुष्पी २.	३।३।३४
पूतिकली २.	३।३।१०८
पूत्यण्ड १.	२।३।४८
पूष १.	४।३।७२
पूष ३.	४।४।११८
पूर १.	४।२।३०
पूरक १.	३।३।३३
" १.	३।८।४४

[ पृतना ]

पूरक १.	३।९।६४
पूरणा २.	३।३।१४५
पूरणी २.	३।३।९०
" २.	३।३।१४७
पूरित १. २. ३.	५।४।८६
पूरी २.	३।३।१४५
" २.	३।८।१२५
पूरुष १.	४।४।३
पूरुष ३.	३।७।१९१
" १. २. ३.	५।४।८६
" १. २. ३.	५।४।८६
पूरुणकलश १. ३.	३।६।८
पूरुणकुम्भ १.	४।३।६१
पूरुणकूट १.	२।१।३२
पूरुणकूटक १.	२।१।३२
पूरुणपात्र ३.	३।६।६१
पूरुणपात्रक ३.	३।६।१७
पूरुणमासी २.	२।१।७२
पूरुणा २.	२।१।७२
पूरुणनिक ३.	३।६।६१
पूरुणि २.	४।२।१३
पूरुणिका २.	२।१।७२
पूरुणिमा ३.	२।१।७२
पूरुत ३.	३।६।११५
पूरुव १. २. ३.	५।४।१४०
" १. २. ३.	६।५।४७
पूरुवगन्धिक १.	३।१।८
पूरुवज १.	४।४।३१
" १. २. ३.	५।४।४
पूरुवविकपाल १.	१।२।२
पूरुवदेव १.	१।३।१०
पूरुवरङ्ग १.	३।९।३९
पूरुवह्नि १.	२।१।६४
पूरुवैयुः (-स्) ४.	८।७।३२
" ४.	८।९।८
पूल १. ३.	३।८।६४
पूलक १.	४।४।११५
पूषन् १.	२।१।१०
पूष्य ३.	३।८।७३
पूच्छा २.	२।४।३७
पृतना २.	३।७।५५



[ वृत्तना ]

शब्दानुक्रमणिका

[ पौष ]

वृत्तना २.	३।७।५८	वृष्टचक्र १.	४।१।४६	पोटा २.	४।४।३
वृत्तनासाह १.	१।२।२	वृष्टमध्यास्थि ३.	४।४।९१	पोत १.	३।७।६६
वृथक् ४.	८।८।४	वृष्टमांसादन ३.	५।२।८	” १.	४।३।४०
वृथक्क्रिया २.	२।४।४०	वृष्टवाह्य १. २. ३.	३।४।५६	” १.	४।४।३३५
वृथक्पर्णी २.	३।३।३३६	वृष्टस्थ १. २. ३.	३।७।१४१	” १.	६।१।३३
वृथग्जन १.	८।१।२६	वृष्ट्य १. २. ३.	३।४।५६	पोतकी २.	२।३।१९
वृथक् १ ब.	३।१।४०	” ३.	५।१।१४	पोतघण्डि १.	४।२।१८
वृथिर्वा २.	३।१।३	वेचक १.	२।३।२२	पोतवाह १.	४।२।१८
वृथिवीपत्ति १.	८।१।५३	” १.	७।१।५३	पोताधान ३.	४।१।४५
वृथु १.	३।४।४०	वेचिका २.	२।३।३१	पोत्र ३.	६।३।२२
” २.	३।८।८५	पेट १. २. ३.	८।९।३७	पोत्रिन् १.	३।४।६
” २.	३।८।१३२	पेटक १.	४।३।६३	” १.	३।४।९
” १. २. ३.	५।४।८०	” ३.	५।१।३	पोथ १.	४।२।१५
वृथुक १.	४।३।६८	पेटा २.	४।३।६३	पोलिक १.	४।३।७१
” १.	७।१।५८	पेटी २.	८।९।३७	पोलिन्द १.	४।२।१६
वृथुचित्र १.	३।६।४१	पेत्व १.	३।४।६४	पोषी २ ब.	२।१।१२
वृथुच्छद १.	३।३।७६	पेय ३.	४।३।९१	पोहित्य ३.	४।२।१५
वृथुरोमन् १.	४।१।४१	पेरा २.	३।१।४	पौश्चलेय १.	४।४।४३
वृथुल १. २. ३.	५।४।८०	पेराल १.	५।३।२०	पौस्न ३.	६।६।३
वृथुशालिका २.	३।८।८५	पेरु १.	२।१।१३	” १. २. ३.	५।४।११८
वृथुसूय १.	३।८।४०	” १.	५।३।१२	पौष्ट्र १.	३।५।५०
वृथुहस्त १.	३।७।५१	पेलच १.	३।५।८५	पौतव १.	५।१।६४
वृथ्विका २.	३।८।८५	” ३.	३।८।७९	पौत्तिक ३.	३।८।१३५
” २.	३।८।१३२	” १. २. ३.	५।४।१३६	पौत्र १.	४।४।४५
वृथ्वी २.	३।१।३	पेशल १. २. ३.	५।४।५४	पौनर्भव १.	४।३।४५
” २.	३।८।८५	” १. २. ३.	५।४।१३७	पौपिक १. २. ३.	४।३।९२
वृथ्वीका २.	३।८।८७	” १. २. ३.	७।४।१९	पौर १.	१।१।२२
वृथाकु १.	७।१।५८	पेक्षि २.	४।३।८९	पौरस्थ १. २. ३.	५।४।६
वृथि १. २. ३.	४।५।५	” २.	४।४।१२	पौरुष १. २. ३.	४।४।८३
वृथिपर्णी २.	३।३।३३६	पेक्षी १.	२।३।५०	” ३.	४।४।१११
वृथत् २. ३.	२।२।८	पैकराज १.	४।१।१७	” ३.	७।५।५८
वृथत १.	२।२।८	पैठर १. २. ३.	४।३।९४	पोरुपेय १. २. ३.	८।४।१०
” १.	३।४।१३	पैण्डूष १. ३.	४।४।९३	पौरैन्द्र १.	२।३।३२
” १.	३।६।९९	पैतृत्वसेय १.	४।४।४२	पौरोगव १.	३।७।२१
वृथता २.	३।६।४७	पैष्टिकी २.	३।९।५०	पौरौहित ३.	३।६।२७
वृथत्क १.	३।७।१७९	पोगण्ड १. २. ३.	५।४।११	पौर्णमासी २.	२।३।७२
वृथदंशक १.	३।४।७१	पोटकी २.	४।३।२४	पौर्वापर्य ३.	३।६।११३
वृथदम्ब १.	१।२।५०	पोटगल १.	४।१।१६	पौलस्थ १.	१।२।५६
वृथदाज्य ३.	३।६।९९	” १.	८।१।२७	” १.	७।५।५९
वृष्ट ३.	४।४।६९	पोटना २.	२।४।२६	पौलोमी २.	१।२।११
वृष्टग्रन्थि १.	४।४।१३३	पोटरूप १.	३।४।१५	पौष १.	२।१।८२

पौषी ]

पौषी २.	२११७४
पौष्टिक ३.	३१६११९
पौष्पक ३.	३१२४३
पौष्यक ३.	३१२४१
सा २.	४१४१०१
प्याट् ४.	८१८१२
प्र ४.	८१७१६
प्रकट १.	३१९१३७
” १. २. ३.	५१४१३४
प्रकम्पन १.	११२१५०
प्रकर ३.	३१८१०७
” १.	५११११
प्रकरण ३.	३१९१००
प्रकाण्ड ३.	८१९१४२
प्रकाण्डकम् ३.	३१३११२
प्रकामम् ४.	४१३१०४
प्रकार १.	५१२१२३
” १. २. ३.	५१४१२२
” १.	७१११५६
प्रकाश १.	११२१३१
” १. २. ३.	५१३१३४
” १. २. ३.	७१५१५४
प्रकीर्णक १.	३१७१९०
” ३.	४१३१५९
प्रकीर्य १.	३१३१६२
प्रकुञ्च ३.	५१११५१
प्रकृति २.	३१६१६१
” २.	३१७१३
” २.	५१२१२
” २.	७१२११२
प्रकोटी २.	३१३११३
प्रकोष्ठ १.	४१४१७२
” १.	७१११५२
प्रक्रम १.	५१२११५
प्रक्रम १.	३१८१६९
प्रक्रिया २.	७१२११४
प्रकण १.	२१४११२
प्रकण १.	२१४११२
प्रचर १.	३१७११५
प्रचराङ्गी २.	३१४१४४
प्रचवेलन १.	३१७११८०

वैजयन्तीकोषः

प्रखर १. ३.	३१७११५
प्रख्य १. २. ३.	५१४१२२
प्रयणिका २.	४१३१३३
( प्रगणिता )	
प्रगण्ड १.	४१४१०२
प्रगतजालुक १. २. ३.	५१४११०
प्रगल्भ १. २. ३.	५१४११७
प्रगाढ १. २. ३.	७१४१२०
प्रगुण १. २. ३.	५१४१२४
प्रगो ४.	८१८११०
प्रग्रह १.	२१११४८
” १.	३१९१५७
” १.	७१११४९
प्रग्राह १.	७१११४९
प्रग्रीव १. ३.	७१५१५६
प्रघण १.	४१३१४५
” १.	७१११५२
प्रघाण १.	३१३११५
” १.	४१३१४५
प्रघात १.	३१७१२०५
प्रघार १.	५१२१३४
प्रचक्र ३.	३१७१२०१
प्रचक्षस् १.	२१११३४
प्रचल १. २. ३.	५१४१७८
प्रचालक १.	२१३१३९
प्रचार १.	३१७१५८
प्रचुर १. २. ३.	५१४१८४
प्रचूडक १.	३१८१४८
प्रचेतस् १.	११२१४६
” १.	७१११५६
प्रच्छदपट १.	४१३१६६
प्रच्छन्नद्वार ३.	४१३१२६
प्रच्छर्विका २.	४१३१४२
” २.	८१९१५
प्रजनन ३.	४१४१६२
प्रजनिष्णु १. २. ३.	५१४११४
प्रजल्पन ३.	२१४१३९
प्रजा २.	४१४१४१
” २.	६१२१२३

[ प्रति

प्रजागम १.	३१६१८६
प्रजागर १.	३१७१५८
प्रजाता २.	४१४१४२
प्रजालुक १.	४१४१५३
प्रजापति १.	११११६
” १.	८१११३४
प्रजापतिद्वस्तक १.	३१११५५
प्रजावती २.	४१४१३६
प्रज्ञा २.	४१४१२१
” २.	६१२१२३
प्रज्ञान ३.	७१३१२२
प्रज्ञु १. २. ३.	५१४११०
प्रवलिता १. २. ३.	८१४११४
प्रणय १.	३१८१७०
” १.	७१११४४
प्रणव १.	३१६१२३३
प्रणष्ट १. २. ३.	३१७१२९
प्रणाद १.	२१४१९
प्रणाम १.	५१२१२४
प्रणाय १. २. ३.	७१४११५
प्रणाल १. २. ३.	४१२१२०
प्रणिधि १.	७१११५५
प्रणिपात १.	५१२१४८
प्रणिहित १. २. ३.	५१४१०९
” १. २. ३.	८१४१९
प्रणीत ३.	४१३१९४
प्रणीति २.	४१३१३८
प्रणय १. २. ३.	५१४१३२
प्रतति २.	७१२११५
प्रतल १.	४१४१७७
प्रतानिनी २.	३१३१३७
प्रताप १.	७१११५४
प्रतापन ३.	५१३१८
प्रतापस १.	३१४११४
प्रतारण ३.	५१२१३५
प्रतारिका २.	४१४१६६
प्रति ४.	८१७१२५

प्रतिकर्मन् ३.	४३१३२
प्रतिकूल १. २. ३.	५४१२७
प्रतिकृति २.	३१२२०
प्रतिकृष्ट १. २. ३.	५४१७५
प्रतिक्षिप्त १. २. ३. ८१४८	
प्रतिख्याति २.	५२१२९
प्रतिग्रह १.	८११३९
प्रतिग्राह १.	४३११६०
प्रतिघ १.	७११५४
प्रतिघातन ३.	३१७२१४
प्रतिच्छन्द १.	५११२१
प्रतिच्छाया २.	५११२०
प्रतिजागर १.	५२१२९
प्रतिज्ञा २.	५२१३७
प्रतिज्ञात १. २. ३.	५४१०६
प्रतितर्जन ३.	२१४३९
प्रतिताली २.	४३१४९
प्रतिदान ३.	८३१९
प्रतिध्वान १.	२१४१२
प्रतिध्वानदन्तुर १. २. ३.	२१४१४
प्रतिनष्ट १.	४१४४५
प्रतिनिधि १.	३१९२१
प्रतिपक्ष १.	३१७४२
प्रतिपत्ति २.	८१२७
प्रतिपद २.	२११६९
” २.	७२११६
प्रतिपादन ३.	३१६११८
प्रतिबन्ध १.	५२११३
प्रतिबिम्ब ३.	३१९२१
प्रतिभ १.	३१९६९
प्रतिभय १. २. ३.	३१९७८
” १. २. ३. ८१५१७	
प्रतिभा २.	३१६१७६
प्रतिभातवाच् १. २. ३.	५४१४७

( प्रतिभासवाच् )

प्रतिभायुक्त १. २. ३.	५४११७
प्रतिभास १.	३१६१७६
प्रतिभू १. २. ३. ३१८१०	
प्रतिम १. २. ३. ५४१२१	
प्रतिमा २.	३१९१२०
प्रतिमुक्त १. २. ३.	३१७१४२
प्रतियल १.	८११३१
प्रतियातना २.	३१९१२०
प्रतिरवि १.	४११२८
प्रतिरूपक ३.	३१९२१
प्रतिरोधक १.	३१९५६
प्रतिरोधिन् १.	३१९५६
प्रतिलम्भ १.	५२१२०
प्रतिलोम १.	३१५११८
” १.	३१५११९
” १. २. ३.	५४१२७
प्रतिलोमज १.	३१५८९
” १.	३१५१०९
प्रतिवसथ १.	४३१२
प्रतिवाक्य ३.	२१४३७
प्रतिविषा २.	३१८१०
प्रतिशासन ३.	५२१३५
प्रतिशिष्ट १. २. ३. ८१४८	
प्रतिश्याय १.	४११२१
प्रतिश्रय १.	८११३१
प्रतिश्रव १.	५२१२९
” १.	५२१३७
प्रतिश्रुत् २.	२१४१२
प्रतिष्कन्ध १. २. ३.	८१५१४
प्रतिष्ठम्भ १.	५२११३
प्रतिष्ठा २.	७२११५
प्रतिसञ्चार १.	२११९५
प्रतिसर १.	३१६१५९
” १. २. ३. ८१५१४	
प्रतिसर्ग १.	२११९५
प्रतिसारण ३.	४१४१४०
प्रतिसारा २.	४३१२२४

प्रतिहत १. २. ३. ८१४८	
प्रतिहारी २.	३१७३८
प्रतिहास १.	३३११९२
प्रतीक १.	४१४५५
” १. २. ३. ७१५५४	
प्रतीकार १.	३१७२०९
प्रतीक्ष्य १. २. ३. ७१५१७	
प्रतीक्ष १.	३१८५७
प्रतीची २.	२११५
प्रतीचीन १. २. ३.	५४१९१
प्रतीच्छा २.	४३११००
प्रतीत १. २. ३. ७१५१६	
प्रतीप १. २. ३. ५४१२७	
प्रतीपदर्शिनी ३.	४१४५
प्रतीवाप १.	३१८१४४
प्रतीहार १.	८११२७
प्रतोद् १.	३१८२९
प्रतोली २.	४३११६
प्रत्य १. २. ३. ५४१८७	
प्रत्यक्छेणी २.	३३११३३
” २.	३३१३३३
प्रत्यक्पर्णी २.	३३११५
प्रत्यक्ष १. २. ३. ५४१३३	
प्रत्यगाशापति १. १२१४६	
प्रत्यगृष्टि २.	३३११७५
प्रत्यग्र १. २. ३. ५४१८९	
प्रत्यग्रय १ व. ३३१२६	
प्रत्यच् १. २. ३. ५४१९१	
प्रत्यनीक १.	३३७४१
प्रत्यय १.	७११५१
प्रत्ययित १. २. ३. ३१८१९	
( प्रत्ययिक )	
प्रत्ययिन् १.	३३७४२
प्रत्यवसान ३.	४३११०२
प्रत्यवसित १. २. ३.	५४११०७
प्रत्यवस्कन्ध १.	३१८१६
प्रत्याकार १.	३३७१६८
प्रत्याख्यान ३.	५२१२३
प्रत्यादेश १.	५२१२३

प्रत्यालीढ ३.	३।७।१८८	प्रपद ३.	४।४।५७	प्रमदा २.	४।४।५
प्रत्यासार १.	३।७।५९	प्रपदव्यापिन् १. २. ३.	४।३।१२१	प्रमदावन ३.	३।३।३
प्रत्याहार १.	३।६।२३१			प्रमनस् १. २. ३.	५।४।३३
” १.	३।९।१४०	प्रपा २.	४।३।२३	प्रमा २.	५।२।३३
” १.	५।२।१८	प्रपाठक १.	३।६।३२	प्रमाण ३.	७।३।२३
प्रत्युत्क्रम १.	५।२।१५	प्रपात १.	३।२।६	प्रमातामह १.	४।४।३०
प्रत्युत्पन्नमति १. २. ३.	५।४।३१	” १.	४।२।३२	प्रमाथ १.	३।७।१८९
		” १.	७।१।५३	प्रमाथित ३.	३।८।१४३
प्रत्युष १.	२।१।६८	प्रपातिन् १.	३।२।२	प्रमाद १.	३।६।१७८
प्रत्युष ३.	२।१।६८	प्रपितामह १.	४।४।२९	प्रमापण ३.	३।७।२१३
प्रत्युषपहम्बर १.	२।१।१५	प्रपुष्पाट १.	३।३।१५८	प्रमिति २.	५।२।३३
प्रत्यूह १.	५।२।४	प्रपौत्रक १.	४।४।४५	प्रसीत १. २. ३.	३।७।२२०
प्रथन ३.	३।७।२०४	प्रफुल्ल १. २. ३.	३।३।९	प्रसीला २.	३।६।१९७
” १.	३।८।३६	प्रबर्ह १. २. ३.	५।४।६२	प्रमुख १. २. ३.	५।४।६२
” ३.	५।२।३४	प्रवल १. २. ३.	३।७।१५१	” १. २. ३.	५।४।७६
प्रथम १. २. ३.	५।१।२१	” १. २. ३.	५।४।६	प्रभृत ३.	३।८।३
” १. २. ३.	५।४।७६	प्रबोधन ३.	४।३।१४७	प्रमेह १.	४।४।१२८
” १. २. ३.	५।४।१४०	प्रभ १. २. ३.	५।४।१२१	प्रमेहनुद् १.	३।३।१०६
” १. २. ३.	७।४।१७	प्रभञ्जन १.	१।२।४९	प्रमोद १.	३।६।१८८
प्रथा २.	५।२।३४	प्रभव १.	७।१।५०	प्रयत् १. २. ३.	५।४।६५
प्रथिक ३.	३।६।८८	प्रभवन्ती २.	५।२।२	” १. २. ३.	७।४।१८
प्रथिमन् १.	८।९।१४	प्रभविष्णुता २.	५।२।२	प्रयत्त १. २. ३.	५।४।९९
प्रवर १.	४।२।९	प्रमा २.	२।१।२२	प्रयत्नवत् १. २. ३.	
” १.	७।१।५७	” २.	२।१।२३		५।४।११४
प्रवीस १. २. ३.	८।४।१४	” २.	६।२।२३	प्रयम १.	३।६।१४
प्रवेशन ३.	३।७।४६	प्रभाकर १.	२।१।१४	प्रयस्त १. २. ३.	४।३।९४
( प्रवर्धन )		प्रभात ३.	२।१।६९	प्रयाण ३.	७।३।२१
प्रदेशिनी २.	४।४।७३	प्रभाव १.	५।२।२	प्रयाम १.	३।८।६६
प्रदेष्टृ १.	३।७।२३	” १.	७।१।५६	प्रयुत ३.	५।१।२८
प्रदोष १. ३.	२।१।६५	प्रभावती २.	३।९।१२०	” ३.	५।१।२९
” १.	७।१।५५	प्रभास ३.	३।२।२८	प्रयोक्तृ १. २. ३.	३।८।८
प्रद्युम्न १.	१।१।२७	प्रभिन्न १.	३।७।६८	प्रयोग १.	५।२।१५
प्रद्योतन १. ३.	८।५।१७	प्रभु १. २. ३.	५।४।५७	” १.	७।१।४४
प्रद्राव १.	३।७।२११	” १. २. ३.	६।४।१०	प्रयोजन ३.	३।६।२३६
प्रधान १. ३.	५।४।६२	प्रभुता २.	५।२।२	” ३.	८।३।८
प्रधानधातु १.	४।४।१११	प्रभृत १. २. ३.	५।४।८४	प्ररूढ १.	३।८।५२
प्रधि १.	३।७।१३५	प्रअष्टक ३.	४।३।१५५	प्ररोचना २.	३।९।१४२
” १.	८।९।१३	प्रमथ १.	१।१।५१	प्ररोह १.	३।३।११
प्रपञ्च १.	७।१।५६	” १.	३।७।२११	प्ररोहक १.	३।७।११५
प्रपतित १. २. ३.		प्रमथन ३.	३।७।२१३	प्रलम्बाण्ड १. २. ३.	
	५।४।११५	प्रमयाधिपति १.	१।१।४१		५।४।८



प्रलम्बारि ]

प्रलम्बारि १.	१११२३
प्रलय १.	२११९५
” १.	३११८९
” १.	७११४३
प्रलाप १.	२१४३०
प्रलोभिन् १.	३३११८९
प्रलोभ्य ३.	४४११०१
प्रवक १.	३११६४
प्रवण १. २. ३.	७११५३
प्रवयस् १. २. ३.	५११३३
प्रवर १.	३१८३४
” १.	३१८३७
” ३.	३१८११९
” १. २. ३.	५११६२
” १. २. ३.	८११५३
प्रवर्ग्य १.	११२१९
प्रवसिहका २.	२१४३९
प्रवह १.	७११४३
प्रवहण ३.	३१७१२७
” ३.	४१२१५
प्रवापण ३.	३१६१२०
प्रवाल १. ३.	३१२३९
” १.	३३११५
” १.	३३११५४
” १. ३.	७११५५
प्रवासन ३.	३१७२१३
प्रवाह १.	४१२३०
” १.	५१२३९
” १.	७११४५
प्रवाहि १.	३१७१२५
प्रवाहिक १.	११२४१
प्रवाहिका २.	४११२९
प्रविदारण ३.	३१७२०४
प्रविसर १.	२११६८
प्रविसारण ३.	३१७२१५
प्रवीण १. २. ३.	५१११९
प्रवीरा २.	४३१११
प्रवृत्ति २.	३१७८२
” २.	३१८४८
” २.	७१११६
प्रवृद्ध १. २. ३.	७१११८

शब्दानुक्रमणिका

प्रवेक १. २. ३.	५११६३
प्रवेणी २.	७१११६
प्रवेण १.	३१८३६
प्रवेश १.	५१११४
प्रवेष्ट १.	३१७७२
” १.	४१७७२
प्रव्याल १.	२११३२
प्रव्रजित १.	३१६१६०
प्रवृत्ता २.	२११३५
प्रवसन ३.	३१७२१४
प्रवस्तसृष्ट २.	३१८२४
प्रशान्तार्थिस् १.	११२३२
प्रशान्तिक ३.	३१६१८२
प्रक्ष १.	२११३७
” १.	८१११४
प्रक्षवादिनी २.	४११११
प्रभय १.	५१२३८
प्रभित १. २. ३.	५११३२
प्रष्ट १. २. ३.	३१७१४५
प्रष्टवाह १. २. ३.	३१७१५६
प्रसक्त २.	३१९४५
प्रसभ १.	११२१५५
” १. ३.	३१७२०९
प्रसभा २.	३१६१४६
प्रसरणी २.	३१७२०१
प्रसर्पक १.	३१६१८१
प्रसव १.	२११८७
” १.	३१३२०
” १.	४११४०
” १.	७११४८
प्रसव्य १. २. ३.	५११२८
” १. २. ३.	७१११८
प्रसहनी २.	३१३१०४
प्रसहा २.	३१३१०४
प्रसह्य ४.	८१८१८
प्रसाद १.	७११५५
प्रसादन १.	३१३३८
( प्रसाधन )	
” १.	४१३२९
” ३.	४१३७५
प्रसाधन १.	४३११२

[ प्रज्ञाव

प्रसाधन ३.	४३११२
” ३.	४३११३२
प्रसित १. २. ३.	
	५११३०
प्रसिति २.	५१२२८
प्रसिद्ध १. २. ३.	७१११९
प्रसू २.	६१२२४
प्रसूता २.	४१११७
प्रसूतात १ द्वि.	४११४७
प्रसूति २.	४११४१
” २.	७१११६
प्रसूतिका २.	४१११७
प्रसूतिज ३.	११२३९
प्रसून ३.	३३११८
” ३.	७१३२४
” १. २. ३.	७११५५
प्रसृत १.	४११७७
” १. ३.	५११५२
प्रसृता २.	४११५८
प्रसृत्वन् १. २.	८११२९
प्रसेवक १.	३१९१२०
” १.	४३१६४
प्रस्कन्न १. २. ३.	
	३१७२१९
प्रस्तर १.	३१२८
” १.	३१६१९१
” १.	४३१३५
” १.	७११५१
प्रस्तार १.	३३३२
प्रस्ताव १.	२११४१
प्रस्तुता २.	३११४९
प्रस्थ १.	५११५३
” १.	५११६३
” १.	६११४६
प्रस्थान ३.	५१२१०
प्रस्फोटन ३.	४३१६५
” ३.	४३१६६
प्रस्मरण ३.	३१६१७७
प्रस्त्रवण १.	३१२४३
” ३.	३१२४७
प्रस्त्राव १.	४३१७८

[ प्रस्ताव ]

प्रस्ताव १.	४४१२०
प्रहत १. २. ३.	३१८१८
” १. २. ३.	५४४९९
” १. २. ३.	७४११८
प्रहर १.	२११६७
प्रहरण ३.	८३१८
प्रहसन ३.	३१९१००
प्रहसन्ती २.	३३११८७
( प्रसहन्ती )	
प्रहस्त १.	११२१४४
” १.	४४४७७
प्रहार १.	५१२१९
प्रहासिन् १.	३१९६९
प्रहि १.	४१२७
” १.	८१९१०
प्रहित ३.	४३१८६
” १. २. ३.	५४४९७
प्रहृष्ट १. २. ३.	८४११३
प्रहेलिका २.	२४३३९
प्रांशु १. २. ३.	५४४८१
प्राकार १.	४३११४
प्राकारमूलिक १.	४३११३
प्राक्तन १. २. ३.	५४४८७
प्राक्पादरज्जु २.	३७११३
प्राग्जालिक १ व. ३११२९	
प्राग्ज्योतिष १ व. ३११२९	
प्राग्भार १.	५१२३
प्राग्र १. २. ३.	५४४६३
प्राग्रहर १. २. ३.	५४४६३
प्रागाढ ३.	३१८१४४
प्राग्वंश १.	३११५१
प्राच् १. २. ३.	५४४९१
प्राधिका २.	२३१२०
प्राची २.	२११५
प्राचीन १. २. ३.	५४४९१
प्राचीनतिलक १.	२११२७
प्राचीनवर्हिष् १.	८११५४
प्राचीना २.	३३१३३
प्राचीनावीत ३.	३३१२१
प्राचीर ३.	४३११४
प्राचेतस १.	३३१५३

वैजयन्तीकोपः

प्राच्छ १.	३३१२४
प्राच्य १.	३११२२
प्राजन ३.	३१८१९
प्राजापत्य ३.	३३१२
” १.	३३१८
” ३.	३३१३३
” १.	३३१२०७
प्राजित् १.	३७१३८
प्राज्ञ १.	३३१२३४
प्राज्ञा २.	४४१२१
प्राज्ञी २.	४४१२१
प्राज्य १. २. ३.	५४४८४
प्राद्विपाक १.	३१८१४
प्राण १.	११२४८
” १.	३१२१५
” १.	३३१२०३
” १ व.	३३१२०३
” १. २. ३.	५४४६१
” १.	३११३८
प्राणद् १.	१११९
” ३.	४४११०६
प्राणद्वा २.	३१८१३
प्राणनाथ १. २. ३.	८१५१६
प्राणयम १.	३३१२२९
प्राणायाम १.	३३१२२९
प्राणिक ३.	३३१२२
प्राणिद्युत ३.	८३११०
प्राणिन् १.	४४११
प्राणिफल १.	३३१२८
प्राणिस्वन १.	२११३
प्रातः (-र) ४.	८१८१०
प्रातिहारिक १.	३१९३३
” १. २. ३.	५४४२४
प्राथमकल्पिक १.	३३१२४
प्राहु (-स्) ४.	८१८१८
प्रादेश १.	४४४८०
प्रादेशन ३.	३३११९९
प्राध्व १. २. ३.	६१५४७
प्राध्वम् ४.	८१८१६
प्रान्त १.	४३१३२

[ प्रासाद ]

प्रान्तर ३.	३११५०
” ३.	४३११२
प्रापणिक १.	३१८७२
प्रापणिका २.	३३१५०
प्राप्त १. २. ३.	५४४९९
” १. २. ३.	५४४१०३
” १. २. ३.	५४४१०९
” १. २. ३.	३४४१०
प्राप्तरूप १. २. ३.	८१५१५
प्राप्सर्तु २.	४४४८
प्रासार्थ १. २. ३.	३१९५३
प्राप्ति २.	५१२१३
” २.	३१२२४
प्राप्तुत ३.	३७४४६
प्राय १.	४४४५३
” १.	३११३६
प्रायः (-स्) ४.	८१८१६
प्रायण ३.	७३३३४
प्रायणीय १. २. ३.	३३१८८
प्रार्थित १. २. ३.	५४४११२
” १. २. ३.	७४४१६
प्रालम्ब ३.	४३११५५
प्रालम्बिका २.	४३११३७
प्रालेय ३.	२१२१९
प्राचार १.	४३११२३
प्रावृत १. २. ३.	४३१२०
प्रावृष् २.	२११८९
प्रावृपायणी २.	३३११२९
” २.	८१२१३
प्रावृषेण्य १.	३३३६०
प्रावेशनिक १.	३११५९
प्राश्निक १. २. ३.	३१८१९
प्रास १.	३७४१६५
प्रासङ्ग १.	३७४१३३
प्रासङ्ग्य १. २. ३.	३१५५८
प्रासाद १.	४३१२९

प्रास्थित १.	२३३६	प्रेथ ४.	८८१५	प्लुन १. २. ३.	
प्राहुण १.	३१६६८	प्रेमन् १. ३.	३१६१८६		३७१२३
प्राह्ण १.	२११६४	" १. २.	५५५५१	प्लुषि १.	२३१४८
प्रिय १.	३३३३१	प्रेष्य १.	३१९२	प्लात १. २. ३.	५४११०७
" १. २. ३.	३७७३३	प्रेष १.	३११३३		फ
" १.	४४४३७	प्रोक्षण ३.	३१६९४	फक्किका १.	३१६३३
" १. २. ३.	५४४७०	प्रोक्षण्यासादन ३.		( पणिका )	
" १. २. ३. ५४११३५			३१६८४	फण १. २.	४११२१
प्रियंवद १. २. ३. ५४४४४		प्रोत १. २. ३.	३१९१२	फणिन् १.	३३३४९
प्रियक १.	३३३३९	प्रोथ १. ३.	३७१०९	" १.	४११५
" १.	३३३४३	प्रोथिन् २.	३७९०	फणिर्जक १.	३३३१२०
" १.	३३३६६	प्रोन्द् १.	५३१९	फण्ड १.	३३३२०५
" १.	३३३१७	प्रोष्टपद १. २. ३.	२११४१	" १.	३३३२०७
" १.	७११५३	प्रोष्टपदा २. ४.	८१९५७	फलः ३.	३३३२०
प्रियङ्गु २.	३८१५५	प्रोष्टी २.	४११४४	" १.	३३३८३
" ३.	३८११७	प्रोह १.	३७७७६	" ३.	३७१८६
प्रियङ्गुवाख्या २.	३३३६६	प्रौढ १. २. ३.	५४११७	" १.	३७१९२
प्रियनादिका २.	३१९१३८	प्रौढि २.	३३३१६६	" १.	३८१७०
प्रियापत्य १.	२३३३१	प्रौष्टपद १.	२११८५	" ३. २.	३५५५२
प्रियाला २.	३३३१८१	प्रौष्टपदी २.	२११७६	" ३. २.	३५५५३
प्रियालु १.	३३३५७	प्लक्ष १.	३३३२७	फलक ३. २.	३७१९७
प्रियैलिका २.	३८१४६	" १.	३३३२८	" १.	३८१४५
प्रीत १. २. ३.	५४१९९	प्लक्षक १.	३३३५९	" १. २.	७५५६०
प्रीति २.	६२२२५	प्लक्षद्वीप १.	३११११	" १. २.	८१२२७
प्रुष्व १.	५३३८	प्लव १.	२३३१३	फलकिन् १.	४११४३
प्रेक्षा २.	६२२२५	" ३.	३३३२०१	फलकी २.	८१२२७
प्रेक्ष १.	३७१३६	" १.	३१९५४	फलकृष्ण १.	३३३८३
" १.	३१९३	" १.	४११४७	फलपाककृष्ण १.	३३३८३
" १.	४३३६०	" १.	४२११६	फलपाकान्ता २.	३३३२४
प्रेक्षित १. २. ३.	५४१९५	" १.	४४१७१	फलस १.	५३३४०
" १. २. ३. ५४११०३		" १.	५२११२	फला २.	३३३२६
प्रेक्षोल ३.	३७१३६	" १.	६२२३७	" २.	३३३१६१
प्रेक्षालन ३.	३७१३६	प्लवग १.	८११३२	फलाङ्कुरा २.	३८३३५
प्रेक्षोलि २.	८१२२७	प्लवङ्ग १.	८११३२	फलाप्यक्ष १.	३३३४३
प्रेक्षोलित १.	५४११०३	प्लवन ३.	३३३२०१	फलाशन १.	२३३२५
प्रेजन ३.	५२१३२	प्लाक्ष ३.	३३३२२	फलिक १.	३३३२
प्रेत १.	१२३३८	प्लाविन् १.	२३३१	फलित १. २. ३.	३३३८
" १.	१२३३८	" १.	३३३११	फलिन् १. २. ३.	३३३८
" १. २. ३.	६५५५२	प्लिहन् १.	४४११३	फलिन १. २. ३.	३३३८
प्रेतवाहसि १.	१२३२२	प्लुत १. १. ३.	३७११८	फलिनी २.	३३३६६
प्रेतालय १.	३३३७७				

फलिनी २.	३३३१५८	फेरुण्ड १.	३३३३८	बन्धुता २.	५३१९
" २.	३३३२०३	फेरुविज्ञा २.	३३३१३७	बन्धुर १. २. ३.	५३१८३
फली २.	३३३१६६	फेला २.	३३३१०६	" १. २. ३.	७३३२१
" २.	३३३१५८	फेलुक १.	३३३१६३	बन्धुरा २.	३३३१३२
" २.	३३३१९८			बन्धुल १.	३३३१४४
" २.	६३५५३	व		बन्धूक १.	३३३१८५
फलीकृत १.	३३३१६६	वक १.	२३३१०	बन्धू १.	१३११०
फलीहस्त १.	३३३७१	" १.	३३३१३	" १.	३३३१२८
फलेग्राहि १. २. ३.	३३३१८	" १. २. ३.	३३३११३	" १. २. ३.	३३३१४७
फलेपाकिन् १.	३३३१५९	वकपुष्प १.	३३३१९३	" १.	५३३१८
फलेरुह १.	३३३२१६	वकोट १.	२३३१०	वकर १.	३३३७३
फलेरुहा २.	३३३१९०	वढवा २.	३३३१७७	वर्वर १.	३३३५०
फलोदय २.	१३१११	वढवागण १.	५३३१९	" १.	३३३१८
फल्गु २.	३३३१११	वढवापति १.	३३३१६६	" १. २. ३.	५३३२२
" १. २. ३.	५३३७६	वढवामुख १.	८३३१५५	वह १.	२३३३९
फल्गुनाल १.	२३३१८३	वत ४.	८३३२६	" ३.	३३३१७
फल्गुनी २.	२३३१४३	वदर १.	३३३१९९	" ३.	३३३२२
फाणित ३.	३३३१३४	वदरी १.	३३३१८७	वहचन्द्रक १.	२३३३९
फाण्ट १.	३३३१४१	" २.	३३३१४८	वहिण १.	२३३३६
" ३.	५३३१४	वद्ध ३.	५३३३०	" ३.	३३३१९
फारी ३.	३३३१८५	" १. २. ३.	५३३३७	वहिष्वजा २.	१३३१६०
फाल १.	३३३१८८	" १. २. ३.	५३३९७	वहिन् १.	२३३३६
" ३.	३३३१०६	वद्धदर्भ १.	३३३१२४	वहिपुष्प ३.	३३३१२
" १. २. ३.	३३३११७	वद्धभूमि २.	३३३३२	वहिमुख १.	१३३१४
" १.	६३३३९	वद्धरुद्ध ३.	३३३२९	वहिष्ठ ३.	३३३२०२
फालगलालेप १.	३३३१६७	बन्दी २.	३३३१५७	वहिस् १.	६३३५३
फालाकली २.	३३३३२	बन्ध १.	३३३१७०	वल १.	१३३२४
फाल्गुन १.	२३३१८२	" १.	३३३१३१	" ३.	३३३३
फाल्गुनिक १.	२३३१८२	" १.	३३३५३	" ३.	३३३५५
फाल्गुनी २.	२३३१७५	" १.	५३३२८	" ३.	३३३२१०
फुल्ल १. २. ३.	३३३१९	" १.	६३३३९	" १.	३३३१५३
" १. २. ३.	३३३१७८	बन्धकी २.	३३३३५	" ३.	३३३११४
" १.	३३३१११	" २.	३३३१०	" ३.	३३३१०९
फुल्लक १.	३३३३९	" २.	७३३१७	" १. २. ३.	६३३५४
फुल्लरीक १.	३३३१५	बन्धन ३.	३३३२०	वलक १.	३३३१९९
फेन १.	३३३१३	" ३.	३३३१२१	" ३.	३३३१९९
फेनक १.	३३३१७४	बन्धनी २.	३३३३०	वलकाली २.	३३३१८२
फेनिल १.	३३३३२	बन्धाकि १.	३३३१२	वलदेव १.	१३३२२
" १. २. ३.	७३३६०	बन्धु १.	१३३२९	वलमद्र १.	१३३२३
फेरव १.	३३३३८	" १.	३३३५१	वलमद्रिका २.	३३३१०९
फेह १.	३३३३८	बन्धुजीव १.	३३३१८५	बलयु २.	३३३१११



बलरिपु १.	१।२।२	बहिर्गीत ३.	३।१।१०	बाढव ३.	५।१।९
बलवत् ४.	८।८।४	बहिर्द्वार ३.	४।३।४२	बाढवेय १.	३।४।५३
बला २.	३।३।६६	बहिर्द्वारप्रकोष्ठ १.		बाढव्य ३.	५।१।७
” २.	३।३।२७		४।३।४६	बाढ १. २. ३.	५।४।१३२
” २.	३।८।७६	बहिर्कर्ष १.	३।७।७०	” १. २. ३.	६।५।५५
” २.	३।८।११४	” १.	३।७।७८	बाढम् ४.	८।७।२६
” २.	३।९।१०७	बहु १.	१।२।२७	बाण १.	१।१।५२
बलाका २.	२।३।१०	” १. २. ३.	५।४।८०	” १.	३।३।३९
बलाङ्ग १.	३।८।३६	” १. २. ३.	५।४।८४	” १.	३।७।१७९
बलाङ्कार १.	३।७।२०९	” १. २. ३.	६।४।१०	” १.	३।७।१८३
बलारोहा २.	३।८।८२	बहुकर १. २. ३.	३।८।६७	बाणाभ्यास १.	३।७।१९५
बलास १.	४।४।२१	बहुक्षीरा २.	३।४।४५	बादर १.	४।३।११७
बलि १.	३।७।४५	बहुगार्हपत्य १. २. ३.		बाधा ३.	६।२।२५
” १. २.	३।९।१३८		५।४।४६	बान्धकिनेय १.	४।४।४४
” १.	६।१।३९	बहुजाली २.	३।३।१६१	बान्धव	४।४।५१
बलिक १. २. ३.		बहुतिथ १. २. ३.	५।१।१९	बाध्वी २.	१।१।५९
	३।३।१२७	बहुपाद् १.	३।३।२७	बाहृत ३.	३।३।२२
बलिकण्टक १.	१।१।१९	बहुमज १.	३।४।६	बाल ३.	३।३।२०२
बलिन् १.	१।१।२२	बहुरूप १.	१।१।४७	” १.	३।७।६६
” १.	१।१।२३	” १.	३।८।१११	” १.	५।३।७
” १.	३।३।१६५	बहुल ३.	३।८।१२४	” १. २. ३.	५।४।२
” १.	३।३।१८९	” १. २. ३.	५।४।८०	” १. २. ३.	६।४।११
” १.	३।३।२२१	” १. २. ३.	५।४।८४	” १. २. ३.	६।५।५७
” १. २. ३.		” १. २. ३.	७।५।६१	बालक १.	३।८।३३
	३।७।१५१	बहुला २.	३।५।४२	” ३.	३।८।१४०
” १.	३।८।३५	बहुलीकृत १. २. ३.		बालगर्मिणी २.	३।४।४६
” १.	४।४।११०		३।८।६७	बालचूतक १.	५।३।३५
बलिपुष्ट १.	२।३।१६	बहुवक्र १.	३।८।५४	बालजात ३.	३।८।१४०
बलिभुज् १.	२।३।१८	बहुवार १.	३।३।५५	बालतृण ३.	३।३।२३५
बलिषा ३.	३।१।६०	बहुव्यय १. २. ३.		बालनायिका २.	३।८।६०
” ३.	३।९।४२		५।४।५८	बालपत्र १.	३।३।६३
बलिसद्मन् ३.	४।१।१	बहुसारक १.	३।८।१२८	बालपुष्कल १.	३।७।८०
बलीवर्द १.	३।४।५३	बहुसुता २.	३।३।१२४	बालमीढ १.	३।३।३०
बलबज १ न.	३।३।२३०	बहुसूति २.	३।४।५०	बालमूषिका २.	४।१।३२
बलक्यणी २.	३।४।४८	बहुसूतिका २.	४।४।२०	बालवत्स १.	२।३।२३
बस्त १.	३।४।६२	बहुसूदन ३.	३।८।१२४	बालशाकट १. २. ३.	
बहुल १. २. ३.	५।४।८४	बहुस्वन १.	२।३।२२		३।८।२१
” १. २. ३.	५।४।८४	बहुवित ३.	२।४।३९	बालशाकिन १. २. ३.	
” १. २. ३.	७।४।२१	बहेटक १.	३।३।१७६		३।८।२१
बहिः (स्) ४.	८।८।१४	बाढव १.	१।२।२१	बालहस्त १.	३।४।७४
बहिर्गार १.	३।५।४	” १.	३।६।१	बाला २.	३।३।१८५

बाला २.	३३२१२
बालाम्ल १.	५३३३५
बालिशङ्ख १. २. ३.	७४२०
बालेय १.	३३३६५
बाल्य ३.	४३५५४
बाप्य १.	६११४०
बाप्पी १.	३३८१३२
बाह १. २. ३.	५३४२०
बाहा २.	४३४०१
बाहु १. २.	४३४०१
बाहुज १.	३३७१
बाहुदन्तेय १.	११२१७
बाहुदांर.	४३२२६
बाहुमूल ३.	४३४६९
बाहुयुद्ध ३.	३३७२०७
बाहुरवा २.	३३७१५५
बाहुल १.	२११८६
" ३.	३३७१५५
बाहुलेय १.	८११३५
बाहधनुस् ३.	३३९७३
बाह्यलिङ्गिन् १.	३३६२३८
बाह्यिक १ व.	३३१२७
बाह्यिक १ व.	३३१२७
" १.	३३७९५
" ३.	३३८११३
" ३.	७३३२६
बिडाल १.	३३४७१
बिडालक १.	४३४९५
बिडौजस् १.	११२४
बिन्दु १.	२३२८
" २.	४३४२०
" १.	८३११०
बिन्दुक १.	५३१३८
" ३.	५३१४९
बिन्दुभेद १.	३३६२२३
बिम्बोक १.	३३९९४
बिम्बेण १.	३३५४९
बिम्ब १.	४३१२९
" १. ३.	६३५५५
बिम्बसारक ३.	३३७१७५

बिम्बसारक १. २. ३. ४. ५. ६. ७. ८. ९. १०. ११. १२. १३. १४. १५. १६. १७. १८. १९. २०. २१. २२. २३. २४. २५. २६. २७. २८. २९. ३०. ३१. ३२. ३३. ३४. ३५. ३६. ३७. ३८. ३९. ४०. ४१. ४२. ४३. ४४. ४५. ४६. ४७. ४८. ४९. ५०. ५१. ५२. ५३. ५४. ५५. ५६. ५७. ५८. ५९. ६०. ६१. ६२. ६३. ६४. ६५. ६६. ६७. ६८. ६९. ७०. ७१. ७२. ७३. ७४. ७५. ७६. ७७. ७८. ७९. ८०. ८१. ८२. ८३. ८४. ८५. ८६. ८७. ८८. ८९. ९०. ९१. ९२. ९३. ९४. ९५. ९६. ९७. ९८. ९९. १००.	३३३१४७
( बिम्बसारक )	
बिम्बोष्ठी २.	३३११४७
बिल ३.	४३१२
बिलेशय १.	८३५१८
बिलेशया २.	३३४२६
बिलौकस् १.	४३१६
बिल्व १.	३३३३०
" १.	५३१५१
बिल्वक १.	४३१४७
बिस ३.	४३२४३
बिसकण्टिका २.	२३३१०
बिसखण्ड ३.	४३२३९
बिसनाभिज ३.	४३२३८
बिसप्रसून ३.	४३२३८
बिसिनी २.	४३२४३
बिसिर ३.	३३८१२०
बीज ३.	२३१८६
" ३.	४३१११
" ३.	६३३२३
बीजकोश १.	४३२४५
बीजपुष्पिका २.	३३८५७
बीजपूर १.	३३३३३
बीजवर १.	३३८३५
बीजस् २.	३३१४
बीजाकृत १. २. ३.	३३८२३
बीजिन् १.	४३४२९
बीज्य १.	४३४५०
बीभस्त १.	३३९७५
" १.	३३९७७
" १. २. ३.	३३९७८
" १. २. ३.	७३२९
बुक्कन ३.	२३४६
बुद्ध १.	१३१३१
" १.	१३१३२
" १. २. ३.	५३१०१
बुद्धि २.	३३३३६३
बुद्धिमत् १.	२३३२७
बुद्धिबुद्ध १.	४३१३३
बुध १.	२३३३२

बुध १.	३३६२३२
बुधा २.	३३३१२५
" २.	३३३१६३
" २.	३३८१९४
बुधित १. २. ३.	५३१०१
बुध्न १.	३३३१३
बुध्निर ३.	४३३१८
बुधुच्चा २.	३३६१८२
बुधुच्छ १. २. ३.	५३३३६
बुध्निका २.	४३३७०
बुध्नी २.	४३३७०
बुद्ध १.	३३५३०
बुद्धि २.	४३४६०
" २.	४३४६१
बुद्धिनी २.	४३१५५
बुधाली २.	४३३२६
( बुधाली )	
बुधा २.	३३९१७
बुस १.	३३८६४
" ३.	३३८१४२
बुसा २.	३३९१७
" २.	३३९१०७
बुस्तक १. २. ३.	३३३५५५
बृंहित ३.	२३४७
बृन्द ३.	५३१३
" ३.	५३१२८
" ३.	५३१३०
" ३.	५३१३१
बृन्दाक १.	१३११३
बृन्दारक १. २. ३.	८३५१८
बृहच्छब्द १.	३३३२०९
बृहत् १. २. ३.	५३४८०
बृहत्तिका २.	४३३२३
बृहती २.	३३३०४
" २.	३३९११९
" २.	७३२१७
बृहत्कर्कोटक १.	३३३१६५
बृहद्गृह १ व.	३३३३६
बृहन्नालु १.	१३३१४

बृहस्पति १.	२११३३	ब्रह्मपुत्र १ व.	२३३३७	ब्राह्मी २.	१११९
बृहान्क १.	५११५४	” १.	४११२४	” २.	१११६४
वेन १.	३१५३४	” १.	८११३५	” २.	२११६
वेर ३.	३१९२१	ब्रह्मवन्धु १. २. ३.		” २.	३३३१४४
बोक्षाण १.	३१७११५		८१११०	म	
बोध १. २. ३.	५१११०१	ब्रह्मबिन्दु ३.	३१६२६	म ३.	२११३८
बोधकर १.	३१७३०	ब्रह्मभाव १.	३१६२३७	भक्त ३.	४१३७५
बोधन ३.	३१६१६४	ब्रह्मभूय ३.	३१६२३७	” १. २. ३.	६५१६०
बोधनीया २.	३१८१९४	ब्रह्ममेखल १.	३३३२२९	भक्तमण्डक १. ३.	४३३७८
बोधान १.	३१६२२	ब्रह्मरात्रिक १.	३१६१५५	भक्ति २.	३१६३६
बोधि १.	६५५५७	ब्रह्मरीति २.	३१२२६	” २.	६१२२६
” २.	८११५	ब्रह्मलोक १.	३१६२०८	भक्त १. २. ३.	५११५०
बोधिसत्त्व १.	१११३२	ब्रह्मवर्चस ३.	३१६११६	भक्तकार १. २. ३.	
बोधी २.	५११३७	ब्रह्मबालुक ३.	४११२३		४३३९२
बोल १.	३१२९५	ब्रह्मविष्णुमहेश्वर १ व.		भक्षण ३.	३१५५२
” १.	५३३१६		१११५	” ३.	४३३१०४
” १. २. ३.	६५५५६	ब्रह्मवृत्त १.	३३३२९	भक्षण ३.	३१६१०
बोसर १.	५३३३४	” १.	८६११९	भक्षित १. २. ३.	
ब्रसी २.	३१६१४९	ब्रह्मवेदि २.	३११२३		५११०८
ब्रह्मार्म ९.	१११५६	ब्रह्मसंज्ञ १.	३३३८०	भग ३.	४११६१
ब्रह्मबोध १.	४११२३	ब्रह्मसू १.	१११२९	” १. ३.	६५५५८
ब्रह्मचर्य ३.	३१६१४	ब्रह्मसूत्र ३.	३१६२०	भगनेत्रान्तक १.	१११४३
” ३.	३१६२०९	ब्रह्मस्थली २.	४३३१०	भगन्दर १.	४११३०
ब्रह्मचारिणी २.	८५५३०	ब्रह्महत्या २.	८१११७	भगवत् १. २. ३.	८५५३१
ब्रह्मचारिन् १.	१११५६	ब्रह्माभलि १.	३१६२६	” १. २. ३.	८११४६
” १.	३१६३७	ब्रह्मी २.	३३३१४४	भगिनी २.	४११२६
” १.	८५५३०	ब्रह्मोद्य ३.	८१११६	भगिनीपति १.	४१३३८
ब्रह्मजटा २.	३३३१२२	ब्रह्मौदनाभि १.	११२२६	भगिनीभ्रातृ १.	४१४४७
ब्रह्मदण्ड ३.	३१७१७५	ब्राह्म १.	२११६७	भग्न १. २. ३.	३१७१४८
ब्रह्मदण्डी २.	३३३१००	ब्राह्मण १.	३१६११	भग्नस्थिवन्ध १.	
ब्रह्मदर्भा २.	३१८१०२	” १.	३१६३३		४११३९
ब्रह्मधारा २.	४३३१०	” १. २. ३.	७५५६०	भक्त १.	४१२३४
ब्रह्मन् १.	१११६	ब्राह्मणब्रह्म १. २. ३.		भक्ति २.	५१२३४
” १.	३१५३		३१६१०	भक्तुर १. २. ३.	७१२२१
” ३.	३१६२७	ब्राह्मणयष्टिका २.		भक्त्य १. २. ३.	३१८२०
” १.	३१६३७९		३३३१००	भजमान १. २. ३.	
” ३.	३१६१६१	ब्राह्मणी २.	३१२२७		३११०३
” १.	३१६१६३	” २.	४११२९	भक्षना २.	२१२३६
” १.	६५५१०३	” २.	४११३६	भक्षिका ३.	३३३१००
” १.	८११३०	ब्राह्मण्य ३.	७३३२५	भट १.	३५५९
ब्रह्मानाम १.	११११५	ब्राह्मिक १.	३१६२२	( नट )	

भट १.	३।७।१३९	भन्दना २.	२।१।१९	भव १.	६।१।३१
भटिन्न १. २. ३.	४।३।९४	भम्भराली २.	२।३।४४	भवत् १. २. ३.	८।१।४६
भटोद्योग १.	३।७।२०२	भम्भा २.	३।९।१३३	भवन १.	३।४।७०
भट्ट १. २. ३.	८।१।४६	भभ्य ३.	३।६।१८५	" ३.	४।३।१७
भट्टरक १. २. ३.	८।१।४६	भभ्यङ्कर १. २. ३.	३।९।७८	भविक १. २. ३.	५।४।१४२
भट्टारक १.	३।९।१०३	भभ्यद्रुत १. २. ३.	३।७।२१८	भवितव्यता २.	३।६।१८९
" १. २. ३.	८।१।४६	भभ्यन ३.	३।६।१८५	भवितृ १. २. ३.	५।४।४१
भट्टारिका २.	३।९।१०४	भभ्यानक १.	३।९।७५	भविल १. २. ३.	७।५।६२
भट्टिनी २.	३।९।१०४	" १.	३।९।७७	भविष्णु १. २. ३.	५।४।४१
भण्डन ३.	७।३।२६	" १. २. ३.	३।९।७८	भव्य १.	३।३।३७
भण्डाकी ३.	३।३।१०२	भर १.	५।२।३	" १. २. ३.	५।४।१४२
भण्डिल १.	३।३।७२	" १.	६।१।४१	" १. २. ३.	६।४।११
भण्डीरी २.	३।३।१४५	" १.	६।१।४२	भषण ३.	२।४।६
भवन्त १.	३।९।१०७	भरण ३.	३।९।५	" १.	३।४।६८
भद्र १.	३।७।६२	भरणी २.	२।१।४१	भषित ३.	२।४।६
" १. २. ३.	५।४।८०	भरण्य ३.	३।९।५	भसत् १.	२।३।२
" १. २. ३.	५।४।१४३	भरत १.	१।२।२६	भसद् २.	६।२।२६
" १. २. ३.	६।५।६०	" १.	३।६।७८	भसल १.	२।३।४२
" ३.	८।९।२४	" १.	३।९।६२	भसित ३.	१।२।३३
भद्रकाली २.	१।१।६१	भरथ १.	१।२।१९	भस्त्रा २.	३।९।१७
भद्रकुम्भ १.	४।३।६१	भरद्वाज १.	२।३।१९	भस्मगन्धिनी २.	३।८।९५
भद्रदारु ३.	३।३।७१	भरित १. २. ३.	५।४।८६	भस्मगर्भा २.	३।३।९२
भद्रपदा १. २. ३.	२।१।४१	भरुज १.	३।४।३७	भस्मन् ३.	१।२।३३
गद्रपर्णिका २.	३।३।५८	भरुडा २.	४।३।८६	भा २.	२।१।२२
भद्रमन्त्र १.	३।७।५४	भर्ग १.	१।१।४०	भाग १.	४।४।५५
भद्रमन्त्रसूत्र १.	३।७।६४	भर्तृ १.	४।४।३७	" १.	५।२।७
भद्रमुख १.	३।३।२२८	भर्तृदारक १.	३।९।१०५	" १.	६।१।४१
भद्रमुखस्तक १.	३।३।१९९	भर्तृदारिका २.	३।९।१०४	भागधेय १.	३।७।४५
भद्रसूत्र १.	३।७।६४	भर्त्सन ३.	२।४।३४	" १. २. ३.	८।५।१९
भद्रयव १. ३.	३।३।७३	भर्मन् ३.	३।९।५	भागवत १.	३।६।१०५
भद्रलक्षण ३.	३।७।६३	" ३.	६।३।२३	" १.	३।६।१०५
भद्रवदन १.	१।१।२४	भर्मिन् १.	३।५।११	भागिनेय १.	४।४।४१
भद्रात्री १.	३।८।११२	भल्लह १.	३।४।८०	मागीरथी २.	४।२।२४
भद्रसुत १.	३।७।१५९	भल्ल १.	३।७।१८२	भाग्य ३.	३।६।१८९
भद्रा २.	३।३।१३९	भल्लाट १.	३।४।७	" ३.	६।३।२४
भद्राकरण ३.	३।६।४	भल्लातक १. २. ३.	३।३।९५	भाङ्गीन १. २. ३.	३।८।२०
भद्राङ्ग १.	१।१।२४	भल्लुक १.	३।४।४०	भाजन ३.	४।३।६२
भद्राश्व ३.	३।१।७	भल्लुक १.	३।३।६८	भाङ्गी २.	३।३।१००
भद्रासन ३.	३।७।१५	" १.	३।४।७	भाण १.	३।९।१००
भद्रेश्वर १.	१।१।३९				



भाण्ड ३.	३।७।४४	भावज्ञा २.	३।३।६७	भिक्षकूट ३.	३।७।५६
" ३.	४।३।६२	भाषना २.	४।३।१५८	भिया २.	३।६।१८५
" ३.	६।३।२३	" २.	८।९।४	मिह १.	३।५।४६
भाण्डागारिक १.	३।७।२३	भावित १. २. ३.	५।४।९९	मिपज् १. २. ३.	४।४।१४३
भाण्डी २.	३।३।१४५	" १. २. ३.	८।९।२२	मिस्सा २.	४।३।७६
भातु १.	२।१।१०	आलुक् १. २. ३.	५।४।४१	मिस्सिट्टा २.	४।३।७७
भातु १.	२।१।१०	भाषणी २.	२।४।३५	मी २.	३।६।१८५
" १.	२।१।५५	भाषा २.	१।१।९	मीत १. २. ३.	५।४।१८
" १.	३।१।४०	" २.	३।८।१६	मीति २.	३।६।१८५
भाद्र १.	२।१।८५	" २.	३।९।१०२	" २.	३।९।७६
भाद्रपद १.	२।१।८५	भास १.	२।३।३२	मीम १.	१।१।४३
भामिनी २.	४।४।५	भासन्त १.	७।१।५८	" १. २. ३.	३।९।७८
" २.	४।४।१०	भासुर १. २. ३.	५।४।१४२	मीमर १.	३।७।२६
भार १.	५।१।६१	भास्कर १.	२।१।१२	मीह १.	३।३।७८
" १.	६।१।४१	" १.	७।१।५८	" २.	३।३।१६६
भारत ३.	३।१।५	भास्वत् १.	२।१।१२	" २.	४।४।५
भारती २.	१।१।९	" १. २. ३.	६।५।५९	" १. २. ३.	५।४।१८
" २.	३।३।११९	भास्वर १ व.	१।३।८	मीरुक १. २. ३.	५।४।१८
" २.	३।९।१०१	मिह २.	३।३।१५	मीरुचेतस् १.	३।४।११
" २.	३।९।१०२	" २.	३।३।१२१	मीरुपर्णी २.	३।३।१४२
भारद्वाज ३.	४।४।१०९	" २.	६।२।२६	मीरुबाल १.	३।३।३०
भारद्वाजी २.	३।३।९९	मिहान्तर १. २. ३.	३।३।१७	मीरुक १. २. ३.	५।४।१८
भारयष्टि २.	३।९।६	मिह १. २. ३.	३।३।१२६	मीषण १. २. ३.	३।९।०९
भारवह १. २. ३.	३।७।२२२	" १.	३।३।१६०	मीप्स १. २. ३.	३।९।७८
	३।७।२२२	" १.	३।४।२७	मुक्त १. २. ३.	५।४।१०८
भारवाह १.	३।९।६	मिहकी २.	४।४।१०	मुम्न १. २. ३.	५।४।१२४
भारसह १.	३।४।६६	मिहलीचक ३.	३।३।५	मुज १.	३।६।४५
भारिक १.	३।९।६	मिहसङ्काटी २.	४।३।१२८	" १.	३।३।१९३
भारित ३.	५।१।६२	मिहपाल १.	३।७।१६६	" १. २.	४।४।७१
भारुष १.	३।५।५८	मित्त ३.	४।४।५६	मुजग १.	४।१।५
" १.	३।६।१०३	मित्तिका २.	४।३।३७	मुजगाह्य ३.	३।३।२९
भार्गव १.	२।१।३४	" २.	७।२।१८	मुजङ्ग १.	४।१।५
भार्गवी २.	१।१।३६	मिदा २.	५।२।४१	" १.	४।४।३९
" २.	३।३।२३३	मिदु १.	१।२।१३	मुजङ्गम १.	४।१।५
भार्गी २.	३।८।८१	मिदुर १.	१।२।१३	मुजङ्गारि १.	२।३।३७
भार्या २.	४।४।३४	" १.	३।७।८३	मुजि १.	१।२।१८
भालुक १.	३।४।३३	मिह १.	४।२।२९	मुजिष्य १.	३।९।२
भाव १.	३।६।१७४	मिह १. २. ३.	५।४।१११	" १.	३।९।४
" १.	३।९।८०	" १. २. ३.	६।४।११	" १. २. ३.	७।४।२२
" १.	३।९।९७	मिहकुम्भ १.	३।९।४	मुरण्यु १.	७।१।५९
" १.	६।१।४३			मुवन ३.	३।६।२०६

# भुवन ]

## वैजयन्तीकोषः

## [ मेल

भुवन ३.	४११२	भूपदी २.	३३११८३	मृङ्ग १.	२३३४२
" ३.	४२२	भूपद्मा १.	३३३२१९	" ३.	३८१०४
भुवन्य १.	७११५९	भूभुज् १.	३३७१	" ३.	३८१०७
भुवस् १. ४.	३६१२०६	भूमृत्सम ३.	८११२०	मृङ्गराज ३.	३३३१०७
भुसुण्डी १.	३३७१७०	भूमि २.	३१११	" १.	८१३३६
( भुसुण्डी )		" २.	६१२२७	मृङ्गरीट १.	१११५२
भू २.	३११४	भूमिकन्दर ३.	३३३१५३	मृङ्गा २.	३८१५१
" २.	८१२१६	( भूमिकन्दक )		मृङ्गाण १.	२३३४२
" २.	८६४	भूमिका २.	३११६८	मृङ्गार १.	४३१०८
भूधन १.	४१४५३	भूमिकागत १.	३११६८	मृङ्गारी २.	२३३४७
भूत १. ३.	१३३२	भूमिकूरमाण्ड १.		मृङ्गिन् १.	१११५२
" ३.	३६१२०६		३३३१९५	मृङ्गिरिटि १.	१११५२
" ३.	४१४१	भूमिमयी २.	२११२३	मृङ्गकण्ठ १.	३१५५३
" १. २. ३.	५११९९	भूमिलाभ १.	३३३२०१	" १.	३१५६६
" १. २. ३.	६१५५९	भूमिस्पृष्ट १	३८११	मृङ्गकण्ठक १.	३१५१००
" १. ३.	८११३०	" १.	७११५९	मृत्क १. २. ३.	३११५
भूतग्राम १.	५१११७	भूयिष्ठ १. २. ३.	५१४८५	मृत्ति १.	३११५
भूतह्री ३.	३३३१२१	भूरद १.	३३३१३३	मृत्तिभुज् १. २. ३.	३११५
भूतदमनी २.	१११४९	भूरि १. ३.	३३२२०	मृत्त्य १.	३११२
भूतघात्री २.	३३१२	" १. २. ३.	५१४८५	मृत्त्या २.	३११६
भूतपुष्प १.	३३३१६९	भूरिमाय १.	३३३३८	मृत्त्य १.	४११५०
भूतफल १.	३३३१६६	भूरिलोह ३.	३३२२९	मृत्श १. २. ३.	५१४३३१
भूतलोम्व ३.	३३२३०	भूरिश्रवस् १.	१३२५	मृत्शकोपन १. २. ३.	५१४३२
भूतवास १.	३३३१७६	भूरुह १.	३३३४	मृत्शकृत १. २. ३.	३३७१४९
भूतसम्भव १.	२११९४	भूरुह १.	३३३४	मृष्ट १. २. ३.	४३३९३
भूतसारी २.	३३८८२	भूर्ज १.	३३३४५	मृष्टयव १.	४३३७१
भूतारम्भ १.	७११६०	भूर्जघ्न १.	३३३४५	मेक १.	३१५२९
भूतापुत्र १.	१३३२	भूलता २.	४११५९	" १.	४११४७
भूति २.	१३३३३	भूलवण २.	३८१२२	" १. २. ३.	६१५५९
" २.	४३३८७	भूलल्लर ३.	३३३१५३	मेटक १.	३८६६९
" २.	६१२२७	भूलाक १.	३३३१	मेद १.	३३३३३
" २.	८१५३४	भूलाक ३.	४१३३	" १.	६१३४२
भूतिक ३.	७३३२६	भूलाक ३.	४३३३३३	मेदित १. २. ३.	५१३३३
भूतेषा १.	११३३३	भूप्यु १. २. ३.	५१३४१	मेन १.	६१३४२
भूतेष्टा २.	२१३७०	भूत्तुण ३.	३३३२३४	मेय १.	५१३४२
" २.	२१३८०	भूत्तुण् १.	६१३४२	मेरी २.	३१३३३
भूवार १.	३३३६	भूत्फोट ३.	३३३१५३	मेरीनाव १.	२३३३३
भूवेष १.	३३३१	मृकुंस १.	३१३६७	मेल १.	३३३३
भूधर १.	३३३१	मृकुटि २.	३१३९१	" १.	४३३३३
भूनामन् २.	३३३१७	मृगु १.	३३३६		
भूप १.	३३३१	मृङ्ग १.	२३३२७		

मेल १. २. ३.	६५५५७
मेलन ३.	५१२१२
मेलुक १.	१११५२
मेपज ३.	४१११४१
मैस ३.	३१८१२
" ३.	५१११३
मैमरथी २.	२११६१
मैरव १. २. ३.	३१९७९
" १.	८११६०
मैपज्य ३.	४१११४१
मोः ( -स् ) ४.	८१८१२
मोग १.	४११२१
" १.	६११४४
मोगभूमि २.	१११११
मोगवती २.	४१११४
" २.	४१२२५
मोगिन् १. २. ३.	७१५३१
मीगिनी २.	७१५३२
मोज १ व.	३११३७
" १.	३१५६२
मोजन ३.	४१३१०२
मोजनीय ३.	३१८११९
मोज्य ३.	३१३६२
मोल १.	३१२२१
मौम १.	११२३२
मौरिक १ व.	३११३१
" १.	३१७२१
अकुंस १.	३१९६७
अकुञ्ज १.	३१५१५
अकुटि २.	३१९९१
अम १.	३१६१७७
" १.	३१९१८
" १.	४१२११
" १.	५१२१०
अमन्त १.	५१२११
( गृहकोलहक )	
अमर १.	२१३४२
" १. २. ३.	७१५६२
अमरक १.	३१८१३५
" १.	४११९९
अमरालक १.	४११९९

अमरेष्ट १.	८११५९
अमि २.	५१२१०
अप १.	५१११०२
अष्ट १. २. ३.	५१११०२
आज् १.	११३११
आणक्षक	३१५२५
आवृ १.	४११३१
" १.	४११४७
आतुन्य १.	७११५९
आत्र १.	३१८१४१
आत्रीय १.	४११४२
आन्ति २.	५१२१०
आमकादि १.	३१२३८
आमर ३.	३१८१३५
आमरी २.	१११५९
आप् १.	५१२१६
अकुंस १.	३१९६७
अकुट १.	३१९१६७
अकुटि २.	३१९९१
अ २.	४११९६
" २.	८१९१२
अकुंस १.	३१९६७
अकुटि २.	३१९९१
अण १.	६११४०
अणि २.	४१२२१
अण १.	३१५१५
अणक १.	३१५३१
म	
मक १.	३१५२९
मकर १.	११२६०
" १.	४११५१
" १.	८१६१३
" १.	८१६१५
मकरध्वज १.	१११२७
मकरन्द १.	३१३१९
मकरवाहन १.	११२४५
मकरालय १.	४१२११
मकुट १. ३.	४११३३५
मक्षण १.	३१७६७
मक्षिका २.	२१३४४
मक्षुण ३.	५११४८

मक्ष १.	३१६४२
मगध १ व.	३११३१
मघवत् १.	११२२
मघा १ व.	२११४३
मङ्ग १.	४११२६
मङ्गश १.	३१५७०
मङ्गु ४.	८१८११
मङ्ग १. ३.	३१२१७
मङ्गल १.	२११३१
" १.	५१३४८
मङ्गलध्वनि १.	३१६५७
मङ्गलमालिका २.	३१६५७
मङ्गलादिक ३.	३१६५८
मङ्गल्य १.	३१३३०
" ३.	३१८१४०
" ३.	३१८१४९
" ३.	३१३११४
मङ्गल्या २.	३१३१९८
" ३.	३१८१०८
" २.	५१३१५८
मङ्गिनी २.	४१२१५
मङ्गिका २.	८१९४२
मज्ज १.	४१११०
मज्जा २.	३१३१४
" २.	४१११०
मज्जाकर ३.	४११०९
मज्ज १.	४१३३२
मज्जक १.	४१३६४
मज्जन ३.	३१५२४
मज्जरी २.	३१३२०
मज्जरी २.	३१३११९
मज्जरीक १.	३१३२०
मज्जिष्ठा २.	३१३३५
मज्जी २.	३१३२०
" २.	३१३६२
मज्जी १. ३.	४१३१४५
मज्जु १. २. ३.	५११३३४
मज्जुल १. २. ३.	५११३३४
मज्जुपा २.	४१३६३

मञ्जूषा ]

वैजयन्तीकोषः

[ मधु

मञ्जूषा २.	७।२।१
मट १.	३।५।१८
मटची २.	२।२।७
मठ १.	४।३।२७
” १. २. ३.	८।९।३९
मठर १.	५।३।३
मठी २.	८।९।३९
मट्टिका २.	३।६।५१
( मट्टिका, मट्टिका )	
मट्ट १.	३।९।१३५
मट्टकैरिक १.	३।५।३१
मणि १. २.	३।२।३६
” १. २.	४।३।६२
” १. २.	४।३।७३
” १. २.	६।५।६२
मणिक १.	४।३।५६
मणिकण्ठ १.	२।३।२९
मणिकार १.	३।५।६३
” १.	३।९।१५
मणित ३.	२।४।७
मणिवन्ध १.	४।४।७३
मणिल १. २. ३.	५।४।८
मणिसालु १.	१।३।१२
मणिसोपान ३.	४।३।१४२
मणीच ३.	७।३।२७
मणीचक ३.	३।३।१८
मण्टप १. ३.	४।३।२८
मण्डजात ३.	३।८।१४०
मण्ड १. ३.	४।३।७७
” १.	५।१।४७
मण्डन ३.	४।३।१३३
” १. २. ३.	५।४।४१
मण्डपीठिका २.	२।१।७
मण्डल १.	३।४।६९
” ३.	३।७।४९
” ३.	३।७।१८७
” ३.	४।४।१२४
” १. २. ३.	७।५।६५
मण्डलपत्रिका २.	३।३।९२
मण्डलाग्र १.	३।७।१६०
मण्डलिन् १.	३।४।७२

मण्डलिन् १.	४।१।७
” १.	४।१।८
” १.	४।१।१०
” १.	४।१।१३
” १.	७।१।६०
मण्डलेश्वर १.	३।७।२
मण्डहारक १.	३।५।४४
मण्डिका २.	४।३।७८
मण्डकी २.	३।७।७९
मण्डूक १.	३।७।५१
” १.	४।१।४८
मण्डूकपर्ण १.	३।३।६८
मण्डूकपर्णी २.	३।३।१४४
मण्डूर ३.	३।२।३६
मत ३.	३।६।१७४
” ३.	३।८।१०७
मतक्कज १.	३।७।६०
मतस्त्रिका २.	८।९।४२
मति २.	३।६।२३३
” २.	६।२।२७
मत्कुण ३.	३।७।१५४
” १.	४।१।३५
मत्त ३.	३।७।६७
” १. २. ३.	५।४।३७
मत्तकाशिनी २.	४।४।१२
मत्तवारण ३.	४।३।३१
” ३.	४।३।१६४
मत्त ३.	३।८।३०
मत्सर १. २. ३.	७।५।६३
मत्स्य १.	१।१।१८
” १.	४।१।४१
मत्स्यगु १.	३।६।१५७
यत्स्यण्डी २.	३।८।१३३
मत्स्यधानी २.	२।९।४२
मत्स्यनाशन १.	२।३।३४
मत्स्यपित्ता २.	३।८।६८
मत्स्यराज १.	४।१।५१
मत्स्यवेधन ३.	३।९।४२
मत्स्यव्रतिन् १. २. ३.	३।६।१३१
मत्स्यसङ्घात १.	४।१।४५

मत्स्याही २.	३।३।१४४
” २.	३।३।१५६
मथित ३.	३।८।१००
मथिन् १.	३।९।३१
मथुरा २.	४।३।६
मद १.	३।३।१८८
” १.	३।७।८२
” १.	५।२।३२
” १.	८।५।३६
मदकल १.	३।७।६८
मदकोहल १.	३।४।५४
मदन १.	२।३।३
” १.	३।३।४९
” १.	३।३।६१
” १.	३।८।५५
” १.	३।८।१३७
” १.	७।१।६१
मदनध्वजा २.	२।१।७५
मदना २.	३।९।४६
मदनी २.	३।४।३६
मदवृन्द १.	३।७।६२
मदमत्तक १.	३।३।७७
मदयन्ती २.	३।३।१८३
मदस्थान ३.	३।९।७३
मदिरा २.	३।९।४५
मदिष्ठा २.	३।९।४६
मदुर १.	३।३।३
मदोत्कट १.	२।३।१४
” ३.	३।९।४८
मदोदका २.	३।८।८२
मदगु १.	२।३।११
” १.	३।५।५२
” १.	३।५।७१
” १.	३।५।८४
” १.	३।५।९३
मदलध्वनि १.	२।४।१०
मद्य ३.	३।९।४४
मद्यबीज ३.	३।९।५०
मद्यलालस १.	३।३।२६
मद्यसन्धान ३.	३।९।५१
मधु १.	२।१।८३



मधु १.	२।१।८७	मधुराङ्गक १.	पा३।२७	मध्वालुक १.	३।३।२१०
" १.	३।३।६१	मधुराम्लक ३.	३।८।१३६	मध्वासव १.	३।९।४९
" २.	३।३।१४३	मधुलिङ्ग १.	२।३।४२	मनरिशला २.	३।२।११
" १. ३.	३।८।१३४	मधुवाच १.	२।३।२७	" २.	३।३।२११
" ३.	३।८।१४५	मधुवार १.	३।९।५२	मनस् ३.	३।३।१७२
" १.	पा३।३३	मधुवत १.	२।३।४३	मनसिज १.	१।१।२७
" १.	६।५।६१	मधुशिष्ट १.	३।३।५६	मनस्कार १.	३।६।१७४
मधुक १.	३।५।३७	मधुश्रेणि १.	३।५।४४	मनाक् ४.	८।८।१२
" १.	३।७।३०	मधुष्टील १.	३।३।४३	मनाका २.	७।२।१९
" ३.	३।८।१३४	मधुसख १.	१।१।२८	मनित १. २. ३.	पा३।१०१
" १.	पा३।३२	मधुसारथि १.	१।१।२९	मनीपा २.	३।६।१६३
मधुकर १.	२।३।४३	मधुसूदन १.	१।१।१५	मनीपिन् १.	३।६।३३५
मधुका २.	३।८।५६	मधुसूत्र १.	३।३।४३	मनुज १.	३।५।१
मधुकुक्कुटी २.	३।३।३४	मधुसवा २.	३।३।१८०	मनुज्येष्ठ १.	३।७।१५८
मधुक्रम १.	३।९।५२	मधूक १.	३।३।४३	मनुज्य १.	३।५।१
मधुचीर १.	३।३।२२२	मधूच्छिष्ट ३.	३।८।१३७	मनुज्यधर्मन् १.	१।२।५६
मधुच्छद १. २.	३।३।३८	मधूपत्ता २.	४।३।६	मनोजव १.	३।५।५
मधुतृण १.	३।३।२२५	मधूल ३.	३।८।१३७	मनोजवा २.	१।२।३०
मधुप १.	२।३।४२	" १.	पा३।३३	मनोज्ञ १. २. ३.	पा३।१३४
मधुपर्क १.	३।६।६२	मधूलक १.	३।३।४४	मनोज्वला २.	३।४।१८२
मधुपर्ण २.	८।२।८	" १.	पा३।२५	मनोमिधा २.	३।२।१२
मधुपुष्प १.	३।३।४३	" १. २. ३.	८।९।३३	मनोरथ २.	३।३।१७९
मधुबीज १.	३।३।७४	मधूलिक १.	पा३।३३	मनोरम १. २. ३.	पा३।१३५
मधुबोल १.	पा३।३८	मधूषिका २.	४।३।६	मनोविकार १.	३।९।८०
मधुमक्षिका २.	२।३।४५	मध्य ३.	३।९।१२३	मनोहर १. २. ३.	पा३।१३५
मधुमद्य ३.	३।९।४८	" १. ३.	४।४।६७	मनोहरी २.	३।८।७७
मधुमालक १.	पा३।३७	" १. २. ३.	पा१।२९	मन्नु १.	३।७।४७
मधुयष्टिका २.	३।८।१०३	" १. २. ३.	६।५।६३	मन्त्र १.	३।६।३३
मधुर ३.	३।८।१०३	मध्ययन्त १.	४।३।८९	" १.	६।१।४५
" ३.	३।९।११२	मध्यदेश १.	३।१।२२	मन्त्रजिह्व १.	१।२।१७
" १. २. ३.	४।३।८२	मध्यन्दिन १.	२।१।६५	मन्त्रज्ञ १.	३।७।२६
" १.	पा३।२५	मध्यम १.	३।९।१३२	मन्त्रिन् १.	३।७।१८
" १.	पा३।२७	" १.	४।४।६७	" १.	३।७।१९
" १. २. ३.	७।३।२२	" १. २. ३.	पा३।७७	" १.	८।१।४५
मधुरवाच १. २. ३.	पा३।४४	मध्यमा २.	४।४।७४	मन्थ १.	३।९।३१
मधुरस १.	३।३।२१०	मध्यमीय १. २. ३.	पा३।७७	" १.	४।३।७१
मधुरसा २.	८।२।८	मध्यमास्त्रात १.	३।६।२३०	मन्थपात्र ३.	३।९।३२
मधुरस्वन १.	४।१।५५	मध्यरात्र १.	२।१।६६	मन्थर १. २. ३.	३।७।१५०
मधुरा २.	३।१।२५	मध्यस्थ १. २. ३.	३।८।९		
" २.	४।३।६	मध्याह्न १.	२।१।६५		

मन्थर ]

मन्थर १. २. ३.	७५५६४
मन्थविष्कम्भ १.	३१९३२
मन्थान १.	३१९३१
मन्थोदधि १.	३१९११
मन्थ १.	१२३३४
” १.	२११३५
” ३.	३८११४०
” १. २. ३.	५४१५५
” १. २. ३.	६५१६०
मन्द्गामिन् १. २. ३.	३११५०
मन्दर १.	४३११४०
मन्दरमणि १.	१११४६
मन्दरवासिनी २.	१११६३
मन्दाकिनी २.	११११३
मन्दाक्ष ३.	३६१९९४
मन्दागा २ व.	२११४१
मन्दार १.	१३११४
” १.	३३१४४
मन्दिर ३.	४३११८
” ३.	७३१२७
मन्दुपाल २.	३१५३१
मन्दुरा २.	४३१२१
मन्दोस्नात १.	३६१२३०
मन्दोष्ण ३.	५३१९
मन्द्र १. २. ३.	२१११३
” १.	३१७६२
मन्द्रभद्रसृग १.	३१७६५
मन्द्रलक्षण ३.	३१७६३
मन्मथ १.	१११२७
” १.	३३३३२
मन्मथसख १.	२११८३
मन्या	३१७८५
” २.	४१११७
मन्यु १.	३६११८३
” १.	६११४५
मन्वन्तर ३.	२११९३
मय १.	१३१७
” १.	३१७६७
मयष्टक १.	३८१३८

वैजयन्तीकोषः

मयू १.	१३३३
मयूक १.	२३३३७
मयूख १.	२१११६
” १. २. ३.	८१९२५
मयूर १.	२३३१४
” १.	२३३३६
मयूरक ३.	३२३४२
” १.	३३३११५
” १.	३३३१२०
मरकत ३.	३२३३८
मरण ३.	३६३२०२
मरणाालस ३.	३६३१७
मरन्द १.	३३३१९
मराल १.	२३३५
” १.	३३३१९२
” १. ३.	५३३१७
मरिच ३.	३८१७९
मरिष्टक १.	३२३३८
मरीच ३.	३८१७९
मरीचि १. २.	२१११६
मरीचिका २.	२११२२
” २.	५११४२
मरु १ व.	३११३८
” १.	३११४२
मरुक १.	३११११
मरुजा २.	३११२२
मरुत् १.	१११२
” १.	१२३९
” २.	३३३११७
मरुवत् १.	१२३४
मरुद्गण १ व.	१३१८
” १ व.	१३११०
मरुधव १.	३३३६३
मरुन्माला २.	३३३११७
मरुल १.	३३३७३
” ३.	४२३१
मरुवक ६.	३३३४९
मरुक १.	७११६२
मरुद्गव १.	३३३६४
मर्क १.	१२३४९
” १.	६११४७

[ मलय

मर्कट १.	३१३३९
” ३.	४३३४८
मर्कटक १.	३८३६२
” १.	४१३३४
मर्कटास्य ३.	२२३२४
मर्कटी २.	४३३४८
मर्कस १.	३९३५१
मर्कोटपिपीलिका २.	४१३३७
मर्त १.	३६३२०६
मर्त्य १.	३५३१
मर्त्यलोक १.	३६३२०६
मर्द १.	३६३१६७
मर्दन ३.	५२३३०
मर्दनी २.	३१७१५५
मर्दल १.	३९३३३४
मर्दलध्वनि १.	२१३१०
मर्मभेदन १.	३१७१७९
मर्मर २.	२३३८
” १.	५१३१४४
मर्मरा २.	४३३७०
मर्मस्पृश १. २. ३.	५१३११२
मर्यादा २.	३९३१५
” २.	४२३१३
” २.	४३३११
” २.	७२३१९
मर्ष १.	३६३१८४
मल ३.	३२३२९
” १.	३५३२४
” १.	४१३३२
( मल )	
” १. ३.	४१३११९
” १. ३.	४१३१२०
” १.	५१३१४४
” १. ३.	६१३६५
मलद १ व.	३१३३६
” १.	३८३३५
मलना २.	३३३१६०
मलय १.	३२३३६
” १.	७१३६३

मलयजं १.	३१८११२	मयिघटी २.	३१९२५	महाग्राम १.	३१९२
मलयद्वीप ३.	३१११४	मसुर १.	३१८१४०	महाग्रीव १.	३१९६७
" ३.	३१११४	मसुरक १.	३१८१४०	महाघोण्टा २.	३१९७८
मलयवासिनी २.	१११६३	मसुरिका २.	३१८१४०	महाचण्डी २.	१११६४
मलयद्वाशस् २.	३१११५	मसूरी २.	३१११३७	महाचारी २.	३१९१४२
मलवारिन् १. २. ३.	५१११६	मसृण १.	५३३४	महाजम्बू २.	३१३९२
		मसृणत्व ३.	५३३१	महाजाली २.	३१३१६२
मलयविष्टम्भ १.	३१११२८	मसृणी २.	३१८१४५	" २.	३१८१२३
मलस्रुति २.	३१११२८	मस्कर १.	३१३१२५	महाज्वाला २.	११२१२९
मलहारक १.	३१७८७	मस्करिन् १.	३१६१६०	महाक्षप १.	३११५५
मलिन ३.	३१२११	मस्तक १. ३.	३१७८६	महाटवी २.	३१३१२
" १. २. ३.	५११६६	मस्तिक १.	३१७८५	महातेजस् १.	१११५५
मलिना २.	३१११५	मस्तिष्क १.	३११११२	महात्मन् १. २. ३.	५११५६
मलिनाम्बु ३.	३१९१२१	मस्तु ३.	३१८१४४		
मलिम्बुच १.	२१३४४	मस्तुलङ्ग १. ३.	८१५१९	महादंष्ट्र १.	३१११४
" १.	३१६१७७	मस्तुलङ्गक १.	३११११२	महादेव १.	१११४१
" १.	३१९१५५	मह १.	३१६१६१	महादेवी २.	१११५८
मलीमस १. २. ३.	५१११६	महः ३.	३१६२०७	" २.	३१७३१
		महत १.	३१६१६३	महाधन १. २. ३.	३१३११८
मलुक १.	३१७७२	" ३.	३१६२०७		
" १.	३१६६७	" १. २. ३.	६१५६३	महाधातु १.	३११०४
मलुक १.	२१३१२	" ३.	८१३१८	महानट १.	१११४४
मल्ल १.	३१५१५५	महती २.	३१३१३८	महानर्मन् १.	३१५७१
" १.	३१३६७	" २.	३१९११९	महानस ३.	३१३५४
" १.	३१७८८	महत्तरी २.	३१७३७	महानाद १.	३१३११
मल्लक १.	२१३३१	महर् ३. ४.	३१६२०७	महानील ३.	३१२१४०
मल्लनाग १.	३१६१५९	महत्विज् १.	३१६१७९	महानेमि १.	२१३१५
मल्लि २.	३१२१२७	महस् ३.	३१३२४	महापद्म १.	२१३११
" १. २.	८१९२६	महाकदम्बक १.	३१३१६०	महापद्मिन् १.	२१३२३
मल्लिका २.	३१३१८३	महाकन्द ३.	३१३२०४	महापद्म १.	३१३२१६
मल्लिकाकुसुमप्रिय १.	३१३३५	" ३.	३१८१७६	महापद्म १.	११२१६७
		महाकाय १.	३१७३१	" १.	३१३२०९
मल्लिकाञ्च १.	२१३१७	महाकार १. २.	३१३३९	" १.	३१११२
" १.	३१७९२	महाकाल १.	८१३३७	" ३.	३१२४०
मल्ली २.	३१३५७	महाकाली २.	११३६१	महाप्रलय १.	२११९४
" २.	८१९२६	महाकीर्तन ३.	३१३१९	महाफला २.	३१३८८
मल्लक १.	२१३१४४	महाकोशातकी २.		" २.	३१३९२
मल्लकहरी २.	३१३१२४		३१३१५९	" २.	३१३१७०
मल्लकिन् १.	३१३२८	महागण १.	५१३३१	महाबल २.	११२५०
मल्लन ३.	२१३१२	महागन्धा २.	११३६४	" २.	३१८१३१
मल्लक १.	२१३३३	महाग्रहायणी २.	२१३७८	महाबुस २.	३१८३३

[ मन्थर ]

मन्थर १. २. ३.	७५५६४
मन्थविष्कम्भ १.	३१९३२
मन्थान १.	३१९३१
मन्थोदधि १.	३११११
मन्द १.	११२३४
" १.	२१३३५
" ३.	३१८१४०
" १. २. ३.	५१४५५
" १. २. ३.	६५५६०
मन्दगामिन् १. २. ३.	३१७१५०
मन्दर १.	४३११४०
मन्दरमणि १.	१११४६
मन्दरवासिनी २.	१११६३
मन्दाकिनी २.	११११३
मन्दाक्ष ३.	३१६१९४
मन्दागा २ व.	२११४१
मन्दार १.	११३१४
" १.	३१३४४
मन्दिर ३.	४३११८
" ३.	७३२२७
मन्दुपाल २.	३१५३१
मन्दुरा २.	४३२२१
मन्दोस्त्रात १.	३१६२३०
मन्दोष्ण ३.	५३१९
मन्द्र १. २. ३.	२१४१३
" १.	३१७६२
मन्द्रमद्रसृग १.	३१७६५
मन्द्रलक्षण ३.	३१७६३
मन्मथ १.	१११२७
" १.	३१३३२
मन्मथसख १.	२११८३
मन्या	३१७८५
" २.	४१४११७
मन्यु १.	३१६१८३
" १.	६११४५
मन्वन्तर ३.	२११९३
मय १.	११३१७
" १.	३१४१७
मयष्टक १.	३१८३८

वैजयन्तीकोषः

मयु १.	१३३३
मयूक १.	२३३३७
मयूख १.	२१११६
" १. २. ३.	८१२२५
मयूर १.	२३३१४
" १.	२३३३६
मयूरक ३.	३१२४२
" १.	३३३११५
" १.	३३३१२०
मरकत ३.	३१२३८
मरण ३.	३१६१०२
मरणालस ३.	३१६११७
मरन्द १.	३३३१९
मराल १.	२३३५
" १.	३३३१९२
" १. ३.	५३३१७
मरिच ३.	३१८७९
मरिष्टक १.	३१२३८
मरीच ३.	३१८७९
मरीचि १. २.	२१११६
मरीचिका २.	२११२२
" २.	५११४२
मरु १ व.	३११३८
" १.	३११४२
मरुक १.	३१४११
मरुजा २.	३१४२२
मरुत् १.	१११२
" १.	११२३९
" २.	३३३११७
मरुत्वत् १.	११२४
मरुद्गण १ व.	१३३८
" १ व.	१३३१०
मरुध्व १.	३१३६३
मरुन्माला २.	३३३११७
मरुल १.	३१४७३
" ३.	४१२१
मरुवक. व.	३१६४९
मरुक १.	७११६२
मरुध्व १.	३३३६४
मर्क १.	११२४९
" १.	६११४७

[ मलय ]

मर्कट १.	३१४३९
" ३.	४३३४८
मर्कटक १.	३१८६२
" १.	४१३३४
मर्कटास्य ३.	२१२२४
मर्कटी २.	४३३४८
मर्कस १.	३१९५१
मर्कोटपिपीलिका २.	४१३३७
मर्त १.	३१६१०६
मर्त्य १.	३१५१
मर्त्यलोक १.	३१६१०६
मर्द १.	३१६१६७
मर्दन ३.	५१२३०
मर्दनी २.	३१७१५५
मर्दल १.	३१९१३४
मर्दलध्वनि १.	२१४१०
मर्मभेदन १.	३१७१७९
मर्मर २.	२१४८
" १.	५१४१४४
मर्मरा २.	४३३७०
मर्मसृष्ट १. २. ३.	५१४११२
मर्यादा २.	३१९१५
" २.	४१२३३
" २.	४३३११
" २.	७१२१९
मर्ष १.	३१६१८४
मल ३.	३१२२९
" १.	३१५२४
" १.	४१३३२
( मल )	
" १. ३.	४१४११९
" १. ३.	४१४१२०
" १.	५१४१४४
" १. ३.	६१५६५
मलद १ व.	३१३३६
" १.	३१८३५
मलना २.	३३३१६०
मलय १.	३१२३३
" १.	७१५६३



[ मलयज ]

मलयज १.	३१८११२
मलयद्वीप ३.	३१११४
„ ३.	३१११६
मलयवासिनी २.	११११६३
मलयद्वाशस् २.	४४११५
मलवारिन् १. २. ३.	५४११६
मलयविष्टम्भ १.	४४११२८
मलस्रुति २.	४४११२८
मलहारक १.	३१७८७
मलिन ३.	४२११
„ १. २. ३.	५४११६
मलिना २.	४४११५
मलिनाम्बु ३.	३११२५
मलिगुल्लव १.	३३३४४
„ १.	३१६७७
„ १.	३११५५
मलीमस १. २. ३.	५४११६
मल्लक १.	३१४७२
„ १.	४१६६७
मल्लक १.	२३३२
मल्ल १.	३१५५५
„ १.	४३३६७
„ १.	४४१८८
मल्लक १.	२३३३१
मल्लनाग १.	३१६१५९
मल्लि २.	६१२२७
„ १. २.	८११२६
मल्लिका २.	३३३१८३
मल्लिकाकुसुमप्रिय १.	३३३३५
मल्लिका १.	२३३७
„ १.	३३७९२
मल्ली २.	४३३५७
„ २.	८११२६
मल्लक १.	२३३४४
मल्लकहरी २.	४३३१२४
मल्लकिन् १.	३३३२८
मल्लान ३.	२३३२
मल्लक १.	२३३३

शब्दानुक्रमिका

मपिघटी २.	३११२५
मसुर १.	३१८१०
मसूरक १.	३१८१०
मसूरिका २.	३१८१०
मसूरी २.	४४११३७
मसृण १.	५३३४
मसृणत्व ३.	५३३१
मसृणी २.	३१८१५
मस्कर १.	३३३२१५
मस्करिन् १.	३३३१६०
मस्तक १. ३.	४४१८६
मस्तिक १.	४४१८५
मस्तिक १.	४४११२
मस्तु ३.	३१८१४४
मस्तुल्लङ्ग १. ३.	८५११९
मस्तुल्लङ्गक १.	४४११२
मह १.	३३३६१
महः ३.	३३३२०७
महत् १.	३३३१६३
„ ३.	३३३२०७
„ १. २. ३.	६१५६३
„ ३.	८३३१८
महती २.	३३३१३८
„ २.	३११११९
महत्तरी २.	३३३३७
महर् ३. ४.	३३३२०७
महत्विज् १.	३३३७९
महस् ३.	६३३२४
महाकदम्बक १.	३३३६०
महाकन्द ३.	३३३२०४
„ ३.	३३८१७६
महाकाय १.	३३३६१
महाकार १ व.	३३३३९
महाकाल १.	८३३३७
महाकाली २.	१११६१
महाकीर्तन ३.	४३३१९
महाकोशातकी २.	३३३१५९
महागण १.	५३३३१
महान्धा २.	१११६४
महाग्रहायणी २.	२३३१७८

[ महाबुस ]

महाग्राम १.	४३३२
महाग्रीव १.	३३३६७
महाघोष्ठा २.	३३३७८
महाचण्डी २.	११३६४
महाचारी २.	३३३१४२
महाजम्बू २.	३३३९२
महानाली २.	३३३१६२
„ २.	३३८१२३
महाज्वाला २.	१२३२९
महाक्षय १.	४३३५५
महाटवी २.	३३३३२
महातेजस् १.	११३५५
महात्मन् १. २. ३.	५४१५६
महादंष्ट्र १.	३३३४४
महादेव १.	११३४१
महादेवी २.	११३५८
„ २.	३३३३१
महाधन १. २. ३.	४३३११८
महाधातु १.	४३३१०४
महानट १.	११३४४
महानर्मन् १.	३३३७१
महानस ३.	४३३५४
महानाद १.	३३३४१
महानील ३.	३३३४०
महानेमि १.	२३३१५
महापद्म १.	२३३११
महापद्मिन् १.	२३३२३
महापत्र १.	३३३२१६
महापद्म १.	१२३६०
„ १.	३३३२०९
„ १.	४३३१२
„ ३.	४३३४०
महाप्रलय १.	२३३१९४
महाफला २.	३३३८८
„ २.	३३३९२
„ २.	३३३१७०
महाबल २.	१२३५०
„ २.	३३८१३१
महाबुस २.	३३८३४

# महाभुस ]

महाभुस २.	३१८५१
महाभूत ३.	३१६१२०६
महामात्र १.	३१७८८
” १. २. ३.	५१४५६
महामुख १.	४११५३
महासुनि १.	३१३७९
महामूल्य १. २. ३.	४३११८
महामृग १.	३१७६१
महामेघ १.	१३११२
महाम्बुज ३.	५११३२
महायज्ञ १.	३१६६३
महायव १.	३१८५२
महारजत ३.	३१२१८
” ३.	३१८९१
महारण ३.	३१७१२०६
महारस १.	३१३२२२
” १.	३१३२२५
महारसा २.	३१३११०
” २.	३१३१२३
महाराज १.	३१९१०३
” १.	४१४७६
” १.	८११२६
महारात्र १.	२११६६
महारात्री २.	१११६१
महाराष्ट्र १ व.	३११३३
महालय १.	८११३६
महालोध्र १.	३१३५२
महावस १.	४११५४
महाविड ३.	३१८१२३
महाविष्णु १.	१११३१
महावीर १. २. ३.	८५५२०
महावृष १.	३१८३५
महावेग १.	३१५४०
महाप्यसनसप्तक ३.	३१७११
महाव्रत १.	१११४५
महाशय १. २. ३.	५१४१६
महाशक्त १.	४११४४

# वैजयन्तीकोषः

महाशक्ता २.	३१३३४
महाशालि १.	३१८३२
महाशिला २.	३१७१६९
महाशूद्र १.	३१९२८
महाश्रावणिका २.	३१९१४
महाश्वेता २.	३१३१३५
” २.	३१३१९६
महासना २.	३१२११
महासन्धा २.	३१३१०५
महासर्प १.	४११११
महासहा २.	३१३१०७
” २.	३१३१८८
” २.	८१२१५
महासुति २.	२११९४
महासेन १.	१११५५
महास्नायु २.	४१४११७
महाहस १.	३१९८४
महित १.	३१२५
( महिक )	
महिमव १.	११२२७
महिमन् १. ३.	८१३३१
महिला २.	४१४४
महिष १.	३१४८
” १.	३१५१३
महिषवाहन, १.	११२३३
महिषाक्ष १.	३१८११२
महिषी २.	२११७४
” २.	३१७३१
” २.	७२११९
मही २.	३११३
महीपति १.	३१३३७
महेच्छ १. २. ३.	५१४१६
महेन्द्र १.	१२१७
महेन्द्रजित् १.	१११३७
महेश्वर १.	१११३८
” १.	३१३५३
महेश्वरी २.	३१२२६
महोक्ष १.	३१४५५
महोत्पल ३.	४२१३७
महोदधि १.	४२१२२
महोदय १.	४३१७

# [ माणव्य

महोदया २.	४१४६
महोदरी २.	३१३१९९
महोद्रेक १.	५११५४
महौजस् १.	१११५६
महौषध १.	३१३२०६
” ३.	८३११०
मा २.	१११३६
” २.	८१७१०
” २.	८१९१२
मांस ३.	४१४१०६
मांसकर ३.	४१४१०५
मांसकील १.	४१४१३३
मांसनिष्काथ १.	४३१८७
मांसल १. २. ३.	५१४६
मांसलता २.	४१४११२
मांसविक्रयिन् १.	३१९३७
मांसि १.	५१३५६
मांसिक १.	३१९३७
मांसी २.	३१८१००
माकन्द १.	३१३२५
माक्षिक ३.	३१२१५
” ३.	३१८१३५
मागध १.	३१५१६
” १.	३१५७९
” १.	३१५८०
” १.	३१५८७
” १.	३१७३०
” १.	३१८८४
मागधी २.	३१३१६०
” २.	३१८७६
मागधी २.	३१८५६
माघ १.	२११८२
माघी २.	२११७४
माघ्य १.	३१३१९१
माटङ्क १.	४३३३४
माठि २.	३१७१५३
माठि २.	३१३१८
माण १.	३१३२०९
माणव १.	४३१४०
माणवक १. २. ३.	५१४३
माणव्य ३.	५११७

# माणिष्य ]

माणिष्य ३.	३१२४१
माणिष्या २.	४११३०
माणिचरि १.	१३३३
माणिमन्थ ३.	३१८१२०
मातङ्ग १.	३१७५४
मातङ्गी २.	८१२१४
मातरपितर १ द्वि.	४१४४७
मातरिश्चन १.	११२४७
मातलि १.	११२१९
मातापितृ १ द्वि.	४१४४७
मातामह १.	४१४३०
” १ ब.	४१४४९
मातुल १.	४१४३३
” १.	७११६१
मातुलपुत्र १.	८११५४
मातुलानिका २.	३१८५१
मातुलानी २.	४१४३६
मातुलाहि १.	४१११९
मातुली २.	४१४३६
मातुलङ्ग १.	३३३३३
” १.	३३३३३
मातुलङ्गी २.	३३३३४
मातृ २.	२११७४
” २.	४३१६३
” २.	४१४२६
” २.	६१२२८
” २.	८१६१८
” २.	८१९४४
मातृका २.	४१४२१
मातृमुख १. २. ३.	४१४४६
मातृशिष्ट १. २. ३.	४१४२१
मातृष्वसेय १.	४१४४२
मातृष्वक्षीय १.	४१४४२
मात्र १. २. ३.	४१४३६
मात्रा २. ३.	६१५६२
” २. ३.	६१५६३
मात्सर्य ३.	३१६१८४
माथ १.	४१४३८

# शब्दानुक्रमणिका

माथिक १.	३३३७५
माद १.	५१२३२
माधव १. ३.	३१९४९
” १.	७११६१
माधवी २.	३३३१८७
” २.	३१९४५
माधुर १.	३१६१०८
” १.	५३३३२
माध्वी २ ब.	२११२१
माध्वीक ३.	३१९४८
मानमन्दिर १.	११२४२
(मानमन्दर)	
मानव १.	३१५११
मानवी २.	३३३१८२
मानस ३.	३३३१७२
मानसौकस् १.	२३३३६
मानिन् १.	३३३१५०
मानी २.	५११५३
मालुष १.	३१५११
मालुष्यक ३.	५१११८
मान्दा २ ब.	२१११९
मान्य ३.	४१४३८
मान्वीर १.	२३३२८
मान्वीलव १.	२३३२८
माभीद १.	३३३७९
माया २.	११११६
” २.	३३३३८
” २.	३३३३६१
” २.	३३३३२
मायाविन् १. २. ३.	५१४२४
माथिक १. २. ३.	५१४२४
माथिन् १. २. ३.	५१४२४
मायु १.	४१४२१
मायूरी २.	३१९३३१
मार १.	१११२७
मारक १. ३.	३३३२०२
(मरक)	
मारजित् १.	१११३३
मारण ३.	३३३२१४
मारि २.	३३३२०२

# [ मार्षक

मारि २.	४१४१३७
मारिय १.	३३३१५०
” १.	३३३१०६
मारुङ्ग १.	५३३११
मारुत १.	११२१५०
मारुती २.	२१११५
मार्कव १.	३३३१०७
मार्ग १.	३३३१४९
” १.	६११४६
मार्गण ३.	३३३१७४
” १. २. ३.	५३३६०
” १.	७११६४
मार्गणा २.	३३३१२१
मार्गनिवेश १.	४३३१५
मार्गर १.	३३३३२
” १.	३३३१००
” १.	३३३४२
मार्गशीर्ष १.	२३३८१
मार्गायणी २.	२३३३८
मार्गित १. २. ३.	५३३९८
मार्ज १.	५३३११
मार्जन १.	३३३५२
” १.	५३३११
मार्जना २.	२३३१०
” २.	३३३१३०
मार्ज ३.	४३३९९
मार्जार् १.	३३३७८
” १.	३३३१५६
” १.	३३३७१
मार्जारकण्ठ १.	२३३३८
मार्जारकर्णिका २.	१११६३
मार्जारिका २.	३३३३६
मार्जारी २.	३३३३३
मार्जालीय १. २. ३.	८१५२०
मार्जिता २.	४३३९८
मार्तण्ड १.	२३३१३
मार्तण्ड १.	२३३१०
मार्तण्डिक १.	३३३७०
मार्षक १.	३३३१०६

[ माष्टि ]

माष्टि २.	३३११४७
माल ३.	३१११३
" १.	३३११२२
" १.	३११२५
मालती २.	३३११८२
मालतीतीरसम्भव १.	३८११३०
मालव ३.	३१११६
" १ व.	३११३७
" १.	३३११०६
मालवक १.	३१११६३
माला २.	३३११५४
मालाकार १.	३११३३
मालातृणक ३.	३३३२३४
मालिक १.	३११३३
मालिका २.	३३११८६
" २.	३३१२९
" २.	५११२४
मालुक १. २. ३.	२४१२०
" १.	३१११९
मालुघान १.	३१११९
मालुचा २.	३३३२१०
मालूर १.	३३३३०
मालोर्जर १.	३३३१२०
माल्य ३.	३३३२५
माल्यजीविन् १.	३११३३
माल्यवत् १.	३२११४
माष १.	३८१३५
" १.	५११४३
" १.	५११४४
" १.	५११४५
" १.	५११६३
माषपर्णी २.	३३३१०७
माषाक्षिन् १.	३३३११
माषीण १. २. ३.	३८१२०
माष्य १. २. ३.	३८१२०
मास १.	८११६१
मास १.	२११८०
मासतम १. २. ३.	५१११९
मासर १.	३११५१

वैजयन्तीकोषः

मासर १.	३३३७८
मासिक ३.	३३३६५
माहामलय ३.	३१११६
माहिर १.	१२१६
माहिष १. २. ३.	३१११४
माहिषाङ्गु १.	३१५४८
माहिष्मती २.	३३३१९
माहिष्य १.	३१५१२
" १.	३१५६९
माहेन्द्री २.	३३३१७५
माहेषी २.	३३३४२
माहेरवरी २.	१११६४
मित १. २. ३.	५११३६
मितद्रु १.	४२११२
मितम्पच १. २. ३.	५११५९
मित्र १.	२१११५
" ३.	३३३३९
" ३.	३३३४३
" ३.	३८१२२
" ३.	८११४७
मिथुस् ४.	८३१२७
मिथिला २.	३३३३७
मिथुन ३.	३३३१००
" ३.	३३३४८
" ३.	५१११५
" १. २. ३.	५१११६
" ३.	५१११६
" ३.	८३३१४
मिथुनत्व ३.	३३३१७१
मिथुनिन् १.	२३३२४
मिथ्या ४.	८८१३३
मिथ्याचर्या २.	३३३१९६
मिथ्याभियोग १.	३३३३२
मिर्मिर १. २. ३.	५१११९
मिश्र १. २. ३.	५११०८
मिश्रक ३.	३३३१२
मिष १.	३१५१४
" ३.	३३३१९५
मिषवत् १. २. ३.	५११६१
मिहिका २.	२२१९

[ मुखरा ]

मिहिर १.	२१११५
" १.	७११६२
मीढ १.	३३३६४
" १. २. ३.	५१११३
मीढा २.	३३३४६
मीन १.	३११४१
" १.	८३३१४
मीना २.	३३३१२३
मीनाङ्क १.	१११२७
मीमांसा २.	३३३२९
" २.	३३३१७५
मीलिका २.	३२३२७
( नीलिका )	
मुक १.	५३३५६
मुकुन्द १.	११११३
" १.	१२३६१
मुकुन्दक १.	३३३२०५
मुकुर १.	३३३१६२
मुकुल १. ३.	३३३१९
मुक्तकम्बुक १.	३११२०
मुक्तबन्धना २.	३३३१८३
मुक्ता २.	३११५६
" २.	३२३२९
मुक्ताफल ३.	३११५७
मुक्तामुक्त ३.	३३३१९६
मुक्तावली २.	३३३१३८
मुक्तास्फोट १.	३११५६
मुक्ति २.	३३३२३८
मुख ३.	३८३१२१
" ३.	३३३१५
" ३.	३३३१८६
" ३.	३३३२५
मुखज १.	३३३११
मुखबन्धन ३.	३८३१४१
मुखभूषण ३.	३२३३१
" ३.	३३३१०६
मुखमेव १.	३११८८
मुखमण्डन १.	३३३३९
मुखर १. २. ३.	५११४६
मुखरज्जु २.	३३३११२
मुखरा २.	२३३२०



मुखावास १.	३७७८
मुखवासन १.	५३१३
मुखशाला २.	४३२४
मुखशोभा २.	३६३५
मुख्य १. २. ३.	५४६३
मुख्योपाय १.	३७१२
मुख १. २. ३.	६४१२
मुचिर १. २. ३.	७५६६
मुचुटि १. २.	४४७९
मुचुटी २.	३७१९३
मुचुलिन्द १.	३३३६
मुञ्ज १.	३३२२८
" १.	३३२२९
मुञ्जकेशिन् १.	१११३
मुञ्जन ३.	२४१२
मुण्ड १. २. ३.	३६६
" १. ३.	४४८६
मुण्डन ३.	३६६
मुण्डा २.	३३१२५
" २.	४४१०
मुण्डित १. २. ३.	३६६
मुण्डितिका २.	३३१२५
मुण्डी २.	३३१२५
मुण्डीर १.	२११३
मुद् २.	३६१८८
मुदित १. २. ३.	५४३३
" १. २. ३.	५४९९
मुदिर १.	२१२२
मुद्ग १.	३८३६
मुद्गर १.	३६१०२
" १.	३७१७१
मुद्गरक १ व.	३१२९
मुद्रित १. २. ३.	५३९७
" १. २. ३.	५४११०
मुधा ४.	८८१२
मुनय १. ३.	३६१६८
मुनि १.	११३३
" १.	३३१२३
" १.	३३१५८
" १.	३३२२७
" १.	३६१५०

मुनि १.	३६१५२
मुनिपिष्टकिन् १. २. ३.	३६१३४
मुनिप्रिय १.	३८५८
मुनिवृत्त १.	८६१९
मुत्तिव्रतिन् १. २. ३.	३६१३३
मुनिसेवित १.	३८५७
मुनीन्द्र १.	११३३
मुर ३.	३८९८
मुरज १.	३९१२९
मुरजध्वनि १.	२४१०
मुररिपु १.	१११३
मुरली २.	३९१२५
" २.	३९१२७
मुख्नी २.	३३१५६
( मरुजी )	
मुख्ण्ड १ व.	३१२५
मुर्मुर् १.	१२२०
" १.	५३६
मुषित १. २. ३.	५४११६
मुष्क १. ३.	४४६३
मुष्कर १. २. ३.	५४८
मुष्टि १.	३७१६८
" १. २.	४४७९
" १. २.	५१५१
" १. २.	५१६३
मुष्टिक १.	३१५४
मुष्टिमान्ध ३.	३७१९२
मुष्ट्याष्टक ३.	३६१६
मुष्ट्यायोजन ३.	३७१८९
मुसल १. ३.	४३६५
मुसलयष्टिक १.	३७१७१
मुसलिन् १.	११२३
" १.	३७९७
मुसली २.	३३२०३
" २.	३८५०
" २.	४१२९
" २.	४१३०
मुसल्य १. २. ३.	५४७१
मुसुटी ३.	३८५६

मुस्त १.	४१२५
" १. २. ३.	८९३८
मुस्तक १. ३.	३३२००
मुस्ता २.	३३२००
" २.	८९३८
मुस्तु १. २.	४४७९
मुहुः (-र्) ४.	८७२७
" ४.	८८११
मुहुःप्रोक्त १. २. ३.	
	२४२२
मुहूर्त १. ३.	२१५४
मूक १.	३७१०८
" १. २. ३.	५४१४
मूका २.	३९१७
मूह १. २. ३.	३७२९
" १. २. ३.	५४२१
" १. २. ३.	६४१२
मूत १.	६१४६
मूतक ३.	३८१४४
मूत्र ३.	४४१२०
मूत्रकृच्छ्र ३.	४४१२८
मूत्राशय १.	४४६६
मूत्रित १. २. ३.	५४१३
मूर्ख १. २. ३.	५४२१
मूर्च्छन १. २. ३.	३९१३१
मूर्च्छना २.	३६२००
" २.	३९११०
मूर्च्छा २.	३६२००
मूर्च्छाल १. २. ३.	
	३७२९
मूर्च्छित १. २. ३.	
	३७२९
" १. २. ३.	७४२२
मूर्ति २.	६२२८
मूर्धन् १.	४४८५
मूर्धाभिषिक्त १. २. ३.	
	८५२७
मूर्धावसिक्त १.	३५६५
मूर्धावसिक्त १.	३५६
मूर्धा २.	३३११४
मूल ३.	२१४०

मूल ३.	३३३१३
" ३.	६३३२६
मूलक १. ३.	३३३१५५
मूलकर्मन् ३.	३३३११७
मूलकशाकट १. २. ३.	३३३२१
मूलकशाकिन १. २. ३.	३३३२१
मूलकादिसुत १. २. ३.	३३३२३
मूलकारण ३.	३३३१६१
मूलकृच्छ्र ३.	३३३१४०
मूलघातु १.	३३३१०४
मूलपुष्पिका २.	३३३१२४
मूलवर्हणी २.	२३३१४०
मूलरस १.	५३३२८
मूलसस्य ३.	३३३१९०
मूलिक १. २. ३.	३३३१२९
मूलिन् १. २. ३.	३३३१९
मूल्य ३.	३३३१७०
" ३.	६३३२५
मूषिक १.	३३३३१
मूषिकपर्णी २.	३३३११३
मूषिका २.	३३३३३४
मृग १.	३३३११
" १.	३३३३०
" १.	३३३१२१
" १.	३३३३२
" १.	३३३३४
" १.	६३३३७
मृगाणा २.	३३३१२१
मृगतृष्णा २.	२३३२२
मृगवृंशक १.	३३३३८
मृगधूर्त १.	३३३३८
मृगनाभि १.	३३३१०४
मृगपालिका २.	३३३३५
मृगबन्धनी २.	३३३३९
मृगमत्तक १.	३३३३७
मृगमद् १.	३३३१०४
मृगमात्रिका २.	३३३२६

मृगया २.	३३३१३८
मृगयु १.	३३३३८
मृगरिपु १.	३३३२
मृगरोमज १. २. ३.	३३३११८
मृगलक्षमन् १.	२३३२५
मृगवीथी २.	२३३४८
मृगव्य ३.	३३३३८
मृगशिरस् ३.	२३३३८
मृगशीर्ष ३.	२३३३८
मृगसिंहक १.	३३३२
मृगाजीव १.	३३३४
मृगाद् १.	३३३३
मृगादन १.	३३३४
मृगादी २.	३३३१७२
मृगारि १.	३३३३
मृगित १. २. ३.	५३३९८
मृगेन्द्र १.	३३३१
" १.	८३३५
मृह १.	१३३४०
मृणाल १. २. ३.	३३३४३
" १. २. ३.	८३३३८
मृणाली २.	३३३४३
" २.	८३३३८
मृत १. २. ३.	३३३२२०
" ३.	३३३२
" ३.	५३३१६
मृतस्नान ३.	३३३३४
मृत्स्न ३.	३३३१११
मृत्तिका २.	३३३२४
मृत्तिकाचूर्ण ३.	३३३२४
मृत्यु १. २.	३३३२०२
मृत्युक्षय १.	१३३४०
मृत्युपुष्प १.	३३३२१४
" १.	३३३२२५
मृत्युसंयमन १.	३३३२२३
" ३.	३३३२२७
मृत्सा २.	३३३२४
मृत्स्ना २.	३३३२४
मृद् २.	३३३२४
मृदङ्ग १.	३३३१५९

मृदङ्ग १.	३३३१६०
" १.	३३३१२९
मृदाह्वया २.	३३३१७
मृदु १.	५३३५
" १. २. ३.	६३३१२
मृदुकण्टक १.	३३३४३
मृदुस्वच् १.	३३३४५
" १.	३३३२२९
मृदुरोमन् १.	३३३३१
मृदुल ३.	३३३१०७
" १.	५३३५
मृदुघात १.	१३३५१
मृदङ्ग ३.	३३३३१
मृद्वीका २.	३३३१८१
मृध ३.	३३३२०३
मृषा ४.	८३३१३
मृषार्थक १. २. ३.	२३३१७
मृषासाक्षिन् १. २. ३.	३३३१०
मृष्ट १. २. ३.	५३३९१
मेकल १ ब.	३३३३७
" १ ब.	३३३४०
" १.	५३३३६
मेखलकन्यका २.	३३३२६
मेखला २.	३३३१७
" २.	३३३१४६
" २.	३३३१८
मेघ १.	२३३१
" १.	८३३३
मेघज ३.	३३३१
मेघनाद १.	१३३४४
" १.	३३३१५१
मेघनादानुलासिन् १.	२३३३८
मेघपुष्प ३.	३३३१
मेघमाला २.	२३३२
मेघवर्त्मन् ३.	२३३२
मेघवाहि १.	१३३२०
मेघवाहन १.	८३३५४
मेघवाहिन् १.	१३३२८

मेघाख्य ३.	३१२१५	मेघशृङ्ग ३.	३१२२५	मोरट १.	३१८१४९
मेघाभ १.	३३१९३	मेघाण्ड १.	१२१६	" १.	७५५६५
मेघक १.	२३३३९	मेघी २ व.	२१११९	मोरटा २.	३३१२२४
" ३.	३१४६८	" २.	३१४६५	मोषक १.	३१५५६
" १.	५३१११	मेहल ३.	३३११७१	मोह १.	३३१२०९
मेघटिक १.	५३१५७	( मोहन )		" १.	३३११८१
मेट १.	३३२२९	" २.	३१४६१	" १.	३१४४५
मेढी २.	३३३४०	मेहल १.	५३१५७	मोहकालिका २.	३१५४६
मेढू १.	३१४६१	मेह्लिन् १.	३१४३	मोहनी २.	११११६
मेणक १.	३१५१९	मैत्र ३.	३१५५७	मौकलि १.	२३११५
मेथि १. ३.	३८३३१	" १.	३३६१	मौकल्य १.	३१५७९
मेथिक १.	३३११०६	मैत्रक १.	३१५१०४	मौक्तिक ३.	३१२४०
मेद १.	३१५३५	मैत्रावरुणि १.	३३११५२	" ३.	३११५६
" १.	३१५९२	मैत्री २.	८११३५	मौली २.	३३६४२
" १.	३१५९३	मैत्रेय १.	३१५३४	मौडी २.	३३३७०
" १.	३१५११७	मैत्रेयक १.	३१५९४	मौढय ३.	३३२२००
मेदक १.	३१५५०	मैत्र्य ३.	८११३५	मौण्डिक २.	३३६४
मेदस् ३.	३१४१०७	मैथिल १.	२११६५	मौद्रीन १. २. ३.	३३८१९
मेदस्कर ३.	३१४१०७	मैथुन ३.	७३२२७	मौनिन् १.	३३११५०
मेदस्तेजस् ३.	३१४१०९	मैथुनिन् १.	२३३३३	मौरजिक १.	३१५७०
मेदिनी २.	३११३	मैन १.	३१११३	मौर्विका २.	३३७१७८
मेदुर १. २. ३.	५१४४३	मैनाक १.	३२२४	मौर्वी २.	३३६१७
मेदोभय १.	३१४१०९	मैनाकभगिनी २.	१११६२	मौलि १. २.	३३१३५
मेघचित् १.	३३११५८	मैनाकस्वस् २.	१११६२	" १. २.	३१५६४
मेघा २.	३३६१६५	मैरेय ३.	३१५४९	मौलिक ३.	३३६२
मेघाविन् १.	२३३२५	मोक १.	३२२७२	मौष्टिक १.	३१५१६
" १.	३३६२३४	" १.	३३६२५	मौह्निक १.	२११८३
मेघ्य १.	३३३२२९	मोह १.	३३६२३८	मौहूर्त १.	३३७१५
" १. २. ३.	५१४६५	" १.	३११४७	मौहूर्तिक १.	३३७२५
मेघ्या २ व.	२१११८	मोहण ३.	३३७१९२	म्लान १.	३११४८
" २ व.	२११२०	मोहावलम्बिन् १.	३३७१९२	म्लिष्ट १. २. ३.	३३१११
मेनास्मजा २.	१११५८		३३६२३८	म्लेच्छ ३.	३३२२५
मेरु १.	१३३१२	मोघ १. २. ३.	५१४१२९	" १.	३१५११५
मेरुण्ड १ व.	१३३१३	मोच १. २. ३.	६१५६४	" १.	३१५११६
मेलन ३.	५२२२७	मोचक १.	३३३५६	म्लेच्छमोज्य १.	३८१५३
( मेलक )		मोचा २.	३३३१७५	म्लेच्छात्प ३.	१२२२५
मेलामणि १. २.	३१९२५	मोहयित ३.	३१९९५	य	
मेलामन्द १.	३१९२५	मोद १.	३३३१८८	यकृत् ३.	३१४११३
मेलाम्बु ३.	३१९२५	मोदक १. २. ३.	८१५६६	यक्ष १.	१२२५५
मेष १.	३३३६४	मोरक ३.	३८१४६	" १.	१३३१
" १.	८३३३४	मोरट ३.	३८१४६	" १.	३३३६९



यक्ष १.	८११५८	यति २.	६२२२९	यमस्त्वस् २.	१११६२
यक्षकर्म १.	४३११५३	यतिन् १.	३१६१६०	” २.	४२२२५
यक्षधूप १.	३१८१११	यत् १. २. ३.	५४१११४	यमी २.	४२२२५
यक्षराज् १.	१२२५५	यत्न १.	३१६१६७	यमुना ३.	४२२२५
यक्षम १.	४४११२४	यत्र ४.	८१८२१	यमुनाभ्रातृ १.	१२२३४
यक्षमन् १.	४४११२४	यथा ४.	८१७२७	ययु १.	६११४८
यज्ञ १.	३१६१८३	” ४.	८१८२०	” १. २. ३.	६५१६५
यज्ञत्र ३.	३१६१९४	यथातथम् ४.	८१८१३	यर्हि ४.	८१८१५
यजन ३.	३१६१९४	यथायथम् ४.	८१८१४	यव १.	३१८१५१
यजमान १.	३१६१७६	यथार्थम् ४.	८१८१३	” १.	५११४३
यज्ञरादेष्टृ १.	३१६१७६	यथार्हवर्ण १.	३१७२६	” १ य.	८११५६
यज्ञसू ३.	३१६१२६	यथासुख १.	२११२६	यथक १.	३१८१५३
यज्ञ १.	३१६१६३	यथास्त्वम् ४.	८१८१४	यवक्य १. २. ३.	३१८१९
” १.	३१६१८२	यथेप्सित १. २. ३.		यवक्रीत १.	३१६१५६
” १.	६११४७		४३११०४	यवचार १.	३१८१२७
यज्ञकर्महिं १. २. ३.		यथोद्गत १. २. ३. ५४२१		यवचूर्णक १.	४३१६८
	५४१११७	यद् १. २. ३.	५४२१	यवह्वीप ३.	३१११४
यज्ञक्रु १.	३१६१८६	” १. २. ३.	८१७११	” ३.	३१११५
यज्ञजागर १.	३१३१२७	यदा ४.	८१८१५	यवन १ य.	३११२४
यज्ञत्यागिन् १.	३१६१७७	यदि ४.	८१८१४	” १.	३१५१२
यज्ञपुरुष १.	११११२	यदृच्छा २.	५२२६	” १.	३१५७२
यज्ञलिह् १.	३१६१७८	यज्ञविष्य १. २. ३. ५४३०		” ३.	३१८१२३
यज्ञवराह १.	३१११८	यज्ञव १. २. ३.	५४३०	यवनि का २.	४३१२४
यज्ञवह १.	१३३६	यन्तृ १.	३१७१३८	यवनेष्ट ३.	३२२३०
यज्ञाग्नि १.	१२२३	” १.	६११४७	” १.	३३२०७
यज्ञाङ्ग १.	३१४१२	यन्त्र ३.	३१७१५०	यवपिष्टक १.	४३३७२
यज्ञाढ्य १.	३१६१५५	यन्त्रक ३.	३१९१८	यवफल १.	३३२१५
यज्ञिय १.	२११९२	यन्त्रगृह ३.	४३२४	यवफलक १.	८११५५
” १.	३३२२९	यन्त्रमुक्त ३.	३१७१९५	यवमत् १. २. ३. ५४११९	
” १. २. ३.	५४११७	यम १.	१२२३३	यवस १.	४३३७४
यज्ञोपकरण ३.	३१६१९४	” १.	३१६२०९	यवागू २.	४३३८०
यज्ञोपवीत ३.	८३११७	” १.	३१७१९७	यवाग्र १.	५११४३
यज्ञोपवीतक ३.	३१६१२०	” १. २. ३.	३१७१२२	यवाग्रज १.	३१८१२८
यज्वन् १.	३१६१७६	” ३.	५१११५	यवानिका २.	३१८१०२
यज्वर १.	७११६२	” १.	५२२३०	यवान्वित १. २. ३.	
यत ३.	३१७८९	” १. २. ३.	६१५६५		५४११९
” १. २. ३.	५४३२	यमक ३.	४३१९९	यवास १.	३३१२३
” १. २. ३.	६११२	यमभगिनी २.	१११६२	यविष्ट १.	१२२३६
यतः (-स्) ४.	८१८२१	यमरथ १.	३१११०	यवीयस् १. २. ३. ५४३	
यतस्तु १.	३१६१७८	यमराज् १.	१२२३४	यवीयस ३.	३२२३३
यति १.	३१६१६०	यमल ३.	५१११५	यव्य १. २. ३.	३१८१९



यशःपट्ट १.	३१९१३४	यान ३.	३१७१२३	युगमध्य ३.	३१७१३१
यशस् ३.	२१४३६	" ३.	३१३१२६	युगल ३.	५१११५
यष्टि १. २.	३१७१२३	यानमुख १.	३१७१३०	युगवर्तक १.	२११३५
" २.	३१७१६२	यापन १.	७३१२८	युगान्त १.	२११९४
" १. २.	८१९१२५	याप्य १. २. ३.	५१४७५	युगालिक १ व.	३११२५
यष्टिमधुका २.	३१८१०३	" १. २. ३.	६१४१३	युगवर्त १.	११११४
यष्ट १.	३१६१७६	याप्ययान ३.	३१७१३६	युगासार ३.	२११९२
यस्त १. २. ३.	५१४११६	याम १.	२११६७	युगाह्वया २.	३१८१९४
याग १.	३१६१८२	" १.	५१२३०	युगिन् १.	३१६१८२
यागकण्टक १.	३१६१८०	यामक १.	२११३९	युग्म ३.	५१११५
याचक १. २. ३.	५१४१६०	यामिनी २.	२११५६	" १. २. ३.	५११२३
याचनक १. २. ३.	५१४१६०	यामुन ३.	३१२४२	युग्म १.	१११५०
याचना २.	३१६१२०	याम्या २.	२११५६	" १. २. ३.	३१४५८
याचित ३.	३१८१२	यायजूक १.	३१६१७५	" ३.	३१७१२३
याच्या २.	३१३१२०	यायावर १.	३१६१४२	युग्याशनप्रसेव १.	३१७११५
याज्ञक १.	३१६१७८	" १.	३१६१५६	युज् १. २. ३.	५११२३
याजन ३.	३१६१६३	याव १.	४३११५३	युजिन १.	१२१४८
" ३.	३१८१७	यावक ४.	३१८१५३	युजान १.	७११६३
याज्ञवल्क्य १.	३१६१५५	यावत् ४.	८१७२८	युत १. २. ३.	६१४१३
याज्ञिक १.	३१८१५२	यावत्तिथ १. २. ३.	५११२०	युतक ३.	५१११५
याज्य १.	८१९१४४	यावनाल १.	३१८१५६	" १. २. ३.	७१५६७
याज्या २.	३१६११२	यावशादन १.	३१५१८	युद्ध ३.	३१७२०३
याज्यापुट १.	३१६११२	यावशूक १.	३१८१२८	युद्धवान १.	२१४१०
यात ३.	३१७१८९	याष्टीक १. २. ३.	३१७१४४	युध् २.	३१७१५६
यातना २.	१२१३९	यास १.	३१३१२६	युधिष्ठिर १.	१२१५
यातयाम १. २. ३.	८१४११	युक्त १. २. ३.	५१४१०३	युवति २.	४१४८
यातु ३.	१२१४०	" १. २. ३.	६१४१३	युवन् १. २. ३.	५१४३
यातुक १.	२११६७	युग १.	३११५७	युष्मद् १. २. ३.	८१९१९
यातुधान १.	१२१४१	" ३.	३१७१३०	यू १.	४३१००
यातुगति १.	१२१४३	" १.	५१११५	यूक १.	४११३८
यात् २.	४१४३७	" १. ३.	६१५६६	यूय १. ३.	५११४
यास्य १.	१२१३८	युगकीलक ३.	३१८२८	यूयनाथ १.	३१७६७
यान्ना २.	५२११०	युगच्छ्व १.	३१३१४७	यूयप १.	३१७६७
" २.	६२१२९	युगद्वय ३.	२११९२	यूयिका २.	३१३१८२
यादस् ३.	४११४०	युगान्धर १ व.	३११७९	यूप १. ३.	३१६१०३
यादसास्त्राय १.	१२१४६	" १.	३१७१३२	यूपमध्य ३.	३१६१०४
यादसास्पति १.	८११५७	युगपद ४.	८१८१६	यूपाम्र ३.	३१६१०४
यादस्पति १.	८११५८	युगपार्ष्वर्ग १. २. ३.	३१४५६	यूय १. ३.	४३११००
यान ३.	३१७१६			योक्त्र ३.	३१८२८
				योग १.	३१६२०८

[ योग ]

योग १.	३११४८
योगपट्ट १.	३११५०
योगवाही २.	३१८१२९
योगाग्नि १.	३१११५५
योगावाप १.	३१७१८८
योगिन् १.	३१३३६
" १.	३१८१२८
योगिनी २.	१११६०
योगियान १.	२११४५
योगेश १.	३१६१५५
योगेष्ट ३.	३१२२९
योग्य १.	२११३९
" ३.	३१७१२४
" ३.	३१८१४५
" १. २. ३.	६१५६७
" १. २. ३.	३१५६७
योग्या २ व.	२११४१
" २.	३१६१४६
" २.	३१७१९५
" २.	३१८१९४
" २.	६१५६७
योग्यारथ १.	३१७१३०
योजन ३.	३११६३
" १.	३१३२१८
योजनगन्धा २.	८१२१२
योजनवल्ली २.	३१३१४५
योजना २.	३११६३
योत्र ३.	३१८१२८
योधन ३.	२१३१०
योनि १. २.	४१४६१
" १. २.	६१५६६
योषा २.	४१४१४
योषित् २.	४१४१४
यौतक ३.	३१६१५५
" १. २. ३.	७१५६७
यौतुक ३.	३१६१५५
यौष १.	३१७१३९
यौषक १.	३१७१३९
यौषेय १ व.	३११२८
यौन ३.	३१६१२
यौनिक १.	११२५२

वैजयन्तीकोषः

यौवन ३.	४१४५३
" ३.	५१११८
य्वागुली २.	४१३७८
य्वागुल्या २.	४१३७८
र	
रंहस् ३.	११२५५
रक्त ३.	३१२२४
" १.	३१३४०
" ३.	३१८११५
" ३.	३१८११६
" ३.	४१४१६
" ३.	४१४१०५
" १.	५१३११
" १. २. ३.	६१४१४
रक्तक १.	३१३१८५
रक्तकुण्डल ३.	४१२४४
रक्तग्रह १.	११२४१
रक्तचन्दन ३.	८१६२३
रक्ततेजस् ३.	४१४१०७
रक्तवन्ती २.	१११६१
रक्तदृष्टि १.	२१३१४
रक्तपाणिक ३.	४१२३५
रक्तपीतासितरयेत् १.	
	५१३१६
रक्तपुच्छिका २.	४११२९
रक्तपुष्प १.	३१३३९
" १.	३१३१७
रक्तफला २.	३१३१४७
रक्तभव ३.	४११०७
रक्तशालि १.	३१८३२
रक्तशीर्षक १.	३१८१०९
रक्ता २.	३१३१५३
रक्ताक्ष १.	७१२६३
रक्ताङ्ग १.	३१३१५
रक्तिका २.	३१३१७९
रक्षस् ३.	११२४०
रक्षस्सभ ३.	८१२२०
रक्षित १. २. ३.	५१४१००
रक्षोघ्न १.	३१८४१
" ३.	४१३८२

[ रक्षास ]

रङ्कुटी २.	३१८४४
रङ्ग ३.	३१२३०
" ३.	३१२३१
" १.	६११५१
रङ्गाजीव १.	३१९१२
" १.	३१९६३
रङ्गावतारिन् १.	३१९६३
" १.	३१९६५
रङ्गोपमर्दिन् १.	३१९६६
रचना २.	४१३१५८
" २.	५१२१४
" २.	५१२३९
रजःपुष्प १.	३१३२२३
रजःपूता २.	३१४४२
रजक १.	३१५३८
" १.	३१५४५
रजत ३.	३१२२३
" १. २. ३.	७१५७०
रजताग्नि १.	३१२१५
रजनी २.	२११५६
" २.	३१८१८९
" २.	७१२२०
रजस् ३.	३१२३२
" ३.	३१३१६२
" ३.	३१८२५
" ३.	६१२२८
" ३.	८१५३६
रजसालु १.	८११३७
रजस्वला १.	३१४१९
रजस्वला २.	४१४१५
रज्जु २.	३११५८
" २.	३१९३०
" २.	८१२३३
रज्जुदाल १.	३१३५४
रञ्जन ३.	३१८११५
" ३.	३१९६०
रञ्जनवल्ली २.	३१३१६४
रञ्जनी २.	३१२११
" २.	३१३११०
" २.	३१३२११
रक्षास १.	३१५१३

रज ३.	३१७१०४	रथवारक १.	३१५२५	रघ १.	२१४४
" १. ३.	३१५६८	( रथकारक )		रघण १.	२१४१
रणरणक १.	३१६१७९	रथाङ्ग ३.	३१७१३४	" ३.	३१२२९
रणसङ्कुल ३.	३१७२१७	" ३.	३१७१३५	" १.	३३१६५
रण्हा २.	३१३११३	रथायुधक १.	३१७१७४	( द्रवण )	
" २.	३१३३१	रथारमन् १.	३१५२०	" १.	३१४६७
रत ३.	४३११७०	रथिक १. २. ३.	३१७१४०	" १. २. ३.	५१४४८
रतद्धिक ३.	८३१११	रथिन् १. २. ३.	३१७१४०	" १. २. ३.	७१५७०
रतार्थिनी २.	४१४११	रथिन १. २. ३.	३१७१४०	रवा २.	३३१९९
रति २.	३३११७८	रथ्य १. २. ३.	३१४१४	रवि १.	२११४०
" २.	३१९१७६	रथ्या २.	४३११६	रविप्रावन् १.	३३२३७
" २.	४३११७०	" २.	५१११३	रविष्वज १.	२११५५
रतिपति १.	१११२८	रथ्यावाद १.	२१४२७	रक्षाना २.	४३११४६
रतेमदा २.	१३११	रद १.	४१४७८	रक्षि १. २.	२१११६
रत्न ३.	३१२३६	" १.	६११५०	" १. २.	६११५०
" ३.	६३१२६	रत्न १.	४१४७८	" १. २.	८१२२५
" ३.	८३११७	रत्निन् १.	३१७१६०	रश्मिकलाप १.	४३११३९
रत्नगर्भ १.	११२५८	रन्तिदेव १.	११११४	रश्मिमालिन् १.	२१११३
रत्नगर्भा २.	३११४	रन्धक १. २. ३.	४३११०८	रस १.	४१४२
रत्नवर ३.	३१२२०	रन्धल ३.	५१२३२	" १.	३१२१५
रत्नसू २.	३११४	रन्धित १. २. ३.	४३१९३	" १.	३१२४४
रत्नहस्त १.	११२५८	रन्ध्र १.	३१५७	" १.	३३१४९
रत्नाकर १.	४११११	" ३.	४११२	" १.	३३१५१
रत्नि १.	३११५४	" ३.	८१६९	" १.	३३१२०५
रथ १.	२३१९	रभस १.	५१४१४४	" १.	३३१३०
" १.	३३३३१	" १.	७११६३	" १.	३३१११
" १.	३३३३१	रभू १.	३१७२९	" १.	३३१७४
रथकट्या २.	५१११३	( रत् )		" १.	३३१७५
रथकार १.	३१५४८	रमणी २.	४१४६	" १.	४३११००
" १.	३१५७५	रमति १.	८११६३	" १.	४४१०४
" १.	३१५७५	रमा २.	१११३३	" १.	४४११४
" १.	३१५९०	रम्भण ३.	२१४५	" १.	५३१२
" १.	३१९३४	रम्भा २.	२१४५	" १.	५३१४५
रथकारक १.	३१५३३	" २.	३३११७३	" १.	६११४९
रथगरुत १.	३१६१०७	" २.	३३११७४	रसक १.	३१२३५
रथगर्भक १.	३१७१२७	" २.	३३११८	" १.	३३११९८
रथगुप्ति २.	३१७१३२	रश्मित ३.	२१४५	" १.	३३१२८
रथनीह १.	३१८१३२	रम्यक ३.	३११८	" १.	४३१८७
रथपद ३.	३१७१३४	रय १.	११२५५	रसकोप १.	५३१४०
रथरेणु १. २.	५११४२	रयि १. २.	८१२२७	रसक्रिया १.	४११४२
		रहक १.	४३१२९	रसगर्भक ३.	३३१४१

रसज्ञ १.	३।२।३५	रागशालव १.	५।३।३१	राजहंस १.	२।३।७
रसज्ञा २.	४।४।९०	रागसूत्रक ३.	५।१।६४	राजावन १.	३।३।४३
रसज्येष्ठ १.	५।३।२५	राघव १.	१।१।२०	" १.	८।५।२१
रसतेजस ३.	४।४।१०५	राक्षव १. २. ३.	४।३।११८	राजावर्त १.	४।३।११९
रसन ३.	७।५।६८	राज् १.	३।७।१	राजि २.	४।३।१४८
रसना २.	४।४।९०	राजक ३.	५।१।८	" २.	४।४।९०
रसनेत्री २.	३।२।११	राजकर्कटि २.	३।३।१६७	" २.	६।२।३०
रसयोगि १.	३।८।१३०	राजकोशातकी २.	३।३।१६१	राजिका २.	३।८।४२
रसवती २.	४।३।५४	राजजम्बू २.	२।३।९३	राजिमत् १.	४।१।७
रसवर १.	३।२।३५	राजदन्त १.	४।४।८९	" १.	४।१।९
रसविद्ध ३.	३।२।२२	राजधानी २.	४।३।४३	राजिल १.	४।१।९
रसा २.	३।१।२	राजन् १.	३।७।१	" १.	४।१।१५
" २.	३।३।१३१	" १.	६।१।५०	" १.	४।१।२०
" २.	३।३।१८१	" १.	८।९।१२	" १. २. ३.	५।४।७
" २.	४।१।२	राजन्य १.	३।७।१	राजीफल १.	३।३।१६६
रसागेह १.	१।३।१०	राजन्यक ३.	५।१।८	राजील १.	४।१।९
रसाम्र १.	४।३।७७	राजन्वत् १. २. ३.	३।१।४६	" १.	४।१।१०
रसाक्षन ३.	३।२।४१	राजपटोल १.	३।३।१६६	राजीव १.	३।४।१३
रसाख्य १.	३।८।१२८	राजपुत्री २.	८।२।८	" ३.	४।२।३८
रसातल ३.	४।१।१	राजफल १.	३।३।१६६	राजीवक १.	४।१।४६
" १.	४।३।११०	राजवीजिन् १.	४।४।५०	राजीवत् १.	३।३।१६५
रसादान ३.	४।३।१०३	राजभृङ्ग १.	२।३।२७	राज्ञी २.	३।२।२७
रसायन ३.	३।८।१४८	राजमार्ग १.	४।३।१६	राज्यलौक्य ३.	३।६।१८२
रसाल १.	३।३।४१	राजमाष १.	३।८।४६	राज्याङ्ग ३.	३।७।३
" १.	४।३।९८	राजमुद्र १.	३।८।३८	राठ १.	३।३।५०
रसिक १.	३।९।४७	राजराज १.	१।२।५७	राठा २.	३।१।२१
रसोन्नव ३.	४।४।१०५	राजरीति २.	३।२।२६	" २.	३।१।३०
रसोन १.	३।३।२०४	राजवंश्य १.	४।४।५०	" २.	४।३।१५०
रहस्य ३.	५।४।१२०	राजवत् १. २. ३.	३।१।४६	राण १. ३.	२।४।७
" ३.	६।३।२७	राजवर्त १.	४।३।११९	रातप ३.	५।३।३१
रहस्य १. २. ३.	५।४।१२०	राजवल्ली २.	३।३।१६४	राता २.	३।६।५२
राक १.	६।१।५१	राजवाह्य १.	३।७।३९	रात्रि २.	२।१।५७
राका २.	२।१।७३	राजविहङ्गम १.	२।३।२९	रात्रिचर १.	१।२।४०
" २.	४।४।८	राजवृक्ष १.	८।६।२०	" १.	३।९।५६
राघस १.	१।२।४०	राजवेश्मन् ३.	४।३।३०	रात्रिज ३.	२।१।३८
राघसम १.	१।१।२१	राजसर्प १.	३।८।४२	रात्रिजागर १.	३।४।७०
राग १.	३।६।१८१	" १.	५।१।४२	रात्रिश्चर १.	१।२।४०
" १.	३।९।११४	राजसी २.	२।१।६०	रात्रिद्विष् १.	२।१।१४
" १.	६।१।५१			रात्र्याख्या २.	३।३।२११
रागवत् १.	३।३।२१७			रायन्तरि १.	१।२।१२
				राखान्त १.	३।६।२५



राध १.	२११८३	रिष्टि २.	३१७१५९	रुद्रपुष्प ३.	३३१९५
राधा २.	२११४०	रीढा २.	३१६१७२	( ओदूपुष्प )	
राम १.	१११२०	रीण १. २. ३.	५१११०९	रुद्रव्रतिन् १. २. ३.	
" १.	१११२०	रीति २.	३१२२५		३१६१३१
" १.	१११२२	" २.	५१२२	रुद्रसख १.	१२१५८
" १.	३१४३२	" २.	६१२३०	रुद्रा २ व.	२११२१
" १. २. ३.	६१४१४	रीतिपुष्प ३.	३१२४३	रुद्राक्ष १.	३३३७९
रामक १.	३१५७९	रुम ३.	३१२१८	रुद्राणी २.	१११५८
" १.	३१५८२	" ३.	६१२२७	रुधिर १.	२११३२
रामठ ३.	३१८१३१	" १.	८१६१०	" ३.	४१४१०५
रामदूती २.	३३११०९	रुमेद १.	४१४१३७	रुमा २.	३१२१०
रामपूरा १.	३३३२१८	रुच् २.	२११२२	रुमामव ३.	३१८१२१
रामभगिनी २.	१११६२	" २.	४३११५०	रु १.	३१४१४
रामस्वच्छ २.	१११६२	" २.	८१२१९	रुवय १.	७११६४
रामा २.	४१४६	रुचक १.	३३३३३	रु १.	३३३६५
राम्म १.	३१६१८	" ३.	३१८१२५	रुचुक १.	३३३६५
रालि १.	८१९१०	" १.	८११६४	रुमती १. २. ३.	२१४१८
रावण १.	११२४२	रुचि २.	२११२२	रुच् २.	३३१९८३
रावणसूदन १.	१११२०	" २.	३१८१३२	रुपा २.	३३१९८३
राशि १.	२११५०	" २.	३१९८३	रुच ३.	३३२३४
" १.	५११३	" २.	६१२१४	" १.	३३३१५
" १.	५१२५४	रुचित १.	३१४१४	" ३.	३१८१४२
राष्ट्र ३.	३१७३	रुचित १. २. ३.	५१४९६	" १.	५३३३
" ३.	३१७४८	रुचिर १. २. ३.	५१४३४	" १.	५३३५६
" ३.	६१५६९	रुचिष्य ३.	३१८१२५	" १. २. ३.	५१४४४
राष्ट्रिका २.	३३११०६	रुचु १.	३१४२८	" १. २. ३.	६१४१३
राष्ट्रिय १.	३१९१०५	रुच्य १.	४१४३७	रुचणीय १.	३१५४७
रास १.	३१९७३	" १.	५१३३८	रुचणीया २.	३१८६१
रासम १.	३१४६५	" १. २. ३.	५१४३४	रुचवालुक ३.	३१८१३५
" १.	८१६५	रुज् २.	४३३१३८	रुचस्वर १.	३१४६६
रास्ना २.	३१८१९८	रुजा २.	३१४६५	रुच १. २. ३.	३१७२१७
राहु ३.	२११३७	" २.	४१४३८	" १.	३१८५१
रिक्त १.	२११७९	" २.	६१२२९	रूप ३.	३१९१०१
रिक्तक १. २. ३.	५१४८७	रुण १.	३१७१०८	" ३.	५१२१
रिवथ ३.	३१८७३	" १.	३१७२१६	" ३.	५३३२
रिङ्ग १.	३१७१३६	रुणक १.	३१५२८	" ३.	६३३२८
रिङ्गोल ३.	३१७१३६	रुत ३.	२१४१४	रूपजीवना २.	४१४२४
रिङ्गोलन ३.	३१७१३६	रुदित ३.	३१९८७	रूप्य ३.	३३२३३
रिपु १.	३१७४१	रुद १. २. ३.	५१४९६	" ३.	३१८७४
रिरी २.	३३२२५	रुद्र १.	११३३९	" १. २. ३.	६१५६८
रिष्ट ३.	३३२२७	" १ व.	१३३८	" ३.	८१६११

[ रूप्यमास ]

रूप्यमास १.	पा११४४
रूप्यशतमान ३.	पा११६०
रूप १.	पा३१२९
रूपित १ २. ३.	पा३११३
रेक १.	पा११४६
रेखा २.	३१२२४
” २.	६२२३२
रेचक ३.	८१११५
रेचनी २.	३३१३८
रेचित १. २. ३.	३७११८
” १. २. ३.	३७१२२
” ३.	३११९२
रेटि २.	६२२३२
रेणु १.	३८१२५
” १. २.	पा११४२
” १. २.	८११२६
रेणुका २.	३८११५
रेतस् ३.	३३१११
” ३.	६३२२७
रेफ १. २. ३.	पा३१७५
रेमटि २.	३३११९६
रेमण ३.	२११२
रेरिहाण १.	१११४४
रेवट १. ३.	७५१६९
रेवती २.	१११५९
” २.	३३११०९
” २.	३३११८२
” २.	७२२२०
रेवतीकान्त १.	१११२३
रेवा २.	३२२२६
रेवी २ व.	२११२०
रेषण ३.	२११६
रेषा २.	२११६
रै १. २.	८५१३८
रोक ३.	३११२
” १. ३.	६५१६७
रोक्य ३.	३३११०५
रोग १.	३३१३८
रोगहारिन् १.	३३१४३
रोगाख्य ३.	३८१९९
रोचक १.	३३१२९

वैजयन्तीकोषः

रोचन १.	३३१९१
” १. २. ३.	पा३१४२
रोचना २.	७२२२०
रोचनी २.	३२१११
” २.	३३१९५
” २.	३३११३८
” २.	३३२२११
रोचिष्णु १. २. ३.	पा३१४२
रोचिस् ३.	२१११६
रोदन ३.	३११८७
रोदनी २.	३३१२५
रोदस २ द्वि.	३११५
रोदसी २ द्वि.	३११५
रोध १.	३७११८०
रोधस् ३.	३२२३१
रोधोवक्त्रा २.	३२२२२
रोपण १.	३७११७९
रोमकर्ण १.	३३१३१
रोमज ३.	३३१११७
रोमन् ३.	३३१७५
” ३.	३३१९७
रोमन्थ १.	३३१७५
रोमन्थन ३.	३३१७५
रोमश १.	३३१७५
” १.	३३१६४
” १. २. ३.	पा३१८
रोमशपुच्छक १.	३११२७
रोमशी २.	३११२७
रोमहर्ष १.	३११८२
रोमहर्ष ३.	३२११४
रोमाङ्क १.	३११८२
रोमाञ्ज १.	३११८२
रोमोद्गम १.	३११८२
रोष १.	३३११८३
” १.	पा२१४
रोषाण १.	३१११९
” १. २. ३.	७५१७१
रोहणद्रुम १.	३८११२
रोहणी २.	३३१२९
रोहिणी २.	३३१४४
” २.	३८१८६

[ लक्ष्मणा

रोहिणी २.	७२२२१
रोहिणीकान्त १.	२११२४
रोहित १.	३३११४
” १.	८११११
रोहित ३.	२२२३
” १.	३३१३०
” १.	३३११६
” १.	३३११५६
” १.	पा३११
रोहिताश्व १.	१२११५
रोहिन् १.	३३१४०
रौच्य १.	३३११६
रौद्र ३.	२११२२
” ३.	३११७५
” १. २. ३.	३११७९
रौद्री २.	१११४९
” २.	१११५८
” २.	३३११९२
” २.	८२११४
रौमक ३.	३८१२२
रौरव १.	१२२३७
रौहिणेय १.	८११३७
रौहितक १.	३३१४०
रौहिष १.	३३१४०
” १.	३३११६
” १. ३.	७५१७१
ल	
लकुच १.	३३१७५
लक्ष १.	३३१३५
” ३.	३७११९४
” ३.	पा१३२
” १. २. ३.	६५१६९
लक्ष्मण ३.	२११२९
” ३.	३७११९४
” ३.	पा२११
” ३.	७३२२८
लक्षा २.	पा१३२
लक्ष्मण १. २. ३.	पा३१५६
लक्ष्मणा २.	२३१३३

लक्ष्मन् ३.	२११२९	लङ्घन ३.	५१२१२	ललनाद्य १.	३१३३३
" ३.	६१३२९	लज्जा २.	३१६१९४	ललन्तिका २.	३१३३३
लक्ष्मी २.	११११६	लज्जालु २.	३१३१४८	लकाट ३.	३१३१६
" २.	१११३६	" २.	३१३१४८	ललाटिका २.	३१३३३
" २.	३१६१९१	लज्जाशील १. २. ३.	५१४३०	" २.	३१३१४९
" २.	३१८१९३	लज्जित १. २. ३.	५१४५१	ललाम १. २. ३.	७१५७२
" २.	३१८१९९	लट्ठ १.	३१३१५६	ललामक ३.	३१३१५५
" २.	८१२१९९	लडह १. २. ३.	५१४१३५	ललामन् १. ३.	७१५७२
लक्ष्मीनिकेतन ३.	३१३११४	लण्ड १. ३.	३१४११९	ललित ३.	३१९९६
लक्ष्मीपति १.	८११३८	लता २.	३१३१७	लल्लर १. २. ३.	२१४१५
लक्ष्मीपुत्र १.	८११३८	" २.	३१३१६६	लव १.	२११५३
लक्ष्मीवत् १.	३१३१४२	" २.	३१३१०४	" १.	५१२२९
" १. २. ३.	५१४५६	" २.	३१३११७	लवङ्ग ३.	३१८१०३
लक्ष्य ३.	३१७१९४	" २.	३१३१८७	लवण ३.	३१८१२६
लक्ष्यग्रह १.	३१७१९०	" २.	८१९३३	" १. २. ३.	३१३१९३
लगणा २.	३१३१३९	लताकुश १.	३१३१२२८	" १.	५१३२६
लगुड १.	३१९१२९	लताकोलि २.	३१३१७८	" १.	५१३२७
लगुडवर्शिका २.	३१३२१६	लताङ्कुर १.	३१३१२१९	लवणक्रीतिक १.	३१५८८
लग्न १.	३१७१६८	लतापूग ३.	३१३१२१८	लवणलायिका २.	३१७११६
लग्नक १. २. ३.	३१८११०	लतामारिष १.	३१३१५२	लवणाकर १.	३१२११०
लग्न १.	३१३१५३	लतार्क १.	३१३१२०५	लवणापण १.	३१३३३
" २.	३१३११६	" १.	३१३१२०७	लवणोत्कट १. २. ३.	३१३१९३
" ३.	३१८१०७	लतावृहती २.	३१३१०४	लवणोद १.	३११११०
" १. २. ३.	५१४७६	लब्ध १. २. ३.	५१४६४	लवन १.	५१२२९
" १. २. ३.	५१४१२४	लब्धवर्ण ४.	३१६१२५	लवली २.	३१३२६
" १. २. ३.	६१४१५	लम्प्य १. २. ३.	६१४१५	लवित्र ३.	३१८३०
लघुक १.	३१३१२९	लम्पट १. २. ३.	५१४३६	लवेटिका २.	३१८३१
लघुकाष्ठ १.	३१७१९९	लम्पा २.	३१७४६	लश १.	३१३११
लघुग १.	११२४८	लम्पाक १ ब.	३११२५	लशुन ३.	३१३१२०४
लघुहस्त १. २. ३.	३१३१४९	लम्बकर्ण १.	३१४६२	" ३.	३१३१२०६
लघ्वक्षरक १.	२११५२	लम्बन ३.	३१३१३७	लपित १. २. ३.	५१४९६
लङ्का २.	६१२३२	लम्बा २.	३१७४६	लस ३.	३१८११५
लङ्कायिका २.	३१३११७	लम्बोदर १.	१११५३	" १.	३१४१३५
लङ्केरवर १.	११२४६	लम्बन ३.	५१२२०	" १.	५१३५४
लङ्गन ३.	५१३१२	लम्ब १.	३१६२००	लसिका २.	३१४११८
लङ्गनी २.	३१३५३	" १.	३१७१९२	लसीका २.	३१४११८
लङ्गन ३.	३१७१२३	" १.	३१९१२२	लस्तक १.	३१७१७७
" ३.	३१४१३९	लयनालिक १.	३१३१२८	( लस्तुक )	
		लल ३.	६१३२९	लस्तकग्रह १.	३१७१८९
		ललना २.	३१४४३		

लहरी २.	४१११४
लाक्षा २.	४३११५३
लाङ्गल ३.	३१८१२७
लाङ्गलपद्धति २.	३१८१३०
लाङ्गलिन् १.	३३१२२०
लाङ्गली २.	३३३१९७
लाङ्गूल ३.	३१४७४
” ३.	७३१२९
लाङ्गूली २.	३३११३६
लाज १ व.	४३१६८
लाजमण्ड १.	४३३७९
लाजि २.	३११२४
लान्छन ३.	२११२९
लाहीक १.	३११३
लातक १.	३३११८९
लाभ १.	३१८१००
लामज ३.	३३१२३१
लाल १.	३१३३६
” ३.	६३१२९
लालक १. २. ३.	२१४१५
लालन १.	३१८१११
लालस २. ३.	५१३३६
लालसा १. २. ३.	७१५७२
लाला २.	३३३१२६
” २.	४१३१२०
लालाटिक १. २. ३.	८१३११
लालिका २.	३१७११२
लाव १.	२३१३०
लावण १.	३१११०
लावली २.	३३३१२६
लास्य ३.	३१९७३
लिङ्कुच १.	३३३७५
लिङ्गा २.	४१३४२
लिगु १.	३३३११
” १.	३१५५१
लिङ्ग ३.	५१११७
” ३.	६३३३०
लिङ्गज्येष्ठ ३.	३३३१६३
लिङ्गवृत्ति १. २. ३.	३३३१९
लिङ्गवोफ १.	४१३१३२

लिच्छिवि १.	३१५५४
लिपि	३१९१२४
लिपिकर १.	३१९१२३
लिपिसन्नाह १.	३१७१५४
लिस १. २. ३.	६१३१५
लिसिका २.	२११५३
लिप्सा २.	३३३१८०
लिप्सु १. २. ३.	५१३३५
लिवि २.	३१९१२३
लिष्ट १. २. ३.	५१३११५
लिह् १.	११२५१
लीला २.	३१९८८
” २.	३१९१२
” २.	३१९१३
” २.	३१९१७
” २.	६१३३३
लीमुष १.	५३३३८
लुङ्ग १.	३३३३३
लुङ्गना २.	२१३२६
लुठित १. २. ३.	३१७१०७
लुण्ठित १. २. ३.	५१३११६
लुब्ध १. २. ३.	५१३३५
लुब्धक १.	३१९३८
लुम्बिका २.	३१९३३५
लुलाय १.	३३३१९
लुलित १. २. ३.	५१३१०३
लुष १.	३१३३१
( युष )	
लुस्त ३.	३१७१७७
लुत्त १. २. ३.	५१३४४
लुत्ता २.	४१३३४
लुत्तात १.	४१३३६
लुत्तापट्ट १.	४१३३५
लुत्तिका २.	४१३३४
लुन १. २. ३.	४१११०२
लुनदोस् १.	१११५२
लुमन् ३.	३३३७४
लेख १.	११३३
” १.	३१८१२

लेखक १.	३१९१२३
लेखनी २.	३१९१३
लेखा २.	३१९१४
” २.	४३११४९
” २.	५११२४
लेख्य ३.	३१८१२
लेट् १.	११२५१
लेप १.	४३११०२
” १.	६११५२
लेपकार १.	३१९१४
लेप्य ३.	३१९१३
लेलिहान १.	४१२५
लेषा १.	२११५४
लेष्ट १.	३१८२४
लेहन ३.	४३११०३
लेह्य ३.	४३१९१
लैङ्गिक १.	३३३१६३
लैङ्गधूम १.	३३३८०
लोक १.	३३३२०६
” १.	६११५२
लोकजित् १.	१११३३
लोकपाल १.	२११४
” १.	८१३३८
लोकान्ताग्नि १.	३२३३
लोकालोक १.	३२३३
लोचक १. २. ३.	३३३१३४
” १. २. ३.	७१५७३
लोचन ३.	४१३९४
लोचना २.	२१३२८
लोचमस्तक १.	३१८१०२
लोचमालक १.	३३३१९९
लोदन ३.	५१२४२
लोदना २.	२१३२८
लोठमू २.	३१७११२
लोत १.	३१९८७
लोघ्न १.	२१३८७
” १.	३३३५२
” १.	३३३५२
लोपा २.	२३३२५
लोपासुव्रा २.	३३३१५३



[ लोपायिका ]

शब्दानुक्रमिका

[ वञ्चक ]

लोपायिका २.	२।३।२५	लोहितचन्दन ३.	३।८।११६	वक्रपद ३.	४।३।११९
लोपास १.	३।४।३९	लोहिता २.	१।२।३०	वक्राख्य ३.	३।२।३१
लोप्त्र ३.	३।९।५८	लोहिताक्षक १.	४।१।१५	वक्राङ्ग १.	२।३।६
लोभन ३.	३।२।१९	लोहिताङ्ग १.	३।१।३१	वक्रोष्ठक १. २. ३.	३।९।८३
" १.	३।८।३६	लोहिताहि १.	४।१।१२	वक्षश्छद १.	३।७।१५३
लोमन् ३.	४।४।९७	लोहितीक ३.	५।१।४७	वक्षस् ३.	४।४।६८
" १. ३.	८।९।३१	लोहित्य १.	३।१।१७	वक्षसिज १.	४।४।६८
लोमश १. २. ३.	५।४।८	लोह ३.	३।२।२६	वक्ष्मि १.	४।४।११५
लोमशी २.	३।८।१००	( लोम्य )		वक्ष्मण १.	४।४।५९
लोल १.	३।७।२०६	लौह ३.	३।२।३३	वक्ष्म १ व.	३।१।३१
" १. २. ३.	५।४।३६	व		" ३.	३।२।३१
" १. २. ३.	६।४।१६	व ४.	८।८।१५	वक्ष्मजीवन २.	३।२।२४
लोलम्ब १.	२।३।४२	वंश १.	३।३।११	वक्ष्मसेनक १.	३।३।१५६
लोलिका २.	३।८।५८	" १.	३।३।२१४	वचन ३.	२।४।२१
लोलुप १. २. ३.	५।४।३६	" १.	३।३।२२६	" ३.	२।४।३४
लोलुभ १. २. ३.	५।४।३६	" १.	३।९।१२५	वचनेस्थित १. २. ३.	५।४।४९
लोष्ट १. ३.	३।८।२४	" १.	४।४।४९	वचस् ३.	२।४।२१
लोष्टभक्षण १.	३।८।२९	" १.	४।४।६६	वचा २.	३।३।१९७
लोह ३.	३।२।३३	" १.	६।१।५२	वचाच्छद १.	३।३।१२१
" ३.	३।२।३६	वंशक ३.	३।८।१०७	वज्र १. ३.	१।२।१३
" १. ३.	६।५।६९	वंशज १.	४।४।५०	" १. ३.	२।२।६
लोहकारक १.	३।९।१६	वंशपत्र ३.	३।२।१४	" १. ३.	३।२।३९
लोहकार्पापण १.	५।१।३९	वंशरोचना २.	३।८।९०	" ३.	३।३।२०२
लोहज ३.	३।२।२९	वंशवर्ण १.	३।८।४३	" १. ३.	३।६।१४६
लोहदण्ड १.	३।७।१६७	वंशिक १.	३।१।६१	" १. ३.	६।५।६८
लोहपृष्ठ १.	२।३।३१	" १.	३।५।२३	" १. ३.	८।६।३
लोहमात्र १.	३।८।१५६	" ३.	३।८।१०७	वज्रवक्षिण १.	१।२।७
लोहमारक १.	३।३।१५६	वंशिका २.	३।९।१२५	वज्रधारण ३.	३।२।२२
लोहमालक १.	३।५।३६	वंश्य १.	४।४।५०	वज्रनिष्पेष १.	२।२।६
लोहल १. २. ३.	५।४।४७	वंश्या २.	३।८।५०	वज्रपाणि १.	१।२।५
लोहशङ्खल १.	३।७।८५	वकुल १.	३।३।२६	वज्रपुष्प ३.	३।८।४०
लोहसंश्लेषक १.	३।८।१३०	वक्तव्य १. २. ३.	८।४।१५	वज्रा २.	३।३।९७
लोहाख्य ३.	३।८।८०	वक्तृ १. २. ३.	५।४।४५	वज्रांशुक ३.	४।३।११९
" १.	३।८।१०७	वक्ष ३.	४।४।८६	वज्राभिषवण ३.	३।६।१४७
लोहामिसार १.	३।७।२००	वक्षप्रपट्ट १.	३।७।११४	वज्रासन ३.	३।६।२१८
लोहित १. २.	३।८।१२६	वक्र १.	२।१।३६	वज्रिन् १.	१।२।१
" १.	४।१।४३	" १.	४।४।९१	वज्री २.	३।३।९८
" ३.	४।४।१०५	" १. २. ३.	५।४।१२३	वञ्चक १. २. ३.	५।४।२४
" १.	५।३।११	वक्रकील १.	३।७।८५		
लोहितक ३.	३।२।३९	वक्रवृष्ट १.	३।४।५		

वञ्चक ]

वैजयन्तीकोषः

[ वमति

वञ्चक १. २. ३.	७५५७४	वत्सनाम १.	१५१२४	वनस्पति १.	३३३६
वञ्चति १.	११२१८	वत्सर १.	२११९०	" १.	८११४२
वञ्चथ १.	७११६४	वत्सरान्ता ३.	२११७७	वनायुज १.	३७१८५
वञ्चन ३.	५१२३५	वत्सल १. २. ३.	५५११८	वनालु १.	३३११५०
वञ्जुल १.	२३१११	वत्सला २.	३५१४७	वनाश १.	३८१५२
" १.	२३१२६	वत्सादनी ३.	३३११३२	वनिता २.	४५१४
" १.	३३३३१	वत्सीय १. २. ३.	३११२८	" २.	७१२२५
" १.	३३३४०	वद १. २. ३.	५५१४५	वनी २.	३३३१
" १.	३३३४६	वदन ३.	४५१८६	वनीपक १. २. ३.	५५१६०
वञ्जुला २.	३५१४५	वदान्य १. २. ३.	७५१२६	वनेवासिन् १.	३५१२४
वट १.	३३३२७	वदाल १.	४११४३	वनोज्जवा २.	३३११८४
" १.	३५११७	वदावद १. २. ३.	५५१४५	वनौकस् १.	३५१४०
" १. २. ३.	३११३०	वध १.	३७१२११	वन्दन ३.	३५३३९
" १. २. ३.	८११३७	" १. २. ३.	६५१७५	वन्दनमाला २.	३५१५९
वटक ३.	५११४८	वधरत १. २. ३.	३५१११	वन्दा २.	३३३८४
वटाश्रय १.	११२५६	वधस्थान ३.	३११३७	वन्दाक १.	३३३८४
वटी २.	३११३०	वधा २.	३३११४९	वन्दारु १. २. ३.	५५१४३
" २.	८११३७	वधिर. १. २. ३.	५५१३३	वन्दिन् १.	३५१७८
वट्ट १. २. ३.	५५१३	वधू २.	४५१४	" १.	३५१८१
वट्टकृति २.	३५१९	" २.	४५१७	" १.	३५३३०
वडबा २.	३७१०७	" २.	४५३३५	वन्दीक १.	११२१७
" २.	४५१२६	" २.	४५३३६	वन्ध १. २. ३.	३३३८
" २.	७१२२२	" २.	४५३३६	वन्ध्या २.	३५१४७
वडबामुख. ३.	४१११	वधूटी २.	४५१९	वन्ध १.	३३३१३३
" १.	८११५५	वधोद्यत १. २. ३.	५५१६८	" ३.	४१२३६
वणिग्गृह ३.	४३३३४	वन ३.	३३३१	वन्ध्या २.	३३३१६१
वणिज् १.	३८१७२	" ३.	४१२२	" २.	५१११४
वणिजा २.	३८१३	" ३.	६३३३१	वपन ३.	३५१४
वणिज्य ३. २.	८११३२	वनकोद्रव १.	३८१५५	" ३.	३११२६
वणिज्या २.	३८१३	वनगाव १.	३५३३३	वपनी २.	४३३२५
वण्ट १.	५१२१७	वनच्छाया १.	३५३३३	वपा २.	४११२
वण्टफ १.	३८१३०	वनज १.	२३३४१	" २.	६१२३३
वर्तंस १.	४३११५४	" ३.	४२३३६	वपुस् ३.	६३३३०
" १.	८११५९	वनतिफिका २.	३३३३३०	" ३.	८३३१७
वत्स १.	२११९१	वनद्रुम १.	३८१०८	वप्ट १.	४५१२९
" १.	३३३७३	वनन १.	३५१११	वप्र १. ३.	३१२१७
" १.	३५१५१	वनप्रिय १.	२३३२७	" १. ३.	३८१२६
" १. २. ३.	५११२	वनमाय १.	३८१०८	" १. ३.	४३३१३
" १. २. ३.	६५१७३	वनमालिन् १.	१११२५	" १. ३.	६५१७९
वत्सकामा २.	३५१४७	वनमुद्र १.	३८१३८	वमति १.	८१११०
वत्सतर १.	३५१५४				

[ वमथु ]

वमथु १.	३१७८२
" १.	४१४१२६
" १.	८१९१३
वमि १.	११२१८
" २.	४१४१२६
वम्र १. २. ३.	४१३१८
वयस् ३.	४१४५३
" ३.	४१४५३
" ३.	६१३३०
वयस्य १. २. ३.	३१७४३
वयस्या २.	३१३११२
" २.	४१४२५
वयस्स्थ १. २. ३.	५१४३
वयस्स्था २.	७१५७८
वर १.	२१३१८
" ३.	३१२१४
" ३.	३१३५४
" १.	३१३१५२
" ३.	३१३१९९
" १.	३१८११०
" ३.	३१८११७
" १.	३१८१२७
" ३.	४१४१११
" १. २. ३.	५१४६४
" १. २. ३.	६१५७२
वरक १.	३१८३८
" १.	३१८५४
" १.	४१३१२७
वरट १. २.	८१९२६
वरटा २.	२१३८
" २.	२१३४६
वरण ३.	२११६३
" १.	३१३१४१
" १.	४१३११४
वरण्ड १.	४१३६५
" १.	४१४१२५
वरन्ना २.	३१७८४
" २.	३१९४४
वरनिमन्त्रण ३.	३१६५६
वरप्रवा २.	३१६१५३
वरपान्ना २.	३१६५६

शब्दानुक्रमिका

वरयितु १.	४१४३७
वररुचि १.	३१६१५८
वरला २.	२१३८
वरवर्णिनी २.	८१२१३
वरवाहन १ द्वि.	१३१५
वरा २.	३३१०५
" २.	३३१७९
" २.	३३२२३
" २.	३३२३३
वराङ्ग ३.	३१८१०४
" ३.	७३२९
वराङ्गना २.	३३२२४
वराङ्गा २.	३१४४५
वराट १.	३१९३०
वराटक १.	४११५७
" १.	४२४४५
वराणक १.	३१५५०
" १.	३१६१५९
वराधि १.	३१९३९
वरान्तक १.	१३३६
वराम १.	३१४१६१
वराम्ल १.	३३३३३
वरारोहा २.	३३१८४
" २.	३३१९९
" २.	४१४१२
वरार्गल १.	३३३७९
वराल १.	५३११४
वरालक ३.	३१८१०३
वराला २.	२१३८
वराशि १.	५३२८
वरासि २.	४३१२६
वराह १.	३१४५
वराहकन्द १.	३३२१०
वराहकर्णक १.	३१७१६७
वराहद्वीप ३.	३१११४
" ३.	३१११८
वरिवसित १. २. ३.	
	५१४१०५
वरिवस्या २.	३१६३८
वरिष्ठ १.	२१३३५
" ३.	३१२२५

[ वर्णिनी ]

वरिष्ठ १. २. ३.	७१४२५
वरीयस् १. २. ३.	
	७१४२६
वरुट १.	३१५५५
वरुण १.	१२१४५
वरुणकाष्ठिका २.	
	३१६१०८
वरुणकृच्छ्रक ३.	३१६१४१
वरुणग्रह १.	४१४१३४
वरुणप्रिया २.	१२१४६
वरुणावास १.	४२१११
वरुथ १.	३१७१३२
वरुथिनी २.	३१७५५
वरेणुक १.	३१८३१
वरेण्य १. २. ३.	५१४६३
वरेन्द्री २.	३११२१
" २.	३१३३०
वरोत्कट १.	३१४४
वरोत्पल ३.	४२१३५
वर्ग १.	५११४
" १.	५११३६
वर्चस् ३.	६१३३१
वर्चस्क १.	४१४११९
वर्जन ३.	५२१४०
" ३.	७३२९
वर्ण १. ३.	२१४२१
" १.	३१५२
" १.	४३१५६
" १. २. ३.	६१५००
वर्णक ३.	३१६५६
" ३.	४३१४७
" १. २. ३.	७१५७९
वर्णतर्णक १. २. ३.	
	८१९३२
वर्णन ३.	५२१३९
वर्णा २.	३१८४९
वर्णि १.	८१९१०
वर्णित १. २. ३.	
	५१४१०६
वर्णिन् १.	३१६३७
वर्णिनी २.	३३२२२

वर्णिलिङ्गिन् ]

वैजयन्तीकोषः

[ वशीकार

वर्णिलिङ्गिन् १. २. ३.	३१६१
वर्ण्य ३.	३१८११६
वर्तक ३.	२३१४०
” ३.	३३१२०१
” १.	७११६४
वर्तन ३.	२१४२२
” ३.	३१७१११
” ३.	३१८१
” ३.	५१२१४१
” १. २. ३.	५१४४०
वर्तनी २.	७१२१२१
वर्ति २.	४३११६१
” २.	४३११६१
वर्तिष्णु १. २. ३.	५१४१९०
वर्तुल १. २. ३.	५१४८२
वर्तुलाक्ष १.	२३३३०
वर्त्तमे ३.	४१४९५
वर्त्तमन् ३.	४१४९५
वर्द्धी २.	३१९१४४
( वध्री )	
वर्धकि १.	३१९३४
वर्धकिहस्त १.	३११५६
वर्धन ३.	४३११००
” १. २. ३.	५१४४०
” ३.	७३१२९
वर्धनी २.	४३१५७
वर्धमान १.	४३१५९
” १.	८११४४
वर्धिष्णु १. २. ३.	५१४४०
वर्धी २.	६१२३४
वर्मन् ३.	३१७१५२
वर्मि १.	८१९१०
वर्मित १. २. ३.	३१७१४२
वर्य १. २. ३.	५१४६३
वर्या २.	४३१७
वर्ष १. ३.	२११९१
” १. ३.	२१२१७
” १. ३. २ व.	६५१७९
वर्षकारी २.	३६१५२
वर्षण ३.	२१२१७

वर्षमुख १.	२११८१
वर्षवर १.	३१८२३
वर्षा २ व.	२११८९
” २.	३३११७
वर्षाभी १.	४१६१८
वर्षाभू १. २.	७५१७७
वर्षाभ्वी २.	३३११४५
वर्षामद १.	२३३३७
वर्षायस् १. २. ३.	५१४१४
वर्षमन् १. ३.	६५१८१
वल १.	६११५३
वलक्ष १.	५३११५
वलम्न १.	४१४६७
वलज १.	५३१४०
” ३.	७५१७८
वलजा २.	३१८६५
” २. ३.	७५१७८
वलन ३.	३१९११
” १.	५३१५२
वलना २.	२१४२५
वलभी २.	४३३३१
” २.	४३३३९
वलय १.	१२१५१
” १.	३३३२५
” १.	३३३१९९
” ३.	४३३१४४
वलयित १. २. ३.	५१४९६
वलरिपु १.	१२१२
वलाङ्ग १.	२११८७
वलाहक १.	२१२११
” १.	३३३७८
” १.	४१११२
” १.	४१११७
वलाहका २.	३१७१९८
वलि २.	६१२३३
वलिन १. २. ३.	५१४७
वलिम १. २. ३.	५१४७
वलिर १. २. ३.	५१४१३
वलीक ३.	४३३३७
वलीनक १.	३३३२२३

वलीमुख १.	३१४४०
” ३.	३१८१४१
वल्क ३.	३३३१४
वल्कल १. ३.	३३३१३
वल्गन ३.	३१७१२२
वल्गा २.	३१७११४
वल्गित १. २. ३.	३१७११८
” १. २. ३.	३१७१२२
वल्गु ३.	४१४९५
” १. २. ३.	६१४१६
वल्मीक १. ३.	३११४८
वल्की २.	३१९११६
वल्म १. २. ३.	५१४७०
” १. २. ३.	७१४२५
वल्गरि २.	३३३२०
वल्गरीका २.	४१४९९
वल्गव १.	३१९२८
” १. २. ३.	४३३९२
वल्गा २.	३१८४८
वल्गार १.	३१५५२
वल्गी २.	३३३३७
वल्गीपद ३.	४३३११९
वल्गूर ३.	४३३३३
” १. २. ३.	४३३८९
वल्ग १.	३३३८३
” १.	३१५१९
” १. २. ३.	५१४२८
” १. २. ३.	५१४१३२
” १. २. २.	६१५७१
” १. २. ३.	६१५७१
वल्गा २.	३३३८६
” २.	३१४४७
” २.	४१४४
” २.	६१५७१
वल्गाकु १.	२३३३
वल्गामख १.	३१५२७
वल्गिक १. २. ३.	५१४८७
वल्गिन् १.	४११५४
वल्गीकार १.	३३३११७



वश्य ]

शब्दानुक्रमिका

[ वातसृग

वश्य १. २. ३.	५४३२
वषट् ४.	८८८३
वसति २.	७१२२३
वसन ३.	४३११६
वसन्त १.	२११८७
वसन्तघोष १.	२३२२७
वसा २.	४४११४
वसिक १. २. ३.	३३१३४
वसित ३.	४३११६
वसिष्ठ १.	३६१५५
वसीर १.	३८८७८
वसु १ व.	१३१८
” १.	३११५४
” ३.	३२२३६
” १.	३३१५
” १.	३३१९४
” १. २. ३.	३८८११
” १.	३८८३६
” ३.	३८८७३
” १.	६५१७८
वसुदेव १.	१११२६
वसुधा २.	३११२
वसुन १.	३६८३
वसुन्धरा २.	३११२
वसुभट्ट १.	३३१९४
वसुमती २.	३११२
वसुरेतस्	११२१६
वसुवह्नि २.	३३११०८
वसुवत ३.	३६११४९
वस्त ३.	४३११७
( वस्न )	
वस्ति १. २.	४३११३१
” १. २.	४४१६६
वस्तिशृणुक ३.	३६१२१७
वस्य ३.	४३११७
वस्त्र ३.	४३११६
वस्त्रकोश	४३१६३
वस्त्रग्रन्थ १. ३.	४३११३०
वस्त्रधारणी २.	४३१५३

वस्त्रान्त १.	४३१३१
वस्न १.	३८८७०
” ३.	३८८१२२
वस्त्रौकसार २.	१२१५९
वह १.	१२१४८
” १.	६११५३
वहन ३.	३७१२४
वहा २.	४२२२३
वहि १.	६११५३
वह्नि ३.	३७१२४
वह्निकर्ण १.	३६२१६
वह्नि १.	३४१५२
वह्नि १.	१२११४
वह्नि १.	५३१८
वह्निशिक्ष ३.	३८८९१
वह्निमुत १.	४४१०४
वा ४.	८८८६
” ४.	८८८५५
वाक्पति १.	५४१४५
वाक्य ३.	२४२२१
वाचट् ४.	८८८३
वागीश १. २. ३.	५४१४५
वागुर १.	३५११७
वागुरा २.	३९१३९
वागुरिक १.	३९१३८
वागूजी २.	३३१०८
वागुव १.	२३१२८
वागिमन् १.	२३२२५
” १. २. ३.	५४१४५
वाघत् १.	३६१७८
वाच् २.	११११
वाच्यम १.	३६१५०
वाचस्पति १.	२११३३
वाचाट १. २. ३.	५४१४६
वाचाल १. २. ३.	५४१४६
वाचाला २.	२३२२०
वाचिक ३.	२४२२५
” ३.	२४३३६
” १. २. ३.	३९१९९
वाचोयुक्तिपट्ट १. २. ३.	५४१४५

वाक्य १. २. ३.	८४१५५
वाज १.	२३३४९
” १.	३७१८५
” १.	४३१७६
वाजिवन्तक १.	३३१०१
वाजिन् १.	६११५५
वाजिन ३.	३६१९८
वाजिहाला २.	४३२२१
वाङ्का २.	३६१७९
वाङ्कित १. २. ३.	५४१९६
वाट १.	३५२२१
” १. ३.	४३११४
” १. २. ३.	८९१३७
वाटक १. ३.	४३१५
वाटधान १.	३५५५३
” १.	३५५१०१
वाटिका २.	३३२२१७
वाटी २.	३३३४
” २.	३३२२३०
” २.	८९१३७
वाटयपुष्पी २.	३३१२७
वाटयमण्ड १.	४३३७९
वाटया २.	३३१२७
वाटयाल १.	३३१२८
” १.	३८८५४
वाटबैद्य १.	८९१३९
वाण ३.	२४१११
वाणि २.	३९१८
वाणिज १.	३८८७२
वाणिज्य ३.	३८८३
वाणिनी २.	७२२२३
वाणी २.	१११९
वात १.	१२२४७
वातगामिन् १.	२३३४
वातम १.	३३३६५
वातपात १.	२२२६
वातपोथ १.	३३२२९
वातप्रमी १.	३४११६
” १.	८९१३८
वातसृग १.	३३३१६

[ वातल ]

वातल १. २. ३.	४४११४५
वातसख १.	१२११७
वातसञ्चार १.	४४१२२७
वातसारथि १.	१२११७
वातसुत १.	३९१७०
वातापिसूदन १.	३६१५२
वातायन ३.	४३१५४
वातायु १.	३४११६
वाताहार १. २. ३.	३६१३१
वाति २.	१२१४८
वातिक १.	४११२५
वातिक्रान १.	३३१०२
वातुल १.	३६१४३
वातूल १. २. ३.	७५१८०
वात्या २.	२११५१
” २.	५१११४
वात्सक ३.	५१११०
वात्स्यायन १.	३६१५९
वादन ३.	३९१११४
” ३.	३९११२१
” ३.	३९११३१
” ३.	३९११३६
वावर १. २. ३.	४३११७
वादित्र ३.	३९१११४
” ३.	३९११३६
वादित्रलगुह १.	३९११३६
वाद्य ३.	३९१११४
वाद्यनिर्घोष १.	३९११३६
वाद्यवादकसामग्री २.	३९११४०
वान १. २. ३.	३३११०
” ३.	३९१८
” १. २. ३.	६५१८०
वानक ३.	३६११४
वानवण्डक १.	३९१८
वानप्रस्थ १.	३३१४३
” १.	३६१२४
” १.	८११४०

वैजयन्तीकोषः

वानर १.	३४१३९
” १.	८६१७
वानवासिक १.	३५१२०
वानस्पत्य १.	३३१६
वानरी १.	३३१३१
वान्ताशिनू १. २. ३.	३६१९
वान्ति २.	४४१२६
वापिम १.	३६१६४
वापी २.	४२१६
वाप्य ३.	३६१९९
वाम १.	१११२९
” १.	१२१५५
” १. २. ३.	६४११६
वामदेव १.	१११४२
वामन १.	११११९
” १.	१२१८
” १. २. ३.	५४१८१
वामल्ल १.	३११४८
वामलोचना २.	४४१५
वामा २.	१११४८
” २.	४४१५
वामी ३.	३७१०७
वायव्य १.	२११९१
” १. २. ३.	३६१०१
वायस १.	२३११६
” १.	८६१६
वायसाली २.	३३१२२६
वायसी २.	३३११२
” २.	३३११४९
वायु १.	१२१४७
वायुन १.	१११२
( वयुन )	
वायुचर्मन् ३.	२१११
वायुसम्भवा २.	३४१४४
वार् २. ३.	४२१३
वार १.	५१११
” १.	५२१७
वारक ३.	३७१५०
वारट १.	५११५१

[ वार्ताहर ]

वारण १.	१२१७
” १.	३७१६१
” १.	४२११०
वारणान्त ३.	४३१९
वारणासी २.	४३१७
वारखुसा २.	३३११७३
वारमुल्या २.	४४१४२
वारवाण १. ३.	८५१२२
वारवाणि १.	८११४२
वारची २.	४४१२४
वाराणसी २.	४३१७
वाराह ३.	३१११८
वाराही २.	१११६४
” २.	३३१२१०
वारि ३.	४२११
” २.	६५१८२
वारिकूट १.	४३११५
वारिज ३.	३८११९
वारिधर १.	२२११
वारिपर्णी २.	४२१४६
वारिपिण्ड १.	४११४८
वारु १.	३७१९०
” २.	६२१३७
वारुणपाशक १.	४११५२
वारुणी २.	१११५९
” २.	३३११०९
” २.	३९१४६
वार्च ३.	३३११
वार्त ३.	४४१४२
” १. २. ३.	४४१४३
वार्ता २.	२४१३९
” २.	३८११
” २. १. ३.	६५१२५
वार्ताकशाकट १. २. ३.	३८१२१
वार्ताकशाकिन १. २. ३.	३८१२१
वार्ताकी २.	३३११०२
” २.	३३११०४
वार्ताकु २.	३३११०२
वार्ताहर १.	३९१६

[ वार्तिक ]

शब्दालुक्रमणिका

[ विकराल

वार्तिक ३.	३१६५६	वाशा २.	३१३१०२	वास्तोष्पति १.	११२१२
„ १.	३१७२९	वाशित ३.	२१७४४	वास्त्र १. २. ३.	३१७१२९
वार्द्धक ४.	७३३३०	वाशिता २.	७२१२२	वाह १.	३१४५२
„ ३.	८१९१७	वाशी २.	२११२०	„ १.	३१४६५
वार्धुष ३.	३१९५	वास १.	३३११९१	„ १.	५११५६
वार्धुषिक १. २. ३.	३१९८	„ १.	३१७१८	„ १.	५११५८
वार्धुषिन् १. २. ३.	३१९८	वासक १.	३३११०१	„ १.	५११५८
वार्धुष्य ३.	३१९५	वासतेयी २.	२११५७	वाहन ३.	३१७१२३
वार्ध्वाणस १.	३१४८	वासन १.	४३३४५	वाहनी २.	४३३१७
( वार्ध्वाणस )		„ ३.	४३३१६७	वाह्वारण १.	३१४३३
वार्मण ३.	५१११३	„ ३.	५१४४९	वाहस १.	४३११९
वार्मिक १.	३१५४०	वासना २.	४३१५८	„ १.	७३१६५
वार्षी २.	२११८९	वासनी २.	३३३१६८	वाहि १.	८१९१०
वाल १. ३.	४३३१६०	वासनीयक ३.	३८१११६	वाहिक १.	५११५३
„ १.	४४१९८	वासन्त १.	३३३६१	वाहित १.	३१७८७
„ १.	६११५४	„ १.	३८३३७	„ ३.	५११६४
वालक ३.	७३३३१	वासन्ती २.	३३३१८२	वाहित्य ३.	३१७७३
वालकूर्चा १.	४४१००	„ २.	३३३१८७	वाहिनी २.	३१७५५
वालकेली २.	३३३१२३०	वासयोग १.	४३३१०७	„ २.	३१७५८
वालधि १.	३१४७४	वासर १. ३.	२११५५	„ २.	४३२२३
वालनाटक १.	३१८५४	„ १.	७३१७२	वाहिनीपति १. २. ३.	३१७१४१
वालपाशक १.	३१७८१	वासव १.	११२११	वाहीक १ व.	३११२७
वालपाश्या २.	५३१३३६	„ १.	३३३१०८	वाह्य १.	३१४५२
वालमृग १.	३१४२९	वासस् ३.	४३३११६	„ ३.	३१७१२३
वालवायज १.	३१२४०	„ १.	८६११६	वि १.	३१२१२
वालवीज्य १.	३१४६३	वासागार ३.	४३३२०	„ १.	८११६०
वालहस्त १.	३१४७४	वासिक ३.	४३३४१	„ ४.	८१७६
वालिका २.	४३३१३५	वासिष्ठ ३.	४४३१०६	विंश १. २. ३.	५११२२
वालिनी २.	२११४२	वासी २.	३१९३६	विंशति २.	५११२६
वालुक ३.	३८१९६	वासुकि १.	४११३	विंशतितम १. २. ३.	५११२२
„ ३.	४११२३	वासुदेव १.	११११२	विंशतिमुज १.	११२४२
वालुका १ व.	४१२३३	„ १.	८११३९	विककृत १.	३३३३८
„ २.	७२२४	वासू २.	३१९१०७	विकच १ व.	११२३७
वालुकी २.	३३३१६७	वास्तु १. ३.	४३३१०	„ १. २. ३.	३३३९
वालक १. २. ३.	४३३११७	„ १. ३.	६१५८०	विकट १. २. ३.	५१४८२
वालमीक १.	३३३१५३	वास्तुक १.	३३३१५४	„ १. २. ३.	५१४१२६
वालमीकि १.	३३३१५३	वास्तुकशाकट १. २. ३.	३८१२१	„ १. २. ३.	७४२६
वावदूक १. २. ३.	५१४४५	वास्तुकशाकिन १. २. ३.	३८१२१	त्रिकटा २.	३१७४७
वावाता २.	३१७३२	वास्तुमध्य ३.	४३३१०	विकराल १.	३१४७
वाशन ३.	२१४४				

[ विकराल ]

वैजयन्तीकोषः

[ वित्ताली ]

विकराल १. २. ३.	५१४८२
विकरालिन् १.	५१३९
विकर्णि १.	३१७१८२
विकर्तन १.	२११११
विकर्मन् ३.	३१६११७
विकल १. २. ३.	५१४८६
विकला २.	३१६१५०
विकलाङ्ग १. २. ३.	५१४११
विकल्पना २.	२१४४०
विकसा २.	३१३१३५
विकार १.	५१२२२
" १.	७११६६
विकालक १.	२११६५
विकिर १.	२१३३
" १.	४१२८
" १.	७११७०
विकिष्कु १.	३११५६
विकुण्ठना २.	३१६१७५
विकुर्वाण १. २. ३.	५१४३३
विकृत १. २. ३.	३१९७८
" ३.	३१९५५
" १. २. ३.	४११४४
" १. २. ३.	७१४२५
विक्र १.	३१७६६
विक्रम १.	५१२१६
" १.	५१२१७
विक्रय १.	३१८६९
विक्रयिक १. २. ३.	३१८६८
विक्रान्त १. २. ३.	३१७१४७
" ३.	३१९४८
विक्रायिक १. २. ३.	३१८६८
विक्रेतृ १. २. ३.	३१८६८
विक्रेय १. २. ३.	३१८६९
विकलष १. २. ३.	५१४६७

विद्युत्मा २.	२११२३
विद्योम १.	३१७७४
विगण्डीर ३.	३१३१५१
विगत १. २. ३.	७१४२४
विगतनासिक १. २. ३.	५१४१२
विगता २.	३१६४८
विगन्धिका २.	३१२१२
विगन्धिन ३.	४१२३६
विगम १.	५१२२७
विगर्वा २.	२१४२८
विगीत १. २. ३.	३१६११
विग्रक १.	३१३८४
विग्र १. २. ३.	५१४१२
विग्रह १.	३१७६
" १.	५१२३
" १.	७११६८
विघन १.	३१६१०२
विघस १.	३१६६७
विघसासिन् १.	३१६४१
विघूणिका २.	४१४९१
विघ्न १.	५१२४
विघ्नेश १.	१११५३
विचकिल १.	३१३१८३
विचक्षण १.	३१६२३४
विचक्षणा २.	३१८४७
विचयन ३.	५१२४२
विचर्चिका २.	४१४१२३
विचारिका २.	३१७३७
विचारोक्ति २.	२१८२८
विचिकित्सा २.	३१६१७७
विचुल १.	३१३५०
विचोलक १.	११२४३
विच्छिन्ति २.	३१९१३
विच्युत १. २. ३.	५१४१०२
विजन १. २. ३.	५१४११९
विजन्मन् १.	३१५१०४
( द्विजन्मन् )	
विजय १.	३१७१५९
" १.	३१७२०९

विजयच्छन्द १. ४३१३९	
विजविल १. २. ३.	५१३४
विजाता २.	४१४१७
विजाति २.	३१४२६
विजिज्ञासा २.	४१६१७५
विज्ञ १. २. ३.	५१४१९
विट १.	२१९७०
" १.	४१४३९
विटका २.	४१३३८
विटकान्ता २.	३१३२१२
विटङ्क १.	३१३१७२
" १. ३.	४१३५४
विटप १.	३१३१६
" १.	३१८७३
" १. ३.	७१५६२
विटपिन् १.	३१३४
विटाटिका २.	३१३१४६
" २.	४१३३८
विटाश्रय १.	४१३२७
विट्खदिर १.	३१३६४
विट्चार १.	३१४७१
विट्पति १.	१११४
विह १.	३१८१२४
विहङ्ग १. ३.	३१८९७
" १. २. ३.	८१९३८
विह्व ३.	४१४१०८
वितंस १.	३१९४१
वितत ३.	३१९११५
" ३.	३१९११६
वितथ १. २. ३.	२१४१७
वितरण ३.	३१६११८
वितर्क १.	३१६१७६
वितर्किका २.	४१३३६
वितस्ति २.	३११५३
" २.	४१४८०
" १. २.	८१९२७
वित्तान ३.	३१७१९०
" १. ३.	४१३१२३
" १. २. ३.	७१५७६
वित्ताली २.	३१९१२४



[ वित्तज्ञक ]

वित्तुन्नक ३.	३।२।४२
वित्त ३.	३।८।७३
” १. २. ३.	६।५।७४
वित्तेश १.	१।२।५७
विदग्ध १.	५।३।१८
” १. २. ३.	५।४।२०
विदण्ड १.	४।३।५०
विदर १.	५।२।४१
विदल १. २. ३.	३।३।१४
विदा २.	३।६।१६३
विदारक १.	४।२।३१
विदारण ३.	८।३।१२
विदारी २.	३।३।२३
” २.	३।३।१९५
विदित १. २. ३.	५।४।१०१
” १. २. ३.	७।४।२३
विदिशू २.	२।१।३
विदुर १. २. ३.	५।४।४३
विदुल १.	३।३।३१
( अम्बुप्रिय )	
विदूषक १.	३।९।६९
विदूषिका २.	३।६।५३
विदेह १ व.	३।१।३०
विद्ध १. २. ३.	५।४।९७
” १. २. ३.	५।४।१११
” १. २. ३.	६।४।१७
विद्धकर्णी २.	३।३।१३१
विद्धायुध ३.	३।७।१७३
विद्या २.	३।६।२७
” २.	३।६।३०
विद्याधर १.	१।३।४
विद्युत् २.	२।२।३
” २.	३।२।१२
विद्रधि १. २.	४।४।१३७
विद्रव १.	३।७।२११
विद्रुत १. २. ३.	४।३।९५
विद्रुम १.	३।२।३९
” १.	७।१।६५
विद्रुमलता २.	३।८।९५
विद्रुस् १.	३।६।२३४

शब्दालुक्रमणिका

विद्वेष १.	३।६।१८४
विधवा २.	४।४।१४
विधा २.	३।६।३५
” २.	६।२।३४
विधातृ १.	१।१।६
विधान ३.	७।३।३३
विधि १.	१।१।९
” १.	३।६।३३
” १.	३।६।११३
” १.	३।६।१८९
” १.	५।२।२५
” १.	६।१।५५
विधु १.	२।१।२४
” १.	६।१।५५
विधुत १. २. ३.	५।४।१०१
” १. २. ३.	७।४।२३
विधुन्तुद १.	२।१।३६
विधुर १.	१।२।४१
” १. २. ३.	७।४।२७
विधुवन ३.	५।२।४०
विधूनन ३.	५।२।४०
विधेय १. २. ३.	५।४।२८
” १. २. ३.	५।४।३२
विनय १.	७।१।७०
विनयग्राहिन् १.	३।७।६७
विना ४.	८।८।४
विनायक १.	१।१।३२
” १.	१।१।५३
विनिमय १.	३।८।७१
विनियोग १.	५।२।२५
विनीत १. २. ३.	७।५।७४
विनोद १.	३।६।१८७
विन्दु १. २. ३.	५।४।४३
विन्ध्य १.	३।२।३
विन्ध्यकूटक १.	३।६।१५१
विन्ध्यवासिन् १.	२।६।१५८
विन्ध्यवासिनी २.	१।१।६३
विज्ञ १. २. ३.	५।४।९९
” १. २. ३.	६।४।१७

[ विप्रत्यय ]

विपचक १.	३।७।४२
विपज्जी २.	३।९।११६
” २.	७।२।२४
विपण १.	३।८।६९
विपणि २.	४।३।३५
” २.	७।२।२४
विपत्ति २.	३।६।१९१
विपथ १.	३।१।५०
विपद् २.	३।६।१९१
” २.	३।७।४
विपर्यय १.	५।२।५
विपर्यास १.	५।२।५
विपश्चित् १.	३।६।२३४
विपाक १.	३।६।१८९
” १.	७।१।६७
विपाकिन् १.	२।३।१२७
विपादिका १.	४।४।१२२
( विपाटिका )	
विपाशू २.	४।२।२७
विपाशा २.	४।२।२७
विपिन ३.	३।३।१
विपुल १. २. ३.	५।४।८०
विपुला २.	३।१।२
विप्र १.	३।६।१
विप्रकार १.	५।२।२२
विप्रकुण्ड १.	३।६।६२
विप्रकृष्ट ३.	५।४।१४२
विप्रतिसार १.	३।६।१८५
विप्रप्रिय ३.	३।८।१३९
विप्रयाण ३.	३।७।२१०
विप्रयोग १.	५।२।१६
विप्रलम्भ १.	५।२।२०
विप्रलाप १.	२।४।२९
” १.	८।१।४१
विप्रशेषित ३.	३।६।६७
विप्रशिका २.	४।४।११
विप्रिय ३.	३।७।४७
” १. २. ३.	५।४।६९
विप्रुष् २.	२।२।८
विप्रुष १.	२।३।२
विप्रुव १.	३।६।१९०

विबुध १.	३१५२०
विबुध १.	७११६६
विभण्ड १.	३१५२६
विभक्षण ३.	५१२३९
विभाकर १.	२१११४
विभाग १.	५१२३
विभाजन ३.	३१३१५१
विभात ४.	२११६८
विभाव १.	३१५८०
विभावनी २.	३१३१८५
विभावरी २.	२११६७
विभावसु १.	८११३९
विभाषण ३.	२११२४
विभीतक १. २. ३.	३१३१७५
विभीदक १.	३१३१७६
विभीषण १.	११२५
विभु १. २. ३.	६५८१
विभूति २.	८५३४
विभूषण ३.	५१३१३३
विभ्रम १.	३१२१६
" १.	७११६९
विमनस १. २. ३.	५१३३४
विमल १.	३१२४१
" १. २. ३.	५१३६६
विमानुज १.	४१३३३
विमान १. ३.	७५८८१
वियत् ३.	२१११
वियद्गङ्गा २.	१३१३३
वियम १.	५१२३०
वियात १. २. ३.	५१३१७
वियाम १.	५१२३०
वियुन १.	११२६
वियोग १.	५१२२६
विरजा २.	३१३१९२
विरत ३.	३७२०२
विरति २.	५१२३६
विरल १. २. ३.	५१३१२५
विरह १.	५१२२६
विराग १.	३१६१६७

विरागाह १. २. ३.	५१४५४
विराज् १.	३१७१
विराव १.	२१३३
विरावृत्त ३.	३१८७९
विरिञ्च १.	१११७
विरुक्तोद्भव १.	३१८५५
विरुक्षण ३.	२१३३३
विरूप १. २. ३.	५१३१२६
विरूपाक्ष १.	१११४२
विरोचन १.	८११४२
विरोध १.	३१६१८४
विरोधन ३.	५१२३०
विरोधिन् १.	३१७४२
विरोधोक्ति २.	२१३२९
विलक्ष १. २. ३.	५१३२९
विलम्बित ३.	३१५१२३
" १. २. ३.	८१३१२
विलम्ब १.	५१२१९
विलाप १.	२१३२९
विलाव १.	५१२२९
विलास १.	३१५९३
विलिष्ट १. २. ३.	५१३८४
विलीन १. २. ३.	४१३१५
" १. २. ३.	७१३२३
विलेपी २.	४१३८०
विलेप्या २.	४१३८०
विलोमिका २.	३१३१११
विल्वगन्ध १.	३१३१२१
विविध १. ४.	७११७१
विवरण ३.	२१३२६
विवर्ण १.	३१५२
" १. २. ३.	७१३२४
विवर्णता २.	३१८८१
विवश १. २. ३.	७५२३७
विवस्वत् १.	१११३
" १.	२१११२
विवाद १.	२१३२४
विवाह १.	३१६५४
विवाहाग्नि १.	११२२७
विचिक्त १. २. ३.	५१३११९

विचिक्त १. २. ३.	७१३२४
विद्युत्तात् १.	२१३१३
विवेशिका २.	४१३१४
विवेष्टन ३.	५१२४२
विश १.	३१५२
" १.	३१८११
" २. ३.	४१३११९
" १. २.	८१५३९
विशङ्कट १. २. ३.	५१३८२
विशद १.	५१३१०
" १. २. ३.	५१३३४
" १. २. ३.	७१३२५
विशय १.	३१६१७७
विशर १.	३१७२११
विशल्या २.	३१३१३१
विशस् १.	३१७२११
विशसन १.	३१७१५८
" ३.	३१७२१४
विशाख १.	१११५७
" १.	७५८३३
विशाखा २.	२११४०
" २.	८१५५७
विशाखिका २.	३१६१२३
विशारद १. २. ३.	८१३१२
विशाल १.	४१३१२९
" १. २. ३.	५१३८०
" १. २. ३.	५१३८२
विशालता २.	५१२५
विशालत्वच् १.	३१३४७
विशाला २.	३१३१०३
" २.	३१३१७२
विशिक्ष १.	३१७१७९
" १. २. ३.	७५८८१
विशिखा २.	४१३१६
विशिखाश्रय १.	३१७१७८
विशीर्णपाद् १.	११२३५
विशीर्णाङ्गी २.	३१६५१
विशुन्धलवण २.	३१८१२१

[ विशेष ]

विशेष १.	३१६१२०५
विशेषक १. ३.	४३११४८
” १. ३.	८१९१३०
विशेषभाग १.	३१७१७६
विशोक १.	२१३२९
विश्राणन ३.	३१६११८
विशिलष्ट १. २. ३.	५१४१२५
विश्लेष १.	५१२२६
विश्व १ व.	११३८
१ १. २. ३.	५१४८६
” १. २. ३.	६१५७८
विश्वकद्रु १.	३१९३९
विश्वकर्म्मन् १.	११३६
” १.	८११४१
विश्वगोप्त्र १.	८११३९
विश्वभृत् २ व.	२११२१
विश्वभेषज ३.	३१८७५
विश्वभर १.	८१५२२
विश्वरुचि २.	११२३०
विश्वरूप १.	११११५
विश्वरेतस् १.	१११८
विश्वविस्ता २.	२११७५
विश्वस्ता २.	४१४१४
विश्वहयंक १.	३१६८३
( विश्वहयर्त )	
विश्वा २.	३११३
विश्वात्मन् १.	१११६
” १.	७११६७
विश्वावसु १. २.	८१५२३
विष ३.	३१२३३
” ३.	३११२४
” ३.	४१२१
विषज्ञ १.	३१३५५
विषज्ञी २.	३१३१००
” २.	३१३१२७
” २.	३१३१३२
विषजित् ३.	३१८१६६
विषधर १.	४११६
विषपुष्पक १.	३१३५०
विषम १.	३१३२१६

शब्दालुक्रमणिका

विषमच्छद १.	३१३४७
विषमस्युहा २.	३१६१७९
विषमायुध १.	१११२८
विषमोक्त १. २. ३.	५१४८३
विषय १.	३१७४८
” १.	५१३२
” १.	७११२२
विषयग्राम १.	५१११७
विषयिन् १. २. ३.	७१५७५
विषयृच १.	८१६१९
विषयैद्य १.	४११२५
विषा २.	३१८९०
विषाण १. २. ३.	७१५८२
विषाणिका २.	४१३२२
विषाणिन् १.	३१४५२
” १. २. ३.	७१५७७
” १.	८१६१४
विषाणी २.	३१३११६
विषाद् १.	३१६१९१
विषुव १. ३.	२११९०
विषुवत् १. ३.	२११९०
विषूचीन १. २. ३.	५१४९१
विष्कम्भ १.	७११६७
विष्किर १.	२१३३८
” १.	७११६६
विष्टप ३.	३१६२०६
विष्टर १.	३१३४
” ३.	४१३१६४
” १.	७११६९
विष्टरभवस्	११११०
विष्टि १.	३१९५५
विष्टा २.	३१३१००
” २.	४१४११९
विष्टाख्य ३.	३१२३६
विष्टिका २.	३१८८१
विष्णु १.	११११०
” १.	१११२०
विष्णुकान्ता २.	३१३१२३

[ विस्मय ]

विष्णुकान्ता २.	३१३१३४
विष्णुगुप्त १.	३१६१५९
विष्णुपद ३.	२१११५
विष्णुपदी २.	४१२२४
विष्णुरथ १.	११३३८
विष्णुशक्ति २.	११११६
विष्कार १.	२१४९
विष्कुलिङ्गिनी २.	११२३०
विष्णु १. २. ३.	५१४७१
विष्वक् ४.	८१८३
विष्वक्सेन १.	१११११
विष्वक्सेना २.	३१३६६
विष्वक् १. २. ३.	५१४९१
विष्वद्वीचीन १. २. ३.	५१४९३
विष्वद्वक् १. २. ३.	५१४९३
विसंवाद १.	५१२२०
विसर १.	५१११
” १.	५१३२६
विसर्ग १.	११२८९
” १.	३१६३७
” १.	७११७०
विसर्जन ३.	३१६११८
विसर्जिका २.	२११९१
विसार १.	४११४२
विसृत १. २. ३.	५१४११०
” १. २. ३.	७१४२६
विस्त १.	५११५१
विस्तर १.	५१२३
विस्तार १.	३१३१६
” १.	५१२३
विस्तीर्ण १. २. ३.	५१४८०
विस्तीर्णजालु २.	३१६४७
विस्तृत १. २. ३.	५१४११०
विस्फोट १.	४१४१२३
विस्मय १.	३१६१८१
” १.	३१९७६
” १.	७११६५



विस्मरण ]

वैजयन्तीकोषः

[ वृद्ध

विस्मरण ३.	३१६१७७	वीथि २.	३१९१००	वृकधूप १.	३१८११०
विस्मृत १. २. ३.	५४१०९	वीथिका २.	५२१४६	" १.	३१८११२
विन्न ३.	४४१०६	वीथी २.	२११४४	वृकधूर्तक १.	३१४७
" ३.	४४१०८	" २.	६२१३५	" १.	३१४३८
विश्वसजा २.	४४१५४	वीथ १. २. ३.	५४१६६	वृकधोरण १.	३१४३२
विश्व १. २. ३.	५४१५२	वीनाह १.	३१३२२७	वृकवाला २.	४३१४४
विश्वम्भ १.	७११६६	वीर १. २. ३.	३१७१४७	वृकस्थली २.	४३१९
विहग १.	२३१२	" १.	३१९१७५	वृकाम्लिका २.	३३३३४
विहगाधिप १.	१११३८	" १. २. ३.	६१५८२	वृकण १. २. ३.	५४११०२
विहङ्ग १.	२३१२	वीरजयन्तिका २.		वृकवर्हिस् १.	३३३७८
विहङ्गम १.	२३१२		३१७२०८	वृक्य १.	४४१११२
विहङ्गिका २.	३१९६	वीरण ३.	३३३२३१	वृक्ष १.	३३३४
विह्वनन ३.	३१९१०	वीरचण ३.	३३३२३१	" १.	८९१११
विहसित ३.	३१९८३	वीरपत्नी २.	४४११३	वृक्षक १.	३३३८३
विहस्त १. २. ३.	५४१६८	वीरपाण ३.	३१७२०२	वृक्षगृह १.	८९११८
विहान १. ३.	२११६८	वीरभद्र १.	१११५३	वृक्षमूलिन् १. २. ३.	
विहापन ३.	३१६११८	वीरभार्या २.	४४११३		३१६२२९
विहायस् १. ३.	७५१८०	वीरमातृ २.	४४११३	वृक्षरुहा २.	३३३८५
विहायस ३.	२१११	वीरल १.	४११५५	वृक्षादनी २.	३३३८५
विहार १.	४३१२८	वीरविप्लावक १.		वृक्षाम्ल ३.	३१८१३२
" १.	७११६८		३१६०२	वृक्षोत्पल १.	३३३७२
विहारिणी २.	३१६५२	वीरवृक्ष १.	८९११८	वृजिन १. २. ३.	५४११२३
विहास १. २. ३.	७५१८३	वीरशङ्कु १.	३१७१८०	" १.	७५१८४
विह्वल १. २. ३.	५४१६७	वीरशाक १.	३३३१५४	वृत्तिद्रुम १.	४३३१४
वीकाश १.	७११६७	वीरसू २.	४४११३	वृत्तिमार्ग १.	३११५१
वीक्षा २.	३१६१८१	वीरस्कन्ध १.	३१४९	वृत्त ३.	३१६११५
वीचि २.	४२११४	वीरस्नाका २.	४३३१११	" १. २. ३.	५४१८३
" २.	६२१३५	वीरहन् १.	३१६७१	" १. २. ३.	६५१७६
वीज्य १.	३१८३१	वीराशंसन ३.	३१७२०६	वृत्ताङ्गी २.	३३३६७
" १.	३१८१२८	वीरासन ३.	३१६२२७	वृत्तान्त १.	२४३३९
वीणा २.	३१९११६	वीरधू २.	६२१३५	" १.	७११७१
वीणावर्णशलाका २.		वीरोज्ज १.	३१६७०	वृत्ति २.	३१८११
	३१९१२०	वीरोपजीवक १.	३१६७१	" २.	३१८७
वीणावाद १.	३१९१००	वीर्य ३.	३१७२१०	" २.	३१९१०२
वीत ३.	३१७८९	" ३.	४४११११	" २.	६२१३६
( पीत )		" ३.	६२१३२	वृत्र १.	६११५६
" १. २. ३.	६५१७५	वीर्यकर १.	४४१११०	वृत्रारि १.	१२११
वीतक ३.	४३३११०	वीलक १.	३१५२८	वृथा ४.	८७१२८
वीतराग १.	१११३५	वीवध १.	७११७१	वृथाजात १.	३१६७७
वीतिदोष १.	१२११४	वृक १ व.	३११४०	वृद्ध ३.	३१८१९६
		" १.	३१४८	" १. २. ३.	५४१११६



# वृद्ध ]

## शब्दानुक्रमिका

## [ वेन

वृद्ध १. २. ३.	६५५८०
वृद्धकाक १.	२३११७
वृद्धगोनस १.	४१११३
वृद्धनाभि १. २. ३.	४१११४६
वृद्धप्रपितामह १. ४११३०	
वृद्धप्रमातामह १. ४११३०	
वृद्धवयस् १. २. ३.	५११३३
वृद्धश्रवस् १.	११२११
वृद्धा २.	४११२१
वृद्धि २.	३१८५
” २.	३१८५४
” २.	४११३३
” २.	५११३३
” २.	६१२३७
वृद्धोक्त १.	३११५५
वृद्धधार्जाव १. २. ३.	३१८८
वृन्त ३.	३३३२०
” १.	३३३१६८
” ३.	३११५१
” ३.	४११६८
वृन्ततुम्बी २.	३३३१६८
( वृत्ततुम्बी )	
वृन्ता २.	३३३६६
वृश्चिक १.	३३३१४६
” १.	४११३२
” १. २.	४११३३
” १.	४११३३
वृश्चिकच्छदा २.	३३३१२७
वृश्चिकाली २.	३३३१२६
वृष ३.	४३३३६
” १.	४११२
” १. २. ३.	६५५७७
वृषण १.	४११६३
वृषणश्च १.	११२१०
वृषण्वसु १.	११२८
वृषण्वज १.	१११४२
वृषन् १.	११२१
” १.	६११५६

वृषपर्णी २.	३३३१४३
वृषपूतन १.	३३३१२२
वृषभ १.	३३२५
” १.	३३४५२
वृषल १.	३३४५२
” ३.	१८८७६
” १.	३३११
वृषलक्षणा २.	३३३५२
वृषली २.	७१२२४
वृषवाहन १.	१११४६
वृषसालु १.	८११४०
वृषस्यन्ती २.	४११११
वृषा २.	३३३११३
” २.	३३३१७३
” २.	३३८५४
वृषाकपायी २.	८१२१३
वृषाकपि १.	८११४०
वृषाक्रान्ता २.	३३४५१
वृषाण १.	१११५२
वृषावाह १.	३३८५७
वृष्णि १.	३३४६४
वृष्टि २.	२१२७
वृष्य १.	३३३२२५
” १.	३३८३५
वृष्यकन्द ३.	४३३४७
वृष्या २.	३३८५४
वेग १.	११२५५
” १.	६११५६
वेगसर १.	३३७१०८
वेगिन् १.	११२५०
वेङ्कट १.	३३२५
वेङ्कर १.	३३३१६९
वेज्जन १.	३३३१०८
वेटी २.	४२१५५
वेण १.	३३३९८
” १.	३३३९८
वेणि २.	४२३३०
वेणिनी २.	४११६
वेणी २.	३३३८६
” २.	३३३६५
” २.	६२३३६

वेणु १.	३३३२१४
” १.	६११५४
वेणुक १.	३३५१३
” ३.	३३७८२
वेणुका २.	३३११२५
वेणुष्मा १.	३३१७१
वेण्ड ३.	४३३२७
वेतन ३.	३३१५
वेतस १.	३३३३१
वेतस्त्वत् १. २. ३.	३३१४३
वेताल १.	११२३८
वेतालासन ३.	३३३२२१
वेज १.	३३३१३३
वेज्जधर १.	३३७२४
वेज्जवती २.	४११२८
वेद १.	३३३२७
वेदगर्भ १.	३३३१
वेदन १. २. ३.	७५८३
वेदपठित् १.	२३३२३
वेदयष्टि २.	३३३१२४
( देवयष्टि )	
वेदाङ्ग ३.	३३३२८
वेदि २.	३३३१०९
” २.	३३३११०
वेदिका २.	४३३३६
” २.	७२२२५
वेदित् १. २. ३.	५११४३
वेदिपर १ व.	३३३३७
वेद्यास्तरण ३.	२३३९१
वेधक १.	३३८१२०
वेधनिका २.	३३११८
वेधमुख्यक १.	३३३११७
वेधमुख्या २.	३३३३६
वेधस् १.	१११९
” १.	६११५७
वेधित १. २. ३.	५१११११
वेध्य ३.	३३७१९४
वेध्या २.	३३११३५
वेन १.	३३५८४
” १.	३३५९७

वेन ]

वैजयन्तीकोषः

[ वैश्वदेवामि

वेन १.	३।५।९९	येहत् २.	३।४।४७	वैदेहक १.	३।५।७८
वेपथु १.	३।९।८५	वै ४.	८।७।७	" १.	३।८।७२
" १.	३।९।८९	" ४.	८।७।११	वैदेही २.	३।८।७७
वेमन् १.	३।९।८	वैकचय ३.	४।३।१२३	वैद्य १. २. ३.	४।४।१४३
वेल १.	३।३।२५	" ३.	४।३।१५६	वैद्यमातृ २.	३।३।१०२
वेलज १.	५।३।३६	वैकरञ्ज १.	४।१।९	वैद्यशास्त्र ३.	३।६।२९
वेलव १.	३।५।२२	" १.	४।१।१०	वद्युत ३.	३।१।१९
( पेलव )		" १.	४।१।१६	वैद्युत्स्वत १.	३।१।१२
वेल २.	४।२।१३	वैकुण्ठ १.	१।१।१२	वैद्योत १. २. ३.	३।२।१९
" २.	४।२।३३	" १.	३।३।१२१	वैधव्यलक्षणोपेता २.	३।६।५३
" २.	६।२।३६	" १.	७।१।७२	वैधान्न १.	१।३।७
वेलान १.	५।३।३६	वैकुन्त १.	३।२।३५	वैधेय १. २. ३.	५।४।२१
वैष्ण ३.	३।८।९७	वैखानस १.	३।६।१३४	वैनतेय १.	१।१।३७
वैष्ण ३.	३।८।७९	वैखारक १.	५।३।३०	वैनयिक १. २. ३.	३।७।१३०
वैष्णित १. २. ३.	५।४।९५	वैघटिक १.	३।९।१५	वैनीतक १. ३.	३।७।१३७
" १. २. ३.	७।४।२३	वैचित्य ३.	३।६।२००	वैपरीत्य ३.	५।३।५
वेश १.	३।५।१८	वैजनन १.	४।४।१९	वैमात्रेय १.	४।४।३३
( उग्रवेश )		वैजयन्त १.	१।१।५५	वैमेय १.	३।८।७१
" १.	४।३।३५	" १.	१।२।९	वैयथित १.	३।६।१०७
वेशनी २.	४।३।२४	" १.	१।२।९	वैयाघ्र १. २. ३.	३।७।१२८
वेशन्त १.	४।२।६	वैजयन्तिक १. २. ३.	३।७।१४५	वैर ३.	३।६।१८४
वेशवार १.	४।३।८७	वैजयन्ती २.	३।३।९६	वैरङ्गिक १. २. ३.	५।४।५४
" १.	४।३।९०	" २.	८।२।९	वैरशुद्धि २.	३।७।२०९
वेशमन् ३.	४।३।१८	वैज्ञानिक १. २. ३.	५।४।१९	वैराग्य ३.	१।१।४७
वेशमस्तूणा २.	४।३।३९	वैदूर्य ३.	३।२।४०	" १.	३।६।१६७
वेश्य ३.	३।३।१८४	वैणव ३.	३।२।२१	वैरिन् १.	३।७।४१
वेश्या २.	४।४।२४	" १.	३।३।२२	वैवधिक १.	३।९।६
वेश्यागृह ३.	४।३।३३	" १.	३।५।३८	वैवस्वत १.	१।२।३४
वेश्याचार्य १.	३।९।७०	वैणविक १.	३।९।७१	वैशाख १.	२।१।८३
वेश्याजनाश्रय १.	४।३।३५	वैणिक १.	३।९।७०	" १. ३.	३।७।१८६
वेश्यापति १.	४।४।३९	" १.	५।३।५७	" १.	३।९।३१
वेप १.	३।९।६८	वैतंसिक १.	३।९।४०	वैशाखिन् १.	३।७।७६
" १.	४।३।१३२	वैतनिक १. २. ३.	३।९।५	वैशाखी २.	२।१।७५
वेष्ट १.	३।८।१०९	वैतालिक १.	३।५।८१	वैशिख ३.	३।७।१७५
" ३.	६।३।३२	" १.	३।७।३०	वैश्य १.	३।८।१
वेष्टन ३.	३।६।१०५	वैदिक १.	३।६।८	वैश्यकुण्ड १.	३।५।६३
" ३.	४।४।९३	वैदेह १.	३।५।८७	वैश्रवण १.	१।२।५७
" ३.	७।३।३४	" १.	३।५।११६	वैश्वदेवामि १.	१।२।२७
वेष्टाचार ३.	३।८।१२३	वैदेहक १.	३।५।१६		
वेष्टित १. २. ३.	५।४।९६				
वेसर १.	३।७।१०८				

चैश्वानर ]

शब्दानुक्रमणिका

[ अत

चैश्वानर १.	११११४	व्यवहार १.	८११४३	व्यालालयुध ३.	३१८१९९
” ३.	२११४९	व्यवहित ३.	५११४२	व्यालि १.	३१६१५८
चैश्वानरी २.	२११४८	व्यवाय १.	७११६५	व्यावहारी २.	८११४४
वैषयिकी २.	३१७३५	व्यष्ट ३.	३११२४	व्यास १.	१११३०
वैष्णव १.	३१६१०८	व्यसन ३.	७३३३२	” १.	१११३१
वैष्णवी २.	११११६	व्यसनार्त १. २. ३.	५११६८	” ३.	३१६१७६
” २.	१११६५	व्याकरण ३.	३१६२८	” १.	५१२३३
वैष्णुत ३.	३१६१५	” ३.	८३१११	व्युत्क्रम १.	५१२३६
वैसारिण १.	४११४१	व्याकुल १. २. ३.	५११६८	व्युत्थान ३.	५१२२०
वैहायस ३.	३१७१८८	व्याकृति २.	५१२३४	” ३.	७३३३१
वैहासिक २.	३१७१७	व्याकोच १. २. ३.	३३३९	व्युत्पन्न १. २. ३.	५११४२
घोरुलान १.	३१७१०२	व्याघात १.	३३३४८	व्युप १. २. ३.	३१६१३२
घोषाट् ४.	८१८३	व्याघ्र १.	३३३३	व्युष्ट ३.	२११६८
घोषट् ४.	८१८३	व्याघ्रक १. ३.	४३३४३	व्युष्टि १. २. ३.	३१६१२६
घोषट् ४.	८१८३	व्याघ्रनख ३.	३१८१९९	” १. २. ३.	६१२३५
व्यंसक १. २. ३.	५११२४	व्याघ्रपाद् १.	३३३३८	व्यूढ १. २. ३.	५११८०
व्यक्त १.	५३३८	व्याघ्रपुच्छक १.	३३३६५	” १. २. ३.	५११८३
” १. २. ३.	६१५७२	व्याघ्राट १.	२३३१९	व्यूति २.	३१९२
व्यङ्गा २.	३१६१५०	व्याज १.	३१६१९५	व्यूह १.	५११२
व्यजन ३.	४३३१५९	” १.	६११५४	” १.	६११५६
व्यञ्जक १.	३१९९८	व्यादीर्णस्थि १.	३३३१	व्योकार १.	३१९१६
व्यञ्जन १.	३३३२२३	व्याध १.	३१९३८	व्योमकेश १.	१११४१
” १. ३.	३१६३६	व्याधाम १.	१२१३३	व्योमगुण १.	११४१
” १. २. ३.	३१६९३	व्याधि १.	४११३८	व्योमधारण १.	३१२३५
” ३.	४११८५	” १.	८१६८	व्योमन् ३.	२१११
” ३.	४११०३	व्याधित १. २. ३.		” ३.	५१३३१
” ३.	७३३३०			व्योमसम्भवा २.	३१४४४
व्यतिकर १.	८११४१	व्यापन १.	५१२४१	व्योमाख्य ३.	३१२१५
व्यतिहार १.	५१२६	व्यापलण्डिका २.	४१४८४	” ३.	३१६१६१
व्यत्यय १.	५१२५	व्यापादन ३.	३१७२१५	व्योष ३.	३१८८०
व्यत्यास १.	५१२६	व्याप्य १.	४११३८	व्रज १.	३१९३३
व्यथा २.	३१६१८७	व्यप्ब १.	२१२२७	” १.	५१११
व्यध्व १.	३११५०	व्याम १.	४१४८२	” १.	६११५४
व्यन्तर १.	४११९	व्यायत्त १. २. ३.	७१२४४	व्रण १. ३.	३१७२१७
व्यय १.	३१७४४	व्यायाम १.	४१४८२	व्रणव्नी २.	३३३१५७
व्यर्थ १. २. ३.	५११२२९	” १.	७१३६८	व्रणवन्ध १.	४११४०
व्यलीक ३.	५१२३५	व्यायोग १.	३१९१०१	व्रत ३.	३१११३
” १. २. ३.	७१५७९	व्याल १.	३१४७३	” १ ब.	३१३३२
व्यवच्छेद १.	३१७१९२	” १.	४११४	” १. ३.	३१६१४४
व्यवधि १.	११२६३	” १. २. ३.	६१५७४	” १. ३.	३१६१३६
व्यवहार १.	३१८१५	व्यालप्राहिन् १.	४११२५	” १.	६३३३१

व्रतति ]

वैजयन्तीकोषः

[ शतभिषज्

व्रतति २.	३१३७	शकुन ३.	८३१६	शङ्ख ३.	५११२८
व्रतती ३.	३१३७	शकुनि १.	२३३३	" १. ३.	६१५८३
व्रतसङ्ग्रह १.	३१६८७	शकुन्त १.	२३३३	" १.	८१६१४
व्रतिन् १.	३१६७	" १.	२३३३२	शङ्खक १.	४१५९६
" १.	३१७९०	" १.	७११७४	शङ्खकार १.	३१५६३
व्रश्चन १.	३१९३५	शकुन्ति १.	२३३३	शङ्खद्वीप ३.	३१११४
व्राजिक ३.	३१६१४८	शकुलाक्ष १.	३३३२००	शङ्खनख १.	४११५६
व्रात १.	३१५१	शकुलादनी २.	३३३१९७	शङ्खपात्र ३.	३१६६२
" १.	३१५५९	" २.	३१८८३	शङ्खपाल १.	४१११२
" १.	५१११	शकुलार्मक १.	४११४५	शङ्खमुख १.	४११५३
व्रात्य १.	३१५५९	शकुलिन् १.	४११४१	शङ्खिनी २.	३३३११६
" १.	३१५१०२	शकुत् ३.	४११११८	शची २.	११२११
" १.	३११११९	शक्ति २.	१११३६	शचीपति १.	११२३
व्रीड १. २.	८१९२७	" २.	३११६१	शचीवल १.	३१९६६
व्रीला १.	३१६१९४	" २.	३१७५	शठ ३.	३१३३२
व्रीहि १ व.	३३३२३	" २.	६१३३८	" १.	३३३३३
" १.	३१८३१	शक्तिपाणि १.	१११५५	" १.	३३३३७
" १.	३१८३२	शक्र १.	६११५७	" १.	३३३७६
" १.	३१८६३	शक्रवृत्त १.	८१११८	" १.	३१८४१
" १.	८१९५७	शक्राख्य १.	३३३७३	" १. २. ३.	५१४२२
व्रीहिकङ्क १.	३१८४०	शकल १. २. ३.	५१४४४	शण्ड १.	३३३९८
व्रीहिन् १. २. ३.	५१४११९	शकरी २.	२११२१	शण्ड १.	३१८१३९
	५१४११९	" २.	७१२२५	शण्डिली २.	१११५९
व्रीहिमत १. २. ३.	५१४११९	शङ्कर १.	१११३९	शत ३.	५११२८
व्रीह्य १. २. ३.	३१८१९	शङ्का २.	६१३३८	" ३.	५११३१
श		शङ्किल १.	३१७८७	शतकोटि १.	११२१३
शंसा २.	२१४३५	शङ्कु १.	११२४१	शतघ्नी २.	३१७१६९
" २.	६१२४१	" १.	२३३६	शततम १. २. ३.	५११२३
शंस्य १.	११२२४	" १.	३१७८५	शतद्रु २.	४१२२७
शक १.	३१४७४	" १.	३१७१६७	शतधारक ३.	११२१३
" १.	३१५७४	" १.	४१४६१	शतधृति १.	१११८
" १.	६१५९१	" १.	५११३१	शतपत्र ९.	२३३३३
शकट १.	३३३२०९	" १.	६११५९	" ३.	४१२३८
" १. ३.	३१७१२५	" १. ३.	८१९३०	शतपदी २.	४११३३
शकटाविल १.	२३३१२	शङ्कुर्ण १.	८११४४	शतपर्व ३.	३१८९२
शकल १. ३.	४१४५६	शङ्कुमूली २.	२११७३	शतपर्वन् २.	३३३१४९
" ३.	७३३३४	शङ्कुला २.	३३३१७०	" १.	३१८५४
शकलज्योतिस् १. ४१११८		शङ्कु १.	११२६०	" ३.	४१२४३
शकुटा २.	३१७७९	" १.	३१२४१	" १. २. ३.	८१२२३
शकुन १.	२३३३	" १.	३१८१०१	शतप्रास १.	३३३१९२
		" १. ३.	४११५५	शतभिषज् १.	२११४३



[ शतभीरु ]

शतभीरु १.	३३३१८३
( शीतभीरु )	
शतमन्यु १.	११२५
शतमान ३.	५११४५
” ३.	५११५०
शतमुखी २.	१११६०
शतमूर्धन् १.	३११४८
शतमूली २.	३३३१४२
शतवीर्या	३३३१२३३
शतवेधिन १.	३८८१३३
शतहृदा २.	२२२४
शताङ्ग १.	३१७१२४
शतानन्द १.	१११८
” १.	११११४
” १.	३१६१५६
शतावरी २.	३३३१४२
शतावर्त १.	११११४
शतावर्ता २.	२२२४
शत्रु १.	३१७३९
” १.	३१७४०
” १. २.	८११४७
शत्रुघ्न ३.	३१७१५७
शनक १.	३१५३०
शनकैः(-सु) ४.	८८८१४
शनि १.	२११३६
शनैः (-सु) ४.	८८८१४
शनैश्चर १.	२११३५
शपथ १.	७११७३
शफ १.	३१४९९
शफरी २.	३३३९४
” १. २.	४११४४
शबर १ व.	३११३४
” १.	३१५२३
शबल १.	५३३२३
शबली २.	३१४४४
शब्द १.	२४४१
” १.	५३११७
” १.	६११५९
शब्दकार १. २. ३.	५३३४८
शब्दग्रह १.	४१४९२

शब्दानुक्रमणिका

शब्दन १. २. ३.	५३४४८
शम् ४.	८८८१७
शम १.	३११७६
” १.	५३२२७
शमथ १.	५३२२७
शमन १.	११२३५
” ३.	३३३९४
” १.	७५५८७
शमल ३.	४३४११८
” ३.	७३३३४
शमित १. २. ३.	५३४११४
शमिता २.	४३३६८
शमी २.	३३३८९
” २.	३८८६५
शमीधान्य ३.	३८८६२
शमीफला २.	३३३१४८
शम्फली २.	४३४२५
शम्ब १.	६११५८
शम्बर १.	३३३१३
” १.	४११४२
” १. ३.	७५५८४
शम्बरारि १.	१११२८
शम्बरी २.	३३३११३
शम्बल १. ३.	३१९७
शम्बाकृत १. २. ३.	३८८२३
शम्बूक १.	४११५७
” १.	४३३४७
” १.	४३३४७
शम्बूकावर्त १.	४३३३०
शम्बर १.	३३३१८८
शम्भल १.	३३७९६
शम्भु १.	६११५७
” १.	८१११
शम्भा २.	३८८२८
शम्भाक १.	३३३४८
शय १.	४११२८
” १.	४३३२८
” १.	४३३२३
शयणक १.	४११२६

[ शरि ]

शयथ १.	७५५८५
शयन ३.	४३३१६५
” ३.	४३३१६७
” १. ३.	७५५८५
शयनीय ३.	४३३१६५
शयान १.	४११२८
शयालु १.	३३३३८
” १. २. ३.	५३३३९
शयित १. २. ३.	५३३३९
शयीचि १.	१२२६
शयु १.	४३३१९
शय्य ३.	४३३१८
शय्या २.	४३३१६५
” २.	६२२४१
शर १.	१२२५४
” १.	३३३२२८
” १.	३३३१८०
” १.	३८८१४७
” १.	६११५८
” १.	८११३६
शरज १.	१११५४
शरजालक	३३३१८३
शरण ३.	८३३१७
शरद्व २.	२११८९
” २.	२११९१
” २.	६२३३८
शरद्वण्ड १ व.	३११३९
शरम १.	३३३३२
शरमा १.	३३३५१
” २.	३३३५२
शरण्य १. २. ३.	३३३१९४
” १. २. ३.	८११३२
शराटिका २.	२३३११
शरादान ३.	३३३१८९
शरायुध ३.	३३३१७३
शराह १. २. ३.	५३३४२
शराव १.	४३३५९
शरावती २.	४३३३०
शरासन ३.	३३३१७९
शरि १.	३३३७३

शरि १.	३१३७७	शशादन १.	२१३३०	शाक्य १.	१११३४
( चरि )		शशिन् १.	२११२४	शाक्यसिंह १.	१११६४
शरीर ३.	४१५५२	शशिशूषण १.	१११३९	शक्र १.	३१३५३
शरु १.	२१३२०	शशिशेखर १.	१११३९	शाख १.	१११५७
शर्करा २.	३१८१३४	शशोर्ण ३.	३१८११८	शाखा २.	३१३१५
” २.	७१२२६	” ३.	८१२२२	” २.	६१२३९
शर्करिल १. २. ३.	३११४४	शश्वत् ४.	८१७२८	शाखापुरी २.	४३१
शर्मन् ३.	३१६१८९	” ४.	८१८६	शाखामृग १.	३१३३९
शर्ब १.	१११४०	” ४.	८१८११	शाखारण्ड १. २. ३.	३१६१३
शर्वर १. २.	७१५८४	” ४.	८१८१२	शाखास्थि ३.	४१३११६
शर्वरी २.	२११५७	शष्कुली २.	४१३७५	शाखि १ च.	३११२७
” २.	८१६५	” २.	७१२२६	शाखिन् १.	३१३५
शर्वाणी २.	१११५८	शष्प ३.	३१३२३५	शाखोट १.	३१३७७
शाल १.	१११५४	शस्त १. २. ३.	५११०६	शाखिक १.	३१९१७
” ३.	३१३३७	शस्त्र ३.	३१६१११	शाट १.	४१३२७
” १.	३१३६६	” ३.	३१७१५७	” १. २.	८१२२६
शालक १.	२१३४	” ३.	३१८२६	शाटिका २.	४१३१२७
शालम् १.	२१३४३	” ३.	३१३३३	शाटी २.	८१२२६
शालल ३.	३१३३७	शस्त्रक १.	३१८१३१	शाटव १.	५१३२८
” २. ३.	३१३३७	शस्त्रचार १.	३१८१३१	शाटविक १.	५१३४०
शालाका २.	३१७१९९	शस्त्रमार्ज १.	३१८१५	शाण १.	३१९१९
” २.	३१९४१	शस्त्रमुख ३.	३१७१८६	” १.	५११४७
शालाट १.	५११६१	शस्त्राख्य ३.	३१२३३	” १.	५११६३
शालाट्ट १. २. ३.	३१३१०	शक्तिका २.	३१७१६३	शाणी २.	४१३१३०
शालक ३.	३१३३२	शाक १.	३१३७६	शात ३.	३१६१८९
शालमलि १. २.	३१३१०	” १.	३१८६२	शातकुम्भ ३.	३१२२०
शाल्य १.	३१३३७	” १. ३.	४१३९०	शातर १.	२११८२
” १. ३.	३१७१६७	शाकट १. २. ३.	३१७५८	शात्रव १.	३१७४१
” १. ३.	३१९४१	” १.	५११६१	शाद् १.	३१३२३५
शाल्यक १.	३१३३३	” ३.	५११६१	” १.	३१८२६
शाल्म १. २.	८१२२६	शाकटीन १.	५११६१	” १.	६१५५७
शाल १. ३.	३१७२१६	शाकफला २.	३१३१७०	शाङ्गल १. २. ३.	३१३४३
शालयान ३.	३१७२१६	शाकशाकट १. २. ३.	३१८२०	शानक १.	२११८२
शालर १.	३१३५२	शाकशाकिन १. २. ३.	३१८२०	शान्त १.	३१३१४९
शालदीर्घक १.	३१६१०७	शाकुनिक १.	३१९४०	” १.	३१८७५
शाला १.	३१२१५	शाकोल १.	३१३१५२	” १. २. ३.	५१११४
” १.	३१३३१	शाक्तीक १. २. ३.	३१३१५२	शान्ति २	५१२२७
शाश्वत् १.	२११२४		३१७१४४	” २.	३१३३९
शाशलोमन् ३.	३१८११८			शान्तिक ३.	३१६१२०
शाशाङ्क १.	२११२७			शान्तिगृह ३.	४१३२०

# शान्तियात्रा ]

शान्तियात्रा २.	३१५५६
शाप १.	२१५३२
शापटिक १.	२३३३७
शाव ३.	५११६
” १. २. ३.	५१४२
शान्दरी २.	३७१२
शार १.	३१५६१
” १.	५३१९९
” १.	५३१२५
” १. २. ३.	६५५९१
शारद १.	३३३४७
” १.	३८३३६
” १. २. ३.	५१४८९
” १.	७५५८६
शारदी २.	३३३१९७
शारि २.	२३३२०
” १.	३१५६०
” १. २.	६५५८८
शारिका २.	३१५१३६
शारिका २.	३३३१३९
शार्कर १. २. ३.	३११४४
” १.	३१५४९
शार्क ३.	११११७
” १.	२३३२४
” ३.	६३३३३
शार्कवत ३.	३११९
शार्कछा २.	३३३१११
” २.	३३३१४४
” २.	३३३१७९
शार्किन् १.	१११११
शार्कुल १.	३३३१
” १.	३३३३
शार्कर ३.	२३३६२
” १. २. ३.	७५५८७
शार्की २.	२३१५
शाल १.	३३३१५६
शाला २.	३३३१५
” २.	३८८८
” २.	६३३३७
शालाक ३.	३८३३६
शालावा २.	२३१५

# शब्दानुक्रमिका

शालाजिर १.	५३३५९
शालि १.	३८३३२
शालिजात १.	३३३३५
शालियष्टिक १.	३८३३४
शालिहोत्रिन् १.	३३७९०
शालीन १.	३३३१५६
” १.	३३३३१
” १. २. ३.	५३३३७
शालु १.	३३३३७
शालुक ३.	३३३३४
” ३.	७३३३४
शालूर १.	३३३३७
शालेय १. २. ३.	३८३३९
शारवत १. २. ३.	५३३८८
शाकुलिक ३.	५३३११
शासन ३.	३३३३७
” ३.	७३३३५
शासि १.	८३३१२
शास्ति १.	८३३१२
शास्त्र १.	१३३३२
” १.	३३३३५९
शास्त्र ३.	६३३३३
शास्त्रविद् १. २. ३.	३३३३४
” १. २. ३.	५३३३१
शिशपा २.	३३३३१
शिशुमार १.	३३३३४
शिक्य ३.	३३३३७
शिकियत १. २. ३.	५३३३१६
शिका २.	३३३३८
शिक्षित १. २. ३.	३३३३४
” १. २. ३.	५३३३९
शिक्षण १.	३३३३०२
” १.	३३३३३
शिक्षणक १.	३३३३०२
” १.	३३३३३
शिक्षणिक १.	३३३३३
शिक्षणिक १.	३३३३३
शिक्षणिक १.	८३३३९
शिक्षणिक २.	३३३३०२

# [ शितिचन्दन

शितर ३.	३३३८
” ३.	३३३१५
शितरिणी ३.	३३३९८
शितरिन् १.	२३३५
” १.	८३३५८
शितरी २.	३३३११५
शित्ता २.	१३३२९
” २.	३३३१५
” २.	३३३३८
” २.	३३३३०४
” २.	३३३३०
” २.	८३३१५
शित्तावत् १. २. ३.	३३३३६
शित्तावत् १.	३३३३६
शित्तावत् १.	३३३३२
शित्तावत् १ व.	२३३३७
” १.	२३३३३
” १.	२३३३७
” १.	३३३३०
शित्तावत् १.	१३३३५
शित्तावत् १.	३३३३४
शित्ता १.	३३३३६
” १.	३३३३०
शित्ता ३.	३३३३०३
शित्ता १.	३३३३२
” ३.	३३३३०३
शित्ताणिन् १. २. ३.	३३३३१
शित्ता ३.	२३३३९
शित्ता २.	३३३३४
” २.	७३३३६
शित्ताकी २.	३३३३४
शित १. २. ३.	६३३३३
शित्ता ३.	३३३३६
” ३.	३३३३०
शित्ता १.	३३३३१
शित्ता १. २. ३.	३३३३३
शित्ता १.	३३३३६

शितिसारक ]

शितिसारक १.	३३१५१
शित्युट १.	२३१४३
शितिल १. २. ३.	३४११६
शितिली २.	४११३८
शितिविष्ट १. २. ३.	४४११४७
" १. २. ३.	५४११५
" १. २. ३.	८५१४८
शिफा २.	३३११२
" २.	४२११०
" २.	३८१६५
शिषिका २.	३७१३६
शिविर ३.	४३११०
शिव्या २.	३८१६५
( शिव्या )	
शिविक १.	३८१३७
शिर १.	३८१७८
" १.	३८१९१
शिरःपीठ १.	४४१८४
शिरस् ३.	३३११५
" ३.	४४१८५
" ३.	८६१११
शिरसिज १.	४४१९७
शिरसिसिच् २.	४३१२४
शिरस्थ १. २. ३.	३८११७
( शिरस्थ )	
शिरस्थ ३.	४४१०१
शिरीष १.	३३१७२
शिरोगेह ३.	४३१३४
शिरोधरा २.	४४१८४
शिरोधि २.	४४१८४
शिरोरत्न ३.	४३१३६
शिरोरुह २.	४४१९८
शिरोरुहा २.	३३११३
शिरोवर्तिन् १. २. ३.	३८११०
शिरोऽस्थि ३.	४४११५
शिल ३.	३८१९२
शिला २.	३२१८
" २.	३२११२

वैजयन्तीकोषः

शिला २.	४३१४०
" २.	४३१४५
" २.	४३१६३
शिलाजनु ३.	३२११६
शिलाङ्गय ३.	३८१९६
शिली २.	४११५९
" २.	४३१४०
शिलीमुख १.	३८११८१
" १.	८११४५
शिलोच्चय १.	३२११७
शिलोद्भव ३.	३२११८
शिल्प ३.	३९१८
शिल्पा २.	४३१२५
शिल्पिन् १.	३९१७
" १.	८११४७
शिल्पिशाला २.	४३१२२
शिव १.	१११११
" १.	३३११४९
" ३.	३३११५५
" १.	३४११६
" ३.	३८१९६
" १.	३९१४७
" ३.	५४११४३
" १. २. ३.	३५१८४
शिवङ्कर १.	३७११५८
" १. २. ३.	५४१५५
शिवताति १. २. ३.	५४१५५
शिवपार्श्वग १.	१३१२
शिवपुरी २.	४३१७
शिवप्रिय १.	३३११९३
शिवमदिलका २.	३३११९३
शिववर्तिन् १. २. ३.	३६११३०
शिवा २.	१११४९
" २.	१११५८
" २.	३३१११९
" २.	३३११७७
" २.	३८१६०
" २.	३५१८४

[ शीरा

शिवेष्ट १.	३३१८३
शिशिर १.	२११८७
" १.	५३१७
शिशु १. २. ३.	५४१२
शिशुक १.	७११७३
शिशुकृच्छ्र ३.	३६११३७
शिशुकृच्छ्रातिकृच्छ्र ३.	३६११३८
शिशुग्व ३.	४४११४
शिशुप्रिय ३.	४२१३५
शिशुवर्जिता २.	४४१२०
शिक्ष ३.	४४१६१
शिक्षिदान १. २. ३.	३६११२
शिष्टि २.	३७१४८
शिष्य १.	३६१२५
" १. २. ३.	८११४४
शीकर १. ३.	२२१७
" १.	५३१६
शीघ्र १.	१२१५०
" १. २. ३.	५४१२५
शीघ्रगमन ३.	५२१११
शीत १.	३३१३१
" १.	५३१६
" १. २. ३.	३५१९३
शीतक १. २. ३.	५४१५५
शीतकङ्कु २.	३८१५६
शीतकृच्छ्रक ३.	३६११४०
शीतपङ्क १.	३९१४७
शीतपङ्कव १.	३३१९३
शीतल १.	१२१४५
" १.	३३१८२
" ३.	४२१४
" १.	५३१६
शीतला २.	३२११३४
" २.	३४१४४
शीशु ३.	३९१४५
" १.	३९१४७
शीन १. २. ३.	४३१९५
शीरा २.	३३१९९



श्रीरी २.	३३१२२८	शुक्रसृष्टा २.	३३११७८	शुनी २.	३३११७१
श्रीर्णक १. २. ३.	३३११२९	शुक्रा २ व.	३३११२१	शुभ १.	३३११३३
श्रीर्णपर्णाशिन १. २. ३.	३३११२९	शुक्ल १.	३३११७९	" १. २. ३.	३३११३७
श्रीर्णवृन्त १.	३३११७१	" ३.	३३११११	" १.	३३११३६
श्रीर्व ३.	३३११७७	" १.	३३१११०	शुभंयु १. २. ३.	३३११२९
" ३.	३३११८५	शुक्लकार ३.	३३११७७	शुभक १.	३३११८१
श्रीर्षक ३.	३३११५६	शुक्लधातु १.	३३११३३	शुभवती २.	३३११९
श्रीर्षय ३.	३३११५६	शुक्लपुष्प १.	३३११६१	शुभा २.	३३११४१
" ३.	३३११०१	" १.	३३११९१	शुभान्वित १. २. ३.	३३११२९
श्रीर्वत्राण ३.	३३११५६	शुक्लहरित १.	३३११२४	शुभ ३.	३३११२४
शील ३.	३३१३३३	शुक्लापाङ्ग १.	३३१३३६	" १.	३३१११०
शीवाल ३.	३३११४९	शुक्र १. २. ३.	३३१११७	" १. २. ३.	३३१११८
शुक १.	३३१३२	शुक्रा २. १. ३.	३३११३७	शुभि १.	३३११२२
" १.	३३१३२५	शुच् २.	३३११८३	शुभक १. ३.	३३११८९
" ३.	३३१८९२	शुचि १.	३३११८४	शुभ ३.	३३१२२४
शुककूट १.	३३११५८	" १.	३३११८८	" ३.	३३१३३३
शुकनास १.	३३११५७	" १.	३३११३५	शुभवा २. ३.	३३१३३०
शुकनासक १.	३३१३६८	" १. २. ३.	३३११३५	( शुष्पा )	
शुकपोत्र १.	३३१११७	" १. २. ३.	३३११८५	शुभूपा २.	३३१३३८
शुक ३.	३३११८२	शुचिकर्णिक ३.	३३११४०	शुभूषित १. २. ३.	३३११०५
" ३.	३३११८५	शुण्ठ १.	३३११८९	शुष १.	३३११५०
" १.	३३१२३६	शुण्ठि २.	३३११७५	शुषिका २.	३३११८१
" १.	३३१२२९	शुण्ठा २.	३३११४०	शुषिल १.	३३११४७
" १. २. ३.	३३११८८	" २.	३३११५३	शुष्कगोमय १.	३३११६०
शुक्तित्तकषायक १.	३३१३५	शुण्ठापान ३.	३३११६२	शुष्कमांस ३.	३३११८९
शुक्ति २.	३३११८१	शुण्ठाल १.	३३११६२	शुष्मन् १.	३३१११५
" २.	३३११०१	शुण्ठि २.	३३११७७	" ३.	३३१२१०
" २.	३३११३२	शुद्ध ३.	३३११८५	शुष्मि १.	३३१२५०
" २.	३३११५६	" १. २. ३.	३३११६५	शूक १.	३३११५८
" २.	३३११५८	" १. २. ३.	३३११६१	" १.	३३११६५
" २.	३३११५०	" ३.	३३११८८	" १.	३३११६५
" २.	३३११३७	शुद्धज १.	३३११७२	शूककीट १.	३३११३३
" २.	३३११२३	( शुद्ध, जड )		शूकधान्य ३.	३३११६२
" १.	३३११३४	शुद्धान्त १.	३३११३६	शूकशिखि २.	३३११२९
" १.	३३११८४	" १.	३३११७७	शूक १.	३३१११७
" १.	३३११९९	शुद्धि २.	३३११८९	" १.	३३११११
" १. २. ३.	३३११८६	शुन १.	३३११६९	" १.	३३११११
शुक्रशिख्य १.	३३१११०	शुनक १.	३३११६८	शुक्रकुण्ड १.	३३११६३
		शुनासीर १.	३३१११	शुक्रा २.	३३११२३
		शुनि १.	३३११६९	शुक्रा २.	३३११२२

# शून्य ]

शून्य १. २. ३.	२११२०
" १. २. ३.	३११४५
" १. २. ३.	५११८७
शूर १. २. ३.	३१०२८
" १. २. ३.	३१०१७
" १.	३१८३३
" १. २. ३.	६१५९२
शूरसेन १ व.	३११२४
शूरसेनि १ व.	३११२४
शूर्प १. ३.	७१३६५
" १. ३.	५११५६
शूर्पकर्ण १.	३१०६१
शूर्पकारि १.	१११२८
शूर्पावर ३.	५११५५
शूल १.	७१११३७
" १. ३.	६१५९२
शूलनाशक ३.	३१८१२५
शूलाकृत १. २. ३.	७१३९४
शूलिक १.	३१४३१
" १.	३१५५
" १.	३१५१२
" १.	३१५६९
" १.	३१५७३
शूलिका २.	३१८१२३
शूलिन् १.	१११४१
शून्य १. २. ३.	७१३९४
शृङ्गल १. २. ३.	३१०८३
" १. २. ३.	७१३१४६
शृङ्गलक १.	३१४६८
शृङ्ग ३.	३१२८
" १. ३.	६१५८७
शृङ्गवर्जित १.	३१४७३
शृङ्गवाद्य ३.	३१९१२५
शृङ्गाट १.	३११५१
" १.	३१७५१
शृङ्गाटक १.	७१२४७
शृङ्गार १.	३१७८६
" १.	३१५७५
" १.	७१३१६९
शृङ्गारगर्व १.	३१६१६९

## चैजयन्तीकोषः

शृङ्गिण १.	३१४६४
शृङ्गिणी २.	३१४४१
शृङ्गिन् १.	३१४९
" १.	३१४५२
" १.	३१७९६
" १.	७११४४
" १.	८११६०
शृङ्गिखेर ३.	३१३२१४
" ३.	३१८७६
शृङ्गी २.	३१८९०
" २.	७११४४
शृङ्गीकनक ३.	३१२२२
शृत् १. २. ३.	७१३९५
शेखर १.	७१३१५३
शेफ १.	७१४६१
शेफल् ३.	७१४६१
शेफालिका २.	३१३१८६
शेमुवी २.	३१६१४३
शेववि १. ३.	११२६०
शेवाल ३.	७१२४९
शेष १.	१११३०
" १.	७११३
" १. २. ३.	६१५८७
शैव १.	३१६२४
शैव १.	११२८७
" १.	३१५५३
" १.	३१५१००
शैवरिक १.	३१३११५
शैखलीक १.	३१३१०७
शैमव ३.	३१६२२
शैनि १.	१११२६
शैव्या २.	७१२२७
शैल १.	२११८६
" १.	३१२११
" १.	८१६४
" १.	८१९११
शैलमूल ३.	३१३२०३
शैलालिन् १.	३१९६२
शैलध १.	३१९६२
शैलेय ३.	३१२४१
" ३.	३१८९६

## [ शौण्ड

शैवल १.	७१२४९
शैवलिनी २.	७१२२३
शैवाल ३.	७१२४९
शैवव ३.	७१४५४
शोक १.	३१६१८३
" १.	३१५७६
शोचिष्केय १.	११२१५
शोचिस् ३.	११३३४
शोण १.	३१३६८
" १.	३१७१००
" १.	५१३१७
" १.	५१३५१
शोणरत्न ३.	३१२३९
शोणिक १.	५१३३१
शोणित ३.	७१४१०६
" ३.	५१३५१
" ३.	८१६८
शोथ १.	७१४१२२
शोथशत्रु १.	३१३२०९
शोधन १.	३१३४१
शोधनी २.	७१३५२
शोधित १. २. ३.	५१४६६
शोध्य ३.	७१४१०५
शोक १. ३.	७१४१२२
शोफनी २.	३१३१४५
शोभ १.	३१६२३९
शोभन ३.	३१३३२
" १. २. ३.	५१४१३५
शोभा २.	७१३१४९
शोभाजन १.	३१३५६
शोष १.	७१४१२४
शोषु १.	३१६१८१
शौक ३.	५११६
शौकिकेय ३.	७११५७
शौकिलकेय १.	७११२४
शौच ३.	३१६२०९
शौदीर्य ३.	३१६१६९
शौण्ड १.	२१३१४
" १. २. ३.	५१४३७

[ शौण्ड ]

शौण्ड १. २. ३.	३५५९०
शौण्डिक १.	३५५४४
" १.	३५५४४
शौण्डि २.	३५५४४
" २.	३५५९०
शौण्डोदनि १.	१११३४
शौमिक १.	३५५१०३
शौरि १.	१११२६
शौर्य ३.	५११५६
शौर्य ३.	३५५२१०
शौर्यकरण ३.	५१११६
शौलिक १. २. ३.	५११५०
शौलिक १.	३५५१५
श्वयोति २.	५११३४
श्मशान ३.	३५५४८
श्मश्रु ३.	४१११०३
श्मश्रु १. २. ३.	५१११९
श्याम १.	३५५४५
" ३.	३५५७९
" १.	५११११
" १.	५१११४
श्यामकण्ड २.	३५५५६
श्यामल १.	५११११
श्यामलक १.	३५५२६
श्यामवल्ली २.	३५५८०
श्यामा २.	२५५१९
" २.	३५५१३८
" २.	३५५७७
" २.	४११८
" २.	३५५१९
श्यामाक १.	३५५५६
श्यामाङ्ग १.	२५५१२
श्यामाङ्गी २.	४११२६
श्यामिका २.	३५५१९
श्याव १.	५१११८
" १.	५११३१
श्येत १.	५१११०
श्येन १.	२५५१९
" १.	२५५३०
श्येना २.	२५५२०

शब्दानुक्रमणिका

अब्दा २.	३५५१८०
" २.	३५५३८
अब्दालु १. २. ३.	५११३७
अन्थन ३.	५११३९
अपणी २.	३५५१००
(अयणी)	
अपाख्य १.	७११७४
अमण १. २. ३.	५१११५
अमणी २.	३५५१२५
" २.	३५५१०
अमस्थान ३.	३५५१९४
अयण ३.	४११३३
अवण ३.	२५५४०
" ३.	४११९३
अवस् ३.	४११९२
अविष्ठा २ व.	२५५४०
आणा २.	४११८०
आख ३.	३५५६४
" १. २. ३.	५११३७
आखदेव १.	१११३४
आन्त १. २. ३.	५११३६
आमणी २.	३५५१२५
आय १.	५११३३
आवक १.	३५५१११
आवण १.	२५५८५
आवणिक १.	२५५८४
आवणी २.	२५५७६
" २.	३५५९३
अरी २.	३५५१९१
" २.	८१११९
" २.	८१११२
अरीकण्ड १.	१११३८
अरीकर्णिक १.	२५५४०
अरीकृष्ण ३.	३५५१४०
अरीखण्ड १.	३५५११३
अरीगर्भ १.	३५५१५९
अरीघन १.	१११३२
" १.	३५५१३९
अरीधर १.	११११२
अरीपति १.	१११११
अरीपय १.	४१११६

[ अेष्ठिन् ]

अरीपर्णी २.	३५५५८
" २.	३५५५८
" २.	७५५८६
अरीपुण्य ३.	४११४१
अरीफल १.	३५५३०
अरीफली २.	३५५११०
अरीवेर ३.	३५५२०२
अरीमकुट ३.	३५५१९
अरीमत् १ व.	२५५३७
" १.	२५५२५
" १.	३५५५३
" १.	३५५६०
" १.	३५५६९
" १.	३५५५३
अरील १. २. ३.	५११५६
अरीवत्स १.	१११११
" १.	११११७
अरीवत्सपिण्याक १.	३५५१०९
अरीवत्साङ्ग १.	१११११
" १.	८११४५
अरीवास १.	३५५१०९
अरीवृक्ष १.	३५५२७
" १.	८१११९
अरीवृक्षकिन् १.	३५५१२
अरीवेष्ट १.	३५५१०९
अरीसंज्ञ ३.	३५५१०३
अरुत १. २. ३.	३५५८९
अरुतकर्मान् १.	२५५३६
अरुति २.	३५५२७
" २.	४११९३
" २.	३५५४०
अरुपा २.	३५५१५४
अरुणि २.	३५५९०
अरुयस् १. २. ३.	५१११४३
" १. २. ३.	८११३२
अरुयसी २.	३५५१३१
" २.	८११३३
अरुष्ट ३.	३५५२५
" १. २. ३.	५११३३
अरुष्टि १.	३५५०९

श्रीण १. २. ३.	५४११४
श्रीणा २.	२११४०
श्रीणि २.	४४१६४
श्रीन्न ३.	४४१९३
श्रीन्नकान्ता २.	३८१९३
श्रीन्निय १.	३६१८१
” १.	८११४५
श्रीषट् ४.	८८३
श्रीषि २.	३६१६६
श्रीषाख्य ३.	३८१०९
श्रीषू १.	५३१२८
श्रीषण १.	५३१४
” १. २. ३.	५४११३६
श्रीषणपत्रक १.	३४१९४
श्रीषणवाच् १. २. ३.	५३१४४
श्रीषा २.	२४१३५
श्रीकु २. ३.	३६१९१
श्रीपद १.	४४१३३
श्रीष्मन् १.	४४१२१
श्रीष्मफल १.	३३१५५
श्रीष्मल १.	३८१५३
” १. २. ३.	४४११४६
श्रीष्मसू १. २. ३.	४४११४६
श्रीष्मातक १. २.	३३१५५
श्रीष्मिन् १.	३३१५३
श्रीोक १.	६११६०
श्रीः (—स्) ४.	८८१९
श्रीकण्टक १.	३५१५८
” १.	३५११०६
श्रीचण्डाल १.	३५१८
श्रीदंष्ट्रा २.	३३११४२
” २.	३७१५१
श्रीदयित ३.	४४११०९
श्रीन् १.	३३१८६
” १.	८११५
श्रीनिषा ३. २.	३५१३४
श्रीपच १.	३५१३९
” १.	३५१४७
श्रीपाक १.	३५१३८

श्रीपाक १.	३५१५१
श्रीपामन १.	३३११०७
श्रीभीरु १.	३४१३७
श्रीभ्र १. ३.	४११२
श्रीयथु १.	४४१२२
श्रीवृत्ति २.	३८१७
श्रीशुर १.	४४१३०
” १ द्वि.	४४१४८
श्रीशूर्य १.	७११७४
श्रीभ्रू २.	४४१३०
श्रीभ्रूशूर १ द्वि.	४४१४८
श्रीभ्रूयस १. २. ३.	५४११४३
श्रीसन १.	१२१४७
श्रीसित ३.	३६१२०४
श्रीस्तन १. २. ३.	५४१८९
श्रीापद १.	३४१७३
श्रीाली १.	३४१७१
श्रीाविष् १.	३४१३७
श्रीास १.	३६१२०४
श्रीासहेति २.	३६१२००
श्रीासा २.	३३११३८
श्रीमित्र ३.	४४१२५
” १. २. ३.	५४११४४
श्रीेत ३.	३८१३९
” १.	५३११०
” १. २. ३.	६५१९२
श्रीेतकन्द १.	३३१२०५
श्रीेतकाक १.	२३११८
श्रीेतधार १.	३८१२२७
श्रीेतच्छाण ३.	३८११४९
श्रीेततण्डुल १.	३८१३२
श्रीेतपिङ्गल १.	३४११
श्रीेतबिन्दुका २.	५३११५
श्रीेतमध्य १.	३३१२००
श्रीेतमरिच ३.	३८१९०
श्रीेतरक १.	५३११७
श्रीेतशाल १.	३८१३३
श्रीेतक्षिम्बिका २.	३८१४६
श्रीेतसुरसा २.	३३१११९
” २.	३३११८७

श्रीेता २.	३११५०
श्रीेत ३.	३११९
श्रीेववीयस ३.	५४११४२
ष	
षट्क ३.	३७११०
षट्कर्मन् ३.	३६१६३
षट्पद १.	२३१४३
षट्सप्त १. २. ३.	५४१२६
षट्मिज्ञ १.	१११३२
षट्श्रा २.	३३११११
” २.	३३११७७
षट्ठानन १.	१११५६
षट्ठपण ३.	३८१८१
षट्ठगुण १.	३७१६
षट्ठग्रन्थ १. २.	७५१८७
षट्ठग्रन्था २.	३३११९८
षट्ठज १.	३९१३२
षट्ठद १. २. ३.	३४१५७
षट्ठस १.	५३१४५
षट्ठसासव १.	४४११०४
( षट्ठसावस )	
षण्ड १.	३४१५३
” १.	३६११२२
” १.	३७१२३
” १.	४११३
” १. ३.	५११५
” १.	६११६०
षण्डतायोग्य १.	३४१५५
षण्माससङ्ग्रहिन् १.	३६११२५
षष्टि २.	५११२७
षष्टिक १.	३८१३४
षष्टिक्य १. २. ३.	३८११९
षष्टितम १. २. ३.	५४१२२
षष्टिहायन १.	३७१६४
षष्ट १. २. ३.	५४१२१
षष्ठकालिन् १. २. ३.	३६११२७
षष्ठी २.	१११५९
षाण्ड १.	१११४६
षाण्मातुर १.	१११५६



षाण्मासी २.	३१६६६	संवाल १.	२११२८	संस्तव १.	५१२३१
षाष्टिक ३.	३१६१४६	" १.	३१७८०	संस्ताव १.	३१६११०
यिद्ध १.	३१९१७०	संवास १.	४३३४	संस्त्याय १.	७११७८
" १.	४१४३९	" १.	४३३३५	संस्था २.	३१६८७
षोडश १. २. ३.	३१४५७	" १.	४३१६७	" २.	३१८१५
षोडशाक्ष १. २. ३.	८५२४	संवासन ३.	४३१२३	" २.	६१२४३
षोडशाङ्घ्रि १.	४११४७	संवाहक १.	३१९१५	संस्थाचर १.	३१७२७
षोडशावर्त १.	४११५६	संवाहन ३.	५१२३०	संस्थान ३.	५१२२१
षोडशाह १.	३१६१४४	संवित्ति २.	३१६१६४	" ३.	७३३३७
पञ्चम १.	६११६१	" २.	७१२२९	संस्थित १. २. ३.	३१७२२०
स		संविद् २.	५१२३७	संस्पृष्टमैथुना २.	३१६४८
संयत् २.	३१८२०६	" २.	६१२४१	संस्फोट १.	३१७२०४
संयत १. २. ३.	५१४६७	संवीक्षण ३.	५१२४२	संहतजालु १. २. ३.	५१४१०
संयता २.	३१८१६८	संवीत १. २. ३.	५१४९६	संहतल १.	४१४७८
संयम १.	३१६२३३	संवृत १.	२११४५	संहनन ३.	४१४५२
" १.	५१२३०	संवृतता २.	३१६३५	संहार १.	२११९५
संयाज्य १.	३१६११२	संवेश १.	४३१६८	संहारी २.	४३३३८
संयाम १.	५१२३०	( सवोस )		संहिता २.	७१२२८
संयाव १.	४३३७३	संन्यान ३.	४३१२२	संहृति २.	२१४३१
संयुग १.	३१८२०४	संससक १.	३१७१५२	सकल १. २. ३.	५१४८५
संयोग १.	५१२२६	संशय १.	३१६१७७	सकाश १. २. ३.	५१४१३३
संरम्भ १.	३१९८९	" १.	३१६१९७	सकृत् ४.	८१७२९
संराव १.	२१४४	( संश्रय )		" ४.	८८८६
संरोध १.	७११७६	संशयालु १. २. ३.	५१४३८	सकृत्प्रज १.	२३११७
संवत् ४.	८१८१०	संशित १. २. ३.	५१४९४	" १.	८१४५५
संवत्सर १.	११२९०	संश्रव १.	५१२३७	सकृप १. २. ३.	३१९७९
संवत्सरतम १. २. ३.	५११९९	संश्लेष १.	५१२२६	सक्तु १.	४३३७०
संवदन ३.	२१४२५	संसद् २.	३१८१३	" १. ३.	८१९३१
संवदन ३.	३१६११७	संसरण ३.	४३११६	सक्तुफला २.	३३३८९
संवर १.	४१२१०	" ३.	८३११२	सक्थि ३.	३१७८९
" १.	४१२१२	संसिद्धि २.	७१२२९	" ३.	४१४५९
संवर्त १.	३३३१७७	संसृष्ट १. २. ३.	७१२२८	सखि १. २. ३.	३१७४३
" १.	३१८४३	संसृष्टिन् १.	५१४५	" १. २. ३.	६१५९८
" १.	३१९७६	संस्कार १.	३१६२	सखी २.	४१४२५
संवर्तक ३.	१११२४	संस्कृत १. २. ३.	७१२२८	सख्य ३.	३१६१८७
" १.	११२२१	संस्कृतस्तम्भ १.		सगर ३. २.	८१९३३
संवर्तिका २.	४१२४५		३१६१०३	सगर्म १.	४१४३४
संवसथ १.	४३१२	संस्कृति १. २.	७१५८८	सगोत्र १.	४१४५०
संवादन ३.	२१४२५	संस्तर १.	४३११६५		
संवाप १.	४३११६७	" १.	७११७६		

[ सन्धि ]

वैजयन्तीकोषः

[ सदागति ]

सन्धि २.	४३१०३
सङ्कट १. २. ३.	५४१२६
सङ्कर १.	४३१५२
सङ्करज १. २. ३.	३७६२२
” १. २. ३.	३७६५
” १. ३.	३९११
सङ्कर्यण १.	१११२२
सङ्कलित १. २. ३.	५४१०९
सङ्कल्प १.	३६१७३
सङ्कीर्ण १.	३५२
” १. २. ३.	५४११०
सङ्कुचित १.	२३६
सङ्कुल १. २. ३.	२४११७
” १. २. ३.	५४११०
सङ्कुसुक् १. २. ३.	५४६८
सङ्काच ३.	३८११७
सङ्कन्दन १.	१२३
सङ्क्रम १.	३११५२
सङ्क्रा २.	१२१५१
सङ्क्षेप १.	२४४३०
सङ्क्षय ३.	३८१२०४
सङ्क्षयान ३.	५१३३६
सङ्क्षयावत् १.	३६१२३४
सङ्ग ३.	३८१२२१
” ३.	५१६१
” १.	५२१२७
सङ्गत १.	२११६४
” १.	३६११४७
” ३.	३६११८६
सङ्गति २.	५२१२१
सङ्गम १.	३६११४७
” १.	५२१२७
सङ्गर १.	३७१२०५
” १.	७५१९२
सङ्गच १.	२११६४
सङ्गाली २.	३३३८९
सङ्गीतक ३.	३९१७२
सङ्गीर्ण १. २. ३.	५४१०६
सङ्गृह १. २. ३.	५४१०९

सङ्गृह ३.	४४११४२
सङ्ग्रह १.	७११७८
सङ्ग्राम १.	३७१२०६
सङ्ग्राह १.	३७१२००
” १.	४४१७९
सङ्ग १.	५१११४
सङ्गचारिन् १.	४१११४२
सङ्गतिथ १. २. ३.	५१११९
सङ्कर्ष १.	७११७७
सङ्घात १.	४४११०९
” १.	५१११
सङ्घातिका २.	३६११०८
सचिव १.	७११७५
सङ्घः ( -ष् ) ४.	८८११७
सङ्ग १. २. ३.	३७११४२
सङ्गज ३.	३७१५९
सङ्गना २.	३७१७०
सङ्गय १.	५११११
सङ्गार १.	४४१५३
सङ्गार १.	३७१२८
सङ्गारिका २.	३७१३६
सङ्गारिणी २.	४४१२४
सङ्गारित १.	३९१३
सङ्गारिन् १.	३९१८१
सङ्गदन्ती २.	४४११०३
सङ्गेष ३.	४२१३१
सङ्गावन ३.	४३१२६
सङ्गावन ३.	३८११४४
सङ्गपन ३.	३७१२१५
सङ्गा २.	२११२३
” २.	६२१४३
सङ्गु १. २. ३.	५१११०
सङ्ग्वर १.	१२१३१
सट १.	३५१७
सट्ट ३.	४३१४४
सट्टक ३.	४३१९८
सणि १.	५३१५५
सण्डीन ३.	२३१५०
सत् ३.	१२१३८
” ३.	३६१२३४
” १. २. ३.	८४११६

सतत १. २. ३.	५४१३०
सतश्च ३.	५२११
सती २.	१११५९
” २.	३२११६
” २.	४४१७
सतीनक १.	३८१४४
सतीर्थ १.	३६१२४
सत्त्व १. २. ३.	५४१३७
सत्तेरक ३.	२११८६
सत्किष्कु १.	३११५७
सत्त्व ३.	३६१३६२
” ३.	३९१९७
” १. ३.	६५१९३
सत्त्वक १.	१२१३८
सत्पथ १.	३११४९
सत्य ३.	१११४७
” ३.	३६१२०९
” ३.	५११३
” १. २. ३.	६५१९५
सत्यङ्कार १.	३८१७१
सत्ययुग १.	२११९१
सत्ययौवन १.	१३१४
सत्यलोक १.	३६१२०८
सत्यवती २.	३३११४४
सत्यवतीसुत १.	१११३१
सत्याकृति २.	३८१७१
सत्याग्नि १.	३६११५२
सत्यानृत ३.	३८१३
सत्यापन ३.	३८१७१
सत्र ३.	३६१८५
” ३.	३६१८५
” ३.	६३१३५
सत्रशाला २.	४३१२६
सत्रा ४.	८८११७
सत्वर १. २. ३.	५४१२४
सदस् २. ३.	३८११४
सदसदात्मक ३.	३६११६४
सदस्य १.	२६१८१
” १.	३८११३
सदा ४.	८८१५
सदागति १.	१२१५०



# सप्तसप्ति ]

## वैजयन्तीकोषः

## [ समुद्रनवनीतक

सप्तसप्ति १.	२११११
सप्तार्चिस् १.	११२१६
सप्ति १.	३१७९०
सप्तह्यचारिन् १.	३१६१२४
सप्ता २.	३१८१३३
" २.	५११५
" २.	६१२१४२
सप्ताजन ३.	३१६१८६
सप्तासद् १.	३१८१३३
सप्तास्तार १.	३१८१३३
सप्ति १.	३१९१५९
सप्त्य १.	११२१२५
" १.	३१८१३३
" १. २. ३.	६१११८
सप्त्य ४.	८१७१८
सप्त १.	३१११५२
" ३.	५१११६१
" ३.	५१११६२
" १. २. ३.	५१११८६
" १. २. ३.	५१११२१
" १. २. ३.	६१५१९५
सप्तक ३.	५१११६२
सप्तकम् ४.	८१८११७
सप्तक १. २. ३.	५१११३३
सप्तग्र १. २. ३.	५१११८५
सप्तङ्ग १.	३१९१६०
सप्तङ्गा २.	३१३१३५
सप्तज १.	५१११५
सप्तज्ञा २.	२१११३६
सप्तज्ञ्या २.	३१८११४
सप्तजस ३.	३१७१४८
सप्ततट १ व.	३१११३१
सप्तधिक १. २. ३.	५१११३७
सप्तनीपद् १.	११२१४४
सप्तन्त १. २. ३.	५१४१३३
सप्तन्ततः (-स्) ४.	८१८१३
सप्तन्तदुग्धा २.	३१३१९७
सप्तन्तभद्र १.	११११३३
सप्तन्तमुज् १.	११२११४

सप्तन्ताद् ४.	८१८१३
सप्तन्तिक १. २. ३.	५१११३३
सप्तपद् ३.	३१७१८७
सप्तम् ४.	८१८११७
सप्तय १.	७११८२
सप्तया ४.	८१७१३३
" ४.	८१८१५
सप्तर १. ३.	३१७१२०६
" १. ३.	८१६१७
" १. ३.	८१६१८
सप्तर्य १. २. ३.	७११३०
सप्तर्यन् ३.	३१८१५
सप्तर्याद् १. २. ३.	५१११४१
सप्तलेपनी २.	३१९११४
सप्तवकारक १.	३१९१००
सप्तवर्तिन् १.	११२१३४
सप्तवाय १.	५११११
सप्तशान १.	५१३१५४
सप्तष्टि २.	५१३१४८
सप्तसुप्ति २.	२१११९४
सप्तस्त १. २. ३.	५१११८५
सप्तस्थान ३.	३१६१२२४
सप्तस्था २.	२१११४०
सप्ता २ व.	२१११९१
" २.	६१५१९५
सप्तांसमीना २.	३१११४८
सप्ताघात १.	३१७१२०४
सप्ताज १.	५१११५
सप्तादान ३.	३१६१०४
सप्ताधि १.	३१६१२३२
" १.	३१९१६०
" १.	७११८९
सप्तान १. २. ३.	५१११२१
" १. २. ३.	७१५१८८
सप्तानोदर्य १.	४१११३४
सप्तापन ३.	८१३११३
सप्तालम्भन ३.	४१३१४७
सप्तास १.	२१११४०
" १.	५१२११८

सप्ताहार १.	५१२११८
" १.	८१११४७
सप्ताहित १. २. ३.	२१११३३
" १. २. ३.	२११११४
सप्ताह्य १.	८१११४७
सप्तिक ३.	३१७१२०३
" १.	७१११७७
सप्तामिति २.	७१२१२७
सप्तामिधान ३.	३१६१२१
सप्तामिध २.	३१६१९६
" २.	३१७१२०६
सप्तामीक १.	५१३१६
" १.	७१११७५
सप्तामीकरण ३.	३१८१३०
सप्तामीचीन ३.	५१३१३
सप्तामीप १. २. ३.	५१११४०
सप्तामीर १.	११२१४९
सप्तामीरण १.	११२१४७
" १.	३१३१२०
सप्तामुच्चय १.	५१२११८
सप्तामुच्छय १.	८१६१४६
सप्तामुच्छित १. २. ३.	५१११०१
सप्तामुत्थान ३.	५१२१२५
सप्तामुत्पिञ्ज १. २. ३.	५१११९४
सप्तामुद् १. २. ३.	५१११३३
सप्तामुदय १.	३१७१२०५
" १.	५१११२
सप्तामुदस्त १. २. ३.	५११११२
सप्तामुदाय १.	३१७१२०५
" १.	५१११२
सप्तामुद्ग १.	४१३१६४
सप्तामुद्धत १. २. ३.	५१११३१
सप्तामुद्ग ४.	४१२१११
" १. २. ३.	५१११२९
सप्तामुद्रनवनीतक ३.	२१११२७



समुद्रान्ता ]

समुद्रान्ता २.	८१२१०
समुन्दन ३.	५१२२९
समुन्नति २.	३१३१६
समुन्नद्ध १. २. ३.	८१३१२
समूह १.	३१३२०
समूह १.	५११२
समूहन ३.	३१७१८९
समृद्ध १. २. ३.	५१४५७
समृद्धि २.	३१८१३
समोलक १.	५१३४५
समोलुक ३.	३१२३०
सम्पत्ति २.	३१६१९१
” २.	३१७१४
सम्पद् २.	३१६१९१
” २.	८१९५
सम्पात १.	५१२२६
सम्पातपाटव ३.	५१२१९
सम्पुट १.	४१३६४
सम्पूर्ण १. २. ३.	५१४८७
सम्पृक्त १. २. ३.	५१४७८
सम्प्रति ४.	८१८५
सम्प्रधारण ३.	३१८१५
सम्प्रयोग १.	५१२२६
” १.	८११४५
सम्प्रभ १.	३१८१५
सम्प्रहार १.	३१७२०४
सम्प्रेष १.	५१२२५
सम्प्रेषणी २.	३१६१५
सम्फाल १.	३१४६४
सम्फुल्ल १. २. ३.	३१३१९
सम्बन्ध १.	५१२१३
सम्बाध १. २. ३.	५१३१२६
” १. २. ३.	७१५९२
सम्भरी २.	३१८१२१
सम्भव १.	७११७९
सम्भाल १ व.	३११२४
सम्भावना २.	३१६१७६
सम्भाषण ३.	२१४२३
सम्भेद १.	४१२३१
” १.	५१२२६

शब्दानुक्रमणिका

सम्भोग १.	३१७७०
” १.	७११८०
सम्भ्रम १.	३१९१८९
” १.	७११७९
सम्भ्रमति २.	७१२२९
सम्भ्रद १.	३१६१८८
सम्भर्द १.	३१७२०५
सम्भार्जनी २.	४१३१५२
सम्भासा २.	३१३१२७
( समांसा )	
सम्मुख १. २. ३.	५१४४७
सम्मूर्च्छन ३.	५१२४१
सम्यक् ३.	५१३३
सम्राज् १.	६११६१
सर १.	११२१४८
” १.	३१३१४२
” ३.	३१८१४५
” १.	५१३१२६
सरक ३.	३१९१५३
” ३.	७१३३८
सरघा २.	२१३१४५
सरट् १.	६११६४
सरट् १.	४११२८
सरटी २.	३१२२७
सरणी २.	४१२२१
सरण्यु १.	७११७६
सरमा २.	३१४७१
सरल १.	३१३७४
” १. २. ३.	५१४२०
सरलद्रव १.	३१८१०९
सरलशोणिक १.	५१३५१
सरलिक १.	५१३५२
सरस् ३.	४१२६
” ३.	६१३३४
सरसिज ३.	४१२३७
सरसी २.	४१२६
सरसीज ३.	४१२३७
सरसीरुह ३.	४१२३७
सरस्वत् १.	४१२२९
” १.	८१५३३
” १.	८१५३४

[ सर्वज्ञ

सरस्वती २.	१११९
” २.	४१२२८
” २.	८१५३०
सरि २.	२११२
सरित् २.	४१२२२
सरिताम्पति १.	४१२११
सरित्पति १.	४१२१२
सरी २.	३१७९८
सरीक्ष्ण १.	४११४
” १.	४११४०
सरजू २.	३१६५०
सर्राह १.	३१७१०६
सरोज २.	४१२३७
सरोरुह ३.	४१२३६
सर्ग १.	३१६३२
” १.	५१२१
” १.	६११६२
सर्ज १.	३१३३८
सर्जक १.	३१८१४०
सर्जन १.	३१८१११
सर्प १.	४११४
” १.	८१६१५
सर्पजाति २.	४११११
सर्पदंष्ट्री २.	३१३१२७
सर्पमुज् १.	४१११६
” १.	८१६२१
सर्पभूता २.	३१११
सर्पराज १.	४११३
” १.	४१११५
” १.	४१११६
सर्पशफरी २.	४११४४
सर्पाञ्चर १.	४११२१
सर्पारि १.	८१६२१
सर्पिस् ३.	३१८१३८
” ३.	६१३३५
सर्व १.	५११३१
” १.	५११८५
सर्वसहा २.	३११३
सर्वगन्ध ३.	४१३१५१
सर्वजनप्रिया २.	३१८१९३
सर्वज्ञ १.	१११३३

सर्वज्ञ ]

वैजयन्तीकोषः

[ साज्य

सर्वज्ञ १.	१११४४
सर्वतः(-स्) ४.	८८८३
सर्वतोभद्र १.	४३३०
सर्वतोमुख १.	१११८
" ३.	८३१८
सर्वदा ४.	८३१५
सर्वधुरीण १. २. ३.	३१४५८
सर्वभक्त १. २. ३.	५१४५०
सर्वभक्ता २.	३१४६२
सर्वमङ्गला २.	१११५८
सर्वला २.	३१७१६६
सर्वलोचना २.	३१८१८
सर्वविद् २.	३१६२३३
सर्वविद्या २.	३१६३१
सर्ववेदस् १.	३१६७७
सर्ववेशिन् १.	३१९१३
(सर्वकेशिन्)	
सर्वसङ्ग्रह ३.	३१७१५७
सर्वसंस्थभू २.	३१८१७
सर्वसह १.	३३३५३
सर्वाङ्गी १. २. ३.	५१४५०
सर्वाभिसार १.	३१७१५७
सर्वार्थसिद्ध १.	१११३४
सर्वोच्च १.	३१७१५७
" ३.	३१८१३६
सर्वप १.	३१८११
सर्वपी २.	३१३६७
सलज्ज १.	३३३१२२
सलक्षण ३.	३३३३२
सलिल ३.	४२११
सल्लकी २.	३३३९६
सल्लाप १.	२१४२९
सव ३.	३१६८२
सवन १.	३१६६९
सवर्ण १.	३१५३
" १.	३१५७०
" १. २. ३.	५१४१२१
सविक्रम १.	३१७११

सवितृ १.	२१११०
" १.	७११७८
सविध १. २. ३.	५१४१२१
" १. २. ३.	५१४१४१
सविस्मय १. २. ३.	४१४२९
सवेध १. २. ३.	५१४१४१
सवेश १. २. ३.	५१४१४१
सव्य १.	१२१२८
" १. २. ३.	६१४१८
सव्येष्ट १.	३१७१३८
सस्य ३.	३३३२०
" ३.	३१८३१
सस्यसंवर १.	३३३३८
सह ४.	८८८१७
सहकारक १.	३३३२५
सहचर १. २. ३.	३३३१९१
सहचरी २.	४१४३४
सहज १.	४१४३१
" ३.	५२११
सहधर्मिणी २.	४१४३४
सहन १. २. ३.	५१४३३
सहपानक ३.	३१९५३
सहभोजन ३.	४३३१०३
सहचरस् १.	१११२१
" १.	१११२२
सहस् १.	२११८१
" ३.	३१७२१०
सहसा ४.	८१७३४
सहसालु १.	३१६८३
" १.	७१५४५
सहस्य १.	२११८२
सहस्र ३.	५११२८
सहस्रतम १. २. ३.	५११२३
सहस्रवर्ष २.	४११४२
सहस्रपत्र ३.	४२१३८
सहस्रवीर्या २.	३३३२३३
सहस्रवेधिन् ३.	३१८१३१

सहस्रवेधिन् १.	३१८१३३
सहस्रांशु १.	२१११५
सहस्राक्ष १.	१२११
सहस्रिन् १. २. ३.	३१७१४१
सहा २.	३३३१०६
" २.	३३३१२८
" २.	३३३१८८
" २.	३३३१९०
" २.	३३३१९१
सहाय्यायिन् १.	३१६२४
सहाय १.	३१७१६
" १. २. ३.	३१७४३
सहायता २.	५११९
सहित ३.	३१७१७६
सहितोदर ३.	३१७१७७
सहिष्णु १. २. ३.	५१४३३
सहुरि १.	१२११८
" १.	७११७५
सांयात्रिक ३.	१२१६८
" ३.	३१७१२३
" १.	४२११८
सांयुगीन १. २. ३.	३१७१४९
साराविण ३.	८१९१७
सांवत्सर १.	१२१८०
" १.	३१७२५
" १.	३१८३३
आवत्सरी २.	३१६६६
साकम् ४.	८१८१७
साकेत ३.	४३१५
साक्षात् ४.	८१७३०
साक्षिन् १. २. ३.	३१८१९
सागर १.	४२११०
साङ्कारिका २.	३१६५२
साङ्गामिकगुण १.	३१७४
" १.	३१७५
साधि १.	१२११८
" ४.	८१८१९
साज्य ३.	३१६५५

[ साति ]

साति २.	६१२४४
सातिसार १. २. ३.	४१४१४६
सात्वत १.	१११२३
” १. २. ३.	३१५५७
” १. २. ३.	३१५१०५
सात्वती २.	३१९१०१
सात्त्विक ३.	३१६११९
” १. २. ३.	३१९१९९
सात्त्विकी २.	२११६०
साद १.	३१६१९१
सादिन् १.	६११६५
साधस्क १. २. ३.	५१४८९
साधन ३.	७३३३६
साधारण १. २. ३.	५१४१२९
साधिका २.	३३३१७८
साधीयस् १. २. ३.	७३४२९
साधु १. २. ३.	५१४१३५
” १. २. ३.	६५१९६
साधुवाद १.	२१४३६
साध्य १ ब.	१३३८
साध्वस ३.	३१६१८५
साध्वी २.	४१४७
साधु १. ३.	३१२१७
” १.	३१६१८३
साधुनासिक १. २. ३.	२१४१६
साधुमत् १.	३१२११
सान्त्व १. २. ३.	२१४१६
” ३.	३१७१३
” ३.	६३३३५
सान्त्वन ३.	३१७१३
” ३.	५१२३८
सान्त्विक ३.	३१६२३६
सान्त्वेशिक १.	३१७२९
सान्द्र १. २. ३.	५१४१२६
सान्द्रस्निग्ध १. २. ३.	५१४३३

शब्दानुक्रमणिका

सान्ध्य १.	२१११६
साधन्य ३.	३१६१९९
साक्षपदीन ३.	३१६१८७
सामज १.	३१७१६१
सामन् ३.	२१४२३
” ३.	३१६२६
” ३.	३१६१११
” ३.	३१७१३
सामन्त १.	३१७१८
सामर्थ्य ३.	७३३३८
सामाजिक १.	३१८१३
सामान्य १. २. ३.	५१४१२९
सामि ४.	८१७२९
सामिक ३.	३१६१३
सामुद्र १.	३१५४२
” ३.	४१४५४
सामुना ३.	३१४२०
साम्पराय १.	८११४८
साम्परायिक १.	३१७१२६
” १.	३१७२०३
साम्प्रतम् ४.	८१७३४
” ३.	८१८५
साम्बाधिक १.	२११६६
सायक १.	७११७७
सायन्तूर्य ३.	३१९१३७
सायम् ४.	८१८१०
सायान् १.	२११६५
सायुज्य ३.	३१६२३७
सार १.	३३३१४
” १.	४१४१०९
” १. २. ३.	६५१९७
सारघ ३.	३१८१३५
सारङ्ग १. २. ३.	७१५८९
सारण १.	११२५४
” १. २. ३.	३११७६
” १. २. ३.	३१६१६
” ३.	३१८१४९
” ३.	५१२११
सारणी २.	२१४४२
सारथि १.	३१७१३८

[ सिंह ]

सारपर्णी २.	३३३१००
सारमेय १.	३१४६८
सारस १.	२३३३३
” ३.	४३३३७
” १.	७११८३
सारसन ३.	३१७१५६
” ३.	४१२१४६
सारसप्रिया २.	२३३३३
सारस्वत १.	३१६१९९
सारिका २.	३१९१२८
सारी २.	३१९१९१
सार्थ १.	५१११४
सार्थवाह १.	३१८७२
सार्द्र १. २. ३.	५१४१०७
सार्धम्	८१८१७
सार्पिष्क १. २. ३.	४३३९५
सार्धभौम १.	२११८
” १.	३१७२
सार्ष्टि २.	३१६२३७
साल १.	३३३३८
” २.	४३३१४
” २.	६११६५
सालभक्षिका २.	३१९१४
सालातुरीयक १.	३३३१५४
सालावृक १.	८११७६
साख १ ब.	३११३२
” १ ब.	३१३३८
सावन १.	२११८१
सावित्र १.	३१६४१
सावित्री २.	४१४७४
सावित्रेय २.	११२३४
साष्टी २.	३३३१७५
सारना २.	३१६६०
साहस १. ३.	३१७४६
साहस १. २. ३.	३१७१४१
” ३.	५१११३
साहायक १. २.	८१९३५
सिंह १.	३३२५
” १.	३३४१



सिंह ]

वैजयन्तीकोषः

[ सुगन्धि

सिंह १.	८१६१४	सिता २.	३१८१३४	सीम १.	५३१७
सिंहकर्णी २.	३१७१९३	सिताङ्ग १.	३१८१८५	सीमन् २.	४३११
सिंहकेसर १.	३३३२६	सितायुध १.	४११४४	" २.	६३३४४
सिंहपुच्छी २.	३३३३३७	सितासित १.	१११२४	सीमन्त १.	४३१००
" १.	८१२१५	सितोदर १.	११२५८	सीमन्तिनी २.	४३४४
सिंहमल ३.	३१२२८	सिद्गुण्ड १.	३३३९८	सीमन्तोन्नयन ३.	३६३३
सिंहल ३.	३११९९	" १.	३१५९	सीमा २.	४३१११
" ३.	३१२३१	सिद्ध १.	१३३२	" २.	६३३४४
" ३.	३१८७५	" १. २. ३.	४३३९३	सीर ३.	३१८२७
सिंहवाहना २.	१११६२	" १. २. ३.	५३१११	सीवन ३.	३१९१२
सिंहसंहनन १. २. ३.	५३३६	सिद्धसेन १.	१११५५	सीवनी २.	३१९११
सिंहाण ३.	३१२३६	सिद्धान्त १.	३६३२५	" २.	४३३६२
सिंहासन ३.	३१७१५	सिद्धार्थ १.	३१८४१	सीस १. ३.	३१२२९
सिंहास्य ३.	३३३१०१	सिद्धि २.	३१८९३	सु ४.	८१७८
सिंहिका २.	३६३४७	सिध्म ३.	४३१२६	" ४.	८१८४
सिंही २.	३३३१०२	सिध्मन् १.	५३११४४	" ४.	८१८१३
" २.	३३३१०६	सिध्मल १. २. ३.	४३३१४६	सुकर १. २. ३.	३१७१०७
सिकता २ ब.	४३३३३	सिध्म १.	२११३९	सुकुमार १.	५३३५
सिकताप्राय ३.	४३३३३	सिन ३.	४३३५२	सुकृत ३.	३३३१६८
सिकतावत् १. २. ३.	३१३४४	सिनीवाली २.	२११७१	" ३.	७३३९४
सिकतिल १. २. ३.	३१३४४	" २.	८१२१०	सुकृतिन् १. २. ३.	५३३५६
सिक्थ १.	६३३६६	सिन्दुक १.	३३३११८	सुख ३.	३३३१८९
सिच् २.	४३३११६	सिन्दुवार १.	३३३११८	" ३.	५३३१४४
सिच्य १.	४३३११६	सिन्दूर ३.	३१८११८	" ३.	६३३३५
सित १.	५३३१०	सिन्धि ३.	३१८१२१	सुखकर १.	१११२१
" १. २. ३.	५३३९७	सिन्धु १ ब.	३११२७	सुखङ्घुण १.	१११५०
सितकाच १.	५३३१३	" १.	३३३९८	सुखदोषा १.	३३३४९
सितकाचर १.	५३३१३	" २.	४३२२३	सुखवर्चक १.	३३३१२९
" १.	५३३२४	" १.	६३३९७	सुखवास १.	३३३१७१
सितकुञ्जर १.	१३३४	सिन्धुर १.	३१७६१	सुखसुसिका २.	३३३२००
सितकृष्ण १.	५३३२४	सिन्धुसर्ज १.	३३३३९	सुखा २.	१११४९
सितच्छद १.	२३३५	सिन्धुसर्ज ३.	३१८१२१	सुखोदय १.	३३३१४८
सितपिङ्गाण १.	५३३१४	सिरा २.	४३३११६	सुगत १.	११३३४
सितपीतहरित्रील १.	५३३१५	सिराल १. २. ३.	५३३८	सुगन्ध १.	३३३६९
सितलोहित १.	५३३२५	सिल ३.	३१८२	" १.	३३३२००
सितश्याम १.	५३३१२	सिलिन्ध्र १.	३३३१५३	" १.	४३३१५३
" १.	५३३१५	सिह १.	३१८११०	सुगन्धक १.	३३३१६४
		सीता २.	३१८३०	सुगन्धा २.	३३३१८६
		" २.	६३३४५	" २.	३१८९७
		सीत्य १. २. ३.	३१८२२	सुगन्धि २.	३३३११९



सुरान्धि १.	३१४२	सुन्दरी २.	४१४६	सुरभि २.	३१४४३
" १.	३१९८४	सुपथिन् १.	३११४९	" १.	५३१४७
सुरान्धिक १.	३८८३२	सुपर्ण १.	१११३८	" १.	५३१४९
सुरान्धिका २.	३३१३९	" १.	३३१४९	" १. २. ३.	७५५९३
सुरान्धिन् ३.	३८८९५	सुपर्णक १.	२३१९९	सुरभिच्छद १.	३३१९३
सुरान्धी २.	३३१७५	सुपर्णाण्ड १.	३५२५	सुख १.	५३१५४
सुग्रीव १.	४११५५	सुपर्णातिनय १.	१११३७	सुरवर्त्मन् ३.	२१११
सुचरित्रा २.	३८८५०	सुपर्वन १.	१११४	सुरवल्लभ १.	३३१७०
सुत १.	१३३३	सुपार्थ १.	३३१५९	सुरवेता २.	४१३३१
" १.	४१४४०	सुस १.	२३२२४	सुरसा २.	३३१९३
" १.	३११६६	" ३.	३६१९७	" २.	२८१९७
सुतङ्ग १.	३३२२०	" १.	४११३४	सुरा २.	३१५४५
सुतश्रेणी २.	३३११३	सुप्रतीक १.	२११८	सुराचार्य १.	२१३३३
सुतापुत्र १ द्वि.	४१४४८	सुफल १.	३३३३३	सुराजन् १. २. ३.	३११४६
सुताह्ला २.	३३१४४	" १.	३३१९३	सुराजिका २.	४१३३१
सुतेजित १. २. ३.	५११९४	सुब्रह्मण्य १.	१११५७	सुराधिप १.	१२२
सुत्रामन् १.	१२१४	सुभग १. २. ३.	५१४७०	सुरामण्ड १.	३१५५२
सुखन् १.	३६१७५	सुभजन १.	३३१५६	सुरालय १.	१३१२
सुदर्शन ३.	११११७	सुभद्रा २.	३३१७०	सुरावास १.	११११
" ३.	१२११०	सुभिच्छा २.	३३१९७	सुराष्ट्र १.	३८१३७
" १.	२३३३०	सुमीरुक ३.	३२२२४	सुराष्ट्रजा २.	३२१३७
सुदर्शना २.	३३१४३	सुम ३.	३३१८	सुराह्वय ३.	३३३७१
सुदार १.	३२१४	सुमदा २.	१३११	सुरूपा २.	३३१८४
सुदिनाह ३.	८१९२२	सुमन १.	३८१५३	सुरूहक १.	३७१०२
सुदुष्प्रभ १.	४१२२९	सुमनस् २ ब.	३३१८	सुरोत्तम १.	११११४
सुधन्व १.	३६१०७	" १. २.	७५९०	सुलभ १.	१२२७
( युन्धान )		सुमना २.	३१४४४	सुल्लिक १.	३५२७
सुधन्वन् १.	३५५६	सुमानस १. २. ३.	५१५७	सुलवणा २.	३८१६०
सुधन्वाचार्य १.	३५५७	सुमुखी २.	३३१२३	सुलोह ३.	३२१३४
" १.	३५१०४	सुमेरु १.	१३१२	सुलोहक ३.	३२२५
सुधर्मन् २.	१३११	सुयमा २.	३३१७७	सुवर्चला २.	२१२३
सुधा २.	४३१०५	सुर १.	११२	" २.	३८४५
" २.	६२१४५	सुरगायन १.	✓१३२	सुवर्धिका २.	३८१२९
सुधी १.	३६१२३४	सुरज्येष्ठ १.	१११७	सुवर्ण १.	३२१९
सुनन्दा २.	१११६०	सुरदीर्घिका २.	१३१३	" १. ३.	५१४१
" २.	३१४४३	सुरपर्णिका २.	३३१७०	" १.	५१४९
सुनाल ३.	४२१४२	सुरभि १.	१२२६	सुवहा २.	३८१९८
सुनासीर १.	१२१५	" १.	२११८७	सुवासक १.	३३१७१
सुनिषण्णक १.	३३११५०	" २.	३३१९६	सुवासिनी २.	४१४८
सुन्दर १. २. ३.	५१४१३४	" १.	३३१२२	सुवृत्त १. २. ३.	५१४८२

# सुबेल ]

सुबेल १.	३१२२
सुबता २.	३१४४९
सुषम १. २. ३.	५४११३५
सुषमा २.	४३१५२
सुषवी २.	३३१६३
" २.	३१८८५
सुषि १. २.	४११२
सुषिक १.	५३३६
सुषिम १.	५३३६
सुषिर १.	३३३२२८
" ३.	३११११५
" ३.	४११२
" १. ३.	७५१९०
सुषिरच्छेद १.	३१११२७
सुषिरा २.	३१८१००
सुषुप्ति २.	३३३२००
सुषुम्ना २. १.	८११२५
सुषेण १.	३३३८४
सुषेणी २.	३३३१३८
सुष्ठु ४.	८१८१३
" ४.	८१८१३
सुसंस्कृत १. २. ३.	४३३९४
सुसाम १.	३३३३७
सुस्निग्धा २.	३३३१०४
सुहस्त १. २. ३.	३३७१४८
सुहित १. २. ३.	४३३१०५
" १. २. ३.	५३३१९९
सुहृद् १.	३३३३
" १. २. ३.	३३३४३
" २.	४३३२५
" १. २. ३.	६३३२०
सुहृदय १. २. ३.	५३३१६
सुहृ १ व.	३३३१५
सूकर १.	३३३५
" १.	३३८३३
सूकरी २.	४३३१३
सूक्ष्म ३.	४३३१२२
" ३.	४३३११०
" १. २. ३.	५३३१३६

## वैजयन्तीकोषः

सूक्ष्म १. २. ३.	६५१९८
"	८११११०
सूक्ष्मदर्शिन १. २. ३.	५३३२९
सूक्ष्मा २.	११११६
सूचक १.	३३३३८
" १.	३३३४०
" १.	३३३६८
" १. २. ३.	५३३२५
सूचना २.	८१२१४
सूचा २.	३३३११
" २.	८१२१४
सूचि १.	३३३२९
" १.	३३३९१
" २.	३३३११
" २.	४३३४८
सूचिसूत्र ३.	३३३१२
सूची २.	४३३४८
सूचीमुख ३.	३३३२१४
सूत १.	३३३४४
" १.	३३३१२
" १.	३३३७७
" १.	३३३७७
" १.	३३३३३८
सूता २.	३३३७३
सूति १.	२३३३
सूतिकायुह ३.	४३३२०
सूतिकामास १.	४३३१९
सूत्रान १. २. ३.	५३३५४
सूत्र ३.	३३३२०
" ३.	३३३११
" ३.	३३३१४२
" ३.	३३३३३
सूत्रक ३.	३३३१५३
सूत्रधार १.	३३३६८
सूत्रवेष्टन १.	५३३१९
सूत्रसङ्ग्रह १.	३३३११७
सूव १.	४३३८३
" १. २. ३.	४३३९२
सून ३.	३३३१८
" ३. २.	६५१९९

## [ सुप्र

सूना २.	३३३८४
" २.	४३३९०
सूनातटि २.	३३३३७
सूनु १. २.	४३३३९
सूनुत ३.	५३३१४३
" १. २. ३.	७३३२९
सूप १. ३.	४३३८६
" १. २. ३.	४३३९३
सूपकार १. २. ३.	४३३९२
सूर १.	२३३११०
सुरण १.	३३३२०८
सूरि १.	३३३२३४
सूर्मि १. २.	३३३२२
" १. २.	८३३२५
सूर्य १.	२३३११०
सूर्यकान्त १.	३३३३७
सूर्यआवृ १.	१३३१२
सूर्या २.	३३३१३४
सूर्याचन्द्रमस १ द्वि.	२३३२९
सूर्यारक १ व.	३३३३५
सूर्यावर्त १.	३३३१२४
सूर्योद १.	३३३६८
सूक्था २.	४३३५८
सूकन् ३.	४३३८८
सुग १.	३३३१६६
सुगाल १.	३३३३७
" १.	८३३५७
सुगालकोलि २.	३३३८९
सुगालवास्तुक १.	३३३१५४
सूजया २.	३३३१०
" २.	४३३३०
सुणि १. २.	३३३८४
सुणिका २.	४३३१२०
सुति २.	३३३४९
सुवाकु १.	१३३१९
" १.	७३३७७
सुपाट १. २.	८३३२५
सुपाटिका २.	२३३५७
सुप्र १.	३३३२७

# सुभर ]

सुभर १.	३१४२९
सुष्टा २.	३१८९४
” २.	३१९१२९
सुष्टि २.	८१५३५
से १. २. ३.	८१५४०
सेकपात्र ३.	४२११८
सेकमिश्रान्न ३.	४३११०६
सेकिम ३.	३१२१५५
सेकृ १.	४१३३७
सेचन ३.	४२११८
सेतु १.	३३३४१
” १.	४२११०
सेतुज १ ब.	३११३४
सेना २.	३१७५५
सेनानी १.	१११५५
” १. २. ३.	३१७१४१
सेनामुख ३.	३१७५८
सेनारक्ष १. २. ३.	३१७१४०
सेनास्थ १. २. ३.	३१७१४०
सेभ्य १.	५३३७
सेराळ ३.	५३२०
सेराह १.	३१७१०४
सेहराह १.	३१७१०६
सेलिस १.	३१४२४
सेलु १.	३३३५५
सेवक १.	३१७१७
” १. २. ३.	७१५२३
सेवन ३.	३३३३८
” ३.	३१९१२
” ३.	७३३३७
सेवनी २.	३३३१८४
सेवा २.	३३३३८
” २.	३१८१७
सेव्य १.	२३३१८
” ३.	३३३२३१
” ३.	३१८११५
” ३.	३१८१२०
” ३.	३१८१४२
” १.	३१९४९

# शब्दानुक्रमणिका

सेव्य ३.	८३३१८
सेव्या २.	३३३८५
” २.	३३३१७७
” २.	३१८१५८
सेहिका २.	५११५४
सैहिकेय १.	२११३६
सैकत १. २. ३.	३११४४
” ३.	४२३३३
सैतवाहिनी २.	४२३२६
सैता २.	४२३२६
सैध १.	२११८२
सैनिक १. २. ३.	३१७१४०
” १. २. ३.	३१७१४०
सैन्धव ३.	३१८१२०
” ३.	३१९७२
” १.	७१५९१
सैन्य ३.	३१७५५
” १. २. ३.	३१७१४०
सैर १ ब.	३११४०
सैरन्धी २.	४१४२५
सैराभ १.	५३३१५
सैरिक १. २. ३.	३१४५८
सैरिन्ध्र १.	३३३११२
” १.	३३३११५
सैरिन्ध्रजाति २.	३३३११३
सैरिम १.	४३३८
सैरेयक १.	३३३१९०
सोठ १. २. ३.	५३३११५
सोट्ट १. २. ३.	५३३३३
सोत्पात ३.	४३३११२
सोत्व १.	३३३७६
सोदर १.	४३३३४
सोदर्य १.	४३३३४
सोन्माद १. २. ३.	५३३४१
सोपाक १.	३१५४५
” १.	३१५१०६
सोपान ३.	४३३५१

# [ सौमिक

सोम १.	३३३१६९
” १.	३३३८४
” १.	३३३६६
सोमप १.	३३३७५
सोमपान ३.	३३३९२
( सोममान )	
सोमपीथिन् १.	३३३७५
सोमभवा २.	४२३२६
सोमयोनि १.	८११४९
सोमरसोन्नव ३.	३१८१४५
सोमराजि २.	३३३१०८
सोमल १.	५३३८
सोमबल्लरी २.	३३३१४४
सोमबल्ली २.	३३३१०८
” २.	३३३१३२
सोमाल १.	५३३४
सोमिन् २.	३३३८३
सोर १.	५२३१२
सोरण १.	५३३३८
सोरावास १.	४३३८८
सोल १.	५३३६
” १.	५३३३५
सोलिक १.	५३३६
सोवाल १.	५३३१३
सौख्य ३.	३३३१८९
सौगन्धिक १.	३३३१४
” ३.	३३३२३४
” ३.	४२३३५
सौचिक १.	३३३११
सौदामनी २.	२३३५
सौध ३.	३३३३४
” १. ३.	४३३२९
सौधात १.	३३३७
सौनन्द ३.	११३२५
सौसिक १.	३३३२०३
सौभागिनेय १.	४३३४३
सौमनस १.	५३३४९
सौमिक ३.	३३३१०१
( सोमक )	
” १. २. ३.	३३३१२७

[ सौमिकी ]

सौमिकी २.	३१६८७
सौमेरव ३.	३११७
सौम्य १.	२११३२
” ३.	२११९१
” १.	३१६८४
” १.	३१६१०८
” ३.	३१६१४५
” १. २. ३.	६१५९८
सौम्यकृष्ण ३.	३१६१३२
सौम्या २.	८१२१५
सौरत १.	११२१५१
सौरभेय १.	३१४५३
सौरभेयी २.	३१४४१
सौरसा २.	३१३८८
सौराष्ट्र ३.	३१२२९
सौराष्ट्रिक १.	४११२४
( सारोष्ट्रिक )	
सौराष्ट्री २.	३१२१६
” २.	३१८४८
सौरि १.	२११३५
सौरिक १.	११११
सौर्य १.	२११९१
सौवर्चल ३.	३१८१२५
” ३.	३१८१२६
सौवस्तिक १.	३१७२४
सौवास १.	३१३१२०
सौविद १.	३१७२२
सौविद्व १.	३१७२२
सौविष्ट ३.	३१६११२
सौवीर १ ब.	३११२८
” ३.	३१२४२
” ३.	४१३८१
” १. ३.	७१५९१
सौशमिकन्य ३.	८१९१९
सौष्ठव ३.	३१७२०८
सौहार्द ३.	३१६१८६
सौहित्य ३.	४११०५
सौहृद ३.	३१६१८६
स्कन्ध १.	१११५४
” १.	६१९६५
स्कन्धोल १.	५१३६

वैजयन्तीकोषः

स्कन्ध १.	३१३१५
” १.	४१३७१
” १.	५१११
” १.	५११५
स्कन्धवह १.	३१४५२
स्कन्धवाहक १. २. ३.	३१४५६
स्कन्धशाखा २.	३१३१५
स्कन्धशृङ्ग १.	३१४१०
स्कन्धाग्नि १.	११२२०
स्कन्धावार १.	३१३४
स्कन्धिक १. २. ३.	३१४५६
स्कल १. २. ३.	५११०२
स्खलित ३.	३१७२०७
स्वन १.	३१४५१
” १.	४१४६८
स्तनन्धय १. २. ३.	५१४२
स्तनप १. २. ३.	५१४२
स्तनयितु १.	८११४६
स्तनाग्र ३.	४१४६८
स्तनित ३.	२१२५
स्तन्य ३.	३१८१४५
स्तन्यक १.	३१३२०
स्तब्ध १. २. ३.	५१४२०
स्तब्धरोमन् १.	३१४५
स्तब्धलोचन १. २. ३.	५१४९
स्तम् १.	३१४६२
स्तम्भि २.	८१९१०
स्तर १.	३१३७
” १.	३१३१६
” १.	३१८६३
स्तम्भकरि १.	३१८३२
स्तम्भज ३.	३१३२३२
स्तम्भेरम १.	३१७६०
स्तम्भ १.	३११६४
स्तम्भि १.	४१२१२
स्तम्भिन् १.	४१२१२
स्तरण ३.	३१६९१

[ स्थल ]

स्तव १.	२१४३५
स्तिमित १. २. ३.	४१७३०
स्तुत १. २. ३.	५१४१०६
स्तुति २.	२१४३५
” २.	३१६१११
स्तुतिपाठक १.	३१७३०
स्तूप १.	६११६७
स्तूपपृष्ठ १.	४११५०
स्तेन १.	३१९५६
स्तेम १.	५१२२९
स्तेय ३.	३१९५८
स्तैन्य ३.	३१९५८
स्तोक १.	२१२८
” १. २. ३.	५१४१३६
स्तोकक १.	२१३३२
स्तोकपाण्डु १.	५१३१४
स्तोत्र ३.	२१४३५
” ३.	३१६१११
स्तोम १.	३११६१
” १.	३१४८२
” १.	५१११
स्थान १. २. ३.	४१३९५
स्त्री २.	४१४४
” २.	८१२१६
” २.	८१६५
स्त्रीधर्मिणी २.	४१४१५
स्त्रीपुंसलक्षणा २.	४१४३
स्त्रीप्रिय १.	३१३४०
स्त्रीभूषण १.	३१३२३३
स्त्रीवास १.	३१३४८
स्त्रीन्यक्षनाकृता २.	४१४८
स्त्रैण १. २. ३.	५१४११८
स्थाय्या १.	३१३६७
स्थगणा २.	३१११
स्थण्डिल १. २. ३.	३१६१३२
स्थपति १.	३१५८६
” १.	७११८०
” १.	८१९४५
स्थपुट १. २. ३.	५१४८३
स्थल ३.	३११४२



स्थल १. २.	८१९३२	स्थिति २.	पा२११४	स्नाव १.	४१४११७
स्थलभृङ्गाट १.	३३११४१	" २.	४२१४४	स्निग्ध १.	३३१५३
स्थली २.	३११४२	स्थिर १.	४११३६	" १. २. ३.	३७७४३
" २.	८१९३२	स्थिरगति १.	२११३५	" १. २. ३.	पा३११८
स्थविर १. २. ३.	पा४३३	स्थिरजिह्व १.	४११४२	स्तु १.	३२१७
स्थाणु १.	१११४३	स्थिरप्रेमन् १. २. ३.	पा४२६	स्तुमिका २.	३८११२९
" १. ३.	३३११३	स्थिरा २.	३११२	स्तुत १. २. ३.	पा४१०९
स्थान ३.	३७११८६	" १.	३३११००	स्तुषा २.	४१४३६
" ३.	३१९१११	स्थूल ३.	४३१२५	स्तुह् २.	३३३९७
" ३.	६३३३६	स्थूणा २.	३१२२	स्तुही २.	३३३९७
स्थानिक १. २. ३.	३१९१९	" २.	६२१४६	स्नेह १. ३.	३६११८६
स्थानीय ३.	४३३१	" १. ३.	४३३४०	" १. ३.	३८१३३७
" ३.	४३३२	स्थूणादीर्घ ३.	४३३४०	" १.	पा३११
स्थाने ४.	८८११४	स्थूरिन् १. २. ३.	३१४५६	" १. ३.	६१५९९
स्थापत्य १.	३७७२३	स्थूल ३.	३८१३९	" ३.	८३११८
" १.	८१९४५	" १. २. ३.	पा४८४	स्नेहपात्र ३.	४३३६०
स्थापनी २.	३३३१३०	" १. २. ३.	६११९९	स्नेहपूर १.	३८१४५
स्थाप्य १.	३८११२	स्थूलकाष्ठानि १.	१२१२०	स्नेहचर ३.	४११०८
स्थाप्य ३.	३७७२१०	स्थूलनास १.	३१४६	स्नेहु ३.	४१११३
स्थाप्य १.	३१९८१	स्थूलपुष्पिका २.	३३१३५	स्पन्द १.	२११२६
" १. २. ३.	पा४४२	स्थूललक्ष १. २. ३.	पा४५८	स्पन्दित ३.	३१९९१
स्थापिभाव १.	३१९७६	स्थूलशाटिका २.	४३१२६	स्पर्ध १. २. ३.	पा४१४४
स्थापुक १.	३७७२१	स्थूलहस्त १.	३७७७१	स्पर्श १.	१२१४९
" १. २. ३.	पा४४२	स्थूलोच्चय १.	८११४८	" १.	३६३३६
स्थाल १.	१११४५	स्थेय १.	३८१३३	" १.	पा३२
" ३.	४३३६१	स्थेयस १. २. ३.	पा४७९	" १. २. ३.	६१५९६
स्थाला २.	३८१२७	स्थेय १. ३.	पा४७९	स्पर्शन ३.	३६१११८
स्थालिक १.	पा३५७	स्थौणेय ३.	३८१२२	" १. ३.	७५५८९
स्थाली २.	४३३५५	स्थौर १. ३.	३११३६	स्पर्शानन्दा २.	१३३१
स्थावर १. २. ३.	पा४६२	स्तनपित १. २. ३.	पा४१०७	स्पश १.	३७७२०५
स्थावर ३.	४१४५४	स्तनव १.	पा२३२	" १.	६११४४
स्थासक १.	३७७८७	स्तनसा २.	४१११७	स्पशा २.	३६१८९
" १.	४२११३	स्तनातक १.	३६१४०	स्पष्ट १. २. ३.	पा४१३४
" १.	४३११४८	स्तान ३.	४३११३	स्पृक्षा २.	३३११३७
स्थास्तु १. २. ३.	पा४४२	" ३.	६३३३६	स्पृष्टता २.	३६३३५
" १. २. ३.	पा४७९	स्नायु २. ३.	३१११७	स्पृहा २.	३६१७९
स्थित १. २. ३.	३१४२०	स्नाव १.	३३११४	स्फटा २.	४११२१
स्थितासन ३.	३६१२२६	" १.	३१९३३	स्फटिक १.	३२३३७
स्थिति २.	३८११५	" १.	३१९३३	स्फाति २.	पा२३३
" २.	पा२२			स्फार १. २. ३.	पा४८०
				स्फिच् २.	४१४५५

[ स्फीत ]

वैजयन्तीकोषः

[ स्वनदी ]

स्फीत १.	पा३१७	असिन् १.	३३३४५	स्वधिति १.	३१९३६
स्फुट १. २. ३.	३३३९	अक्ति २.	४३१५२	स्वन १.	२४११
” १. २. ३.	पा३१३४	अज् २.	४३१५४	” १. २. ३.	पा३४८
” १. २. ३.	४३१९९	अव १.	४३१५३	स्वम १.	३३६१९७
स्फुटन ३.	पा२४१	” १.	पा२३२	” १.	३३६१९७
स्फुटवल्ली २.	३३३१४०	अवण १.	३३३४२	स्वमज् १. २. ३.	पा३३९
स्फुटित १. २. ३.	३३३४६	अवपाणिपादा २.	३३३५२	स्वप्रतिष्ठ १.	पा३२७
स्फुरण ३.	पा२३३	अवधर्मा २.	३३४१७	स्वभाव १.	पा२२
स्फुरित ३.	३३९९१	अवन्ती २.	४३२२२	स्वभू १.	११११२
स्फुलन ३.	पा२३३	अष्ट १.	१११६	स्वमनीषिका २.	३३६१७४
स्फुलिङ्ग १. २. ३.		अष्टस्र ३.	१११४८	स्वयंवरा २.	४३३७
	१२३१	अस्त १. २. ३.	पा३१०२	स्वयम् ४.	८८११८
स्फूर्जक १.	३३३५१	आक् ४.	८८११	स्वयम्भू १.	१११८
स्फूर्जधु १.	२३३६	आवस्ती २.	३३१२१	स्वर १.	३३९११०
स्फोटक १.	४३१२३	” २.	३३१३०	” १.	३३९१३२
स्फ्य १.	३३३१०२	स्रगासादन ३.	३३६८९	” १.	३३९१६३
स्म ४.	८१७७	स्रगिह्न १.	१२११७	स्वरकम्प १.	३३९८५
” ४.	८१७११	स्रुच २.	३३३१००	स्वरमेद १.	३३९८५
स्मय १.	३३३१६९	” २.	८२३१८	स्वराष्ट्रचिन्ता २.	
स्मयाक १.	३३८५८	स्रुत १. २. ३.	पा३१०९		३३७१४
स्मर १.	१११२७	स्रुव ३.	३३३१००	स्वरिङ्गण १.	१२१५२
स्मराङ्गुषा १.	४३७७६	स्रुवा २.	३३३११४	स्वरित १. २. ३.	३३३३७
स्मित १. २. ३.	३३३९	स्रोतस् ३.	४३१९३	स्वरु १.	३३३६४
” ३.	३३९८३	” ३.	३३३३७	स्वरुमोचन १.	३३३१०६
” ३.	८१९१६	स्रोतस्विनी १.	४३२२२	स्वरूप ३.	पा२१
स्मृति २.	३३३२९	स्रोतोञ्जन ३.	३३३४२	स्वरेणु २.	२३३२३
स्यद १.	१२१५५	स्व १. २. ३.	८१३३८	स्वर्ग १.	११११
स्यन्द १.	२३१२६	स्वः ( -र ) ४.	१११२	स्वर्जि २.	३३८१२९
स्यन्दन १.	३३७१२४	” ( -र ) ४.	३३३२०७	स्वर्जिका २.	३३८१२९
स्यन्दनध्वनि १.	२३१९	” ( -र ) ४.	८१७७	स्वर्ण ३.	३३२१८
स्यन्दिनी २.	४३११२०	स्वकुलजय १.	४३१४१	” १.	३३३२२१
स्यन्न १. २. ३.	पा३१०९	स्वङ्ग १. २. ३.	पा३६	स्वर्णकार १.	३३९१६
स्यमीक १.	७११७५	स्वच्छन्द १. २. ३.		स्वर्णचूड १.	२३३२९
स्याल १.	४३३३२		पा३२७	स्वर्णद्वीप ३.	३३११९
स्यालिका २.	४३३२८	स्वज १.	४३१२०	स्वर्णराज ३.	४३३४१
स्यूत १.	४३३६४	” १.	४३३४५	( स्वर्णराग )	
” १. २. ३.	पा३११२	स्वजन १.	४३३५१	स्वर्णरीति १.	३३२२६
स्यूति २.	३३९१२	स्वतन्त्र १. २. ३.	पा३२७	स्वर्णशक्तिका २.	३३२२१
स्यूना २.	३३२४५	स्वतन्त्रवृत्ति २.	पा२२०	स्वर्णाग्नि १.	१३३१२
स्युम १.	३३१६१	स्वद्वन ३.	पा३१०३	स्वनदी २.	१३३१३
स्योनाक १	३३३६८	स्वधिति १.	३३९३६	( स्वनदी )	

स्वर्भानु १.	२११३६	स्वामिन् १.	३१६१५९	हठ १.	६११६८
स्वर्वापी २.	३१२२४	" १.	३१७३३	हङ्गिक १.	३१५४८
स्वर्वेश्या १.	१३११	" १.	३१९१०५	हठक १. ३.	३१९१३४
स्वल्पदेहा २.	३१६५१	" १. २. ३.	५१४५८	हण्डा २.	३१९१०८
स्वल्पफला २.	३१३१६०	" १. २. ३.	६१५९४	हतक १. २. ३.	३१७१४७
स्वसर १.	३१४३१	स्वामिनी २.	३१७३२	" १. २. ३.	५१४६७
स्वसू २.	३११४	" २.	३१९१०३	हता २.	३१६५०
स्वसू २.	३१४२६	स्वाराज् १.	११२४	हनन ३.	५११३६
स्वस्कन्ध १.	३१९१४	स्वास्थ्य ३.	३१४१४२	हनु १.	३१५३४
( स्वस्कन्ध )		स्वाहा २.	११२१९	" २.	३१८१०१
स्वस्तर १.	३१८६६	स्वित् ४.	८१७६	" १. २.	३१४९०
स्वति ४.	८१७२९	स्वेद १.	३१९८१	हन्त ४.	८१७३०
स्वस्तिक १.	२१३१८	स्वेदचूषक १.	११२५२	" ४.	८१८२
" १.	३१३१४९	स्वेदज १. २. ३.	३१४२	हन्तकार १.	३१६१५
" १.	३१६१२४	स्वेदनी २.	३१६५६	हृत् १. २. ३.	५१४११३
" १.	३१३३०	स्वैर १. २. ३.	६१४२०	हय १.	३१७९०
" १.	३१३१३६	स्वेरिणी २.	३१४९	हयन ३.	६१७१२७
स्वस्थयन ३.	३१६५८	स्वेरिन् १. २. ३.	५१४२७	हयपुच्छी २.	३१३१०७
स्वलीय १.	३१४४१	ह		हयशिरस् १.	१११३०
स्वाती २.	२११४०	ह ४.	८१७८	हर १.	६११६७
स्वाहु १.	५१३२५	" ४.	८१७११	हरक १.	३१७१६२
" १. २. ३.	६१४१९	हंस १.	२१३५	हरण १.	३१३८२
" ३.	८१३१८	" १.	३१६२००	" ३.	३१७१९३
स्वाहुकण्टक १.	८११५५	" १.	६११६८	" ३.	३१९१९८
स्वाहुगन्धा २.	३१३५७	" १.	८१६६	" १.	३१४७१
स्वाहुतिक्तकाय १.	५१३३३	हंसक १.	३१३१४४	" ३.	७१३३९
स्वाहुमुस्ता २.	३१२४८	हंसकान्ता २.	२१३८	हरणि २.	३१२२१
स्वाहुरसा ३.	८१२९	हंसकालीसुत १.	३१४१०	हरशेखरा २.	३१२४४
स्वाद्य १.	५१३३०	हंसच्छत्र ३.	३१८७६	हरात्रि १.	३१२५
स्वाङ्गलतिक्तगुवर १.	५१३३९	हंसपद ३.	५११५०	हरानत १.	११२४२
स्वाङ्गी २.	३१३१८१	हंसपाद ३.	३१२४५	हराङ्ग्य १.	३१३८०
स्वाध्याय १.	७११८३	हंसबाहन १.	१११८	हरि १.	११११५
स्वान १.	११३११	हंससाधि १.	२१३९	" १.	३१४२
" १.	२१४१	हकार १.	२१४३१	" १.	३१४३९
स्वान्त ३.	३१६१७३	हक्षा २.	३१९१०८	" १.	३१५२९
स्वाप १.	३१६१९७	हृष्ट १.	३१३३५	" १.	३१५८९
" १.	३१३१६७	हृष्टविलासिनी २.	३१८१०१	" १.	३१७१०४
स्वापतेय ३.	३१८७३	हृष्टवेरमाली २.	३१३३५	" १.	३१८३६
स्वामिन् १.	१११५६	हठ १.	३१७२०९	" १.	३११६
		" १.	३१२४६	" १. २. ३.	३१५१००



# हरिचन्दन ]

# वैजयन्तीकोषः

# [ हस्तिमल्ल

हरिचन्दन १. ३.	१।३।१४
" ३.	३।८।१३
" १. ३.	८।५।२७
हरिण १.	३।४।१२
" १.	५।३।१२
हरिणी २.	३।९।२२
" २.	७।२।३०
हरित् २.	२।१।२
" १.	५।३।२२
" २.	६।५।१०१
हरित १.	३।४।२
" १.	३।८।३६
" १.	४।३।९०
" १.	५।३।२१
" १.	५।३।२२
हरिताल ३.	३।२।१३
हरितालिका २.	३।३।२३२
हरिदम्ब १.	२।१।११
हरिद्रा २.	३।३।२११
हरिद्रारागक १. २. ३.	
	५।४।२६
हरिद्विष् १.	१।३।१०
हरिर्मर्माण १. २.	३।२।३८
हरिर्पर्ण १.	३।३।१५५
हरिप्रिया २.	८।२।१०
हरिमन् २.	७।१।८४
हरिमन्थ १.	३।८।३७
हरिमन्थज १.	३।८।३७
हरिया १.	३।७।१०४
हरिरोमन् १.	८।१।४९
हरिलोचन १.	२।३।२२
हरिवत् १.	१।२।३
हरिवर्ण ३.	३।१।६
हरिवालुक ३.	३।८।९५
हरिवाहन १.	१।२।४
हरिहय १.	१।२।३
हरीतक १. २. ३.	
	८।९।३८
हरीतकी २.	३।३।२१
" २.	३।३।१७८
" २.	८।९।३८

हरेणु २.	३।८।९५
" १. २.	८।९।२६
हरेणुक १.	३।८।५४
हर्तु १.	६।१।६७
हर्म्य ३.	४।३।१९
हर्ष १.	७।१।८४
हर्ष १.	३।३।१८७
हर्षज ३.	४।४।१११
हर्षमाण १. २. ३.	
	५।४।३३
हर्षवेणुक १.	३।६।६१
हर्षुल १.	२।१।३२
" १. २. ३.	७।५।९४
हर्षुला २.	३।६।५०
हल ३.	६।८।२७
हलभूति १.	३।६।१५४
हला २.	३।९।१०८
हलाम १.	३।७।१०२
हलायुध १.	१।१।२२
हलाहल १.	२।१।२४
हलिन् १.	१।१।२३
हलीषण १.	३।४।२
हलीम १.	३।३।२२३
हलीमक १.	३।३।६०
" १.	३।३।७६
हलुराह १.	३।७।१०५
हल्य १. २. ३.	३।८।२३
हल्या २.	५।१।१४
हव १.	१।२।१८
" १.	२।४।३०
" १.	६।१।६७
हवन १.	१।२।१८
" ३.	३।६।६९
हवनी २.	३।६।१००
" २.	३।६।१०९
हवित्री २.	३।६।१०९
हविर्मन्थ १.	३।३।८६
हविर्यज्ञ १.	२।६।८३
हविश्शाला २.	४।३।२२
हविस् ३.	३।८।१३८
" ३.	६।३।३७

हव्ययोनि १.	१।१।४
हव्यवाहन १.	१।२।१७
" १.	१।२।२२
" १.	१।२।२४
हस १.	३।६।१९४
हसन ३.	३।६।१९४
हसनी २.	४।३।५५
हसन्ती २.	४।३।५५
हसित ३.	३।९।८३
हस्त १.	१।२।४३
" १.	३।१।५४
" १.	४।४।७३
हस्तकोहलि २.	३।६।५९
हस्तघ्न १.	३।७।१५५
हस्तत्रय ३.	३।१।५७
हस्तद्वय ३.	३।१।५७
हस्तपर्ण १.	३।३।६४
हस्तविम्ब १.	४।२।१४८
हस्तलेपन ३.	३।६।६०
हस्तवारण ३.	४।३।१०५
हस्तसूत्र ३.	३।६।५९
हस्तावाप १.	३।७।१८९
हस्तिकर्कोटक ३.	३।३।१६५
हस्तिकर्ण १.	३।७।१९८
" १.	४।३।१२९
हस्तिकर्णदल १.	३।३।२९
हस्तिकोलि २.	३।३।८८
हस्तिघोष १.	३।३।१६२
हस्तिचार १.	३।७।१७०
हस्तिन् १.	३।७।६०
" १.	८।६।५
हस्तिनापुर ३.	४।३।८
हस्तिनी २.	४।३।८
हस्तिपक १.	३।७।८८
हस्तिपर्णिनी २.	३।३।१७१
हस्तिपादिका २.	३।८।९३
हस्तिपिप्पली २.	३।८।७८
हस्तिपूरणी २.	३।६।१४७
हस्तिप्रिया २.	३।३।९६
हस्तिमकर १.	४।१।५२
हस्तिमल्ल १.	८।१।४९



# हस्तिमुख ]

हस्तिमुख १.	४३१५
हस्तिराज १.	१११५३
हस्तिघातिफल १.	३३१०३
हस्य १. २. ३.	पा३११७
हस्यमना २.	३३१९६
हस्यारोह १.	३७१८८
हहाल १ व.	३११३६
हा ४.	८७१८
हाटक १. ३.	३२१२०
" १.	३७१६५
हाकृत ३.	२४१८
हान ३.	पा२१४०
हायन १.	३८१३४
" १.	७११८४
हार १.	४२१३८
" १.	४२१३९
हारफल ३.	४२१४०
हारभूरा २.	३३१८१
हारित १.	१२१५२
हारिता २.	३६१४९
हारित्र १.	४४१३६
" ३.	पा३११
हारिन् १. २. ३.	पा४१३५
हारी २.	३६१४८
हारीत १.	२३१४०
हार्व ३.	३६१८६
हार्या २.	३८११४
हालक १.	३७१०३
हालाः २.	३९१४५
हालाहल १.	४११२९
हालिक १. २. ३.	३५१५८
हाली २.	४४१२८
हाव १.	३९१९२
" १.	३९१९७
हास १.	३६१९४
" १.	३९१७६
" १.	३९१८३
हासनिक १.	३७११७
हासिका २.	३६१९३
हास्तिक ३.	पा३१०

# शब्दानुक्रमणिका

हास्तिनपुर ३.	४३१८
हास्य ३.	३६१९४
" १.	३९१७५
" १.	३९१७७
हि ४.	८७१९
" ४.	८७११
हिंसन ३.	३७१४१
हिंसा २.	३७१२५
" २.	६२१४६
हिंसाकर्मन् ३.	३६११२
हिंसार १.	३४१३
हिंस्र १.	३४१७३
" १. २. ३.	पा४१४२
हिंसा २.	३३१८९
हिंसा २.	२३१२१
" २.	४४१२७
हिंसिका २.	४४१३१
हिङ्गु ३.	३८१३१
हिङ्गुदी २.	३३१०४
हिङ्गुन्यास १.	८११५६
हिङ्गुल १.	३२१४४
" ३.	३२१४५
हिङ्गुल २.	३३१०२
हिंसीर १.	३७१८५
हिण्डीकान्त १.	१११४४
( चण्डीकान्त )	
हित १. २. ३.	३७१४३
" १. २. ३.	पा४१०४
हिन्ताल १.	३३१२२०
हिम् ४.	८७१९
हिम ३.	२२१९
" १.	पा३१७
हिमजा २.	३३१२०३
हिमधृति १.	२११२४
हिमवत् १.	३२१४
हिमबालुका २.	३८१०५
हिमसंहति २.	२२१९
हिमा २.	१११५९
हिमाचल १.	३२१४
हिमानिल १.	१२१५४
हिमानी २.	२२१९

# [ ह्य

हिमारि १.	७११८३
हिरण्य ३.	३११९
हिरण्य १.	३८१७४
" ३.	७३१३९
हिरण्यकशिपुद्विपत् १.	११११८
हिरण्यगर्भ १.	१११७
हिरण्यनाभ १.	३२१४
हिरण्यबाहु १.	१३१५६
हिरण्यरेतस् १.	१२११६
हिरण्यवर्णा २.	४२१२२
हिस्क् ४.	८७१३०
" ४.	८८१४
" ४.	८८१५५
ही ४.	८८१६
हीन १.	३३१८२
" १. २. ३.	पा४१२२
" १. २. ३.	पा४१०१
" १. २. ३.	६४१२०
हीनवर्ण १.	३५१३
हीर १.	६४१६९
हीरक १.	३२१३९
हुङ्गुल १.	३९१३४
हुङ्गुलहिंसा २.	२४१११
हुण १.	१११११
हुण्ड १.	३४१३
हुताशन १.	१२११६
हुति २.	३६१६९
" २.	३६१९०
हुम् ४.	८७१९
हुरिजक १.	३५१४४
हुष्टक १.	३७१८५
हुष्टकर १ व.	३११२४
हुल ३.	३७११६८
हुलमात्रिका २.	३७११६४
हुलिङ्ग १ व.	३११३९
हुलिङ्गुली २.	३६१५७
हुल १.	३४१६४
हुष्टत १.	३७११६२
हुति २.	२४१३०
हुम् ४.	८७१९

# हृच्छय ]

हृच्छय १.	१११२९
” १.	११२२१
हृणिता २.	३१६१९३
( हृणिता )	
हृणीया २.	३१६१९३
हृद् ३.	३१६१७३
” ३.	४१४६८
” ३.	४१४११४
हृदय ३.	४१४६८
” ३.	४१४११४
” ३.	७१३३८
हृदयालु १. २. ३.	५१४१६
हृष १.	३१३३२
” ३.	३१८१३९
” ३.	३१९४८
” १. २. ३.	५१४९६
” १. २. ३.	५१४१३५
” १. २. ३.	६१५१००
हृद्यगन्ध १.	३१८८४
हृष्टा २.	३१२११
” २.	३१४६३
” २.	३१८९४
हृष्टांशु १.	२११२६
हृष्टलेख १.	३१६१७९
हृषित १. २. ३.	८१४१३
हृषीकेश ३.	३१६२०३
हृषीकेश १.	१११११
हृष्ट १. २. ३.	५१४९९
” १. २. ३.	८१४१३
हृष्टि २.	३१६१८८
हे ४.	८१८१२
हेका २.	४१४१२७
हेति १. २.	३१०१५७

# वैजयन्तीकोषः

हेति २.	६१२४६
हेतु १.	५१३३७
” १.	६११६९
हेमकरक १.	४१३५८
हेमकुश ३.	३१११९
हेमम ३.	३१२३०
हेमम्री २.	३१३२११
हेमज ३.	३१२३२
हेमदुग्धक १.	३१३२८
हेमधारण ३.	५११५९
हेमन् ३.	३१२२०
” ३.	६१३३७
हेमन्त १.	२११८७
हेमपुष्प १.	३१३४१
” १.	३१३८१
हेमपुष्पिका २.	३१३१८२
हेमप्रतिमा २.	३१९२२
हेममाष १.	५११५
हेमा २.	३११३
हेरग्व १.	३१४९
” १.	७११८४
हेरक १.	३१६२३९
हेरक ३.	५११६२
हेला २.	६१२४६
हेलि २.	३१६१७
” १.	६११६९
हेपा २.	२१४६
हे ४.	८१८१२
हेमकूट ३.	३११६
हेमवत ३.	३११३
हेमवती २.	८१२११
हैयक्वचीन ३.	३१८१३८
हीड ३.	५११६२

# [ ह्लादीनि

होत् १.	३१६१७९
होत्र १.	३१६१७९
होषन् १.	३१६१७९
होम १.	३१६१७९
होमकाष्ठी २.	३१६१७९
होमधूम १.	३१६१७९
होमधेनु २.	३१६१७९
होमभस्मन् ३.	३१६१७९
होमयूप १.	३१६१७९
होमेन्धन ३.	३१६१७९
होरा २.	२११५१
होल १ व.	३११२६
हयः ( -स ) ४.	८१८१९
हयस्तन १. २. ३.	
	५१४८९
हृद १.	३१४६४
” १.	४११५
हृस्व १. २. ३.	५१४८१
” १. २. ३.	६१५१०१
हृस्वगवेधुका २.	३१८१६१
हृस्वनिर्वृणक १.	
	३१७१५९
हृद १.	२१४१२
ह्लादिनी २.	४१२२३
” २.	७१२२९
ह्लादुनि २.	२१२५
ही २.	३१६१९४
हीक १. २. ३.	६१५१०१
हीण १. २. ३.	५१४५१
हीत १. २. ३.	५१४५१
हेषा २.	२१४६
ह्लाद १.	३१६१८८
ह्लादिनी २ व.	२१११९

समाप्तश्चाऽयं ग्रन्थः

## जयकृष्णदास-कृष्णदास प्राच्यविद्या ग्रन्थमाला

(स्थापित सन् १९७१)

१. रासपञ्चाध्यायी-श्रीसुबोधिनी। सचित्र (वेदान्त-शुद्धाद्वैत) महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्य विरचिता श्रीमद्भागवत-दशमस्कन्ध-रासपञ्चाध्यायी की हिन्दी व्याख्या। व्याख्याकार जगन्नाथ (मुनमुन जी) चतुर्वेदी। शुभाशंसक गोस्वामी श्री दीक्षित जी महाराज।
२. वैजयन्तीकोषः (कोश)। यादव प्रकाशाचार्य विरचित। सम्पादक-हरगोविन्दशास्त्री
३. नाटकलक्षणरत्नकोशः (कोश)। सागर नन्दी प्रणीत। 'प्रभा' हिन्दी व्याख्या। व्याख्याकार-बाबूलाल शुक्ल शास्त्री
४. राजतरङ्गिणी जोनराजकृत। हिन्दी अनुवाद। व्याख्याकार-रघुनाथ सिंह
५. कालिकापुराणम् (पुराण)। संपादक-श्रीविश्वनारायण शास्त्री। प्रस्तावना-बलदेव उपाध्याय
6. **New Light on the Sun Temple of Konarka.**  
Four unpublished Manuscripts relating to Construction, History and Ritual of this Temple. Translated into English and annotated by Alice Boner and Sadāśiva Rath Sharma with Rajendra Prasad Das. Introduction by Alice Boner. Technical Drawings by Sadāśiva Rath Sharma. With many Plates and Illustrations.
7. **Kāvya-prakāśa of Mammata-bhaṭṭa - काव्यप्रकाश मम्मट-भट्ट (Kāvya).**  
An Introduction to Indian Literary criticism. By S. N. Ghoshāl - Śāstri  
**Part I** Principle, Technique and History of Literary Criticism.  
**Part II** The Kāvya-Prakāśa the central work of Indian Literary Criticism, with its Commentaries Rasa-Prakāśa and the critical explanation of the Texts.
८. भास्करोदया। तर्कसंग्रहदीपिका-प्रकाशस्य (नीलकण्ठ्याः) व्याख्या पदवाक्य-प्रमाणपारावारीणनीलकण्ठभट्टसूनुपण्डितेन्द्र श्रीमल्लक्ष्मी-नृसिंहशर्मकृता। म. म.झोपाख्यपण्डित श्रीमुकुन्दशर्मणा संस्कृता-परिष्कृता-संशोधिता च।
९. तिलकमञ्जरी। श्रीधनपालविरचिता। म. म. पण्डितशिवदत्तशर्मतनूज पण्डितभवदत्तशास्त्रिणा, मुम्बापुरवासिपरबोपाहव पाण्डुरङ्गात्मज काशिनाथशर्मणा च संशोधिता।
१०. काव्यमाला। सम्पादक-पं. दुर्गा प्रसाद तथा काशीनाथ पाण्डुरङ्गपर्व तथा केदारनाथ वासुदेव शास्त्री पणशीकर। (सम्पूर्ण सेट १-१४ भाग)
११. संस्कृत साहित्य का इतिहास। डॉ० उमाशंकर शर्मा 'ऋषि'
१२. सेतुबन्धम् महाकवि प्रवरसेन विरचिता। हिन्दी-अंग्रेजी अनुवाद सहित। डॉ. आशाकुमारी

Mahākavi Pravarasena's

सेतुबन्धम्

**Setubandham**

*Text with Hindi & English Translation*

Dr. Asha Kumar

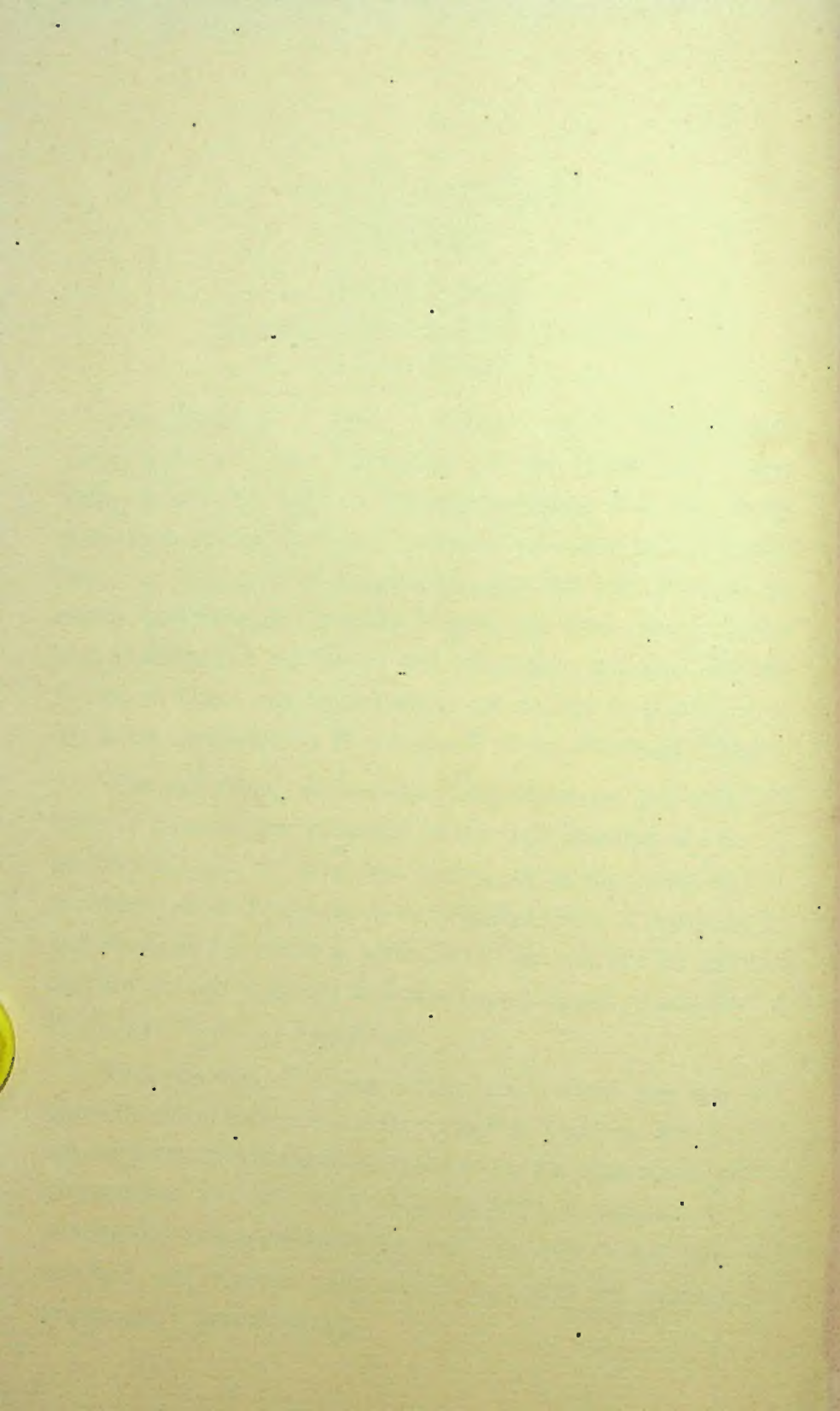
'Setubandham' also named as 'Rāvaṇavaho', 'Dahamuhavaho' and 'Rāmasetu' is the oldest and 'most monumental court epic' of Mahārāṣṭrī Prakrit. It is one of the most beautiful works of not only Prakrit but entire ancient Indian literature. It is only its poetic perfection that lead not only its erudite commentator Rāmdāsa Bhūpati but some other scholars also to attribute its authorship to kavikulaguru Kālidāsa. Though the internal and external evidences are enough to prove that it has been composed by Pravarsena II of the Vākāṭaka dynasty.

The perspicuity of language, the picturesque and colourful style of descriptions, portrayal of not only external actions or gestures but also the innermost feelings of all the living beings, excellent uses of figures of speech, highest flight of poetic fancy and above all the aesthetic perfection of the epic are the features that are enough to attract astonished appreciation of aesthete be he Ācārya Daṇḍī or Vāṇabhaṭṭa.

Unfortunately this marvellous epic could not get the attention of modern day scholars which it deserves. Absence of any fully annotated bilingual translation was the main force behind presentation of this work. The meticulous translation and annotations will particularly be useful for non Prakrit knowing scholars and students who intend to relish the beauties of Pravarsena's superb poesy.













## जयकृष्णदास-कृष्णदास प्राच्यविद्या ग्रन्थमाला

(स्थापित सन् १९७१)

रासपञ्चाध्यायी-श्रीसुबोधिनी। सचित्र (वेदान्त-शुद्धाद्वैत) महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्य विरचिता  
श्रीमद्भागवत-दशमस्कन्ध-रासपञ्चाध्यायी की हिन्दी व्याख्या। व्याख्याकार जगन्नाथ  
(मुनमुन जी) चतुर्वेदी। शुभाशंसक गोस्वामी श्री दीक्षित जी महाराज

वैजयन्तीकोषः (कोश)। यादव प्रकाशाचार्य विरचिता। सम्पादक-हरगोविन्दशास्त्री

नाटकलक्षणरत्नकोशः (कोश)। सागर नन्दी प्रणीता 'प्रभा' हिन्दी व्याख्या।

व्याख्याकार-बाबूलाल शुक्ल शास्त्री

राजतरङ्गिणी जोनराजकृत। हिन्दी अनुवाद। व्याख्याकार-रघुनाथ सिंह

कालिकापुराणम् (पुराण)। संपादक-श्रीविश्वनारायण शास्त्री। प्रस्तावना-बलदेव उपाध्याय

New Light on the Sun Temple of Konarka. Four unpublished Manuscripts relating to Construction, History and Ritual of this Temple. Translated into English and annotated by Alice Boner and Sadāśiva Rath Sharma with Rajendra Prasad Das. Introduction by Alice Boner. Technical Drawings by Sadāśiva Rath Sharma. With many Plates and Illustrations.

Kāvya-prakāśa of Mammata-bhaṭṭa - काव्यप्रकाश मम्मट-भट्ट (Kāvya).

An Introduction to Indian Literary criticism. By S. N. Ghoshāl - Śāstrī  
Part I Principle, Technique and History of Literary Criticism.

Part II The Kāvya-Prakāśa the central work of Indian Literary Criticism, with its Commentaries Rasa-Prakāśa and the critical explanation of the Texts.

भास्करोदया। तर्कसंग्रहदीपिका-प्रकाशस्य (नीलकण्ठ्याः) व्याख्या पदवाक्यप्रमाणपारावारीण-  
नीलकण्ठभट्टसूनुपण्डितेन्द्र श्रीमल्लक्ष्मीनृसिंशर्मकृता। म. म.झोपाख्यपण्डित  
श्रीमुकुन्दशर्मणा संस्कृता-परिष्कृता-संशोधिता च।

तिलकमञ्जरी-श्रीधनपालविरचिता। म. म. पण्डितशिवदत्तशर्मतनूज पण्डितभवदत्तशास्त्रिणा,  
मुम्बापुरवासिपरबोपाहव पाण्डुरङ्गात्मज काशिनाथशर्मणा च संशोधिता।

काव्यमाला। सम्पादक-पं. दुर्गा प्रसाद तथा काशीनाथ पाण्डुरङ्गपर्व तथा केदारनाथ वासुदेव  
शास्त्री पणशीकर। (सम्पूर्ण सेट १-१४ भाग)

संस्कृत साहित्य का इतिहास। डॉ० उमाशंकर शर्मा 'ऋषि'

सेतुबन्धम्। महाकवि प्रवरसेन विरचिता। हिन्दी-अंग्रेजी अनुवाद सहित। डॉ. आशाकुमारी

शाखा :

**चौखम्भा बुक्स**

**Chaukhambha Books**

5 UA, Jawahar Nagar (Behind Jawahar Nagar Post Office)

Malkaganj Chowk, Delhi-110007 (India)